अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन् ॥ ॥श्री गणेशाय नमः॥ "विश्वविजय पंचाङ्ग" सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति ॥

राजा शुक्र



मंत्री बुध

नवः प्राच्यंमॅर्गनिखिलनिगमखेऽपि तथा।
समानीतात्साराद् गणितमनवद्यं वहति यः॥



श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

सदासेव्यः प्राग्रौविविधगणितग्रंथेऽपि मतः।
सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि जेजयते 'विश्वविजयः'॥

अ.भा.ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम

श्री विक्रम संवत् २०४५ शकः १९१० सन् १९८८-८९ भारतीय गणराज्य सम्वत् ३९-४०

सम्पादक-श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी-ज्योतिषाचार्य,मुख्य अध्यक्ष-अ.भा.ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकार से रजिस्टर्ड) ज्योतिष्मती-निकेतन,सोलन,हि.प्र.

मू. रु. १४.००
सजिल्द
रु. १६.००

गणितकर्ता-

ज्योतिष्मती प्रकाशन सहगलपुरा मथुरा (उ.प्र.) २८१००१

वर्ष-४४

विषय - सूची

प्रकाशकीय-निवेदन

(श्री विश्व विजय पंचांग के स्नेही श्रद्धालु पाठकों विक्रेताओं एवं अपने स्नेही स्वजनों से)

प्रिय बन्धुवर,

जगत जननी माँ भगवती की प्रेरणा से एवं पितृतुल्य श्रद्धेय श्री पं. हरदेव शर्मा जी त्रिवेदी के असीम स्नेह व शुभाशीर्वाद से, हमें आपके समक्ष 'श्री विश्व विजय पंचांग' सम्वत् २०४५ वि. नवीन प्रारुप एवं उत्कृष्ट, अनूठी साज सज्जा के साथ प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है गत वर्ष जैसा कि हमने आपको विश्वास दिलाया था कि आगामी वर्ष हम समय से पूर्व ही पंचांग प्रकाशित कर आपके स्नेह भागी बनेंगे किन्तु इस वर्ष कुछ विशिष्ट कारणों से पंचांग प्रकाशन में विलम्ब हो गया। पाठकों एवं पंचांग स्नेहियों से इसका हमें दुःख है। हम उन्हें विश्वास दिलाते है कि माँ जगदम्बा की कृपा से सं. २०४६ का पंचांग हम उन्हें समय से बहुत पूर्व ही पंचांग प्रकाशित कर देवेंगे। आशा है कि आप इस विलम्ब की ओर ध्यान न देकर अपना स्नेह बनाये रखेंगे।

गत वर्षों में हमने पंचांग के कागज मुद्रण-साज सज्जा में आमूल-चूल परिवर्तन कर पंचांग को नितान्त नवीन प्रारुप मे आपकी सेवा मे प्रस्तुत किया है, और आप लोगों ने अति विलम्ब के बावजूद भी जिस गर्मजोशी से पंचांग का स्वागत किया उसके लिए हम आपके हृदय से आभारी है। आपकी उस प्रेरणा से ही उत्साह प्राप्तकर हमने इस वर्ष पंचांग को और भी आकर्षक, उपयोगी, एवं त्रुटिहीन बनाने का प्रयत्न किया है। गत वर्ष तृतीय प्रयास होने के कारण मुद्रण मे सुधार किये थे इस वर्ष भी हमारा यही प्रयत्न रहा है कि हम पंचाग को सर्वांग सुन्दर रुप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें। हो सकता है फिर भी शीघ्रता के कारण कुछ त्रुटियाँ रह गई हों,विज्ञ, सुधी पाठकगण पत्र द्वारा उन त्रुटियों की ओर हमारा ध्यानाकर्षित करेंगे तो हमें हर्ष होगा ताकि भविष्य में हम उनमे आवश्यक सुधार कर पंचांग को पूर्व प्रतिष्ठा के अनुरुप बना सकें, अपने पाठकों के सुझावों की हमें हमेशा ही प्रतीक्षा रहती है। हमारी सद्भाव अभिलाषा है कि हम इस पंचाग प्रकाशन का स्तर राष्ट्रीय ही नही अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर कर सकें। इस इच्छा पूर्ति के लिए आप सभी विज्ञ पाठ्कों का सहयोग आवश्यक है। इस वर्ष पंचांग को पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी बनाने के ध्येय से कई नवीन उपयोगी लेखों एवं सामग्री का समावेश किया है। पंचांग की पृष्ठ संख्या अधिक है एवं कागज उत्तम स्तर का है। कागज मूल्य में काफी वृद्धि हो गई है, तथापि आपलोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मूल्य मे नाममात्र ही वृद्धि की है।

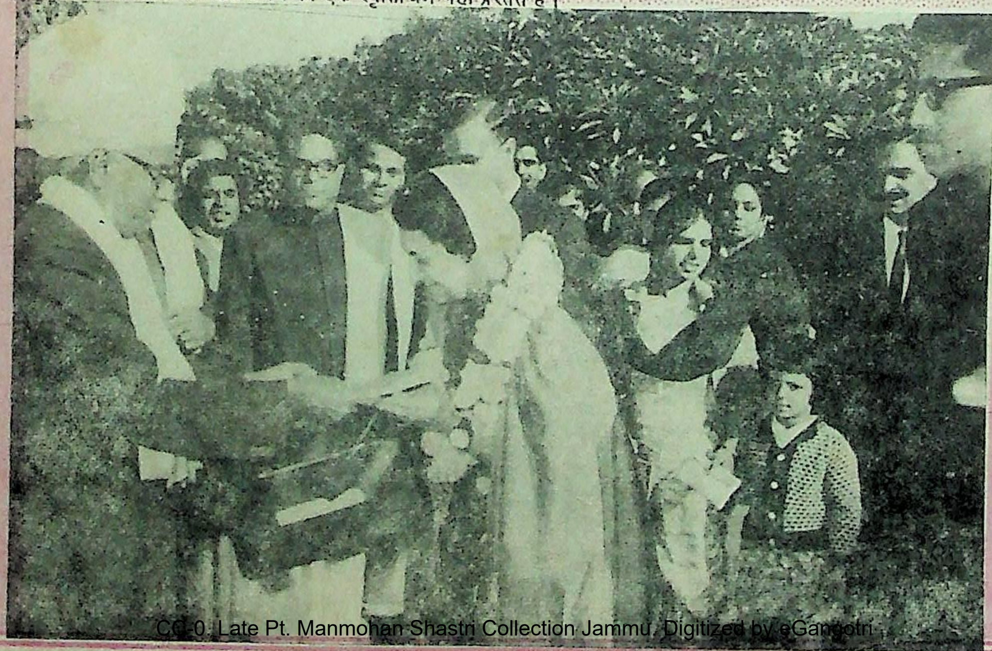
हम पंचांग पाठ्को श्रद्धालुओं, आदरणीय श्रद्धेय विद्धान पं. श्री हरदेव शर्मा जी त्रिवेदी के समक्ष नतमस्तक है, एवं सदा ही उनके मार्गदर्शन, स्नेह एवं सहयोग के आकांक्षी है। हम अनन्य मित्र श्री महेशनाथ समाधिया एवं श्री सत्यप्रकाश मंगला व श्री नरेन्द्र भटनागर एवं श्री पं. राजेन्द्र पाठक के अत्यधिक आभारी है, जिन्होंनें पंचांग प्रकाशन व्यवस्था में अत्यधिक सहयोग दिया है एवं सदैव ही हमारे मार्ग दर्शक रहे है। हम समस्त ज्योतिष्मती परिवार ज्योतिष्मती निकेतन के कार्यकर्ताओं एवं उन सभी सहयोगियों (जिनका नाम स्थानाभाव के कारण नहीं दे पा रहे है) को साभार धन्यवाद देते है जिनके सहयोग एवं कर्मठता से प्रकाशन किया गया है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ धन्यवाद सहित–

सहयोग–आकांक्षी

प्रकाशक

भूतपूर्व प्रधान मंत्रियों की दृष्टि में

आपका यह प्रिय पंचांग ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों, धर्माचार्यों एवं वरिष्ठ विद्वानों का ही कृपापात्र नहीं अपितु रंक से लेकर राजा तक के हृदय में अपना स्थान बना चुका है। (भू० पू० राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादजी—भू० पू० प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी, श्री लालबहादुर जी शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री चौ० चरण सिंह एवं अनेक प्रान्तों के राज्यपालों तथा मुख्यमंत्रियों के उद्गार यथा समय पंचांग व पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। पं० जवाहरलाल जी नेहरू को पंचांग से विशेष प्रेम था और वे अपने को पंडित कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसका प्रमाण २१ वर्ष पूर्व सोलन में घटी एक घटना प्रत्यक्ष दर्शियों को अब भी स्मरण है। १६ जुलाई १९५९ को श्री पंडित नेहरू जी शिमला से लौटते समय कुछ देर नागरिकों का अभिनन्दन स्वीकार करने के लिये सोलन में रुके थे। श्री त्रिवेदी जी ने पुष्प माला के साथ संवत् २०१६ वि० का 'विश्वविजय पंचांग' भेंट किया तो बोले—"धन्यवाद, इस वर्ष अभीतक मैंने आपका यह पंचांग खरीदा भी नहीं था।" इसपर त्रिवेदी जी ने पूछा—"क्या आप भी पंचांग खरीदते हैं?" तत्काल उत्तर मिला—"क्या आप मुझे पंडित नहीं मानते।" उस समय श्री नेहरू के साथ श्रीमती इन्दिरा गाँधी और तत्कालीन उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर सिंह जी भी थे। १[illegible] वर्ष पूर्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने जन्म दिवस पर १९ नवम्बर १९६८ को प्रधानमंत्री निवास में श्री त्रिवेदी जी से संवत् २०२६ विक्रमी का 'श्री विश्वविजय पंचांग' अभिवादन पूर्वक सस्नेह ग्रहण किया—उस समय का एक स्मृतिचित्र यहाँ प्रस्तुत है।



भारतीय गणतन्त्र के अष्टम नये राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमण के लिए हार्दिक मंगल-कामना



नव राष्ट्रपत !

आप भारतीय गणराज्य के अष्टम अधिपति गणपति है । वेद उसे गणपति कहते है जो निधिपति होने के साथ-साथ प्रियपति भी हो । अत: आपको गणपतित्व की चिरप्रतिष्ठा के लिए जन-जन की प्रियता और राष्ट्र समृद्धि की वृद्धि के लिए सतत जागरूक रहना चाहिए । आशा है आपके अष्टम राष्ट्रपतित्व कार्यकाल मे भारत अष्ट (इष्ट) सिद्धि प्राप्त करेगा ।

महामहिम् ! भारत सदा तत्वदर्शी ऋषि-महात्माओं की छत्रछाया में ही सुखी, सम्पन्न और समृद्ध रहा है । आप तत्वदर्शी लोकप्रिय महामानव है । मनुष्यकृत प्रज्ञापराध एवं प्रकृति-प्रकोप-पीडित परिस्थितियों से घिरे हुए जिस कठिन काल मे आपने पदभार सम्भाला है उसमें सदा आपको अपने नाम (राम स्वामी) के अनुरूप मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्श को जीवन में ढालकर राष्ट्र की रक्षा करनी होगी और राष्ट्रघाती शत्रुओं के लिए वेङकट (विकट) रूप भी धारण करना होगा । इस समय मूढ मानव की नासमझी ने परिस्थितियों के पुण्य-प्रवाह को छिन्न-भिन्न कर दिया है-इस कठिन काल मे भारतीय जनता का वही परिष्कृत नेता है जो परिस्थितियों के प्रवाह को उचित दिशा मे बहा दे। राष्ट्र का विश्वास है कि चतुर राजनीतिज्ञ ब्रह्मवर्चस्वी सूक्ष्मदर्शी श्री रामास्वामी वेंकटरमण इस महान् कार्य की पूर्ति करेंगे।

प्रभो! भारतीय गणतन्त्र के नये राष्ट्रपति को अपने उत्तर दायित्व की पूर्ति का बल दो। ओज दो।। साहस दो।।। यही हमारी मंगलमय प्रभु से प्रार्थना है श्रीविश्वविजय-पञ्चांग'-परिवार "अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः।" इस वेदवाणी के द्वारा आपके शुभ शत-शारदीय जीवन के लिए मंगल कामना करता है।

मंगलाकांक्षी

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

प्रधान सम्पादक सञ्चालक 'ज्योतिष्मती' और

'श्री विश्वविजय पंचांग' सोलन (हिमाचल प्रदेश)

नव-निर्वाचित नये उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा का हार्दिक-अभिनन्दन



अभी गत अगस्त मास मे भारतीय गणतन्त्र के ९वें उपराष्ट्रपति पद के लिए महाराष्ट्र के राज्यपाल डा. शंकरदयाल शर्मा का निर्विरोध सर्वसम्मत चुनाव होना उनकी निष्पक्ष लोकप्रियता का प्रतीक है। वर्तमान चुनाव प्रणाली **भारतीय आर्षपरम्परा नहीं है**-इसमें ५१ प्रतिशत वोट पाने वाले को विजयी और ४९ प्रतिशत वोट पाने वाले को पराजित घोषित कर दिया जाता है। जिस प्रान्त या राष्ट्र की आधी प्रजा असन्तुष्ट हो वह सर्वप्रिय शासक नही कहा जा सकता। डा. शर्मा मध्य प्रदेश, पजाब, महाराष्ट्र में जहाँ भी जिस उच्च पद पर रहे वहाँ उन्होंने एक न्यायप्रिय सफल शासक के रूप मे लोकप्रियता प्राप्त की है। वे ६४ वर्षीय ब्रह्मवर्चस्व सम्पन्न, अनुभवी,दूरदर्शी कुशल राजनीतिज्ञ है। नवम उपराष्ट्रपति के रूप में वे भारत को नवनिधि प्राप्त कराने मे सफल होंगे। ९ का अंक भगवती सिद्धिदातृका रूप है।

हम 'श्रीविश्वविजय पञ्चांग'-परिवार की ओर से इस शारदीय नवरात्र पुण्यपर्व मे महाशक्ति से प्रार्थना करते है कि वे डा. शर्मा को विश्व-कल्याण के लिए शत-शारदीय स्वस्थ जीवन शक्ति प्रदान करें। विश्व कल्याण के लिए भारतीय ऋषि द्वारा की गई निम्नाङ्कित मगल कामना से हम नये उपराष्ट्रपति का हार्दिक अभिनन्दन करते है।

दुर्जनः सज्जनो भूयात्सज्जनः शान्तिमाप्नुयात् । शान्तोमुच्येतबन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत्॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्य शालिनी। राष्ट्रोऽयं क्षोभरहितो साधकाःसन्तु निर्भयाः॥
शिवमस्तु सर्व जगतां हित निरता भवन्तु भूतगणाः।दोषाः प्रयान्तु शान्तिः, सर्वत्रजनाः सुखिनो भवन्तु॥

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

प्रधान सम्पादक सञ्चालक 'श्रीविश्वविजय पंचाग एवं ज्योतिष्मती'

ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

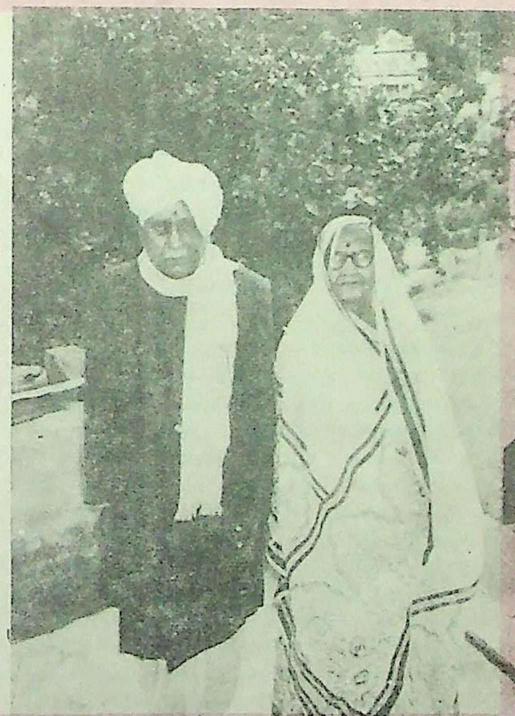
* "श्री विश्वविजय पंचांग" के अभिनव प्रशंसक *



"जनमानस–हृदय–सम्राट, भारत के युवा–कर्णधार सर्वकल्याणकारी, लोकप्रिय, प्रधानमन्त्री 'राजीव लोचन' श्री राजीव गाँधी"



"देवतात्मा हिमाचल प्रदेश के यशस्वी वर्तमान मुख्य मंत्री "श्री १०५ राज[illegible] जी"



श्री विश्वविजय पंचांग के प्रधान सम्पादक संस्थापक श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी जी अपनी आदर्श अर्धांगिनी गृहलक्ष्मी श्रीमती गोविन्दी देवी जी के साथ

ईश्वर से कामना

चि० सुपुत्र श्री सुधाकर शर्मा एवं श्रीमती सुमन शर्मा अपने इन पूज्य माता पिता तथा श्री सतीश कुमार गुप्ता एवं श्रीमती विजय लक्ष्मी परम श्रद्धेय पित्र तुल्य श्री त्रिवेदी [illegible] आयु की कामना करते है –

भारतीय गणतन्त्र के अष्टम नये राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमण के लिए हार्दिक

नव-निर्वाचित नये उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा का

हार्दिक-अभिनन्दन

प्राक्कथन

"आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पदाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमम्बिकाया" ॥

पंचांग प्रेमी पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब उनके इस जगत-प्रसिद्ध "श्री विश्वविजय-पंचाग" का प्रकाशन किसी अन्य अर्थलोलुप प्रकाशक के हाथ में न रह कर श्री ब्रजेश्वरी की कृपा से विगत सं. २०४१ वि. की श्रीराधाष्टमी के पुण्यपर्व पर मोक्षदा मथुरा पुरी में स्थापित 'ज्योतिष्मती-प्रकाशन' से हो रहा है। गत तीन वर्ष में ज्योतिष्मती त्रैमासिक-पत्रिका के १२ अंक भी इसी संस्थान से प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक वर्षों से पाठकों की यह शिकायत थी कि पंचाग का मुद्रण कागज और वितरण व्यवस्थास्तर प्रति वर्ष गिरता जा रहा है। कागज घटिया स्तर का होने के कारण पंचाग का स्थायित्व भी वर्षों तक नहीं रह पाता था।

अब गत तीन वर्षों से यह पंचाग विगत वर्षों की अपेक्षा कागज मुद्रण एवं सफाई की दृष्टि से अधिक सुन्दर रूप में प्रकाशित हो रहा है, गणित-फलित-तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र सम्बन्धी परिश्रम साध्य सामग्री भी बढ़ाई गई है। इस श्रमसाध्य कार्य में व्यय अधिक हुआ किन्तु पंचाग प्रेमी पाठकों की संतुष्टि एवं सुविधा को ध्यान में रखकर ही संस्था ने यह भार उठाया है। कागज का भाव गत वर्ष की अपेक्षा वृद्धिंगत है, फिर भी इस वृहत्काय पंचाग के मूल्य में नाम मात्र वृद्धि की गई है। आशा है सहृदय पाठक-बंधु इसे उचित समझ सहर्ष स्वीकार करेंगे।

आज से ४५ वर्ष पूर्व सं. २००० वि. में जब उत्तर भारत में कोई भी श्रमसाध्य सर्वाङ्गपूर्ण, शुद्ध, दृक्पक्षीय पंचांग नहीं था, उस कठिन काल में मुझ जैसे एक सर्वथा निराश्रित साधनहीन, निर्बल-व्यक्ति के हृदय में किसी अव्यक्त महाशक्ति की अन्तःप्रेरणा से शुद्ध चित्रापक्षीय पंचागनिर्माण का सत्संकल्प उत्पन्न हुआ। कुराली (पंजाब) में १४ वर्षों तक "श्रीमार्तण्ड पंचाग" के सहायक के रूप में कार्यभार संभालने के कारण मुझे अनुभव तो था ही कि किसी नये पंचाग को चलाने में कितनी विषम समस्याएँ और कठिनाइयाँ आती है, अतः विचलित न हो कर स्थिर चित से सं. २००१ से ही दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर एक सर्वाङ्ग शुद्ध दृक्पक्षीय "पंचाग" प्रकाशन का निश्चय कर लिया और नाम रखा "श्रीविश्वविजय पंचाग"। आरम्भ में ४ वर्ष तक इस पंचाँग का मुद्रण प्रकाशन लाहौर से हुआ। पंजाब विभाजन के बाद सं. २००५ वि. से इस पंचाग का मुद्रण प्रकाशन दिल्ली से होता रहा। बीच में कुछ वर्ष अजमेर से भी हुआ। प्रारम्भ के १२ वर्षों मे पर्याप्त कठिनाइयाँ आई पर माँ जगज्जननी की कृपा से पंचाग निरन्तर प्रकाशित होकर लोकप्रिय होता गया। मुझ जैसे साधनहीन निर्बल-प्राणी के प्रयास से यह पंचाँग इतना उच्च स्थान प्राप्त कर लेगा इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। आज असंख्य पाठक इसको पाने के लिए लालायित रहते हैं।

मथुरा में नयी व्यवस्था के कारण सं. २०४२ वि. का पंचाग बहुत विलम्ब से प्रकाशित हो सका था, और गत वर्ष सं. २०४४ का पंचाग मेरी भयंकर रुग्णावस्था के कारण ३ मास विलम्ब से निकल पाया, फिर भी पंचाग प्रेमी पाठकों, प्रशंसकों ने प्रतीक्षारत रहकर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। यह सब ब्रजमण्डलाधीश्वरी की अहैतुकी कृपा का ही फल है। जिस प्रकार आज से दो वर्ष पूर्व विगत सं. २०४३ का यह पंचाग वर्षारम्भ से ३ मास पूर्व मकर संक्रान्ति पर प्रकाशित हो गया था, उसी प्रकार सं. २०४५ का यह पंचाग भी मकर संक्रान्ति से पूर्व ग्राहकों तक पहुँचाने का विचार था, परन्तु महामाया की कृपा से ...

श्री 'मेवाड़ विजय-पंचाग'

-- --- निर्माण का भार मुझ अशक्त प्राणी के मस्तक पर आ पड़ा। आर्यकुल-कमलदिवाकर वीराग्रगण्य महाराणा प्रताप की पुण्यभूमि मेवाड मेरी जन्मभूमि है, इस मातृभूमि के महामहिम महाराणा राजस्थान के महाराजप्रमुख स्वर्गीय सर भूपाल सिंह जी से मेरा विशेष स्नेह रहा, इसी प्रकार उनके उत्तराधिकारी सुपुत्र विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष स्व. महाराणा भगवत सिंह जी से भी स्नेह संपर्क बना रहा--उन्हीं स्व. महाराणा श्री भगवत सिंह जी के प्रियपुत्र विद्याविनय सम्पन्न श्री अरविन्द सिंह जी ने उदयपुर में गत वैशाख मास में भेंट होने पर साग्रह अनुरोध किया कि--"उत्तर भारत पंजाब हिमाचल की सेवा में आपने जीवन लगा दिया, अब कुछ समय मातृभूमि की सेवा में लगाइये, अगले नये वर्ष सं. २०४५ वि. से मेवाड के गौरव और आपकी ख्याति के अनुरूप उदयपुर के अक्षांश रेखांश पर "श्री मेवाड़ विजय पंचांग" का प्रकाशन महाराणा मेवाड पब्लिकेशन ट्रस्ट से अवश्य होना चाहिए।" अभी मरणासन्न स्थिति की रोगशय्या से उठे निर्बल वृद्ध शरीर में अब यह गुरुतर भार उठाने की शक्ति कहाँ से मिलेगी? यह प्रश्न उठतेही तत्काल अन्तःस्तल से यह उत्तर मिला--"तू करने वाला है कौन ? जिस आद्या शक्ति एवं जगन्नियन्ता भगवान श्रीएकलिंगेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में आदेश मिला है उसे स्वीकार कर ले, "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ तो स्वयं महाशक्ति हैं।" अतः "श्रीमेवाड विजय पंचाग" की स्वीकृति मैंने दे दी। जैसे-तैसे पंचाग-निर्माण का कार्य पूर्ण होने पर उसे सुन्दर रूप में मुद्रित कराने का भार भी स्वयं वहन करना पड़ा। मुद्रणालय (प्रेस) भी पंचाग के लिये एकदम नया था। अतः दो मास वहीं बैठकर चि. डा. भवानी शंकर त्रिवेदी के सहयोग से श्री गीताजयंती पर (१ दिसम्बर १९८७) "श्रीमेवाड़ विजय पंचाँग" का मुद्रण कार्य पूर्ण करवाया। नये पंचाग कार्य में व्यस्त रहने के कारण इस "श्रीविश्वविजय पंचाग" के प्रकाशन में दो मास का अकल्पित विलम्ब हो गया, इसकामुझे खेद है। यदि माँ की कृपा रही तो आगामी वर्ष सं. २०४६ वि. का पंचाग वर्षारम्भ से ४-५ मास पूर्व प्रकाशित हो सकेगा। पाठक विश्वास रखें।

स्नेहाशीर्वाद

इस पंचाग के गणित कार्य में स्व. पं. बंशीधर जी के सुपुत्र चि० दामोदर प्रसाद शर्मा ने सहयोग दिया उनको और मुद्रण प्रकाशन कार्य में चि. श्री सतीश कुमार, सुनील कुमार एवं अ० सौ० श्रीमती विजय लक्ष्मी गुप्ता ने जो अथक निष्ठापूर्वक परिश्रम किया उनको मेरा स्नेहाशीर्वाद है।

"देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य" ॥

"शिवमस्तु सर्वजगतः"

ज्योतिष्मती निकेतन
सोलन (हि.प्र.)

मातृचरणचञ्चरीकः
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

आरम्भिका

या विद्या शिवकेशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी ।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषुप्रोन्ता जगत्साक्षिणी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥

ज्योतिश्शास्त्र प्रत्यक्ष फल दायक है। इसमें सन्देह नहीं, किंतु इस शास्त्र पर सूक्ष्म अध्ययन और अनुशीलन की आवश्यकता है। इस शास्त्र का सृष्टि के आदि काल में भारतीय महर्षियों ने ही आविष्कार किया। भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षा वृत्ति से यह विज्ञान विदेशियों के हाथ लगा, उन्होंने इसको अपनाकर अद्भुत नाम एवं यश प्राप्त किया। अनेकों मुसलमान और अंग्रेजों ने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे और आज का समस्त पश्चिमी संसार इस विद्या के प्रभाव से लोगों को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीनवीच की संसार प्रसिद्ध प्रयोगशाला कौन नहीं जानता ? वहां की जनता एवं सरकार अब भी प्रतिवर्ष करोड़ों रु० व्यय कर इस शास्त्र के अनुसंधान में लगी हुई है। पर, इसी शास्त्र के उद्गम स्थान भारत की दशा बड़ी शोचनीय है। यहां इस विज्ञान को कोई किसी प्रकार की सहायता तो पहुंचाता नहीं, पर आक्षेप या कुठाराघात करने पर सब प्रस्तुत हो जाते हैं। इन सब कारणों से व्यथित होकर यथाशक्ति इस वैज्ञानिक शास्त्र के द्वारा भारतीय संस्कृति के समुत्थान की शुभकामना से ही हम गत ४४ वर्षों से 'श्रीविश्वविजय- पंचांग' के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं।

केतकी चित्रापक्षीय पंचांगों की सब ओर से संपुष्टि

उत्तर - भारत में केतकी चित्रापक्षीय पंचांग का जो कार्य हमने ४ २ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था उसके प्रचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रायः सभी प्राचीन पंचांगकारों ने सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव, मकरन्द और ब्रह्मपक्षीय ग्रहों के स्थान में चित्रापक्षीय (ज्योतिर्गणित केतकी आदि से) शुद्ध दृक्तुल्य ग्रह ग्रहणोदयास्तादि लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। विद्वान् सहयोगियों ने अनुभव किया है कि इस समय जब सूर्य परम मंदफल और चन्द्रमा के संस्कार फलों में कई कलाओं का अन्तर प्रत्यक्ष सिद्ध है तब सूर्य चन्द्रमा से निष्पन्न तिथिमान में भी १० - १५ घटी तक का अन्तर स्वाभाविक है। केतकी गणित के आधार पर दिये हुए 'श्रीविश्वविजय - पंचांग' के तिथ्यादि धर्मशास्त्रीय निर्णय व्रतोपवासादि के लिए उपयोगी हैं, इसमें अब किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत - सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' और 'केलेण्डर - रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट' में भी यही तिथि स्वीकार की गई है और इसके आधार पर राष्ट्रीय पंचांगों और राजकीय केलेण्डरों में पर्व त्यौहार एवं छुट्टियां लगाई जाती हैं। विगत सं० २०१९ के चैत्र मास में कुम्भ महापर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्रीसनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आमन्त्रण पर उत्तर - भारतीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि अगले वर्ष सं० २०२० वि० से उत्तर - भारत के सभी पचांगकार अपने - अपने पचांगों में तिथि नक्षत्र योग के घट्यादि का मान भी नवीन दृक्पक्ष (केतकी ज्योतिर्गणित वैजयन्ती आदि) से ही लगावेंगे। तदनुसार पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के प्रसिद्धपंचांगों में विगत वर्ष सं० २०२० से तिथ्यादि भी नवीन सूक्ष्म गणित से लगानी प्रारम्भ कर दी, यह उत्तर - भारत में पंचांग एकीकरण के लिए परम हर्ष का विषय है।

इससे कुछ वर्ष पहले वैष्णव - सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री १०८ गो० गोकुलनाथ जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्दजी तीर्थ, पुरीमठ, श्री १०८ जगद्गुरुशङ्कराचार्य सेकेश्वर करवीर मठ, जगद्गुरु श्री १०८ अनन्ताचार्य महाराज काञ्ची काम- कोटि मठ आदि के शङ्कराचार्यचरणों ने भी सूक्ष्म तिथि से ही धर्मनिर्णय महाराज करने के आज्ञा पत्र निकाले हैं। वल्लभ- सम्प्रदाय की प्रधानपीठ श्रीनाथद्वारा के तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ गोविन्दलालजी महाराज की आज्ञानुसार गत २८ वर्षों से 'श्रीनाथपचांग का भी केतकी चित्रापक्ष से ही निर्माण हो रहा है और नवलगढ़ के 'सरस्वती पचांग' में भी अब तिथ्यादि मान, सूक्ष्म केतकी गणित से ही छपने लगा है। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य और जैन- धर्म के आचार्यों के भी सूक्ष्म गणित प्रत्यक्ष पचांग दृग्गणितानुसार प्रकाशित होने लगे हैं।

कुछ सज्जन तिथिमान को अदृश्य या अप्रत्यक्ष कहकर उसे आधुनिक काल के लिए अप्रत्यक्ष स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव सूर्यसिद्धान्त ब्रह्मपक्षादि से बनाने का आग्रह करते हैं—यह वर्तमान काल के लिए उपयुक्त नहीं। इस विषय में तैत्तिरीय संहिता, सिद्धान्त - कामधेनु, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, नारदीय- पुराण आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण गत वर्षों के पंचांग की आरम्भिका में हम प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल दो आप्तवचन दे रहे हैं-

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम् ।
दृष्यते तेन पक्षेण कर्यात्तिथ्यादि निर्णयम् ॥ (वशिष्ठः)
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्समभियं प्रोक्ता मया सा तिथिः ।
ग्राह्या मंगलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा ॥ (ति० चि०)

भारत सरकार के मौसम - विभाग और अखिल - भारतीय - ज्योतिषपरिषद् के संयुक्त तत्वावधान में दि० १९ - २० नवम्बर १९६८ को विज्ञानभवन, नई दिल्ली में विशाल पचांग गोष्ठी का आयोजन किया गया —उसमें समस्त भारत के नवीन प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध विद्वान् पंचांगकार सम्मिलित हुए थे। दो दिन के विचार विमर्श के अनन्तर भारी बहुमत से दृक्पक्षीय (चित्रापक्षीय अयनांश) पचांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाणित किया गया।

इस वर्ष पचांग के अन्त में दैनिक चन्द्र का उदय—अस्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम घण्टा- मिनटों में (दिल्ली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता के दिये गये हैं। आगामी वर्ष के पंचांग में अन्य कई उपयोगी विषय बढ़ाये जायेंगे।

ज्योतिष्मती निकेतन
जम्मू (बिहार)

विदुषामनुचरः-
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

पंचांग देखने की विधि

१—इस पंचांग (श्रीविश्वविजय) का सभी गणित दिल्ली के अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१२ पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा. स्टे. टा. से समाप्ति काल के हैं, जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम से होंगे।

२—सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली के हैं। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ावें।

३—इस पंचांग में करण सूर्योदय कालान दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

४—सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्र - मार्ग आदि भारतीय स्टें. टा. में हैं . जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

५—महीनों में अष्टमी पूर्णिमा एवं अमावश्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे. टा. प्रातः घं० ५ मि० ३० के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय - अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की हैं।

६—तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा ग्रहाचार आदि में २४ - २५ - २६ आदि अंक लिखें हैं उनका अर्थ यह है कि २४ को रात्रि के बारह बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे समझें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटाकर अर्द्ध रात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

७—इस पंचांग का गणित आचार्यों ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गई है वहां अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये हैं। यहां निरयन पद्धति को सर्वत्र मान्य की है।

८—दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार दिल्ली का है। और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

९—लस्टर में AA X.+. आदि चिन्ह दिये हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह जहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है - नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से संपूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ.=अश्विनी (नक्षत्र) अतिगंड (योग)
अग्नि (पंचक) अक्टूबर अगस्त अप्रैल(मास)
अनु.=अनुराधा (नक्षत्र)
आ.=आर्द्रा न. आयुष्मान् यो. आषा. अश्विन
उ. षा.=उत्तराषाढ़ (नक्षत्र)
उ. भा.=उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं.=ऐन्द्र (योग)
क.=कर्क, कन्या (राशि) कला

अं.=अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.=उदय उपरान्त
उ.फा.=उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
ब्र.=ब्रह्म (योग)
वृ.=वृद्धि (योग)
बु.=बुध (वार) बुध ग्रह

का.=कार्तिक (मास)
क्रां. सा.=क्रान्ति साम्य (महापात)
कृ.=कृत्तिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष
कु.=कुंभ (राशि)
गु.=गुरु (वार) गुरु ग्रह
गु. दा.=गुरु दान से
गो.=गोधूलि (लग्न)
गं.=गंड (योग)
घ.=घटी
घ.=घन्टा
चि.=चित्रा (नक्षत्र)
चै.=चैत्र (मास)
चौ.=चौर (पंचक)
चं.=चन्द्र (सोमवार) चन्द्र ग्रह
ज.=जयन्ती, जनवरी (मास)
जू.=जून (मास)
जु.=जुलाई (मास)
ज्ये.=ज्येष्ठ (मास) ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता.=तारीख
तु.=तुला (राशि)
दि. ल.=दिन में लग्न
ध.=धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु.=धूलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु.=ध्रुव (योग)
धृ.=धृति (योग)
निं.=निंबार्क (संप्रदाय)
नृ.=नृप (पंचक)
प.=परिघ (योग) पल
प्र.=प्रवेश
प्रा.=प्रारम्भ
प्री.=प्रीति (योग)
पु.=पुष्य (नक्षत्र)
पुन.=पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा.=पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा.=पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा.=पूर्वाभाद्रपद (नक्षत्र)
फाल्गु.=फाल्गुन

भ.=भरणी (नक्षत्र) भद्रा
भाद्र.=भाद्रपद (मास)
म.=मघा (नक्षत्र) मकर (राशि) मई मास
मा.=मार्गशीर्ष, माघ मार्च (मास)
मि=मिनट, मिथुन राशि (लग्न) मिति
मी.=मीन (राशि)
मु.=मुहूर्त
मू.=मूल (नक्षत्र)
मे.=मेष (राशि) लग्न
मृ=मृगशिर (नक्षत्र) मृत्यु (पंचक)
र.=रवि (वार) रवि (ग्रह)
रा.=राहू. (ग्रह) राष्ट्रीय, राशि
रे=रेवती (नक्षत्र)
रो.=रोहिणी (नक्षत्र) रोग (पंचक)
ल.=लग्न
व.=वज्र, वरियान् यो. वणिज क. वक्र गति
व्र.=व्रत
व्य.=व्यतिपात (योग)
वृ.=वृद्धि (योग) वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या.=व्याघात (योग)
वि.=विशाखा (नक्षत्र) विष्कंभ (योग)विकला
वि.मु.=विवाह मुहूर्त
वै.=वैष्णव संप्र. वैधृति यो. वैशाख मास
श.=शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि.=शिव योग
शु.=शुक्रवार, शुक्रग्रह, शुभ, शुक्ल (योग) शुक्ल (पक्ष)
श्रा.=श्रावण (मास)
सा.=साध्य (योग)
स्वा.=स्वाती (नक्षत्र)
स्मा.=स्मार्त (संप्रदाय)
सि.=सिद्धि (योग) सितम्बर (मास)
सि.=सिंह (राशि)
सु.=सुकर्मा (योग)
सौ.=सौभाग्य (योग)
ह.=हस्त (नक्षत्र) हर्षण (योग)
हि.=हिन्दी (मास - तारीख)

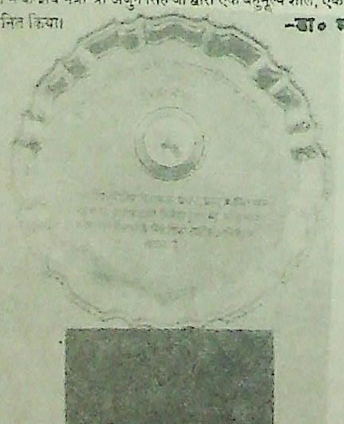
श्री विश्वविजय पंचांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियां

'श्री विश्वविजय पंचांग' और 'ज्योतिष्मती' के प्रधान संपादक संचालक पूज्य पितृव्यपाद पं. श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से संतुष्ट होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त १९८२ को संस्कृत-दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड-फाउण्डेशन उदयपुर ने राजमहल में आपको ५००१) रु., उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारित ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पितृव्य-पाद को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी), सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिष्मार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों एवं अभिनन्दन पत्र प्राप्त हो चुके हैं। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलनों में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी सार्वजनिक संस्थाएं आपके दिव्यगुणों से परिचित हैं। वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते हैं।

गत दिसम्बर से अप्रैल ८७ तक आप जयपुर (मुख्य मंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व-उन्नयन-संसद ने आपको "डाक्टर आफ एस्ट्रोलोजी" की सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी के कई पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है।

अभी गत १४ अगस्त १९८७ को इण्डियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलोजीकल साइन्सेज मद्रास की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट करके सम्मानित किया।

-डा० भवानी शंकर त्रिवेदी



'श्रीविश्वविजय–पंचांग' के प्रशंसक महापुरुष

'श्रीविश्वविजय–पंचांग' पर भारत के प्रायः सभी गणमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्च राज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र–पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

महामहिम भू.पू. राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उ.प्र. के भू.पू. मुख्यमंत्री और राजस्थान के भू.पू. राज्यपाल स्व. श्री सम्पूर्णानन्द जी। उ.प्र. के भू.पू. मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलवेमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्रनेता श्री कमलापति त्रिपाठी, भारत के भू.पू. प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरण सिंह जी। रा. स्व. सं. के भू.पू. सरसंघचालक स्व. श्री मा.स. गोलवलकरजी। भू.पू. अजमेर मेवाड़-राज के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भू.पू. वित्त व शिक्षा मंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय। भारत सरकार के भू.पू. राज्यमंत्री और संसद के सचेतक, मध्य प्रदेश के भू.पू. राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह, लोकसभा के भू.पू. अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भू.पू. मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास, एवं राजस्थान के वर्तमान यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं वर्तमान उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा। उदासीन सम्प्रदाय आचार्य विश्व भर में वेद मन्दिरों के प्रतिष्ठापक १०८ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् सर्वतंत्रस्वतंत्र महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर "श्री जी" श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर, जगद्गुरु शंकराचार्य, अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखण्डानंद जी सरस्वती महाराज ब्रह्मलीन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान् सन्त योगिराज राष्ट्रकुलगुरु अनन्तश्रीविभूषित परमशाक्त मणिपुरवासी श्री स्वामी जी महाराज श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के मणिद्वीप वासी श्री १०८ आचार्य श्री चरण तीर्थजी महाराज स्व. महामहोपाध्याय प. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी। कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी। स्व. श्री पंडित गणपतिदेवजी शास्त्री पचांगकर्त्ता काशी। स्व. त्यागमूर्ति श्री १०८ गो. गणेशदत्त जी महाराज रामभक्त स्व. श्री पंडित कपीन्द्र जी महाराज स्व. श्री पद्मभूषण श्री डा. सूर्यनारायण जी व्यास ज्योतिषाचार्य। स्व. श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार आद्य संपादक 'कल्याण'। स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

स्नेही सन्मित्रों के पत्र

गत अर्धशताब्दी की लम्बी अवधि में देश-विदेश के अनेक महापुरुषों (अनुभवी तन्त्र-मन्त्रमर्मज्ञों, दैवज्ञों, वैद्यों एव प्रमुख राजपुरुषों) से मेरा स्नेह-सम्पर्क रहा है। कुछ वयोवृद्ध-विश्वविख्यात-सिद्धहस्त-सफल चिकित्सकों, तान्त्रिकों एवं ज्योतिर्विदों का आत्मीय-स्नेह प्राप्त करने का सौभाग्य भी इस जन को प्राप्त हुआ है। समय-समय पर उन महापुरुषों के आत्मीय स्नेहपूर्ण पत्र मुझे प्राप्त होते रहे है – जो साहित्य की अमूल्य निधि थी। उनमें से अनेक अनुसन्धानोपयोगी पत्र मेरी उपेक्षावृति से नष्ट हो गये (कुछ दीमक, कीड़े, चूहों ने खा लिए) इसका मुझे भारी संताप है। जो कुछ बचे हैं उनमें से कुछ उपयोगी पत्र प्रतिवर्ष पचांग में प्रकाशित करना गत नौ वर्षों से प्रारम्भ किया है। उसी क्रम में दो पत्र यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

(१)

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्योतिर्विज्ञानाचार्य बन्धुवर स्व. पद्मभूषण डॉ. सूर्य नारायण व्यास का ४१ वर्ष पुराना एक महत्वपूर्ण पत्र मैनें गतवर्ष सं. २०४४ वि. के 'श्री विश्वविजय पंचांग' में पृष्ठ ४ पर छापा था। उससे एक दिन बाद २७-१-१९४६ का पत्र यहां प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें वायुयान से दुर्घटनाग्रस्त हो कर मरने वाले पांच प्रसिद्ध पुरुषों का जन्म-लग्न और मृत्यु समय की ग्रहस्थिति बताती है. इससे फलित ज्योतिष में अनुसंधान करने वालों को पर्याप्त सहायता मिलेगी।

– सम्पादक

पं. सूर्यनारायण व्यास

भारती भवन, उज्जैन C.I.
२७-१-४६

प्रियवर,

कल मैने पत्र भेजा है, मिलेगा ही, सुभाष बाबू की पत्रिका में जो इष्ट है वह संदिग्ध ही है !किन्तु, लग्न वृष ही निश्चित है। मुझे अन्य प्रामाणिक स्थल से पुनः प्राप्त हुआ, इसलिये भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त कुछ और कुण्डलियां मिलान के लिये उपलब्ध हुई हैं, इनमें भी विमान से अपघात हो जाने वाले व्यक्तियों की ही हैं। इसलिये मिलान करने में सहायक सिद्ध होंगी।

श्री सुभाष बोस — जन्म २३-१-१८९७ | ड्यूक ऑफ कैण्ट — जन्म २०-१२-१९०२ | ड्यूक ऑफ कैण्ट — मरण दिन २५-८-४२

यु. प्रताप सिंह सांगली — जन्म २६-११-१९१६ | यु. प्रताप सिंह सांगली — मरण दिवस २२-८-१९४२ | पन्त वैद्य — जन्म १५-७-१९०८ | पन्त वैद्य — मरण दिवस २१-७-१९३४

मधुसूदन दात्ते — जन्म २२-५-१९१७ | मधुसूदन दात्ते — मरण दिवस २३-२-१९४३ | सुभाष अपघात दिन — २०-८-१९४५ ई.

एक बात इन सभी कुण्डलियों में देखने योग्य है कि अपघात दिन उसी लग्न में (जो जन्म लग्न है) अपघात योग अवश्य आ जाते है, सभी विमान से गिरे हैं और प्रायः वातप्रधान ग्रह अथवा राशियां अष्टम से सम्बन्धित है, पर यह स्थूलमान है। इनमें ग्रहों के अंशात्मक बल पर ध्यान देना भी आवश्यक है। 'सेन' (शंभूनाथ) महाशय की सूचित कुण्डली भी मुझे दिखाई दी थी यह मेष की है ओर सग्रह की वृष की है। दोनो में निकटता लग्न की है। इसके अतिरिक्त जो घटना संभावित हुई है वह वृष से निकट आ जाती है, संभव है ग्रहों की अबलतावश वह मरणासन्नता तक ही सीमित रह गई हो। लग्नेश एवं अष्टमेश की स्थिति देखते हुए दीर्घायु तो रहते है, मैं भी उनका अल्पायुष्य नहीं मानता। शनि आपत्ति और साहसपूर्ण घटना का कारण हो सकता है। जो उन्होंने प्रच्छन्न प्रवृत्तियों का अनुकरण किया था, वह तो शनि-मंगल के कारण ही हो सकता था वृष लग्न से ही यह संभावित है। मेष लग्न से गुरु की स्थिति को देखते हुए यह संभव नहीं। पंचम गुरु से (मेष से) वे केवल बौद्धिक विचारक प्राणी ही होते हैं। वृष के मंगल और शनि से ही सैनिक मनोवृति और क्रान्तिकारक बन सकते हैं। अवश्य ही यदि ५/०८ इष्ट हो और ११ लग्न हो तो भी वृष के अनुरुप बहुत सी घटना घटित हो जाती हैं। लग्न ११ में दशम शनि सप्तमेश रवि व्ययस्थ, षष्ठेश-अष्टम, ४ में मंगल, सप्तम गुरु, लग्नस्थ शुक्र में उनकी मनोरचना के अनुरूप हो जाते हैं। यह तो वृष लग्न का दशम स्थानीय लग्न (११) होने से अनेक बातों में समान हो जाना स्वाभाविक है इससे भी वृष की पुष्टि होती है। इससे वृश्चिक के बृहस्पति आने पर उनका प्रकट हो जाना संभव है। कोई विस्मय नहीं कि ६ के गुरु में भी (वृष लग्न से) कुछ पता लग जावे ? और वृश्चिक में तो प्रकाश में आ जाना चाहिये। गुरु में मंगलान्तर में उन्होंने (वृषलग्नानुरूप) लग्नगत मंगल के कारण ही महान् सैनिक संघटन और आक्रमण प्रवृति की है और अब राह्वन्तर में (सूर्य सहयोगी राहु है) प्रच्छन्न हो जाना भी स्वाभाविक है। आगे शनि दशा में उनका प्रकट हो जाना और दशमेश शनि सप्तम होने के कारण महत्ता एवं समादरणीय नेतृस्थान प्राप्त कर लेना साहजिक दिखाई देता है। शनि में परिणीतावस्था भी आ सकती है। पर शनि उनको ऊपर उठाकर जन मान्यता में अधिक आदरणीय स्थान प्राप्त करा सकेगा। शनि आशा और विश्वास का स्थान है अस्तु ! पंचांग शीघ्र भेजना।

भवदीय

सू.ना. व्यास

(२)

'ज्योतिष नाड़ी' आदि ग्रन्थों के निर्माता, फलित ज्योतिर्विज्ञान के मूर्द्धन्य वयोवृद्ध विद्वान् स्व. श्री हंसराजजी कपिल ने इस निजी पत्र में, आज से २२ वर्ष पूर्व देश की जिस दुर्दशा का वर्णन किया है, उसमें पत्र-लेखक की भारत-भक्ति और अन्तःकरण की पीड़ा परिलक्षित हो रही है। गुरुमुख से ज्योतिष का अध्ययन किये बिना ही नवार्ण मंत्र की आराधना से भगवती ने किस प्रकार उन्हें संकेत आदेश दे कर पंचांग रचना एवं ग्रन्थ निर्माण की शक्ति प्रदान की और बिना किसी परीक्षा पास किये ही अद्भुत भविष्यवाणी करने की शक्ति प्राप्त हुई। इन पंक्तियों के लेखक को अधिकारी पात्र समझकर अपना गुप्त रहस्यमय जीवनवृत मित्रता के नाते इस पत्र में लिख दिया है। श्रद्धेय श्री कपिल जी की भांति मैंने भी कोई परीक्षा पास नहीं की। गुरूजनों एवं महामाया की कृपा से ही मेरे जैसे एक अनाथ अकिंन्चन प्राणी को इस स्थिति में पहुंचाकर अभी ८० वर्षीयावस्था तक नवजीवन प्रदान किया। यह दयामयी मां की अहैतु की कृपा है। श्री कपिल जी के इस पत्र से ज्योतिर्विदों को कुछ ग्रहण करना चाहिये।

— सम्पादक

ह्रीं

हरियाणा (होशियारपुर)

दिनांक २४-१०-६५

श्री परमादरणीय प्रिय त्रिवेदी जी आशीः!

पहले समय में वेदों का नाम था, अध्ययनाध्यापन भी था, पुराणों पर श्रद्धा थी। श्रवण-श्रावण भी था। दार्शनिक विद्वान् भी भारतीय गौरव के रक्षक दिखाई देते थे। कहीं-कहीं नक्षत्रों के समान दैवज्ञ भी ज्योतिष द्वारा व मन्त्र शास्त्र द्वारा चमत्कार दिखाते थे। आशा थी भारतीय राज्य में अपने नरेशों द्वारा ज्योतिष का पुनुरूद्धार होगा। अंग्रेज तो 'चीरो' जैसे वाराणसी से [illegible] एक भी ज्योतिषी प्रत्यक्षीकरण में सफल नहीं। क्या यह दोष दैवज्ञों का है ? जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था विध्वंस कर जघन्य जातियों को अनधिकारी और अयोग्य

होने पर निःशुल्क अध्ययन भूमिवजीफे और उन्नतोन्नत अधिकार नियत कर दिये जाते हैं। ब्राह्मण तो शतशः वर्षों से सहस्त्रशः कष्ट सहन कर वेद-पुराण, स्मृतियें, दर्शन, वेदांग, ज्योतिष की रक्षा करने वाले "इय-मुदर दरी दुरन्तपूरा" विपत्ति में फंसा दिये गये। उन्हें जो राजाओं से विद्वता से, वीरता से और विजयी होने से भूमिया मिली हुई थी वे भी जब्त कर ली गई। विदेशों में वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन के लिये सहायता कोष योग्यतानुसार नीयत हैं। यहा उदरपुर्ति के लिये भारतभर में कीर्तिशाली कुलों के स्वाभिमानी दैवज्ञ असहायी दासता के प्रवाह में बहे जा रहे हैं। जिन विद्वानों को आज उदरम्भरी होना भी कठिन है उन्हें किञ्चितमात्र भी सहायता न देकर उपहास करने वाले वे स्वयं उपहास योग्य नहीं ? कथंचित् प्रोत्साहित तो करने देखें, आज सहस्त्रों दैवज्ञ भुक्षा से पंगु किये जा रहे हैं। वे ये चमत्कार समष्टि और व्यष्टि सम्बन्धी दिखा सकेंगे जो कोटिशः मुद्रा खर्च कर पूना आदि में यन्त्र लगा रखें हैं, वे निरर्थक सिद्ध हो सकेंगे। विशेष खेद तो इस बात का है कि सिकन्दर के राज्य से पतनोन्मुखी नामावशेष ज्योतिष शास्त्र के उद्धार के लिये आपको विधि ने सपरिकर किया तो अपि व्याधियों ने इतस्ततः अनुसरण आरम्भ कर दिया। तो भी चिन्ता नहीं, जगदम्बा सहयोग देगी, परीक्षा भी होती है "विधिरपि विभेति तस्मान्निरतिशयं साहसोयस्य" (नलचम्पू)

श्री त्रिवेदी जी, यद्यपि "आत्मादेयः शिरोदेयं न देय मनु (मन्त्र) पुस्तकें" आगम शास्त्र का आदेश है, तथापि आप योग्य हैं। हमारे घर की इष्टदेव दुर्गा है और मन्त्र नवार्ण। पूज्य पितृवाद २० वर्ष की आयु से अन्तिम ७३ वर्ष की आयु तक असाधारण उपासक रहे। बृहज्जातक और नीलकंठी के मर्मज्ञ थे, फलित में अमोघ शक्ति के कारण विधिमाता माने जाते थे। मैं २४ वर्ष की आयु से इसी मन्त्र का आराधक बना। पूज्यपाद पिताजी पूर्णरूपेण ज्योतिष में विश्वास नहीं रखते थे। तपोबल से चमत्कारी रहे। प्रथमावस्था में मैंने परिकर्माष्टक तक लीलावती और पंचताराधिकार तक ग्रह लाघव पढ़ा था तो भी मुझे ज्योतिष का अधिकारी न समझ कर पढ़ाते नहीं थे। मैंने स्वयं बृहज्जातक और नीलकंठी की पात्यांशी दशा तक जगदम्बा की कृपा से संकेतो द्वारा अध्ययन कर पिताजी से प्रार्थना करी कि – 'मुझे नीलकंठी आती है' तो पिताजी के आदेश पर सन्मुख लग्न चन्द्र और हीनांशी पात्यांशी स्पष्ट कर दी तो योग्य समझा। २३ वर्ष की आयु से ३६ वर्ष की आयु तक इतस्ततः अध्यापक रहा। २९ वर्ष में ज्योतिष का श्री गणेश किया एवं गुरुमुख से एक अक्षर भी पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला। सन् १९१८ में पीकोटि पर से सूर्य ग्रहण स्पष्ट कर एक मास प्रथम स्कूल के मास्टरों को बताया, जबकि किसी भी पंचांगकार ने नहीं लिखा था, तबसे प्रसिद्धि पायी। ३० वर्ष की आयु में नवार्ण सहित सावरी मंत्र मिला। "मायाचरिनाथ के साथ ऋद्धि सिद्धि तुम्हारे साथ, भरो भरो भंडार काया सुखी फुरो मंत्रो ज्वालामुखी" नवार्ण से सम्पुटित किया।

इसके आराधन समय में स्त्री सहानुभूति रखती थी, तब ध्यानावस्थित मुझे रात्रि को जगदम्बा ने कुछ-कुछ समय बाद पांच छः मंत्र बतलाये और अनेकों चमत्कार दिखाये, जिनमें मुख्य विलक्षण मंत्र के केवल बीज और मंत्र का पता 'निरुक्तिलोचन – जिनेन्द्रमाला' भी साथ ही बतलाया। वे हैं आपके इसी अंक के ७४ पृष्ठ पर "व्यापार व धन की वृद्धि का मंत्र" "ॐ नमो ह्रीं" इत्यादि "मम गृहे धनं पूरय चिन्तां दूरय स्वाहा" मेरे एक शिष्य को दिल्ली दरीबा बाजार के जैनी के घर डेस्क पर पड़ी हुई ३०-३२ पृष्ठ की 'निरुक्ति लोचन,जिनेन्द्र माला' अकस्मात् मिल गई, उस पर से "मम गृहे" आदि की प्रतिलिपि कर मुझे दे गया। तबसे इस मंत्र की भी कुछ मालाएं करता हूं। मेरे मंत्र में "नमः" पाठ नहीं। यह है मंत्र। मेरा दुर्गा पर अटल विश्वास व श्रद्धा है। जो मेरा मानसिक शास्त्रीय संकल्प होता है वह स्वयं अपनी इच्छा से सहयोग देती है, मेरे कहने पर नहीं। संवत् १९७५ कार्तिक में इन्फ्लुएंजा ज्वर से पीड़ित हुए मुझे जगदम्बा ने पंचांग बनाना सिखाया। तब मैंने संवत् ७६-७७ वि. में 'मकरन्द' से तिथ्यादि और 'दैवज्ञ-दिनोद' से ग्रहादि स्पष्ट कर पंचांग छपवाये। सं. १९७८ से कागदों की कठिनता, प्रेसों में सरकारी कारोबार की विशेषता से पंचांग न छपने से बन्द कर दिया। उक्त मंत्र की कृपा से स्वतः प्रमाण 'अर्घ-काण्ड' सौ श्लोकों में लिखा। स्वयं मैंनें व्यापारिक सट्टा से १३-१४ हजार रुपया कमाया। एक पैसा भी घाटा नहीं पाया, अब सर्वथा त्याग दिया। शेष फिर कभी

हंसराज कपिल

गत वि. ७ अप्रैल १९८७ को प. बंगाल की विश्व उन्नयन संसद ने अपने १४ वें चयन एवं दीक्षांत समारोह में श्रीविश्वविजय पंचांग के संस्थापक प्रधान संपादक श्री पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी को ज्योतिर्विज्ञान की सर्वोच्च मानद उपाधि 'डाक्टर ऑफ एस्ट्रालाजी' से सम्मानित किया।

Vishwa Unnyayan Samsad

(WORLD DEVELOPMENT PARLIAMENT)



SAMSAD INTELLECTUAL RECOGNITION

This is to certify that

Pandit Hardev Sharma Trivedi

has been conferred with the degree/title

Doctor of Astrology

in the Fourteenth Informal Samsad Convocation held on the APRIL 7, 1987 in New Delhi, Republic of India. He/She has also been conferred with the Whole-life membership of the Vishwa Unnyayan Samsad, Pitambar Bhavan, West Bengal, India in this Convocation.

Dated : The April 7, 1987
Pitambar Bhavan,
West Bengal, India

Director-General

THE FOURTEENTH INFORMAL SAMSAD CONVOCATION
VUS : ISC : ND : XIV : 36 : 070487

श्री विश्वविजय पंचाग के लिए अंग्रेजी के विद्वान और पत्र क्या कहते है। सम्पादक

RANGE OF WEATHER FORECAST :

ASTROLOGY vs. METEOROLOGY

THE STATESMAN-3 NOVEMBER 1987

Let me quote form the well Known Vishva VIJAYA Panchanga of Hardeo Shastri Trivedi published in November 1986 (at any rate given to the press) for the ensuing Vikram year 2044 of Gregorian 1987.

"In the ArdraPravesh horoscope the moon is in a nirjala (waterless) rasi and therefore there will be less rainfall this year, Agriculral produce will also be less."

Under "vayumandal" **Trivedi** is so specific, after a forewarning that unless a synthesis is done of the Brauma (earthly terrestrial), the antariksha (clouds etc.) and the divya planetary phenomena locally and regionally, forecasts based merely on planetary configurations connot be 100% correct.

Yet his forecasts on the basis of planetary configurations were:

(a) All quadrants being occupied by malefics, rain will not be timely.

(b) The Minister of Agriculture will have to face the problems of drought and floods.

(c) Mars, affected by other malefics, will create dry spells till August 12.

(d) Sun being behind Mars till August 24 (Bhadraped Krishna Amavasya) is not indicative of good rain but drought.

(e) North and Western parts will have drought while the eastern part floods.

Can any scientist show me a similar well-argued, scientific forecast based on terrestrial phenomena? Instead, someone showed me an analysis of a super-computer in the USA to show a vague forewarning.

Astrologers' Foresight and Meteorologits' Hindsight :

THE STATESMAN-4 November 1987

I claim to be no astro-meteorologist with sound research and long observation though I have learnt it quite well by now. But it is some of the standard "panchanga makers of the country that deserve more attention in 1987, the year of the mansoon disaster. To show how the panchanga-makers predict so specially fortnight, the directions of rain, even hailstorm and incidentally market fluctuations let me quote from **the Vishva Vijay Panchanga of Hardeo Shastri Trivedi, an 80 year old low-profile astrologer steeped in the classicism of India.**

July 26 to August 9 Forecast: There will be rain everywhere. Setting of Mercurry and Venus will cause rain in U.P., Punjab, Himachal, Rajasthan, MP., Maharashtra accompanied by strong winds. In eastern parts flood situation will be dangerous.

Fulfilment : It was only in this period that there was some relief including north and western India and the floods in eastern India, particularly in Assam, hit the headlines.

August 10 to 24 forecast : There will be good rain in the hilly regions and eastern parts. In the south-east also there will be some rains. In the middle of the fortnight there will be more wind than rains. Mars being ahead of the sun there will be less rains.

Fulfilment : It had rained as predicted in all these areas.

August 25 to Sept. 7 : The four planet-combination in Leo (Sinha) in this fortnight indicates excessive rains in some parts and drought in some parts. Rising of Mercury on Sept. 4 will cause rains in Himachal, Delhi, UP, Rajasthan with strong winds.

Fulfilment : Delhi best rain (132 mm was on August 26) and then September 6. Elsewhere it rained well, very well with 23 sub-divisions be coming normal by August 26 though it declined in September to 14 as normal and eight as marginally deficient.

October 8 to 22 forecast: Wall Street Collapse : Sun, Venus, Mercury sandwiched between Saturn on the one hand and Mars and Ketu on the other indicates a jolt to world markets. There will be clouds in the hilly reg ions and drizzle. The rising of Mars will cause hailstorm in Northern India there will be rains in Punjab, Haryana and Up.

Fulfilment : Here I have deliberetely quoted a non-mansoon forecast to draw the attention of open-minded intellectuals to the slump in Wall Street in this fortnight predicted nearly one year ago by this great astrologer. There were panicky conditions in the markets of Hongkong and Australia besides London and other places.

Kashmir and Himachal had devastating hailstorm in this fortnight besides very good rains which the meteorologists reported later, of course.

K.N. Rao

वर्ष १९८८-८९ की सम्भावनाएँ मार्च ८८ से मार्च ८९ तक

श्री के. एन. राव

इस लेख के विद्वान् लेखक श्रीराव दिल्ली में आई. ए. एस. उच्च पदाधिकारी, दैवज्ञगुण सम्पन्न सत्यनिष्ठ सदाचारी भगवद्भक्त राष्ट्रहितैषी महामानव है। इस पंचांग और ज्योतिष्मती से आपका विशेष स्नेह सदा से रहा है। आपके तथ्यपूर्ण इस अंग्रेजी लेख का शुद्ध हिन्दी रूपान्तर किया गया है, यह पंचांग पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

सम्पादक

ज्योतिष फलादेश के विचार से दो भागों में विभक्त है, प्रथम भाग होरा जो कि व्यक्ति विशेष के भविष्य हेतु है, तथा संहिता जो कि समष्टिगत राष्ट्र तथा विश्व के भविष्यकथन के लिए है। दोनों में अनुभवी दैवज्ञ उचित ईश प्रार्थना तथा उचित प्रयास द्वारा व्यक्ति के दुर्भाग्यजनित प्रभावों के निवारण को दृष्टिगत नहीं करते तथा जीवन के विषय में लचकीला विचार रखने की सलाह नहीं देते। यद्यपि घटित होने वाली घटनायें पूर्वनिर्दिष्ट होती है किन्तु दैवज्ञ के लिए सदा उन घटनाओं का सटीक फलकथन सम्भव नहीं होता।

भारत की राष्ट्रीय कुण्डली : सन् १९९५ के बाद भारत समृद्धि की ओर अग्रसर होगा, जनसंख्या कम होगी, वैभव बढ़ेगा, वर्तमान से अधिक अस्त्रास्त्र-सज्जित सेना होगी तथा प्राचीन संस्कृति तथा विरासत में मिली परम्परा तथा अध्यात्म पर आधारित राष्ट्राभिमान जागृत होगा। उपनिवेशवाद के अवशिष्ट मकडजाल मिट जाएँगे तथा नकलची भूरे साहब अजायबघर (संग्रहालय) की पुरावस्तु हो जाएँगे। यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अब तथा १९९५ के बीच क्या घटित होगा। एक संभावना विनाशक युद्ध की है, जिसमें उत्तरी भारत के अनेक महानगर नष्ट हो जाएंगे या परित्रस्त होंगे। आर्थिक संकट आगामी तीन वर्षों तक पीडित करेगा तथा रोग जिसकी भारतीयों में प्रतिरोधक क्षमता नहीं है, विशाल परिमाण में लोगों को कालकवलित करेगा, अनावृष्टि, नगरीय-दंगे, अपराध तथा डकैतियाँ तथा सम्पत्ति एवं जानों की असुरक्षा की भावना व्याप्त होगी। [illegible] करेगा। इस पृष्ठभूमि में वर्ष १९८८ का अवलोकन करें।

वर्ष १९८८ का आरम्भ न केवल सूर्यग्रहण (१८ मार्च १९८८) अपितु पूर्व में चन्द्रग्रहण (३ मार्च) के प्रभाव लिए हुए है। एक पक्ष के भीतर दो ग्रहण हुए हैं जिससे महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक परिवर्तनों का संकेत मिलता है, तथा आर्थिक संकट और गहरायेगा जिसका अभी हम अनुमान नहीं लगा सकते।

नये वर्ष की कुण्डली में दूसरा अशुभ योग दशम भाव में शनि मंगल युति है। शनि जनता का प्रतीक है तथा इस मामले में पर-राष्ट्र सम्बन्धों का भी द्योतक है। मंगल सेना, विद्रोह, दाहकत्व तथा भूमि का प्रतीक है तथा इस मामले में धर्म तथा राष्ट्रीय आय का भी द्योतक है। अतः निष्कर्ष इस प्रकार है –

अनेक विभाजनकारी आन्दोलन उदाहरणार्थ – गोरखालैन्ड, झारखण्ड तथा उत्तराखण्ड आदि पर सतर्क दृष्टि रखने की आवश्यकता है। इसी प्रकार श्रीलंका में भारत का उलझाव भारी अपव्यय का कारण बनेगा। कृषि पर निर्भर वर्गों द्वारा विद्रोह, औद्योगिक क्षेत्र में हड़ताल, भारी मुद्रा स्फीति जिसके कारण कर वसूली के दमनात्मक तरीके प्रयोग किये जाएँगे। भारत तथा पाकिस्तान में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या का सामना करना पड़ेगा। अंताराष्ट्रीय आतंकवाद तथा आंतरिक कानून व्यवस्था की समस्या अन्य घटनाओं के अतिरिक्त इस बात की ओर इंगित करती है कि धार्मिक नेता तथा राजनैतिक व प्रशासनिक व्यक्तियों की हत्या के प्रयास होंगे। आगामी वर्ष में अन्तर्राष्ट्रिय बाजारों से क्रय किये गये अस्त्रों से संबंधित राजनैतिक विवाद चलते रहेंगे। परन्तु यदि आप अपनी दृष्टि राजनीति से हटा कर राष्ट्र पर लायें तो यह स्पष्ट है कि हमने स्वतंत्रता के बाद हिमालय सी बड़ी भूल की है। हमने अराजनैतिक, विशुद्ध सामाजिक नेतृत्व जो कि राष्ट्रजीवन को अनुशासित कर सकता, पनपने नहीं दिया। राजनैतिक विवादजन्य पागलपन में हम किसी राजनैतिक मामले के पक्ष या विपक्ष में फँसकर रह जाते है। यदि १९८८ में हम सामाजिक आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित न कर सके तथा राजनीति के पंक तथा राजनीतिज्ञों की आकांक्षाओं से मुक्त न हो सके तो हमें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। कृपया स्वयं अपना निष्कर्ष निकालें।

आशा की किरणें–आगामी वर्ष की कुण्डली में तीन विशिष्टतायें हैं।

(१) इस वर्ष के बाद भारत में मूल्यवान् धातुओं तथा खानों की खोज होगी, जिससे लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को सहारा तथा स्थिरता मिलेगी।

(२) किन्हीं भारतीयों द्वारा आयुर्विज्ञान में बड़े अनुसंधान को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव प्राप्त होगा।

(३) जनसंपर्क माध्यमों को कुछ आदर्श व गौरव प्राप्त होगा।

सिनेमा व फिल्में – आदर्श व अध्यात्म की ओर उन्मुख होंगी तथा सस्ती अपराध फिल्मों की प्रवृत्ति कम होगी।

दूरदर्शन – कलात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करेगा जिनमें आदर्श व अध्यात्म की झलक होगी।

समाचारपत्र व पत्रिकायें – समाचारों की सत्यता पर जोर देंगी। आप को ज्ञात है, वर्तमान में प्रत्येक समाचार पत्र के अपने आग्रह है तथा प्रतिवद्ध है तथा जो उनके अनुकूल नहीं होते उनकी छवि विकृत करने का प्रयास होता है।

शिक्षा – जहाँ एक ओर विद्यार्थी विद्रोह का भय है, वहीं दूसरी ओर तकनीकी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जावेगा व अधिक धनराशि दी जावेगी।

पाठकों को चेतावनी देना चाहता हूँ कि यह वर्ष सारे विश्व के लिए अमंगलकारी है, तथा प्रत्येक देश अनेक कारणों से पीड़ित होंगे।

(क) इस वर्ष चार ग्रहण है, जिनमें दो मार्च ८८ में होंगे।

(ख) धनुः युद्ध राशि में शनि मंगल युति होगी।

(ग) वर्षारम्भ से कुछ पहले गुरु शुक्र युद्ध।

(घ) बुध दोहरी पीड़ाग्रस्त है, राहु से युत है [illegible] सोचनीय होगी क्योंकि बुध व्यापार का कारक ग्रह है। मंगल मई के दूसरे सप्ताह में इस योग में सम्मिलित होकर जून के अन्त तक वहीं रहेगा।

(ङ) मंगल वर्षांत तक मीन में रहेगा तथा एक ग्रहण बिन्दु पर से संक्रमण करेगा तथा दूसरे पर उसकी दृष्टि पड़ेगी। यह अन्य बातों के अतिरिक्त भूकम्प द्वारा विश्व में भारी विनाश का सूचक है तथा भारत भी पीड़ित होगा।

संपूर्ण विश्व के संदर्भ में – सम्भावित घटनायें, भूकम्प, युद्ध, आतंकवाद, विस्फोट, खान दुर्घटनायें तथा चेरनोबिल जैसी शोकपूर्ण (विशेषकर चीन के संदर्भ में) दुर्घटना है।

संयुक्त राज्य अमेरिका – राष्ट्रपति का चुनाव विवाद उत्पन्न करेगा तथा हिंसा व अमंगलकारी परिणामों का जनक हो सकता है। हिन्दुस्तान टाइम्स् में गत ६ सितम्बर के लेख में लेखक ने अमेरिका में आर्थिक संकट की ओर संकेत किया था। अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अमेरिका की छवि सुधरेगी तथा वह नैतिक चरित्र में शुचिता लाने में सफलता पावेगा किन्तु, वहाँ के लोग एड्स महामारी व वालस्ट्रीट के पराभव से चिन्तित रहेंगे।

एक अवसर पर अमेरिका किसी युद्ध में हस्तक्षेप करने का लोभ करेगा या वास्तव में ही संलिप्त होगा। अमेरिका में यात्रा, अन्तरिक्ष कार्यक्रमों, समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं के लिए यह वर्ष बुरा होगा।

सोवियत रूस – यह विचित्र प्रतीत होगा किन्तु ज्योतिष की दृष्टि में जो दिखाई देता है वह यह है कि रूस धर्म के प्रति सार्वजनिकतौर पर गम्भीर रूप से आकृष्ट होगा, तथा क्रान्ति पूर्व के दिनों के रहस्यवाद को भी पुनर्जीवित कर सकता है। कृषि के क्षेत्र में भारी सफलताएँ मिलेंगी, तथा इस देश की शान्ति संवर्धक छवि लाभान्वित करेगी। परन्तु, कहीं पर भयानक षड्यन्त्र के कारण इसकी सद्इच्छापूर्ण योजनाओं में बाधा पड़ेगी।

चीन – सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन में यह देश सर्वाधिक पीड़ित होगा, तथा भूकम्पजन्य विनाश के कारण इस देश की योजनाओं का फल इसे मिलने में बाधा आयेगी।

ईरान और ईराक – दोनों देशों को विदेशी अस्त्र प्राप्त होते रहेंगे तथा वह युद्धरत रहेंगे। शांति की सम्भावना नहीं है।

इजराइल और लेबनान – इस क्षेत्र में युद्धाग्नि और भड़केगी तथा उन देशों को भारी असुविधा होगी जो व्यापारिक कार्यों के लिए इस क्षेत्र से होकर जाने वाले मार्गों का उपयोग करते है। पुनः भारत की नववर्ष की कुण्डली के विषय में कुछ तकनीकी परिभाषाओं का जानना आवश्यक है, जिनके बिना विषय स्पष्ट न होगा:–

चार युग्म – कुण्डली में स्थित होने वाले नौ ग्रहों में से आठ ग्रह चार भागों में युग्म ग्रह है, तथा उनमें से तीन आसन्न भावस्थ है जिससे प्रकट होता है कि संघर्ष की भावना, असमंजस, आत्मविवेचना तथा दुर्जेय समस्यायें होंगी। यह युग्म निम्न है:–

मंगल और शनि – दशम भाव में है, जोकि ऊर्जा संकट, ईंधन की मूल्य वृद्धि, रसोई गैस की महंगाई तथा नगर में रहने वालों के हिस्से की बिजली को कृषि के लिए आवंटन का सूचक है।

गुरु और शुक्र – द्वितीय भाव में है, जिससे संकेत मिलता है कि सरकार सभी संभव स्रोतों से रुपये का शोषण करेगी। यह प्रयास यद्यपि प्रशंसनीय हो सकता है किन्तु इस वर्ष गुरु की अतिचारी गति के कारण स्रोतों के दोहन की योजना में त्रुटि के कारण विवाद व असंतोष उत्पन्न होगा।

सूर्य और चन्द्र – प्रथम भाव में है तथा दशमस्थ मंगल से दृष्ट है, जो कि व्याकुल सरकार द्वारा बलपूर्वक कठिन कानून व्यवस्था की स्थिति को नियंत्रित करने का सूचक है।

बुध और राहू – द्वादशभावस्थ होकर शनि से दृष्ट है जिससे कृषि उपज में समस्याएँ, कीट रोगों द्वारा कृषि हानि, अप्रत्याशित भारी वर्षा तथा कई क्षेत्रों में दक्षिण पश्चिमी मानसून की कमी के कारण फसलें क्षतिग्रस्त होंगी।

द्वितीयेश मंगल दशमेश से परस्पर परिवर्तन योग करता है तथा चतुर्थ व पंचम भाव को देख रहा है जिससे सरकार [illegible] अर्थाभाव रहेगा तथाकृषि क्षेत्र से अर्थदोहन की संभावना है।

शेष २६। पर

अवकाश दिन (छुटि्टयां तातीलें)

विक्रम संवत् २०४५ सन् १९८८-८९ में भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (दिनांक १९ मार्च १९८८ से ६ अप्रैल १९८९ तक)

१. श्री रामनवमी	२६ मार्च सन् १९८८ शनिवार
२. श्री महावीर जयन्ती	३१ मार्च सन् १९८८ गुरुवार
३. गुडफ्राईडे	१ अप्रैल सन् १९८८ शुक्रवार
४. शबे-बरात * (वै.)	२ अप्रैल सन् १९८८ शनिवार
५. वैशाखी, पंजाब-काश्मीर,	१३ अप्रैल सन् १९८८ बुधवार
६. रमजान *	१८ अप्रैल सन् १९८८ सोमवार
७. बुद्ध पूर्णिमा	१ मई सन् १९८८ रविवार
८. जमातुलविदा * (वै.)	१३ मई सन् १९८८ शुक्रवार
९. ईदुलफितर *	१८ मई सन् १९८८ बुधवार
१०. बैंकों की अर्धवार्षिक लेखा बन्दी	३० जून सन् १९८८ गुरुवार
११. ईदुलजुहा (बकरीद) *	२५ जुलाई सन् १९८८ सोमवार
१२. स्वतंत्रता दिवस	१५ अगस्त सन् १९८८ सोमवार
१३. मोहर्रम (ताजिया) *	२४ अगस्त सन् १९८८ बुधवार
१४. रक्षाबन्धन	२७ अगस्त सन् १९८८ शनिवार
१५. श्री कृष्ण जन्माष्टमी	३ सितम्बर सन् १९८८ शनिवार
१६. गांधी जयन्ती,	२ अक्टूबर सन् १९८८ रविवार
१७. चेहल्लुम * (वै.)	२ अक्टूबर सन् १९८८ रविवार
१८. दशहरा विजयादशमी	२० अक्टूबर सन् १९८८ गुरुवार
१९. भरत मिलाप	२१ अक्टूबर सन् १९८८ शुक्रवार
२०. ईद-ए-मिलाद *(वै.)	२४ अक्टूबर सन् १९८८ सोमवार
२१. रूप चतुर्दशी (वै)	८ नवम्बर सन् १९८८ मंगलवार
२२. दीपावली	९ नवम्बर सन् १९८८ बुधवार
२३. ग्यारहवीं शरीफ *(वै)	२२ नवम्बर सन् १९८८ मंगलवार
२४. गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा	२३ नवम्बर सन् १९८८ बुधवार
२५. गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस (वै.)	१३ दिसम्बर सन् १९८८ मंगलवार
२६. बड़ा दिन क्रिसमस डे	२५ दिसम्बर सन् १९८८ रविवार
२७. बैंकों की वार्षिक लेखाबन्दी (वै.)	३१ दिसम्बर सन् १९८८ शनिवार
२८. अंग्रेजी नववर्ष प्रारंभ (वै.)	१ जनवरी सन् १९८९ रविवार
२९. लोहड़ी (काश्मीर व पंजाब) (वै.)	१३ जनवरी सन् १९८९ शुक्रवार
३०. मकर संक्रांति पोंगल (वै.)	१४ जनवरी सन् १९८९ शनिवार
३१. श्री गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	[illegible]
३२. गणतंत्र दिवस	२६ जनवरी सन् १९८९ गुरुवार
३३. मौनी अमावस्या (वै.)	६ फरवरी सन् १९८९ सोमवार
३४. बसन्त पंचमी (वै.)	१० फरवरी सन् १९८९ शुक्रवार
३५. श्री रविदास जयन्ती (वै.)	२० फरवरी सन् १९८९ सोमवार
३६. श्री महाशिवरात्रि	६ मार्च सन् १९८९ सोमवार
३७. होली	२१ मार्च सन् १९८९ मंगलवार
३८. छारेण्डी (धूलेण्डी)	२२ मार्च सन् १९८९ बुधवार
३९. शबे-बरात (वै.) *	२३ मार्च सन् १९८९ गुरुवार
४०. गुडफ्राईडे	२४ मार्च सन् १९८९ शुक्रवार
४१. चेटी चंड (वै.)	६ अप्रैल सन् १९८९ गुरुवार

नोट—(क) मुस्लिम * त्योहारों की छुटि्टयों में कभी कहीं स्थानीय चन्द्रदर्शन के अनुसार जिलाधीश फिर निर्धारित कर एक दिन का अन्तर डाल सकतें हैं।

(ख) उपर्युक्त छुटि्टयों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है। किसी भूल या फेर बदल का दायित्व सम्पादक पर नहीं है।

(ग) (वै) शब्द लिखा है उन्हें वैकल्पिक (ऐच्छिक) छुटि्टयां समझे

भारतीय अन्य विशेष पर्व त्यौहार आदि

१. नवर्षारंभ, वसन्त नवरात्र प्रा.	१८ मार्च शुक्रवार	२४. चन्द्र षष्ठी	९ सितम्बर गुरुवार
२. गणगौर पूजन	२० मार्च रविवार	२५. वत्स द्वादशी	७ सितंबर बुधवार
३. नवरात्र समाप्त	२६ मार्च शनिवार	२६. सूर्यग्रहण	११ सितंबर रविवार
४. वैशाख स्नान प्रारंभ	२ अप्रैल शनिवार	२७. श्री गणेश जन्मदिन	१५ सितंबर गुरुवार
५. श्री वल्लभाचार्य जयन्ती	१२ अप्रैल मंगलवार	२८. ऋषि पंचमी	१६ सितंबर शुक्रवार
६. श्री परशुराम जयन्ती	१८ अप्रैल सोमवार	२९. वामन जयन्ती	२३ सितंबर शुक्रवार
७. टैगोर जयन्ती	७ मई शनिवार	३०. नवरात्र प्रारंभ	११ अक्टूबर मंगलवार
८. श्री नृसिंह १४ जयन्ती	३० अप्रैल शनिवार	३१. दशहरा	२० अक्टूबर गुरुवार
९. बट सावित्री पूजन	१५ मई रविवार	३२. बाल्मीकि जयन्ती	२५ अक्टूबर मंगलवार
१०. अधिक मास स्नान प्रारंभ	१६ मई सोमवार	३३. करवा चौथ व्रत	२८ अक्टूबर शुक्रवार
११. गंगा दशहरा	२६ मई शुक्रवार	३४. दीपावली	९ नवम्बर बुधवार
१२. अधिक मास स्नान समाप्त	१४ जून मंगलवार	३५. गोवर्धनपूजा	१० नवम्बर गुरुवार
१३. श्री गुरु अर्जुनदे बलिदान दिवस	१८ जून शनिवार	३६. भैयादूज	११ नवंबर शुक्रवार
१४. निर्जला ११ व्रत	२६ जून रविवार	३७. बाल दिवस	१४ नवंबर सोमवार
१५. कबीर जयन्ती	२९ जून बुधवार	३८. गोपाष्टमी	१७ नवंबर गुरुवार
१६. गुरु हरगोविन्द जयन्ती	३० जून गुरुवार	३९. मोक्षदा ११ व्रत	१९ दिसम्बर सोमवार
१७. श्री जगदीश रथयात्रा	१५ जुलाई शुक्रवार	४०. शाकम्भरी जयन्ती	२१ जनवरी शनिवार
१८. गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	२९ जुलाई शुक्रवार	४१. गणेश ४ व्रत	२५ जनवरी बुधवार
१९. श्री तिलक जयन्ती	१ अगस्त सोमवार	४२. मेला प्रयागराज	६ फरवरी सोमवार
२०. मधुश्रवा तीज	१५ अगस्त सोमवार	४३. कुंभ पर्व मुख्य स्नान	६ फरवरी सोमवार
२१. रक्षाबन्धन	२७ अगस्त शनिवार	४४. लाला लाजपतराय ज.	१५ फरवरी बुधवार
२२. [illegible]	[illegible]	४५. चन्द्रग्रहण	२० फरवरी सोमवार
२३. गणेश ४ व्रत	३० अगस्त मंगलवार	४६. मेला श्यामजी (खाटू)	१७-१८ मार्च शुक्र-शनि

ग्रहण निर्णय–सम्वत् २०४५ विक्रमी

संवत् २०४५ वि. में (१९ मार्च १९८८ से ६ अप्रैल १९८९ तक) भूमण्डल पर ४ ग्रहण होंगे। इनमें दो ग्रहण भारत में और २ विदेशों में होंगे। इनका विवरण यह है। (१) **खण्डग्रासचन्द्र ग्रहण** – श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शनिवार २७ अगस्त १९८८ ईस्वी को होगा। यह भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। (२) **सूर्य ग्रहण** – भाद्रपद कृष्ण अमावस्या रविवार दिनांक ११ सितम्बर १९८८ ईस्वी को होगा। यह भारत में दिखाई देगा। (३) **खग्रास चन्द्र ग्रहण** – माघ शुक्ल पूर्णिमा सोमवार दिनांक २० फरवरी १९८९ ईस्वी को होगा। यह भारत में सर्वत्र दिखाई देगा। (४) **सूर्य ग्रहण** – फाल्गुन कृष्ण अमावस्या मंगलवार दिनांक ७ मार्च १९८९ को होगा। यह भारत में कहीं भी नहीं दिखाई देगा। इन सबका पूरा विवरण यहां दिया जा रहा है। पहले भारत में होने वाले दोनों ग्रहणों का विवरण प्रस्तुत है। :—

(१) सूर्य ग्रहणः—

भाद्रपद कृष्ण अमावस्या रविवार दिनाक ११-९-१९८८ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिती २० भाद्रपद शकः १९१० को यह सूर्य ग्रहण दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी ध्रुव, एशिया के दक्षिणी भाग, आस्ट्रेलिया के उत्तर पूर्वी भाग के कुछ हिस्सों को छोडकर न्यूजीलैंड अण्टाटिका के कुछ भाग में तथा सुदूर उत्तरी व सुदूर उत्तर पूर्वी छोरों के अतिरिक्त भारत के सभी भागों में दिखाई देगा। श्रीनगर, काश्मीर, जम्मू, और उत्तर पूर्वी असम राज्य में यह सूर्य ग्रहण दिखाई नहीं देगा। इस ग्रहण का खण्डग्राम रूप भारत तथा पड़ोसी देशों में दिखाई देगा। ग्रहण की कंकणाकृति हिन्द महासागर के कुछ क्षेत्र में दिखाई देगी। भूमण्डल के अन्य किसी भी भू भाग पर कंकणाकृति दिखाई नहीं देगी। दिल्ली व उसके समीपवर्त्ती नगरों में भारतीय स्टें. टा. में इस सूर्य ग्रहण का स्पर्शादिकाल इस प्रकार है।

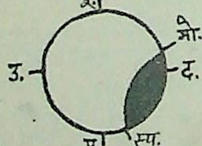
दिल्ली में सूर्य ग्रहण का स्पर्शादिकाल (भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

प्रात	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घटा	७	८	९	१
मिनट	४५	२४	०५	२०

कुरुक्षेत्र मे सूर्यग्रहण का स्पर्शादिकाल (भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

प्रातः	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घटा	७	८	८	१
मिनट	५०	२३	५८	०८

दिल्ली महानगर के समीपस्थ क्षेत्रों (गाजियाबाद, मरठ, हरियाणा) व कुरुक्षेत्र में ग्रहण मध्यकाल के समय ८/२४ पर ग्रहण का मान चित्र।



सूर्य ग्रहण में कुरुक्षेत्र स्नान का विशेष महत्व है। रविवार होने से चूडामणि योग भी बन गया है।

इस ग्रहण का वेध (सूतक) दि. १०-९-८८ को सूर्यास्त से प्रारम्भ होगा।

राशि फलः- पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र और सिंह, कन्या, वृषभ, मकर राशि वालों को नेष्ट है। मेष, कर्क, धनु, कुम्भ राशि वालों को मध्यम और मिथुन, तुला, वृश्चिक, मीन राशि वालों को श्रेष्ठ है। अशुभ नक्षत्र और राशि वाले ग्रहण का दर्शन न करें। इसका विशेष फल दैवज्ञ की दृष्टि में देखें।

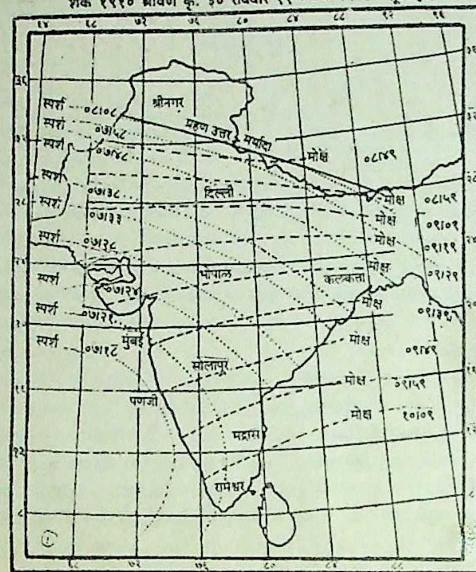
भारत के कुछ प्रमुख नगरों में इस सूर्य ग्रहण का स्पर्श मोक्षादि काल

नगर नाम	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
अमृतसर	७/५७	८/२२	८/४७	०/५०
अगरतल्ला	७/५६	८/३९	९/२४	१/२८
अहमदाबाद	७/२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अजमेर	७/३३	८/२१	९/०९	१/३६
आगरा	७/४०	८/२७	९/१३	१/३३
इलाहाबाद	७/४१	८/२८	९/२०	१/३९
इम्फाल	८/०९	८/४१	९/१३	१/०४
इटानगर	८/३१	८/३८	८/४४	०/१३
उदयपुर	७/३०	८/२३	९/२१	१/५१
उज्जैन	७/२९	८/२५	९/२७	१/५८
उटकमण्ड	७/२०	८/३७	१०/०४	२/४४
कलकत्ता	७/४५	८/३६	९/३२	१/४७
कन्याकुमारी	७/२२	८/४२	१०/१४	२/५२
कराची (पाकिस्तान)	७/२८	८/२०	९/१७	१/४९
काञ्चीपुरम्	७/२३	८/३८	१०/०४	२/४१
काठमाण्डू (नैपाल)	७/५६	८/३०	९/०६	१/१०
कोहिमा	८/१६	८/४०	९/०४	०/४८
कोडियाकनाल	७/२१	८/३९	१०/०९	२/४८
गोहाटी	८/०८	८/३७	९/०७	०/५९
गंगटोक	८/०३	८/३३	९/०४	१/०१
चण्डीगढ़	७/५५	८/२३	८/५२	०/५७
चटगांव	७/५३	८/४१	९/३२	१/३९
जयपुर	७/३८	८/२४	९/१३	१/३५
जोधपुर	७/३४	८/२३	९/१५	१/४१
त्रिवेन्द्रम्	७/२१	८/४१	१०/१३	२/५२
ढाका (बंगला देश)	७/५३	८/३८	९/२५	१/३२
देहरादून	७/५४	८/२४	८/५४	१/००
नागपुर	७/२९	८/२९	९/३६	२/०७
नैनीताल	७/५२	८/२५	९/००	१/०८
पटना	७/४७	८/३१	९/१८	१/३१
पञ्जी	७/२०	८/३०	९/४९	२/२९
पाण्डीचेरी	७/२३	८/४०	१०/०८	२/३५
पुरी	७/३५	८/३७	९/४४	२/०९
पूना	७/२२	८/२७	९/४१	२/१९
पोर्ट ब्लेयर	७/४१	८/५७	१०/२०	२/३९
बम्बई	७/२२	८/२६	९/३८	२/१६
बंगलौर	७/२१	८/३६	१०/०१	२/४०
भुवनेश्वर	७/३६	८/३६	९/४३	२/०७
[illegible]	[illegible]	८/२६	९/२८	२/५७
मद्रास	७/२३	८/३८	१०/०४	२/३१

नगर का नाम	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
माउण्ट आबू	७/३०	८/२३	९/२१	१/५१
मैसूर	७/२०	८/३५	१०/०२	२/४२
मगलौर	७/१९	८/३३	९/५८	१/३९
रगून	७/५३	८/५३	९/५८	२/०५
लखनऊ	७/४४	८/२७	९/१३	१/२९
वाराणसी	७/४२	८/३०	९/२०	१/४२
विशाखापटनम्	७/२९	८/३६	९/५१	२/२२
शिमला सोलन	७/५७	८/२३	९/४९	०/५२
शिलांग	८/०५	८/३७	९/११	१/०६
हरिद्वार	७/५२	८/२४	८/४७	१/०५
हैदराबाद	७/२४	८/३२	९/४८	२/२४

भारतीय भूमण्डल का मानचित्र

शके १९१० श्रावण कृ. ३० रविवार ११ सितम्बर १९८८ सूर्यग्रहण



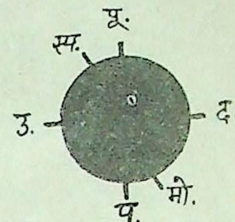
भारत के प्रत्येक छोटे बड़े ग्राम में इस सूर्य ग्रहण का स्पर्श मोक्ष काल घंटा मिनट जानने के लिए यहां भारत का मानचित्र (नक्शा) दिया जा रहा है। इस नक्शे में अक्षांश रेखांश रेखाओं के समानान्तर में काटती हुई स्पर्श मोक्ष रेखाएं लगाई हैं। अभीष्ट स्थान नगर-ग्राम के अक्षांश अपने प्रान्तीय (नक्शा) से जो प्रत्येक छोटे बड़े स्कूल में उपलब्ध हैं उससे ज्ञात करके सूर्य के मानचित्र में अपने स्थान का बिन्दु चिन्ह अंकित करके देखें कि स्पर्श मोक्ष रेखाएं उस बिन्दु के समीप से निकलती हैं उन रेखाओं के आरम्भ में लिखा स्पर्श मोक्ष काल अपने अभीष्ट स्थान का समझें।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

माघ शुक्ला पूर्णिमा सोमवार दि. २० फरवरी १९८९ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिति १ फाल्गुन शक १९१० को सिंह राशि में खग्रास चन्द्र ग्रहण होगा। इस ग्रहण का स्पर्श उत्तरीय अमरीका के पश्चिमी छोर के आधे भाग में तथा प्रशान्त महासागर, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और एशिया में दीखेगा। इसका मोक्ष पश्चिम प्रशान्त महासागर, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, एशिया अरबेरियन द्वीप को छोड़कर योरुप, अफ्रीका के पश्चिमी भाग के अतिरिक्त हिन्द महासागर तथा सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। भारत में सर्वत्र रात्रि को ८-२६ से ९-४५ तक खग्रास (पूर्ण ग्रहण) दिखाई देगा।

यह पूर्णिमा सोमवारी होने से विशेष पुण्यप्रद चूडामणि योग बन गया है। चन्द्र ग्रहण में गंगा स्नान का विशेष महत्व है। भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम से इस ग्रहण का स्पर्शादिकाल रात्रि में इस प्रकार है। :—

	घ.-मि. (रात्रि)
चन्द्र कान्ति मालिन्य	६ – ०० "
ग्रहण स्पर्श	७ – १३ "
सम्मिलन	८ – २६ "
मध्य	९ – ०५ "
उन्मीलन	९ – ४५ "
ग्रहण मोक्ष	१० – ५७ "
शुद्ध चन्द्र कान्ति	१२ – ११ "
पर्वकाल	३ – ४४ "



इस ग्रहण का वेध (सूतक) दिनाक २० फरवरी ८९ को प्रातः १० बजकर १३ मिनट से प्रारम्भ होगा। बाल, वृद्ध, रोगियों के अतिरिक्त अन्य धार्मिक व्यक्तियों को ग्रहण वेध में भोजन आदि करना निषेध है।

राशिफलः—

यह ग्रहण मघा नक्षत्र और वृषभ, सिंह, कन्या मकर राशि वालों को नेष्ट है। मेष, कर्क, धनु, कुम्भ राशि वालों को मध्यम, मिथुन, तुला, वृश्चिक, मीन राशिवालों को श्रेष्ठ है। अशुभ नक्षत्र और राशि वाले ग्रहण का दर्शन न करें।

विदेशों में होने वाले ग्रहण

(१) खण्डग्रास चन्द्र ग्रहणः-

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा शनिवार दि. २७ अगस्त १९८८ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिति ५ भाद्रपद शाके १९१० को होगा। इस ग्रहण का स्पर्श एशिया महाद्वीप के पूर्वी तट, अण्टार्कटिका के अधिकांश भाग, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी अमेरिका के पश्चिम में, मध्य अमेरिका, हटसन की खाड़ी के पूर्व के अतिरिक्त उत्तरी अमेरिका और प्रशान्त सागर में दिखाई देगा। ग्रहण मोक्ष पूर्वी एशिया, अधिकांश अण्टार्कटिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, उत्तरी मध्य अमेरिका, मध्य पश्चिमी अमेरिका तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इसलिए यहां इसका पर्वकाल और वेध नहीं माना जाएगा।

(२) खण्डग्रास सूर्यग्रहण

फाल्गुन कृष्णा अमावस्या मगलवार दि. ७ मार्च १९८९ तदनुसार राष्ट्रीय मिति १६ फाल्गुन शक १९१० को कुम्भ राशि में होगा। यह ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा। अतः इसका पर्वकाल यहां नहीं माना जावेगा। यह सूर्य ग्रहण हवाईयन, उत्तरी अमरिका के उत्तरी पश्चिमी भाग, ग्रीनलैण्ड और उत्तरी पूर्वी एशिया के सुदूर भाग में दिखाई देगा

कुम्भ महापर्व प्रयागराजः—

इस वर्ष माघ कृष्णा अमावस्या सोमवार दि. ६ फरवरी १९८९ को गुरु वृषभ राशि में और सूर्य चन्द्रमा मकर राशि में होने से त्रिवेणी संगम प्रयागराज में कुम्भ महापर्व का योग बना है। सोमवती अमावस्या होने से इस पर्व का महत्व और भी बढ गया है। वैसे तो प्रतिवर्ष श्रद्धालुजन माघ मास में प्रयागराज में कल्पवास करते हैं। इस वर्ष मकर संक्रान्ति का पुण्य काल १४ जनवरी १९८९ शनिवार को होगा। इसी दिन प्रयाग कुम्भ का **प्रथम शाही** स्नान होगा। दूसरा स्नान पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवार ता. २१ जनवरी ८९ को होगा। कुम्भ महापर्व का **मुख्य शाही स्नान सोमवती मौनी अमावस्या दि. ६ फरवरी १९८९ को होगा।** तीसरा शाही स्नान वसन्त पंचमी शुक्रवार दि. १० फरवरी १९८९ को होगा। अन्तिम स्नान एवं कुम्भ मेला की पूर्ति कल्पवास समाप्ति माघ शुक्ला पूर्णिमा सोमवार दि. २० फरवरी १९८९ को होगी।

होलिका दाह निर्णय

इस वर्ष सायकाल व्यापिनी फा. शु. पूर्णिमा मगलवार २१ मार्च १९८९ को मध्यान्ह १२-५२ से रात्रि के २-१० तक भद्रा है। परम्परागत कुछ लोग भद्रा समाप्ति के बाद रात्रि २-१० बजे बाद होलिका दाह मुहूर्त बतावेंगे। परन्तु जो धार्मिक जन दिन भर व्रत रख कर होलिका दाह पूजनोपरान्त व्रतोपारण (भोजन) करते हैं। उनके लिए केवल भद्रा मुख त्याज्य है। अतः दिल्ली हरियाणा में सूर्यास्त काल ६ बजकर २८ मिनट से प्रदोष काल में ८ बजकर २८ मिनट तक होलिका दाह पूजन करके व्रत खोल सकते हैं। धर्म शास्त्र का प्रमाण यह है।

'अर्धरात्रमतिक्रम्य विष्टिपूर्तिर्यदा भवेत्। प्रदोषेव्यालयेदर्वाह्नि सुख सौभाग्य दायकम्। प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पूर्णिमा फाल्गुनी सदा। तस्यां भद्रा मुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशा मुखे। पूर्णिमायां चतुर्थपादावघटी पंचकं मुखमित्याहुः।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

ॐ परम ब्रम्ह परमात्मने नमः

गायत्री मंत्र और उसका महत्व

भगवान् भास्कर श्री सूर्य नारायण के उदय होने पर सारे ससार का तिमिर (अंधेरा) दूर हो जाता है, दिन निकल आता है। इसी प्रकार गायत्री मत्र के जपने से शरीर की अज्ञानता दूर होकर ज्ञान रूपी दीपक का हृदय में उजाला करता है।

गायत्री मंत्रः— ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ।।

गायत्री मत्र का सविता देवता है। अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है। उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग है। यह गायत्री अग्नि मत्र है। वेद में भी इसके अतिरिक्त ऐसा कोई मत्र नहीं है-जिसमें एक ही मत्र में भगवान की स्तुति, उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हों। भगवान के भजन में पहले भगवान की स्तुति, फिर उपासना ध्यान किया जाता है और पश्चात् भगवान से प्रार्थना की जाती है। गायत्री मत्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों हैं। गायत्री ही एक ऐसा मत्र है जो हिन्दु मात्र के लिए एक मत्र हो सकता है।

सारभूतास्त वेदानां गुह्योपनिषदोमतः।

ताभ्यः सारस्तु, गायत्री तिस्नो व्याहृतमस्तथा।।

चार वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गायत्री है। इसी प्रकार जो गायत्री को जानता है वही ब्राम्हण है, जो नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों न हो, शूद्र है

जो गायत्री है वही सध्या है और जो सन्ध्या है वही गायत्री है। ... उपासना करली। इसे गोभिल ऋषि कहते है।

"गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः"।

इसका नाम गायत्री इसलिए है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

"गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशनी
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिविचेह च पावनम्।।"

गायत्री वेद की माता है। गायत्री पाप नष्ट करने वाली है। गायत्री के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और नहीं है।

गायत्री मंत्र तथा सावित्री

सच्चा तीर्थ है। हिन्दू तीर्थों में बड़ी श्रद्धा रखते है। स्नान में तीर्थों पर मरने से मुक्ति मिलती है। "जनाः यै स्तरन्ति तानि तीर्थानि"। ये आत्मा का कल्याणकारी तीर्थ है। इसके 'ग' से गंगा, 'या' से यमुना, त्र से त्रिवेणी बनती है। गायत्री के जप से मनुष्य के शरीर में रहने वाली तीन नाडियां शरीर को जीवन दान देती है और आत्मा उसके द्वारा उपासना कर सकती है। यह वेद में बताया है। "सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्-धीरा देवेषु सुम्न्या।। युज०१२-६७ अर्थात् योगी लोग नाडियां परमेश्वर योग समाधि से प्राप्त करते है। गंगा, यमुना, त्रिवेणी ये इड़ा, पिंगला, सुष्मना नाड़ियां है। सूर्य, चन्द्र और सरस्वती नाम की नाड़ियां हैं। योगी इन नाड़ियों के ज्ञान और संयम अभ्यास से अपने आत्म बल को जानता, अनुभव और दर्शन करता है।

ॐ हरव्याहृति के साथ और सावित्री के आदि और अन्त में ॐ लगाकर इससे सफलता प्राप्त होती है।

भगवान मनु ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दस गुणा फलदायक है। इससे भी जिससे होंठ ही हिले शतगुणा और मानासिक सहस्रगुणा फल देता है। मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने से किसी प्रकार के विधि निषेध नहीं है। जपने से सब कामना पूरी होती है और अन्त में स्वर्ग धाम तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मंत्र से त्रिकालिक सध्या तथा अर्धरात्रि के समय भी महासध्या करनी चाहिये। यह वेद मंत्र है, इससे सब पाप नष्ट होते है और ज्ञान का प्रकाश होता है।

गायत्री जप के द्वारा रोग निवारण

१. मधुमेह, मेद, तुतलाना इन पर गायत्री मंत्र जप तथा इलाज

"ॐ भूः भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ।।"

२. मस्तिष्क विकार विस्मरण चक्कर इनके लिए मत्र-ॐ भूः भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ।

३. हृदय विकार ठीक करने के लिए मंत्र :

"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धमिहि ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् ।।

४. दमा रक्तदाब इनके लिए मंत्रः

"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धमिहि ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् ।।

नोट : हर रोज सुबह नहाकर जो मंत्र जपना हो उसे १०८ बार नित्य जपें। धूप जलाकर जल का लोटा पास रखें, जपने के बाद सूर्य नारायण को अर्घ्य देवें। उसमें से थोड़ा जल रोगी को पिलावें। यह अनुभव सफलतादायक सिद्धप्रद है।

वैद्यराज डा. दुर्गाप्रसाद शर्मा धर्माचार्य सा. शिरोमणि, सा. वाचस्पति (Ph. D.) आयुर्वेदाचार्य, प्राणरत्न, विद्याभास्कर (Ph. D) पता - गांव अम्बर हाई, डा. पालम, नई दिल्ली-४५

संवत् २०४५ वि. में विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धिः

गुरुअस्त – इस वर्ष वैशाख शुक्ल ७ शनिवार दिनाक २३ अप्रैल १९८८ से प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ४ गुरुवार दिनांक १९ मई १९८८ तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्रअस्त – द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरुवार दिनांक ९ जून १९८८ से द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ रविवार दिनांक १९ जून १९८८ तक और माघ शुक्ल १५ सोमवार दिनांक २० फरवरी १९८९ से वर्ष के अन्त तक शुक्र अस्त रहेगा। इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त "ज्योतिर्गणित" की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया जाता है। प्राचीन करण ग्रन्थों की "कालांश" पद्धति स्थूल होने से ग्राह्य नहीं है। उसमें गुरु-शुक्र का उदयास्त प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पहले वृहत्वदोष में तथा उदय के पश्चात् ३ दिन तक बाल्यदोष में विवाहादि शुभ कृत्य नहीं करने चाहिए। नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धातिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं। वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहाँ क्रान्तिसाम्य दोष स्थूल नलेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

* सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सब देशों के लिए) *

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ बुधे २२ जून हस्त।।।।।।S।Sल. १०/१२/२ मीन ल.चं. शु.दा. से, – वृष ल.मं.दा. से,
,, ,, ,, ९ शुक्रे २४ ,, स्वाती ।।।।।।S।। ल. १ च.दा. से,
,, ,, ,, १२ चन्द्रे २७ ,, अनु. Sसू S।। Sगु।।।।। ल. धूलिमुख सोग्रां. १०/१२ मकर ल.श.दा., मीन ल.शु.दा.,
आषाढ़ कृ. १ गुरौ ३० जून उ.षा. ।।।Sबु।Sचो।।S। ल. १२/१ मीन ल.शु.दा. गणितेन क्रांति साम्य अभावः पादात् बुध वेधा भावः
,, ,, ६ भौमे ५ जुलाई उ.भा. Sचं.बु.श.।।।।Sअ S।।। ल. धूलिमुख सोग्रां. १०/१/२ मकर लग्न शनि दान से
,, ,, ७ बुधे ६ ,, उ.भा. Sचं.बु.श.।।।।Sअ S।।। दि.ल. ४
,, ,, ७ बुधे ६ ,, रेवती Sमं.शु ।।।।।।S।Sल. धूलिमुख सोग्रां. १०/१ मकरे शः दा.
,, ,, ९ गुरौ ७ ,, रेवती Sमं.शु. ।।।।।S।। दि.ल. ४ स्टें.टा. ७/४१ तक
,, ,, १२ रवौ १० ,, रोहिणी ।SSशु ।।Sचो ।S।। ल. १० श.दा. शुक्रयुति
कार्तिक शु. ११ रवौ २० नवं. रेवती ।।।।।Sनृ।।।। दि.ल. १०, गोधूलि रात्रौ ४ मकरे श.दा.
मार्गशीर्ष कृ. १ गुरौ २४ ,, रोहिणी ।।।।Sसू.बु. Sरो।S।। दि.ल. १० श.दा., रात्रौ ४ स्टें.टा. २२/७१ तक
मार्गशीर्ष कृ. २ शुक्रे २५ नव. मृग. Sरा।।।।।S।।। दि.ल. १० श.दा. गोधूलि, रात्रौ ४ स्टें.टा. २२/१७ तक
,, ,, ९ शुक्रे २ दिसं. उ.फा. Sबु।।।।।SS।। ल. धूलिमुख ४
,, ,, १० शनौ ३ ,, उ.फा. Sबु।।।।Sरो SS।S दि.ल. १० श.दा. दग्धातिथिः
मार्गशीर्ष शु. ३ चन्द्रे १२ ,, उ.षा. ।।।।।Sरो।।।। ल. धूलिमुख
पौष शु. १२ बुधे १८ जन. रोहिणी ।।।।।Sनृ।।SSदि.ल. १२ गणितेन क्रां.सा. अभावः
माघ कृ. ४ गुरौ २६ ,, उ.फा. ।।।।।।S।। दि.ल. १२, गोधूलि, मीन ल. चंदा.
,, ,, ५ शुक्रे २७ ,, हस्त ।।।।।Sनृ SS।। दि.ल. १२, गोधूलि, मीन ल. चं.दा.
,, ,, ९ भौमे ३१ ,, अनु Sशु।।।Sगु Sरो SS।। ल. धूलिमुख आवश्यकता में
,, ,, १२ शुक्रे ३ फर. मूल ।।।।।Sअ SS।। दि.ल. १२
माघ शु. ४ गुरौ ९ ,, उ.भा. ।।।।।Sरो।।।। दि.ल. २ श.दा.
,, ,, ५ शुक्रे १० ,, रेवती Sश S।।।।SS।। दि.ल. २ श.दा.
,, ,, १० बुधे १५ ,, मृग. Sरा S।।।।।S।। दि.ल. १२/२ गोधूलि सोग्रांगः

* केवल पंजाब और द्विगर्त-देश के लिए विवाह मुहूर्त्त *

आषाढ़ शु. २ शनौ १६ जुलाई मघा ।।।।।।।।। ल. १ स्टें.टा. २४/१७ तक
,, ,, ४ चन्द्रे १८ ,, उ.फा. ।।।।Sरा Sअ।।।। ल. २ स्टें.टा. २६/२९ तक
,, ,, ५ भौमे १९ ,, उ.फा. ।।।।Sरा।SS।Sल. धूलिमुख २ दग्धातिथिदोष
,, ,, ८ शुक्रे २२ ,, स्वाती ।S।।।Sचो।S ।। ल. धूलिमुख १ चं.दा. से,
,, ,, १० रवौ २४ ,, अनु. ।।।।Sगु Sरो।SS। ल. गोधूलि २ चं.दा. गणितेन क्रान्ति साम्य अभावः
,, ,, १४ गुरौ २८ ,, उ.षा. ।।।Sशु।।।S।। ल.१ पादवेधात्शुक्र वेधाभावः
,, ,, १५ शुक्रे २९ ,, श्रवण ।।।।Sसू।।S।। ल.१/२ वृष ल. २४/५९ तक,
श्रावण कृ. २ शनौ ३० ,, धनिष्ठा ।।।।।Sनृ SS।। ल.गोधूलि
,, ,, ५ भौमे २ अगस्त रेवती ।।।।।Sरो।S।Sल.गो. १/२ मेष ल. शुक्रदान से,
,, ,, ९ शनौ ६ ,, रोहिणी ।।।।।Sआ।S।। ल. धूलिमुख
,, ,, १० रवौ ७ ,, मृग. ।।।।।।SS।। ल. धूलिमुख, १,
श्रावण शु. ४ भौमे १६ ,, हस्त ।S।।।।।।। ल. ४ स्टें.टा. २८/१२ से
,, ,, ५ गुरौ १८ ,, स्वाती ।।।।।Sअ।।।। ल. धूलिमुख सोग्रां. १/ ४ मेष लग्ने चं.शु. दान से
७ शनौ २० ,, अनु. ।।।।।Sवृ।S।' ल. २/४ वृष ल.चं.दा.

श्रावण शु. १२ बुधे २४ अगस्त उ.षा. Sसू. |||Sशु|||| ल.गोधूलि १/२/४ वृष लग्न
स्टें.टा. २३/१३ बाद कर्क ल.चं.दा.
,, ,, १४ शुक्रे २६ ,, धनिष्ठा ||||| SS|| ल. धूलिमुख सोग्रांगः
भाद्रपद कृ. २ चन्द्रे २९ अगस्त उ.भा. Sश||| Sबु||||| ल. गोधूलि सोग्रा. स्टें.टा. १९/१७ तक।
,, ,, ७ शुक्रे २ सितं. रोहिणी |SSगु||| S|| ल. १/४,
,, ,, ८ शनौ ३ ,, ,, |SSगु|| Sरो| S|| ल. धूलिमुख सोग्रांगः
,, ,, ८ शनौ ३ ,, मृग. |||| Sरो SS|| ल. १/४
,, ,, ९ रवौ ४ ,, मृग. ||||| SS|| ल. धूलिमुख सोग्रांगः
भाद्रपद शु. २ भौमे १३ ,, चित्रा || Sबु|||||| ल.२/४ वृषलग्ने शु.दा. से
,, ,, ३ बुधे १४ ,, चित्रा || Sबु|||||| दि.ल. ८ गु.रा.दान से स्टें.टा. १२/५९ तक
,, ,, ५ शुक्रे १६ ,, अनु. ||||||||| ल. ४ स्टें. २६/१६ बाद
,, ,, १० बुधे २१ ,, उ.षा. |||||| S|| दि.ल. ८, गोधूलि सोग्रा. मं.दा.
रात्रौ २ शु.दा. से
,, ,, ११ गुरौ २२ ,, श्रवण ||||| Sचो|||| ल. गोधूलि सोग्रा. मं.दा. से
रात्रौ २ शुक्र दान से स्टें. २२/११ तक।
,, ,, ११ गुरौ २२ ,, धनिष्ठा Sसू|| Sशु Sशु Sचो S||| ल. ४ चं.दा.
पादात्शुक्रवेधाऽभावः आवश्यकता में
,, ,, १२ शुक्रे २३ ,, धनिष्ठा Sसू|| Sशु Sशु| S||| ल. धूलिमुख सोग्रा.
मं.दा. से, पादात्शुक्रवेधाऽभावः
आश्विन शु. ३ शुक्रे १४ अक्टू. अनु. ||||||||| ल. धूलिमुख सोग्रा. मं.दा. से.
,, ,, ९ बुधे १९ ,, श्रवण ||||| Sअ|||| दि.ल. ८ गु.रा.दा. से, स्टें.टा.
८/५९ बाद, धूलिमुख, २/४ कर्के चं. दान से
,, ,, १३ रवौ २३ ,, रेवती |S| Sशु Sबु Sचो|||| ल. ४ शुक्रवेधात् पाद्वेधाभावः
,, ,, १४ चन्द्रे २४ ,, रेवती |S| Sशु Sबु|||| दि.ल. ८ गु.रा. दान से।
कार्तिक कृ. ४ शुक्रे २८ ,, मृग. |||| Sअ SS|| ल. गोधूलि ४ शु.दा. से,
,, ,, ९ बुधे २ नवं. मघा |||||| S|| ल.४ शु.दा. से.
,, ,, ९ गुरौ ३ ,, मघा |||| Sरो| S|| दि.ल. ८, धूलिमुख, २/४, वृश्चिक
लग्ने गु.रा.दा. से कर्क लग्ने २२/३९ तक।
कार्तिक शु. २ शुक्रे ११ ,, अनु. |||[illegible]
,, ,, ६ भौमे १५ ,, श्रवण |S||| Sअ| S|| ल. धूलिमुख (संक्रांति दिन)

* कात्यायनोक्त नक्षत्र — चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त *

आषाढ़ कृ. २ शुक्रे १ जुलाई श्रवण |S||||||| ल. १
,, ,, ३ शनौ २ ,, धनिष्ठा ||||| Sरो SS|| ल. गोधूलि १२/१
मार्गशीर्ष कृ. ११ रवौ ४ दिसं. चित्रा ||||| SS|| ल. धूलिमुख
,, शु. ६ बुधे १४ ,, धनिष्ठा ||||| Sअ S||| ल. धूलिमुख
माघ कृ. ६ शनौ २८ जनवरी चित्रा Sचं||||||||| दि.ल. १२ चं.दा. से
,, शु. ६ शनौ ११ फरवरी अश्विनी ||||| Sअ|||| ल. धूलिमुख

संवत् २०४५ वि. के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

चैत्र वैशाख कृष्ण मीन सक्रांति दोष
वैशाख शु. ३ भौमे रोहिणी लग्नाऽभाव भद्रा,
,, ,, ४ बुधे रोहिणी भद्रादोष
,, ,, ४ बुधे मृगशिर गुरुवृद्धत्व दोष
अग्रे गुरु अस्त, अधिक मास प्रारंभ एवं शुक्र अस्त दोष
द्वितीय ज्येष्ठ शु. ६ चन्द्रे मघा शुक्र वृद्धत्व दोष
,, ,, ,, ७ भौमे उ.फा. ,, ,,
,, ,, ,, ८ बुधे ,, ,, ,,
,, ,, ,, ९ गुरौ हस्त लग्नाऽभाव
,, ,, ,, १० शनौ स्वाती भद्रा मृत्युपंचक
,, ,, ,, ११ रवौ अनु महापात दिन
,, ,, ,, १४ भौमे मूल शनियुति
,, ,, ,, १५ बुधे मूल शनियुति
आषाढ़ कृ. २ शुक्रे उ.षा. वैधृति दोष
,, ,, १३ चन्द्रे रोहिणी क्षीण चन्द
अग्रे कर्क संक्रांति, देवशयन दोष
कार्तिक शु. १५ बुधे रोहिणी लग्नाऽभाव
मार्गशीर्ष कृ. १ गुरौ मृग. लग्नाऽभाव
,, ,, ६ भौमे मघा भद्रादोष
,, ,, ७ बुधे मघा वैधृति दोष
,, ,, १० शनौ हस्त भौमवेध
,, ,, [illegible] ,,
,, ,, ११ चन्द्रे स्वाती राहुवेध

मार्गशीर्ष कृ. १२ भौमे स्वाती ,,
मार्गशीर्ष शु. १ शनौ मूल शनियुति
,, ,, २ रवौ उ.षा. लग्नाऽभाव
,, ,, ८ शुक्रे उ.भा. धनुष्यर्क दोष
पौष शु. ७ शनौ रेवती तिथ्यन्त २ घटी दोष
उपरान्त भद्रा दोष
,, ,, ११ भौमे रोहिणी लग्नाऽभाव भद्रा
,, ,, १२ बुधे मृग. सूर्यवेध
,, ,, १३ गुरौ मृग. ,,
माघ कृ. २ चन्द्रे मघा लग्नाऽभाव केतुयुति
,, ,, ३ भौमे मघा ,, ,,
,, ,, ३ बुधे उ.फा. लग्नाऽभाव
,, ,, ४ गुरौ हस्त ,,
,, ,, ७ रवौ स्वाती राहुवेध
,, ,, ८ चन्द्रे स्वाती
,, ,, १० बुधे अनु. भौमवेध
,, ,, ११ गुरौ मूल लग्नाऽभाव
माघ शु. ३ बुधे उ.भा. ,,
,, ,, ४ गुरौ रेवती ,,
,, ,, ८ चन्द्रे रोहिणी मृत्युपंचक
,, ,, ९ भौमे रोहिणी ,, वैधृति दोष
,, ,, ९ भौमे मृग लग्नाऽभाव रेखा ५
अल्प अग्रे शुक्र वृद्धत्व शुक्र अस्त दोष

* पंजाब और द्विगर्त देश के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त *

आषाढ़ शु. ३ रवौ मघा व्यतिपात मृत्युपंचक
,, ,, ५ भौमे हस्त भौमवेध
,, ,, ६ बुधे हस्त ,,
,, ,, ७ गुरौ हस्त ,,
७ गुरौ चित्रा राहुवेध
,, ,, ८ शुक्रे चित्रा ,,
,, ,, ९ शनौ स्वाती लग्नाऽभाव
,, ,, ११ चन्द्रे अनु. ,,
,, ,, १२ भौमे मूल शनियुति वैधृति दोष
,, ,, १३ बुधे मूल ,, ,,
,, ,, १४ गुरौ श्रवण लग्नाऽभाव
,, ,, १५ शुक्रे धनिष्ठा ,,
श्रावण कृ. ४ चन्द्रे उ.भा. भौमयुति
,, ,, ५ भौमे उ.भा. ,,
,, ,, ६ बुधे रेवती लग्नाऽभाव
,, ,, ६ बुधे अश्विनी केतुवेध
,, ,, ७ गुरौ अश्विनी ,,
,, ,, १० रवौ रोहिणी लग्नाऽभाव
,, ,, ११ चन्द्रे मृग. ,,
श्रावण शु. ३ चन्द्रे उ.फा. भौमवेध
,, ,, ४ भौमे उ.फा. ,,
,, ,, ५ बुधे हस्त लग्नाऽभाव
,, ,, ५ बुधे चित्रा राहुवेध
,, ,, ५ गुरौ चित्रा ,,
,, ,, ६ शुक्रे स्वाती लग्नाऽभाव
,, ,, ८ रवौ अनु. लग्नाऽभाव वैधृति दोष
,, ,, ९ चन्द्रे मूल शनियुति
,, ,, १० भौमे मूल ,,
,, ,, १३ गुरौ उ.षा. लग्नाऽभाव

श्रावण शु. १३ गुरौ श्रवण सूर्यवेध
,, ,, १४ शुक्रे श्रवण ,,
,, ,, १५ शनौ धनिष्ठा मृत्यु प. लग्नाऽभाव
भाद्रपद कृ. २ चन्द्रे रेवती लग्नाऽभाव
,, ,, ४ भौमे रेवती भौमयुति
,, ,, ४ भौमे अश्विनी केतुवेध
,, ,, ५ बुधे अश्विनी ,,
भाद्रपद शु. २ भौमे हस्त भौमवेध
,, ,, ३ बुधे स्वाती राहुवेध
,, ,, ४ गुरौ स्वाती ,,
,, ,, ६ शनौ अनु. लग्नाऽभाव मृत्युपंचक
,, ,, ७ रवौ मूल शनियुति
,, ,, ८ चन्द्रे मूल ,,
,, ,, ९ भौमे उ.षा. लग्नाऽभाव
,, ,, १० बुधे श्रवण ,, भद्रा
,, ,, १५ रवौ उ.भा भौमयुति
अग्रेश्राद्धपक्षारंभः
आश्विन शु. २ बुधे स्वाती राहुवेध
,, ,, ४ शनौ अनु. मृत्युपंचक
,, ,, ५ रवौ मूल शनियुति
,, ,, ६ चन्द्रे मूल ,, मृत्युपंचक
,, ,, ७ भौमे उ.षा. मृत्युपंचक भद्रा
,, ,, ९ बुधे उ.षा. लग्नाऽभाव नक्षत्रात
,, ,, १० गुरौ धनिष्टा भुजंगपात
,, ,, १२ शना उ.भा. भौमयुति
,, ,, १३ रवौ उ.भा. ,,
,, ,, १४ चन्द्रे अश्विनी केतुवेध
,, ,, १५ भौमे अश्विनी ,,
कार्तिक कृ. ३ गुरौ रोहिणी लग्नाऽभाव भद्रा

कार्तिक कृ. ४ शुक्रे रोहिणी परिघार्द्ध दोष
,, ,, ५ शनौ मृग. लग्नाऽभाव
,, ,, १० शुक्रे उ.फा. वैधृति मृत्यु प.
,, ,, ११ शनौ उ.फा ,, ,,
,, ,, १२ रवौ हस्त भौमवेध
,, ,, १३ चन्द्रे हस्त ,,
कार्तिक शु. ३ शनौ मूल शनियुति
,, ,, ४ रवौ मूल ,,

कार्तिक शु ५ चन्द्र उ.षा. भुजंगपात
,, ,, ६ भौमे उ.षा. ,,
,, ,, ७ बुधे श्रवण लग्नाऽभाव
,, ,, ७ बुधे धनिष्ठा ,, भद्रा
,, ,, ८ गुरौ धनिष्ठा मृत्युपंचक
,, ,, १० शनौ उ.भा. भौमयुति
,, ,, ११ रवौ उ.भा. ,,

नक्षत्र चतुष्टयी के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

द्वि. ज्यष्ठ शु. ९ गुरौ चित्रा राहुवेध
,, ,, ,, १० शुक्रे चित्रा ,,
आषाढ़ कृ. ३ शनौश्रवण भद्रा नक्षत्रांत दोष
,, ,, ४ रवौ धनिष्ठा दिवालग्नाऽभाव
,, ,, ९ गुरौ अश्विनी केतुवेध
,, ,, १० शुक्रे अश्विनी केतुवेध
कार्तिक शु. १३ चन्द्रे ,, व्यतिपात लग्नाऽभाव

मार्गशीर्ष कृ. ११ चन्द्रे चित्रा मृत्युपंचक
,, शु. ३ चन्द्रे श्रवण भद्रादोष
,, ,, ५ भौमे श्रवण मृत्युपंचक
,, ,, ५ भौमे धनिष्ठा ,,
पौष शु. ७ शनौ अश्विनी भौमयुति भद्रा
,, ,, ८ रवौ अश्विनी ,,
माघ कृ. ७ रवौ चित्रा लग्नाऽभावनक्षत्रांत
,, शु. ५ शुक्रे अश्विनी मृत्युपंचक

* उपनयन मुहूर्त्त *

चैत्र शुक्ल पक्षे

३ रवौ अश्विना अभिजिति
१० रवौ पुष्य अभिजिति
११ चन्द्रे (पुष्य) अश्लेषा अभिजिति
१२ भौमे अश्लेषा अभिजिति पूर्वान्हे सामगानाम्

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ भौम रोहिणी अभिजिति पूर्वान्हे समगानाम्
४ बुधे मृगशिर ल. ४ स्टें.टा. ११/५३ से आवश्यकता में (गुरु वृद्धत्व दोष)
५ गुरौ मृगशिर आर्द्रा स्टें.टा. १२/११ तक अति आवश्यकता में

आषाढ़ कृष्ण पक्षे

५ चन्द्रे शतभिषा स्टें.टा. १०/३६ तक (याम्यायन)

आषाढ़ शुक्ल पक्षे

२ शुक्रे पुष्य अभिजित (याम्यायन)

पौष शुक्ल पक्षे

१२ बुध रोहणी ल. १२

माघ कृष्ण पक्षे

२ चन्द्र अश्लेषा अभिजित
४ गुरौ उ.फा. अभिजित
५ शुक्रे हस्त अभिजित

माघ शुक्ल पक्षे

३ बुध पू.भा ल. ११/१२
५ शुक्रे रेवती अभिजित

१० बुधे मृगशिर ल. ११/१२ पादात्बुधवेधा भावः

* गृहारंभ मुहूर्त्त *

आषाढ़ शुक्ल पक्षे

११ चन्द्रे अनुराधा स्टें.टा. ८/१४ तक

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ धनिष्ठा अभिजित

श्रावण शुक्ल पक्षे

१३ गुरौ उ.पा. अभिजित

१५ शनौ शतभिषा अभिजित

आश्विन शुक्ल पक्षे

१० गुरौ धनिष्ठा अभिजित

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

१ गुरौ रोहिणी अभिजित

२ शुक्रे मृगशिर अभिजिति

पौष शुक्ल पक्षे

१२ बुधे रोहिणी ल. ११/१२

माघ कृष्णपक्षे

४ गुरौ उ.फा. अभिजिति

माघ शुक्ल पक्षे

१० बुधे मृग.ल. १२ पादवेधात् बुध वेधा भावः

१३ शनौ पुष्य अभिजित आवश्यकता में शुक्र वृद्धत्व दोष

* नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त *

पौष शुक्ल पक्षे

१० बुधे रोहिणी ल. ११/१२

माघ कृष्ण पक्षे

१० बुधे अनु. ल. १२ स्टें.टा. ६/०१ तक

माघ शुक्ले पक्षे

१० बुधे मृगशिर ल. १२ पादवेधात् बुधवेधाऽभावः

* जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त *

श्रावण शुक्ल पक्षे

६ शुक्रे स्वाती अभिजित

१३ गुरौ उ.षा. अभिजित

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

६ बुधे धनिष्ठा ल. चि.

माघ शुक्ल पक्षे

१३ शनौ पुष्य अभिजित आवश्यकता में

* देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त *

वैशाख शुक्ल पक्षे

४ बुधे मृग. ल. ४ आवश्यकता में गुरु वृद्धत्व दोष

५ गुरौ मृग. स्टें.टा. १०/१५ तक आवश्यकता में

द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

१० शनौ स्वाती अभिजित याम्यायनम्

आषाढ़ कृष्ण पक्षे

५ चन्द्रे शतभिषा स्टें. १२/४३ तक

७ बुधे उ.भा. रेवती (क्षय तिथिः)

पौष शुक्ल पक्षे

१२ बुधे रोहिणी ल. १२

माघ कृष्ण पक्षे

१ रवौ पुष्य अभिजित

४ गुरौ उ.फा. अभिजित

५ शुक्रे हस्त अभिजित

६ शनौ चित्रा अभिजित

७ रवौ चित्रा स्टें.टा. १२/३ तक

१० बुधे अनु. स्टें.टा. ९/५१ तक

माघ शुक्ल पक्षे

[illegible]

१० बुधे मृग ल. १२ पादानुबुधवेध भावः

१२ शुक्रे पुनर्वसु अभिजित

१३ शनौ पुष्य अभिजित

आवश्यकता में, शुक्र वृद्धत्व दोष।

* द्विरागमन मुहूर्त्त *

वैशाख कृष्ण पक्षे

१२ बुधे शत. स्टें.टा. १५/३४ उप.

१३ गुरौ उ.भा. स्टें.टा. १६/२३ उप.

वैशाख शुक्ल पक्षे

४ बुधे मृग. स्टें. ११/५३ उप. गुरुवृद्धत्वदोष

५ गुरौ मृग. स्टें.टा. १०/१५ तक ,, ,,

कार्तिक शुक्ल पक्षे

७ बुधे श्रवण धनिष्ठा स्टें.टा. १५/५७ तक

८ गुरौ धनिष्ठा शतभिषा स्टें.टा. १४/०९ तक

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

१ गुरौ रोहिणी

२ शुक्रे मृगशिर

५ चन्द्रे पुष्य

११ चन्द्रे चित्रा

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

३ चन्द्रे उ.षा. स्टें.टा. ७/२९ तक

६ बुधे धनिष्ठा

७ गुरौ शतभिषा स्टें.टा. १६/३२ तक

माघ शुक्ल पक्षे

१० बुधे मृगशिर

१२ गुरौ पुनर्वसु

द्विपुष्कर योग सं. २०४५ वि.

ता. मास घं.मि. से	ता. मास घं.मि. तक
३ अप्रैल १६/४ ,,	३ अप्रैल २४/३७ तक
१७ मई १८/३७ ,,	१७ मई २६/०९ ,,
२८ ,, ५/२९ ,,	२८ ,, १६/१७ ,,
५ जून २७/०८ ,,	५ जून २९/२७ ,,
३० जुलाई ५/४५ ,,	३० जुलाई २३/२७ ,,
१ अक्टू. १०/०६ ,,	१ अक्टू. २८/५० ,,
(सन् १९८९)	
२८ जन. १६/१० ,,	२९ जन. १२/०३ ,,
२ अप्रै. २२/४५ ,,	३ अप्रै. ६/१३ ,,

त्रिपुष्कर योग सं. २०४५ वि.

ता. मास घं.मि. से	ता. मास घं.मि. तक
२३ अप्रैल ५/५२ ,,	२३ अप्रैल १४/८ ,,
३ मई ५/४३ ,,	३ मई ९/०१ ,,
७ ,, २१/५६ ,,	७ ,, २९/२५ ,,
२१ जून १७/५८ ,,	२१ जून २६/४४ ,,
२६ ,, ७/४० ,,	२६ ,, २६/३० ,,
५ जुलाई ८/१० ,,	५ जुलाई ११/०५ ,,
९ ,, २५/२४ ,,	१० ,, ८/३२ ,,
२० अगस्त ५/५६ ,,	२० अगस्त ९/०७ ,,
२८ ,, १२/३९ ,,	२८ ,, २८/१५ ,,
६ सित. २४/३३ ,,	६ सित. २५/५० ,,
२२ अक्टू. ६/३० ,,	२२ अक्टू. १९/४९ ,,
३० ,, २५/३४ ,,	३१ ,, ६/३६ ,,
५ नवं. १२/३७ ,,	५ नवं. ३०/०२ ,,
२० दिस. १०/३५ ,,	२० दिस. १४/३७ ,,
२४ ,, १०/४१ ,,	२५ ,, ९/५१ ,,
(सन् १९८९)	
३ जन. २८/२४ ,,	३ जन. ३१/१०
८ ,, २२/४३ ,,	८ ,, २८/१३ ,,
४ मार्च ११/४२ ,,	४ मार्च २५/२१ ,,

* ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र चार, सम्वत् २०४५ वि. सन् १९८८-१९८९ ई. *

सूर्यचार			मंगलचार		बुधचार		
सूर्यचार सन् १९८८ ई.	जुला १९ पुष्य १ ,,	,, २२ ,, २	,, १७ उ.भा. १	,, १९ ,, १	,, ७ ,, ३	,, २० पुन. १	,, २५ हस्त ४
मार्च २० उ.भा. २	,, २३ ,, २ ,,	,, २५ ,, ३	,, २१ ,, २	,, २८ मार्गी	,, ८ ,, ४	जुलाई २२ पुन. २	,, २८ चित्रा १
,, २४ ,, ३	,, २६ ,, ३	,, २९ अनु ४	,, २४ ,, ३	नव. ५ उ.भा. २	,, १० रेवती १	,, २४ ,, ३	,, ३१ ,, २
,, २७ ,, ४	,, २९ ,, ४	दिस. २ ज्ये. १	,, २७ ,, ४	,, २२ ,, ३	,, १२ ,, २	,, २५ ,, ४ कर्क	नवं. २ ,, ३ तुला
,, ३० रेवती १	अग २ अश्ले. १	,, ५ ,, २	,, ३१ रेवती १	दिसं. २ ,, ४	,, १३ ,, ३	,, २७ पुष्य १	'' ४ ,, '' ४
अप्रैल ३ ,, २	,, ५ ,, २	,, ८ ,, ३	अप्रैल ३ ,, २	,, १० रेवती १	,, १५ ,, ४	'' २९ ,, '' २	,, ६ स्वाती १
,, ६ ,, ३	,, ९ ,, ३	,, १२ ,, ४	,, ६ ,, ३	,, १८ ,, २	,, १७ अश्वि. १ मेष	,, ३० ,, ३	,, ८ ,, २
,, १० ,, ४	,, १२ ,, ४	,, १५ मूल. १ धनु	मंगलचार सन् १९८८ ई.	,, २५ ,, ३	,, १८ ,, २	अगस्त १ ,, ४	नवं. १० स्वाती ३
,, १३ अश्वि. १ मेष	,, १६ मघा १ सिंह	,, १८ ,, २	मार्च २३ उ.षा. १	सन् १९८९	,, २० ,, ३	'' २ अश्ले १	,, १२ ,, ४
,, १६ ,, २	,, १९ ,, २	,, २१ ,, ३	,, २८ ,, २ मकर	जन. १ रेवती ४	,, २२ ,, ४	,, ४ ,, २	,, १४ विशाखा १
,, २० ,, ३	,, २३ ,, ३	,, २५ ,, ४	अप्रैल २ ,, ३	,, ७ अश्वि. १ मेष	,, २३ भरणी १	,, ६ ,, ३	,, १७ ,, २
,, २३ ,, ४	,, २६ ,, ४	,, २८ पू.षा. १	,, ७ ,, ४	जन १३ ,, २	,, २५ ,, २	,, ७ ,, ४	'' १९ ,, '' ३
,, २७ भर. १	,, ३० पू.फा. १	,, ३१ ,, २	,, १२ श्रवण १	जन १९ ,, ३	,, २६ ,, ३	,, ९ मघा १ सिंह	,, २१ ,, ४ वृश्चि.
,, ३० ,, २	सित. २ ,, २	सन् १९८९	,, १७ ,, '' २	,, २५ ,, ४	,, २८ ,, ४	,, ११ ,, २	,, २३ अनु. १
मई ३ ,, ३	,, ६ ,, ३	जन. ४ पू.षा. ३	,, २२ ,, ३	,, ३१ भरणी १	,, २९ कृत्ति. १	,, १२ ,, ३	,, २५ ,, २
,, ७ ,, ४	,, ९ ,, ४	,, ७ ,, ४	,, २७ ,, ४	फर. ६ ,, २	मई ०१ ,, २ वृष	,, १४ ,, ४	,, २७ ,, ३
,, १० कृति. १	,, १२ उ.फा. १	,, १० उ.षा. १	मई २ धनिष्ठा १	फर १२ ,, '' ३	,, ३ ,, ३	,, १६ पू.फा. १	,, २९ ,, ४
,, १४ ,, २ वृष	,, १६ ,, २ कन्या	,, १३ ,, २ मकर	,, ७ ,, '' २	,, १७ ,, ४	'' ५ ,, '' ४	,, १८ ,, २	दिसं. १ ज्येष्ठा १
,, १७ ,, ३	,, १९ ,, ३	,, १७ ,, ३	,, १२ ,, ३ कुंभ	,, २३ कृति. १	,, ६ रोहिणी १	,, २० ,, ३	,, ४ ,, २
,, २१ ,, ४	,, २३ ,, ४	,, २० ,, ४	,, १७ ,, '' ४	,, २८ ,, २ वृष	,, ८ ,, २	,, २२ ,, ४	,, ६ ,, ३
,, २४ रोहि. १	,, २६ हस्त १	,, २३ श्रवण १	,, २३ शत. १	मार्च ६ ,, '' ३	,, १० ,, ३	,, २४ उ.फा. १	,, ८ ,, ४
,, २८ ,, २	,, २९ ,, २	,, २६ ,, २	,, २८ ,, २	,, १२ ,, '' ४	,, १३ ,, ४	,, २६ ,, २ कन्या	,, १० मूल १ धनु
,, ३१ ,, ३	अक्टू. ३ ,, ३	,, ३० ,, ३	जून २ ,, ३	,, १७ रोहि. १	,, १५ मृग. १	,, २८ ,, ३	,, १२ ,, २
जून ४ ,, ४	'' ६ '' ४	फर. २ ,, ४	,, ७ ,, ४	,, २२ ,, २	,, १९ ,, २	,, ३१ ,, ४	'' १४ ,, ३
,, ७ मृग. १	,, १० चित्रा १	,, ५ धनि. १	,, १३ पू.भा. १	,, २८ ,, ३	,, २३ ,, ३ मिथुन	सित. २ हस्त १	,, १६ ,, ४
,, ११ ,, २	,, १३ ,, २	,, ९ ,, २	,, १९ ,, २	अप्रैल २ ,, ४	,, ३१ वक्री	,, ४ ,, २	,, १८ पू.षा. १
,, १४ ,, ३ मिथु.	,, १६ ,, ३ तुला	फर १२ धनि. ३ कुंभ	जून २५ पू.भा. ३	बुध चार सन् १९८८ ई.	जून १० मृग २ वृष	,, ७ ,, ३	,, २१ ,, २
,, १८ ,, ४	,, २० ,, ४	,, १५ ,, ४	जुला १ ,, ४ मीन	मार्च १९ शत. २	,, १६ ,, १	,, १० ,, ४	,, २३ ,, ३
,, २१ आर्द्रा १	,, २३ स्वा. १	,, १९ शत. १	,, ७ उ.भा. १	,, २१ ,, ३	,, २४ मार्गी	,, १३ चित्रा १	,, २५ ,, ४
,, २५ ,, २	,, २६ ,, २	,, २२ ,, २	,, १४ ,, २	,, २३ ,, ४	जुलाई २ मृग. २	,, १६ ,, २	,, २७ उ.षा. १
,, २८ ,, ३	,, ३० ,, ३	,, २५ ,, ३	,, २२ ,, ३	मार्च २६ पू.भा. १	,, ६ ,, ३ मिथुन	,, २० ,, ३ तुला	'' २९ '' २ मकर
जुला. २ ,, ४	नव. २ स्वा. ४	,, २८ ,, ४	,, ३१ ,, ४	,, २८ ,, २	,, ९ ,, ४	,, २९ वक्री	'' ३१ ,, '' ३
,, ५ पुन. १	,, ५ विशा. १	मार्च ४ पू.भा. १	अगस्त १३ रेवती १	,, ३० ,, ३	,, १२ आर्द्रा १	अक्टू. ६ चित्रा २ कन्या	सन् १९८९
,, ९ ,, २	,, ९ ,, २	,, ७ ,, २	'' २६ वक्री	अप्रैल १ ,, ४ मीन	,, १४ ,, २	,, ९ ,, १	जन. ३ उ.षा. ४
,, १२ ,, ३	,, १२ ,, ३	,, १० ,, ३	सित. ८ उ.भा. ४	,, ३ उ.भा. , १	,, १६ ,, ३	,, १२ हस्त ४	,, ५ श्रवण १
,, १६ पुन. ४ कर्क	,, १५ ,, ४ वृश्चि.	,, १४ ,, ४ मीन	,, २१ ,, ३	,, ५ ,, २	'' १८ ,, '' ४	,, १५ ,, ३	,, ८ ,, २
	,, १९ अनु. १		अक्टू. ३ ,, २			,, २० मार्गी	,, ११ ,, ३
							,, १६ ,, वक्री

* ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र चार, सम्वत् २०४५ वि. सन् १९८८-१९८९ ई. *

बुध गुरूचार

.. २०	श्रवण	२
२३	,,	१
.. २६	उ.षा	४
.. २८	,,	३
फर १	,,	२
" ५	"	मार्गी
.. १०	उ.षा	३
.. १५	,,	४
.. १८	श्रवण	१
.. २१	,,	२
" २४	,,	३
.. २७	,,	४
मार्च १	धनिष्ठा	१
.. ४	,,	२
.. ६	,,	३ कुंभ
.. ८		४
" १०	शत	१
.. १३	,,	२
.. १५	,,	३
.. १७	,,	४
" १९	पू.भा	१
.. २१	,,	२
.. २२	,,	३
.. २४	,,	४ मीन
.. २६	उ.भा	१
.. २८	,,	२
.. ३०	,,	३
.. ३१	,,	४
अप्रैल २	रेवती	१
.. ४	,,	२
.. ५	,,	३

गुरू चार सन् १९८८

मार्च [illegible]	अश्वि	४
अप्रैल [illegible]	भरणी	१
.. [illegible]	,,	[illegible]
मई [illegible]	,,	३
.. [illegible]	,,	४
जून ४	कृतिका	१
.. १९		२ वृष

शुक्रचार

जुलाई ५	कृतिका	३
.. २४	,,	४
अगस्त १६	रोहिणी	१
सित. २४	वक्री	
नव. २	कृतिका	४
" २८	,,	३
दिस. २७	,,	२

सन् १९८९

जन. २०		मार्गी
फर. १३	कृतिका	२
मार्च १३	,,	४
अप्रैल २	रोहिणी	१

शुक्र चार १९८८ ई.

मार्च २२	भरणी	४
.. २५	कृतिका	१
" २८	"	२ वृष
.. ३१	,,	३
अप्रैल ४	,,	४
.. ७	रोहिणी	१
११	,,	२
.. १४	,,	३
.. १८	,,	४
.. २२	मृग	१
.. २७	,,	२
मई २	,,	३ मिथुन
.. ८	,,	४
.. २०	आर्द्रा	१
२२		वक्री
.. २४	मृग	४
जून [illegible]	,,	३
.. १०	,,	२ वृष
" १५	,,	१
" २२	रोहि	४
जुलाई ४		मार्गी
.. १७	मृग	[illegible]
.. २४	,,	२
.. २९	,,	३ मिथुन
अगस्त ३	मृगा.	४
.. ७	आर्द्रा	१
.. ११	,,	२
.. १५	,,	३
" १८	,,	४
" २२	पुन	१
" २५	,,	२
" २९	,,	३
सितं. १	"	४ कर्क
" ४	पुष्य	१
.. ७	,,	२
सित १०	पुष्य	३
.. १४	,,	४
.. १७	अश्लेषा	१
" २०	,,	२
.. २३	,,	३
.. २६	,,	४
" २९	मघा	१ सिंह
अक्टू. १	,,	२
.. ४	,,	३
.. ७	,,	४
.. १०	पू.फा.	१
.. १३	,,	२
.. १६	,,	३
.. १९	,,	४
.. २२	उ.फा	१
.. २४	,,	२ कन्या
" २७	,,	३
" ३०	,,	४
नव २	हस्त	१
.. ४	,,	२
.. ७	,,	३
.. १०	,,	४
.. १२	चित्रा	१
.. १५	,,	२
" १८		३ तुला
[illegible]		
" २३		स्वाती १
" २६	,,	२
" २८	स्वाती	३
दिसं १	,,	४
.. ४	विशाखा	१
दिस. ७	विशाखा	२
.. १०	,,	३
.. १२	४	वृश्चि
.. १५	,,	अनु १
.. १८	,,	२
" २०	,,	३
.. २३	,,	४
" २६		ज्येष्ठा १
.. २८	,,	२
.. ३१	,,	३

सन् १९८९ ई.

जन. ३	ज्येष्ठा	४
.. ५	मूल	१ धनु
.. ८	,,	२
.. ११	,,	३
.. १३	,,	४
.. १६	पू.षा.	१
" १९	,,	२
" २१	,,	३
.. २४	,,	४
.. २६	उ.षा	१
.. २९		२ मकर
फर. १	,,	३
.. ४	,,	४
" ६		श्रवण १
.. ९	,,	२
" ११	,,	३
" १४	,,	४
" १७		धनि १
" १९	,,	२
" २२	,,	३ कुम्भ
" २५	,,	४
.. २८	शत	१
मार्च २	शत	२
.. ५		३
.. ८	,,	४
" १०		पू.भा १

शुक्र शनि राहुचार

.. १३	पू.भा	२
.. १६	,,	३
" १८	"	४ मीन
.. २१	उ.भा	१
.. २४	,,	२
२६	,,	३
.. २९	,,	४
अप्रैल १	रेवती	१
.. ३	,,	२
.. ६	,,	३

शनिचार सन् १९८८

अप्रैल ११	वक्री	
जून ५	मूल	३
जुलाई २३	,,	१
अगस्त ३०	मार्गी	
अक्टू. ६	मूल	२
नव. १६	,,	३
दिस. १६	,,	४

सन् १९८९

जन. १३	पू.षा.	१
फर. १३	,,	२

राहु चार सन् १९८८

मई ८	पू.भा	२
जुलाई १०	,,	१
सित ११	शत	४
नव. १३	,,	३

सन् १९८९

जन. १५	शत	२
मार्च १८	,,	१

पंन्चांग पाठकों को नये वर्ष की शुभकामनायें
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

केतु हर्षल-नेपच्यून चार

केतुचार सन् १९८७ ई.

मई ८	पू.फा.	४
जुलाई १०	,,	३
सित. ११	,,	२
नवं. १३	,,	१

सन् १९८९ ई.

जन. १५	मघा	४
मार्च १८	,,	३

हर्षल चार सन् १९८८

अप्रैल ४	वक्री	
मई १६	मूल	२
सित ५	मार्गी	
दिस ९	मूल	१

सन् १९८९

फर. ५	मूल	४

नेपच्यून चार सन् १९८८

अप्रैल ११	वक्री	
सित. १८	मार्गी	

सन् १९८९ ई

जन १२	पू.षा.	१

मंगल-बुध-गुरू-शुक्र-शनि के उदय अस्त

सन् १९८८-८९ ई.

मंगल का उदयास्त नहीं है।

ग्रह	दिशा	उदयास्त	तारीख
बुध	पूर्व	अस्त	७-४-८८ ई.
,,	पश्चिम	उदय	२-५-८८ ,,
,,	,,	अस्त	३-६-८८ ,,
,,	पूर्व	उदय	२२-६-८८ ,,
,,	,,	अस्त	२२-७-८८ ,,
,,	पश्चिम	उदय	१६-८-८८ ,,
,,	,,	अस्त	४-१०-८८ ,,
,,	पूर्व	उदय	१८-१०-८८ ,,
,,	,,	अस्त	९-११-८८ ,,
,,	पश्चिम	उदय	२४-१२-८८ ,,
,,	,,	अस्त	१८-१-८९ ,,
,,	पूर्व	उदय	३१-१-८९ ,,
,,	,,	अस्त	२१-३-८९ ,,
गुरू	पश्चिम	,,	२३-४-८८ ,,
,,	पूर्व	उदय	१९-५-८८ ,,
शुक्र	पश्चिम	अस्त	१०-६-८८ ,,
,,	पूर्व	उदय	१९-६-८८ ,,
,,	,,	अस्त	२०-२-८९ ,,
शनि	पश्चिम	,,	०९-१२-८८ ,,
,,	पूर्व	उदय	१२-१-८९ ,,

आवश्यक निवेदन

अनन्य स्नेही मित्रों से

अब मैं ७९वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हूं। ज्योतिष और पत्रकारिता के क्षेत्र में अहर्निश कलम घिसाते अर्धशताब्दी से अधिक समय बीत चुका, अब स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। राजकीय सेवा में भी ३० वर्ष की सेवा के बाद पेन्शन मिल जाती है। मुझे तो ज्योतिष और भारतीय संस्कृति की सेवा करते ५५ वर्ष हो चुके, शरीर के सभी पुर्जे (अवयव) घिस चुके हैं, वे विश्राम चाहते हैं, [illegible] से ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य बन्द कर दिये हैं। जन्म-पत्र वर्षफल बनवाने, देखने और प्रश्न पूछने वालों के अनेक पत्र मिलते आते हैं—उन सब से मैं क्षमा प्रार्थी हूं। पञ्चाङ्ग और 'ज्योतिष्मती' का कार्य भी धीरे-धीरे कम कर रहा हूं। जो सज्जन मुझ से प्रत्यक्ष मिलना चाहें वे १० दिन पूर्व दूरभाष (टेलीफोन) जवाबी तार या जवाबी पत्र से स्वीकृति लेकर निश्चित समय पर सोलन आवें। दूरभाष ६९६ (Phone No. 696) है।

सोलन १७३२१२ (हिमाचल प्रदेश)

निवेदक :
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सं. २०४५ वि. के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि तथा रविपुष्य गुरु पुष्य योग

तारीखों पर से स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार लिखे हैं। इस समय में शुभ कार्यारम्भ करना सिद्धिदायक होता है।

सर्वार्थसिद्धि योग

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
२०	मार्च	सूर्योदय	''	२०	मार्च	२४।३०	''
२२	''	''	''	२२	''	२३।३२	''
२३	''	''	''	२४	''	सूर्योदय	''
२५	''	२७।४६	''	२६	''	''	''
२७	''	६।२४	''	२८	''	९।२३	''
२९	''	सूर्योदय	''	२९	''	१२।३०	''
६	अप्रैल	''	''	६	अप्रैल	२६।४९	''
१०	''	''	''	१०	''	२३।५६	''
११	''	''	''	११	''	२२।२०	''
१५	''	१४।२०	''	१६	''	सूर्योदय	''
१७	''	सूर्योदय	''	१७	''	१०।५३	''
१९	''	''	''	१९	''	९।१४	''
२०	''	''	''	२१	''	सूर्योदय	''
२२	''	११।५२	''	२३	''	''	''
२४	''	सूर्योदय	''	२४	''	१६।५४	''
४	मई	''	''	४	मई	८।५३	''
१२	''	२२।२६	''	१४	''	सूर्योदय	''
१६	''	१८।३५	''	१७	''	''	''
१८	''	सूर्योदय	''	१८	''	१९।१६	''
१९	''	२०।३३	''	२०	''	२२।३०	''
३०	''	१७।०९	''	३१	''	सूर्योदय	''
४	जून	११।१६	''	५	जून	''	''
९	''	सूर्योदय	''	१०	''	२६।५२	''
१३	''	''	''	१४	''	सूर्योदय	''
१६	''	''	''	१७	''	६।३७	''
२२	''	२०।५३	''	२३	''	सूर्योदय	''
२५	''	सूर्योदय	'–	२५	''	२६।१४	''
२७	''	''	''	२७	''	२६।०१	''
१	जुला.	१९।०१	''	२	जुला.	१९।४७	''
५	''	११।०५	''	६	''	सूर्योदय	''
७	''	सूर्योदय	''	८	''	८।२३	''
११	''	''	''	१२	''	सूर्योदय	''
१४	जुला.	सूर्योदय	''	१५	जुला.	सूर्योदय	''
२०	''	''	''	२१	''	''	''
२३	''	''	''	२३	''	११।००	''
२५	''	''	''	२५	''	११।४५	''
२९	''	''	''	२९	''	२६।११	''
२	अग.	''	''	२	अग.	१६।३३	''
४	''	''	''	४	''	१४।०८	''
६	''	१३।५९	''	७	''	सूर्योदय	''
८	''	सूर्योदय	''	८	''	१६।०४	''
११	''	''	''	११	''	२२।३७	''
१७	''	''	''	१७	''	१३।५०	''
२६	''	''	''	२६	''	१२।५८	''
२८	''	२८।१५	''	२९	''	सूर्योदय	''
३०	''	२३।२६	''	३१	''	''	''
३	सित.	सूर्योदय	''	३	सितं.	२०।४३	''
११	''	१३।४६	''	१२	''	सूर्योदय	''
१८	''	२७।५४	''	१९	''	''	''
२५	''	१५।१८	''	२६	''	''	''
२७	''	९।४६	''	२८	''	''	''
७	अक्टू.	१६।५१	''	८	अक्टू.	''	''
९	''	सूर्योदय	''	१०	''	''	''
१६	''	९।४३	''	१७	''	''	''
२३	''	सूर्योदय	''	२३	''	२३।११	''
२५	''	''	''	२५	''	१८।१९	''
२६	''	१६।१६	''	२७	''	सूर्योदय	''
३१	''	१५।४८	''	१	नवं.	''	''
१	नवं	१७।५९	''	२	नवं.	''	''
४	''	सूर्योदय	''	४	नवं.	२७।०१	''
६	''	''	''	७	''	सूर्योदय	''
१३	''	''	''	१३	''	१५।२२	''
२०	''	''	''	२०	''	७।५८	''
२२	''	२६।२७	''	२४	''	सूर्योदय	''
२७	''	२४।४२	''	२८	''	२६।२६	''
२९	''	सूर्योदय	''	२९	''	२८।५३	''
२	दिसं.	''	''	२	दिसं.	१०।५१	''
४	''	''	''	४	''	१६।४५	''
७	''	२१।५५	''	८	''	२२।२६	''
११	दिसं.	२११६	''	१२	''	सूर्योदय	''
१२	''	२०।१८	''	१३	''	''	''
१८	''	१३।५६	''	१९	''	''	''
२५	दिसं.	९।५१	''	२६	दिसं.	११।२०	''
२७	''	सूर्योदय	''	२७	''	१३।२६	''
४	जन.	''	''	५	जन. ८९	७।४६	''
८	''	''	''	८	''	२८।१३	''
९	''	''	''	९	''	२६।२८	''
१३	''	१९।३५	''	१४	''	सूर्योदय	''
१५	''	सूर्योदय	''	१५	''	१७।१५	''
१७	''	''	''	१७	''	१६।०१	''
१८	''	''	''	१९	''	सूर्योदय	''
२०	''	१६।४७	''	२१	''	''	''
२२	''	सूर्योदय	''	२२	''	१९।२९	''
१	फर	''	''	१	फर.	१७।२८	''
५	''	''	''	५	''	१४।३०	''
६	''	''	''	६	''	१२।२२	''
९	''	२६।४२	''	११	''	सूर्योदय	''
१३	''	२१।२६	''	१४	''	''	''
१५	''	सूर्योदय	''	१५	''	२१।५१	''
१६	''	२२।५१	''	१७	''	२४।१९	''
२५	''	१९।१२	''	२६	''	सूर्योदय	''
२७	''	२४।१४	''	२८	''	''	''
४	मार्च	२५।११	''	५	मार्च	''	''
९	''	१२।३१	''	११	''	''	''
१३	''	सूर्योदय	''	१४	''	''	''
१६	''	''	''	१७	''	''	''
२२	''	१९।२५	''	२३	''	''	''
२५	''	सूर्योदय	''	२५	''	२८।०९	''
२७	''	६।३५	''	२८	''	सूर्योदय	''
१	अप्रैल	१०।४३	''	२	अप्रैल	''	''
४	''	२६।४०	''	५	''	''	''
६	''	सूर्योदय	''	७	''	१७।२८	''

अमृत सिद्धि योग

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
६	अप्रैल	सूर्योदय	''	६	अप्रैल	२६।४९	''
१५	''	१४।२०	''	१६	''	सूर्योदय	''
४	मई	सूर्योदय	''	४	मई	८।५३	''
१३	''	''	''	१३	''	२१।०५	''
[illegible]	[illegible]	[illegible]	''	[illegible]	[illegible]	सूर्योदय	''
११	जुला.	९।१३	''	१२	जुला.	सूर्योदय	''
१४	''	१३।५०	''	१५	''	''	''
६	अग.	१३।५९	''	७	अग.	''	''
८	''	सूर्योदय	''	८	''	१६।१४	''
११	''	''	''	११	''	२२।३७	''
३०	''	२३।२६	''	३१	''	सूर्योदय	''
३	सितं.	सूर्योदय	''	३	सित.	२०।४३	''
२७	''	९।४६	''	२८	''	सूर्योदय	''
९	अक्टू.	२३।०२	''	१०	अक्टू.	''	''
२५	''	सूर्योदय	''	२५	''	१८।१९	''
६	नवं.	''	''	७	नवं.	सूर्योदय	''
४	दिसं.	''	''	४	दिसं.	१६।४५	''
७	''	२१।५५	''	८	''	सूर्योदय	''
४	जन. ८९	सूर्योदय	''	५	जन.	''	
१	फर.	''	''	१	फर.	१७।२८	''
१०	''	''	''	१०	''	२४।४३	''
१०	मार्च	''	''	१०	मार्च	९।४६	''
१३	''	२७।३१	''	१४	''	सूर्योदय	''
१६	''	२९।५८	''	१७	''	''	''

रवि पुष्य एवं गुरुपुष्य योग

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
२७	मार्च	६।२४	''	२८	मार्च	सूर्योदय	''
२४	अप्रैल	सूर्योदय	''	२४	अप्रैल	१६।५४	''
१४	जुला.	१३।५०	''	१५	जुला.	सूर्योदय	''
११	अग.	सूर्योदय	''	११	अग.	२२।३७	''
२७	नवं.	२४।४२	''	२८	नवं.	सूर्योदय	''
२५	दिस	९।५१	''	२६	दिस.	''	''
२२	जन. ८९	सूर्योदय	''	२२	जन.	१९।२९	''
१७	मार्च	५।५८	''	१७	मार्च	सूर्योदय	''

नोट – रविपुष्य योग के समय में तंत्र-मंत्र की सिद्धि एवं जड़ी-बूटी ग्रहण करना उत्तम है। गुरुपुष्य योग में व्यापारिक कार्य एवं धनलाभ के काम करना विशेष रूप से सिद्धि प्रद होता है। सभी योगों के घंटे-मिनिट भा. स्टं टाईम में दिये हैं। सूर्योदय जहां लिखा है वहां सूर्योदय के घं.मि. पंचांग से लेवें।

श्रीगणशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधार मूर्त्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विचार्य सम्यग्गशित सुनिश्चित नवैः प्रकारैश्च तथा पुरातनैः,
विद्वद्वर; श्रीहरदेव शर्मा सुधाकरश्चैव तथा विपश्चित् ।
पचांगरत्न प्रसरन्मयूखं श्रीकेतकीदृग्गणितेन युक्तम्,
लोकोपकाराय कृतप्रयत्न प्रचक्रत् मोहविनाशदक्षम् ॥२॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृह कुर्याद् ध्वजारोपराणम्
स्नान मगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्ध सुपूजोत्सवम् ।
देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलकारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फल च श्रृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥३॥
तैलाभ्यंगं स्नानमादौ च कृत्वा पीयूषोत्थं पारिभद्रस्य पत्रम्,
भक्षेत्सौख्यं मानवो व्याधिनाशं विद्यायुः श्री लभ्यतो वर्षमूले ॥४॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥५॥
मरीचिहिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः । तितिड़ीजीरकञ्चैव भक्षयेद्रोगशान्तये ॥६॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन सम्वत्सर प्रारभ होता है । इस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज (अपने - अपने सम्प्रदायानुसार जो ध्वज हो वह) लगायें । तोरणादि से गृह सुशोभित करें । मंगलस्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावे । ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन सवत्सर का फल श्रवण करें । प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर, चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और वह भक्षण करें । इस प्रयोग से वर्ष भर में रक्त बिकार नहीं होता और अनेक रोगों की शान्ति होती है ।

पचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दम्,
सन्तोष्यानकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्ठम् ॥
श्रृण्वन गीतानि बाद्यानि च विविधकथास्तद्दिन संक्रमेच्च,
क्रीडन् स्त्रीभिश्च सार्धनिशि रहसि नरो यावदब्दं सुखी स्यात् ॥७॥

पचांगस्थ गणेश ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें । मिष्ठान्न आदि भोजन करावें । गीत (गायन) वाद्य कथाश्रवण आदि कर यह सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें । गृहस्थियों को बिलासयुक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है ।

अथ युगानां व्यवस्था—चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते, तेषु चतुर्दश मनवो भवन्ति । तन्नामानि १ स्वायम्भुवः, २ स्वा[illegible] चाक्षुषः, ७ वैवस्वतः, ८ सावर्णिः, ९ दक्षसावर्णिः, १० ब्रह्मसावर्णिः, ११ धर्मसावर्णिः, १२ रुद्रसावर्णिः, १३ देवसावर्णिः, १४ इन्द्रसावर्णिः,। तत्रैकैकस्य मनोरेकसप्ततिमहायुगानि भवन्ति । महायुगप्रमाणं—विंशतिसहस्राधिक त्रिचत्वारिंशल्लक्षमिताब्दाः, एवं चाक्षुषपर्यन्त षण्मनवो गताः, वर्तमान वैवस्वतमनुः सप्तमः । तत्र सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि । वर्तमानमष्टाविंशतितमं महायुगम् ।

चार युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, इन्हीं दिनों के मान से ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की होती है । इस समय ब्रह्मा की आयु के ५० वर्षव्यतीत होकर ५१वे वर्ष के प्रथम दिन का उदय होकर १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल व्यतीत हो चुके हैं । ब्रह्माजी के एक दिन में उपर्युक्त १४ मनु होते हैं और १ मनु में ७१ महायुग होते हैं । एक महायुग के सौर मानुष वर्ष ४३ लक्ष २० हजार हैं, इस प्रकार चाक्षुष पर्यन्त ६ मनु निकल चुके और ७वाँ मनु वैवस्वत मन्वन्तर चालू है । इस मनु में २७ महायुग निकलकर २८वां महायुग चल रहा है ।

कृतयुगप्रमाणं—१७२८०००, त्रेतायुगप्र० १२९६०००, द्वापरयुगप्र० ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५०८८ शेषकलिः ४२६९१२ कलियुगमध्ये षट् शककर्तारः । आदौ इन्द्रप्रस्थे युधिष्ठिर शकः ३०४४ । द्वितीयोज्जयिन्यां विक्रमस्तस्य शकः १३५ । तृतीयः प्रतिष्ठाननगरे शालिवाहनस्य शकः १८००० । चतुर्थो वैतरिण्यां विजयाभिनन्दनस्तस्य शकः १०००० । पंचमो गौड़देशे धारातीर्थे नागार्जुनस्तस्य शकः ४००००० चतुर्लक्षवर्षाणि । षष्ठः करवीरपत्तने कर्णाटके कल्क्यवतारस्तस्य शकः ८२१ वर्षाणि ।

अथ सत्ययुगादीनां व्यवस्था । सत्ययुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर श्रवणनक्षत्र वृद्धियोग में सत्युग का आरम्भ हुआ । इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी । इसमें श्री विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए । श्रीमत्स्यावतार ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये । भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मंदराचल को पीठ पर धारण कर एवं देव - दैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये । श्रीवराहावतार ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया । श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की । इस युग में धर्म अपने चारों पादों में स्थिर था । गौएं कामधेनु के समान होती थी । प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्कों के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था, इच्छित वर्षा होती थी, पृथ्वी सम्पूर्ण सस्य और रत्नों से परिपूर्णथी, ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता तथा सत्यभाषी, परद्रव्य, परस्त्री पराङ्मुख और त्यागी होते थे, शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे । स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थी । शासक-- वर्ग (राज्यवंश) न्यायपरायण थे और प्रजा को औरस पुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे । वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा, [illegible] रहते थे । इस युग में पुष्कर प्रधान तीर्थ था, प्रह्लाद आदि दैत्यवंशी राजाओं की तीनों की तीनों लोकों में पहुँच थी ।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्न्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्णा ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीबलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण और श्री बलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का बध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता - ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलरामजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएँ दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित्, लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिरादि धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु - पर्यन्त गमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि - अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ - साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म कर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पाखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता क्वचित् देखने में आवेंगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या - विक्रय करेंगे, गौ - ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता - पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म - कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति। अथ कलिमहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तं च शाठ्योर्जितम्। राजानोऽर्थपराःखरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा पृथिवी निरोषधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्याभर्तृविरोधिनी पररता पुत्रापितुर्द्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचास्तु अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति॥ कलौ गंगाया स्थितिः—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च—यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

* अथ संव्वत्सर वर्ष राजादि फलम् *

ॐ नमो भगवतेसव्वत्सराय। अयातः कालजिज्ञासा-कल्पादितः १९७२९४९०८९वत्सरा व्यतीता।सृष्ट्यादितश्च १९५५८८५०८९ वत्सरा गताः। ध्रुवं परितः संचक्रम्य माधना मुनीनां वत्सराः ६२ व्यतीता। श्रीकृष्ण जन्मतो गत हायनानि ५२२४, कलियुगस्य गताब्दाः५०८९, मोग्याब्दाः ४२६९११ श्रीमन्नृपतिचक्र चूडामणीना विक्रमादित्याना राज्यसिंहासना दतीता ब्दा २०४५ श्री मन्नृपति मुकुटमणि यवन जाति निर्बीजक शालि वाहन राज्यात् गत-हायनानि १९१०, बार्हस्पस्त मानेन वर्षनाम आश्विन। प्रभवादि षष्ठ्यब्दानां मध्ये वृष नाम संवत्सर ।ईसवीय सन् १९८८-८९,हिजरीसन् १४०८-१४०९ महावीर निर्वाण जैन संव्वत्सर २५१४-२५१५, भारतीय गणराज्य संवत् ३९-४० प्रवर्तते।

वृष नाम संवत्सरस्तस्य फलम् –

वृषाब्दे निखिलाः क्ष्मेशाः युद्धयन्ते वृषभा इव ।
विप्राः प्रसक्ता विप्रेन्द्राः यजन्ते सततं सुरान् ॥

वृषभ नाम के संम्वत्सर मे राजाओं में परस्पर युद्ध की भावना अधिक होगी। शासक मंत्रिमंडलों में भारी परिवर्तन होगा। ब्राम्हण जन धार्मिक कृत्यों में संलग्न होंगे और जनता में धार्मिक भावना की वृद्धि होगी।

अन्यच्च – मंगल स्वामी है। वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी किन्तु राजाओं को अनेक संकटों का सामना करना पड़ेगा। कहीं छत्र भंग भी होगा। ज्येष्ठ मास मे अन्नादि के भाव मंदे रहे किन्तु आगे लाभ हो। आषाढ में धान्यादि तेज होंगे जिससे व्यापारियों को लाभ के चास मिलेंगे। श्रावण मे घनघोर घटायें आवेंगी आश्विन में तेल, घी तेज रहेंगे। पश्चिमी प्रान्तों मे कहीं दुर्भिक्ष भय व्यापेगा कार्तिक मे प्रजा में रोगपीडा की वृद्धि होगी तथा मार्गशीर्ष नेष्ट रहकर पौषादि ३ मास में सभी वस्तुएं मध्यम तेज होंगी।

अथास्मिन् वर्षे राजा शुक्रः, मंत्री बुधः, सस्येशः शनिः, धान्येशो गुरुः, मेघेशो भौमः रसेशो रविः, नीरसेशः शुक्रः, फलेशो भौम, घनेशो भृगु, दुर्गेशो भौमः, एते दशाधिकारिणः। अथैषां फलानि –

राजा शुक्रस्तस्य फलम् –

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः ॥
फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिव सौख्यसंयुताः ॥ १ ॥

राजा शुक्र का फल – अन्नादि के उत्पादन मे वृद्धि होगी। तृणादि की पैदावार भी श्रेष्ठ होगी। वृक्षों के फल फूल अधिक लगेंगे और सभी जीव जन्तु सानन्द सुखी रहेंगे। यहां शुक्र शनि से दृष्ट नीचांश में होने से शुभ फल बहुत कम होंगे।

मंत्री बुधस्तस्यफलम् –

शशि सुते शुभ मंत्रीं समागते स्वपतिना रमते मदन क्रियाम् ॥
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यवम मूर चणान्न महार्घता ॥ २ ॥

मंत्री बुध का फल – स्त्रियां अपने पतियों के साथ बड़े आनन्द पूर्वक भोगविलास में व्यस्त रहेंगी। पृथ्वी पर बादल वर्षा अच्छी होने से धन धान्य की वृद्धि होवे। व्यापारादि मे घटाबढी चलेगी। जौ, गेहूँ, चना, मसूर मे तेजी रहे तथा किराना की वस्तुओं मे मंदी होगी। बुध गहूग्रस्त नीचाभिलाषी होने से शुभ फल मे बाधक है।

सस्येशः शनिस्तस्यफलम् –

रविसुते यदि धान्यपतौ [illegible] ॥
गदभयं नृपचान्य हरं सदा दुरितवाद विवादयुता नराः ॥ ३ ॥

सस्येश शनि का फल – राजा प्रजा में संघर्ष व रोग पीड़ा में वृद्धि होगी। जनता राष्ट्रनेताओं से शोषित पीड़ित रहे तथा पारस्परिक विग्रह हो। धान्य तृण आदि की उत्पत्ति कम होगी। दुष्ट जनों का प्रभाव बढ़ेगा। जनता व्यर्थ के वादविवाद में लिप्त रहे।

धान्येशोगुरुस्तस्य फलम् –

गुरौ धान्यपतौ याते यव गोधूम शालयः ॥
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः ॥ ४ ॥

धान्येशगुरु का फल – चावल, जौ, गेहूँ, मूंग, उड़द, कंगुनी तथा कोदों आदि अन्न की पैदावार अधिक होने से मन्दे हों। देश में विप्रगण यजन याजन और मांगलिक कार्य में संलग्न रहेंगे। कृषि विकास एवं भूमिसुधार कार्य में शासन और जनता के सहयोग से प्रगति हो ॥ ४ ॥

मेघेशो भौमस्तस्यफलम् –

अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुति विचार विहीन धरामराः ॥
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम् ॥ ५ ॥

मेघेश मंगल का फल – विप्रगण धार्मिक कर्म तथा वेद विचार से हीन होंगे। जनता अनेक समस्याओं से युक्त रहे तथा तापमान में बढ़ोतरी हो। कहीं वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी। प्रजा में धार्मिक भावना कम तथा क्रोध कलह की वृद्धि हो। अपव्यय से आर्थिक स्थिति खराब हो एवं कृषि में बाधा पड़ेगी॥५॥

रसेशः सूर्यस्तस्य फलम् –

रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरसभागरताल्प पयोधराः ॥
बसनतैल घृतप्रिय मानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः ॥ ६ ॥

रसेश सूर्य का फल – वर्षा की कमी रहेगी। रस, कस, दूध, घृत तैलादि के लिये मनुष्य लालायित रहेंगे। वस्त्रादि की प्राप्ति में कमी आवे। सरसों, गुड़, खांड, में तेजी रहे। सर्वोच्च नेतावर्ग में जनतांत्रिक भावना का अभाव हो। जनता में अशान्ति बढ़े। अराजकता और रोगोपद्रव से जनता त्रस्त हो ॥ ६ ॥

नीरसेशः शुक्रस्तस्य फलम् –

कर्पूरागरु गन्धानां हेममौक्तिक वाससाम् ॥
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि ॥ ७ ॥

नीरसेश शुक्र का फल – सोना, वस्त्र, मोती, कपूर, अगर, तगर, अन्य गन्ध-युक्त पदार्थ मंदे होंगे। मशीनरी के [illegible]-पुर्जे व लोहादि धातु तेज होंगी।

फलेशो भौमस्तस्य फलम् –

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेन्नबहुपुष्प फलान्वित मेदिनी ॥
गदभयान्वित देशजनास्तदा नृपतयो बहुविग्रहकारकाः ॥ ८ ॥

फलेश मंगल का फल – वृक्ष लता पौधों में फल फूल की कमी रहे। प्रजा में रोग, भय बढ़े व द्वेष भावना से अशांति बने। राजविग्रह हो। अन्नादि के उत्पादन में कमी होने से जन मानस दुखित होगा। कहीं कहीं उत्पात होंगे।

धनेशः शुक्रस्तस्य फलम् –

दविणपा भृगुजो द्रविणैर्युता समघना सकला ननु मानवाः ॥
समसुखा क्रयविक्रय जीविना नृपनयो जनपालन तत्पराः ॥ ९ ॥

धनेश शुक्र का फल – [illegible] व्यापारियों को क्रय-विक्रय में धन लाभ ठीक हो। शासन कार्य सुचारु रूप से चले तथा सुख व आनन्द का साम्राज्य होगा। राजा प्रजा में शुभ भावों का उदय हो। शुक्र के निर्बल होने से शुभ फल न्यून होगा।

दुर्गेशो भौमस्तस्य फलम् –

अवनिजो गढनायकतां गतो विविध दुःख वियोग समन्वितः ॥
जनपदेषु जनाः क्रय विक्रये भवविशेषतया न फलं क्वचित् ॥ १० ॥

दुर्गेश मंगल का फल – मनुष्य अनेक प्रकार के दुःख और वियोग से व्यथित होंगे माल सामान और नकदी लेन देन में बहुत जोखिम और लाभ भी नहीं के बराबर रहे। जन विग्रह अधिक होवें। विशेषतः पूर्व के देशों में राजप्रजा में विग्रह संघर्ष और अराजकता बढे। पृथ्वी पर जल और धन धान्य की कमी हो॥१०॥

विशेष – राजा (वर्ष का राष्ट्रपति) मन्त्री (वर्ष का प्रधानमंत्री) सस्येश (वर्षा ऋतु की फसलों का स्वामी) धान्येश (शरद् ऋतु की फसलों का स्वामी) मेघेश (मेघ का स्वामी) रसेश (रस पदार्थों का स्वामी) नीरसेश (धातु वस्त्रादि का स्वामी) फलेश (सम्पूर्ण फलों का स्वामी) धनेश (धन एवं कोष का स्वामी) दुर्गेश (रक्षामंत्री एवं सेनापति)।

यद्यपि इन दशाधिकारियों का फल तो सर्वत्र होता है तथापि राजा के विशेष फल का प्रभाव काश्मीर और अफगानिस्तान में, मन्त्री का फल मालवा प्रान्त में, सस्येश का फल विदर्भ और पौण्ड्र देश में, धान्येश का फल नर्मदा के तटवर्ती क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश में मेघेश का फल मगध देश में, रसेश का फल कोंकण तथा गोवा में, नीरसेश का फल उज्जैन, इन्दौर मालवा आदि में, धनेश एवं दुर्गेश का फल सर्वत्र होता है।

इस वर्ष नव मेघों में 'वरुण' नाम का मेघ है। फल – वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी। जिससे सभी वस्तुओं में मंदी का वातावरण रहेगा। जनता में धार्मिक भावना बढेगी। पूजन यज्ञादि मांगलिक कार्य अधिक होंगे।

रोहिणी निवास – इस वर्ष रोहिणी का निवास समुद्र में है। फल – **अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्द्धनम्।** वर्षा श्रेष्ठ होगी जिससे धान्यादि का उत्पादन बढेगा। कृषि कार्यों में प्रगति होगी। समय का निवास माली के घर में है। वर्षा उत्तम होगी। घास, फूल, फल, शाक, सब्जी, का उत्पादन बढेगा। सभी वस्तुओं का भाव मंदा होगा। समय का वाहन दर्दुर है। वर्षा अच्छी होगी। व्यापारिक वस्तुओं को उपलब्ध कराने का शासक लोग पूर्ण प्रयत्न करेंगे। शनि की दृष्टि पश्चिम में है। पश्चिमी देशों में उत्पात, अराजकता, गुण्डागर्दी में वृद्धि होगी। कहीं छत्रभंग भी होगा। इस वर्ष सोमवती अमावस्या दो है।

वर्षा आदि के विश्वामान – वर्षाविश्वा १३, धान्य १३, तृण ५, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, दय १५ विग्रह ११, क्षुधा ९, तृषा ९, निद्रा ३, आलस्य ९, उद्यम ३, शांति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १५, पाप ९, पुण्य ९, व्याधि ३, व्याधिनाश १३, आचार ९, अनाचार ११, मृत्यु ५, जन्म ११, देशोपद्रव १५, देश स्वास्थ्य १, चोरभय ५, चोरभय नाश १३, उद्भिज ५, जरायुज ३, अडज १३, स्वेदज ९, सवत् विश्वा १८।

वर्षस्तम्भचतुष्टय विचार – इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग दो प्रतिशत है। अतः जल का स्तम्भ नाम मात्र का बना है। वर्षा स्वल्प होगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग २० प्रतिशत है अतः तृणस्तम्भ साधारण है। तृण, रुई, पाट बारदानादि का उत्पादन सामान्य होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का योग ५२ प्रतिशत है अतः वायु स्तम्भ मध्यम है। वायु समयानुकूल चलेगी जिससे कृषि उत्पादनों में वृद्धि होगी। आषाढ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग ६२ प्रतिशत बना है, अतः अन्न का स्तम्भ आधे से अधिक है। येन केन प्रकार से अन्न की उत्पत्ति अच्छी होगी।

गुरुचार का फल – इस वर्ष में गुरु वर्ष के आरम्भ से द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल ५ रविवार दिनांक १९ जून १९८८ तक मेष राशि में रहेगा और द्वि० ज्येष्ठ शुक्ल ६ सोमवार दिनांक २० जून ८८ से वर्ष समाप्ति तक वृष राशि में रहेगा।

मेष राशि के गुरु का फल – वर्षा उत्तम होगी। कृषि का उत्पादन बढ़ेगा। प्रजा में सुख शांति की वृद्धि होगी। रुई में घटाबढ़ी से व्यापारियों को लाभ होगा। धान्यादि वस्तुओं में मंदी का संचार होगा। दक्षिण उत्तर में खंड वृष्टि, छत्रभंग होगा।

वृष राशि के गुरु का फल –

जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद् गोरसस्य महर्घता।
स्वल्प वृष्टिः प्रजा पीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत्॥

वृष राशि का गुरु हो, तब धान्य का उत्पादन अच्छा होने से सुभिक्ष हो। चांदी, दूध, घृत, तेल आदि में तेजी होगी। अनाज आदि में साधारण तेजी रहे। जनता को कष्ट राजविग्रह तथा चौरादि के उपद्रवों में वृद्धि हो। कहीं कहीं वर्षा भी अल्प ही हो।

शनिचार का फल – इस वर्ष के आरंभ से अन्त तक शनि धनुः राशि में विचरण करता रहेगा। धनुः राशि का शनि समस्त धान्य व तृण, गुड़, खांड, कोयला आदि में तेजी करेगा। वर्षा की कमी होने से दुर्भिक्ष की सम्भावना बनेगी। भारतीय पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा प्रबन्ध बढाने होंगे। प्रजा को अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ेंगे। यथा –

धनुराशौ स्थितः सौरिर्गर्जितोऽपि न वर्षति ।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत् ॥

शनि का साढ़ेसाती और ढैय्या

इस वर्ष के आरम्भ से वर्ष समाप्ति तक मकर राशिवालों को शनि की साढ़ेसाती सिर पर तांबा के पाये से और धनु राशिवालों को हृदय पर सोना के पाये से एवं वृश्चिक राशिवालों को पैरों पर लोहा के पाद से साढ़ेसाती रहेगी। वृष राशिवालों को स्वर्ण के पाये से और कन्या राशिवालों को रजतपाद से लघु कल्याणी (ढैया) रहेगी। जिनकी जन्मकुण्डली में शनि शुभफलप्रद हो तथा दशान्तदर्शा भी शुभ चल रही हो, उनके लिए शनि का अशुभफल कम होगा। जन्मकुण्डली में चन्द्र शनि अशुभ स्थानों में हो तो साढ़ेसाती और ढैया चिन्ता, पीड़ा, धन हानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह, पशुपीड़ा, धन-खर्चा एवं हानि आदि नेष्टफलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छायापात्र का दान, शनि मन्त्र का जाप, दशांश हवन, व श्री हनुमान जी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दूर, समर्पण कर, भक्ति पूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रातः शनिवार को पीपल (अश्वत्थ) का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत होता है। साढ़ेसाती और ढैय्या का विचार, जन्मकालिक स्पष्टचन्द्रमा के अंशों से करना चाहिये। केवल राशि से साढे साती का विचार स्थूल है।

नववर्ष प्रवेश – सं. २०४४ चैत्र कृष्ण ३० शुक्रवार राष्ट्रीय मिति २८ फाल्गुन तदनुसार १८ मार्च सन् १९८८ को स्टे.टा. ७/२२ पर मीन लग्न में चान्द्रमान से नववर्ष प्रवेश होगा। ग्रहस्थिति की कुण्डली सामने दी गई है। मीन लग्न का फल – दक्षिण में सुख शांति हो। मध्य प्रान्तों में खेती नष्ट तथा कहीं छत्र भंग या शासन में परिवर्तन होगा। लग्न का स्वामी गुरु दूसरे भाव में शुक्र के साथ तथा राज्य भवन में म.श.ह.ने का योग होने से शासनकर्त्ताओं के सामने विकट समस्यायें आयेंगी। विपक्षी लोग सरकार को गिराने में भरपूर कोशिश करेंगे कई राज्यों के मंत्रिमडलों में परिवर्तन करने होंगे। धनखर्चा की अधिकता तथा महगाई की वृद्धि से शासन व्यवस्था डाँवाडोल होगी।

१ गु शु
बु रा ११
२
सू १२ चं
१०
३
हं ने
मं
९ श
४
६
८
५ के
७

वर्षेश लग्न (जगत् लग्न) – सं. २०४५ वैशाख कृष्ण १२ बुधवार, राष्ट्रीय मिति २४ चैत्र तदनुसार दिनांक १३ अप्रैल १९८८ को मध्यान्ह पश्चात् स्टे. टा. १५/३४ पर सिंह लग्न में भगवान भुवन-भास्कर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। इस समय सौर मान से नववर्ष आरंभ होगा। तत्कालीन ग्रहस्थिति की कुण्डली सामने दी गई है। जगत् लग्न का स्वामी सूर्य अपनी उच्च राशि का नवम (भाग्य) भाव में गुरु के साथ स्थित है। वर्ष का राजा शुक्र दशम् भाव में स्वराशि का होकर बैठा है अतः विश्व की राजनीति में सुधार होगा। आपसी व्यापारिक समझौते अधिक होंगे। विकास कार्य एवं उद्योग धन्धों में शासन की सतर्कता से प्रगति होगी, किन्तु लग्न सप्तम में केतु-राहु की स्थिति होने से विरोधी पक्ष शासनकर्त्ताओं के सामने विकट समस्याएं पैदा करेगा। षष्ठ भाव में मंगल शत्रु पक्ष को कमजोर करने में सुदृढ़ है लेकिन शस्त्रों की होड़ में परमाणु और सैनिक शक्तियों पर विशेष खर्चा होगा।

आर्द्रा प्रवेश लग्न – सं. २०४५ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ मंगलवार राष्ट्रीयमिति ३१ ज्येष्ठ तदनुसार २१ जून १९८८ को सायं १८।३५ स्टें टा पर वृश्चिक लग्न में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तात्कालिक वार योग एवं समय का फल अशुभ है तिथि नक्षत्र का फल उत्तम है। अतः इस वर्ष में शुभ फल कम तथा अशुभ फल अधिक होंगे। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा राज्य भवन में शुभ है किन्तु निर्जल राशि में केतु के साथ तथा मंगल राहु से दृष्ट है अतः कहीं वर्षा की कमी रहेगी। अन्न का उत्पादन मध्यम होगा। वृश्चिक लग्न नाम मात्र की जल संज्ञक राशि है तथा उस पर सप्तम भाव स्थित बुध गुरु शुक्र की पूर्ण दृष्टि है जिससे वर्षा समयानुकूल कहीं कहीं अच्छी होगी। कृषि साधनों में वृद्धि होगी। लग्नेश मंगल राहु के साथ चतुर्थ भाव में होने से कहीं भय, विग्रह प्रकृति प्रकोप से जन मानस त्रस्त होगा। शासन पार्टी के कार्यकर्त्ताओं में मत भेद होगा। आर्थिक स्थिति डांवा डोल चलेगी।

गुर्गफल – सं. २०४४ भाद्रपद शुक्ल ३ गुरुवार दिनांक २७ अगस्त सन् १९८७ को हिजरी सन् १४०८ के नये वर्ष की पहली तारीख आरंभ होगी। इसका स्वामी गुरु होने से वर्षा उत्तम होगी जिससे वनस्पति, तिल, कपास, दूध, खरबूजा अगर आदि वस्तुओं की उत्पत्ति श्रेष्ठ होगी। पशु पक्षी सुखी रहें। शीतवायु और बादलों का जोर रहेगा। राज कर्मचारियों की उन्नति होगी। प्रजा में सुख समृद्धि बढ़ेगी तथा व्यापारियों को लेन देन के लाभ के वास प्राप्त होंगे। स्त्रियों के वक्ष स्थल में रोग पीड़ा हो।

विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ–व्यय देखने का प्रकार – आय-व्यय के दोनों अंकों को जोड़ कर एक घटावें और आठ का भाग दें, यदि १।२।६।७। शेष रहे, तो उस वर्ष में लाभ अच्छा होगा और यदि ३।४।५। या ० (शून्य) शेष रहे तो लाभ कम, खर्च अधिक होगा। तथा अनेक प्रकार की चिन्ताएं उपस्थित होंगी।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार – जन्मकुंडली में लग्न बलवान हो तो लग्न से और चन्द्रमा बलवान् हो तो जन्मराशि से जगल्लग्न जिस स्थान में आये वह भाव स्वस्वामी शुभग्रहों से युक्त दृष्ट बलवान हो तो उस भाव की वृद्धि होती है यदि वह भाव पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है। जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से यदि वर्षेशलग्न (जगल्लगन) ८वें १२वें हो तो उस व्यक्ति के लिए वह वर्ष शुभ लाभप्रद होता है।

तान्त्रिक महामृत्युञ्जय-जप-विधान

श्री विश्व विजय पंचांग में एक छोटा सा किन्तु सर्वथा नवीन प्रयोग इस वर्ष दिया जा रहा है। पाठकगण इसका उचित उपयोग करें।

सम्पादक

मन्त्रों के अनुसार केवल मन्त्र का जप उतना महत्वपूर्ण नहीं होता, जितना कि उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग के मन्त्रों के साथ जप करना होता है। इस दृष्टि से महामृत्युञ्जय-मंत्र का पंचांग पूर्ण मंत्र जप इस प्रकार करना चाहिये।

१. महामृत्युञ्जय-भैरवी मन्त्र जप

ॐ श्री ह्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्यचन्द्रे हंस सञ्जीवनि स्वाहा।

(इस मन्त्रका दशांश जाप करें)

२. प्रथम पाद जप

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे नमः।

(इस मन्त्र का दशांश जप करें)

३. मूलमन्त्र जप

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

(इसका संकल्पानुसार जप करें और यथासम्भव अन्य बीज मन्त्रों का समावेश श्री उपदेशानुसार करें)

४. तुरीय पाद जप

ॐ मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्-नमः।

(इसका अष्टमांश के रूप में जप करें)

५. शिव पञ्चाक्षरी मन्त्र जप

ॐ नमः शिवाय।

(इस मन्त्र का दशांश के रूप में जप करें)

यह एक सिद्ध प्रयोग है। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए देखिए हमारी पुस्तक 'सिद्ध महामृत्युञ्जय-साधना'।

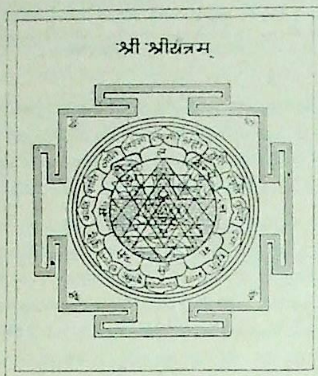
डा. रुद्रदेव त्रिपाठी

चमत्कारी यन्त्र और उनकी महिमा

लेखकः— पं. केवल आनंद जोशी

पौराणिक ग्रन्थों में यत्र-तत्र यह उल्लेख मिलता ही रहता है कि देवता, यक्ष, किन्नर, दानव, मानव आदि सभी लोग यंत्र, तंत्रों का प्रयोग करते थे और उसकी महिमा से भी लाभान्वित होते रहते थे। इस यंत्र विद्या, तंत्र-विद्या का अधिपति देवता भगवान् दत्तात्रेय यानि ब्रह्माजी साक्षात रूप में थे भगवान ब्रह्मा ने ही मानव कल्याण के लिए कई सार्थक यंत्रो की खोज की जिनकी पूजा प्रतिष्ठा आज भी भारत के विभिन्न पौराणिक स्थलों में होती है। भगवान् दत्तात्रेय द्वारा रचित इन्द्रजाल नामक ग्रंथ में ही कुछ लोकोपयोगी यंत्रो की महिमा का यहां वर्णन है। इनकी सिद्धि की सफलता साधक के श्रम पर निर्भर है। परन्तु यह कहना व्यर्थ है कि यंत्रों की महिमा अवैज्ञानिक और अकारथ है।

श्री श्री यंत्रम्



श्री यंत्र

यह सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतीक यंत्र है। इसकी अधिष्ठात्री देवी स्वयं श्री विद्या है। त्रिपुर सुन्दरी से भी अधिक इस यंत्र की मान्यता है। यह बेहद शक्तिशाली ललितादेवी का पूजा चक्र है। इसको त्रैलोक्य मोहन अर्थात् तीनों लोकों का सम्मोहन करने वाला भी कहते है। यह सर्वरक्षाकरसर्वव्याधिनिवारक, सर्वकष्टनाशक होने के कारण यह सर्वसिद्धिप्रद, सर्वार्थसाधक, सर्वसौभाग्यदायक माना जाता है। इसे गंगा जल, दूध से स्वच्छ करके पूजास्थान व्यापारिक स्थान तथा अन्य शुद्ध स्थान पर रखा जाता है। इसकी पूजा पूरब की ओर मुँह करके करी जाती है। श्री यन्त्र का सीधा मतलब है। लक्ष्मी प्राप्ति का यन्त्र। मध्य भाग में बिन्दु व छोटे-बड़े मुख्य नौ त्रिकोण, इन नौ त्रिकोण से बने ४३ त्रिकोण, दो कमलदल, भूपुर एक चतुरस्र ४३ त्रिकोणों से निर्मित उन्नत श्रृंग के सदृश मेरु पृष्ठीय श्री यन्त्र अलौकिक शक्ति व चमत्कारों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रजनन केन्द्र बिन्दु कहा गया है।

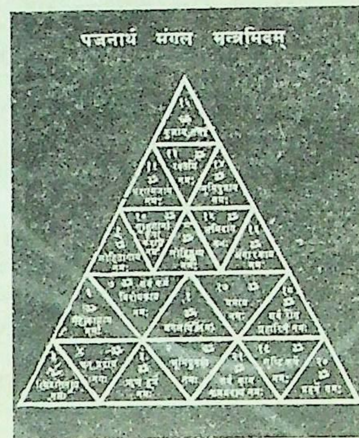
जिस प्रकार सभी कवचों में चण्डी कवच श्रेष्ठ है, उसी प्रकार सभी देवी देवताओं के यन्त्रों में श्री देवी का यन्त्र सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इसी कारण इसे यन्त्रराज व यंत्र शिरोमणि नाम से भी अभिहित किया गया है। दीपावली, धनतेरस, बसन्त पंचमी अथवा पौष मास की संक्रान्ति के दिन यदि रविवार हो तो इस यन्त्र का निर्माण व पूजन विशेष फलदाई माना गया है।

दाम्पत्य सुख कारक मंगल यन्त्र

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित स्त्री के जीवन में ... संतानाभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण पर ऋण लेते हुए ऋण ग्रस्त होने के बाद ऋण चुकाने के आभार से निराश हो जाना, इन तीनों दुःखों को दूर करने के लिए ज्योतिष शास्त्र में मंगल व्रत का विधान है। मंगल के व्रत में 'मंगल यन्त्र' के पूजन का विधान है।

हमारे पास ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां ३०-४० वर्ष की आयु तक पहुंच जाती है परन्तु मंगलीक दोष के कारण विवाह तो दूर सगाई तक नही बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण आते है कि दो दो तीन तीन विवाह कर लिए परन्तु **'मंगली दोष'** के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता है और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नही जो आमूल चूल कर्ज से डूबे हुऐ है। उन्होंने लक्ष्मी साधना, श्री यन्त्र एवं रुपयों की प्राप्ति हेतु कई यज्ञ व अनुष्ठान किए परन्तु पैसा आता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले **'मंगल यंत्र'** की साधना से अपने मंगलीक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए। हमने प्रयोग किए और पाया कि **'मंगल यंत्र'** की विधिवत् उपासना के पश्चात् २१ मंगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात् सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किये। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, पंचम भाव में मंगल हो किंवा मंगल की दृष्टि हो, तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल यंत्र' का सहारा लेना चाहिए।

मंगल यंत्र



सम्पर्क सूत्रः-
सैक्टर - ७/२८९, रामकृष्णापुरम नई दिल्ली।

4

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

सं. २०४५ वि. (सन् १९८८-८९ ई.) की ग्रह परिषद का विचार

संसार की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक स्थिति का दिग्दर्शन



दिग्दर्शक:—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

* धनु: राशि के शनि-हर्शल-नेपच्यून का विश्व पर अनिष्ट प्रभाव, वर्षारंभ में मध्यावधि चुनाव की संभावना निराधार।
* यह वर्ष विश्व के लिये अकल्पित दुर्घटना एवं राजनेताओं के उत्थान-पतन के लिये अविस्मरणीय रहेगा।
* आतंकवाद सारे विश्व में यत्र-तत्र न्यूनाधिक रूप में फैलेगा। आर्थिक समस्या उग्र बनेगी।
* पंजाब, चण्डीगढ़, कश्मीर, गोरखालैण्ड, असम, तमिल, श्रीलंका समस्या का संतोषप्रद समाधान संभव नहीं।
* वर्षारंभ से पूर्व (जनवरी से मार्च ८८ तक) राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार, तमिलनाडु के मंत्रिमण्डलों में अकल्पित उलट-फेर और भारी विद्युत संकट, तेल, इस्पात, पेट्रोलियम पदार्थ, कोयला व लोह धातु के मूल्य में वृद्धि, वर्ष के पूर्वार्ध में अगस्त ८८ तक खाद्य पदार्थ एवं जीवनोपयोगी वस्तु मात्र में मंहगाई।
* भारतीय सत्तारूढ़ दल अविश्वसनीयता के आवरण में कांग्रेस (इ) में विघटन, राजीव गांधी के लिये वर्ष अग्नि परीक्षाकारक है।
* भारत की पूर्वी एवं पश्चिमोत्तरीय सीमा विदेशी षड्यन्त्र एवं प्रकृति प्रकोप से क्षतिग्रस्त। कहीं अवर्षण कहीं अति वृष्टि से हानि।
* बन्द, हड़ताल, घेराव, रैलियों द्वारा जनाक्रोश एवं यान दुर्घटना, हत्याकांड, अग्निकांड, अपहरण, चोरी-डाके, लूटमार में वृद्धि।
* अमेरिका में आर्थिक मन्दी, सत्ता परिवर्तन, राजनैतिक हत्या, दक्षिण अमेरिका में भयंकर प्रकृति प्रकोप।
* दिल्ली के अतिरिक्त चार महानगरों में रोमांचक दुर्घटना से जन-जीवन अस्त व्यस्त। विश्व विख्यात पांच महामान्य काल कवलित।

ज्योतिष एक विज्ञान है !

विगत ४४ वर्षों से मै यह स्तंभ लिखता आ रहा हूँ। अपनी स्वल्प बुद्धि के अनुसार ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई है वे अधिकाश मे सत्य सिद्ध हुई है। इसकी साक्षी "ज्योतिष्मती" और 'श्री विश्वविजय पंचाग" के विज्ञ वाचक वृन्द दे रहे है। दैवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलोपैथी-डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं — दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष विज्ञान के गणित-विभाग ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षोंपूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों के स्पर्श-मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है, उसमे एक मिनट का भी अन्तर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिषशास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित--ज्योतिष को "दैव विद्या" कहा गया है, इसलिये राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध मे भविष्यवाणी करने वाले को "दैवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनाहीन दैवज्ञ भी मनुष्य है, सर्वज्ञ निर्भ्रान्त [illegible] रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सदा सत्य ही हो— यह नहीं कहा जा सकता।

तथापि मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इतिहास में इसके सम्बन्ध में अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म के समय भविष्य बतलाने की गर्ग मुनि की कथा का उल्लेख भागवत में मिलता है। महाभारत में भी अनेक स्थानों पर भविष्य कथन की तथा अशुभ योगों से उत्पन्न होने वाली घटनाओं की चर्चा आई है। यह विषय इतना महत्व का है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। इसका निरीक्षण – परीक्षण अवश्य होना चाहिये। और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिये। आजतक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब एक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे जितनी ही प्रगति क्यों न की हो, पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन अब तक नहीं है. अतः इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिये। अनेक उच्च राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते है। श्री नेहरू जी और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी एकाधिकबार दैवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद है। किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नत मस्तक होते है वे ही सार्वजनिक रूप से कहते है कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते"। इस पर सर्व साधारण जनता को इनके इस दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा। अस्तु।

मेदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखायें हैं, जिसके लिये जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको जिस गुरु से जैसा ज्ञान मिला हो–निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह मिहिराचार्य कृत 'वाराही संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है। इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त वक्रमार्ग ग्रहों के विशेष वक्र मार्ग ग्रहों के विशेष योग और विश्व में कहां पर शान्ति और कहां अशान्ति रहेगी– इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्र चक्र, कर्पूर चक्र, कूर्म चक्र और नृपति जयचर्या के संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि झंझावातादि के लिये सप्त नाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्हीं को आधार मानकर मैं अपनी अल्प बुद्धि और सीमित साधन से, विगत ४४ वर्षों से जो कुछ लिखता आ रहा हूं वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान् एकत्र हो कर सामुहिक निर्णय दे, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिये ग्रहों की राश्यांशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है। अतः यहां प्रमुख ग्रहों की स्थिति का (वर्षारंभ और वर्षान्त) उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष सं. २०४५ वि. में ग्रह स्थिति

नये वर्ष सं. २०४५ वि. (१९ मार्च १९८८ से ६ अप्रेल ८९ तक) प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रा पक्षीय निरयण मान से इस प्रकार है।

चैत्र शु. २ दि. १९ मार्च १९८८ ई.					चैत्र कृष्णा ३० दि. ६ अप्रेल १९८९			
प्रमुख ग्रह	राशि	अंश	कला	मार्गी वक्री	राशि	अंश	कला	मार्गी वक्री
शनि	८	[illegible]	२५	मार्गी	८	११	५९	मार्गी
गुरु	०	८	३१	मार्गी	१	१०	४३	मार्गी
मंगल	८	[illegible]	३४	मार्गी	१	२१	५९	मार्गी
हर्शल (यूरेनस)	८	[illegible]	१४	मार्गी	८	११	३९	मार्गी
नेपच्यून	८	१६	२१	मार्गी	८	१८	४०	मार्गी
वेंकटेश (प्लूटो)	६	१८	२१	वक्री	६	२०	५८	वक्री
राहु	१०	२६	२१	वक्री	१०	६	३	वक्री
केतु	४	२९	२१	वक्री	४	९	३	वक्री

शनि – वर्षारम्भ से वर्षान्त तक धनु राशि में रहेगा। ११ अप्रैल से ३० अगस्त ८८ तक वक्री, १० दिसम्बर ८८ से १२ जनवरी ८९ तक शनि अस्त।

गुरु – वर्षारम्भ से १९ जून तक मेष राशि में। २० जून से वर्षान्त तक वृष राशि में। २३ अप्रैल से २८ मई ८८ तक अस्त। २४ सितम्बर से २७ जनवरी ८९ तक गुरु वक्री।

मंगल – वर्षारम्भ से २८ मार्च तक धनु राशि में। २८ मार्च से १२ मई तक मकर राशि में। १३ मई से ३० जून तक कुम्भ राशि में १ जुलाई से ७ जनवरी ८९ तक मीन राशि में (६ मास तक तक स्तम्भ) २६ अगस्त से २७ अक्तूबर तक वक्री। इस वर्ष मंगल अस्त नही है। ८ जनवरी से २८ फरवरी ८९ तक मेष राशि में। १ मार्च ८९ से वर्षान्त तक वृषभ राशि में।

हर्शल (यूरेनस) – वर्षारम्भ से वर्षान्त तक धनु राशि में। ७ अप्रैल से ८ सितम्बर को पुनः मार्गी गति से शनि से युति।

नेपच्यून – वर्षारम्भ से वर्षान्त तक धनु राशि में। ४ मार्च १९८८ को शनि से युति। १४ अप्रैल से २० सितम्बर ८८ तक वक्री। ३ मार्च ८९ को शनि से युति।

वेंकटेश (प्लूटो)– वर्ष भर तुला राशि में – १८ फरवरी ८९ से वर्षान्त तक वक्री।

राहु-केतु – वर्षारम्भ से वर्षान्त तक राहु कुम्भ राशि में और केतु सिंह राशि में रहेगा।

कुछ विशेष ग्रह योग

(१) वर्ष प्रतिपदा का क्षय और आगे श्रावण शुक्ल पक्ष में नव वर्ष (सं २०३६) के चैत्र शुक्ल पक्ष तक निरन्तर आठ मास के शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय विश्व में अप्रत्याशित क्रान्ति से कार्तिक मास में राष्ट्र नायक का पतन (छत्र भंग) होना लिखा है। यथा– श्रावणे शुक्ल पक्षे च तिथि क्षयापि तथा भवेत्। तदा कार्तिके मासे छत्रभङगः प्रजायते॥

(२). वर्षारम्भ से ३ मास पूर्व १७ दिसम्बर ८७ से शनि महाराज ने २½ वर्ष के लिए हर्शल नेपच्यून के साथ धनु राशि में प्रवेश किया है। वर्तमान शताब्दी में पहली बार ये तीनों महाग्रह धनु राशि में संचार कर रहे है।

(३). दिनांक ३ मार्च १९८८ को राहु कुम्भ राशि और केतु सिंह राशि में प्रवेश करके १८ मास तक संघट्ट चक्र में राहु तुला राशिस्थ वेंकटेश (प्लूटो) से वेध करेगा और केतु धनु राशिस्थ शनि हर्शल नेपच्यून से वेध करके विश्व में विनाशलीला की सृजन करेंगे। १२ फरवरी से २८ मार्च ८८ तक मंगल भी धनु राशि में शनि, हर्शल, नेपच्यून के साथ रहकर विश्व में अकल्पित दुःखद घटनाओं से जन धन की हानि करेगा।

(४) दि. १ जुलाई ८८ से ७ जनवरी ८९ तक मीन राशि में मंगल ६ मास तक स्तम्भी रहकर भारत में कई जगह (विशेष कर पूर्व दक्षिण उत्तर में) अति वर्षण बाढ़, तूफान से हानि करेगा। यह हिमाचली लोकोक्ति स्मरणीय है– "मंगल गया मीने, सात पताल सीने"।

(५) फा. कृ. अमा. ७ मार्च १९८९ को कुम्भ में पंचग्रही योग (सू. च. बु. शु. रा.) का संघट्ट चक्र में मंगल गुरु से वेध

प्राकृतिक प्रकोप

जब ऋतु विपर्यय होने लगता है, स्त्रियों के दो तीन चार तक बच्चे प्रसव होने लगते है, किसी स्त्री के दो सींग व भयंकर आंखे वाला बच्चा पैदा हो, महिषियों (भैंस) में दो सिर वाला कट्टा (बछड़ा) पैदा हो तो ये सब आने वाली विपत्ति के सूचक प्राकृतिक उत्पात है। आचार्य वराह मिहिर ने वाराही संहिता में 'उत्पाताध्याय' विस्तार से लिखा है और उन उत्पातों की शांति का उपाय भी बताया है।

'दुर्भिक्षमनावृष्ट्यावृष्टि दृष्टौ क्षुद्भयं परभयं।
'रोगो ह्यनृतुभवायां नृपतिवधोऽनऋ जातायाम्॥'
"प्रसव विकारे स्त्रीणां" द्वित्रि चतुः प्रभृतिसम्प्रसूतौ वा।
हीनातिरिक्त काले 'च' देश कुल संक्षयो भवति॥" (वा.सं.)

समाचार पत्र पाठक जानते है कि इस वर्ष विगत ६ मास में विदेशों और भारत के कई प्रान्तों में स्त्रियों के तीन-तीन, चार-चार बच्चे प्रसव हुए हैं। गत अगस्त मास में राजपुरा सोनगिर वस्ती में मन्सा कुम्हार की पत्नी ने एक अद्भुत बच्चे को जन्म दिया जिसके सिर पर दो सींग और भयावनी आँखें थी। ऊना के निकट मलाहरा ग्राम में एक भैंस ने दो सिर वाले कट्टे (बछड़े) को जन्म दिया। ये सब उत्पात आने वाली अनिष्ट घटना का पूर्व संकेत है। ग्रह योग इसका समर्थन कर रहे हैं। अतः राष्ट्र कल्याण के लिये राज्याधिकारियों एवं प्रजाजनों को सार्वजनिक सामूहिक रूप में चरित्र निर्माण एवं जप यज्ञादि सदनुष्ठानों का सर्वत्र आयोजन होना चाहिये। इसमें धर्म निरपेक्षता बाधक नहीं होनी चाहिये। राष्ट्रहित में सबका हित है।

इस वर्ष संवत् २०४४ वि. में भारत के उत्तर पश्चिम दक्षिण एवं मध्य भाग में भयानक सूखा और पूर्व भाग में जल प्लावन (बाढ़) से जो भीषण विनाश हुआ और हो रहा है वह वर्तमान शताब्दी का सबसे बड़ा भयंकर प्रकृति प्रकोप है। अकाल से दुर्भिक्ष तो पहले भी पड़े है। परन्तु ऐसा विश्वव्यापी प्रकृति प्रकोप पहले हमारे देखने में नहीं आया। आज से २० वर्ष पूर्व संवत् २०२४ वि. के "श्रीविश्वविजय पंचांग" को दैवज्ञ की दृष्टि में पृष्ठ ३३–३४ पर कटु सत्य के रूप में जो संकेत दिया था वे पंक्तियां विज्ञ पाठकों के स्मरणार्थ और नये पाठकों की जानकारी के लिये यहां संक्षिप्त रूप में अक्षरशः उद्धृत की जा रही है।

"विगत १० वर्षों से हम इस पंचांग और 'ज्योतिष्मती' में निरन्तर सूचना देते आ रहे है कि आगामी वर्ष उत्तरोत्तर संसार के लिये संकटकारक सिद्ध होंगे। जिस राष्ट्र में अयोग्य अनाचारी निकम्मे लोग तिकड़म के बल से उच्चासनासीन होकर सम्मानित होते और सुयोग्य अपमानित होते है उस राष्ट्र में दुर्भिक्ष महामारी युद्ध विग्रहादि से प्रजा का नाश होना भगवान् मनु ने बताया है–

"राजा कालस्य कारणम्" के अनुसार प्रधान शासक ही भले बुरे काल का कारण होता है।

महर्षि आत्रेय ने चरक संहिता के 'जनपदोध्वंसनीय' विमान में लिखा है कि–

'जब धर्म लुप्त हो जाता है तो उन लोगों को देवता भी छोड़ देते है। परिणाम यह होता है कि ऐसी दशा में इन्द्र या तो समयानुसार वर्षा नहीं करता, या बुरी तरह बरसता है, भूमि बिगड़ जाती है, पानी सूख जाता है, और औषधियां अपना स्वभाव छोड़कर विकारी हो जाती है। जिन लोगों में लोभ, रोष, मोह, और अभिमान बहुत बढ़ जाता है वे दुर्बलों का अपमान करके अपने पराये सबको मारने के लिये आपस में शस्त्र चलाते है, दूसरों पर चढ़ाई करते है अथवा अन्य राक्षसादिकों से मार दिये जाते है।''

'श्रीविश्वविजय पंचांग' सं.२०४२ वि. सन् १९६८ ई. से

वर्तमान काल के सिख आततायी उग्रवादि राक्षस ही तो है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में जितनी अनैतिकता, अधार्मिकता बढ़ती जा रही है, उतना ही उत्पात उपद्रव अशांति दुर्भिक्ष सूखा आदि के रूप में (महर्षि के कथनानुसार) प्रकृति संहार करती जा रही है। अस्तु

विश्ववार्ता

इस समय विश्व का वातावरण दिन-प्रतिदिन भयाक्रांत होता जा रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियां नित्य नये मोड़ ले रही है। ४४ वर्ष पूर्व से इस पचांग और ज्योतिष्मती पत्रिका में जो भविष्यवाणी करता आ रहा हूं, उसकी सत्यता का प्रमाण अघटित घटनायें एवं विज्ञ पाठक स्वयं है। शासन सूत्र संचालकों को मैंने बार-बार ''भारत भुलावे में न रहें'' ''नेताओं को नेक सलाह'' शीर्षकों से सचेत किया है। मैंने स्पष्ट लिखा था कि – ''अनार्य राष्ट्रों की कूटनीति पर विश्वास करना भूल होगी''।

पाकिस्तान के साथ जितनी भी उदारता बरती जायेगी वह–

''पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्'' के अनुसार आत्मघातक सिद्ध होगी।'' घटना चक्र ने अब उन लोगों की आंखे खोल दी है, अब यह स्पष्ट हो गया है कि उग्रवादियों को शस्त्रास्त्र सामग्री पाकिस्तान से मिली और पंजाब के आतंकवाद में पाकिस्तान का पूरा हाथ है

प्राचीन आचार्यों ने शनि को दुख विनाश का सर्जक माना है। हिंसक चोर डाकू लुटेरे अपराधियों पर शनि का वर्चस्व है। मंगल को दाहक शक्ति एवं शस्त्रास्त्रकारक माना गया है, ये दोनों जब युद्ध प्रिय मेष, सिंह, वृश्चिक, धुन राशि में योग-प्रतियोग करते है, तब विषम विस्फोटक स्थिति बनती है। इस वर्ष जब शनि का मंगल राहु हर्शल नेप्च्युन प्लूटो के साथ योग-प्रतियोग होगा, तब विश्व में कहीं अग्निकांड, कहीं भूकम्प या ज्वालामुखी विस्फोट एवं यान दुर्घटनायें अधिक होंगी। पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध विषवमन होने से यत्र-तत्र साम्प्रदायिक दंगे संभव होंगे। इस वर्ष शनि मूल नक्षत्र धनु राशि में रहेगा। हर्शल, नेप्च्युन भी धनु राशि में रहेंगे। यह क्रूर संयोग अनार्य पश्चिमीराष्ट्रों में युद्ध, महामारी, दुर्भिक्ष आदि से संहार करेगा।

राशि प्रभाव एवं कूर्म चक्रानुसार यूरोप, एशिया, अफ्रीका, अमेरिका के अनेक भागों में विध्वंसक स्थिति बनेगी। पाकिस्तान और चीन गुप्त रूप से युद्ध की तैयारी में संलग्न रहेंगे। पाकिस्तान में विघटन होगा। सिन्ध, बलोच, पख़तुन स्वतन्त्रता की ओर बढ़ेंगे। जिया शासन समाप्त होगा, बंगलादेश श्रीलंका, अशान्त रहेगा। भारत के इर्द-गिर्द परिचय की घातक घेरे बन्दी का षडयंत्र होगा। कश्मीर, पंजाब, पश्चिमीबंगाल भी अशांत रहेंगे।

शक्तिशाली देश एक दूसरे पर संदेह करके आत्मरक्षा के नाम पर भीषण शस्त्रास्त्रों का निर्माण जारी रखेंगे। कुछ निर्माण स्थलों में अकस्मात् भयंकर विस्फोट होगा, अमेरिका, अफ्रीका, चीन, जापान, सोवियतरूस, प्रशान्त महासागर अटलांटिक महासागर और हिंदमहासागर द्वीपों की शान्ति भंग होगी। ग्रीस बगदाद मैसोपोटामिया तुर्की, आस्ट्रेलिया, इरान, ईराक, तिब्बत, कश्मीर, असम, मिश्र, इजरायल, बेल्जियम केलीफोर्निया, लासऐंजल्स, और पूर्वोत्तरीय भारत, दक्षिणी पश्चिमी समुद्रतट तटवर्ती क्षेत्र शद्रि के प्रभाव से विपदाग्रस्त होंगे। भारत चीन सीमा विवाद यथावत बना रहेगा। विवाद ग्रस्त क्षेत्रों से चीन सेना नहीं हटायेगी। सीमा पर सेना की झड़पे होती रहेगी। चीन जापान में प्रकृति प्रकोप, भूकम्प से भारी विनाश होगा।

धनुः राशि में शनि का प्रभाव

अभी गत १७ दिसम्बर ८७ को शनि ग्रह ने धनु राशि में प्रवेश किया है ... इस बार धनुः राशि में शनि के साथ दो और महाग्रह (जो शनि कक्षा से भी बहुत उपर है) मिल रहे है। इनमें पहला ग्रह है हर्शल–यूरेनस। यह एक राशि में ७ वर्ष तक रहकर ८४ वर्ष में एक भूचक्र पूर्ण करता है। दूसरा महाग्रह नेपच्युन एक राशि में १२ वर्ष तक रहकर १४७ वर्ष में एक भूचक्र पूर्ण करता है। इन ग्रहों की खोज लगभग २००० वर्ष पूर्व पाश्चात्य खगोल वैज्ञानिकों ने की थी। प्राचीन भारतीय संहिता ग्रंथों में इनका उल्लेख नहीं है। पाश्चात्य ज्योतिषविदों ने अपने अनुसंधान और अनुभव के आधार पर इन्हें शनि से भी अधिक प्रभावशाली महाग्रह माने है। भूकम्प, तूफान बम विस्फोट, यान दुर्घटना अग्निकांड आदि का कारक हर्शल को माना है। अब अग्नितत्वात्मक धनुः राशि में इन तीन महाग्रहों की त्रिकुटी आगामी तीन वर्षों में विश्व में अकल्पित रोमांचक घटनायें उपस्थित करें तो आश्चर्य नहीं। इस शताब्दी में धनुः राशि में इन तीनों की युति पहले कभी नहीं हुई। भारतीय दैवज्ञों को इस महायोग पर मनोयोग से अन्वेषण अनुसंधान करना चाहिये। प्राचीन आचार्यों ने धनुः राशि में शनि का फल इस प्रकार लिखा है–

"धन्वेस्थिते धन्विनि वृष्टिनाशः स्याद् भूपतीनां कलहो
न पार्थमा पांचाल काशीकुरु कौशलाश्च नष्टाश्च काश्मीर कलिंग बंगा:"

भावार्थ–वृष्टिनाश (सूखा) शासनाध्यक्षों में कलह, पंजाब, काश्मीर, कुरु, आंगल, हरियाणा, छाबा, फिरोजपुर, मंडल, कौशल, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, बंगाल में प्रकृति प्रकोप एवं पारस्परिक संघर्ष से जन–धन का भारी विनाश होता है। नरपति जयचर्योक्ति कूर्म चक्र में इस वर्ष शनि हर्शल नेपच्यून पश्चिम दिशा में कूर्म के पुच्छ भाग में स्थित है। इसका फल यों लिखा है–

ज्येष्ठा मूलं पूर्वाषाढ़ा पुच्छ भूते च सौरिणा,
पर्वतो अर्बुदं कच्छमवन्ती पूर्व मालवा:
पारसी वर्वरीद्वीपी सौराष्ट्रं सैन्धवं तथा जलस्थानानिनश्यन्ति स्त्री राज्यमकलिङ्गतो।

ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ा में शनि हो तब अबुदाचल पर्वतप्रदेश, सौराष्ट्र, कच्छ, सिन्ध, अवन्ती मालवा प्रदेश, आसाम, फारस खाड़ी ईरान, ईराक, एवं महिला शासित राज्य प्रकृति प्रकोप, युद्ध, महामारी आदि से ध्वस्त होते है।

भारतीय गणतंत्र का ३९वां वर्ष लग्न

सवत् २०४४ वि. माघ शुक्ल ८ मंगलवार दिनांक २६ जनवरी १९८८ को आधीरात के उपरांत स्टै.टा. ४-९ इष्ट घट्यादि ५२-९ पर वृश्चिक लग्न के २६वें अंश में भारतीय गणतन्त्र का ३९वां वर्ष प्रवेश होगा, उस समय की ग्रह स्थिति यह है –

९ हृ ने श	८ मं	७ बृ
१० सू		६ के
११ बु शु		५
१२ रा	२ मुं	४
१ चं		३

सेनापति मंगल गणतंत्र वर्ष लग्न में बलवान् है, परन्तु यह षष्ठेश भी है, पड़ौसी घर दूसरे १२वें कूटनीतिज्ञ शनि हर्शल नेपच्यून और बेंकटेश विद्यमान है अतः पश्चिमोत्तर एवं पूर्व के तथाकथित मित्र राष्ट्रों से भारत को विशेष सतर्क रहना चाहिये।

इस वर्ष में तथाकथित मित्र राष्ट्र भारत को विखंडित करने के षडयंत्र में संलग्न रहेंगे। दक्षिण पूर्वी समुद्र तट और नेपाल व पाकिस्तान के मार्ग से विदेशी माल वस्त्र सुवर्ण, मादक द्रव्य, युद्धोपकरण एवं जीवनोपयोगी अनेक वस्तुयें तस्करी में अवैध रूप से भारत पहुँचाकर भारतीय उद्योग को ठप्प करने की घातक चाल चलेंगे। इससे भारतीय शासन को सम रहते सतर्क हो जाना चाहिये। पाक, चीनी सैनिक सीमा रेखा का उलंघन करके भारतीय क्षेत्र में अवैध सैनिक चौकियां स्थापित करते जावेंगे। उत्तर में हिमाच्छादित क्षेत्र, साईचीन, ग्लेसियर, लेह क्षेत्र काराकोरम दर्रा, काजा–पट्टी, छुम्बी घाटी आदि स्थानों पर अवैध कब्जा करके स्थलसेना, वायुसेना के अनेक नये डिवीजन स्क्वेड्रन शिविर स्थापित करके भारत को आतंकित करने का दुष्प्रयत्न करेंगे, उसमें भारत को सतर्क रहना परमावश्यक है। महंगाई गरीबी और भ्रष्टाचार बढ़ेगा। कुछ क्षेत्रों में असामयिक वर्षा से फसल क्षतिग्रस्त होगी। मंगल के कारण सेवा निवृत्त सैनिकों एवं कृषकों का नया सुदृढ़ संगठन बनेगा। केन्द्रस्थ शुक्र बुध के कारण राजनीति में महिलायें अधिक अग्रसर होंगी। गुरु के अतिचार एवं शनि-मंगल के योग-प्रतियोग व वक्रत्व काल में कृषक संगठनों एवं शिक्षण संस्थाओं में भारी असंतोष व्यापेगा। ग्रीष्मकाल में पेय जल एवं विद्युत संकट से अनेक प्रान्तों का जन–जीवन त्रस्त होगा।

वात श्लेष्मादिका बाधा ... [illegible]
... [illegible] स्थिते मिथी
'मूर्धस्थ्यादि रोगांश्च कलहं च धनक्षयम्'

विद्वेषो वाच्यो मह' का तात्पर्य यह है कि इस वर्ष कांग्रेस एवं प्रत्येक राजनीतिक दल में विशेष फूट अविश्वास बढ़ेगा, एक दूसरे पर कार्य के दोषारोपण होंगे। विघटन कारी तत्व पनपेंगे। चन्द्र, मंगल का षडष्टक योग एवं मंगल शुक्र का ईशराफ योग होने से वर्ष के पूर्वार्द्ध में (२६ जनवरी से २५ जुलाई तक) सत्तारूढ़ दल और प्रजा में उच्च राजनेताओं के नैतिक मूल्यों का ह्रास होगा।

संघर्ष अधिक होगा। १२ मई ८८ तक धनु, मकर के मंगल में राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक आंदोलन अधिक होंगे। केन्द्र और प्रान्तों में यत्र-तत्र बन्द हड़ताल घेराव रैलियों का वातावरण बढ़ेगा। कहीं भयंकर अग्निकांड चक्रवात, समुद्री तूफान, हत्याकांड, अपहरण, डाके आदि की दुःखद घटनाये घटेंगी। पंजाब, काश्मीर, पश्चिमीबंगाल, असम, उड़ीसा, त्रिपुरा, मणिपुर एव दक्षिण पश्चिमी समुद्र तटवर्ती भूभाग कहीं प्रकृति प्रकोप से तो कहीं मनुष्यकृत प्रज्ञापराध राजनैतिक गतिरोध से पीड़ित होगा। धनुः राशि स्वतंत्र भारत के लग्न से अष्टम और गणतंत्र लग्न से दशम होने से मृत्यु संख्या में वृद्धि, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हानि, युद्धोपकरण बनाने और सैनिक व्यय में वृद्धि होगी। सीमा पर सैनिक गतिविधियां बढ़ेंगी। पाकिस्तान से क्रांति होगी। अमेरिका, रूस, चीन और पाकिस्तान के शासनाध्यक्षों में कुछ कालकवलित और कुछ पदच्युत होंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। १२ मई तक विश्व में विशेषकर धनु, वृषभ, कन्या, मकर राशि प्रधान प्रदेशों नगरों में भयंकर अग्निकांड, कहीं भूकम्प, चक्रवात समुद्री तूफान एवं भूकम्पाद से हानि होगी। नये बजट में कुछ आवश्यक वस्तुओं में वृद्धि होने से जनता में असंतोष फैलेगा। लोकसभा एवं विधान सभाओं में भारी हंगामे एवं अशोभनीय कांड होंगे। १२ अप्रैल से अगस्त के अंत तक शनि वक्री रहेगा। गुरु अतिचार में भी है अतः संसार में प्रकृति प्रकोप, युद्ध, महामारी, दुर्भिक्ष, सूखा या बाढ़ से कई जगह रोमांचक स्थिति उत्पन्न करेगा।

अप्रैल से १९ मार्च से पूर्व तमिलनाडु, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्रियों को पद त्याग के लिये विवश होना पड़ेगा। और वर्ष के प्रथम चरण में कुछ केन्द्रीय एवं प्रान्तीय मुख्यमंत्रियों व राज्यपालों की छुट्टी हो जावेगी। मार्च–अप्रैल और सितंबर अक्तूबर ८८ में लोकसभा एवं प्रान्तीय विधानसभाओं में अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत होंगे। इसी अवधि में कांग्रेस में भारी दरार पड़ेगी। मध्यावधि चुनाव की चर्चा गर्म होगी। ३९वीं गणतंत्र वर्ष के अन्त और ४०वें के प्रथम चरण में मध्यावधि चुनाव की संभावना बढ़ेगी।

नये राष्ट्रपति का पदारूढ़ लग्न

हृ ८ श	७ वें (प्लू)	के ६
ने ९		५
१०		सू मं ४ चं बु
११	१ गु	शु ३
रा १२	२	

गत दि. २५ जुलाई १९८७ को भारतीय स्टै. टा. मध्यान्ह १२-१५ पर अभिजिन्मुहूर्त तुला लग्न में श्री रामास्वामी वेंकट रमण ने नई दिल्ली के विशाल भव्य संसद भवन में नये महामहिम राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की, उस समय पुनर्वसु नक्षत्र का चतुर्थ चरण और वर्गोत्तमी तुला लग्न था। ग्रह स्थिति इसप्रकार की है।

नये राष्ट्रपति की जन्म कुण्डली हमें उपलब्ध नहीं हुई। एक प्रसिद्ध दैनिक पत्र के २६ जुलाई ८७ के अंक में नये राष्ट्रपति का जन्म ४ दिसंबर १९१० को तामिलनाडु में तंजावुर जिले के एक गाँव में होना बताया है। जन्मकाल का समय (टाईम) कुछ नहीं लिखा। न दिन या रात का संकेत है, अतः बिना शुद्ध समय (घंटा,-मिनट या घटी-पल) के जन्मपत्री बन नहीं सकती। हमारा ऐसा अनुमान है कि सूर्योदय से पहले तीन और पांच बजे के मध्य तुला लग्न में जन्म होना चाहिये। उस समय देवगुरु वृहस्पति भी तुला राशि में मित्र ग्रह मंगल के साथ होने से लग्न बलवान् बन जाता है। बलवान् तुला लग्न वाले जातक धनवान् यशस्वी, पुरुषार्थी, न्यायप्रिय, मित्रवत्सल, कृपालु प्रवासीप्रवृत्त में सर्वाधिक पराक्रमी और इष्टदेव के भक्त धर्मात्मा होते हैं, उक्त सभी गुण नये राष्ट्रपति में विद्यमान हैं।

संयोग की बात है कि गत २५ जुलाई को मध्यान्ह सवा बारह बजे तुला लग्न प्रारंभ के प्रथम वर्गोत्तम नवांश में गुरु से पूर्ण दृष्ट बलवान् था। भाग्येश बुध भाग्यभवन में एवं राज्येश चन्द्रमा राज्यभवन में राजकारक लाभेश सूर्य और धनेश सप्तमेश सेनापति मंगल के साथ है। फिर मध्यान्ह संधि काल का अभिजिन्मुहूर्त, पद ग्रहण का ऐसा शुभ मुहूर्त लगता है किसी विज्ञ दैवज्ञ ने निकाला हो, यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि पद ग्रहण प्रातः १० से ११ तक न होकर [illegible] वशात भी ऐसा हो गया तो भी भारत के लिये कल्याणकारी है। नये राष्ट्रपति राष्ट्र के विषय समस्या सुलझाने में जन–जन का समर्थन प्राप्त करने में समर्थ होंगे? लग्नेश नीचस्थ मंगल और क्षीण चन्द्र के साथ है और लग्न में वैकटेश प्लूटो बैठा है अतः प्रथम वर्ष में राष्ट्रपति के सामने राजनैतिक समस्यायें आयेंगी, विशेषकर धनभावस्थ शनि हर्शल के कारण राष्ट्र की आर्थिक समस्या और पड़ोसी अनार्य देश सम्बन्धी विषम परिस्थितियों से जूझना पड़ेगा। आरम्भिक दो वर्षों में राष्ट्रपति को अपने स्वास्थ्य की ओर से भी विशेष सतर्क रहना चाहिये। आगामी काल का शनि धनु राशि में दो उत्पात अशांतिकारक ग्रह हर्शल नेपच्यून के साथ रहेगा, यह अपना क्रूर स्वभाव दिखाकर कुछ मानसिक शांति को भंग करेगा। शरीर में वायु विकार नेत्र विकार या स्नायविक संधि वात एवं हृदयरोग उत्पन्न कर सकता है। प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का जन्म लग्न राशि सिंह है। राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री की जन्म राशि धनु–सिंह में परस्पर मैत्री है, परन्तु नवपंचक होने से उत्तरार्ध में "नवे पंचमे कलिः" के अनुसार राजनैतिक कारणों से कुछ आन्तरिक मनोमालिन्य होगा। निष्कर्ष यह है कि नये राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमन ऋतंभरा प्रज्ञा एवं दूरदर्शिता से राष्ट्र पर आने वाले, आर्थिक राजनैतिक संकटों पर विजय पाने में समर्थ होंगे। श्री राजीवगांधी, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह आदि राजनीतिज्ञ नेताओं के भविष्य के संबंध में इस पंचांग के अंत में पृष्ठ १३४ पर हमारे परम स्नेही महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा. श्रीधर केशव केलकर के "विश्वरंगमंच" शीर्षक में पढ़ें।

खाद्यान्न समस्या

अन्नप्राणो बलं चान्नमन्नं सर्वार्थ साधकम्। देवासुरमनुष्याश्च सर्वे चान्नोपजीविनः॥

गेहूं आदि खाद्य पदार्थों की मंहगाई निरन्तर बढ़ते जाने की भविष्यवाणी मैं गत २२ वर्षों से इस पंचांग और "ज्योतिषमती" पत्रिका में करता आ रहा हूँ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शनैः शनैः मंहगाई बढ़ती गई और विगत १६ वर्षों से तो सुरसा के मुख की भांति विकराल रूप में बढ़ती जा रही है। ९-१० वर्ष पूर्व गेहूं, चावल चना, चीनी चाँदी सोना, आदि का जो भाव था वह दुगुने तीगुने से भी अधिक हो गई। मंहगाई रोकने और गरीबी दूर करने की राजनेताओं की चुनावी घोषणाये निरर्थक सिद्ध हुईं। भारत के प्राचीन महर्षियों ने अन्न की महिमा में कहा है कि राजा या राष्ट्रनायक को अपने राजकीय अन्नभंडार में तीन वर्ष तक राष्ट्र के पोषण योग्य अन्न का संग्रह रखना चाहिये। सोना, चाँदी माणिक्य आदि रत्नों की ओर न भागकर जैसे और जिस विधि से भी हो अधिक अन्न उपजाकर अपना तथा राष्ट्र का हित करना चाहिये।

चेतावनी– अब मैं पुनः पाठकों और राष्ट्रनायकों को विशेषकर कृषि एवं खाद्य मंत्रियों को चेतावनी देता हूँ कि आगामी कुछ वर्षों की ग्रह स्थिति अन्नोत्पादन के लिये विशेषानुकूल नहीं है। अधिकारी वर्ग करोड़ों की कागजी योजना चाहे भले ही बनालें, पर प्रकृति प्रकोप के एक झोंके में वे सब ठप हो जाती है, अतः अब इस संक्रमण काल में भारत भूमि का कोई भी भाग अनुपजाऊ न पड़ा रहे, कड़ा परिश्रम करके युद्ध स्तर पर जहां जो भी अन्न कंद मूल फल, साग-भाजी पैदा हो सकती है वे उगावें। विदेशी खाद के व्यामोह में पृथ्वी की उत्पादन शक्ति नष्ट न करें। अनिश्वरवादी जड़-भौतिक जगत् तथाकथित विज्ञान में चाहे कितनी भी उन्नति करले, न वह प्रकृति पर विजय पा सकता है और न मानव को वास्तविक शान्ति ही प्रदान करा सकता है। परमार्थिक, वास्तविक सुख शान्ति भगवन्निष्ठ सर्वभूत हितेरत, आध्यात्मिक जीवन में ही है। आनेवाली अकाल की बाढ़ को न केवल शक्तिशाली धर्मनिरपेक्ष सरकार ही रोक सकेगी अपितु भारतीय जनता की प्रचंड धार्मिक भावना ही इसके प्रतिरोध में समर्थ होगी।

वायुमंण्डल वर्षारोगोत्पात आदि

इस वर्ष की ग्रह स्थिति के आधार पर प्राचीन ग्रन्थों से सार्वत्रिक वर्षादि का सामूहिक विचार यहां लिख रहा हूँ। भौमांतरिक्ष दिव्य निमित्तानुसार वर्षा वायु भिन्न प्रान्तों में विभिन्न रूप में होती है। भारतीय वायुशास्त्र में प्रत्येक नगर या मण्डल में प्रतिदिन की वायुमेघ गर्जना बादल, विद्युत आदि की परीक्षा द्वारा वृष्टि –गर्भ लक्षण का उल्लेख है। जैसे आषाढी पूर्णिमा की वायु परीक्षा द्वारा तद्देशीय दुर्भिक्ष सुभिक्ष का ज्ञान होता है वैसे ही प्रत्येक मास की प्रमुख तिथियों की वायु वर्षा मेघ गर्जन आदि अंतरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है। इस कार्य के लिये प्रत्येक प्रान्त व मंडल में एक वायु वृष्टि विज्ञान केन्द्र हो जिसमें प्रतिदिन की वायु, वर्षा का रिकार्ड

रखा जाय। उस अंतरिक्ष दिव्य निमित्त और ग्रह योगों का मिलान करके वर्षा आदि की जो भविष्यवाणी की जायेगी वह उस स्थान के लिये सत्य सिद्ध होगी। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तों के बिना केवल ग्रहयोगों से की गई भविष्यवाणी सर्वत्र शत-प्रतिशत सही हो यह निश्चित नहीं। यह बात मैं विगत ३० वर्षों से इस पंचांग में निरंतर लिखता आ रहा हूँ, परन्तु केन्द्रीय शासन ने राष्ट्र के लिये परमोपयोगी इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। प्रतिवर्ष बाढ़ और सूखा से यत्र-तत्र भयंकर विनाश हो रहा है। संतोष की बात है कि अब दिल्ली केन्द्र [illegible] मेरे परम स्नेही सन्मित्र ज्योतिर्विज्ञानानुरागी श्री के.एन. राव ने अपने कुछ बुद्धिजीवी सहयोगियों को इस ओर आकृष्ट किया है उनके सत्प्रयत्न से राष्ट्र को लाभ होने की आशा है। सप्तनाड़ी चक्र, कूर्म चक्र में ग्रह स्थिति और आर्द्रा प्रवेश लग्न एवं वर्षाकालीन ग्रह स्थिति के अनुसार नये वर्ष का भावी विचार लिख रहा हूँ।

वर्षा योग– सूर्य के आर्द्रा प्रवेश में दश नक्षत्र वर्षाकारक माने गये हैं। भारत में २१ जून से मेघागमन (मानसून का प्रारम्भ) माना जाता है समुद्र तटवर्ती-दक्षिणपूर्वी भारत में मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य प्रवेश होने पर १० जून के लगभग से मानसून सक्रिय हो जाता है। वर्षा एवं कृषि उत्पादन के लिये सूर्य आर्द्राप्रवेश लग्न का विशेष महत्व है।

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगो वा।
सौम्यैर्निरीक्षिते च सम्पूर्ण शस्या वसुधा तदा स्यात्॥

गत वर्ष संवत् २०४४ विक्रमी के पंचांग में आर्द्रा प्रवेश कुण्डली के आधार पर मैंने पृष्ठ २९ पर प्रकृति प्रकोप से फसल नष्ट होने, सूखा पड़ने की स्पष्ट सूचना दी थी। लगभग वैसी ही स्थिति अब नये वर्ष संवत् २०४५ वि. में भी बन रही है। इस नये वर्ष में चन्द्रमा केन्द्र में तो है परन्तु जलराशि में नहीं शुष्क सिंह राशि में केतु के साथ राहुग्रस्त भौम से दृष्ट है एवं आर्द्रा प्रवेश २१ जून १९८८ मंगलवार मंगल की राशि वृश्चिक लग्न में हो रहा है। अतः इस वर्ष भी विश्व का वायुमंडल प्रदूषित रहेगा। समय पर सर्वत्र आम वर्षा नहीं होगी। गर्मी का प्रकोप और बिजली पानी का संकट बढ़ेगा। अग्निकांड और यानदुर्घटना अधिक होंगे। कई प्रान्तों में कहीं अवर्षण तो कहीं बाढ़ तूफान, भूकम्प या विषाक्त कीटाणुओं से फसल नष्ट होगी। गृह-खाद्य, कृषि-वित्त मंत्रियों को कहीं अकाल दुर्भिक्ष में तो कहीं बाढ़ तूफान पीड़ित प्रजा के लिये संकट का सामना करना पड़ेगा। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में शुभग्रहों (बुध, गुरु, शुक्र) का सप्तम केन्द्रस्थ होना सुखप्रद है। अतः गत वर्ष जैसा सार्वजनिक भयानक सूखा नहीं पड़ेगा। १९ जून से १६ अगस्त ८८ तक वृषभ, कर्क, वृश्चिक, मीन, कुंभ के चन्द्रमा में उक्त राशि प्रधान प्रान्तों में यत्र-तत्र खंड वर्षा का योग बनता है। इसी अवधि में पूर्व दक्षिणी भू भाग में चक्रवात, बाढ़ एवं समुद्री तूफान से हानि होगी। आगे शीतकाल में १२ दिसंबर ८८ से ५ जनवरी ८९ तक और माघी व फाल्गुनी अमावस्या के लगभग ५ से १० फरवरी एवं ४ से १० मार्च ८९ तक यत्र-तत्र मावठा वर्षा, हिमपात, ओला वृष्टि का योग है। कश्मीर हिमालय में भारी हिमपात भूस्खलन, चट्टानों के गिरने से जन-जीवन त्रस्त होगा।

वायु परीक्षा

यहाँ वर्षा दुर्भिक्ष, सुभिक्ष, उत्पातादि का ग्रह [illegible] योगानुसार लिखा गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा की वायुपरीक्षा और अन्य दिव्य अन्तरिक्ष लक्षण यदि शुभ शकुन का संकेत दें, वर्षा अवर्षण उत्पात, दुर्भिक्ष न होकर सामयिक सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जहां आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त समय दक्षिण-पश्चिम या नैऋत्यकोण की वायु चलेगी, वहां दुर्भिक्ष उत्पात रोगभय अधिक होंगे। विद्वान दैवज्ञों को वर्षभर के [illegible] शकुन विचार नोट करने चाहिये। वर्ष भर के न कर सकें तो कम से कम इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा (२८ [illegible] गुरुवार) को सायंकाल ७ से ७.१५ तक खुले स्थान में जाकर ध्वजा पूजन पूर्वक विधिवत वायुपरीक्षा करके अपने राष्ट्र के शुभाशुभ फल का निर्णय करें।

वाणिज्य – व्यवसाय

इस वर्ष का प्रधानमंत्री बुध बना है जो विश्वव्यापार का कारक है। प्रधानमंत्री बुध नये वर्ष लग्न में घर में राहु के साथ शनि से दृष्ट है। जगल्लग्न में धनेश लाभेश होकर नीच राशि का अष्टमस्थ शनि हर्शल नेपच्युन से केन्द्र योग बना रहा है सूर्य-गुरु में द्विर्द्वादश योग भी है। साथ ही इस वर्ष दशाधिकारियों में मंगल को तीन अधिकार (मेघेश-फलेश-दुर्गेश) प्राप्त हुये हैं, रसेश सूर्य बना है अतः इस वर्ष विश्व व्यापार स्थिति में अकल्पित उलटफेर होगा। भारतीय आर्थिक एवं वाणिज्य स्थिति संकटापन्न बनेगी। जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुओं एवं लोहधातु [illegible] व्यापारी लाखों रुपये कमा लेंगे और कुछ सर्वस्व गँवा बैठेंगे। इस वर्ष शनि के साथ हर्शल नेपच्युन का योग व्यापार जगत में विशेष भूमिका निभायेंगे। दोनों ग्रह रहस्यमय आवरण का उद्घाटन करके विस्मयजनक स्थिति उत्पन्न करने वाले हैं। इस शताब्दी में प्रथमबार इन तीन महाग्रहों का धनुराशि में मिलन हो रहा है, इसपर समर्थ महर्षि मर्मज्ञ संहिता शास्त्र विशेषज्ञ दैवज्ञों को जीवनोपयोगी खाद्य वस्तुओं – गेहूँ, चावल, चना, मूंग, उड़द, अरहर, रस पदार्थ, गुड़, खाँड, किशमिश, बदाम आदि सूखा मेवा में मन्दी की अपेक्षा तेजी के योग अधिक हैं। वर्षारंभ के प्रथम चरण में उक्त पदार्थों में से कुछ धान्य पदार्थों में मन्दी का अस्थायी रुख बनेगा, आगे चलकर ज्येष्ठ मास से तेजी का चक्र प्रारंभ हो जावेगा। दोनों ग्रहणों के आसन्न कई वस्तुओं में अकल्पित घटाबढ़ी का चक्र चलेगा। इस वर्ष सूर्य के आर्द्रा प्रवेश लग्न में बुध गुरु शुक्र का सप्तमस्थ होना मन्दी का द्योतक है परन्तु शनि हर्शल नेपच्युन का षडष्टक योग स्थायी मन्दी में बाधक है। मेष संक्रान्ति १४ अप्रैल तक जो वस्तुएँ मंदी हों उन्हें संग्रह करना आगे लाभ कारक सिद्ध होगा। गत अक्टूबर ८७ में जिस प्रकार वालस्ट्रीट शेयर बाजार में मन्दी आकर विश्वबाजार को भयंकर धक्का लगाया वैसा ही योग इस वर्ष शनि, हर्शल नेपच्युन योग एवं मीन के मंगल से बनेगा, जिससे विश्व के व्यापार जगत में तहलका मचेगा। कुछ विख्यात व्यापारी एवं तस्कराग्रणी, (स्मगलर) दुर्घटनाग्रस्त होंगे। जमाखोर भ्रष्टाचारी कालाबाजार को बढ़ावा देने वाले अनेक व्यापारी और अधिकारी दंडित होंगे। देश द्रोह का बड़ा षडयंत्र अनावृत होगा। कुछ राजनेता भी कलंकित होंगे। केन्द्र एवं प्रान्तीय वित्त-खाद्य कृषि मन्त्रियों के लिये यह वर्ष कठिन कसौटी का है। मंगल गुरु शुक्र के कारण राजकीय सतर्कता से जीवनोपयोगी वस्तुओं के भाव सीमातिक्रमण नहीं कर पायेंगे। अर्थव्यवस्था डगमगाते हुए भी संभल जायेगी।

"तिलहन, दलहन रूई, चाँदी, सोना आदि अन्य सभी वस्तुओं की तेजी मन्दी की स्थिति का पूर्ण विवरण इस पंचांग के अन्त में अनुभवी विद्वानों के व्यापारिक लेखों में विस्तार से दिया गया है, वहाँ देखें।

प्रान्तीय राज्य संघ

इस पंचांग में प्रति वर्ष ग्रह गणना के आधार पर केन्द्र एवं प्रान्तों का संक्षिप्त भविष्य विवेचन यथामति विगत ४४ वर्षों से मैं करता आ रहा हूँ। अब यहां इस नये वर्ष २०४५ वि. के जगल्लग्न, वर्ष लग्न कुंडली और केन्द्र एवं प्रान्तों की ग्रह स्थिति कूर्म चक्र विचारादि से संक्षेप में भारत के प्रमुख प्रान्तों का भविष्य विवेचन किया जाता है। प्रान्त एवं नगरों की प्रभाव राशियों का प्रामाणिक निर्णय अभी तक सर्व सम्मत नहीं हो पाया, कोई भारत की मकर राशि मानते हैं तो कुछ विद्वान कन्या राशि मानते हैं, यही स्थिति प्रान्तों की भी है। यद्यपि अब राजतंत्र तो है नहीं प्रजातंत्र में हर पांचवे वर्ष में मंत्रिमण्डल एवं प्रधान शासक बदलते रहते हैं। उनकी प्रामाणिक जन्म कुण्डलियाँ उपलब्ध न होने से केवल नाम राशि एवं सत्तारूढ़ लग्न से यथामति विचार लिखा जाता है, जिसके लिये यह नहीं कहा जा सकता कि यह विचार शत-प्रतिशत सही ही उतरेगा तथापि गोचर स्थिति से मध्य मानेन जो प्रान्तों का भविष्य लिखा जाता है वह ७५ प्रतिशत से अधिक सही बैठता है ऐसा पंचांग पाठकों का मत है।

कश्मीर–भूस्वर्ग कश्मीर की प्रभाव राशि तुला मानी जाती है आज से २३ वर्ष पूर्व संवत् २०२२ वि. के "श्री विश्वविजय पंचांग" में मैंने लिखा था–"कश्मीर का प्रश्न उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक पाकिस्तान बना रहेगा"। विगत वर्षों में लिखी गई इस पंचांग की कश्मीर संबंधी भविष्य वाणियां सत्य सिद्ध हो चुकी हैं। संवत् २०४४ के पंचांग में पृष्ठ ३० पर काश्मीर में डा. फारूख अब्दुल्ला की कांग्रेस (इ) से साठ-गाँठ कर सत्तारूढ़ होने की सूचना भी सत्य प्रमाणित हो चुकी है। अब इस नये वर्ष संवत् २०४५ में धनु राशि का शनि हर्शल नेपच्यून काश्मीर के लिये कठिन कसौटी के हैं। वर्तमान मुख्यमंत्री की राशि पर स्थित यह त्रिकुटी फारूख अब्दुल्ला को चैन से नहीं बैठने देगी। कौटुम्बिक, सांप्रदायिक, राजनैतिक, संघर्ष में वर्चस्व समाप्त होगा। मीन के मंगल में सत्ता में परिवर्तन संभाव्य है। कश्मीर में कांग्रेस का वर्चस्व नगण्य सा रहेगा। पाकिस्तानी गुप्तचर काश्मीर में प्रवेश कर साम्प्रदायिक आग भड़काकर यादवी संघर्ष करवायेंगे। भारत को कठोर पग उठाने के लिये बाध्य होना पड़ेगा। वर्षान्त में प्रकृति प्रकोप, हिमपात, भूकम्प, भूस्खलन, अग्निकांड यान दुर्घटना में भारी हानि होगी। पाकिस्तान पुनः काश्मीर प्रश्न उछाल कर युद्धोन्माद फैलाने का प्रयत्न करेगा। कुछ तथाकथित स्वार्थान्ध साम्प्रदायिक राजनैतिक नेता शत्रु से साठ गाँठ कर भारत को हानि पहुँचाने का षडयंत्र रचेंगे। अतः केन्द्र एवं राज्य सरकार को सतर्क, सुदृढ़ रहना परमावश्यक है।

पंजाब-हरियाणा-हिमाचल

विभाजन (१९४७) से पूर्व उक्त तीनों प्रान्त पाक सहित बृहत्तर पंजाब कहा जाता था। इस पंचाग में इन तीनों प्रान्तों का जो भविष्य विवेचन किया जाता रहा उसकी सत्यता से पाठक परिचित हैं। विगत सात वर्षों से मैं इस पंचाग में - 'भारत रक्तरंजित क्रांति की ओर अग्रसर होने की सूचना' देता रहा हूँ-देखें वि० स० २०३८ से आजतक के पुराने पंचाग। गतवर्ष स. २०४४ वि. के पंचाग के इसी स्तंभ में पृष्ठ ३० पर लिखी कुछ पंक्तियां यहा अक्षरशः उद्धृत हैं—

"......पंजाब में आजतक जो हुआ और होता आ रहा है उससे पाठक भलीभांति परिचित हैं। अब यह नया वर्ष (सं. २०४४) भी पंजाब के लिये अच्छा नहीं है......सिक्खों में एकता लाने, आतंकवाद समाप्त करने के अनेक प्रयत्न सरकार और सम्प्रदाय की ओर से होंगे, राहु के साथ गुरु चण्डाल योग के कारण सभी प्रयत्न निष्फल रहेंगे। एक दूसरे पर किसी को विश्वास नहीं होगा। स्वार्थी तत्व पन्थको बहुत हानि पहुँचायेंगे।......१८ अप्रैल से १२ मई ८७ तक बरनाला मंत्रीमंडल भंग होकर राष्ट्रपति शासन लागू हो जाने पर भी समस्या का शान्तिपूर्ण समाधान नहीं निकल पायेगा। चण्डीगढ़ समस्या यथापूर्व बनी रहेगी। भू० पू० मुख्यमंत्री स. प्रकाशसिंह बादल की पुनः मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पूर्ण नहीं होगी।......"

इस भविष्यवाणी के अनुसार गत ११ मई ८७ को पंजाब से बरनाला मंत्रीमंडल भंग करके राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। परन्तु अभी ये पंक्तियां लिखने तक ६ महिने में शान्ति स्थापित नहीं हो पायी। १७ दिसम्बर ८७ से आगे धनु राशि के शनि ने आतंकवाद अधिक उग्ररूप धारण करले तो कोई आश्चर्य नहीं। अब प्रवेश होने वाले नये वर्ष स. २०४५ वि० की ग्रह स्थिति भी पंजाब के लिये सन्तोषप्रद नहीं है। धनु राशि में शनि के साथ नेपच्यून और हर्शल भी रहेंगे। २८ मार्च ८८ तक मंगल भी धनु राशि में रहेगा, यह उग्रवाद को बढ़ावा देगा और सिक्खों में फूट पनपायेगा। वर्षारम्भ से मई के अन्त तक वर्तमान शासन में परिवर्तन होगा, परन्तु आतंकवाद को समूल नष्ट करने वाली लोकप्रिय सरकार नहीं बन पायेगी। १९ जून से आगे वृषभ के गुरु और मीन के मंगल में आतंकवादी राष्ट्रीय धारा में जुड़ने का मन्त्र बनायेंगे। नये चुनाव या शासन से समझौते के प्रयत्न होंगे, परन्तु कुछ विदेशी शक्तियाँ आतंकवाद को बढ़ावा देने में सहायक होंगी। विदेश में बैठे अनेक धनी—खालिस्तान समर्थक सिक्ख पंजाब समस्या समाधान में बाधक बनेंगे। १३ फरवरी से १ मई ८८ तक पंजाब समस्या सुलझाने के अथक प्रयास होंगे, परन्तु महत्वाकांक्षी पदलोलुप साम्प्रदायिक नेताओं के अड़ीयल रुख से संतोषजनक परिणाम नहीं निकलेगा। आज से २ वर्ष पूर्व सन् १९८६ में "ज्योतिष्मती" वर्ष २९ के चौथे अंक में पृष्ठ १६ पर मैंने यह पंक्तियाँ लिखी थी—"पंजाब में हिन्दुओं की हत्या और पलायन रोक ने का एक मात्र मार्ग यह है कि उग्रवादियों के गढ़ पंजाब के सीमावर्ती चार जिलों में प्रधानमंत्री को दृढ़ताके साथ तत्काल सेना भेज देनी चाहिए, इसमें जितना विलम्ब करेंगे उतनी ही हिन्दुओं के जन-धन की क्षति अधिक होगी" इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, इसका परिणाम यह हुआ कि गत दो वर्ष से पंजाब में नित्य भयंकर रक्तपात हो रहा है। यदि प्रधानमंत्री ऋतम्भरा प्रज्ञासे काम लेते तो पंजाबको यह दुर्दिन न देखने पड़ते। प्रधानमंत्री को पड़ोसी देश श्रीलंका की तो चिन्ता है, जहां तमिल आतंकवादियों से सिंघलियों की जानमाल की रक्षा के लिए तुरन्त भारतीयसेना के असंख्य जवान श्रीलंका भेज दिये, परंतु पंजाब की धरती नित्य रक्तरंजित होती जा रही है। इसकी उन्हें चिंता नहीं। यदि अबभी प्रधानमंत्री तुष्टिकरण की ढुलमुल नीति अपनाते रहे तो पंजाब के साथ भारी अन्याय होगा। ३ फरवरी ८८ से आने वाले मेष राशि के गुरु में कुछ शांति सद्भाव की आशा बंधने लगेगी, क्योंकि शांतिप्रिय देव गुरु की तीनों आतंकप्रिय ग्रहों (श. ह. ने.) पर मित्र दृष्टि १९ जून ८८ तक रहेगी, अतः इस अवधि में शांति समझौते के प्रयत्न प्रबल होंगे, उनमें आंशिक सफलता दिखाई देने लगेगी, पर वह चिरस्थायी न होगी। वृषभ के गुरु में वर्ष के उत्तरार्ध में पुनः वैमनस्य भड़कने लगेगा। किन्तु अशांत वातावरण में भी इसवर्ष पंजाब कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति करेगा। धनु के शनि में ५ वर्ष पहले जैसी पूर्ण शान्ति पंजाब में सम्भव नहीं। तीन ख्यातिप्राप्त बुद्धिजीवी कालकवलित होंगे। प्राकृतिक प्रकोप से भी कुछ भाग क्षतिग्रस्त होगा।

हरियाणा—गत वर्ष सं. २०४४ वि. के पंचांग में पृष्ठ ३१ पर इस प्रदेश के लिए जो भविष्य लिखा वह सत्य सिद्ध हो चुका है। गत २० जुन ८७ को सायंकाल ५ बजे वृश्चिक लग्न में लोकदल के लोकप्रिय नेता चौ. श्री देवीलाल नये मुख्यमंत्री बने। पदग्रहण कुण्डली के साथ ग्रहों का विवेचन 'ज्योतिष्मती' वर्ष ३० के चतुर्थ अंक जुलाई ८७ में किया गया था, वह ज्यों का त्यों घटित हो रहा है। लग्न और दशमभाव में स्थिर राशियाँ गुरु शुक्र से दृष्ट हैं और लग्नेश राज्येश मंगल सूर्य अष्टमस्थ हैं अतः संघर्ष और समस्याओं का सामना करते हुए मंत्रीमण्डल अपना कार्यकाल सफलता से पूर्ण करेगा। मुख्यमंत्री की लोकप्रियता बढ़ेगी। श्री चौ. देवीलाल की जन्मकुण्डली मेरे सामने नहीं है, परन्तु पदग्रहण कुण्डली से लग्नेश मंगल अष्टम होने से स्वास्थ्य की ओरसे सतर्क रहना आवश्यक है। मीन मिथुन और तुला के मंगल में रक्तचाप हृदय रोग या कोई दुर्घटना सम्भव है। जातिवाद, पक्षपात, भ्रष्टाचार एवं बेकारी मिटाने के अथक प्रयत्न होंगे। पंजाब से वांछित भूमिक्षेत्र जलविद्युत प्राप्त करने के मामलों में मनोमालिन्य होगा। चतुर्थेश सप्तमेश, मित्रग्रह केन्द्रस्थ हैं अतः भूमि सुधार, खनिज उद्योग, पशुपालन, शिक्षा, विज्ञान, एवं औद्योगिक क्षेत्र में प्रदेश प्रगति करेगा। दो लोकप्रिय बुद्धि जीवियों की सेवा से प्रदेश को वंचित होना पड़ेगा।

हिमाचल प्रदेश— गतवर्ष के पंचाग में पृष्ठ ३१ पर जो फल लिखा है लगभग वही फल इस वर्ष में भी लागू होगा। देवात्मा हिमाचल में अन्य प्रान्तों की अपेक्षा राजनैतिक साम्प्रदायिक व्यावसायिक शान्ति अधिक रहेगी। जल विद्युत् समस्या समाधान कारक होगी। मुख्य मंत्री की जन्मकुण्डली उपलब्ध नहीं है, नाम राशि वृषभ से इस वर्ष अष्टम में शनि मंगल का योग वर्षारम्भ समय से पूर्व १३ फरवरी से २८ मार्च तक शुभ नहीं है। विपक्षियों की ओर से राजनैतिक संकट उत्पन्न किया जायेगा। यहाँ गुरु भी मेष में बारहवां रहेगा। १९ जून ८८ से आगे वृषभ के गुरु में मुख्यमंत्री का वर्चस्व बढ़ेगा। अप्रैल मई जून में पार्टी एवं विरोधियों की ओर से प्रच्छन्न रूप से मंत्री मडल गिराने का प्रयत्न होगा, परन्तु मुख्यमंत्री ऋतम्भरा प्रज्ञासे संकट पार करजावेंगे। कुछ विभागीय परिवर्तन सम्भव है। श.ह.ने. युति के कारण इस वर्ष हिमाचल में ऋतु विपर्यय, प्रदूषण, प्रकृति-प्रकोप, अग्निकाण्ड एवं यान दुर्घटना से हानि अधिक होगी। वन संरक्षण, वृक्षारोपण, विद्युतीकरण, कृषि, एवं लघु उद्योग तथा शिक्षाविज्ञान क्षेत्र में विशेष प्रगति होगी। भ्रष्टाचार में संलिप्त कुछ राजनयिक एवं उद्योगपति दण्डित होंगे। कांग्रेस पार्टी में आन्तरिक कलह पनपेगा। वर्षान्त में विपक्ष शक्ति-शाली बनेगा।

राजस्थान—यह प्रदेश तुलाराशि के प्रभाव क्षेत्र में हैं। कुछ विद्वान कर्क राशि मानते हैं। दोनों में ही गत ३ वर्षों से यह प्रदेश शनि और शनि (प्लूटो) ग्रह के दुष्प्रभाव में चल रहा है। १७ दिसम्बर

८७ से शनि तो धनु राशि में आ रहा है, परन्तु वेंकटेश (प्लूटो) तुला में ही है और ३ फरवरी ८८ तक मीन राशि में गुरु चाण्डाल योग बन रहा है, अतः इस कालावधि में राजस्थान में कोई अकल्पित राजनैतिक या प्राकृतिक अशोभनीय घटना घट जावे तो आश्चर्य नहीं। सत्ता रूढ़ दल और विपक्ष में संघर्ष तीव्र होगा। ३ फरवरी को गुरू के मेष में जाने पर (राहुसे अलग होने पर) कुछ क्षणिक शान्ति सम्भव हैं। संवत् २०४५ वि. के वर्ष लग्न मीन से तुला राशि अष्टम पड़ रही है, और राज्येश चन्द्रमा से षडष्टक योग है अतः वर्ष भर राजनैतिक गतिरोध अन्तर्द्वन्द चलता रहेगा। इस वर्ष मुख्यमंत्री पद सुरक्षित नहीं है। १९ जून १९८८ से वृषभ का गुरु अष्टम रहेगा, यह एक वर्ष की अवधि में मंत्रीमंडल में नाटकीय उलट फेर करेगा। कांग्रेस पार्टी में अन्तर्द्वन्द मतभेद होंगे। दुर्भाग्य वश विगत दो तीन वर्षों से राजस्थान सूखा की चपेट में है, अब यह नया वर्ष भी वर्षा के लिए विशेष अनुकूल प्रतीत नहीं होता। पश्चिमोत्तरीय राजस्थान प्रकृति प्रकोप अवर्षण विद्युत जल संकट, लूटमार और पाकिस्तानी घुसपेठ से पीड़ित होगा। दक्षिण पूर्वी भाग मेवाड़ हाड़ौती, शेखावटी में यत्र-तत्र सामयिक वर्षा हो जाने की सम्भावना है। मध्य एवं पूर्वोत्तरीय भाग आंधी, तूफान, चक्रवात, प्रदुषण से पीड़ित होगा। पश्चिमोत्तरीय सीमा में आतंकवादी गति विधियां बढ़ेंगी। भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाई भतीजावाद बढ़ेगा। मंत्री-मंडल एवं विधानमंडल में से ३ ख्याति-प्राप्त नेता दुर्घटना ग्रस्त होंगे। राजनैतिक गतिरोध से चलते हुए भी राजस्थान कृषि, शिक्षा, एवं औद्योगिक क्षेत्र में प्रगति करेगा। विपक्ष प्रबल होगा।

उत्तर प्रदेश— भारत का सबसे बड़ा तीर्थ प्रधान यह प्रदेश धनुः राशि के प्रभाव क्षेत्र में है, १७ दिसम्बर ८७ से धनुः राशि में शनि, हर्शल, नेपच्यून के साथ प्रवेश कर रहा है। यह वर्तमान मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुरसिंह की राशि से अष्टम होंगे अतः अब धनुः राशि में शनि के वक्रत्व काल में (११ अप्रैल से २० अगस्त ८८) श्री वीरबहादुर की बहादुरी उत्तर प्रदेश से समाप्त होना सम्भव है। वर्तमान मुख्यमंत्री की जन्म कुंडली मेरे सामने नहीं है। यदि जन्म कुंडली में शनि योग कारक हुआ तो १९ जून से आगे वृषस्थ गुरु के कारण वे अपनी बहादुरी का करिश्मा दिखा सकते हैं। किन्तु धनुः राशि के अन्तिम भाग का शनि उन्हें उत्तरप्रदेश की राजनीति से अलग कर देगा। वर्षारम्भ में ही मंत्रीमंडलीय गतिरोध उग्र होने लगेगा। सामाजिक, साम्प्रदायिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याएं विस्फोटक बनेंगी। प्रदेश में यत्र-तत्र सर्वत्र विशेषकर पश्चिम दक्षिणी भाग में प्रकृति-प्रकोप, जल विद्युत संकट, अग्निकांड, बाढ़ या भूकम्प चक्रवात, तुफान, चोरी लूटमार, हत्याकांड, हड़ताल बन्द घेराव आदि से जनजीवन त्रस्त होगा। राजनैतिक भ्रष्टाचार से धार्मिक, औद्योगिक क्षेत्रों की प्रगति में बाधा पड़ेंगी। न्याय व्यवस्था की स्थिति गम्भीर होगी। कांग्रेस में फूट बढ़ेगी, विपक्ष प्रबल होगा। वृषभ का गुरु, शनि के दुष्प्रभाव को रोकने का प्रयत्न करेगा। परन्तु गुरु पूर्ण बली नहीं है अतः केवल शिक्षा, विज्ञान, एवं औद्योगिक क्षेत्रों में प्रगति के कुछ साधन जुटाने और साम्प्रदायिक विषको शमन करने में सफल होगा।

मध्यप्रदेश—यह प्रदेश वृषभ राशि के प्रभाव क्षेत्र में है, गत वर्ष सं. २०४४ वि. के पंचाग में पृष्ट ३१ पर लिखा था कि—"....१६ दिसम्बर ८७ से धनुः राशि का शनि प्रदेश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति में बाधक है। प्रकृति-प्रकोप से यत्र-तत्र हानि होगी। मंत्रीमंडल में परिवर्तन सम्भव होगा" तदनुसार मध्यप्रदेश में भयंकर सूखा पड़ चुका है और अब प्रवेश होने वाला यह नया वर्ष संवत् २०४५ वि. ... में संतोषप्रद नहीं है। धनुः के शनि मेष के गुरु में ३ फरवरी से १९ जून के मध्य कभी भी वर्तमान मुख्यमंत्री की प्रदेश से छुट्टी हो सकती है। नया मंत्रीमंडल समस्याग्रस्त अन्तर्द्वन्द स्थिति में पद-प्रतिष्ठा बचाने की उधेड़ बुन में प्रदेश का अधिक हित नहीं कर पायेगा। अन्त तक अपना कार्यकाल पूर्ण करना सम्भव नहीं, क्योंकि इस वर्ष प्रदेश की राशि से तीन महाग्रह अष्टम में है और १९ जून ८८ तक गुरू भी बारहवां रहेगा अतः कृषि, औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन कम होगा। प्रकृतिप्रकोप, आंधी, तुफान बाढ़ या यानदुर्घटना, और श्रमजीवी एवं छात्र आन्दोलन व साम्प्रदायिक संघर्ष से पूर्वी मध्यप्रदेश और भोपाल, इन्दौर, जबलपुर आदि बड़े नगरों में जनजीवन त्रस्त होगा। वर्षारम्भ से १९ जून तक और आगे २४ दिसम्बर से वर्षान्त तक मेष वृषभ के मंगल में प्रदेश में राजनैतिक आर्थिक संकट बढ़ेगा।

दिल्ली—भारत की राजधानी दिल्ली भी वृषभ राशि के प्रभाव क्षेत्र में आती है अतः नया वर्ष राजधानी के लिये राजनैतिक दृष्टि से विशेष सुखशान्तिकारक नहीं है। गत वर्ष के पंचांग में पृष्ठ ३१-३२ पर लिखा था :

"....पीड़ित प्रान्तों की सहायतार्थ केन्द्र को भारी व्यय भार उठाना पड़ेगा,.... कुछ तथाकथित उच्चाधिकारी और व्यापारी भी स्वार्थ वश देशद्रोह के षड़यंत्र में संलग्न पाये जायेंगे। ....अभी भारत में भ्रष्टाचार रूपी रावण, कुम्भकर्ण, तथा कंस के वंशज प्रच्छन्न रूप में मौजूद हैं उनके साथी विदेशी धनमदान्ध हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु भी भारत की ओर मुँहबाये खड़े हैं—उनसे त्राणपाने के लिये राजीव को "राजीव लोचन' भगवान् राम और भक्त वत्सल भगवान नृसिंह का लोक कल्याणकारी आदर्श अपनाना होगा। २ वर्ष तक उनको ऋतम्भरा प्रज्ञासे सहस्राक्ष बनाकर सभी विभागों की कमियां सतर्कता से देखनी होंगी। ....ऋतम्भरा प्रज्ञा के अभाव में अब सभी प्रान्तों और राजधानी में अशांति का वातावरण उभर रहा है। कांग्रेस में विघटन प्रारम्भ हो गया है। सत्तारूढ़ दल के लिए यह अग्निपरीक्षा का समय है। इसमें पारस्परिक वैमनस्य, विघटन एवं पद-प्रतिष्ठा का लोभ राष्ट्र को रसातल में पहुँचा देगा, अतः स्वार्थ त्याग कर राष्ट्र रक्षार्थ एक होकर ऋतम्भरा प्रज्ञासे विचार करना परमावश्यक है।"

१३ फरवरी से १२ मई तक केन्द्र और प्रान्तीय मंत्रीमंडलों में उलटफेर होगा। १३ मई से १६ सितम्बर तक राजधानी में रुक-रुक कर राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक समस्याएं एवं प्रकृतिप्रकोप भयंकर गर्मी, जल-विद्युत, संकट, अग्निकांड, हत्याकांड, तुफान, यानदुर्घटना, महामारी आदि से राजधानी एवं पड़ौसी प्रान्तों के जनजीवन को यत्र-तत्र त्रस्त करेगा। दक्षिण पूर्व के कुछ प्रान्त केन्द्र के लिये भारी सिरदर्द बनेंगे। सत्तारूढ़ दल में अन्तःकलह पनपेगा। कांग्रेस मंत्रीमंडलों में भी पदप्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा जोरों से चलेंगी। इससे कांग्रेस की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर क्षीण होती जायेंगी। धनुः के शनि के उत्तरार्ध में राष्ट्रवादी विपक्षी दल संगठित होकर लोकप्रियता प्राप्त कर सकेंगे।

बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा, अरूणाचल, मेघालय, त्रिपुरा आदि —

पूर्वांचल के यह सब प्रदेश इस वर्ष शनि, हर्शल, नेपच्यून से विशेष प्रभावित रहेंगे। अतः अधिकांश फल गत वर्ष जैसा ही रहेंगा, गत वर्ष के पंचांग में पृष्ट ३२ पर लिखा था—"....प. बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योतिबसु की ग्रह स्थिति बलवान है उनकी पदप्रतिष्ठा पूर्ववत् बनी रहेगी, ... बिहार में दुर्भिक्ष का भय व्यापेगा, मुख्यमंत्री के

लिये वर्ष अहितकर है।"....१६ दिसम्बर ८७ के आगे धनुः राशि में शनि,हर्शल,नेपच्यून का योग इनप्रान्तों के लिये विशेष चिन्ता का कारण बनेगा" इत्यादि....।

अब इस नये वर्ष संवत २०४५ वि. में भी पूर्वी बंगाल के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री ज्योतिबसु की लोकप्रियता पूर्ववत् बनी रहेगी। पर्वतीय क्षेत्र दार्जिलिंग अशान्त रहेगा,नक्सलवादी,गोरखा उग्रवादी प्रदेश की प्रगति में बाधक बनेंगे। बन्द हड़ताल,अग्निकांड एवं प्रकृतिप्रकोप से यत्रतत्र हानि पहुँचेगी। बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री दुबे के लिये धनुः का शनि प्रदेश की पदप्रतिष्ठा के लिये अशोभनीय है। अतः उन्हें वर्षारम्भ में ही पदत्याग करना पड़े तो आश्चर्य नहीं। नया मंत्रीमंडल भी समस्याग्रस्त रहकर अपनी अवधि पूर्ण नहीं कर पायेगा। बिहार इस वर्ष राजनैतिक,सामाजिक संकट और प्रकृतिप्रकोप से पीड़ित रहेगा। इस वर्ष मध्य बिहार में नक्सलवादियों की गतिविधियाँ बढ़ेंगी। छोटा नागपुर क्षेत्र में पृथक झारखण्ड राज्य की माँग से भी शासन चिन्तित होगा। यदि समय रहते इस पृथकतावादी समस्या से न सुलझा गया तो बिहार में भी कोई दूसरा 'घीसिंग' पैदा हो जायेगा। असम,उड़ीसा,मेघालय,मणिपुर त्रिपुरा में भी मंत्रीमंडलीय गतिरोध एव प्रकृतिप्रकोप से प्रगति में बाधा पड़ेगी। अरूणाचल अक्साईचिन पर चीन की गृध दृष्टि पड़ती रहेगी। धनुः के शनि में चीन भारत के पूर्वांचलीय इस क्षेत्र के आदिवासियो में प्रच्छन्न रूप से घुसकर भारत को हानि पहुँचाने का षड्यंत्र रचेगा। भू. पू. प्रधान मंत्री स्व. श्री नेहरू के समय तक अक्साईचिन के समीप जो १४,००० वर्ग मील क्षेत्र भारत का था उसे चीन हड़पने का प्रयत्न करेगा। पूर्वांचल क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों में विधर्मी अनार्य विदेशी पादरियों की गतिविधियां बढ़ेंगी। समुद्र तटवर्ती क्षेत्र और ब्रह्मपुत्रनद तटवर्ती जनपद बाढ़,तूफान से क्षतिग्रस्त होंगे।

गुजरात-महाराष्ट्र-आन्ध्र-तमिलनाडू-केरल-कर्नाटक--

सन् १९६० से पहले गुजरात महाराष्ट्र का शासनतंत्र एक ही था। अब भी ग्रह स्थिति का प्रभाव दोनों पर लगभग एक सा हीं पड़ता हैं। गतवर्षों के पंचागों में दक्षिण पश्चिमी इन राज्यों के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई उनकी सत्यता के प्रमाण विज्ञपाठक स्वयं हैं। उक्त प्रान्त वृश्चिक धनुःराशि के प्रभाव क्षेत्र में हैं। शनि,हर्शल,नेपच्यून के कारण इस वर्ष गुजरात,महाराष्ट्र,तमिलनाडू और आन्ध्रपदेश को अनेक संकटों का सामना करना पड़ेगा। इन प्रान्तों के कुछ भाग सूखा या बाढ़ से दुर्भिक्षग्रस्त होंगे। राजनैतिक गतिरोध उभरेगा। वर्षारम्भ की प्रथम तिमाही में गुजरात महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अपदस्थ होंगे। इस वर्ष शनि हर्शल की युति फरवरी,जून और अक्तूबर में तीनबार हो रही हैं। आगे वि.सं. २०४५ के अन्त में ४ मार्च १९८९ को शनि नेपच्यून की युति धनुः राशि में राजनैतिक,सामाजिक,प्राकृतिक स्थिति के लिये अनिष्टप्रद है। शनि के वक्रत्वकाल और इन युतियों के आसन्न समय में मंत्रीमंडलों के सामने विषम समस्यायें उत्पन्न होंगी। गुजरात महाराष्ट्र के महानगरों में रुक-रुक कर यदाकदा साम्प्रदायिक,सामाजिक,हिंसक घटनायें होती रहेंगी। बम्बई महानगर के लिए भी यह वर्ष अनुकूल नहीं है। अप्रैल से अक्तूबर के मध्य कई बार बन्द,घेराव,हड़ताल और प्रकृतिप्रकोप,अग्निकांड,चक्रवात,समुद्रीतूफान,भूकम्प या कहीं सूखा कहीं बाढ़ महामारी से हानि होगी। महँगाई,गरीबी,बेकारी और भ्रष्टाचार एवं भाषावाद,जातिवाद की समस्यायें गम्भीर बनेंगी। आन्ध्र,तमिलनाडू,केरल,कर्नाटक में चोरी डाके,अपहरण बलात्कार की घटनाएं अधिक होंगी। दक्षिण के कई प्रान्तों में आर्थिक संकट के कारण कुछ महत्वपूर्ण योजनायें पूर्ण न हो पायेंगी। गुजरात और कच्छ की पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तानी लुटेरे जनधन की हानि करेंगे। इस वर्ष वृषभ के गुरू में गुजरात,महाराष्ट्र कृषि क्षेत्र में उत्तरोत्तर आधुनिक पद्धति से पर्याप्त प्रगति करेगा। भूगर्भ व समुद्रतल से कुछ मूल्यवान सामग्री के स्रोत उपलब्ध होंगे। धार्मिक जागृति बढ़ेगी,तीन अनुभवी वयोवृद्ध राजनेता कालकवलित होंगे। उक्त प्रान्तों के कुछ राजनयिक शनि के वक्रत्व काल में यानदुर्घटना एवं राजनैतिक षड्यंत्र में फँसेंगे। अन्य पड़ौसी राज्यों की गतिविधि के सम्बन्ध में संक्षेप में लिखा जा चुका है। यूरोप,रूस,अमेरिका,चीन के सम्बन्ध में इस पंचाग में दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री के. एन. राव और पूना के प्रसिद्ध विद्वान डा. एस.के. केलकर के लेख में विशेष विचार किया गया है, वहाँ देखें।

वर्तमान बीसवीं शती का यह अंतिम चरण ग्रह-गणनानुसार संसार के इतिहास में अभूतपूर्व भयंकर उलट-फेर कारक है। महामाया से प्रार्थना है कि वे युद्धोन्मादी राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि दें और विश्व को विनाश के गर्त में जाने से बचावें। भारत की तपोधन आध्यात्मिक महान् विभूतियाँ ही विश्व का कल्याण करेंगी।

"स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेणमहीं महीपाः।
गो ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु।।"

मंगलाकांक्षी

श्री दत्तजयन्ती
संवत् २०४४ विक्रमी

हरदेव शर्मा त्रिवेदी
'ज्योतिष्मती निकेतन_ सोलन (हिमांचल-प्रदेश)।

नवभारत टाइम्स- ९-८-१९८७ रविवारीय अंक

श्री विश्व विजय पंचांग संवत २०४४ (१९८७-८८)

सम्पादक एवं गणितकर्ता : पंडित हरदेव शर्मा त्रिवेदी, प्रकाशक : ज्योतिष्मती प्रकाशन, सहगलपुरा, मथुरा. (उ. प्र.), पृष्ठ संख्या-१७८, मूल्य-१२.५०रु.

आलोच्य पंचांग का प्रकाशन पिछले ४४ वर्षों से अविराम हो रहा है। आज यही एकमात्र पंचाग है जो कि भारत सरकार की पंचाग रिफॉर्म कमेटी, राष्ट्रीय पंचांग समिति तथा अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है ।

विश्वविजय पंचाग को कम्पयूटराइज्ड साइडेरियल एस्ट्रॉनॉमिकल डाटा के अनुसार बनाया गया है। इसमें सर्वसाधारण के उपयोग की सामग्री जैसे दैनिक लग्नसारणी, दैनिक ग्रहस्पष्ट, प्रसुति ज्ञान, मेलापक अवकहडाचक्र, वर्षप्रवेश सारणी, अक्षांश सारणी, साम्पातिक काल से लग्न शोधन तथा अनेकानेक उपयोगी मुहूर्त शोधन की विधियो सहित तिथि, वार योग, नक्षत्रकरण आदि का आरंभ, समापन घंटा, मिनट, सेकिण्डस मे दिया गया है।

इस पंचाग मे वार्षिक विवाह लग्न एवं अन्य शुभ कार्यों के मुहूर्त सहित मेलों के उदयास्त और नक्षत्र एवं राशि संचार का भी सूक्ष्म उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही दैवज्ञ की दृष्टि मे संचार चक्र, संवत्सर फल, राशि फल और गण्डमूल नक्षत्रों के प्रभाव सहित वर्ष १९८७-८८ के व्यापारिक भविष्यफल तथा वायदा जिन्सों की तेजी मंदी का जहां विशद आकलन किया गया है, वहां दैनिक कार्यों के निष्पादन के मुहूर्त सहित तंत्र-मंत्र एवं सुख समृद्धि वाचक कई योगायोग सहित अनुसंधानपूर्ण सामग्री को एकत्रित किया गया है।

विद्वान ज्योतिषाचार्य ने सिर्फ निजी व्याख्यान ही इसमे उद्धृत नहीं किए है बल्कि प्रख्यात ज्योतिर्विदो, महात्माओं, अर्थशास्त्रियो और ख्यातिप्राप्त ज्योतिष पत्रकारों के लेख भी इसमे शामिल किए है ।

लेकिन खेद की बात है कि विषय क्रम के अनुसार इस पचांग के संपादन और संयोजन मे सतर्कता नही बरती गई । कुछ विशिष्ट प्रकरणो मे दिए गए संस्कृत के मूल श्लोक व्याख्या चाहते है । फिर भी इसमें जितनी सामग्री निहित है वह किसी भी अन्य पचांग मे नही है । यही कारण है कि पंचांग, पंडितो, आचार्यों से लेकर गृहिणियो, श्रद्धालुजनो और ज्योतिषियो मे समान रूप से उपयोगी है । तीज-त्यौहारों की सूचना वर्ष भर मे ग्रहण आदि का विचार भी इसमें दिया गया है । अन्य पंचागों की तुलना मे इसका मूल्य कुछ ज्यादा है परन्तु अच्छा कागज, उत्कृष्ट और त्रुटिहीन मुद्रण और हित सामग्री को देखते हुए मूल्य चुभता नही है ।

केवल आनन्द जोशी

दैनिक स्पष्ट ग्रह

इस पंचांग में यहाँ नीचे सूर्य, चन्द, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र विकला पर्यन्त और शनि, राहु, हर्षल तथा नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये हैं। ये दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम ५ बजकर ३० मिनट के हैं। इन स्पष्ट ग्रहों के प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है कि जैसे भारत में कहीं भी किसी दिन स्टैण्डर्ड टाइम दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो प्रातः घंटा ५ मिनट ३० से मध्यान्होत्तर घं. १४।४५ तक घं. ९।१५ हुए। यह घण्टात्मक धनचालन हुआ। इस चालन को २॥ से गुणा करने पर २ ३।७।३० घटी, पल, विपलात्मक चालन बन गया। इस चालन द्वारा दैनिक ग्रहगति को त्रैराशिक या गोमूत्रिका क्रम से गुणा करके कलादिफल को मार्गी ग्रह में जोड़ने से तथा वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होगा। राहु स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने पर केतु स्पष्ट हो जाता है। अतएव यहाँ केतु को अलग नहीं लिखा है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने की विधि यह है कि जिस दिन की गति स्पष्ट करनी है, उस दिन के राश्यादि ग्रह को अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटा दें, जो शेष रहे, वह उस दिन की गति होगी। यह चान्द्र वर्ष १९ मार्च १९८८ से प्रारंभ होकर ६ अप्रैल १९८९ को समाप्त हो रहा है अतः यहाँ १९ मार्च ८८ से ६ अप्रैल ८९ तक के दैनिक ग्रह स्पष्ट नीचे दिये जा रहे हैं।

मार्च सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।३४" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१८/५० वक्री

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. मार्च
१९	११।०४।५४।४६	११।१७।३२।४६	८।२३।३३।४३	१०।०९।४४।०२	०।०८।३१।१६	०।२०।०७।२६	८।०८।२५	१०।२९।२१	८।७।१४	८।१६।२१	१९
२०	११।०५।५४।२५	००।०२।०४।४३	८।२४।१४।१३	१०।११।०६।४३	०।०८।४४।२८	०।२१।११।३७	८।०८।२८	१०।२९।१८	८।७।१५	८।१६।२२	२०
२१	११।०६।५४।०२	००।१६।१४।०१	८।२४।५४।४३	१०।१२।३०।५५	०।०८।५७।४३	०।२२।१५।३७	८।०८।३०	१०।२९।१४	८।७।१५	८।१६।२२	२१
२२	११।०७।५३।३७	००।२९।५७।३८	८।२५।३५।१३	१०।१३।५६।४३	०।०९।११।०१	०।२३।१९।१९	८।०८।३२	१०।२९।११	८।७।१६	८।१६।२३	२२
२३	११।०८।५३।१०	०१।१३।१५।०२	८।२६।१५।४४	१०।१५।२४।०१	०।०९।२४।२३	०।२४।२२।४३	८।०८।३४	१०।२९।०८	८।०७।१७	८।१६।२४	२३
२४	११।०९।५२।४०	०१।२६।०७।४०	८।२६।५६।१०	१०।१६।५२।४३	०।०९।३७।४७	०।२५।२५।४३	८।०८।३५	१०।२९।०५	८।०७।१७	८।१६।२४	२४
२५	११।१०।५२।०८	०२।०८।३८।४२	८।२७।३६।३८	१०।१८।२२।४९	०।०९।५१।१४	०।२६।२८।२५	८।०८।३७	१०।२९।०२	८।०७।१८	८।१६।२५	२५
२६	११।११।५१।३४	०२।२०।५२।११	८।२८।१७।०६	१०।१९।५४।२५	०।१०।०४।४४	०।२७।३०।४९	८।०८।३९	१०।२८।५८	८।०७।१९	८।१६।२६	२६
२७	११।१२।५०।५८	०३।०२।५२।४१	८।२८।५७।३४	१०।२१।२७।१९	०।१०।१८।१७	०।२८।३२।४९	८।०८।४०	१०।२८।५५	८।०७।१९	८।१६।२६	२७
२८	११।१३।५०।१९	०३।१४।४४।५२	८।२९।३८।०१	१०।२३।०१।४३	०।१०।३१।५३	०।२९।३४।३१	८।०८।४२	१०।२८।५२	८।०७।२०	८।१६।२७	२८
२९	११।१४।४९।३८	०३।२६।३३।१३	९।००।१८।२८	१०।२४।३७।२४	०।१०।४५।३०	१।००।३५।४८	८।०८।४३	१०।२८।४९	८।०७।२०	८।१६।२७	२९
३०	११।१५।४८।५४	०४।०८।२१।५०	९।००।५८।५४	१०।२६।१४।३५	०।१०।५९।१०	१।०१।३६।४२	८।०८।४४	१०।२८।४६	८।०७।२०	८।१६।२७	३०
३१	११।१६।४८।०८	०४।२०।१४।२०	९।०१।३९।२०	१०।२७।५३।०६	०।११।१२।५३	१।०२।३७।१८	८।०८।४५	१०।२८।४३	८।०७।२१	८।१६।२८	३१

अप्रैल सन् १९८९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा २३°।४२'।३०" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६।२०।५८ वक्री

ता. अप्रैल	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. अप्रैल
१	११।१७।३१।५४	०९।०६।५९।५५	१।१८।५४।२८	११।१३।४९।४८	१।०९।४५।१२	११।१६।३०।५२	८।१९।५०	१०।०९।१९	८।११।३६	८।१८।३८	१
२	११।१८।३१।०६	०९।२०।५६।१२	१।१९।३१।१८	११।१५।४९।५४	१।०९।५६।१८	११।१७।४५।२४	८।१९।५२	१०।०९।१५	८।११।३६	८।१८।३८	२
३	११।१९।३०।१६	१०।०५।१८।०४	१।२०।०८।१२	११।१७।५१।०१	१।१०।०७।२४	११।१८।५९।५४	८।१९।५४	१०।०९।१२	८।११।३७	८।१८।३९	३
४	११।२०।२९।२५	१०।२०।०३।२०	१।२०।४५।०५	११।१९।५३।०७	१।१०।१८।४१	११।२०।१४।२३	८।१९।५५	१०।०९।०९	८।११।३७	८।१८।३९	४
५	११।२१।२८।३२	११।०५।०६।५५	१।२१।२६।५९	११।२१।५७।१४	१।१०।३०।०५	११।२१।२८।४७	८।१९।५७	१०।०९।०६	८।११।३७	८।१८।३९	५
६	११।२२।२७।३७	११।२०।२०।३३	१।२१।५८।५३	११।२४।००।११	१।१०।४१।२९	११।२२।४३।१७	८।१९।५९	१०।०९।०३	८।११।३७	८।१८।४०	६

अप्रैल सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा २३°।४१'।३६" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६।१८।१९ वक्री

ता. अप्रैल	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरू रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. अप्रैल
१	११।१७।४७।२१	०५।०२।१३।४३	९।०२।१९।४६	१०।२९।३३।०१	०।११।२६।३९	१।०३।३७।२४	८।०८।४७	१०।२८।३९	८।०७।२१	८।१६।२८	१
२	११।१८।४६।३१	०५।१४।२२।१५	९।०३।००।१२	११।०१।१४।२५	०।११।४०।२६	१।०४।३७।०६	८।०८।४७	१०।२८।३६	८।०७।२१	८।१६।२९	२
३	११।१९।४५।३९	०५।२६।४१।४९	९।०३।४०।३७	११।०२।५७।०६	०।११।५४।१५	१।०५।३६।१८	८।०८।४८	१०।२८।३३	८।०७।२१	८।१६।२९	३
४	११।२०।४४।४५	०६।०९।१३।३६	९।०४।२१।०१	११।०४।४१।१८	०।१२।०८।०६	१।०६।३५।१२	८।०८।४९	१०।२८।३०	८।०७।२१	८।१६।२९	४
५	११।२१।४३।५०	०६।२१।५८।२४	९।०५।०१।२४	११।०६।२६।५४	०।१२।२२।००	१।०७।३३।३०	८।०८।५०	१०।२८।२७	८।०७।२१	८।१६।३०	५
६	११।२२।४२।५२	०७।०४।५६।४३	९।०५।४१।४७	११।०८।१४।०१	०।१२।३५।५५	१।०८।३१।२४	८।०८।५०	१०।२८।२३	८।०७।२१	८।१६।३०	६
७	११।२३।४१।५२	०७।१८।०८।४९	९।०६।२२।०९	११।१०।०२।२४	०।१२।४९।५१	१।०९।२८।४८	८।०८।५१	१०।२८।२०	८।०७।२१	८।१६।३०	७
८	११।२४।४०।५०	०८।१।३५।००	९।०७।०२।३०	११।११।५२।२३	०।१३।०३।४९	१।१०।२५।४१	८।०८।५१	१०।२८।१७	८।०७।२१	८।१६।३०	८
९	११।२५।३९।४७	०८।१५।१५।१९	९।०७।४२।५१	११।१३।४३।५३	०।१३।१७।४९	१।११।२२।०५	८।०८।५१	१०।२८।१४	८।०७।२१	८।१६।३०	९
१०	११।२६।३८।४३	०८।२९।०९।३७	९।०८।२३।११	११।१५।३६।४७	०।१३।३१।५१	१।१२।१७।५३	८।०८।५१	१०।२८।११	८।०७।२०	८।१६।३०	१०
११	११।२७।३७।३७	०९।१३।१७।१९	९।०९।०३।३१	११।१७।३१।११	०।१३।४५।५५	१।१३।१३।११	८।०८।५१	१०।२८।०८	८।०७।२०	८।१६।३०	११
१२	११।२८।३६।२८	०९।२७।३७।०५	९।०९।४३।५०	११।१९।२७।०५	०।१४।००।०१	१।१४।०७।५९	८।०८।५१	१०।२८।०४	८।०७।२०	८।१६।३०	१२
१३	११।२९।३५।१८	१०।१२।०६।२६	९।१०।२४।०८	११।२१।२४।२३	०।१४।१४।०९	१।१५।०२।०५	८।०८।५१	१०।२८।०१	८।०७।२०	८।१६।३०	.१३
१४	००।००।३४।०७	१०।२६।४१।४१	९।११।०४।२४	११।२३।२३।११	०।१४।२८।१८	१।१५।५५।४१	८।०८।५१	१०।२७।५८	८।०७।१९	८।१६।३०	१४
१५	००।०१।३२।५३	११।११।१७।४६	९।११।४४।३८	११।२५।२३।१७	०।१४।४२।२९	१।१६।४८।३५	८।०८।५१	१०।२७।५५	८।०७।१९	८।१६।३०	१५
१६	००।०२।३१।३८	११।२५।४८।४९	९।१२।२४।५०	११।२७।२४।४७	०।१४।५६।४१	१।१७।४०।३७	८।०८।५०	१०।२७।५२	८।०७।१८	८।१६।३०	१६
१७	००।०३।३०।२०	००।१०।०८।३८	९।१३।०५।०३	११।२९।२७।३४	०।१५।१०।५४	१।१८।३२।२२	८।०८।५०	१०।२७।४८	८।०७।१७	८।१६।३०	१७
१८	००।०४।२९।०१	००।२४।११।४२	९।१३।४५।१३	००।०१।३१।४०	०।१५।२५।०८	१।१९।२३।१६	८।०८।४९	१०।२७।४५	८।०७।१७	८।१६।२९	१८
१९	००।०५।२७।४०	०१।०७।५३।५१	९।१४।२५।२०	००।०३।३६।४६	०।१५।३९।२३	१।२०।१३।२२	८।०८।४८	१०।२७।४२	८।०७।१६	८।१६।२९	१९
२०	००।०६।२६।१६	०१।२१।१२।५१	९।१५।०५।२५	००।०५।४२।५८	०।१५।५३।३८	१।२१।०२।४६	८।०८।४८	१०।२७।३९	८।०७।१५	८।१६।२९	२०
२१	००।०७।२४।५१	०२।०४।०८।३२	९।१५।४५।२८	००।०७।४९।५२	०।१६।०७।५४	१।२१।५१।२८	८।०८।४७	१०।२७।३६	८।०७।१४	८।१६।२९	२१
२२	००।०८।२३।२३	०२।१६।४२।३९	९।१६।२५।३०	००।०९।५७।३४	०।१६।२२।१०	१।२२।३९।११	८।०८।४६	१०।२७।३३	८।०७।१४	८।१६।२८	२२
२३	००।०९।२१।५४	०२।२८।५८।२६	९।१७।०५।३०	००।१२।०५।३४	०।१६।३६।२८	१।२३।२६।१०	८।०८।४५	१०।२७।२९	८।०७।१३	८।१६।२८	२३
२४	००।१०।२०।२२	०३।११।००।१२	९।१७।४५।२८	००।१४।१३।५१	०।१६।५०।४६	१।२४।१२।१३	८।०८।४३	१०।२७।२६	८।०७।१२	८।१६।२८	२४
२५	००।११।१८।४८	०३।२२।५२।५२	९।१८।२५।२४	००।१६।२२।०९	०।१७।०५।०४	१।२४।५७।२२	८।०८।४२	१०।२७।२३	८।०७।११	८।१६।२७	२५
२६	००।१२।१७।१२	०४।०४।४१।३३	९।१९।०५।१६	००।१८।३०।०३	०।१७।१९।२२	१।२५।४१।२७	८।०८।४१	१०।२७।२०	८।०७।१०	८।१६।२७	२६
२७	००।१३।१५।३३	०४।१६।३१।२१	९।१९।४५।०६	००।२०।३७।२१	०।१७।३३।४०	१।२६।२४।३९	८।०८।३९	१०।२७।१७	८।०७।०९	८।१६।२६	२७
२८	००।१४।१३।५३	०४।२८।२६।५८	९।२०।२४।५५	००।२२।४३।४५	०।१७।४७।५८	१।२७।०६।५१	८।०८।३८	१०।२७।१३	८।०७।०८	८।१६।२६	२८
२९	००।१५।१२।११	०५।१०।३२।२९	९।२१।०४।४३	००।२४।४८।५७	०।१८।०२।१६	१।२७।४७।५४	८।०८।३६	१०।२७।१०	८।०७।०६	८।१६।२५	२९
३०	००।१६।१०।२६	०५।२२।५१।१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८।०७।०५	८।१६।२५	३०

मई सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के. दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।३४" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१७/३१ वक्री

ता. मई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरू रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता. मई
१	०।१७।०८।३९	०६।०५।२५।२२	०९।२२।२४।१५	०।२९।५४।२८	०।१८।३०।५३	१।२९।०६।३९	८।०८।३२	१०।२७।०४	८।०७।०४	८।१६।२४	१
२	०।१८।०६।५१	०६।१८।१६।०१	०९।२३।०३।५७	१।००।५४।०९	०।१८।४५।१२	१।२९।४४।१५	८।०८।३०	१०।२७।०१	८।०७।०३	८।१६।२३	२
३	०।१९।०५।०२	०७।०१।२३।०२	०९।२३।४३।३७	१।०२।५१।४३	०।१८।५९।३१	२।००।२०।३३	८।०८।२८	१०।२६।५८	८।०७।०१	८।१६।२३	३
४	०।२०।०३।११	०७।१४।४५।१४	०९।२४।२३।१४	१।४।४६।१५	०।१९।१३।५०	२।००।५५।३९	८।०८।२६	१०।२६।५४	८।०७।००	८।१६।२२	४
५	०।२१।०१।१८	०७।२८।२०।३६	०९।२५।०२।४८	१।०६।३८।१७	०।१९।२८।०९	२।०१।२९।२१	८।०८।२४	१०।२६।५१	८।०६।५९	८।१६।२१	५
६	०।२१।५९।२३	०८।१२।०६।४४	०९।२५।४२।१९	१।०८।२७।०९	०।१९।४२।२८	२।०२।०१।३९	८।०८।२२	१०।२६।४८	८।०६।५७	८।१६।२१	६
७	०।२२।५७।२७	०८।२६।०१।१५	०९।२६।२१।४६	१।१०।१२।५६	०।१९।५६।४७	२।०२।३२।३८	८।०८।१९	१०।२६।४५	८।०६।५६	८।१६।२०	७
८	०।२३।५५।३०	०९।१०।०२।०५	०९।२७।०१।१०	१।११।५५।२०	०।२०।११।०६	२।०३।०२।०२	८।०८।१७	१०।२६।४२	८।०६।५४	८।१६।१९	८
९	०।२४।५३।३१	०९।२४।०७।३७	०९।२७।४०।३२	१।१३।३४।२०	०।२०।२५।२४	२।०३।२९।५०	८।०८।१४	१०।२६।३८	८।०६।५३	८।१६।१८	९
१०	०।२५।५१।३१	१०।०८।१६।३५	०९।२८।१९।५०	१।१५।०९।५०	०।२०।३९।४२	२।०३।५६।०८	८।०८।१२	१०।२६।३५	८।०६।५१	८।१६।१७	१०
११	०।२६।४९।३०	१०।२२।२७।४४	०९।२८।५९।०४	१।१६।४१।४४	०।२०।५४।००	२।०४।२०।४४	८।०८।०९	१०।२६।३२	८।०६।४९	८।१६।१६	११
१२	०।२७।४७।२८	११।०६।३९।२९	०९।२९।३८।१४	१।१८।०९।५०	०।२१।०८।१८	२।०४।४३।३८	८।०८।०६	१०।२६।२९	८।०६।४८	८।१६।१६	१२
१३	०।२८।४५।२४	११।२०।४९।३४	१०।००।१७।२०	१।१९।३४।२०	०।२१।२२।३५	२।०५।०४।४४	८।०८।०३	१०।२६।२६	८।०६।४६	८।१६।१५	१३
१४	०।२९।४३।१८	००।०४।५४।५५	१०।००।५६।२२	१।२०।५४।५६	०।२१।३६।५२	२।०५।२४।०२	८।०८।००	१०।२६।२३	८।०६।४४	८।१६।१४	१४
१५	१।००।४१।११	००।१८।५१।४८	१०।०१।३५।२०	१।२२।११।४३	०।२१।५१।०६	२।०५।४१।२५	८।०७।५७	१०।२६।१९	८।०६।४२	८।१६।१३	१५
१६	१।०१।३९।०३	०१।०२।३६।१९	१०।०२।१४।१४	१।२३।२४।३१	०।२२।०५।१६	२।०५।५६।५५	८।०७।५४	१०।२६।१६	८।०६।४१	८।१६।१२	१६
१७	१।०२।३६।५४	०१।१६।०४।५६	१०।०२।५३।०४	१।२४।३३।१९	०।२२।१९।२५	२।०६।१०।१९	८।०७।५१	१०।२६।१३	८।०६।३९	८।१६।११	१७
१८	१।०३।३४।४३	०१।२९।५०।०७	१०।०३।३१।५०	१।२५।३८।०७	०।२२।३३।३१	२।०६।२१।४३	८।०७।४८	१०।२६।१०	८।०६।३७	८।१६।१०	१८
१९	१।०४।३२।३१	०२।१२।०५।५०	१०।०४।१०।३१	१।२६।३८।४९	०।२२।४७।४२	२।०६।३०।५५	८।०७।४५	१०।२६।०७	८।०६।३५	८।१६।०८	१९
२०	१।०५।३०।१७	०२।२४।३४।३३	१०।०४।४९।०७	१।२७।३५।१९	०।२३।०१।५१	२।०६।३७।५६	८।०७।४१	१०।२६।०४	८।०६।३३	८।१६।०७	२०
२१	१।०६।२८।०२	०३।०६।५२।३०	१०।०५।२७।३७	१।२८।२७।३७	०।२३।१६।०१	२।०६।४२।४३	८।०७।३८	१०।२६।००	८।०६।३१	८।१६।०६	२१
२२	१।०७।२५।४४	०३।१८।५४।०४	१०।०६।०६।०१	१।२९।१५।३६	०।२३।३०।०६	२।०६।४५।१२	८।०७।३५	१०।२५।५७	८।०६।२९	८।१६।०५	२२
२३	१।०८।२३।२५	०४।००।४६।४३	१०।०६।४४।१८	१।२९।५९।१२	०।२३।४४।०९	२।०६।४५।१८	८।०७।३१	१०।२५।५४	८।०६।२७	८।१६।०४	२३
२४	१।०९।२१।०५	०४।१२।३५।३३	१०।०७।२२।३०	२।००।३८।१८	०।२३।५८।१२	२।०६।४३।०६	८।०७।२७	१०।२५।५१	८।०६।२५	८।१६।०३	२४
२५	१।१०।१८।४३	०४।२४।२५।५५	१०।०८।००।३७	२।०१।१२।५४	०।२४।१२।१२	२।०६।३८।२४	८।०७।२४	१०।२५।४८	८।०६।२३	८।१६।०१	२५
२६	१।११।१६।२०	०५।०६।२३।१४	१०।०८।३८।४०	२।०१।४३।००	०।२४।२६।१०	२।०६।३१।२०	८।०७।२०	१०।२५।४४	८।०६।२१	८।१६।००	२६
२७	१।१२।१३।५६	०५।१८।३२।३५	१०।०९।१६।४०	२।०२।१०।२४	०।२४।४०।०६	२।०६।२१।५४	८।०७।१६	१०।२५।४१	८।०६।१८	८।१५।५९	२७
२८	१।१३।११।३०	०६।००।५८।१३	१०।०९।५४।३४	२।०२।२९।१२	०।२४।५४।००	२।०६।०९।५१	८।०७।१२	१०।२५।३८	८।०६।१६	८।१५।५८	२८
२९	१।१४।०९।०१	०६।१३।४३।१९	१०।१०।३२।२०	२।०२।४५।१३	०।२५।०७।५३	२।०५।५५।२९	८।०७।०९	१०।२५।३५	८।०६।१४	८।१५।५६	२९
३०	१।१५।०६।३२	०६।२६।४९।३[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२।०५।३८।४९	८।०७।०५	१०।२५।३२	८।०६।१२	८।१५।५५	३०
३१	१।१६।०४।०३	०७।१०।१६।५२	१०।११।४७।२९	२।०३।०३।१७	०।२५।३५।३५	२।०५।१९।३४	८।०७।०१	१०।२५।२९	८।०६।१०	८।१५।५४	३१

जून सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।४४" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१६/४२ वक्री

ता. जून	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरू रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता. जून
१	१।१७।०१।३१	०७।२४।०३।०८	१०।१२।२४।५२	०२।०३।०५।१६	०।२५।४९।२३	२।०४।५८।१०	८।०६।५७	१०।२५।२५	८।०६।०७	८।१५।५२	१
२	१।१७।५८।५९	०८।०८।०४।३३	१०।१३।०२।१०	२।०३।०२।४६	०।२६।०३।१०	२।०४।३४।३५	८।०६।५३	१०।२५।२२	८।०६।०५	८।१५।५१	२
३	१।१८।५६।२७	०८।२२।१६।२१	१०।१३।३९।२३	२।०२।५५।५२	०।२६।१६।५२	२।०४।०८।५१	८।०६।४९	१०।२५।१९	८।०६।०३	८।१५।५०	३
४	१।१९।५३।५३	०९।०६।३३।२८	१०।१४।१६।२८	२।०२।४४।४०	०।२६।३०।३४	२।०३।४१।१०	८।०६।४५	१०।२५।१६	८।०६।००	८।१५।४८	४
५	१।२०।५१।१९	०९।२०।५१।१९	१०।१४।५३।२७	२।०२।२९।२८	०।२६।४४।१६	२।०३।११।४०	८।०६।४०	१०।२५।१३	८।०५।५८	८।१५।४७	५
६	१।२१।४८।४३	१०।०५।०६।२८	१०।१५।३०।२१	२।०२।१०।३३	०।२६।५७।५१	२।०२।४१।२१	८।०६।३६	१०।२५।०९	८।०५।५६	८।१५।४५	६
७	१।२२।४६।०८	१०।१९।१६।३८	१०।१६।०७।०६	२।०१।४८।०९	०।२७।११।२७	२।०२।०७।३९	८।०६।३२	१०।२५।०६	८।०५।५३	८।१५।४४	७
८	१।२३।४३।३२	११।०३।२०।३५	१०।१६।४३।३९	२।०१।२२।३९	०।२७।२४।५७	२।०१।३३।३४	८।०६।२८	१०।२५।०३	८।०५।५१	८।१५।४२	८
९	१।२४।४०।५६	११।१७।१७।४२	१०।१७।१९।५९	२।००।५४।२८	०।२७।३८।२७	२।००।५८।१५	८।०६।२३	१०।२५।००	८।०५।४९	८।१५।४१	९
१०	१।२५।३८।१८	००।०१।०७।२५	१०।१७।५६।१०	२।००।२४।०९	०।२७।५१।५१	२।००।२२।१०	८।०६।१९	१०।२४।५७	८।०५।४६	८।१५।३९	१०
११	१।२६।३५।४०	००।१४।४८।५८	१०।१८।३२।१६	१।२९।५२।०९	०।२८।०५।१५	१।२९।४५।२०	८।०६।१५	१०।२४।५४	८।०५।४४	८।१५।३८	११
१२	१।२७।३३।००	००।२८।२९।०५	१०।१९।०८।१५	१।२९।१९।०२	०।२८।१८।३२	१।२९।०८।०२	८।०६।११	१०।२४।५०	८।०५।४१	८।१५।३६	१२
१३	१।२८।३०।२२	०१।११।४२।०४	१०।१९।४४।०८	१।२८।४५।२०	०।२८।३१।५०	१।२८।३०।२६	८।०६।०६	१०।२४।४७	८।०५।३९	८।१५।३५	१३
१४	१।२९।२७।४२	०१।२४।५०।०६	१०।२०।१९।४६	१।२८।११।३८	०।२८।४५।०८	१।२७।५२।५६	८।०६।०२	१०।२४।४४	८।०५।३७	८।१५।३३	१४
१५	२।००।२५।०२	०२।०७।४३।३९	१०।२०।५५।१२	१।२७।३८।३२	०।२८।५८।२०	१।२७।१५।३८	८।०५।५७	१०।२४।४१	८।०५।३४	८।१५।३२	१५
१६	२।०१।२२।२१	०२।२०।२९।५५	१०।२१।३०।२६	१।२७।०६।३२	०।२९।११।२६	१।२६।३८।५०	८।०५।५३	१०।२४।३८	८।०५।३२	८।१५।३०	१६
१७	२।०२।१९।४०	०३।०२।४५।०७	१०।२२।०५।२६	१।२६।३६।१४	०।२९।२४।३२	१।२६।०२।४४	८।०५।४९	१०।२४।३४	८।०५।२९	८।१५।२९	१७
१८	२।०३।१६।५८	०३।१४।५४।३८	१०।२२।४०।२०	१।२६।०८।१४	०।२९।३७।३८	१।२५।२७।३८	८।०५।४४	१०।२४।३१	८।०५।२७	८।१५।२७	१८
१९	२।०४।१४।१४	०३।२६।५३।०१	१०।२३।१५।०१	१।२५।४२।४९	०।२९।५०।३१	१।२४।५३।३१	८।०५।४०	१०।२४।२८	८।०५।२४	८।१५।२५	१९
२०	२।०५।११।३१	०४।०८।४३।५२	१०।२३।४९।३१	१।२५।२०।३१	१।००।०३।३२	१।२४।२०।४९	८।०५।३५	१०।२४।२५	८।०५।२२	८।१५।२४	२०
२१	२।०६।०८।४६	०४।२०।३९।३६	१०।२४।२३।४९	१।२५।०१।४३	१।००।१६।१९	१।२३।४९।३७	८।०५।३१	१०।२४।२२	८।०५।१९	८।१५।२२	२१
२२	२।०७।०६।०१	०५।०२।२९।१८	१०।२४।५७।५५	१।२४।४६।४९	१।००।२९।०७	१।२३।२०।०८	८।०५।२६	१०।२४।१९	८।०५।१७	८।१५।२१	२२
२३	२।०८।०३।१५	०५।१४।१८।२४	१०।२५।३१।४३	१।२४।३५।५५	१।००।४१।४९	१।२२।५२।३०	८।०५।२२	१०।२४।१५	८।०५।१५	८।१५।१९	२३
२४	२।०९।००।२९	०५।२६।२८।१९	१०।२६।०५।२१	१।२४।२९।१९	१।००।५४।३१	१।२२।२६।४९	८।०५।१८	१०।२४।१२	८।०५।१२	८।१५।१७	२४
२५	२।०९।५७।४२	०६।०८।५६।०६	१०।२६।३८।४८	१।२४।२७।१८	१।०१।०७।०६	१।२२।०३।०५	८।०५।१३	१०।२४।०९	८।०५।१०	८।१५।१६	२५
२६	२।१०।५४।५४	०६।२१।४५।५३	१०।२७।१२।००	१।२४।२९।५४	१।०१।१९।४२	१।२१।४१।४१	८।०५।०९	१०।२४।०६	८।०५।०७	८।१५।१४	२६
२७	२।११।५२।०६	०७।०५।००।२१	१०।२७।४५।०२	१।२४।३७।१२	१।०१।३२।०६	१।२१।२२।२४	८।०५।०४	१०।२४।०३	८।०५।०५	८।१५।१३	२७
२८	२।१२।४९।१८	०७।१८।४०।१३	१०।२८।१७।४२	१।२४।४९।२४	१।०१।४४।३०	१।२१।०५।३०	८।०५।००	१०।२३।५९	८।०५।०२	८।१५।११	२८
२९	२।१३।४६।२९	०८।०२।४३।४३	१०।२८।५०।१२	१।२५।०६।१८	१।०१।५६।५४	१।२०।५१।०१	८।०४।५६	१०।२३।५६	८।०५।००	८।१५।०९	२९
३०	२।१४।४३।४०	०८।१७।०६।३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८।०४।५८	८।१५।०८	३०

जुलाई सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।४९" मासारंभे यॆंकटेश (प्लूटो) ६/१६/१० वक्री

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	जुलाई
१	२।१५।४०।५१	०९।०१।४२।४०	१०।२९।५४।२३	१।२५।५४।५३	१।०२।२१।१७	१।२०।२८।५९	८।०४।४७	१०।२३।५०	८।०४।५५	८।१५।०६	१
२	२।१६।३८।०२	०९।१६।२४।३६	११।००।२६।०५	१।२६।२६।२३	१।०२।३३।२९	१।२०।२१।४१	८।०४।४३	१०।२३।४७	८।०४।५३	८।१५।०५	२
३	२।१७।३५।१२	१०।०१।०५।१२	११।००।५७।३४	१।२७।०२।३४	१।०२।४५।२८	१।२०।१६।४६	८।०४।३८	१०।२३।४४	८।०४।५०	८।१५।०३	३
४	२।१८।३२।२३	१०।१५।३८।३७	११।०१।२८।४६	१।२७।४३।४०	१।०२।५७।२६	१।२०।१४।१०	८।०४।३४	१०।२३।४०	८।०४।४८	८।१५।०१	४
५	२।१९।२९।३४	११।००।००।३९	११।०१।५९।३४	१।२८।२९।२२	१।०३।०९।२२	१।२०।१३।५८	८।०४।३०	१०।२३।३७	८।०४।४६	८।१५।००	५
६	२।२०।२६।४६	११।१४।०८।५९	११।०२।३०।१०	१।२९।१९।४०	१।०३।२१।११	१।२०।१६।०४	८।०४।२६	१०।२३।३४	८।०४।४३	८।१४।५८	६
७	२।२१।२३।५८	११।२८।०२।४५	११।०३।००।२८	२।००।१४।३४	१।०३।३२।५२	१।२०।२०।२८	८।०४।२१	१०।२३।३१	८।०४।४१	८।१४।५६	७
८	२।२२।२१।११	००।११।४२।०८	११।०३।३०।२२	२।०१।१४।०४	१।०३।४४।३४	१।२०।२७।०४	८।०४।१७	१०।२३।२८	८।०४।३९	८।१४।५५	८
९	२।२३।१८।२३	००।२५।०७।४२	११।०३।५९।५८	२।०२।१७।५८	१।०३।५६।०४	१।२०।३५।४६	८।०४।१३	१०।२३।२५	८।०४।३६	८।१४।५३	९
१०	२।२४।१५।३६	०१।०८।२०।०२	११।०४।२९।१५	२।०३।२६।१५	१।०४।०७।३३	१।२०।४६।३९	८।०४।०९	१०।२३।२१	८।०४।३४	८।१४।५२	१०
११	२।२५।१२।५०	०१।२१।१९।३६	११।०४।५८।०९	२।०४।३८।५७	१।०४।१८।५७	१।२०।५९।३८	८।०४।०५	१०।२३।१८	८।०४।३२	८।१४।५०	११
१२	२।२६।१०।०४	०२।०४।०६।४१	११।०५।२६।४५	२।०५।५५।५१	१।०४।३०।१५	१।२१।१४।३३	८।०४।०१	१०।२३।१५	८।०४।३०	८।१४।४८	१२
१३	२।२७।०७।१८	०२।१६।४१।२५	११।०५।५४।५७	२।०७।१७।०३	१।०४।४१।३२	१।२१।३१।२७	८।०३।५७	१०।२३।१२	८।०४।२७	८।१४।४७	१३
१४	२।२८।०४।३३	०२।२९।०४।०६	११।०६।२२।४५	२।०८।४२।२१	१।०४।५२।३९	१।२१।५०।०९	८।०३।५३	१०।२३।०९	८।०४।२५	८।१४।४५	१४
१५	२।२९।०१।४८	०३।११।१५।२७	११।०६।५०।१२	२।१०।११।३९	१।०५।०३।३९	१।२२।१०।३९	८।०३।५०	१०।२३।०५	८।०४।२३	८।१४।४४	१५
१६	२।२९।५९।०३	०३।२३।१६।४५	११।०७।१७।१५	२।११।४४।५७	१।०५।१४।३७	१।२२।३२।५७	८।०३।४६	१०।२३।०२	८।०४।२१	८।१४।४२	१६
१७	३।००।५६।१८	०४।०५।१०।०१	११।०७।४३।५०	२।१३।२२।०३	१।०५।२५।२६	१।२२।५६।५०	८।०३।४२	१०।२२।५९	८।०४।१९	८।१४।४१	१७
१८	३।०१।५३।३३	०४।१६।५८।०४	११।०८।१०।०२	२।१५।०२।५०	१।०५।३६।१०	१।२३।२२।२६	८।०३।३९	१०।२२।५६	८।०४।१७	८।१४।३९	१८
१९	३।०२।५०।४९	०४।२८।४४।२४	११।०८।३५।५०	२।१६।४७।१४	१।०५।४६।५०	१।२३।४९।३८	८।०३।३५	१०।२२।५३	८।०४।१५	८।१४।३७	१९
२०	३।०३।४८।०५	०५।१०।३३।३०	११।०९।०१।०८	२।१८।३४।५०	१।०५।५७।२१	१।२४।१८।१४	८।०३।३१	१०।२२।४९	८।०४।१३	८।१४।३६	२०
२१	३।०४।४५।२२	०५।२२।२९।५४	११।०९।२६।०२	२।२०।२५।४४	१।०६।०७।४६	१।२४।४८।२०	८।०३।२८	१०।२२।४६	८।०४।११	८।१४।३४	२१
२२	३।०५।४२।३९	०६।०४।३८।४६	११।०९।५०।३१	२।२२।१९।२६	१।०६।१८।०६	१।२५।१९।५०	८।०३।२५	१०।२२।४३	८।०४।०९	८।१४।३३	२२
२३	३।०६।३९।५६	०६।१७।०५।११	११।१०।१४।३२	२।२४।१५।५०	१।०६।२८।२०	१।२५।५२।४४	८।०३।२१	१०।२२।४०	८।०४।०७	८।१४।३१	२३
२४	३।०७।३७।१३	०६।२९।५३।४९	११।१०।३८।००	२।२६।१४।३१	१।०६।३८।२८	१।२६।२६।५५	८।०३।१८	१०।२२।३७	८।०४।०५	८।१४।३०	२४
२५	३।०८।३४।३०	०७।१३।०८।०८	११।११।०१।०२	२।२८।१५।१९	१।०६।४८।३१	१।२७।०२।१९	८।०३।१५	१०।२२।३४	८।०४।०३	८।१४।२९	२५
२६	३।०९।३१।४८	०७।२६।५०।०९	११।११।२३।३८	३।००।१७।४३	१।०६।५८।२५	१।२७।३९।०१	८।०३।१२	१०।२२।३०	८।०४।०१	८।१४।२७	२६
२७	३।१०।२९।०७	०८।१०।५९।२०	११।११।४५।३७	३।०२।२१।३७	१।०७।०८।१३	१।२८।१६।४९	८।०३।०९	१०।२२।२७	८।०३।५९	८।१४।२६	२७
२८	३।११।२६।२६	०८।२५।३२।२६	११।१२।०७।०७	३।०४।२६।३१	१।०७।१७।४९	१।२८।५५।४५	८।०३।०६	१०।२२।२४	८।०३।५८	८।१४।२४	२८
२९	३।१२।२३।४६	०९।१०।२३।२५	११।१२।२८।०७	३।०६।३२।०७	१।०७।२७।२५	१।२९।३५।४९	८।०३।०३	१०।२२।२१	८।०३।५६	८।१४।२३	२९
३०	३।१३।२१।०६	०९।२५।२४।१२	११।१२।४८।३८	३।०८।३८।०६	१।०७।३६।४४	२।००।१६।५६	८।०३।००	१०।२२।१८	८।०३।५४	८।१४।२२	३०
३१	३।१४।१८।२७	१०।१०।२५।५५	११।१३।१८।३०	३।१०।४४।१७	१।०७।४६।१२	२।००।५९।००	८।०२।५७	१०।२२।१५	८।०३।५२	८।१४।२१	३१

अगस्त सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।५४" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१६/०६ वक्री

ता. अगस्त	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरू रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता. अगस्त
१	३।१५।१५।५०	१०।२५।२०।०९	११।१३।२७।४८	३।१३।५०।१८	१।०७।५५।२४	२।०१।४२।०६	८।०२।५४	१०।२२।११	८।०३।५१	८।१४।१९	१
२	३।१६।१३।१३	११।१०।००।१४	११।१३।४६।३६	३।१४।५५।४८	१।०८।०४।३०	२।०२।२६।१०	८।०२।५२	१०।२२।०८	८।०३।४९	८।१४।१७	२
३	३।१७।१०।३८	११।२४।२१।४०	११।१४।०४।४२	३।१७।००।५१	१।०८।१३।२४	२।०३।११।०८	८।०२।४९	१०।२२।०५	८।०३।४८	८।१४।१६	३
४	३।१८।०८।०३	००।०८।२२।१९	११।१४।२२।१८	३।१९।०५।०१	१।०८।२२।१८	२।०३।५६।५६	८।०२।४७	१०।२२।०२	८।०३।४६	८।१४।१५	४
५	३।१९।०५।२९	००।२२।०१।५२	११।१४।३९।१२	३।२१।०८।११	१।०८।३०।५९	२।०४।४३।३५	८।०२।४४	१०।२१।५९	८।०३।४५	८।१४।१४	५
६	३।२०।०२।५८	०१।०५।२१।१९	११।१४।५५।२३	३।२३।१०।२३	१।०८।३९।३५	२।०५।३१।०८	८।०२।४२	१०।२१।५५	८।०३।४३	८।१४।१२	६
७	३।२१।००।२७	०१।१८।२२।२६	११।१५।१०।५९	३।२५।११।१७	१।०८।४७।५९	२।०६।१९।१५	८।०२।४०	१०।२१।५२	८।०३।४२	८।१४।११	७
८	३।२१।५७।५८	०२।०१।०७।१६	११।१५।२५।५३	३।२७।१०।५९	१।०८।५६।१७	२।०७।०८।२३	८।०२।३८	१०।२१।४९	८।०३।४०	८।१४।१०	८
९	३।२२।५५।३०	०२।१३।३८।०१	११।१५।४०।११	३।२९।०९।२३	१।०९।०४।२९	२।०७।५७।५८	८।०२।३६	१०।२१।४६	८।०३।३९	८।१४।०९	९
१०	३।२३।५३।०३	०२।२५।५६।४२	११।१५।५३।४०	४।०१।०६।१६	१।०९।१२।३४	२।०८।४८।२३	८।०२।३४	१०।२१।४३	८।०३।३८	८।१४।०८	१०
११	३।२४।५०।३८	०३।०८।०५।०९	११।१६।०६।२८	४।०३।०१।४६	१।०९।२०।२८	२।०९।३९।२८	८।०२।३२	१०।२१।४०	८।०३।३६	८।१४।०६	११
१२	३।२५।४८।१४	०३।२०।०५।१०	११।१६।१८।३४	४।०४।५५।५२	१।०९।२८।१६	२।१०।३१।१६	८।०२।३०	१०।२१।३६	८।०३।३५	८।१४।०५	१२
१३	३।२६।४५।५१	०४।०१।५८।३३	११।१६।२९।५२	४।०६।४८।२८	१।०९।३५।५२	२।११।२३।३४	८।०२।२८	१०।२१।३३	८।०३।३४	८।१४।०४	१३
१४	३।२७।४३।२८	०४।१३।४७।१८	११।१६।४०।२७	४।०८।३९।३३	१।०९।४३।२१	२।१२।१६।३३	८।०२।२६	१०।२१।३०	८।०३।३३	८।१४।०३	१४
१५	३।२८।४१।०८	०४।२५।३३।४६	११।१६।५०।२१	४।१०।२९।०९	१।०९।५०।३९	२।१३।१०।०३	८।०२।२५	१०।२१।२७	८।०३।३२	८।१४।०२	१५
१६	३।२९।३८।४८	०५।०७।२०।४३	११।१६।५९।२१	४।१२।१७।२१	१।०९।५७।५१	२।१४।०४।०९	८।०२।२४	१०।२१।२४	८।०३।३१	८।१४।०१	१६
१७	४।००।३६।३०	०५।१९।११।२२	११।१७।०७।५१	४।१४।०४।०३	१।१०।०४।५२	२।१४।५८।५१	८।०२।२२	१०।२१।२१	८।०३।३०	८।१४।००	१७
१८	४।०१।३४।१३	०६।०१।०९।२४	११।१७।१५।०९	४।१५।४९।२१	१।१०।११।४५	२।१५।५३।५७	८।०२।२१	१०।२१।१७	८।०३।२९	८।१३।५९	१८
१९	४।०२।३१।५७	०६।१३।१४।५४	११।१७।२१।४५	४।१७।३३।०९	१।१०।१८।२७	२।१६।४९।३९	८।०२।२०	१०।२१।१४	८।०३।२८	८।१३।५८	१९
२०	४।०३।२९।४२	०६।२५।४४।१३	११।१७।२७।३९	४।१९।१५।३३	१।१०।२५।०३	२।१७।४५।५१	८।०२।१९	१०।२१।११	८।०३।२७	८।१३।५७	२०
२१	४।०४।२७।२७	०७।०८।२९।३५	११।१७।३२।४४	४।२०।५६।३८	१।१०।३१।३२	२।१८।४२।२६	८।०२।१८	१०।२१।०८	८।०३।२६	८।१३।५६	२१
२२	४।०५।२५।१४	०७।२१।३८।५०	११।१७।३६।५६	४।२२।३६।०८	१।१०।३७।४४	२।१९।३९।३२	८।०२।१७	१०।२१।०५	८।०३।२६	८।१३।५६	२२
२३	४।०६।२३।०३	०८।०५।१४।४२	११।१७।४०।२६	४।२४।१४।२६	१।१०।४३।५०	२।२०।३७।०८	८।०२।१६	१०।२१।०१	८।०३।२५	८।१३।५५	२३
२४	४।०७।२०।५३	०८।१९।१८।०२	११।१७।४३।०२	४।२५।५१।१४	१।१०।४९।५०	२।२१।३५।१०	८।०२।१६	१०।२०।५८	८।०३।२४	८।१३।५४	२४
२५	४।०८।१८।४२	०९।०३।४७।२८	११।१७।४४।४४	४।२७।२६।४४	१।१०।५५।३७	२।२२।३३।३२	८।०२।१५	१०।२०।५५	८।०३।२४	८।१३।५३	२५
२६	४।०९।१६।३४	०९।१८।३८।४५	११।१७।४५।४४	४।२९।००।४९	१।११।०१।१३	२।२३।३२।२६	८।०२।१५	१०।२०।५२	८।०३।२३	८।१३।५२	२६
२७	४।१०।१४।२८	१०।०३।४५।०१	११।१७।४५।४८	५।००।३३।३१	१।११।०६।३७	२।२४।३१।३७	८।०२।१४	१०।२०।४९	८।०३।२३	८।१३।५२	२७
२८	४।११।१२।२३	१०।१८।५७।२३	११।१७।४५।०१	५।०२।०४।५५	१।११।११।५५	२।२५।३१।१९	८।०२।१४	१०।२०।४६	८।०३।२२	८।१३।५१	२८
२९	४।१२।१०।२०	११।०४।०६।२०	११।१७।४३।२५	५।०३।३४।५५	१।११।१७।०७	२।२६।३१।१५	८।०२।१४	१०।२०।४२	८।०३।२२	८।१३।५०	२९
३०	४।१३।०८।१८	११।१९।०२।५७	११।१७।४१।०१	५।०५।०३।३७	१।११।२२।०१	२।२७।३१।४३	८।०२।१४	१०।२०।३९	८।०३।२२	८।१३।५०	३०
३१	४।१४।०६।१७	००।०३।४०।१०	११।१७।३७।४२	५।०६।३०।५४	१।११।२६।४८	२।२८।३२।३०	८।०२।१४	१०।२०।३६	८।०३।२१	८।१३।४९	३१

सितम्बर सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४१'।५९" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१६/३५

ता. सित.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता. सित
१	४।१५।०४।१९	००।१७।५३।३१	११।१७।३३।३६	५।०७।५६।४८	१।१९।३९।२४	२।२९।३३।३६	८।०२।१४	१०।२०।३३	८।०३।२१	८।१३।४८	१
२	४।१६।०२।२३	०१।०१।४१।०५	११।१७।२८।३५	५।०९।२९।१८	१।१९।३५।४८	३।००।३५।०६	८।०२।१४	१०।२०।३०	८।०३।२१	८।१३।४८	२
३	४।१७।००।२९	०१।१५।०३।१५	११।१७।२२।४३	५।११।०४।२४	१।१९।४०।०६	३।०१।३६।५४	८।०२।१४	१०।२०।२६	८।०३।२१	८।१३।४७	३
४	४।१७।५८।३६	०१।२८।०२।००	११।१७।१६।०५	५।१२।०६।०१	१।१९।४४।१०	३।०२।३९।००	८।०२।१५	१०।२०।२३	८।०३।२१	८।१३।४७	४
५	४।१८।५६।४६	०२।१०।४०।२२	११।१७।०८।३७	५।१३।२६।०६	१।१९।४८।००	३।०३।४१।३०	८।०२।१५	१०।२०।२०	८।०३।२१	८।१३।४६	५
६	४।१९।५४।५८	०२।२३।०१।५४	११।१७।००।१७	५।१४।४४।४२	१।१९।५१।४२	३।०४।४४।१८	८।०२।१६	१०।२०।१७	८।०३।२१	८।१३।४६	६
७	४।२०।५३।१२	०३।०५।१०।१३	११।१६।५१।१७	५।१६।०१।४२	१।१९।५५।१८	३।०५।४७।२०	८।०२।१६	१०।२०।१४	८।०३।२१	८।१३।४५	७
८	४।२१।५१।२८	०३।१७।०८।४६	११।१६।४१।२९	५।१७।१७।०९	१।१९।५८।३६	३।०६।५०।४२	८।०२।१७	१०।२०।११	८।०३।२१	८।१३।४५	८
९	४।२२।४९।४५	०३।२९।००।४२	११।१६।३०।५३	५।१८।३०।४३	१।२०।०१।४४	३।०७।५४।१८	८।०२।१८	१०।२०।०७	८।०३।२१	८।१३।४५	९
१०	४।२३।४८।०५	०४।१०।४८।५१	११।१६।१९।३५	५।१९।४२।३८	१।२०।०४।४२	३।०८।५८।१२	८।०२।१९	१०।२०।०४	८।०३।२१	८।१३।४५	१०
११	४।२४।४६।२६	०४।२२।३५।४४	११।१६।०७।३६	५।२०।५२।३६	१।२०।०७।३०	३।१०।०२।२४	८।०२।२०	१०।२०।०१	८।०३।२१	८।१३।४४	११
१२	४।२५।४४।४९	०५।०४।२३।४३	११।१५।५४।५४	५।२२।००।४०	१।२०।१०।०६	३।११।०६।४८	८।०२।२१	१०।१९।५८	८।०३।२२	८।१३।४४	१२
१३	४।२६।४३।१५	०५।१६।१४।५७	११।१५।४१।३६	५।२३।०६।३७	१।२०।१२।२९	३।१२।११।३०	८।०२।२३	१०।१९।५५	८।०३।२२	८।१३।४४	१३
१४	४।२७।४१।४०	०५।२८।११।४६	११।१५।२७।४१	५।२४।१०।२६	१।२०।१४।३७	३।१३।१६।२३	८।०२।२४	१०।१९।५२	८।०३।२२	८।१३।४४	१४
१५	४।२८।४०।०९	०६।१०।१६।३३	११।१५।१३।११	५।२५।११।५३	१।२०।१६।३५	३।१४।२१।३५	८।०२।२६	१०।१९।४८	८।०३।२३	८।१३।४४	१५
१६	४।२९।३८।३९	०६।२२।३३।०२	११।१४।५८।१७	५।२६।१०।४७	१।२०।१८।२३	३।१५।२६।५९	८।०२।२७	१०।१९।४५	८।०३।२३	८।१३।४३	१६
१७	५।००।३७।११	०७।०५।०१।०६	११।१४।४२।४७	५।२७।०७।०५	१।२०।२०।०२	३।१६।३२।४१	८।०२।२९	१०।१९।४२	८।०३।२४	८।१३।४३	१७
१८	५।०१।३५।४५	०७।१७।४६।४८	११।१४।२६।५३	५।२८।००।२९	१।२०।२१।३०	३।१७।३८।२९	८।०२।३१	१०।१९।३९	८।०३।२५	८।१३।४३	१८
१९	५।०२।३४।२०	०८।००।५२।०९	११।१४।१०।४०	५।२८।५०।५३	१।२०।२२।४५	३।१८।४४।३५	८।०२।३२	१०।१९।३६	८।०३।२५	८।१३।४३	१९
२०	५।०३।३२।५७	०८।१४।१९।४५	११।१३।५४।०५	५।२९।३७।५९	१।२०।२३।४२	३।१९।५०।५३	८।०२।३४	१०।१९।३२	८।०३।२६	८।१३।४३	२०
२१	५।०४।३१।३६	०८।२८।११।१८	११।१३।३७।०५	६।००।२१।२३	१।२०।२४।२९	३।२०।५७।२३	८।०२।३६	१०।१९।२९	८।०३।२७	८।१३।४३	२१
२२	५।०५।३०।१५	०९।१२।२७।००	११।१३।१९।५९	६।०१।०१।०५	१।२०।२५।०५	३।२२।०४।०५	८।०२।३९	१०।१९।२६	८।०३।२८	८।१३।४३	२२
२३	५।०६।२८।५७	०९।२७।०४।५७	११।१३।०२।३५	६।०१।३६।२९	१।२०।२५।३४	३।२३।११।०८	८।०२।४१	१०।१९।२३	८।०३।२८	८।१३।४४	२३
२४	५।०७।२७।४१	१०।१२।००।५३	११।१२।४५।०४	६।०२।०७।२९	१।२०।२५।४८	३।२४।१८।१०	८।०२।४३	१०।१९।१९	८।०३।२९	८।१३।४४	२४
२५	५।०८।२६।२७	१०।२७।०७।५७	११।१२।२७।२२	६।०२।३३।३२	१।२०।२५।४५	३।२५।२५।२९	८।०२।४५	१०।१९।१६	८।०३।३०	८।१३।४४	२५
२६	५।०९।२५।१४	११।१२।१७।२९	११।१२।०९।४०	६।०२।५४।३३	१।२०।२५।३४	३।२६।३२।५८	८।०२।४८	१०।१९।१३	८।०३।३१	८।१३।४४	२६
२७	५।१०।२४।०३	११।२७।२०।०४	११।११।५१।५८	६।०३।०९।३६	१।२०।२५।१०	३।२७।४०।४०	८।०२।५१	१०।१९।१०	८।०३।३२	८।१३।४५	२७
२८	५।११।२२।५५	००।१२।०६।५५	११।११।३४।१०	६।०३।१८।४६	१।२०।२४।३४	३।२८।४८।३४	८।०२।५३	१०।१९।०७	८।०३।३४	८।१३।४५	२८
२९	५।१२।२१।४९	००।२६।३१।१२	११।११।१६।३४	६।०३।२१।२८	१।२०।२३।५२	३।२९।५६।४०	८।०२।५६	१०।१९।०४	८।०३।३५	८।१३।४५	२९
३०	५।१३।२०।४५	०१।१०।२८।४६	११।१०।५९।०४	६।०३।१७।१६	१।२०।२२।५२	४।०१।०४।५८	८।०२।५९	१०।१९।०१	८।०३।३६	८।१३।४५	३०

अक्टूबर सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रहा अयनांशा: २३°।४२'।०३" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१७/२८

ता. अक्टू.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु वक्री	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता. अक्टू.
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	
१	५।१४।१९।४२	०१।२३।५८।१९	११।१०।४१।३९	६।०३।०५।५१	१।१२।२१।३९	४।०२।१३।२७	८।०३।०२	१०।१८।५७	८।०३।३७	८।१३।४६	१
२	५।१५।१८।४३	०२।०७।०१।०३	११।१०।२४।२७	६।०२।४६।५७	१।१२।२०।१५	४।०३।२२।०३	८।०३।०५	१०।१८।५४	८।०३।३९	८।१३।४६	२
३	५।१६।१७।४६	०२।१९।३९।५७	११।१०।०७।३३	६।०२।२०।२१	१।१२।१८।३९	४।०४।३०।५१	८।०३।०८	१०।१८।५१	८।०३।४०	८।१३।४७	३
४	५।१७।१६।५१	०३।०१।५९।०८	११।०९।५०।५७	६।०१।४५।५७	१।१२।१६।५१	४।०५।३९।४५	८।०३।११	१०।१८।४८	८।०३।४१	८।१३।४७	४
५	५।१८।१५।५९	०३।१४।०३।१८	११।०९।३४।४५	६।०१।०३।५१	१।१२।१४।५१	४।०६।४८।५१	८।०३।१४	१०।१८।४५	८।०३।४३	८।१३।४८	५
६	५।१९।१५।०९	०३।२५।५७।०९	११।०९।१८।५१	६।००।१४।२७	१।१२।१२।३९	४।०७।५८।०९	८।०३।१८	१०।१८।४१	८।०३।४४	८।१३।४८	६
७	५।२०।१४।२१	०४।०७।४५।१३	११।०९।०३।२२	५।२९।१८।०९	१।१२।१०।१५	४।०९।०७।३९	८।०३।२१	१०।१८।३८	८।०३।४६	८।१३।४९	७
८	५।२१।१३।३५	०४।१९।३३।३२	११।०८।४८।२७	५।२८।१६।०३	१।१२।०७।३९	४।१०।१७।०९	८।०३।२५	१०।१८।३५	८।०३।४७	८।१३।४९	८
९	५।२२।१२।५०	०५।०१।१९।३४	११।०८।३३।५७	५।२७।०९।०९	१।१२।०४।५१	४।११।२६।५७	८।०३।२८	१०।१८।३२	८।०३।४९	८।१३।५०	९
१०	५।२३।१२।०९	०५।१३।१२।११	११।०८।२०।०३	५।२५।५९।०३	१।१२।०१।५७	४।१२।३६।४५	८।०३।३२	१०।१८।२९	८।०३।५१	८।१३।५१	१०
११	५।२४।११।३०	०५।२५।११।३७	११।०८।०६।३८	५।२४।४७।२०	१।११।५८।४४	४।१३।४६।४५	८।०३।३६	१०।१८।२६	८।०३।५३	८।१३।५१	११
१२	५।२५।१०।५२	०६।०७।१९।३५	११।०७।५३।५६	५।२३।३६।१४	१।११।५५।२०	४।१४।५६।५६	८।०३।४०	१०।१८।२२	८।०३।५४	८।१३।५२	१२
१३	५।२६।१०।१७	०६।१९।३७।२७	११।०७।४१।५०	५।२२।२७।२६	१।११।५१।४४	४।१६।०७।१४	८।०३।४४	१०।१८।१९	८।०३।५६	८।१३।५३	१३
१४	५।२७।०९।४४	०७।०२।०६।२१	११।०७।३०।२६	५।२१।२३।१४	१।११।४८।०२	४।१७।१७।३८	८।०३।४८	१०।१८।१६	८।०३।५८	८।१३।५४	१४
१५	५।२८।०९।१३	०७।१४।४७।२१	११।०७।१९।५०	५।२०।२५।२०	१।११।४४।०२	४।१८।२८।०८	८।०३।५२	१०।१८।१३	८।०४।००	८।१३।५४	१५
१६	५।२९।०८।४२	०७।२७।४१।३९	११।०७।०९।५०	५।१९।३५।२२	१।११।३९।५६	४।१९।३८।४८	८।०३।५६	१०।१८।१०	८।०४।०२	८।१३।५५	१६
१७	६।००।०८।१४	०८।१०।५०।३९	११।०७।००।३२	५।१८।५४।४३	१।११।३५।३८	४।२०।४९।३२	८।०४।००	१०।१८।०७	८।०४।०४	८।१३।५६	१७
१८	६।०१।०७।४८	०८।२४।१५।४९	११।०६।५२।०७	५।१८।२४।३१	१।११।३१।०७	४।२२।००।२५	८।०४।०५	१०।१८।०३	८।०४।०६	८।१३।५७	१८
१९	६।०२।०७।२४	०९।०७।५८।२४	११।०६।४४।२५	५।१८।०५।१३	१।११।२६।३१	४।२३।११।३०	८।०४।०९	१०।१८।००	८।०४।०८	८।१३।५८	१९
२०	६।०३।०७।०१	०९।२१।५९।१८	११।०६।३७।२३	५।१७।५७।०१	१।११।२१।३७	४।२४।२२।३९	८।०४।१४	१०।१७।५७	८।०४।१०	८।१३।५९	२०
२१	६।०४।०६।४०	१०।०६।१८।१६	११।०६।३१।१९	५।१८।००।०७	१।११।१६।३३	४।२५।३३।४९	८।०४।१८	१०।१७।५४	८।०४।१३	८।१४।००	२१
२२	६।०५।०६।२१	१०।२०।५३।२५	११।०६।२५।५५	५।१८।१३।५५	१।११।११।२५	४।२६।४५।१०	८।०४।२३	१०।१७।५१	८।०४।१५	८।१४।०१	२२
२३	६।०६।०६।०४	११।०५।४०।५१	११।०६।२१।२५	५।१८।३८।१३	१।११।०६।०७	४।२७।५६।३७	८।०४।२८	१०।१७।४७	८।०४।१७	८।१४।०२	२३
२४	६।०७।०५।४८	११।२०।३४।३१	११।०६।१७।३७	५।१९।१२।०१	१।११।००।३७	४।२९।०८।१३	८।०४।३२	१०।१७।४४	८।०४।१९	८।१४।०३	२४
२५	६।०८।०५।३४	००।०५।२६।४०	११।०६।१४।४३	५।१९।५४।४९	१।१०।५४।५५	५।००।१९।५५	८।०४।३७	१०।१७।४१	८।०४।२२	८।१४।०५	२५
२६	६।०९।०५।२३	००।२०।०८।५५	११।०६।१२।३१	५।२०।४५।३१	१।१०।४९।०७	५।०१।३१।४२	८।०४।४२	१०।१७।३८	८।०४।२४	८।१४।०६	२६
२७	६।१०।०५।१२	०१।०४।३३।३३	११।०६।११।१२	५।२१।४३।३५	१।१०।४३।०६	५।०२।४३।३६	८।०४।४७	१०।१७।३५	८।०४।२७	८।१४।०७	२७
२८	६।११।०५।०४	०१।१८।३४।४७	११।०६।१०।३६	५।२२।४७।४३	१।१०।३७।००	५।०३।५५।३६	८।०४।५२	१०।१७।३२	८।०४।२९	८।१४।०८	२८
२९	६।१२।०४।५९	०२।०२।०९।२६	११।०६।१०।५८	५।२३।५७।३०	१।१०।३०।४८	५।०५।०७।४२	८।०४।५७	१०।१७।२८	८।०४।३२	८।१४।१०	२९
३०	६।१३।०४।५६	०२।१५।१७।०१	११।०[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।०६।१९।५४	८।०५।०३	१०।१७।२५	८।०४।३४	८।१४।११	३०
३१	६।१४।०४।५५	०२।२७।५९।३१	११।०६।१३।३६	५।२६।३०।५४	१।१०।१७।४८	५।०७।३२।१२	८।०५।०८	१०।१७।२२	८।०४।३७	८।१४।१२	३१

6

नवम्बर सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°१४२'१०७" धासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१८/४०

ता. नव.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. नव.
१	६।१५।०४।५५	०३।१०।२०।३८	११।०६।१६।११	५।२७।५३।०५	१।१०।११।११	५।०८।४४।३५	८।०५।१३	१०।१७।१९	८।०४।३९	८।१४।१३	१
२	६।१६।०४।५७	०३।२२।२५।१०	११।०६।१९।२९	५।२९।१८।१७	१।१०।०४।१३	५।०९।५६।३९	८।०५।१९	१०।१७।१६	८।०४।४२	८।१४।१५	२
३	६।१७।०५।०३	०४।०४।१८।२९	११।०६।२३।३५	६।००।४५।५३	१।०९।५७।२९	५।११।०९।३३	८।०५।२४	१०।१७।१२	८।०४।४५	८।१४।१६	३
४	६।१८।०५।१०	०४।१६।०५।५७	११।०६।२८।२९	६।०२।१५।३५	१।०९।५०।२३	५।१२।२२।१३	८।०५।२९	१०।१७।०९	८।०४।४७	८।१४।१८	४
५	६।१९।०५।१९	०४।२७।१२।४४	११।०६।३४।०५	६।०३।४६।५३	१।०९।४३।१७	५।१३।३४।५९	८।०५।३५	१०।१७।०६	८।०४।५०	८।१४।१९	५
६	६।२०।०५।३०	०५।०९।४३।२७	११।०६।४०।२२	६।०५।१९।३४	१।०९।३५।५८	५।१४।४६।४६	८।०५।४१	१०।१७।०३	८।०४।५३	८।१४।२१	६
७	६।२१।०५।४४	०५।२१।४१।५५	११।०६।४७।२८	६।०६।५३।१६	१।०९।२८।३४	५।१६।००।३७	८।०५।४६	१०।१७।००	८।०४।५६	८।१४।२२	७
८	६।२२।०५।५९	०६।०३।५१।०१	११।०६।५५।१६	६।०८।२७।५२	१।०९।२१।१०	५।१७।१३।३५	८।०५।५२	१०।१६।५७	८।०४।५९	८।१४।२४	८
९	६।२३।०६।१६	०६।१६।१२।३९	११।०७।०३।५२	६।१०।०३।०४	१।०९।१३।३४	५।१८।२६।३८	८।०५।५८	१०।१६।५३	८।०५।०२	८।१४।२५	९
१०	६।२४।०६।३५	०६।२८।४७।४२	११।०७।१३।०४	६।११।३८।४६	१।०९।०५।५८	५।१९।३९।४६	८।०६।०४	१०।१६।५०	८।०५।०५	८।१४।२७	१०
११	६।२५।०६।५४	०७।११।३६।०७	११।०७।२२।५८	६।१३।१४।४५	१।०८।५८।१६	५।२०।५२।५८	८।०६।१०	१०।१६।४७	८।०५।०७	८।१४।२८	११
१२	६।२६।०७।१५	०७।२४।३७।२०	११।०७।३३।३४	६।१४।५१।०४	१।०८।५०।२८	५।२२।०६।१३	८।०६।१५	१०।१६।४४	८।०५।१०	८।१४।३०	१२
१३	६।२७।०७।४१	०८।०७।५०।१८	११।०७।४४।५२	६।१६।२७।२८	१।०८।४२।३४	५।२३।१९।३४	८।०६।२१	१०।१६।४१	८।०५।१३	८।१४।३२	१३
१४	६।२८।०८।०६	०८।२१।१४।१०	११।०७।५६।५१	६।१८।०३।५२	१।०८।३४।४०	५।२४।३२।५८	८।०६।२८	१०।१६।३७	८।०५।१७	८।१४।३३	१४
१५	६।२९।०८।३३	०९।०४।४८।२१	११।०८।०९।२९	६।१९।४०।१५	१।०८।२६।४३	५।२५।४६।२८	८।०६।३४	१०।१६।३४	८।०५।२०	८।१४।३५	१५
१६	७।००।०९।०१	०९।१८।३२।४१	११।०८।२२।३९	६।२१।१६।३९	१।०८।१८।४१	५।२६।५९।५७	८।०६।४०	१०।१६।३१	८।०५।२३	८।१४।३७	१६
१७	७।०१।०९।३०	१०।०२।२७।१७	११।०८।३६।२७	६।२२।५२।५७	१।०८।१०।३९	५।२८।१३।२७	८।०६।४६	१०।१६।२८	८।०५।२६	८।१४।३९	१७
१८	७।०२।१०।००	१०।१६।३२।१६	११।०८।५०।५७	६।२४।२९।०९	१।०८।०२।३३	५।२९।२७।०३	८।०६।५२	१०।१६।२५	८।०५।२९	८।१४।४०	१८
१९	७।०३।१०।३२	११।००।४७।०५	११।०९।०५।५८	६।२६।०५।१०	१।०७।५४।२७	६।००।४०।४५	८।०६।५८	१०।१६।२२	८।०५।३२	८।१४।४२	१९
२०	७।०४।११।०४	११।१५।१०।०३	११।०९।२१।३३	६।२७।४१।०३	१।०७।४६।१६	६।०१।५४।२९	८।०७।०५	१०।१६।१८	८।०५।३५	८।१४।४४	२०
२१	७।०५।११।३८	११।२९।३७।५९	११।०९।३७।४५	६।२९।१६।४५	१।०७।३८।०३	६।०३।०८।१६	८।०७।११	१०।१६।१५	८।०५।३९	८।१४।४६	२१
२२	७।०६।१२।१३	००।१४।०६।०३	११।०९।५४।२७	७।००।५२।१५	१।०७।२९।५६	६।०४।२२।०६	८।०७।१७	१०।१६।१२	८।०५।४२	८।१४।४८	२२
२३	७।०७।१२।५०	००।२८।२८।५३	११।१०।११।४४	७।०२।२७।३९	१।०७।२१।४५	६।०५।३६।००	८।०७।२४	१०।१६।०९	८।०५।४५	८।१४।५०	२३
२४	७।०८।१३।२९	०१।१२।३८।०८	११।१०।२९।२६	७।०४।०२।५१	१।०७।१३।३२	६।०६।४९।५६	८।०७।३०	१०।१६।०६	८।०५।४८	८।१४।५१	२४
२५	७।०९।१४।०८	०१।२६।३०।१०	११।१०।४७।४४	७।०५।३७।४६	१।०७।०५।२०	६।०८।०३।५६	८।०७।३७	१०।१६।०२	८।०५।५२	८।१४।५३	२५
२६	७।१०।१४।४९	०२।१०।००।२१	११।११।०६।३२	७।०७।१२।५०	१।०६।५७।१४	६।०९।१७।५८	८।०७।४३	१०।१५।५९	८।०५।५५	८।१४।५५	२६
२७	७।११।१५।३१	०२।२३।०६।५५	११।११।२५।४४	७।०८।४७।३२	१।०६।४९।०२	६।१०।३२।०३	८।०७।५०	१०।१५।५६	८।०५।५८	८।१४।५७	२७
२८	७।१२।१६।१५	०३।०५।५०।२१	११।११।४५।२६	७।१०।२२।१४	१।०६।४०।५६	६।११।४६।१२	८।०७।५७	१०।१५।५३	८।०६।०२	८।१४।५९	२८
२९	७।१३।१७।०१	०३।१८।१३।११	११।१२।०५।३७	७।११।५६।४४	१।०६।३२।५०	६।१३।००।२४	८।०८।०३	१०।१५।५०	८।०६।०५	८।१५।०१	२९
३०	७।१४।१७।४८	०४।००।११।१९	११।१२।२६।१३	७।१३।३१।०८	१।०६।२४।४९	६।१४।१४।३८	८।०८।१०	१०।१५।४७	८।०६।०९	८।१५।०३	३०

दिसम्बर सन् १९८८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रहा अयनांशाः २३°।४२'।१२" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/१९/५१

ता. दिस.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरू (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. दिस.
१	७।१५।१८।३६	०४।१२।१३।४६	११।१२।४७।१९	७।१५।०५।३१	१।०६।१६।४९	६।१५।२८।५५	८।०८।१६	१०।१५।४३	८।०६।१२	८।१५।०५	१
२	७।१६।१९।२६	०४।२४।०२।०२	११।१३।०८।४९	७।१६।३९।४३	१।०६।०८।५०	६।१६।४३।१३	८।०८।२३	१०।१५।४०	८।०६।१५	८।१५।०७	२
३	७।१७।२०।१७	०५।०५।४९।४८	११।१३।३०।४३	७।१८।१४।०१	१।०६।००।५५	६।१७।५७।३३	८।०८।३०	१०।१५।३७	८।०६।१९	८।१५।०९	३
४	७।१८।२१।०९	०५।१७।४२।३०	११।१३।५३।००	७।१९।४८।०६	१।०५।५३।०६	६।१९।११।५५	८।०८।३७	१०।१५।३४	८।०६।२२	८।१५।११	४
५	७।१९।२२।०३	०५।२९।४४।५९	११।१४।१५।४२	७।२१।२२।१८	१।०५।४५।१८	६।२०।२६।२०	८।०८।४४	१०।१५।३१	८।०६।२६	८।१५।१३	५
६	७।२०।२२।५८	०६।१२।०१।१२	११।१४।३८।५४	७।२२।५६।२४	१।०५।३७।३६	६।२१।४०।४८	८।०८।५०	१०।१५।२८	८।०६।२९	८।१५।१६	६
७	७।२१।२३।५४	०६।२४।३३।५९	११।१५।०२।२४	७।२४।३०।३६	१।०५।३०।०१	६।२२।५५।१९	८।०८।५७	१०।१५।२४	८।०६।३३	८।१५।१८	७
८	७।२२।२४।५२	०७।०७।२४।४१	११।१५।२६।१८	७।२६।०४।४८	१।०५।२२।३०	६।२४।०९।५३	८।०९।०४	१०।१५।२१	८।०६।३६	८।१५।२०	८
९	७।२३।२५।५०	०७।२०।३३।१२	११।१५।५०।३०	७।२७।३९।००	१।०५।१५।०५	६।२५।२४।२९	८।०९।११	१०।१५।१८	८।०६।४०	८।१५।२२	९
१०	७।२४।२६।४९	०८।०३।५७।५५	११।१६।१५।०५	७।२९।१३।१३	१।०५।०७।४७	६।२६।३९।०५	८।०९।१८	१०।१५।१५	८।०६।४४	८।१५।२४	१०
११	७।२५।२७।५०	०८।१७।३६।१०	११।१६।४०।०२	८।००।४७।३५	१।०५।००।३०	६।२७।५३।४१	८।०९।२५	१०।१५।१२	८।०६।४७	८।१५।२६	११
१२	७।२६।२८।५१	०९।०१।२४।४१	११।१७।०५।२३	८।०२।२१।५१	१।०४।५३।२३	६।२९।०८।१८	८।०९।३२	१०।१५।०८	८।०६।५१	८।१५।२८	१२
१३	७।२७।२९।५३	०९।१५।२०।१६	११।१७।३०।५९	८।०३।५६।२२	१।०४।४६।२३	७।००।२२।५७	८।०९।३९	१०।१५।०५	८।०६।५४	८।१५।३१	१३
१४	७।२८।३०।५४	०९।२९।२०।१७	११।१७।५६।५८	८।०५।३०।५३	१।०४।३९।३५	७।०१।३७।३८	८।०९।४६	१०।१५।०२	८।०६।५८	८।१५।३३	१४
१५	७।२९।३१।५७	१०।१३।२२।५९	११।१८।२३।१६	८।०७।०५।२८	१।०४।३२।४६	७।०२।५२।२०	८।०९।५३	१०।१४।५९	८।०७।०१	८।१५।३५	१५
१६	८।००।३३।००	१०।२७।२७।१५	११।१८।४९।४६	८।०८।४०।०४	१।०४।२६।१०	७।०४।०७।०४	८।१०।००	१०।१४।५६	८।०७।०५	८।१५।३७	१६
१७	८।०१।३४।०४	११।११।३२।२५	११।१९।१६।४०	८।१०।१४।४६	१।०४।१९।४०	७।०५।२१।५०	८।१०।०७	१०।१४।५३	८।०७।०९	८।१५।३९	१७
१८	८।०२।३५।०७	११।२५।३७।४०	११।१९।४३।५२	८।११।४९।३४	१।०४।१३।२२	७।०६।३६।३८	८।१०।१४	१०।१४।४९	८।७।१२	८।१५।४२	१८
१९	८।०३।३६।१०	००।०९।४१।३८	११।२०।११।१७	८।१३।२४।२७	१।०४।०७।०९	७।०७।५१।२६	८।१०।२१	१०।१४।४६	८।०७।१६	८।१५।४४	१९
२०	८।०४।३७।१५	००।२३।४२।१५	११।२०।३८।५७	८।१४।५९।१५	१।०४।०१।०३	७।०९।०६।१५	८।१०।२८	१०।१४।४३	८।०७।२०	८।१५।४६	२०
२१	८।०५।३८।२०	०१।०७।३६।२४	११।२१।०६।५७	८।१६।३४।०९	१।०३।५५।०९	७।१०।२१।०४	८।१०।३५	१०।१४।४०	८।०७।२३	८।१५।४८	२१
२२	८।०६।३९।२५	०१।२१।२०।३३	११।२१।३५।०९	८।१८।०८।५७	१।०३।४९।२७	७।११।३५।५४	८।१०।४२	१०।१४।३७	८।०७।२७	८।१५।५१	२२
२३	८।०७।४०।३१	०२।०४।५१।०६	११।२२।०३।३९	८।१९।४३।४५	१।०३।४३।५१	७।१२।५०।४५	८।१०।४९	१०।१४।३३	८।०७।३०	८।१५।५३	२३
२४	८।०८।४१।३७	०२।१८।०५।०९	११।२२।३२।२१	८।२१।१८।२१	१।०३।३८।२७	७।१४।०५।३६	८।१०।५६	१०।१४।३०	८।०७।३४	८।१५।५५	२४
२५	८।०९।४२।४३	०३।०१।००।५४	११।२३।०१।१९	८।२२।५२।४४	१।०३।३३।१४	७।१५।२०।२९	८।११।०३	१०।१४।२७	८।०७।३८	८।१५।५७	२५
२६	८।१०।४३।५०	०३।१३।३८।११	११।२३।३०।२८	८।२४।२६।५६	१।०३।२८।०८	७।१६।३५।२४	८।११।११	१०।१४।२४	८।०७।४१	८।१६।००	२६
२७	८।११।४४।५७	०३।२५।५८।१२	११।२३।५९।५०	८।२६।००।४४	१।०३।२३।१४	७।१७।५०।२०	८।११।१८	१०।१४।२१	८।०७।४५	८।१६।०२	२७
२८	८।१२।४६।०४	०४।०८।०३।४१	११।२४।२९।२६	८।२७।३३।५६	१।०३।१८।२६	७।१९।०५।१८	८।११।२५	१०।१४।१८	८।०७।४८	८।१६।०४	२८
२९	८।१३।४७।१२	०४।१९।५८।२९	११।२४।५९।१३	८।२९।०६।३१	१।०३।१३।५६	७।२०।२०।१७	८।११।३२	१०।१४।१४	८।०७।५२	८।१६।०६	२९
३०	८।१४।४८।२०	०५।०१।४७।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१४।११	८।०७।५६	८।१६।०९	३०
३१	८।१५।४९।२९	०५।१३।३५।२४	११।२५।५९।२५	९।०२।०९।१३	१।०३।०५।१९	७।२२।५०।१८	८।११।४६	१०।१४।०८	८।०७।५९	८।१६।११	३१

जनवरी सन् १९८९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशाः २३°।४२'।१८" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/२०/५२

ता० जन.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. जन.
१	८।१६।५०।३८	०५।२५।२८।१७	११।२६।२९।५४	९।०३।३८।४२	१।०३।०१।१८	७।२४।०५।१९	८।११।५३	१०।१४।०५	८।०८।०३	८।१६।१३	१
२	८।१७।५१।४७	०६।०७।३१।१५	११।२७।००।३०	९।०५।०६।४९	१।०२।५७।३०	७।२५।२०।२१	८।१२।००	१०।१४।०२	८।०८।०७	८।१६।१५	२
३	८।१८।५२।५७	०६।१९।४९।१५	११।२७।३१।१८	९।०६।३३।००	१।०२।५३।५४	७।२६।३५।२४	८।१२।०७	१०।१३।५८	८।०८।१०	८।१६।१८	३
४	८।१९।५४।०८	०७।०२।२६।१३	११।२८।०२।१८	९।०७।५७।०२	१।०२।५०।३०	७।२७।५०।२७	८।१२।१४	१०।१३।५५	८।०८।१४	८।१६।२०	४
५	८।२०।५५।१८	०७।१५।२४।५०	११।२८।३३।२९	९।०९।१८।१८	१।०२।४७।१२	७।२९।०५।३०	८।१२।२१	१०।१३।५२	८।०८।१७	८।१६।२२	५
६	८।२१।५६।२९	०७।२८।४६।०२	११।२९।०४।४९	९।१०।३६।३१	१।०२।४४।१३	८।००।२०।३३	८।१२।२९	१०।१३।४९	८।०८।२१	८।१६।२५	६
७	८।२२।५७।३९	०८।१२।२८।४८	११।२९।३६।१७	९।११।५०।५८	१।०२।४१।२४	८।०१।३५।३६	८।१२।३६	१०।१३।४६	८।०८।२४	८।१६।२७	७
८	८।२३।५८।४९	०८।२६।३०।०४	००।००।०७।५८	९।१३।०१।०४	१।०२।३८।४९	८।०२।५०।४०	८।१२।४३	१०।१३।४३	८।०८।२८	८।१६।२९	८
९	८।२४।५९।५९	०९।१०।४५।१३	००।००।३९।४८	९।१४।०६।११	१।०२।३६।१७	८।०४।०५।४५	८।१२।५०	१०।१३।३९	८।०८।३१	८।१६।३१	९
१०	८।२६।०१।०९	०९।२५।०८।४६	००।०१।११।४९	९।१५।०५।३५	१।०२।३४।०५	८।०५।२०।५०	८।१२।५७	१०।१३।३६	८।०८।३५	८।१६।३४	१०
११	८।२७।०२।१९	१०।०९।३५।११	००।०१।४३।५९	९।१५।५८।११	१।०२।३२।०४	८।०६।३५।५६	८।१३।०४	१०।१३।३३	८।०८।३८	८।१६।३६	११
१२	८।२८।०३।२८	१०।२३।५९।४१	००।०२।१६।१७	९।१६।४३।२३	१।०२।३०।११	८।०७।५१।०२	८।१३।११	१०।१३।३०	८।०८।४२	८।१६।३८	१२
१३	८।२९।०४।३५	११।०८।१८।३८	००।०२।४८।४७	९।१७।२०।०५	१।०२।२८।३५	८।०९।०६।०८	८।१३।१७	१०।१३।२७	८।०८।४५	८।१६।४०	१३
१४	९।००।०५।४३	११।२२।२९।३९	००।०३।२१।२५	९।१७।४७।३४	१।०२।२७।१०	८।१०।२१।१४	८।१३।२४	१०।१३।२३	८।०८।४९	८।१६।४३	१४
१५	९।०१।०६।५०	००।०६।३१।१४	००।०३।५४।०७	९।१८।०४।५२	१।०२।२५।५८	८।११।३६।२१	८।१३।३१	१०।१३।२०	८।०८।५२	८।१६।४५	१५
१६	९।०२।०७।५६	००।२०।२२।४०	००।०४।२६।५८	९।१८।११।२१	१।०२।२४।५६	८।१२।५१।२८	८।१३।३८	१०।१३।१७	८।०८।५६	८।१६।४७	१६
१७	९।०३।०९।०२	०१।०४।०३।२२	००।०४।५९।५७	९।१८।०६।२३	१।०२।२४।१६	८।१४।०६।३५	८।१३।४५	१०।१३।१४	८।०८।५९	८।१६।४९	१७
१८	९।०४।१०।०७	०१।१७।३२।४९	००।०५।३३।०४	९।१७।४९।५२	१।०२।२३।४०	८।१५।२१।४२	८।१३।५२	१०।१३।११	८।०९।०२	८।१६।५१	१८
१९	९।०५।११।११	०२।००।५०।१७	००।०६।०६।१६	९।१७।२१।२८	१।०२।२३।१६	८।१६।३६।४९	८।१३।५९	१०।१३।०८	८।०९।०६	८।१६।५३	१९
२०	९।०६।१२।१३	०२।१३।५५।०२	००।०६।३९।३६	९।१६।४९।५७	१।०२।२३।०९	८।१७।५१।५६	८।१४।०५	१०।१३।०४	८।०९।०९	८।१६।५६	२०
२१	९।०७।१३।१५	०२।२६।४६।२५	००।०७।१३।०३	९।१५।५१।५७	१।०२।२३।११	८।१९।०७।०३	८।१४।१२	१०।१३।०१	८।०९।१२	८।१६।५८	२१
२२	९।०८।१४।१७	०३।०९।२४।०६	००।०७।४६।३९	९।१४।५२।४५	१।०२।२३।२७	८।२०।२२।१०	८।१४।१९	१०।१२।५८	८।०९।१६	८।१७।००	२२
२३	९।०९।१५।१८	०३।२१।४८।२०	००।०८।२०।२१	९।१३।४६।०३	१।०२।२३।५१	८।२१।३७।१७	८।१४।२५	१०।१२।५५	८।०९।१९	८।१७।०२	२३
२४	९।१०।१६।१८	०४।०४।००।०७	००।०८।५४।०७	९।१२।३३।५१	१।०२।२४।३३	८।२२।५२।२५	८।१४।३२	१०।१२।५२	८।०९।२२	८।१७।०४	२४
२५	९।११।१७।१७	०४।१६।०१।१२	००।०९।२७।५८	९।११।१८।२७	१।०२।२५।२७	८।२४।०७।३२	८।१४।३९	१०।१२।४८	८।०९।२५	८।१७।०६	२५
२६	९।१२।१८।१६	०४।२७।५४।१९	००।१०।०१।५६	९।१०।०१।५६	१।०२।२६।२६	८।२५।२२।३९	८।१४।४५	१०।१२।४५	८।०९।२९	८।१७।०९	२६
२७	९।१३।१९।१४	०५।०९।४३।५३	००।१०।३६।०१	९।०८।४६।५६	१।०२।२७।४४	८।२६।३७।४६	८।१४।५२	१०।१२।४२	८।०९।३२	८।१७।११	२७
२८	९।१४।२०।११	०५।२१।३१।०४	००।११।१०।१०	९।०७।३५।०२	१।०२।२९।१४	८।२७।५२।५३	८।१४।५९	१०।१२।३९	८।०९।३५	८।१७।१३	२८
२९	९।१५।२१।०७	०६।०३।२२।४८	००।११।४४।२६	९।०६।२८।२६	१।०२।३०।५६	८।२९।०७।५९	८।१५।०५	१०।१२।३६	८।०९।३८	८।१७।१५	२९
३०	९।१६।२२।०३	०६।१५।२५।०२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९।००।२३।०६	८।१५।१२	१०।१२।३३	८।०९।४१	८।१७।१७	३०
३१	९।१७।२२।५९	०६।२७।४०।४२	००।१२।५३।०८	९।०४।३५।४४	१।०२।३४।५०	९।०१।३८।१३	८।१५।१८	१०।१२।२९	८।०९।४४	८।१७।१९	३१

फरवरी सन् १९८९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा: २३°।४२'।२२" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६/२१/२५

ता. फर.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. फर.
१	०९।१८।२३।५३	०७।१०।१५।०५	०।१३।२७।३८	९।०३।५३।२०	१।०२।३७।०८	९।०२।५३।२०	८।१५।२४	१०।१२।२६	८।०९।४७	८।१७।२१	१
२	०९।१९।२४।४७	०७।२३।१२।०६	०।१४।०२।१४	९।०३।१५।३२	१।०२।३९।३८	९।०४।०८।२७	८।१५।३०	१०।१२।२३	८।०९।५०	८।१७।२३	२
३	०९।२०।२५।४०	०८।०६।३४।१६	०।१४।३६।५६	९।०२।४८।२०	१।०२।४२।२०	९।०५।२३।३४	८।१५।३६	१०।१२।२०	८।०९।५३	८।१७।२५	३
४	०९।२१।२६।३३	०८।२०।२२।१७	०।१५।११।४४	९।०२।२९।३८	१।०२।४५।०८	९।०६।३८।४१	८।१५।४३	१०।१२।१७	८।०९।५६	८।१७।२७	४
५	०९।२२।२७।२४	०९।०४।३४।३०	०।१५।४६।३७	९।०२।१९।१३	१।०२।४८।१३	९।०७।५३।४७	८।१५।४९	१०।१२।१४	८।०९।५९	८।१७।२९	५
६	०९।२३।२८।१४	०९।१९।०६।५३	०।१६।२१।३६	९।०२।१६।३७	१।०२।५१।३१	९।०९।०८।५४	८।१५।५५	१०।१२।१०	८।१०।०२	८।१७।३२	६
७	०९।२४।२९।०२	१०।०३।५३।२१	०।१६।५६।४०	९।०२।२१।२५	१।०२।५४।५५	९।१०।२४।०१	८।१६।०१	१०।१२।०७	८।१०।०५	८।१७।३३	७
८	०९।२५।२९।५०	१०।१८।४६।२२	०।१७।३१।४८	९।०२।३३।०७	१।०२।५८।३७	९।११।३९।०७	८।१६।०७	१०।१२।०४	८।१०।०८	८।१७।३५	८
९	०९।२६।३०।३६	११।०३।३८।०८	०।१८।०६।५९	९।०२।५१।१९	१।०३।०२।२५	९।१२।५४।१२	८।१६।१३	१०।१२।०१	८।१०।१०	८।१७।३६	९
१०	०९।२७।३१।२१	११।१८।२१।३६	०।१८।४२।१३	९।०३।१५।२५	१।०३।०६।२९	९।१४।०९।१७	८।१६।१९	१०।११।५८	८।१०।१३	८।१७।३८	१०
११	०९।२८।३२।०३	००।०२।५१।१७	०।१९।१७।३०	९।०३।४४।५५	१।०३।१०।३७	९।१५।२४।२२	८।१६।२५	१०।११।५४	८।१०।१६	८।१७।४०	११
१२	०९।२९।३२।४५	००।१७।०३।३८	०।१९।५२।४९	९।०४।१९।३०	१।०३।१५।००	९।१६।३९।२६	८।१६।३१	१०।११।५१	८।१०।१८	८।१७।४२	१२
१३	१०।००।३३।२५	०१।००।५६।५८	०।२०।२८।१०	९।०४।५८।३६	१।०३।१९।३६	९।१७।५४।३०	८।१६।३७	१०।११।४८	८।१०।२१	८।१७।४४	१३
१४	१०।०१।३४।०३	१।१४।३१।०३	०।२१।०३।३३	९।०५।४२।०१	१।०३।२४।२४	९।१९।०९।३३	८।१६।४२	१०।११।४५	८।१०।२४	८।१७।४५	१४
१५	१०।०२।३४।४०	०१।२७।४६।५०	०।२१।३८।५९	९।०६।२९।१९	१।०३।२९।१८	९।२०।२४।३६	८।१६।४८	१०।११।४२	८।१०।२६	८।१७।४७	१५
१६	१०।०३।३५।१५	०२।१०।४५।४५	०।२२।१४।२९	९।०७।२०।१२	१।०३।३४।२४	९।२१।३९।३९	८।१६।५४	१०।११।३९	८।१०।२९	८।१७।४९	१६
१७	१०।०४।३५।४७	०२।२३।२९।३४	०।२२।५०।०२	९।०८।१४।२३	१।०३।३९।४१	९।२२।५४।४१	८।१६।५९	१०।११।३५	८।१०।३१	८।१७।५१	१७
१८	१०।०५।३६।१८	०३।०६।००।१०	०।२३।२५।३८	९।०९।११।३८	१।०३।४५।११	९।२४।०९।४३	८।१७।०५	१०।११।३२	८।१०।३४	८।१७।५२	१८
१९	१०।०६।३६।४८	०३।१८।१९।१५	०।२४।०१।१८	९।१०।११।३५	१।०३।५०।४७	९।२५।२४।४४	८।१७।१०	१०।११।२९	८।१०।३६	८।१७।५४	१९
२०	१०।०७।३७।१६	०४।००।२८।३२	०।२४।३७।०१	९।११।१४।०५	१।०३।५६।३५	९।२६।३९।४५	८।१७।१६	१०।११।२६	८।१०।३८	८।१७।५६	२०
२१	१०।०८।३७।४२	०४।१२।२९।३८	०।२५।१२।४६	९।१२।१९।०४	१।०४।०२।२९	९।२७।५४।४५	८।१७।२१	१०।११।२३	८।१०।४१	८।१७।५७	२१
२२	१०।०९।३८।०७	०४।२४।२४।२३	०।२५।४८।३६	९।१३।२६।२३	१।०४।०८।४१	९।२९।०९।४४	८।१७।२६	१०।११।१९	८।१०।४३	८।१७।५९	२२
२३	१०।१०।३८।३०	०५।०६।१४।५०	०।२६।२४।३१	९।१४।३५।४१	१।०४।१४।५९	१०।००।२४।४३	८।१७।३१	१०।११।१६	८।१०।४५	८।१८।००	२३
२४	१०।११।३८।५१	०५।१८।०३।२१	०।२७।००।३१	९।१५।४६।५९	१।०४।२१।२३	१०।०१।३९।४०	८।१७।३६	१०।११।१३	८।१०।४८	८।१८।०२	२४
२५	१०।१२।३९।११	०५।२९।५२।४७	०।२७।३६।३३	९।१७।००।११	१।०४।२७।५९	१०।०२।५४।३७	८।१७।४१	१०।११।१०	८।१०।५०	८।१८।०४	२५
२६	१०।१३।३९।३०	०६।११।४६।३१	०।२८।१२।३६	९।१८।१५।१४	१।०४।३४।४६	१०।०४।०९।३३	८।१७।४६	१०।११।०७	८।१०।५२	८।१८।०५	२६
२७	१०।१४।३९।४७	०६।२३।४८।१३	०।२८।४८।४०	९।१९।३१।४६	१।०४।४१।४२	१०।०५।२४।२९	८।१७।५१	१०।११।०४	८।१०।५४	८।१८।०६	२७
२८	१०।१५।४०।०३	०७।०६।०२।०५	०।२९।२४।४६	९।२०।४९।५२	१।०४।४८।४६	१०।०६।३९।२४	८।१७।५६	१०।११।००	८।१०।५६	८।१८।०८	२८

मार्च सन् १९८९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४२'।२६" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६/२१/२७ वक्री

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. मार्च
१	१०।१६।४०।१७	०७।१८।३२।२१	१।००।००।५४	९।२२।०९।३४	१।०४।५५।५८	१०।०७।५४।१९	८।१८।०१	१०।१०।५७	८।१०।५८	८।१८।०९	१
२	१०।१७।४०।३०	०८।०१।२३।०९	१।००।३७।०४	९।२३।३०।४६	१।०५।०३।२२	१०।०९।०९।१५	८।१८।०६	१०।१०।५४	८।११।००	८।१८।११	२
३	१०।१८।४०।४१	०८।१४।३८।०१	१।०१।१३।१६	९।२४।५३।२२	१।०५।१०।५८	१०।१०।२४।११	८।१८।१०	१०।१०।५१	८।११।०२	८।१८।१२	३
४	१०।१९।४०।५१	०८।२८।१९।१६	१।०१।४९।३०	९।२६।१७।१६	१।०५।१८।३४	१०।११।३९।०६	८।१८।१५	१०।१०।४८	८।११।०४	८।१८।१३	४
५	१०।२०।४०।५९	०९।१२।२७।३४	१।०२।२५।४५	९।२७।४२।३३	१।०५।२६।२७	१०।१२।५४।०१	८।१८।१९	१०।१०।४५	८।११।०५	८।१८।१५	५
६	१०।२१।४१।०५	०९।२७।०१।००	१।०३।०२।०३	९।२९।०९।०३	१।०५।३४।२१	१०।१४।०८।५४	८।१८।२४	१०।१०।४१	८।११।०७	८।१८।१६	६
७	१०।२२।४१।१०	१०।११।५४।५८	१।०३।३८।२३	१०।००।३६।५१	१।०५।४२।२७	१०।१५।२३।४६	८।१८।२८	१०।१०।३८	८।११।०९	८।१८।१७	७
८	१०।२३।४१।१३	१०।२७।०२।११	१।०४।१४।४५	१०।०२।०५।५१	१।०५।५०।४५	१०।१६।३८।३७	८।१८।३२	१०।१०।३५	८।११।११	८।१८।१८	८
९	१०।२४।४१।१४	११।१२।१३।३२	१।०४।५१।०९	१०।०३।३६।०९	१।०५।५९।०९	१०।१७।५३।२७	८।१८।३७	१०।१०।३२	८।११।१२	८।१८।१९	९
१०	१०।२५।४१।१३	११।२७।१९।१९	१।०५।२७।३५	१०।०५।०७।३९	१।०६।०७।३९	१०।१९।०८।१८	८।१८।४१	१०।१०।२९	८।११।१४	८।१८।२१	१०
११	१०।२६।४१।१०	००।१२।१०।४५	१।०६।०४।०३	१०।०६।४०।१५	१।०६।१६।१५	१०।२०।२३।०८	८।१८।४५	१०।१०।२५	८।११।१५	८।१८।२२	११
१२	१०।२७।४१।०४	००।२६।४१।०६	१।०६।४०।३२	१०।०८।१४।०८	१।०६।२५।०२	१०।२१।३७।५७	८।१८।४९	१०।१०।२२	८।११।१७	८।१८।२३	१२
१३	१०।२८।४०।५६	०१।१०।४६।३३	१।०७।१७।०३	१०।०९।४९।०८	१।०६।३३।५६	१०।२२।५२।४५	८।१८।५२	१०।१०।१९	८।११।१८	८।१८।२४	१३
१४	१०।२९।४०।४७	०१।२४।२५।५२	१।०७।५३।३४	१०।११।२५।२०	१।०६।४३।०२	१०।२४।०७।३२	८।१८।५६	१०।१०।१६	८।११।२०	८।१८।२५	१४
१५	११।००।४०।३५	०२।०७।४०।०९	१।०८।३०।०८	१०।१३।०२।४४	१।०६।५२।१४	१०।२५।२२।१८	८।१९।००	१०।१०।१३	८।११।२१	८।१८।२६	१५
१६	११।०१।४०।२१	०२।२०।३१।५८	१।०९।०६।४४	१०।१४।४१।२६	१।०७।०१।३२	१०।२६।३७।०४	८।१९।०४	१०।१०।१०	८।११।२२	८।१८।२७	१६
१७	११।०२।४०।०५	०३।०३।०४।४८	१।०९।४३।२१	१०।१६।२१।१४	१।०७।१०।५६	१०।२७।५१।४९	८।१९।०७	१०।१०।०६	८।११।२३	८।१८।२८	१७
१८	११।०३।३९।४६	०३।१५।२२।२१	१।१०।२०।००	१०।१८।०२।१५	१।०७।२०।२६	१०।२९।०६।३३	८।१९।११	१०।१०।०३	८।११।२५	८।१८।२९	१८
१९	११।०४।३९।२५	०३।२७।२८।२०	१।१०।५६।४०	१०।१९।४४।३२	१।०७।३०।०२	११।००।२१।१५	८।१९।१४	१०।१०।००	८।११।२६	८।१८।३०	१९
२०	११।०५।३९।०२	०४।०९।२६।०५	१।११।३३।२०	१०।२१।२८।०२	१।०७।३९।५०	११।०१।३५।५५	८।१९।१७	१०।०९।५७	८।११।२७	८।१८।३०	२०
२१	११।०६।३८।३६	०४।२१।१८।३०	१।१२।१०।०१	१०।२३।१२।४०	१।०७।४९।४३	११।०२।५०।३४	८।१९।२०	१०।०९।५४	८।११।२८	८।१८।३१	२१
२२	११।०७।३८।०९	०५।०३।०८।०७	१।१२।४६।४३	१०।२४।५८।४६	१।०७।५९।३७	११।०४।०५।१२	८।१९।२३	१०।०९।५०	८।११।२९	८।१८।३२	२२
२३	११।०८।३७।४०	०५।१४।५७।०५	१।१३।२३।२६	१०।२६।४६।०१	१।०८।०९।४३	११।०५।१९।४९	८।१९।२६	१०।०९।४७	८।११।३०	८।१८।३३	२३
२४	११।०९।३७।०९	०५।२६।४७।२३	१।१४।००।०९	१०।२८।३४।३७	१।०८।१९।५५	११।०६।३४।२५	८।१९।२९	१०।०९।४४	८।११।३१	८।१८।३३	२४
२५	११।१०।३६।३६	०६।०८।४०।५६	१।१४।३६।५३	११।००।२४।२५	१।०८।३०।१३	११।०७।४९।००	८।१९।३२	१०।०९।४१	८।११।३१	८।१८।३४	२५
२६	११।११।३५।५९	०६।२०।३९।३८	१।१५।१३।३८	११।०२।१५।३७	१।०८।४०।३७	११।०९।०३।३५	८।१९।३५	१०।०९।३८	८।११।३२	८।१८।३५	२६
२७	११।१२।३५।२३	०७।०२।४६।२१	१।१५।५०।२५	११।०४।०८।०७	१।०८।५१।०७	११।१०।१८।०९	८।१९।३८	१०।०९।३५	८।११।३३	८।१८।३५	२७
२८	११।१३।३४।४४	०७।१५।०३।२०	१।१६।२७।१३	११।०६।०१।५०	१।०९।०१।४९	११।११।३२।४२	८।१९।४०	१०।०९।३१	८।११।३३	८।१८।३६	२८
२९	११।१४।३४।०४	०७।२७।३३।५१	१।१७।०४।०१	११।०७।५६।५८	१।०९।१२।३१	११।१२।४७।१५	८।१९।४३	१०।०९।२८	८।११।३४	८।१८।३७	२९
३०	११।१५।३३।२२	०८।१०।१०।१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।०९।२५	८।११।३५	८।१८।३७	३०
३१	११।१६।३२।३७	०८।२३।२८।५४	१।१८।१७।३७	११।११।५०।५४	१।०९।३४।१२	११।१५।१६।२०	८।१९।४७	१०।०९।२२	८।११।३५	८।१८।३७	३१

★ अयनांश सारिणी (त) ★

ई. सन्	अं.	क.	वि.	ई. सन्	अं.	क.	वि.	ई. सन्	अ.	क.	वि.
१९००	२२	३७	३८	१९३१	२२	५३	३६	१९६२	२३	१९	३४
१९०१	२२	२८	२८	१९३२	२२	५४	२६	१९६३	२३	२०	२४
१९०२	२२	२९	१८	१९३३	२२	५५	१६	१९६४	२३	२१	१४
१९०३	२२	३०	९	१९३४	२२	५६	०७	१९६५	२३	२२	०५
१९०४	२२	३०	५९	१९३५	२२	५६	५७	१९६६	२३	२२	५५
१९०५	२२	३१	४९	१९३६	२२	५७	४७	१९६७	२३	२३	४५
१९०६	२२	३२	३९	१९३७	२२	५८	३७	१९६८	२३	२४	३५
१९०७	२२	३३	३०	१९३८	२२	५९	२८	१९६९	२३	२५	२६
१९०८	२२	३४	२०	१९३९	२३	००	१८	१९७०	२३	२६	१६
१९०९	२२	३५	१०	१९४०	२३	१	०८	१९७१	२३	२७	०५
१९१०	२२	३६	००	१९४१	२३	१	५८	१९७२	२३	२७	५६
१९११	२२	३६	५१	१९४२	२३	२	४९	१९७३	२३	२८	४७
१९१२	२२	३७	४१	१९४३	२३	३	३९	१९७४	२३	२९	३७
१९१३	२२	३८	३१	१९४४	२३	४	२९	१९७५	२३	३०	२७
१९१४	२२	३९	२२	१९४५	२३	५	१९	१९७६	२३	३१	१७
१९१५	२२	४०	१२	१९४६	२३	६	१०	१९७७	२३	३२	०८
१९१६	२२	४१	०२	१९४७	२३	७	००	१९७८	२३	३२	५८
१९१७	२२	४१	५२	१९४८	२३	७	५०	१९७९	२३	३३	४८
१९१८	२२	४२	४३	१९४९	२३	८	४१	१९८०	२३	३४	३८
१९१९	२२	४३	३३	१९५०	२३	९	३१	१९८१	२३	३५	२९
१९२०	२२	४४	२३	१९५१	२३	१०	२१	१९८२	२३	३६	१९
१९२१	२२	४५	१३	१९५२	२३	११	११	१९८३	२३	३७	०९
१९२२	२२	४६	०४	१९५३	२३	१२	०२	१९८४	२३	३७	५९
१९२३	२२	४६	५४	१९५४	२३	१२	५२	१९८५	२३	३८	५०
१९२४	२२	४७	४४	१९५५	२३	१३	४२	१९८६	२३	३९	४०
१९२५	२२	४८	३४	१९५६	२३	१४	३२	१९८७	२३	४०	४०
१९२६	२२	४९	२५	१९५७	२३	१५	२३	१९८८	२३	४१	२०
१९२७	२२	५०	१५	१९५८	२३	१६	१३	१९८९	२३	४२	११
१९२८	२२	५१	०५	१९५९	२३	१७	०३	१९९०	२३	४३	०२
१९२९	२२	५१	५५	१९६०	२३	१७	५३	१९९१	२३	४३	५२
१९३०	२२	५२	४६	१९६१	२३	१८	४४	१९९२	२३	४४	४२

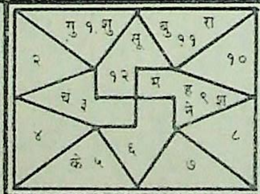
★ अयनांश सारिणी (थ) ★
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता०	अयनगति विकला	मास	ता०	अयनगति विकला	मास	ता०	अयनगति विकला
जन	१	०	अप्रै.	६	१३	जु.	२	२५
	८	१		१३	१४		९	२६
	१५	२		२०	१५		१७	२७
	२३	३		२७	१६		२४	२८
	३०	४	मई	५	१७		३१	२९
फर.	६	५		१२	१८	अग.	७	३०
	१४	६		१९	१९		१५	३१
	२१	७		२७	२०		२२	३२
	२८	८	जून	३	२१		२९	३३
मार्च	७	९		१०	२२	सित.	६	३४
	१५	१०		१७	२३		१३	३५
	२२	११		२५	२४		२०	३६
	२९	१२	जु.	२	२५		२७	३७
						अक्टू	५	३८
							१२	३९
							१९	४०
							२७	४१
						नव.	३	४२
							१०	४३
							१७	४४
							२५	४५
						दिस.	२	४६
							९	४७
							१७	४८
							२४	४९
							३१	५०

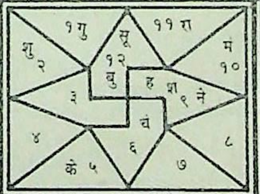
श्री संवत् २०४५ शकः १९१० चैत्र शुक्ल पक्षः १																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टै. टा.	ता. १९ मार्च से २ अप्रैल सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति २९ फाल्गुन से १३ चैत्र तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	चैत्र	रज्जब	मार्च	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
०	१	शु	५४	३७	२८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	प्रतिपदा का क्षय है अतः नवरात्र प्रारंभ, संवत्सराम्भ, १८ मार्च शुक्रवार को होगा, इसी दिन श्री गौतम ऋ.,
२९	२	श	४७	४२	२५	३५	रे.	४८	४७	२६	०१	ब्र.	२२	१४	बा	१४	५६	२९	५३	६	३०	१८	२७	६	३०	१९	मे. २६।०१	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उत्तर श्रृंगोन्नति, पंचक समाप्त २६।०१, सिंधारा, A आन्दोलन तृतीया सरहुल (बि)
३०	३	र	४२	०७	२३	२०	अश्वि.	४५	०२	२४	३०	ऐं	१९	९	तै	१२	२३	२९	५७	६	२९	१८	२८	७	शा.१	२०	मेष	सायन मेष में सूर्य १५।१०, उत्तरगोल में सूर्य प्रवेश, शाबान मु. ८, गणगौरी पूजन, मत्स्य जयन्ती, A
चै१	४	च	३८	१०	२१	४४	भ.	४२	५७	२३	३९	वै	१६	३५	व	१०	२६	३०	०१	६	२८	१८	२८	८	२	२१	वृ. २१।३७	भद्रा १०।२६ से २१।४४ तक, राष्ट्रीय चैत्र प्रारंभ शके १९१० प्रा.
२	५	मं	३६	५	२०	५२	कृ.	४२	४५	२३	३२	वि	१४	३६	व	९	१२	३०	०६	६	२६	१८	२८	९	३	२२	वृष	लक्ष्मी पंचमी,
३	६	बु	३६	०	२०	४९	रो.	४४	३०	२४	१३	प्री	१३	१५	कौ	८	४४	३०	१०	६	२५	१८	२९	१०	४	२३	वृष	उ.षा. में मंगल १९।५५, स्कन्द ६, मेला माईसरखाना,
४	७	गु	३७	५५	२१	३३	मृ.	४८	१०	२५	३९	आ.	१२	३१	ग	९	०५	३०	१५	६	२३	१८	२९	११	५	२४	मि. १२।५६	भद्रा २१।३३ से *अन्नपूर्णापूजा, जैन आंयबिल ओली प्रारंभ,
५	८	शु	४१	३५	२३	००	आ.	५३	३०	२७	४६	सौ	१२	२२	वि	१०	११	३०	१९	६	२२	१८	२९	१२	६	२५	मिथुन	भद्रा १०।११ तक, अश्विनी ४ में गुरु २१।०५, कृत्तिका में शुक्र ९।५७, दुर्गा ८, मेला श्री मनसा देवी *
६	९	श	४६	४२	२५	२	पुन	६०	०	—	—	शो	१२	४२	बा	११	५७	३०	२४	६	२१	१८	३०	१३	७	२६	क. २३।४५	पू.भा. में बुध ६।५६, श्री राम ९ व्रत सबका, नवरात्र समाप्त,
७	१०	र	५२	५०	२७	२८	पुन.	०	१०	६	२४	अ.	१३	२६	तै	१४	१३	३०	२८	६	२०	१८	३०	१४	८	२७	कर्क	
८	११	च	५९	२५	३०	०५	पु	७	४०	९	२३	सु	१४	२३	व	१६	४६	३०	३२	६	१९	१८	३१	१५	९	२८	कर्क	भद्रा १६।४६ से ३०।०५ तक, मकर में मंगल १८।३३, वृष में शुक्र १५।२९, कामदा ११ व्रत स्मार्त
९	१२	म	६०	०	—	—	आश्ले.	१५	३०	१२	३०	धृ	१५	२४	व	१९	२४	३०	३६	६	१८	१८	३२	१६	१०	२९	सिं. १२।३०	कामदा ११ व्रत निम्बार्कों का, वैष्णवों का
१०	१२	बु	६	०	८	४१	म.	२३	१०	१५	३३	शू	१६	२२	बा	८	४१	३०	४०	६	१७	१८	३२	१७	११	३०	सिंह	रेवती में सूर्य २६।१२, प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी,
११	१३	गु	१२	५	११	६	पू.फा.	३०	१७	१८	२३	ग	१७	९	तै	११	६	३०	४४	६	१६	१८	३३	१८	१२	३१	कं. २५।०१	श्री महावीर जयन्ती (जैन) = चैत्री १५, शबरात महोत्सव यवनों का,
१२	१४	शु	१७	२०	१३	११	उ.फा.	३६	३५	२०	५३	वृ	१७	४१	व	१३	११	३०	४८	६	१५	१८	३३	१९	१३	अ.१	कन्या	भद्रा १३।११ से २६।०४ तक, मीन में बुध ११।५३, अप्रैल मा.४ ता.३०, सत्यव्रत, गुड फ्राइडे
१३	१५	श	२१	३२	१४	५१	ह.	४१	५०	२२	५८	ध्रु	१७	५३	ब	१४	५१	३०	५२	६	१४	१८	३४	२०	१४	२	कन्या	वैशाख स्नान प्रारंभ, सिद्धाचल यात्रा, श्री हनुमान जयन्ती (द. भारत) जैन आयंबिल ओली समाप्त, =

चैत्र शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४६८ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **चैत्र शु. १५ शनौ प्रातः स्टैं. टा ५/३० केतकी अहर्गणः ५४७६**

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	८	१०	०	०	८	१०	४
१०	८	२७	१८	९	२६	८	२१	२१
४२	३८	३६	२२	५१	२८	३७	१	१
०९	४२	३८	४५	१४	२५	१३	३७	३७
५९	७३३	४०	९१	१३	६०	१	३	३
०५	२९	२८	३६	३०	२४	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस वर्ष का राजा शुक्र हुआ है। वर्षा अच्छी होगी जिससे धान्यादि के उत्पादन में भी बढोत्तरी होगी। मंत्री पद बुध को मिला है जिससे व्यापारियों को धन लाभ कमाने के चांस प्राप्त होंगे। वर्ष प्रतिपदा का क्षय एवं सूर्य, मंगल, शनि, हर्षल, नेप्च्यून का केन्द्र योग देश-विदेश के लिये प्रतिकूल है। अनेक भारतीय दलों में विरोध तथा राजा-प्रजा में भी विरोध की भावना उत्पन्न होगी। पड़ौसी राष्ट्रों की गतिविधियों से भारतीय शासकों को चिंता व्यापेगी। अरब राष्ट्र, ईरान, इराक, अफगानिस्तान में जन-धन की हानि होगी। ता. २८ मार्च को मंगल मकर राशि में प्रवेश करेगा। जिसका फल – **"मकरे च स्थिते भौमे घृत, तैल महर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःखपीड़नम्॥"** घृतादि, रसपदार्थ, तैल, वनस्पति, गुड़, खांड, चीनी, शेयरबाजार और लोहा, मशीनरी सामान, सोना, चाँदी, आदि धातुपदार्थ तेज होगा। धान्य, चावल, मूंग मोंठ, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ आदि में मंदी या घटा-बढ़ी होगी। प्रजा को किन्ही कारणों से दुःख पीड़ा होगी। चन्द्रदर्शन एवं पूर्णिमा शनिवारी होने से व्यापारिक वस्तुओं में तेजी होगी।



सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	०९	११	००	०१	०८	१०	०४
१८	१४	०३	०१	११	०४	०८	२८	२८
४६	२२	००	१४	४०	३७	४७	३६	३६
३१	१५	१२	२४	२६	०६	३०	११	११
५९	७३९	४०	१०२	१३	५९	०	३	३
०८	३४	२५	४२	४९	१२	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती १	हस्त २	उ.षा. २	पू.भा. ४	अश्वि. ४	कृत्ति. ३	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

आकाशलक्षण – दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, [illegible] हानि होगी। मौसम में गर्मी का संचार होनें लगेगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० वैशाख कृष्ण पक्षः २																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम				तारीखें			चन्द्र संचार स्टैं. टा.	ता. ३ से १६ अप्रैल सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति १४ से २७ चैत्र तक। उत्तरायण गोल, बसन्त ऋतु।
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		हि.	मु.	अं.		
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	चैत्र	शाबान	अप्रैल	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
१४	१	र.	२४	३७	१६	०४	चि.	४६	०	२४	३०	व्या	१३	४४	कौ	१६	०४	३०	५७	६	१३	१८	३४	२१	१५	३	तु. ११।४८	उ.भा. में बुध १०।४७, वैशाख मास में जलदान धर्म घटादि दान करना चाहिए, ईस्टर सण्डे,
१५	२	चं.	२६	३२	१६	४८	स्वा.	४९	२	२५	४८	ह	१७	१४	ग	१६	४८	३१	१	६	११	१८	३५	२२	१६	४	तुला	भद्रा २८।५६ से, वक्री हर्षल २४।५६,
१६	३	मं.	२७	१५	१७	०४	वि.	५०	५२	२६	३१	व	१६	२२	वि	१७	०४	३१	५	६	१०	१८	३६	२३	१७	५	वृ. २०।१९	भद्रा १७।०४ तक, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।४९,
१७	४	बु.	२६	४०	१६	५२	अनु	५१	४०	२६	४९	सि	१५	०४	बा	१६	५२	३१	९	६	९	१८	३६	२४	१८	६	वृश्चिक	
१८	५	गु	२५	१५	१६	१४	ज्ये	५१	२२	२६	४१	व्य	१३	३३	तै	१५	१४	३१	१३	६	८	१८	३७	२५	१९	७	ध. २६।४५	रोहिणी में शुक्र १८।४०, बुध का अस्त पूर्व में २४।०४,
१९	६	शु	२२	४०	१५	११	मू	५०	२	२६	०८	व	११	३८	व	१५	११	३१	१७	६	७	१८	३८	२६	२०	८	धनु	भद्रा १५।११ से २६।३० तक,
२०	७	श.	१९	०२	१३	४३	पू.षा.	४७	४७	२५	१३	प	९	२४	व	१३	४३	३१	२२	६	६	१८	३८	२७	२१	९	धनु	भरणी १ में गुरु ९।१४,
२१	८	र	१४	३२	११	५३	उ.षा.	४४	४०	२३	५६	शि	६/२८	५२/०२	कौ	११	५३	३१	२६	६	४	१८	३९	२८	२२	१०	म. ६।५४	रेवती में बुध १८।४६,
२२	९	च	९	१०	९	४३	श्र	४०	४२	२२	२०	सा	२४	५८	ग	९	४३	३१	३०	६	३	१८	४०	२९	२३	११	मकर	भद्रा२०।३१ से, वक्री शनि ७।३७, वक्री नेपच्यून १८।५२,
२३	१०	म	३	२	७	१५	ध	३६	१०	२०	३०	शु	२१	४२	वि	७	१५	३१	३४	६	२	१८	४०	३०	२४	१२	कुं. ९।२६	भद्रा ७।१५ तक, श्रवण में मंगल १५।०८, पंचक प्रारंभ ९।२६, वरूथिनी ११ व्रत स्मार्तों का, A A श्री बल्लभाचार्य जयन्ती,
०	११	म	५६	२०	२८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी का क्षय,
२४	१२	बु	४९	१७	२५	४४	श	३१	१०	१८	२९	शु	१८	१८	कौ	१५	१०	३१	३८	६	१	१८	४१	वै १	२५	१३	कुंभ	सं. अश्वि. मेष में सूर्य १५।३४, मु. १५ पुण्यकाल ९।१० से, मेला वैशाखी (पंजाब) वरूथिनी ११ + + व्रत वैष्णवों का
२५	१३	गु	४२	१०	२२	५२	पू.भा.	२५	५७	१६	२३	ब्र	१४	५०	ग	१२	१८	३१	४२	६	०	१८	४२	२	२६	१४	मी. १०।५४	भद्रा २२।५२ से, प्रदोष व्रत,
२६	१४	शु	३५	१५	२०	०५	उ.भा.	२०	५२	१४	२०	ऐ	११	२३	वि	९	२८	३१	४६	५	५९	१८	४२	३	२७	१५	मीन	भद्रा ९।२८ तक,
२७	३०	श.	२८	५०	१७	३०	रे	१६	१५	१२	२८	वै	८/२८	४/५९	च	६	४५	३१	५०	५	५८	१८	४३	४	२८	१६	मे. १२।२८	पंचक समाप्त १२।२८, शनैश्चरी अमावस्या, अमावस्या पुण्यं,
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		

वैशाख कृ० ८ रवी प्रातः स्टे . टा. ५/३० फेतकी अहर्गणः ५४८४ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) वैशाख कृ० ३० शनौ प्रातः स्टे . टा ५/३० फेतकी अहर्गणः ५४९०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०८	०९	११	००	०१	०८	१०	०४
२६	२९	०८	१५	१३	१२	०८	२८	२८
३८	०९	२३	३६	३१	१७	५१	१०	१०
४३	३७	११	४७	५१	५३	२९	४५	४५
५८	८४७	४०	११४	१४	५५	०	३	३
५४	४२	२०	२४	०४	१८	०६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती ४	उ.षा. १	उ.षा. ४	उ.भा. ४	भरणी १	रोहिणी १	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

१ गु
१२ सू
११ रा
शु २
मं १०
३
बु
चं ह ९
ने श
४
६
८
५ के
७

इस मास में पांच रविवार रोगोत्पात कारक हैं। ता. ११ अप्रैल को शनि वक्री हो रहा है तथा गुरु अतिचार की चरम सीमा पर विचरण कर रहा है अतः युद्ध प्रिय देशों की दुर्नीति, शान्ति प्रिय देशों के लिये भयप्रद रहेगी। यथा – "अतिचार गते जीवे शनौ वक्रत्व मागते। हा ! हा !! भूतं जगत्सर्व रुण्ड मुण्डा च मेदिनी॥" मंत्री मंडलों में उलटफेर होकर मतभेद उग्र होंगे। किसी प्रमुख नेता का देहावसान या पदच्युति होगी। भारत में भी अराजकता, अनैतिकता से अशांति व्यापेगी। यहां मंगल शनि का द्विर्दादश योग भी है अतः विश्व की आर्थिक स्थिति खराब रहेगी। भ्रष्टाचार, अनैतिकता की वृद्धि होगी। पूँजीवादी राष्ट्र भी ऋण योजनाओं में कमी करेंगे। वैशाख वदि १४ शुक्रवार होने से धान्यादि का उत्पादन श्रेष्ठ होगा। यथा – "वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारौचेद्गुरुभार्गवौ। तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथ्वी तले॥" धान्यादि पदार्थों में मंदी होकर तेजी तथा रूई में मंदी बनी रहें। सोना, चाँदी मे घटावढ़ी होकर तेजी की चाल निकलेगी।

गु २
१२ चं
सू
बु
१
रा ११
३
गु
मं
१०
४
के ५
७
श ह ९
ने
६
८

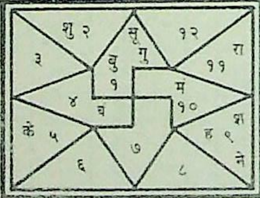
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	११	९	११	००	०१	०८	१०	०४
०२	२५	१२	२७	१४	१७	०८	२७	२७
३१	४८	२४	२४	५६	४०	५०	५१	५१
३८	४९	५१	४७	४१	३७	२३	४०	४०
५८	८५९	४०	१२२	१४	५१	००	०३	०३
४२	४९	१२	४७	१३	४५	३१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	ना	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि. १	रेवती ३	श्रवण १	रेवती ४	भरणी १	रोहि. ३	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

आकाशलक्षण – सुदूर पूर्वोत्तर में बादल [illegible] -बांदी होगी। ऋतु परिवर्तन होगा।

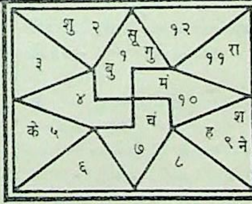
श्री संवत् २०४५ शकः १९१० वैशाख शुक्ल पक्षः ३																		दिन मान		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हिं.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टॅं. टा.	ता. १७ अप्रैल से १ मई सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति २८ चैत्र से ११ वैशाख तक। उत्तरायण गोल, वसन्त ऋतु।
रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	वैशाख	शाबान	अप्रैल	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅं. टा. घंटा मिनटों में है।
२८	१	र.	२३	१०	१५	१३	अश्वि.	१२	२०	१०	५३	प्री	२६	१४	ब	१५	१३	३१	५४	५	५७	१८	४३	५	२९	१७	मेष	अश्वि. मेष में बुध ११।४६, चन्द्रदर्शन मु. १५, द. शृंगोन्नति
२९	२	चं.	१८	५५	१३	३०	भ.	९	३५	९	४६	आ	२३	५६	कौ	१३	३०	३१	५८	५	५६	१८	४४	६	र.१	१८	वृ. १५।३९	रमजान मु. ९, रोजा प्रारंभ, शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम जयन्ती
३०	३	मं.	१६	२०	१२	२०	कृ.	८	१७	९	१४	सौ	२२	१०	ग	१२	२०	३२	०२	५	५५	१८	४५	७	२	१९	वृष	भद्रा २४।०१ से, सायन वृष में सूर्य २६।१६, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, अक्षया ३ श्री बदरी-केदारनाथ यात्रा प्रा.,
३१	४	बु	१४	५७	११	५३	रो.	८	४०	९	२२	शो	२०	५८	वि	११	५३	३२	०६	५	५४	१८	४५	८	३	२०	मि. २१।४८	भद्रा ११।५३ तक, गुरु वृद्धत्व प्रारंभ ७।३३,
वै.१	५	गु	१५	४५	१२	११	मृ.	१०	५५	१०	१५	अ	२०	२२	बा	१२	११	३२	१०	५	५३	१८	४६	९	४	२१	मिथुन	राष्ट्रीय वैशाख प्रारंभ, श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य जयन्ती,
२	६	शु.	१८	२७	१३	१५	आ.	१५	०	११	५२	सु	२०	२१	तै	१३	१५	३२	१४	५	५२	१८	४६	१०	५	२२	मिथुन	मृगशिर में शुक्र २६।२१, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती,
३	७	श.	२२	४५	१४	५८	पुन.	२०	४०	१४	०८	धृ	२०	४९	व	१४	५८	३२	१७	५	५२	१८	४७	११	६	२३	क. ७।३३	भद्रा १४।५८ से २८।०२तक, भरणी में बुध १९।२६, भरणी २ में गुरु ११।२६, गुरु अस्त पश्चिम में A
४	८	र.	२८	२२	१७	१२	पु.	२७	३७	१६	५४	शु	२१	३८	ब	१७	१२	३२	२१	५	५१	१८	४७	१२	७	२४	कर्क	दुर्गा ८, A ७।३३, गंगासप्तमी,
५	९	चं.	३४	४२	१९	४३	आश्ले.	३५	१७	१९	५७	गं	२२	३८	बा	०६	२६	३२	२५	५	५०	१८	४८	१३	८	२५	सिं. १९।५७	अगस्त्य अस्त १६।४७,
६	१०	मं.	४१	१०	२२	१७	म.	४३	२	२३	०२	वृ	२३	३९	तै	९	०१	३२	२९	५	४९	१८	४९	१४	९	२६	सिंह	
७	११	बु	४७	७	२४	३९	पू.फा.	५०	१७	२५	५५	ध्रु	२४	३१	व	११	३०	३२	३३	५	४८	१८	४९	१५	१०	२७	सिंह	भद्रा ११।३० से २४।३९ तक, भरणी में सूर्य ७।२०, मोहिनी एकादशी व्रत सबका,
८	१२	गु	५२	५	२६	३७	उ.फा.	५६	३५	२८	२५	व्या	२५	५	ब	१३	४२	३२	३६	५	४७	१८	५०	१६	११	२८	कं. ८।३१	K कूर्मजयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, यम प्रीत्यर्थ जल कुंभ दान
९	१३	शु	५५	४०	२८	०२	ह.	६०	०	—	—	ह	२५	१४	कौ	१५	२४	३२	४०	५	४६	१८	५०	१७	१२	२९	कन्या	कृत्तिका में बुध २७।०३, प्रदोष व्रत,
१०	१४	श.	५७	५०	२८	५३	ह.	१	३५	६	२३	व	२४	५७	ग	१६	३०	३२	४३	५	४५	१८	५१	१८	१३	३०	तु. १९।०७	भद्रा २८।५३ से, श्री नृसिंह १४ जयन्ती,
११	१५	र.	५८	३५	२९	११	चि.	५	१५	७	५०	सि	२४	१४	वि	१७	०२	३२	४७	५	४५	१८	५१	१९	१४	म.१	तुला	भद्रा १७।०२ तक, वृष में बुध १८।३८, मई मा. ५ ता. ३१, मई दिवस, वैशाखी १५, सत्यव्रत, K
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	

वैशाख शु० ८ रवी प्रातः स्टें. टा ५/३० केतकी अहर्गणः ५४९८ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **वैशाख शु० १५ रवी प्रातः स्टें. टा ५/३० केतकी अहर्गणः ५५०५**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
००	०३	०९	००	००	०१	०८	१०	०४
१०	११	१७	१४	१६	२४	०८	२७	२७
२०	००	४५	१३	५०	१२	४३	२६	२६
२२	१२	२८	५१	४६	१३	२२	१४	१४
५८	७१२	३९	१२८	१४	४५	०१	०३	०३
२६	४०	५६	१८	१८	०९	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
४ अश्वि.	३ पु.	३ श्रवण	१ भरणी	२ भरणी	१ मृग.	३ मूल	३ पू.भा.	१ उ.फा.



इस पक्ष में रविवार का चन्द्रदर्शन मुहूर्त १५ का है अतः सोना, चांदी, लोहा, पीतल में तेजी होगी। सूर्य-बुध-गुरु का शनि-हर्शल-नेपच्यून-केतु से त्रिकोण योग होने से अशांति में शांति का वातावरण बनेगा। भारत को विदेशों से सहायता प्राप्त होगी। युद्धप्रिय राष्ट्र भी शान्ति का क्षणिक सहारा लेकर अपना वर्चस्व बढ़ाने में प्रयत्नशील रहेंगे। वृष राशि के शुक्र का फल–"भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथिवी तले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्ग्रहकारणम्॥" धान्यादि खाद्य पदार्थों में मन्दी होकर तेजी होगी। रूई में मंदी बनी रहे। प्रजा में सुख शांति का संचार होगा। किन्तु शुक्र का राहु-केतु से केन्द्र योग होने से विश्व के कुछ भागों में उत्पात, अराजकता, श्रमिक आन्दोलन आदि होंगे। आर्थिक समस्या तथा मंहगाई बढ़ोतरी से प्रजा को कष्ट होगा। पक्षारंभ में जौ, गेहूँ, चना, मूंग, मोंठ, बाजरा, मूंगा, जवाहरात, में तेजी तथा रसादि पदार्थों गुड़, खांड, तेल , तिल, सरसों, घृत, रूई, कपास, आदि में मंदी होगी।



सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा	के.
००	०६	०९	००	००	०१	०८	१०	०३
१७	०५	२२	२८	१८	२९	०८	२७	२७
०८	२५	२४	५४	३०	०६	३२	०३	०३
३९	२२	१५	२८	५३	३९	१५	५८	५८
५८	७७०	३९	११९	१४	३७	०१	०३	०३
१२	४०	४२	४१	१९	३६	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
२ भरणी	४ चित्रा	४ श्रवण	१ कृत्ति.	२ भरणी	२ मृग.	३ मूल	३ पू.भा.	१ उ.फा.

आकाश लक्षण – गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र में वायुवेग का जोर रहेगा। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में वायु के साथ वर्षा होगी। कहीं कहीं बिजली मेघ गर्जना के साथ भारी वर्षा भी होगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० प्रथम(शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ४

ता. २ से १५ मई सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति १२ से २५ वैशाख तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हिं. वैशाख	मु. रमजान	अं. मई	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१२	१	चं	५७	५५	२८	५४	स्वा	७	२२	८	४१	ब्र	२३	०३	ब	१७	०६	३२	५१	५	४४	१८	५२	२०	१५	२	वृ. २६।५६	धनिष्ठा में मंगल १५।१२, मिथुन में शुक्र १५।५५, बुध का उदय पश्चिम में १०।३८, श्री नारद जयन्ती,
१३	२	मं	५६	२	२८	०८	वि	८	१७	९	०१	वै	२१	२९	तै	१६	३४	३२	५५	५	४३	१८	५३	२१	१६	३	वृश्चिक	
१४	३	बु	५३	१२	२६	५९	अनु	७	५७	८	५३	प	१९	३५	व	१५	३६	३२	५८	५	४२	१८	५३	२२	१७	४	वृश्चिक	भद्रा १५।३६ से २६।५९ तक, श्री श्री मां आनन्दमयी जयन्ती,
१५	४	गु	४९	३५	२५	३१	ज्ये	६	४५	८	२३	शि	१७	२४	ब	१४	१७	३३	०२	५	४१	१८	५४	२३	१८	५	ध. ८।२३	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२।४१,
१६	५	शु	४५	२३	२३	४९	मू	४	५०	७	३६	सि	१५	०१	कौ	१२	४२	३३	०५	५	४०	१८	५४	२४	१९	६	धनु	रोहिणी में बुध २६।३४,
१७	६	श	४०	४२	२१	५६	पू.षा	२ / ५२	२२ / २५	६ / २९	३६ / २५	सा	१२	२९	ग	१०	५४	३३	०८	५	३९	१८	५५	२५	२०	७	म. १२।१८	भद्रा २१।५६ से, भरणी ३ में गुरु १०।५४, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती,
१८	७	र	३५	५६	१९	४२	श्र	५६	१२	२८	०८	शु	९	४८	वि	८	५७	३३	१२	५	३९	१८	५६	२६	२१	८	मकर	भद्रा ८।५७ तक, पू.भा. २ में राहु, पू.फा. ४ में केतु १८।१९,
१९	८	चं	३०	२७	१७	४९	ध	५२	४७	२६	४५	शु	७ / २८	०३ / १३	बा	६	४३	३३	१५	५	३८	१८	५६	२७	२२	९	कुं. १५।२७	पंचक प्रारंभ १५।२७,
२०	९	म	२५	०	१५	३७	श	४९	१५	२५	१९	ऐ	२५	२०	ग	१५	३७	३३	१८	५	३७	१८	५७	२८	२३	१०	कुंभ	भद्रा २६।३१ से, कृत्तिका में सूर्य २५।३४
२१	१०	बु	१९	२७	१३	२४	पू.भा	४५	३७	२३	५२	वै	२२	२६	वि	१३	२४	३३	२१	५	३७	१८	५७	२९	२४	११	मी. १८।१३	भद्रा १३।२४ तक,
२२	११	गु	१३	५५	११	१०	उ.भा	४२	०५	२२	२६	वि	१९	३४	बा	११	१०	३३	२४	५	३६	१८	५८	३०	२५	१२	मीन	कुंभ में मंगल १८।५२, अपरा (भद्रकाली) ११ व्रत सबका,
२३	१२	शु	८	३२	९	००	रे	३८	४५	२१	०५	प्री	१६	४५	तै	९	००	३३	२७	५	३५	१८	५९	३१	२६	१३	मे. २१।०५	पंचक समाप्त २१।०५, प्रदोष व्रत, जुमातुउलविदा
२४	१३	श	३	२७	६	५८	अश्वि	३५	५२	१९	५६	आ	१४	०५	व	६	५८	३३	३१	५	३५	१८	५९	ज्ये १	२७	१४	मेष	भद्रा ६।५८ से १८।०१ तक, सं. वृष में सूर्य १२।२५, मु. ३० पुण्यकाल ६।०१ से,
०	१४	श	५८	५५	२९	०९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी का क्षय,
२५	३०	र	५५	१५	२७	४०	भ	३३	४५	१९	०४	सौ	११	३७	च	१६	२२	३३	३४	५	३४	१९	०	२	२८	१५	वृ. २४।५६	मृगशिर में बुध २८।०१, वट सावित्री व्रत पूजन, अमावस्या पुण्य, भावुका ३०,
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

प्र० ज्येष्ठ कृ० ८ चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५१३ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) प्र० ज्येष्ठ कृ० ३० रवौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५१९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	०९	०९	०१	००	०२	०८	१०	०४
२४	२४	२७	१३	२०	०३	०८	२६	२६
५३	०७	४०	३४	२५	२९	१४	३८	३८
३१	३७	३२	२०	२४	५०	२०	३१	३१
५८	८४८	३९	९५	१४	२६	०२	०३	०३
००	५८	१८	३०	१८	१७	३४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
४ भ.	१ धनि.	२ धनि.	२ रोहि.	३ भ.	४ मृ.	३ मू.	२ पू.भा.	४ पू.फा.

शु, बु २, सू, १२, ११, रा., ३, १, गु, च, ४, १० म, श, के, ५, ह ९, ७, ६, ८, ने

इस पक्ष के पूर्वार्ध में मंगल का शनि राहु से द्विर्दादश योग तथा शुक्र केतु से षडष्टक योग है। अतः संसार की आर्थिक स्थिति खराब होगी। कई देशों की वित्तीय नीति खराब होगी। कई देशों की वित्तीय नीति खराब होने से व्यापारिक लेन-देनों में कमी होगी। राजनेता, भ्रष्टाचार में लिप्त होकर जनता के कार्यों में कम ध्यान देंगे। ता. २ मई को पश्चिम में बुध का उदय भी उत्पातकारी है। फल –"नोत्पात परित्यक्त कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्॥" उत्तरी भारत में गर्मी का जोर बढ़ेगा। कहीं आंधी, तूफान से संचार व्यवस्थाओं में बाधा उत्पन्न होगी। पूंजीवादी राष्ट्रों का प्रभाव बढ़ेगा। धान्यादि सभी व्यापारिक वस्तुओं में भारी घटाबढी होगी। जिससे व्यापारी वर्ग हैरान होंगे। वृष संक्राति शनिवार की होने से सभी धान्यादि में तेजी होगी। पक्षारंभ में अरहर, गुआर, रुई, कपास, सूत, पाट, वारदाना, अरंडी, तेल, तिल, सरसों में मंदी जौ, गेहूँ, चना, मूंग, मोंठ, बाजरा में तेजी होगी। गुड़, खांड, प्रवाहि रस पदार्थों में घटाबढ़ी चलेगी।

गु ३, सू, २, बु, च, १, गु, १२, ४, म ११, रा, ५ के, ६, १०, ८, श, ७, ह ९ ने

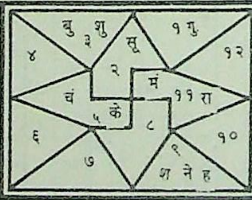
सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०१	००	१०	०१	००	०२	०८	१०	०४
००	१८	०१	२२	२१	०५	०७	२६	२६
४१	५१	३५	११	५१	४१	५७	१९	१९
११	४८	२०	४३	०६	२५	३१	२६	२६
५७	८२५	३८	७२	१४	१५	०३	०३	०३
५२	३१	५४	४८	१०	३०	०६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
२ कृति.	२ भरणी	३ धनिष्ठा	४ रोहिणी	३ भरणी	४ मृग.	३ मूल	२ पू.भा.	४ पू.फा.

आकाशलक्षण – इस पक्ष में यत्र-तत्र वायु वेग के साथ मेघ गर्जन, बिजली की चमक एवं वर्षा होगी। कहीं आंधी, पानी, लू, बवंडर से जनजीवन अस्त व्यस्त होगा। पक्षान्त में गर्मी जोर पकड़ेगी।

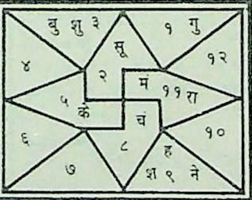
श्री संवत् २०४५ शकः १९१० प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ५																		दिन मान		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्योदय		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्यास्त		तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र संचार स्टॅं. टा.	ता. १६ से ३१ मई सन् १९८८ ई. राष्ट्रीयमिति २६ वैशाख से १० ज्येष्ठ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	अंग्रेज	मुसलमान	मई	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅं. टा. घंटा मिनटों में है।
२६	१	चं.	५२	४०	२६	३८	कृ.	३२	३२	१८	३५	शो	९	२७	किं	१५	०६	३३	३७	५	३४	१९	१	३	२९	१६	वृष	व. मूल २ में हर्षल १२/०१, अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रारंभ, श्री गंगादशाश्वमेध स्नानारंभ,
२७	२	मं.	५१	३०	२६	०९	रो.	३२	४०	१८	३७	अ	७	४०	बा	१४	१९	३३	४०	५	३३	१९	१	४	३०	१७	वृष	चन्द्रदर्शन मु. ३०, दक्षिण श्रृंगोन्नति,
२८	३	बु	५२	५५	२६	१८	मृ.	३४	२०	१९	१६	सु	६	२१	तै	१४	०९	३३	४३	५	३२	१९	२	५	श.१	१८	मि.६/५६	शव्वाल मु. १०, ईदुलफित्र (ईद)
२९	४	गु	५४	००	२७	०८	आ.	३७	३२	२०	३३	धृ	५/२९	३३/१५	व	१४	३८	३३	४५	५	३२	१९	२	६	२	१९	मिथुन	भद्रा १४/३८ से २७/०८ तक, गुरू उदय पूर्व में १९/५६,
३०	५	शु.	५७	५०	२८	३९	पुन.	४२	२७	२२	३०	गं	२९	२८	ब	१५	४७	३३	४८	५	३१	१९	३	७	३	२०	क. १६/००	आर्द्रा में शुक्र १५/५४, सायन मिथुन में सूर्य २५/२८,
३१	६	श.	६०	०	—	—	पु	४८	४२	२५	००	वृ	—	—	कौ	१७	३४	३३	५०	५	३१	१९	३	८	४	२१	कर्क	भरणी ४ में गुरू १२/१७,
ज्ये.१	६	र.	२	५०	६	३८	अश्ले.	५६	०	२७	५४	वृ	६	०६	तै	०६	३८	३३	५२	५	३०	१९	४	९	५	२२	सिं. २७/५४	शतभिषा में मंगल २६/४८, वक्री शुक्र १९/०७, राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रारंभ, गुरू बाल्य समाप्त १९/५६,
२	७	चं.	८	५२	९	०३	म.	६०	०	—	—	ध्रु	७	०२	व	९	०३	३३	५५	५	३०	१९	४	१०	६	२३	सिंह	भद्रा ९/०३ से २२/१९ तक, मिथुन में बुध ५/५९,
३	८	मं.	१५	१२	११	३५	म.	३	४२	६	५९	व्या	८	०६	ब	११	३५	३३	५७	५	३०	१९	५	११	७	२४	सिंह	रोहिणी में सूर्य २१/४२, वक्री मृगशिर में शुक्र २१/२०,
४	९	बु	२१	१७	१४	००	पू.फा.	११	१७	१०	००	ह	९	०४	कौ	१४	००	३३	५९	५	२९	१९	५	१२	८	२५	कं. १६/४०	
५	१०	गु	२६	२०	१६	०१	उ.फा.	१७	५७	१२	४०	व	९	४८	ग	१६	०१	३४	१	५	२९	१९	६	१३	९	२६	कन्या	भद्रा २८/४९ से, श्रीगंगादशमी (गंगा दशहरा)
६	११	शु	२९	५८	१७	२८	ह.	२३	१७	१४	४८	सि	१०	०७	वि	१७	२८	३४	४	५	२९	१९	६	१४	१०	२७	तु. २७/३३	भद्रा १७/२८ तक, पद्मा (पुरुषोत्तमा) ११ व्रत सबका,
७	१२	श.	३१	५२	१८	१४	चि.	२७	००	१६	१७	व्य	९	५५	ब	५	५६	३४	६	५	२९	१९	७	१५	११	२८	तुला	शनि प्रदोष व्रत,
८	१३	र.	३२	०	१८	१६	स्वा.	२९	०	१७	०४	व	९	०९	कौ	६	२१	३४	८	५	२८	१९	७	१६	१२	२९	तुला	
९	१४	चं.	३०	२२	१७	३७	वि.	२९	१२	१७	०९	प	७	५०	ग	६	०२	३४	१०	५	२८	१९	८	१७	१३	३०	वृ. ११/०७	भद्रा १७/३७ से २९/०१ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा,
१०	१५	मं.	२७	१७	१६	२३	अनु	२८	०	१६	४०	शि	६/२७	०/४२	ब	१६	२३	३४	१२	५	२८	१९	८	१८	१४	३१	वृश्चिक	वक्री बुध २८/१६, पूर्णिमा पुण्य

प्र० ज्येष्ठ शु० ८ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५२८ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **प्र० ज्येष्ठ शु० १५ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५३५**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	कें.
०१	०४	१०	०२	००	०२	०८	१०	०४
०९	१२	०७	००	२३	०६	०७	२५	२५
२१	३५	२२	३८	५८	४३	२७	५०	५०
०५	३३	३०	१८	१२	०६	२४	४९	४९
५७	७१०	३८	३४	१४	०४	०३	०३	०३
३८	२२	०७	३६	००	४२	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४	४	१	३	४	१	३	२	४
कृत्ति.	मघा	शत.	मृ.	भरणी	आर्द्रा	पू.षा.	पू.भा.	पू.फा.



इस पक्ष में कुंभ राशि में मंगल-राहु का योग चालू हुआ है। यह योग ३० जून तक रहेगा। जिसका फल – "राहुरंगारकश्चैक राशि ऋक्षगतौ तथा। महा भयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥" यहां से आगे आगे डेढ़ मास की अवधि में विश्व के विभिन्न भागों में उत्पन्न अस्थाई शांति एवं सुभिक्ष का वातावरण क्रमशः विलुप्त होता जाएगा। युद्ध-प्रिय राष्ट्रों में उग्रभावना के बल पर स्वार्थ सिद्धि की भावना प्रबल होती दिखाई देगी। भारतीय जनता में भी आक्रोश व्याप्त होगा। पश्चिमोत्तरीय भाग में भीषण गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं अग्निकांड, लू, बवण्डर, उत्पात, अराजकता, रोग भय, महामारी आदि से प्रजा को कष्ट होगा। मंगलवार का चन्द्रदर्शन रूई, अनाज, सोना, चांदी, गुड़, खांड में घटाबढ़ी या मंदी के बाद तेजी करेगा। तारीख १९ मई को पूर्व में गुरू का उदय है, यह कपास, सन, सोना, चांदी, मूंगफली, में तेजी कारक है। घृत, गुड़, तेल, तिल में मंदी करेगा।



सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु	श.	रा.	के.
०१	७	१०	०२	००	०२	०८	१०	०४
१६	१०	११	०३	२५	०५	०७	२५	२५
०४	१६	४७	०३	३५	१९	००	२८	२८
०३	५४	२९	१७	३५	३५	४७	३४	३४
५७	२६	३७	१	१३	२१	०४	०३	०३
२८	१४	२३	५९	४७	२५	०१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१	३	१	३	४	४	३	२	४
रोहि.	अनु	शत.	मृ.	भरणी	मृ.	पू.षा.	पू.भा.	पू.फा.

आकाश लक्षण – पक्षारम्भ में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान में आंधी तूफान के साथ बादल वर्षा होकर आगे गर्मी का जोर होगा। पूर्वोतर में वर्षा के साथ ओले भी पडेंगे। ऋतु विपर्यय रहेगा।

श्री संवत् २०४५ शकः१९१० द्वितीय(अधिक)ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ६																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टै. टा.	ता. १ से १४ जून सन् १९८८ ई. राष्ट्रीयमिति ११ से २४ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	ज्येष्ठ	शव्वाल	जून	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।
११	१	बु	२३	०	१४	४०	ज्ये.	२५	३५	१५	४२	सा	२५	०८	कौ	१४	४०	३४	१४	५	२८	१९	८	१९	१५	१	ध. १५/४२	जून मा. ६ ता. ३०,
१२	२	गु	१७	५०	१२	३६	मू.	२२	२०	१४	२४	शु	२२	१८	ग	१२	३६	३४	१५	५	२८	१९	९	२०	१६	२	धनु	भद्रा २३/२८ से,
१३	३	शु	१२	५	१०	१८	पू.षा.	१८	३२	१२	५३	शु	१९	२०	वि	१०	१८	३४	१७	५	२८	१९	९	२१	१७	३	म. १८/२९	भद्रा १०/१८ तक, बुध का अस्त पश्चिम में २६/१७, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२/२१,
१४	४	श.	६	५	७	५४	उ.षा.	१४	३०	११	१६	ब्र	१६	१८	बा	७	५४	३४	१९	५	२८	१९	१०	२२	१८	४	मकर	कृत्तिका १ में गुरू २२/०२,
१५	५	र.	०	५	५	२९	श्र.	१०	३०	९	३९	ऐं	१३	१८	तै	५	२९	३४	२०	५	२७	१९	१०	२३	१९	५	कुं. २०/५३	भद्रा २७/०८ से, वक्री मूल २ में शनि ८/०९, पंचक प्रारंभ २०/५३,
०	६	र.	५४	१२	२७	०८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी का क्षय,
१६	७	चं.	४८	४०	२४	५५	ध.	६	४०	८	०७	वै	१०	२१	वि	१४	०१	३४	२२	५	२७	१९	११	२४	२०	६	कुंभ	भद्रा १४/०१ तक, शुक्र वृद्धत्व प्रारंभ २८/५८,
१७	८	मं.	४३	२७	२२	५०	श.	३	१०	६	४३	वि	७/२८	३२/५०	बा	११	५१	३४	२३	५	२७	१९	११	२५	२१	७	मी. २३/४७	मृगशिर में सूर्य १९/४०,
१८	९	बु	३८	४२	२०	५६	पू.भा.	०/५७	२/२२	५/२८	२८/२४	आ	२६	१७	तै	९	५२	३४	२५	५	२७	१९	१२	२६	२२	८	मीन	
१९	१०	गु	३४	२७	१९	१४	रे.	५५	१२	२७	३२	सौ	२३	५४	व	८	०४	३४	२६	५	२७	१९	१३	२७	२३	९	मे. २७/३२	भद्रा ८/०४ से १९/१४ तक, शुक्र अस्त पश्चिम में २८/५८, पंचक समाप्त २७/३२,
२०	११	शु	३०	४२	१७	४४	अश्वि	५३	३२	२६	५२	शो	२१	४१	ब	६	२७	३४	२७	५	२७	१९	१३	२८	२४	१०	मेष	वक्री वृष में बुध २३/२७, वक्री वृष में शुक्र १९/५७, कमला (पुरूषोत्तमा) ११ व्रत सबका,
२१	१२	श.	२७	३२	१६	२८	भ.	५२	३५	२६	२९	अ	१९	४०	तै	१६	२८	३४	२८	५	२७	१९	१४	२९	२५	११	मेष	शनि प्रदोष व्रत,
२२	१३	र.	२५	७	१५	३०	कृ.	५२	२२	२६	२४	सु	१७	५५	व	१५	३०	३४	३०	५	२७	१९	१४	३०	२६	१२	वृ. ८/२८	भद्रा १५/३० से २७/०९ तक,
२३	१४	चं.	२३	३७	१४	५४	रो.	५३	१०	२६	४३	धृ	१६	२६	श	१४	५४	३४	३१	५	२७	१९	१५	३१	२७	१३	वृष	पू.भा. में मंगल १६/११, *पुरूषोत्तम (अधिक) मास समाप्त,
२४	३०	मं.	२३	१५	१४	४४	मृ.	५५	७	२७	२९	शु	१५	१९	ना	१४	४४	३४	३२	५	२६	१९	१५	आ.१	२८	१४	मि. १५/६	सं. मिथुन में सूर्य १९/०१, मु. ३०, पुण्यकाल १२/३७ से, पौमवती अमावस्या पुण्यं *
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

द्वि० ज्येष्ठ कृ० ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५४२ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) द्वि ज्येष्ठ कृ० ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५४९

सू.	चं	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०१	१०	१०	०२	००	०२	०८	१०	०४
२२	१९	१६	०१	२७	०२	०६	२५	२५
४६	१६	०७	४८	११	०७	३२	०६	०६
०८	३८	०६	०९	२७	३९	०४	१८	१८
५७	८४३	३६	२५	१३	३४	०४	०३	०३
२४	५७	३६	३०	२९	०६	१९	११	११
मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४ रोहि.	४ शत.	३ शत.	३ मृग.	१ कृत्ति.	३ मृग.	२ मूल	२ पू.भा.	४ पू.फा.

बु ३ शु
१ गु
सू
२
१२
४
के ५
मं
११ रा
चं
६
८
१०
७
श
ने ९ ह

इस मास में ५ बुधवार तथा कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय श्रेष्ठ है। धान्य आदि के भाव सम रहें, न तो अच्छी तेजी और न अच्छी मंदी होगी। कहीं कहीं वर्षा भी श्रेष्ठ होगी। ता. १० जून को शुक्र का अस्त पश्चिम में देवता गण के नक्षत्र में हुआ है। जिसका फल—"सुरगणे भृगुजास्तगतिर्यदा दिवसगुर्जरमालयमण्डले। भवति देशभयं नृप-विग्रहः प्रथमतो ऽपि च धान्य महर्घता।।"

३
सू बु
चं २
१ गु
१२
४
शु
मं
११ रा
के ५
६
८
१०
७
ह
श ९ ने

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०१	०१	१०	०१	००	०१	०८	१०	०४
२९	२४	२०	२८	२८	२७	०६	२४	२४
२७	५०	१९	११	४५	५२	०१	४४	४४
४३	०६	४६	३८	०८	५६	४४	०२	०२
५७	७७३	३५	३३	१३	३७	०४	०३	०३
२०	३३	२६	०६	१२	१८	२२	११	११
मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
२ मृग.	१ मृग.	१ पू.भा.	२ मृग.	१ कृत्ति.	२ मृग.	२ मूल	२ पू.भा.	४ पू.फा.

गुजरात, महाराष्ट्र प्रान्त में भय विग्रह व्याप्त होगा। मरूस्थल में दुर्भिक्ष भय व्यापेगा। कहीं मन्त्रिमंडलों में परिवर्तन होकर अशांति उत्पन्न होगी। धान्य में पहले तेजी होकर बाद में मंदी होगी। ता. १० जून से ही सू.बु.शु का मंगल, राहु केतु से केन्द्र योग तथा श.ह.ने. से षड्ष्टक योग बनेगा। जिसके फलस्वरूप विश्व के अनेक भागों में भय विग्रह, प्रकृति-प्रकोप आदि से जन-मानस पीड़ित होगा। जन-तांत्रिक देशों में आपसी विरोध से विरोधी पक्ष लाभ उठायेंगे। पक्षारंभ में सोना, चांदी, सूत, रूई, में घटाबढी से मंदी की चाल निकलेगी। तेजी के झटकों में बेचना लाभप्रद रहेगा।

आकाश लक्षण – इस पक्ष में बुध-शुक्र का योग एव इन दोनों ग्रहों का पश्चिम में अस्त होना वर्षा कारक योग है। तीव्र गरमी से संतप्त उत्तरी भारत में प्रथम वर्षा संभावित है। देश के अनेक भागों में अच्छी वर्षा हो सकती है। दक्षिण-पश्चिम में खंडवृष्टि होगी। पूर्वोत्तर में अच्छी वर्षा होगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ७																			दिन मान		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हिं.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टॅ. टा.	ता. १५ से २९ जून सन् १९८८ ई. राष्ट्रीयमिति २५ ज्येष्ठ से ८ आषाढ़ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट		घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट				रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅ. टा. घंटा मिनटों में है।
२५	१	बु	२४	२	१५	०३	आ.	५८	२२	२८	४७	ग	१४	३५	ब	१५	०३		३४	३३	५	२६	१९	१६	२	२९	१५	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. १५, उत्तर श्रृगोन्नाते,
२६	२	गु	२६	४५	१५	५६	पुन.	६०	०	—	—	वृ	१४	१८	कौ	१५	५६		३४	३४	५	२६	१९	१६	३	जि.१	१६	क. २४/०९	जिल्काद मु. ११,
२७	३	शु	२९	५०	१७	२२	पुन.	२	५७	६	३७	ध्रु	१४	२७	ग	१७	२२		३४	३५	५	२६	१९	१६	४	२	१७	कर्क	रम्भा ३ व्रत, श्री प्रताप जयन्ती, मेला हल्दी घाटी मेवाड़ (राज.)
२८	४	श.	३४	४०	१९	१९	पुष्य.	८	५०	८	५९	व्या	१४	५९	व	६	१७		३४	३६	५	२७	१९	१६	५	३	१८	कर्क	भद्रा ६/१७ से १९/१९ तक, श्री गुरू अर्जुन देव निधन दिवस,
२९	५	र.	४०	३२	२१	४०	आश्ले.	१५	५०	११	४७	ह	१५	५१	ब	८	२७		३४	३७	५	२७	१९	१७	६	४	१९	सिं. ११/४७	कृतिका २ वृष में गुरू २३/००, शुक्र उदय पूर्व में १२/२५,
३०	६	चं.	४६	५५	२४	१३	म.	२३	३०	१४	५१	व	१६	५५	कौ	१०	५६		३४	३७	५	२७	१९	१७	७	५	२०	सिंह	विन्ध्यवासिनी पूजा, * श्री धूमावती जयन्ती मेला क्षीर भवानी (काश्मीर) दुर्गा ८ शुक्र बाल्य समाप्त १२/२५,
३१	७	मं.	५३	१२	२६	४४	पू.फा	३१	१७	१७	५८	सि	१८	००	ग	१३	२९		३४	३८	५	२७	१९	१७	८	६	२१	कं. २४/४२	भद्रा २६/४४ से, आर्द्रा में सूर्य १८/३५, सायन कर्क में सूर्य ९/२८, दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रा.,
आ.१	८	बु	५८	४०	२८	५६	उ.फा.	३८	३२	२०	५३	व्य	१८	५६	वि	१५	५३		३४	३८	५	२८	१९	१७	९	७	२२	कन्या	भद्रा १५/५३ तक, वक्री रोहिणी में शुक्र ५/३६, बुध का उदय पूर्व में १९/५२, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रारम्भ,*
२	९	गु.	६०	०	—	—	ह.	४४	४०	२३	२०	व	१९	३१	बा	१७	५१		३४	३७	५	२८	१९	१७	१०	८	२३	कन्या	
३	९	शु	२	५२	६	३७	चि.	४९	१५	२५	१०	प	१९	३६	कौ	६	३७		३४	३७	५	२८	१९	१७	११	९	२४	तु. १२/१६	मार्गी बुध २८/१४,
४	१०	श.	५	१७	७	३५	स्वा.	५१	५५	२६	१४	शि	१९	०६	ग	७	३५		३४	३६	५	२८	१९	१७	१२	१०	२५	तुला	भद्रा १९/३७ से, श्री बटुक भैरव जयन्ती,
५	११	र.	५	३०	७	४०	वि.	५२	३५	२६	३०	सि	१७	५७	वि	७	४०		३४	३५	५	२८	१९	१८	१३	११	२६	वृ. २०/२६	भद्रा ७/४० तक, निर्जला एकादशी व्रत सबका,
६	१२	चं.	४	७	७	०८	अनु.	५३	५०	२६	०१	सा	१६	१०	बा	७	०८		३४	३४	५	२९	१९	१८	१४	१२	२७	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ,
७	१३	मं.	०	४२	५	४६	ज्ये.	४८	२७	२४	५२	शु	१३	४९	तै	५	४६		३४	३३	५	२९	१९	१८	१५	१३	२८	ध. २४/५२	भद्रा २७/४६ से,
०	१४	मं.	५५	४२	२७	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी का क्षय
८	१५	बु.	४९	२०	२५	१३	मू.	४४	१५	२३	११	शु	१०	५९	वि	१४	३३		३४	३२	५	२९	१९	१८	१६	१४	२९	धनु	भद्रा १४/३३ तक, सत्यव्रत, ज्येष्ठी १५, कबीर जयन्ती, वटसावित्री १५ दक्षिण भारत में,

द्वि० ज्येष्ठ शु० ८ बुधे प्रातः स्टॅ. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५५७ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) द्वि० ज्येष्ठ शु० १५ बुधे प्रातः स्टॅ. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५६४

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के
०२	०५	१०	०१	०१	०१	०८	१०	०४
०७	०२	२४	२४	००	२३	०५	२४	२४
०६	२१	५७	४६	२९	२०	२६	१८	१८
०१	१८	५५	४९	०७	०७	१९	३६	३६
५७	७१७	३३	१०	१२	२७	०४	०३	०३
१४	०६	४८	५४	३८	३६	२४	११	११
मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१ आर्द्रा.	२ उ.फा.	२ पूभा.	१ मृ.	२ कृति.	१ मृ.	२ मू.	२ पूभा.	४ पूफा.

इस पक्ष में मंगल राहु की पूर्ण युति (राहुरंगारक योग) होगी जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में तनाव पैदा होगा। पड़ौसी राष्ट्रों की अनैतिकता से सभी देशों की स्थिति बिगड़ेगी। उत्तरी भारत में तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी। कहीं आंधी तूफान से जनजीवन अस्त व्यस्त होगा। संचार साधनों में व्यवधान पैदा होगा। ता. २० जून को वृष राशि में गुरूदेव प्रवेश करेंगे। जिसका फल "भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वीतले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारणम्।" पृथ्वी धान्योत्पादन से परिपूर्ण हो। अनाज आदि में साधारण तेजी होगी। जनता को कष्ट, राज में विग्रह तथा चौरादि के उपद्रवों से प्रजा को कष्ट होगा। यहीं से ही वृहस्पति शुक्र का एक राशि में योग बन रहा है तथा साथ में बुध भी है अतः सभी स्थानों पर श्रेष्ठ वर्षा होगी किन्तु प्राणी मात्र युद्ध मे परायण होगा। जिससे आतंकवाद और साम्प्रदायिक दंगें बढ़ेंगी। बुधवार का चन्द्रदर्शन मु. १५ का एवं चतुर्दशी तिथि का क्षय घृत, अन्न, गेहूँ, चावल, मूंग, मोंठ, बाजरा में तेजी तथा रुई, सोना, चांदी, सूत, सन, वस्त्र, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी या भारी घटाबढी करेगा।

सू.	च.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०२	०८	१०	०१	०१	०१	०८	१०	०४
१३	०२	२८	२५	०१	२०	०४	२३	२३
४६	४३	५०	०६	५६	५१	५५	५६	५६
२९	४३	१२	१८	५४	००	३६	२०	२०
५७	८६२	३२	२१	१२	१२	४	३	३
११	५३	११	५३	११	१३	२५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ आर्द्रा.	१ मू.	३ पूभा.	१ मृ.	२ कृति.	४ रोहि.	२ मू.	२ पूभा.	४ पूफा.

आकाश लक्षण — दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उ.प्र., मध्यप्रदेश, हि.प्र., गुजरात में वायु के साथ वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, नेपाल, दक्षिणी भारत में वर्षा चालू होगी। बुध-शुक्र का योग अच्छी वर्षा कारक है।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० आषाढ़ कृष्ण पक्षः ८

ता. ३० जून से १३ जुलाई सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति ९ से २२ आषाढ़ तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

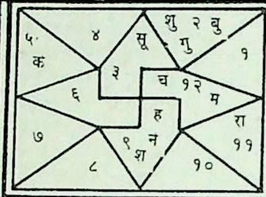
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम				तारीखें			चन्द्र संचार	
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		हिं.	मु.	अं.	स्टै. टा.	
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	आषाढ	ज़िल्काद	जून	रा. घं. मि.	
९	१	गु	४२	१५	२२	२४	पू.षा.	३९	१५	२१	१२	ब	७/२८	४८/११	बा	११	४५	३४	३१	५	३०	१९	१८	१७	१५	३०	म. २६/३९	श्री गुरु हरगोविन्द जन्म दिन,
१०	२	शु	३४	४५	१९	२४	उ.षा.	३३	४७	१९	०१	वै	२४	४९	तै	८	५१	३४	३०	५	३०	१९	१८	१८	१६	जु १	मकर	मीन में मंगल ९/४५, जुलाई मा. ७ ता. ३१,
११	३	श.	२७	०५	१६	२१	श्र.	२८	१०	१६	४७	वि	२१	१६	व	५	५३	३४	२९	५	३१	१९	१८	१९	१७	२	कुं. २७/४३	भद्रा ५/५३ से १६/२१ तक, पंचक प्रारंभ २७/४३, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१/४५,
१२	४	र.	१९	५२	१३	२४	ध.	२२	५०	१४	३९	प्री	१७	४९	बा	१३	२४	३४	२८	५	३१	१९	१९	२०	१८	३	कुंभ	
१३	५	चं.	१२	४२	१०	३६	श.	१८	०	१२	४३	आ	१४	५३	तै	१०	३६	३४	२७	५	३१	१९	१९	२१	१९	४	मी. २९/२७	मार्गी शुक्र १९/४५,
१४	६	मं.	६	३५	८	१०	पू.भा.	१३	५२	११	०५	सौ	११	३२	व	८	१०	३४	२६	५	३२	१९	१९	२२	२०	५	मीन	भद्रा ८/१० से १९/०३ तक, पुन. में सूर्य १८/१६, कृति. ३ में गुरु २७/०८,
१५	७	बु.	१	१५	६	०२	उ.भा.	१०	४०	९	४८	शो	८	४८	ब	६	०२	३४	२४	५	३२	१९	१८	२३	२१	६	मीन	मिथुन में बुध २३/०८,
०	८	बु	५६	५०	२८	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी का क्षय
१६	९	गु	५३	२५	२६	५५	रे.	८	२०	८	५३	अ	६/२८	२३/१७	तै	१५	३३	३४	२३	५	३३	१९	१८	२४	२२	७	मे. ८/५३	उ.भा. मे मंगल २१/१०, पंचक समाप्त ८/५३
१७	१०	शु	५१	०	२५	५७	अश्वि.	७	०५	८	२३	धृ.	२६	३१	व	१४	२३	३४	२१	५	३३	१९	१८	२५	२३	८	मेष	भद्रा १४/२३ से २५/५७ तक,
१८	११	श.	४९	३५	२५	२४	भ.	६	४२	८	१५	शू	२५	०३	ब	१३	३७	३४	२०	५	३४	१९	१८	२६	२४	९	वृ. १४/१९	**योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवों का,**
१९	१२	र.	४९	१०	२५	१४	कृ.	७	२५	८	३२	गं	२३	५६	कौ	१३	१६	३४	१८	५	३४	१९	१८	२७	२५	१०	वृष	पू.भा. १ में राहु, पू.फा. ३ में केतु १५/४८, योगिनी ११ व्रत निम्बार्कों का,
२०	१३	चं.	४९	५०	२५	३१	रो.	९	०५	९	१३	वृ	२३	०८	ग	१३	१९	३४	१६	५	३५	१९	१७	२८	२६	११	मि. २१/४६	भद्रा २५/३१ से, सोम प्रदोष व्रत,
२१	१४	मं.	५१	३५	२६	१३	मृ.	११	५२	१०	२०	ध्रु	२२	४१	वि	१३	४९	३४	१४	५	३५	१९	१७	२९	२७	१२	मिथुन	भद्रा १३/४९ तक, आर्द्रा में बुध १८/३३,
२२	३०	बु	५४	२७	२७	२३	आ.	१५	४०	११	५२	व्या	२२	३५	च	१४	४५	३४	१२	५	३६	१९	१७	३०	२८	१३	मिथुन	अमावस्या पुण्य.,
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

आषाढ़ कृ० ७ बुधे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५७१

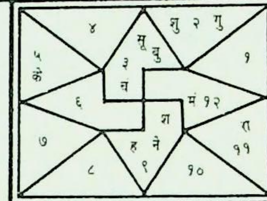
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०२	११	११	०१	०१	०१	०८	१०	०४
२०	१४	०२	२९	०३	२०	०४	२३	२३
२६	०८	३०	१९	२१	१६	२५	३४	३४
५६	५९	१०	४०	१०	०४	४०	०५	०५
५७	८३३	३०	५४	११	०४	४	०३	०३
१२	४६	१८	५४	४२	२४	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पुन.	४ उ.भा.	४ पू.भा.	२ मृग.	३ कृत्ति.	४ रोहि.	२ मूल.	२ पू.भा.	४ पू.फा.

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)



इस मास में पांच गुरूवार एवं पांच शुक्रवार उत्तम हैं। ता. १ जुलाई को मीन का मंगल आने से मंगल राहु का योग समाप्त हो गया है जिससे अशांति के मध्य शांति समझौते होंगे। विकास कार्यों में प्रगति होगी। कृषि में उन्नति होगी। भारतीय राजतंत्र में सुधार होगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होगा। किन्तु मंगल राहु का द्विर्दादश योग तथा सूर्य मंगल, शनि, हर्षल, नेप्च्यून का केन्द्र योग होने से संसार के कुछ भागों में उत्पात, अराजकता तथा प्रकृति प्रकोप, से हानि होगी। अविकसित राष्ट्रों को आर्थिक संकट का सामना करना पडेगा। शासकों में मतभेद तथा शासन व्यवस्था में अस्थिरता रहेगी। मीन राशि के मंगल का फल – **"मीन राशिकुजश्चैव तृणं काष्ठंचतुष्पदम्। महर्घ जायते सर्व गृह्यते तत्र पंडितैः।।"** पक्षारंभ में सोना, चांदी, रूई, काष्ठ तथा लकड़ी से बनी हुई वस्तुओं में तेजी होगी। मंदी वस्तु का संग्रह करने से आगे लाभ होगा। कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि का क्षय धान्यादि वस्तुओं में मंदीकारक है। प्रतिपदा को बादल चाल न होकर आकाश निर्मल रहे तो आगे चौमासा में

आषाढ़ कृ. ३० बुधे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गण ५५७८



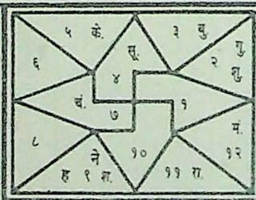
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०२	०२	११	०२	०१	०१	०८	१०	०४
२७	१६	०५	०७	०४	२१	०३	२३	२३
०७	४१	५४	१७	४१	३१	५७	११	११
१८	२५	५७	०३	३३	२७	२८	४९	४९
५७	७४२	२७	८५	११	१८	०३	०३	०३
१५	४१	४८	१८	०६	४२	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ पुन.	४ आर्द्रा	१ उ.भा.	१ आर्द्रा	३ कृत्ति.	४ रोहि.	२ मूल.	१ पू.भा.	३ पू.फा.

आकाश लक्षण–राजस्थान, पंजाब. हरियाणा, दिल्ली , उ.प्र., गुजरात, हि.प्र., महाराष्ट्र में वायु के साथ वर्षा होगी। कहीं ओलावृष्टि भी संभव है। पूर्वोत्तर के देशों में व्यापक वर्षा होगी।

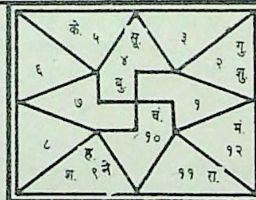
श्री सवंत् २०४५ शकः १९१० आषाढ़ शुक्ल पक्षः ९																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम				तारीखें			चन्द्र संचार	ता. १४ से २९ जुलाई सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति २३ आषाढ़ से ७ श्रावण तक। दक्षिणायन उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		हि.	मु.	ई.	स्टैं. टा.	
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	आषाढ	जिल्काद	जुलाई	रा. चं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२३	१	गु	५८	३०	२९	००	पुन.	२०	३५	१३	५०	ह	२२	५०	कि	१६	०८	३४	१०	५	३६	१९	१७	३१	२९	१४	क. ७।१९	
२४	२	शु	६०	०	-	-	पुष्य.	२६	३५	१६	१५	व	२३	२५	बा	१७	५८	३४	९	५	३७	१९	१६	३२	३०	१५	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. १५, उत्तर श्रृंगोन्नति, श्री जगदीश रथ यात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)
२५	२	श.	३	३०	७	०१	आश्ले.	३३	३०	१९	०१	सि	२४	१७	कौ	७	०१	३४	७	५	३७	१९	१६	श्रा.१	जि.१	१६	सिं. १९।०१	सं. कर्क में सूर्य ५।५४, मु. १५ पुण्यकाल १२।१८ तक, ज़िल्हेज मु. १२,
२६	३	र.	९	२५	९	२४	म.	४१	७	२२	०५	व्य	२५	२१	ग	९	२४	३४	५	५	३८	१९	१६	२	२	१७	सिंह	भद्रा २२।४० से, मृगशिर में शुक्र २७।१३,
२७	४	चं.	१५	५०	११	५८	पू.फा.	४९	२	२५	१५	व	२६	२९	वि	११	५८	३४	३	५	३८	१९	१६	३	३	१८	सिंह	भद्रा ११।५८ तक,
२८	५	मं.	२२	२०	१४	३५	उ.फा.	५६	४५	२८	२१	प	२७	३३	बा	१४	३५	३४	१	५	३९	१९	१५	४	४	१९	कं. ८।०१	पुष्य में सूर्य १७।४४,
२९	६	बु	२८	२०	१६	५९	ह.	६०	०	-	-	शि	२८	२४	तै	१६	५९	३३	५९	५	३९	१९	१५	५	५	२०	कन्या	पुनर्वसु में बुध २३।५६, मार्गी प्लूटो ९।५४, कुमार षष्ठी,
३०	७	गु	३३	१५	१८	५८	ह.	३	४२	७	०९	सि	२८	५०	ग	६	३	३३	५६	५	४०	१९	१५	६	६	२१	तु. २०।१७	भद्रा १८।५८ से,
३१	८	शु	३६	४०	२०	२०	चि.	९	२२	९	२५	सा	२८	४४	वि	७	४४	३३	५४	५	४०	१९	१४	७	७	२२	तुला	भद्रा ७।४४ तक, बुध का अस्त पूर्व में १४।५५, सायन सिंह में सूर्य २०।२२, दुर्गा ८,
श्रा.१	९	श.	३८	५	२०	५५	स्वा.	१३	१७	११	००	शु	२८	०१	बा	८	५४	३३	५१	५	४१	१९	१४	८	८	२३	वृ. २९।३८	व. मूल १ में शनि १५।०९, राष्ट्रीय श्रावण प्रारंभ, भड्डली ९, मेला शरीफ भवानी (काश्मीर)
२	१०	र.	३७	२७	२०	४१	वि.	१५	१५	११	४८	शु	२६	३८	तै	८	५४	३३	४८	५	४२	१९	१३	९	९	२४	वृश्चिक	कृतिका ४ में गुरु ९।१०,
३	११	चं.	३४	४५	१९	३६	अनु	१५	७	११	४५	ब्र.	२४	३५	व	८	१४	३३	४६	५	४२	१९	१३	१०	१०	२५	वृश्चिक	भद्रा ८।१४ से १९।३६ तक, कर्क में बुध २६।०२, देवशयनी ११ व्रत सबका, ईदुलजुहा (बकरीद) A
४	१२	मं.	३०	५	१७	४५	ज्ये.	१३	०	१०	५५	ऐ	२१	५५	ब	६	४९	३३	४३	५	४३	१९	१२	११	११	२६	ध. १०।५५	भौम प्रदोष व्रत, A चातुर्मास प्रा.
५	१३	बु	२२	५२	१५	१६	मु	९	१०	९	२३	वै	१८	४५	तै	१५	१६	३३	४०	५	४३	१९	१२	१२	१२	२७	धनु	पुष्य में बुध १६।४३,
६	१४	गु	१६	२०	१२	१६	पू.षा.	३ / ५१	५७ / ४७	७ / २८	१९ / ५१	वि	१५	१०	व	१२	१६	३३	३७	५	४४	१९	११	१३	१३	२८	म. १२।४२	भद्रा १२।१६ से २२।३८ तक, सत्यव्रत, वायु परीक्षा सायंकाल में,
७	१५	शु	७	५७	८	५५	श्र.	५१	७	२६	११	प्री	११	२०	ब	८	५५	३३	३५	५	४४	१९	११	१४	१४	२९	मकर	मिथुन में शुक्र १९।३७, आषाढ़ी १५, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा, सन्यासियों का चातुर्मास प्रारंभ

आषाढ़ शु० ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५८७ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **आषाढ़ शु० १५ शुक्रे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५९४**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०३	०६	११	०२	०१	०१	०८	१०	०४
०५	०४	०९	२२	०६	२५	०३	२२	२२
४२	३८	५०	१९	१८	१९	२४	४३	४३
३९	४६	२२	२६	०६	५०	३८	१२	१२
५७	७४६	२४	११५	१०	३२	३	०३	०३
१७	२५	००	२४	१४	५४	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य १	चित्रा ४	उ.भा. २	पुन. १	कृत्ति. ३	मृग. १	मूल २	पू.भा. १	पू.फा. ३



इस मास में वृष राशि में गुरु-शुक्र का योग बन रहा है। जिसका फल – "गुरुशुक्रौ यदैकस्थो नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।" वर्षा श्रेष्ठ होगी जिससे धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा किन्तु जनता में सांप्रदायिक दंगे, गुंडागर्दी,चोरी, हत्याऐं अधिक होंगी। जिससे प्रजा को परेशानी होगी। कर्क संक्रांति शनिवार की १५ मुहुर्ती होने से अन्नादि के



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०३	०९	११	०३	०१	०१	०८	१०	०४
१२	१०	१२	०६	०७	२१	०३	२२	२२
२३	२३	२८	३२	२७	३५	०२	२०	२०
४६	२५	०७	०७	२५	४९	४३	५६	५६
५७	८००	२०	१२५	९	४१	२	०३	०३
२०	४७	३०	५९	२४	०६	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य ३	श्रवण १	उ.भा. ३	पुष्य १	कृत्ति. ४	मृ. २	मूल १	पू.भा. १	पू.फा. ३

भावों में तेजी होगी। दुर्भिक्षभय, प्रजा में रोग उपद्रव अधिक होंगें। वर्षा की कमी होने से कृषि में हानि होगी। सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, कांसी, लोहा, स्टील में घटाबढ़ी होगी। गुरु-शुक्र का सूर्य मंगल से त्रेरकादश योग होने से बड़े राष्ट्र रुस, चीन, जापान, इंग्लैण्ड स्वार्थपरक होते हुए भी पारस्परिक, राजनैतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की चेष्टा करेंगे। भारत की नीति भी अच्छे सम्बन्ध बनाने में सफल होंगी। तारीख २८ जुलाई को सायंकाल पूर्णिमा होने से इसी दिन वायु परीक्षा करनी चाहिए। सूर्यास्त के समय पूर्व, उत्तर, पश्चिम और ईशान कोण की वायु चले तो सुभिक्ष तथा सुख शांति रहें। दक्षिण, अग्निकोण, नैऋत्य और वायव्य कोण की वायु चले तो दुर्भिक्ष तथा उत्पातों से प्रजा पीडित होगी।

आकाशलक्षण – इस पक्ष में शुक्रवार का चन्द्रदर्शन और बुध का अस्त वर्षा कारक है। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र में वायु के साथ व्यापक वर्षा होगी। कहीं बाढ़ से हानि होगी।

ता. ३० जुलाई से १२ अगस्त सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २१ श्रावण तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षा ऋतु

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० श्रावण कृष्ण पक्षः १०

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. श्रावण	मु. जिलहिज	अं. जुलाई	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
०	१	शु	५९	१०	२९	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा का क्षय,
८	२	श	५०	१२	२५	५०	ध.	४४	१५	२३	२७	आ.	७/२७	२१/२१	तै	१५	३७	३३	३२	५	४५	१९	१०	१५	१५	३०	कुं. १२।४९	पंचक प्रारंभ १२।४९,
९	३	र	४१	४५	२२	२७	श.	३७	४७	२०	५२	शो	२३	३१	व	१२	०५	३३	२९	५	४५	१९	१०	१६	१६	३१	कुंभ	भद्रा १२।०५ से २२।२७ तक,
१०	४	चं	३३	४५	१९	१६	पू.भा.	३१	५०	१८	३०	अ	१९	५२	ब	८	५१	३३	२६	५	४६	१९	०९	१७	१७	अ.१	मी. १२।५४	अगस्त मा. ८ ता. ३१, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।३४, श्री तिलक जयन्ती,
११	५	मं	२६	५५	१६	१२	उ.भा.	२६	५७	१६	३३	सु	१६	३३	कौ	५	५२	३३	२३	५	४६	१९	०८	१८	१८	२	मीन	अश्लेषा में सूर्य १६।४२, अश्लेषा में बुध २५।३०, नाग ५ मल्लस्कन्द तथा बंगाल में,
१२	६	बु	२१	२०	१४	१९	रे	२३	१२	१५	४	धृ	१३	३८	व	१४	१९	३३	२०	५	४७	१९	०८	१९	१९	३	मे. १५।०४	भद्रा १४।१९ से २५।१९ तक, पंचक समाप्त १५।०४
१३	७	गु	१६	५०	१२	३१	अश्वि.	२०	५२	१४	८	शु	११	१०	ब	१२	३१	३३	१७	५	४७	१९	०७	२०	२०	४	मेष	
१४	८	शु	१३	५५	११	२२	भ.	२०	५	१३	४६	गं	९	१०	कौ	११	२२	३३	१४	५	४८	१९	०६	२१	२१	५	वृ. १९।४९	
१५	९	श	१२	३०	१०	४८	कृ.	२०	२७	१३	५९	वृ	७	३८	ग	१०	४८	३३	११	५	४८	१९	०५	२२	२२	६	वृष	भद्रा २२।४४ से,
१६	१०	र	१२	२७	१०	४८	रो.	२२	२३	१४	४६	ध्रु	६	३३	वि	१०	४८	३३	०८	५	४९	१९	०४	२३	२३	७	मि. २७।२५	भद्रा १०।४८ तक, आर्द्रा में शुक्र १५।३८,
१७	११	चं	१३	५०	११	२१	मृ.	२५	३७	१६	४	व्या	५/२९	५५/४०	बा	११	२१	३३	०४	५	४९	१९	०३	२४	२४	८	मिथुन	कामदा एकादशी व्रत सबका,
१८	१२	मं	१६	२५	१२	२४	आ.	३०	०२	१७	५१	व.	२९	४७	तै	१२	२४	३३	०१	५	५०	१९	०३	२५	२५	९	मिथुन	म. सिंह में बुध १५।५४, भौम प्रदोष व्रत,
१९	१३	बु	२०	१०	१३	५४	पुन.	३५	३२	२०	०३	सि	-	-	व	१३	५४	३२	५८	५	५०	१९	०२	२६	२६	१०	क. १३।३०	भद्रा १३।५४ से २६।४८ तक,
२०	१४	गु	२४	५२	१५	४८	पु	४१	५५	२२	३७	सि	६	१३	श	१५	४८	३२	५४	५	५१	१९	०१	२७	२७	११	कर्क	
२१	३०	शु	३०	२५	१८	०१	आश्ले.	४९	५	२५	२९	व्य	६	५६	ना	१८	०१	३२	५१	५	५१	१९	००	२८	२८	१२	सिं. २५।२९	हरियाली अमावस, अमावस्या पुण्य,
-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-		

श्रावण कृ० ८ शुक्रे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६०१

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

श्रावण कृ० ३० शुक्रे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६०८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०३	००	११	०३	०१	०२	०८	१०	०४
१९	२२	१४	२१	०८	०४	०२	२१	२१
०५	०१	३९	०८	३०	४३	४४	५८	५८
२९	५२	१२	११	५९	३५	१७	४१	४१
५७	७९९	१६	१२२	८	४७	२	०३	०३
२९	२७	११	१२	३६	३३	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१ आश्ले.	३ भरणी	४ उ.भा.	२ आश्ले.	४ कृति.	४ मृग.	१ मूल	१ पू.भा.	३ पू.फा.

के ५ सू ३ शु
६ ४ गु २
७ बु १ चं
८ १० मं १२
ह श ९ ने ११ रा

इस पक्ष में शुक्र का सूर्य गुरू स द्वि-द्वादश योग तथा मंगल शनि से केन्द्र योग अच्छा नहीं है। विश्व के अनेक देशों की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल होगी। आर्थिक तंगी से प्रजा त्रस्त होगी। भ्रष्टाचार, अनैतिकता की वृद्धि होगी। युद्धोन्मादी राष्ट्र शांति भंग करके युद्धरत दिखाई देंगे। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा का क्षय होने से व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का वातावरण बनेगा। श्रावणवदी नवमी को शनिवार का होना उत्तम फलप्रद नहीं है। यथा – "श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः संतापकारकः। छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशयः।।" राज के प्रति जनता में असन्तोष बढ़ेगा। कहीं छत्रभंग या राज्यों के मंत्रिमंडलों में बदलावा आयेगा। भारत में भी शासक दल को चिन्ता व्याप्त होगी। मिथुन राशि का शुक्र गेहूँ, चना, चावल, मूंग, मोंठ, आदि धान्यों में तेजी बनाये रखेगा। रूई, कपास, सूत, पाट, वारदाना, एरण्डा, अलसी, सरसों, तिल, आदि में मंदी होगी। गुड़, खांड, घृत आदि में घटाबढ़ी चलेगी।

बु के ५ सू ३ शु
६ ४ चं गु २
७ १
८ १० मं १२
ने श ९ ह. रा ११

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०३	०३	११	०४	०१	०२	०८	१०	०४
२५	२०	१६	०४	०९	१०	०२	२१	२१
४८	०५	१८	५५	२८	३१	२९	३६	३६
१४	१०	३४	५२	१६	१६	५६	२५	२५
५७	७१३	११	११२	७	५२	१	०३	०३
३७	२३	१८	३६	३६	१८	४०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
३ आश्ले.	२ आश्ले.	४ उ.भा.	२ मघा	४ कृति.	२ आर्द्रा	१ मूल	१ पू.भा.	३ पू.फा.

आकाश लक्षण – पर्वतीय प्रदेश तथा पूर्व में अच्छी वर्षा होगी। पश्चिम-दक्षिण में कुछ न कुछ वर्षा अधिकांश स्थानों पर होती रहेगी। पक्षारंभ में कहीं व्यापक वर्षा से बाढ़ भय उत्पन्न होगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० श्रावण शुक्ल पक्षः ११																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अ.	चन्द्र संचार स्टैं. टा.	ता. १३ से २७ अगस्त सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति २२ श्रावण से ५ भाद्रपद तक। दक्षिणायण उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।
रा. वि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	श्रावण	[illegible]	अगस्त	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२२	१	श.	३६	३२	२०	२९	म.	५६	४२	२८	३३	व	७	५१	किं	७	२५	३२	४७	५	५२	१८	५९	२९	२९	१३	सिंह	रेवती में मंगल २८।२९, नक्त व्रत प्रारंभ, हिन्डोला प्रारम्भ
२३	२	र.	४३	२	२३	०६	पू.फा.	६०	०	-	-	प	८	५४	बा	९	४७	३२	४३	५	५३	१८	५८	३०	३०	१४	सिंह	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उत्तर श्रृंगोन्नति, सिंजारा (राज.)
२४	३	च.	४९	३५	२५	४३	पू.फा.	४	३७	७	४४	शि	१०	०२	तै	१२	२५	३२	३९	५	५३	१८	५७	३१	मु.१	१५	कं. १४।३१	मुहर्रम मु.१ हिजरी सन् १४०९ प्रारंभ; मधुस्रवा ३, सुवर्ण गौरी व्रत *भारतीय स्वतन्त्रता दिवस ४२वाँ
२५	४	मं.	५५	४५	२८	१२	उ.फा.	१२	२७	१०	५३	सि	११	०८	व	१५	००	३२	३५	५	५४	१८	५६	श्रा.१	२	१६	कन्या	भद्रा १५।० से २८।१२ तक, सं. मघा सिंह में सूर्य १४।१९, मु. ३० पुण्यकाल ७।५५ से, A
२६	५	बु	६०	०	-	-	ह	१९	५०	१३	५०	सा	१२	०४	ब	१७	२१	३२	३१	५	५४	१८	५६	२	३	१७	तु. २७।८	नागपंचमी,
२७	५	गु	१	१०	६	२३	चि.	२६	१५	१६	२५	शु	१२	४४	बा	६	२३	३२	२७	५	५५	१८	५५	३	४	१८	तुला	Aपू.फा. में बुध १९।३६, रोहि. १ में गुरु १२।५२, बुध का उदय +
२८	६	शु	५	२०	८	०४	स्वा	३१	२०	१८	२८	शु	१२	५९	तै	८	०४	३२	२४	५	५६	१८	५४	४	५	१९	तुला	+पश्चिम में १६।००, वरद ४ वैनायकी ४,
२९	७	श.	७	५७	९	०७	वि.	३४	४७	१९	५१	ब्र	१२	४३	व	९	०७	३२	२०	५	५६	१८	५३	५	६	२०	वृ. १३।३०	भद्रा ९।०७ से २१।२१ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
३०	८	र.	८	३७	९	२४	अनु.	३६	२०	२०	२९	ऐ	११	५२	व	९	२४	३२	१६	५	५७	१८	५२	६	७	२१	वृश्चिक	दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी व चिन्तपूर्णी (हिमाचल प्रदेश)
३१	९	च.	७	२२	८	५४	ज्ये.	३५	३५	२०	१९	वै	१०	२२	कौ	८	५४	३२	१२	५	५७	१८	५१	७	८	२२	ध. २०।१९	पुनर्वसु में शुक्र १४।०२, सायन कन्या में सूर्य २७।२५, शरद् ऋतु प्रा.,
भा.१	१०	मं.	४	५	७	३६	मू.	३३	३२	१९	२३	वि	८/२९	१५/३१	ग	७	३६	३२	८	५	५८	१८	५०	८	९	२३	धनु	भद्रा १८।४१ से २९।३४ तक, राष्ट्रीय भाद्रपद प्रारंभ, पुत्रदा ११ व्रत स्मार्तों का,
०	११	मं.	५९	०	२९	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी का क्षय,
२	१२	बु	५२	१७	२६	५४	पू.षा	२९	२७	१७	४६	आ	२६	१५	ब	१६	१८	३२	४	५	५९	१८	४९	९	१०	२४	म. २३।११	उ.फा. में बुध १७।४५, पुत्रदा ११ व्रत वैष्णवों का, ताजिया (मुहर्रम)
३	१३	गु	४४	२५	२३	४५	उ.षा.	२४	०	१५	३५	सौ	२२	३४	कौ	१३	२२	३२	००	५	५९	१८	४८	१०	११	२५	मकर	प्रदोष व्रत, वरद लक्ष्मी व्रत Gजयन्ती अमरनाथ यात्रा, संस्कृत दिवस,
४	१४	शु	३५	२५	२०	१०	श्र.	१७	२५	१२	५८	शो	१८	३५	ग	९	५९	३१	५६	६	००	१८	४७	११	१२	२६	कु. २३।२२	भद्रा २०।१० से, वक्री मंगल २०।०७, कन्या में बुध २०।४९, पंचक प्रारंभ २३।२२,
५	१५	श.	२६	५	१६	२६	ध	१०	१२	१०	०५	अ	१४	२४	वि	६	१९	३१	५२	६	००	१८	४६	१२	१३	२७	कुंभ	भद्रा ६।१९ तक, ऋषि तर्पण, रक्षाबन्धन, श्रावणी १५, उपाकर्म, सत्यव्रत, श्री गायत्री G

श्रावण शु० ८ रवी प्रातः स्टैं० टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६१७ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) श्रावण शु. १५ शनी प्रातः स्टैं० टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६२३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०४	०७	११	०४	०१	०२	०८	१०	०४
०४	०८	१७	२०	१०	१८	०२	२१	२१
२७	२९	३२	५६	३१	४२	१८	०७	०७
२७	३५	४४	३८	३२	२६	०२	४८	४८
५७	७८९	०४	९९	०६	५७	०	०३	०३
४७	१५	१२	३०	१२	०६	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा २	अनु. २	रोहि. १	पू.फा. ३	रोहि. १	आर्द्रा ४	मूल १	पू.भा. १	पू.फा. ३

इस पक्ष में तिथि वृद्धि होकर तिथि क्षय होना उत्तम फल प्रद है। यथा – "जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिके महंगाई हट जाय॥" द्वितीय रविवार का चन्द्रदर्शन एवं मंगलवार की सिंह संक्रांति होने से सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चावल, चना, उरद, मूंग, आदि में पहले तेजी होकर मंदी होगी। रूई, सूत, कपास, कपड़ा, रेशम, ऊन, घृत, तेल, सरसों आदि में तेजी होगी। वायु वेग के साथ वर्षा भी होगी। पक्षान्त में २६ अगस्त को मंगल वक्री होने से प्रजा में अशांती, प्रकृति-प्रकोप, यान दुर्घटना, बाढ़ हिंसाकाण्ड आदि से बढ़ेगी। पश्चिमी देश, पाकिस्तान, अरब राष्ट्र, इजरायल, अफगानिस्तान पूर्वोत्तर भारत तथा दक्षिण-पश्चिमी एशिया में राजनैतिक विग्रह-विरोध होंगे। श्रावण सुदी पूर्णमासी को चन्द्रमा बादलों में उदय होते सुभिक्ष का संचार हो और धान्यादि का भाव आगे मन्दा हो।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०४	१०	११	०५	०१	०२	०८	१०	०४
१०	०३	१७	००	११	२४	०२	२०	२०
१४	४५	४५	३३	०६	३१	१४	४८	४८
२८	०१	४८	३१	३७	३८	१९	४३	४३
५७	९१२	००	९१	०५	५९	०	०३	०३
५५	२२	४७	२४	१८	४२	१८	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा ४	धनि. ४	रेवती १	उ.फा. २	रोहि. १	पुन. २	मूल १	पू.भा. १	पू.फा. ३

आकाश लक्षण- बंगाल, आसाम, बिहार, काश्मीर, दिल्ली, पंजाब, उ० प्र० में अच्छी वर्षा होगी। हरियाणा, राजस्थान, म० प्र०, गुजरात में वायुवेग, खंडवृष्टि होगी। पश्चिम में वर्षा कम होगी।

8

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० भाद्रपद कृष्ण पक्षः १२																		दिन मान		स्टॅन्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हिं.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं. टा.	ता. २८ अगस्त से ११ सितम्बर सन् १९८८ ई. राष्ट्रीयमिति ६ से २० भाद्रपद तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, शरद ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट				रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
६	१	र.	१६	३५	१२	३९	श.	२/५६	४७/३५	७/२८	८/१५	सु	१०/६	११/०४	कौ	१२	३९	३१	४८	६	१	१८	४५	१३	१४	२८	मी. २२/५८	अगस्त्य उदय ६/५८
७	२	चं.	७	२५	९	००	उ.भा.	४८	५७	२५	३७	धृ	२६	०९	ग	९	००	३१	४४	६	२	१८	४४	१४	१५	२९	मीन	भद्रा १९।१७ से २९/३८ तक, कज्जली तृतीया, मंगला गौरी व्रत,
०	३	चं.	५९	०	२९	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया का क्षय,
८	४	म	५१	४५	२६	४४	रे	४३	३०	२३	२६	ग	२२	३६	ब	१६	०७	३१	४०	६	२	१८	४३	१५	१६	३०	मे. २३।२६	पू.फा. में सूर्य १०।२१, मार्गी शनि १५।३३, पंचक समाप्त २३।२६, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०।४४ *
९	५	बु	४५	४७	२४	२२	अश्वि	३९	१५	२१	४५	वृ	१९	२८	कौ	१३	३२	३१	३६	६	३	१८	४२	१६	१७	३१	मेष	रक्षा पंचमी (उड़ीसा) * बहुला ४,
१०	६	गु.	४१	२०	२२	३५	भ.	३६	४५	२०	४५	ध्रु	१६	५०	ग	११	२९	३१	३२	६	४	१८	४१	१७	१८	सि १	वृ. २६।३८	भद्रा २२।३५ से, कर्क में शुक्र १५।४८, सितम्बर मा. ९ ता. ३०, चन्द्रषष्ठी, हलषष्ठी
११	७	शु	३८	४५	२१	३४	कृ.	३५	३७	२०	१९	व्या	१४	४७	वि	९	५९	३१	२७	६	४	१८	४०	१८	१९	२	वृष	भद्रा ९।५९ तक, हस्त में बुध १६।४१, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्तों का चन्द्रोदय २२।४४, आद्याकाली ज.
१२	८	श.	३८	५	२१	१८	रो.	३६	३७	२०	४३	ह	१३	२०	व	९	२०	३१	२३	६	५	१८	३८	१९	२०	३	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का, चन्द्रोदय २३।२५, गोकुलाष्टमी,
१३	९	र.	३९	१०	२१	४५	मृ.	३९	२०	२१	४९	व	१२	२०	तै	९	२६	३१	१९	६	५	१८	३७	२०	२१	४	मि. ९।१६	पुष्य में शुक्र २१।१५, गोगानवमी, नन्दमहोत्सव
१४	१०	चं.	४१	५७	२२	५२	आ	४३	१५	२३	२३	सि	१२	०७	व	१०	१४	३१	१५	६	६	१८	३६	२१	२२	५	मिथुन	भद्रा १०।१४ से २२।५२ तक, मार्गी हर्षल १५।१५,
१५	११	मं.	४६	७	२४	३३	पुन.	४९	२०	२५	५०	व्य	१२	१५	ब	११	३९	३१	११	६	६	१८	३५	२२	२३	६	क. १९।१६	अजा एकादशी व्रत सबका,
१६	१२	बु	५१	२५	२६	४०	पु	५६	२	२८	३१	व	१२	४६	कौ	१३	३३	३१	७	६	७	१८	३४	२३	२४	७	कर्क	वत्स द्वादशी,
१७	१३	गु	५७	२५	२९	०५	अश्ले.	६०	०	—	—	प	१३	३३	ग	१५	५०	३१	३	६	७	१८	३३	२४	२५	८	कर्क	भद्रा २९/०५ से वक्री उ.भा. में मंगल ८।५२, प्रदोष व्रत, जैन पर्यूषण पर्वारम्भ
१८	१४	शु	६०	०	—	—	अश्ले.	३	२५	७	२९	शि	१४	३२	वि	१८	२२	३०	५८	६	८	१८	३१	२५	२६	९	सिं. ७।२९	भद्रा १८।२२ तक, अघोरा १४, कैलाश यात्रा,
१९	१४	श.	३	५०	७	४०	म.	११	२२	१०	३७	सि	१५	३७	श	७	४०	३०	५४	६	८	१८	३०	२६	२७	१०	सिंह	पिठोरी ३० अमा.
२०	३०	र.	१०	२७	१०	१९	पू.फा.	१९	०५	१३	४६	सा	१६	४२	ना	१०	१९	३०	५०	६	८	१८	२९	२७	२८	११	कं. २०।३२	गत. ४ में राहु, पू.फा. में केतु १३।१०, लोहार्गल यात्रा, अमा. पुण्य, खण्डग्रास सूर्यग्रहण, मेला कुरुक्षेत्र,
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		

भाद्रपद कृ० ८ शनी प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६३० (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **भाद्रपद कृ० ३० रवौ प्रातः स्टैं.टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६३८**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०४	०१	११	०५	०१	०३	०८	१०	०४
१७	१५	१७	१०	११	०१	०२	२०	२०
००	०३	२२	४४	४०	३६	१४	२६	२६
२९	१५	४२	२४	०६	५४	२४	२७	२७
५८	७७८	०६	८१	४	६२	०	०३	०३
०७	४५	३३	३६	००	०६	४८	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	२	१	१	१	४	१	१	३
पू.फा.	रोहि.	रेवती	हस्त	रोहि.	पुन.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

बु ६ सू ५ ४ शु
७ के चं २ गु ३
८ रा
ने ९ श ह १० ११ मं १२ १

इस मास में पांच रविवार अच्छे नहीं है। फल – **"यत्रमासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यात्त दास्ते च महद्भयम्॥"** शासकों में मतभेद होगा। प्रजा में रोग पीड़ा से कष्ट होगा। वर्षा की कमी से कृषि कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। मंगल-गुरू का त्रेरेकादश योग श्रेष्ठ और शुक्र शनि का षड्ष्टक योग है अतः यहाँ मिले जुले फल ही होंगे। सम्बन्धित वार्ता एवं शांति चर्चा के प्रत्यत्न होंगे। सभी युद्धोन्मत्त राष्ट्रों की भावना ठीक न होने से मतभेद बने रहेंगे। भारत में उद्योग-धन्धे की उन्नति होगी जिससे स्वावलम्बी होने की शक्ति बढ़ेगी। भाद्रपद की अमावस्या रविवार को सिंह राशि में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। जिसका फल – "सिंहे च ग्रहणे पीड़ा सर्वेषां वनवासिनाम्। नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धन क्षयः॥" राजा प्रजा का धन क्षय होने से आर्थिक संकट की वृद्धि होगी। वनवासियों को कष्ट बढ़ेगा। घृत, तेल, गुड़, खांड़, रुई, सूत, कपड़ा, गेहूँ जौ, चना, मूंग, मोंठ आदि अनाज में तेजी होगी। मंदी वस्तु का स्टाक करें।

बु ६ सू ५ शु ४
७ चं गु २ ३
८ ११
४ ने ह श १० रा मं १२ १

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०४	०४	११	०५	०१	०३	०८	१०	०४
२४	२२	१६	२०	१२	१०	०२	२०	२०
४६	३५	०७	५२	०७	०२	२०	०१	०१
२६	४४	३६	३५	३०	२४	१८	०१	०१
५८	७०७	१२	६८	०२	६४	०१	०३	०३
२३	५९	४०	०६	३६	२४	१२	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ
४	३	३	४	१	३	१	१	३
पू.फा.	पू.फा.	उ.भा.	हस्त	रोहि.	पुष्य	मूल	पू.भा.	पू.फा.

आकाश लक्षण – पर्वतीय प्रदेश तथा पूर्व में वर्षा अच्छी होगी। दक्षिण पश्चिम में कुछ न कुछ वर्षा अधिकाश स्थानों में होगी। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में बादल चाल तथा कहीं-कहीं वर्षा होगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० भाद्रपद शुक्ल पक्षः १३

ता० १२ से २५ सितम्बर सन् १९८८ ई० राष्ट्रीयमिति २१ भाद्रपद से ३ आश्विन तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. दि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. भाद्र	मु. मोहर्रम	अं. सितम्बर	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२१	१	चं	१६	५२	१२	५४	उ.फा.	२६	४५	१६	५१	शु	१७	४२	ब	१२	५४	३०	४६	६	९	१८	२८	२८	२९	१२	कन्या	उ.फा. में सूर्य १८/१०, दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन मु. ३०, उत्तर शृंगोन्नति, नक्त व्रत समाप्त,
२२	२	मं.	२२	५२	१५	१८	ह.	३३	५७	१९	४४	शु	१८	३४	कौ	१५	१८	३०	४२	६	९	१८	२७	२९	स.१	१३	कन्या	चित्रा में बुध १०/३२, सफर मु.२, साम श्रावणी,
२३	३	बु	२८	७	१७	२५	चि.	४०	२७	२२	२१	ब्र	१९	१२	ग	१७	२५	३०	३८	६	१०	१८	२५	३०	२	१४	तु. ९/०३	हरितालिका ३, वराह जयन्ती
२४	४	गु	३२	२५	१९	०८	स्वा.	४५	५७	२४	३३	ऐं	१९	३२	व	६	२०	३०	३४	६	१०	१८	२४	३१	३	१५	तुला	भद्रा ६/२० से १९/०८ तक, श्रीगणेश जन्मोत्सव, कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, चन्द्रास्त २१/०२,
२५	५	शु.	३५	२७	२०	२२	वि.	५०	१२	२६	१६	वै	१९	२९	ब	७	४९	३०	३०	६	१०	१८	२३	आ.१	४	१६	वृ. १९/५०	स. कन्या में सूर्य १४/१५, मु. ४५ पुण्यकाल ७/५२ से,ऋषि ५, जैनसंवत्सरी,
२६	६	श.	३७	७	२१	०२	अनु.	५३	५	२७	२५	वि	१८	५९	कौ	८	४७	३०	२५	६	११	१८	२२	२	५	१७	वृश्चिक	अश्लेषा में शुक्र ८/१०, सूर्य षष्ठी ६ मेला छत्रमण्डल,
२७	७	र.	३७	७	२१	०३	ज्ये.	५४	१५	२७	५४	प्री	१८	००	ग	९	०८	३०	२१	६	१२	१८	२१	३	६	१८	ध. २७/५४	भद्रा २१/०३ से, मार्गीनेपच्यून २४/०३, मुक्ताभरणसप्तमी, ज्येष्ठा गौरी आवाहन,
२८	८	चं.	३५	२७	२०	२३	मू.	५३	५०	२७	४४	आ	१६	२८	वि	८	४८	३०	१७	६	१२	१८	१९	४	७	१९	धनु	भद्रा ८/४८ तक, श्रीराधाष्टमी, दुर्गाष्टमी, भागवत सप्ताह प्रारंभ, ज्येष्ठा गौरी विसर्जन,
२९	९	मं.	३२	१०	१९	०४	पू.षा.	५१	४२	२६	५३	सौ	१४	२३	बा	७	४७	३०	१३	६	१२	१८	१८	५	८	२०	धनु	तुला में बुध १७/४१ श्रीचन्द्र जयन्ती उदासीन सम्प्र. महोत्सव,
३०	१०	बु	२७	००	१७	०१	उ.षा.	४७	५७	२५	२४	शो	११	४६	ग	१७	०१	३०	८	६	१३	१८	१७	६	९	२१	म. ९/३९	भद्रा २७/४८ से, + जलझूलनी मेला श्री धार भुवनाथ, गढ़बोर मेवाड़ (राज)
३१	११	गु	२०	३२	१४	२६	श्र.	४२	५५	२३	२३	अ	८/२९	३९/०८	वि	१४	२६	३०	४	६	१३	१८	१६	७	१०	२२	मकर	भद्रा १४/२६ तक, सायन तुला में सूर्य २५/००, दक्षिणगोल में सूर्य प्रवेश, पदमा ११ व. सबका +
आ.१	१२	शु	१२	५०	११	२२	ध.	३६	४५	२०	५६	धृ	२५	१६	बा	११	२२	३०	०	६	१४	१८	१४	८	११	२३	कुं १०/१०	राष्ट्रीय आश्विन प्रारंभ, पंचक प्रारंभ १०/१०, वामन १२ जयन्ती, श्री भुवनेश्वरी जयंती, मेला अम्बाला =
२	१३	श.	४	१७	७	५७	श.	२९	५२	१८	११	शु	२१	११	तै	७	५७	२९	५६	६	१४	१८	१३	९	१२	२४	कुंभ	भद्रा २८/१९ से, वक्री गुरु १९/३१, अनन्त १४ व्रत,
०	१४	श.	५५	१२	२८	१९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी का क्षय = पटियाला, प्रदोष व्रत,
३	१५	र.	४५	५५	२४	३७	पू.भा.	२२	३७	१५	१८	गं.	१७	०१	वि	१४	२८	२९	५१	६	१५	१८	१२	१०	१३	२५	मी. १०/०१	भद्रा १४/२८ तक, प्रोष्ठ पदी १५, सत्यव्रत, भागवत सप्ताह समाप्त, सन्यासी चतुर्मास समाप्त,
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	

भाद्रपद शु० ८ चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६४७ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) भाद्रपद शु० १५ रवौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६५२

भाद्रपद शु० ८ (चन्द्रे) — ग्रह स्पष्ट

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०५	८	११	०५	०१	०३	०८	१०	०४
०२	०	१४	२८	१२	१८	०२	१९	१९
३४	५२	१०	५०	२२	४४	३२	३५	३५
२०	०९	४०	५३	४१	३५	२३	३५	३५
५८	८०७	१६	४७	०१	६६	०१	०३	०३
३७	३६	३५	०६	००	१८	५५	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा. २	मूल १	उ.भा. ४	चित्रा २	रोहि. ४	अश्ले. १	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली (भाद्रपद शु० ८): ७ बु सू. ६ ५ के. शु ४ ८ चं. श. ९ ह ने ३ मं. १० १२ गु २ रा. ११ १

इस पक्ष में चन्द्रदर्शन दक्षिणी भारत में ता. १२ सितंबर सोमवार को होगा एवं उत्तर भारत में १३ सितंबर मंगलवार को होगा। यहाँ मंगलवार वक्री चल रहा है जिसके फलस्वरूप विश्व में कहीं भी पारस्परिक विरोध, हिंसाकांड, युद्ध, यानदुर्घटना, तथा कई देशों में आन्तरिक स्थिरता तथा शांति खतरे में होगी। राजा-प्रजा में संघर्ष, साम्प्रदायिक उपद्रव होंगे। किन्तु ता. २४ सितंबर को गुरू वक्री होने से उत्पातों में शांति स्थापना के प्रयत्न सफल होते दिखाई देंगे। सुभिक्ष का संचार होगा। यथा–"गुरौ वक्रे सुभिक्षं च"।। भारत को मित्र देशों से सहायता मिलती रहेगी। कृष्ण पक्ष की तिथि बृद्धि होकर शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय तेजी सूचक हैं। फल–"**कृष्ण पक्ष में तिथि बढे शुक्ल में घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे सभी वस्तु घट जाय।।**" मास आरम्भ में जो वस्तु मंदी हो खरीद करें तो लाभ होगा। कन्या संक्रांति शुक्रवार की ४५ मुहुर्ती है। यह गुड., खांड़, शक्कर, सोना, चाँदी, सरसों, अलसी के भावों में समानता तथा धान्यादि जौ, गेहूँ, बाजरा, मूँग, मोंठ में मंदी चलेगी।

कुण्डली (भाद्रपद शु० १५): बु ७ सू. ६ के. ५ शु ४ ८ श. ९ ह. ने ३ मं. १० गु २ १२ चं रा. ११ १

भाद्रपद शु० १५ (रवौ) — ग्रह स्पष्ट

सू.	च.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०५	१०	११	०६	०१	०३	०८	१०	०४
०८	२७	१२	०२	१२	२५	०२	१९	१९
२६	०७	२७	३३	२५	२५	४५	१६	१६
२७	५७	२२	३४	४५	२९	२८	३०	३०
५८	९०९	१७	२०	००	६७	०२	०३	०३
४७	३२	४२	४८	११	३०	३१	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	व	व
उ.फा. ४	पू.भा. ३	उ.भा. ३	चित्रा ३	रोहि. १	अश्ले ३	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

आकाशलक्षण – आसाम, बंगाल, एवं पर्वतीय प्रदेशों में सामान्य वर्षा तथा राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश में बादल चाल, वायु वेग, अल्प वर्षा के योग हैं। पश्चिम दक्षिण में वायु वेग होगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० आश्विन कृष्ण पक्षः १४

ता० २६ सितम्बर से १० अक्टूबर सन् १९८८ ई० राष्ट्रीय-मिति ४ से १८ आश्विन तक। दक्षिणायन गोल, शरद ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

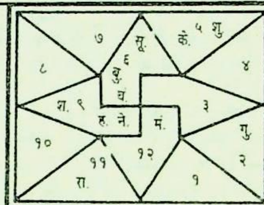
[illegible]	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्विन	मु. सफर	अं. सितम्बर	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
४	१	स	३६	५५	२१	०१	उ.भा.	१५	२७	१२	२६	वृ.	१२	५२	बा.	१०	४८	२९	४७	६	१५	१८	११	११	१४	२६	मीन	हस्त में सूर्य १९/४१, पितृ पक्ष प्रारंभ, पड़वा का श्राद्ध,
५	२	मं.	२८	३५	१७	४२	रे.	८	४५	९	४६	ध्रु	८/२९	५४/१४	तै	७	१९	२९	४३	६	१६	१८	१०	१२	१५	२७	मे. ९/४६	भद्रा २८/१२ से, पंचक समाप्त ९/४६, द्वितीया का श्राद्ध,
६	३	बु	२१	२०	१४	४९	अश्वि.	३/५८	००/३१	७/२९	२९/४४	ह	२५	५१	वि	१४	४९	२९	३९	६	१७	१८	८	१३	१६	२८	मेष	भद्रा १४/४९ तक, वक्री बुध २७/०६, तृतीया का श्राद्ध, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय १९/५४,
७	४	गु	३५	३५	१२	३१	कृ.	५६	५	२८	४३	व	२३	१८	बा	१२	३१	२९	३४	६	१७	१८	७	१४	१७	२९	वृ. ११/२९	म. सिंह में शुक्र ६/४०, चतुर्थी का श्राद्ध, १२/३१, उपरान्त पंचमी का श्राद्ध
८	५	शु.	११	३२	१०	५५	रो.	५५	३५	२८	२४	सि	२१	१२	तै	१०	५५	२९	३०	६	१८	१८	६	१५	१८	३०	वृष	षष्ठी का श्राद्ध १०/५५ उप.,
९	६	श.	९	३०	१०	०६	मृ.	५६	२०	२८	५०	व्य	१९	४२	व	१०	०६	२९	२६	६	१८	१८	५	१६	१९	अ.१	मि. १६/३७	भद्रा १०/०६ से २२/०१ तक, अक्टूबर मा. १० ता. ३१, सप्तमी का श्राद्ध १०/०६ उप.,
१०	७	र.	५	३५	१०	०९	आ.	५९	३०	३०	७	व	१८	५४	व	१०	०९	२९	२२	६	१९	१८	४	१७	२०	२	मिथुन	अष्टमी का श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत, महात्मा गांधी जन्म दिवस, वेहलम पवनों का,
११	८	चं.	११	४२	११	००	पुन.	६०	०	—	—	प	१८	४३	कौ	११	००	२९	१७	६	१९	१८	३	१८	२१	३	क. २५/३८	नवमी का श्राद्ध सौभाग्यवती श्राद्ध,
१२	९	मं.	१५	३५	१२	३४	पुन.	४	३०	८	०८	शि	१९	०२	ग	१२	३४	२९	१३	६	२०	१८	·१	१९	२२	४	कर्क	भद्रा २५/३५ से, बुध का अस्त पश्चिम में ८/२३, दशमी का श्राद्ध,
१३	१०	बु	२०	५७	१४	४३	पु	१०	५७	१०	४३	सि	१९	४५	वि	१४	४३	२९	९	६	२०	१८	०	२०	२३	५	कर्क	भद्रा १४/४३ तक,
१४	११	गु	२७	१२	१७	१४	अश्ले.	१८	२२	१३	४२	सा	२०	४३	बा	१७	१४	२९	५	६	२१	१७	५९	२१	२४	६	सि. १३/४२	वक्री कन्या में बुध ११/४०, मूल २ में शनि १९/५८, इन्दिरा ११ व्रत सबका, एकादशी का श्राद्ध
१५	१२	शु	३३	५५	१९	५५	म	२६	१५	१६	५१	शु	२१	४८	कौ	६	३४	२९	१	६	२१	१७	५८	२२	२५	७	सिंह	द्वादशी और सन्यासियों का श्राद्ध, E पितृ पक्ष समाप्त गजछायापर्व, मेला फलगू (कुरुक्षेत्र)
१६	१३	श.	४०	३२	२२	३५	पू.फा.	३४	०७	२०	०१	शु	२२	५१	ग	९	१६	२८	५६	६	२२	१७	५७	२३	२६	८	क. २६/४६	भद्रा २२/३५ से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध,
१७	१४	र.	४६	५०	२५	०६	उ.फा.	४१	४०	२३	०२	ब्र.	२३	४६	वि	११	५२	२८	५२	६	२२	१७	५६	२४	२७	९	कन्या	भद्रा ११/५२ तक, चतुर्दशी का और शस्त्रादि विष जलादि से मृतकों का श्राद्ध,
१८	३०	चं.	५२	२०	२७	१९	ह.	४८	३०	२५	४७	ऐं	२४	२८	च	१४	१५	२८	४८	६	२३	१७	५५	२५	२८	१०	कन्या	चित्रा में सूर्य ८/५०, पू.फा. मे शुक्र २०/२०, सोमवती अमावस्या, सर्वपितृश्राद्ध, E
—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	

आश्विन कृ० ८ चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६६० **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **आश्विन कृ० ३० चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६६७**

सू.	च.	म	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०५	०२	११	०६	०१	०४	०८	१०	०४
१६	१९	१०	०२	१२	०४	०३	१८	१८
१७	३९	०७	२०	१८	३०	०८	५१	५१
४६	५७	३३	२१	३९	५१	०४	०३	०३
५९	७३९	१६	३४	०१	६८	०३	०३	०३
०५	११	३४	२४	४८	५४	१२	११	११
मा	मा	व	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	४	३	३	१	२	१	४	२
हस्त	आर्द्रा	उ.फा.	चित्रा	रोहि.	मघा	मूल	शत.	पू.फा.

बु ७ सू. ५ के. शु ८ ६ ४ चं. ह श. ३ ९ ने मं. गु १० १२ २ ११ रा. १

इस मास में पाँच सोमवार पांच मंगलवार मिश्रित फलप्रद हैं। यहाँ बुध और गुरू दोनों वक्री हैं तथा मंगल की वक्र गति कम हो रही है। अतः सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होगा। विश्व के अनेक भागों में होने वाले उत्पात, हिंसाकांड समाप्त होने लगेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सुरक्षा योजनाएं कारगार होंगी। परन्तु सूर्य मंगल का समसप्तम योग तथा पांच ग्रहों का केन्द्र योग शान्ति व्यवस्था बनाये रखने में बाधा उत्पन्न करेगा। मजदूर वर्ग अवांछनीय गतिविधि पैदा करेंगे। पश्चिमी देश आपसी झगड़ों को बढ़ाने में अग्रसर होंगे। पक्षारंभ में सिंह का शुक्र तथा ता. ४ अगस्त को बुध का अस्त होने से सोना, चांदी, तांबा, गेहूँ, जौ, चना, मजीठ, लाल, चन्दन, व लाल मिर्च व रसादि पदार्थों में तेजी होगी। वर्षा में कमी तथा वायुवेग में वृद्धि होगी। सिंह के शुक्र का फल – "दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः। धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः॥"



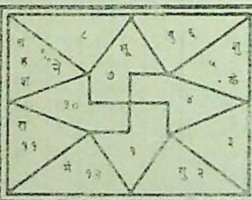
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०५	०५	११	०५	०१	०४	०८	१०	०४
२३	१३	०८	२५	१२	१२	०३	१८	१८
१२	१२	२०	५९	०१	३६	३२	२८	२८
०९	११	०३	०४	५७	४५	१५	४८	४८
५९	७१९	१३	७१	०३	६९	०३	०३	०३
२१	२६	२५	४३	१३	५९	४७	११	११
मा	मा	व	व	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४	१	२	१	१	४	२	४	२
हस्त	हस्त	उ.फा.	चित्रा	रोहि.	मघा	मूल	शत.	पू.फा.

आकाश लक्षण – इस पक्ष मे सिंह का शुक्र वर्षा में कमी तथा वायुवेग में वृद्धि करेगा तो तारीख ४ अक्टूबर को बुध का अस्त कहीं वर्षा करेगा। उत्तरी भारत व पूर्वी देशों में कहीं कहीं श्रेष्ठ वर्षा होगी।

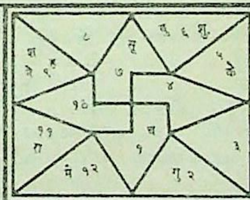
श्री. संवत् २०४५ शकः १९१० आश्विन शुक्ल पक्षः १५																		दिन मान		स्टॅण्डर्ड टाईम				तारीखें			चन्द्र संचार	ता. ११ से २५ अक्टूबर सन् १९८८ ई. राष्ट्रीयमिति १९ आश्विन से ३ कार्तिक तक। दक्षिणायन गोल, शरदृऋतु।
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		दि.	मु.	अं.	स्टॅ. टा.	
रा. दि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	अंग्रे.	महर	अंग्रे.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅ. टा. घंटा मिनटों में है।
१९	१	मं.	५६	५५	२९	१०	चि	५४	२७	२८	११	वै	२४	५५	किं	१६	१७	२८	४४	६	२४	१७	५४	२६	२९	११	तु. १४/५९	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, घटस्थापन, मातामहश्राद्ध, श्री अग्रसेन जयन्ती
२०	२	बु	६०	०	-	-	स्वा	५९	३२	३०	१२	वि	२५	०२	बा	१७	५७	२८	४०	६	२४	१७	५३	२७	३०	१२	तुला	वक्री हस्त में बुध ११/१०, चन्द्रदर्शन मु. १५, उत्तरश्रंगोन्नति,
२१	२	गु	०	३२	६	३८	वि.	६०	०	-	-	प्री.	२४	५२	कौ	६	३८	२८	३६	६	२५	१७	५२	२८	र.१	१३	वृ. २५/२५	रबि-उल-अव्वल मु. ३
२२	३	शु	३	७	७	४०	वि	३	२०	७	४९	आ	२४	२१	ग	७	४०	२८	३१	६	२५	१७	५०	२९	२	१४	वृश्चिक	भद्रा २०/०१ से. E पूर्णिमा, कोजागरी १५, ईद ए मिलाद (बारावफात)
२३	४	श	४	३२	८	१५	अनु	६	२५	९	००	सौ	२३	२८	वि	८	१५	२८	२७	६	२६	१७	४९	३०	३	१५	वृश्चिक	भद्रा ८/१५ तक, ललिता पंचमी,
२४	५	र	४	५२	८	२३	ज्ये	८	१२	९	४३	शो.	२२	१२	बा	८	२३	२८	२३	६	२६	१७	४८	का.१	४	१६	ध. ९/४३	सं. तुला में सूर्य २६/११, मु. ३० पुण्यकाल अगले दिन, सरस्वती आवाहन, (९.४३ उपरान्त)
२५	६	चं	३	५२	८	००	मू	८	४७	९	५८	अ.	२०	३३	तै	८	००	२८	१९	६	२७	१७	४७	२	५	१७	धनु	श्री सरस्वती पूजा संक्रांति पुण्यकाल मध्याह्न तक
२६	७	मं	५	४२	७	०८	पू.षा	८	१२	९	४४	सु	१८	३०	व	७	०८	२८	१५	६	२७	१७	४६	३	६	१८	म. १५/३२	भद्रा ७/०८ से १८/३१ तक, बुध का उदय पूर्व में १०/३५, दुर्गा ८ महाष्टमी, मेला A
०	८	म	१८	१७	२१	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी का क्षय A ज्वालामुखी भद्रकाली जयंती, जैन आयंबिल ओली प्रा. श्री सरस्वती बलिदान
२७	९	बु	५३	३५	२७	५४	उ.षा	६	१७	८	५९	धृ.	१६	०३	बा	१६	५३	२८	१०	६	२८	१७	४५	४	७	१९	मकर	श्री सरस्वती विसर्जन, महानवमी, शस्त्रपूजा, नवरात्र समाप्त
२८	१०	गु	४७	४२	२५	३८	श्र	३/५९	१०/०	७/३०	४५/०५	शू.	१३	१२	तै	१४	४७	२८	६	६	२९	१७	४४	५	८	२०	कुं. १८/५५	मार्गी बुध १०/४२, पंचक प्रारंभ १८/५५, विजयादशमी (दशहरा) रावणदाह,
२९	११	शु	४०	५५	२२	४१	श	५३	५२	२८	०२	ग	१०	००	व	१२	१५	२८	२	६	२९	१७	४३	६	९	२१	कुंभ	भद्रा १२/१५ से २२/५१ तक, उ. फा. में शुक्र २७/४६, पापांकुशा ११ व्रत सबका भरत मिलाप
३०	१२	श	३३	१७	१९	४९	पू.भा	४७	५७	२५	४१	वृ	६/२६	३१/४७	ब	९	२१	२७	५८	६	३०	१७	४२	७	१०	२२	मी. २०/१७	प्रदोष व्रत,
का.१	१३	र	२५	१०	१६	३५	उ.भा	४१	४०	२३	११	व्या.	२२	५६	तै	१६	३५	२७	५४	६	३१	१७	४१	८	११	२३	मीन	स्वाति में सूर्य १९/०८, सायन वृश्चिक में सूर्य १०/१५, हेमन्त ऋतु प्रा., राष्ट्रीय कार्तिक प्रारंभ
२	१४	चं	१६	५५	१३	१७	रे	३५	२५	२०	४१	ह	१९	०४	व	१३	१७	२७	५०	६	३१	१७	३९	९	१२	२४	मे. २०/४१	भद्रा १३/१७ से २३/४१ तक, कन्या में शुक्र २२/५०, पंचक समाप्त २०/४१, सत्य व्रत, शरद् E
३	१५	मं	८	४२	१०	०५	अश्वि.	२९	२७	१८	१९	व	१५	१९	व	१०	०५	२७	४६	६	३२	१७	३८	१०	१३	२५	मेष	श्री वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारंभ, आकाश दीपदान, जैन आयंबिल ओली समाप्त

आश्विन शु० ७ भौमे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६७५ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) आश्विन शु० १५ भौमे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६८२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०६	०८	११	[illegible]	०१	०४	०८	१०	०४
०१	२४	०६	१८	११	२२	०४	१८	१८
०७	१५	५२	२४	३१	००	०४	०३	०३
४८	४९	०७	३१	०७	२४	५५	२१	२१
५९	८२२	०७	१९	०४	७१	०४	०३	०३
२६	३५	४२	१८	३६	०५	२४	११	११
मा	मा	व	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रोहिणी १	[illegible]	[illegible]	[illegible] ४	पुष्य[illegible] २



इस पक्ष मे तिथि २ बुधवार का चन्द्रदर्शन मुहूर्त १५ का है और तुला संक्रांति का प्रवेश भी रविवार को हुआ है अतः सोना, चांदी, गेहूं, चना, चावल, हल्दी, धनिया, जीरा, तिल, तेल, सरसों में तेजी होगी तथा लौंग, इलायची, नारियल, सुपारी, बादाम, के भावों में घटा-बढी. से तेजी की चाल निकलेगी। सूर्य का शुक्र-शनि-हर्षल-नेपच्यून से त्रिरेकादश योग उत्तम है और मंगल-गुरु से षड्ष्टक योग नेष्ट है अतः यहां मिले-जुले फल होंगे। बड़े राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका, यू.एस.एस.आर., चीन, जापान, स्वार्थपरायण, होते हुए भी पारस्परिक राजनैतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की चेष्टा करेंगे। शांति वार्ताएं अधिक होंगी किन्तु उनमें सफलता कम प्राप्त होगी। कृष्ण पक्ष की दशमी-एकादशी-द्वादशी को मेघ-गर्जना एवं बिजली की चमक दिखाई देवे तो अनाजादि का संग्रह करना लाभप्रद होगा। ता. १८ अक्टूबर को पूर्व में बुध का उदय उत्पातकारी है। कृषि कार्यों में क्षति होगी। धान्य, चावल, गेहूँ, तिलहन, धातु पदार्थ, रुई, सूत, गुड़-खांड, घृत, वनस्पति में मंदी होकर तेजी होगी।



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०६	००	११	०५	०१	०५	०८	१०	०४
०८	०५	०६	१९	१०	००	०४	१७	१७
०५	२६	१४	५४	५४	१९	३७	४१	४१
२४	४०	४३	४९	५५	५६	२५	०५	०५
५९	८८२	०२	५०	०५	७१	०४	०३	०३
४९	१५	१२	४२	४८	४७	५४	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाती १	ज्येष्ठा २	उ.भा. १	हस्त ३	रोहिणी १	उ.फा. २	[illegible] २	मघा ४	[illegible] २

आकाश लक्षण - कहीं छुटपुट [illegible] हल्की सर्दी पड़ने लगेगी।

ता. २६ अक्टूबर से ९ नवम्बर सन् १९८८ ई. राष्ट्रीय मिति ४ से १८ कार्तिक तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० कार्तिक कृष्ण पक्षः १६

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (कार्तिक)	मु. (र. अ.)	अं. (अक्टू.)	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
४	१	बु.	१	३२	७	०९	भ.	२४	२०	१६	१६	सि.	११	४८	कौ	७	९	२७	४२	७	३२	१७	३८	११	१४	२६	बृ. २१/५२	
०	२	बु	५५	१५	२८	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वितीया का क्षय
५	३	गु.	५०	२०	२६	४१	कृ.	२०	२२	१४	४२	व्य.	८/३०	४०/०१	व	१५	३४	२७	३८	६	३३	१७	३७	१२	१५	२७	वृष	भद्रा १५/३४ से २६/४१ तक,
६	४	शु.	४७	१५	२५	२८	रो.	१८	०५	१३	४८	प.	२७	५८	ब	१३	५९	२७	३५	६	३४	१७	३६	१३	१६	२८	मि. २५/४३	मार्गी मंगल १०/३७, चित्रा में बुध १६/३६, श्री गणेश ४ व्रत (करक-करवा चौथ) चन्द्रोदय २०।२,
७	५	श.	४६	१५	२५	०५	मृ.	१७	४०	१३	३८	शि.	२६	३३	कौ	१३	०९	२७	३१	६	३४	१७	३६	१४	१७	२९	मिथुन	ईद-ए-मौलाद,
८	६	र	४७	२७	२५	३४	आ.	१९	३०	१४	१९	सि	२५	५१	ग	१३	११	२७	२७	६	३५	१७	३५	१५	१८	३०	मिथुन	भद्रा २५/३४ से,
९	७	च.	५०	३५	२६	५०	पुन.	२३	०	१५	४८	सा.	२५	४३	वि	१४	१३	२७	२४	६	३६	१७	३४	१६	१९	३१	क. ९/२६	भद्रा १४/१३ तक, इंदिरा गांधी पुण्य दिवस
१०	८	मं.	५५	२२	२८	४५	पु	२८	२७	१७	५९	शु.	२६	०५	बा	१५	४९	२७	२०	६	३६	१७	३३	१७	२०	नं१	कर्क	हस्त में शुक्र, ३०/३०, नवम्बर मा. ११ ता. ३०, अहोई अष्टमी
११	९	बु	६०	०	—	—	आश्ले.	३५	२०	२०	४५	शु.	२६	५३	तै	१७	५६	२७	१६	६	३७	१७	३३	१८	२१	२	सि. २०/४५	तुला में बुध १६/५६, वक्री कृत्तिका ४ में गुरु २०/४५,
१२	९	गु.	१	२५	७	१२	म.	४३	२	२३	५१	ब्र.	२७	५३	ग	७	१२	२७	१२	६	३८	१७	३२	१९	२२	३	सिंह	भद्रा २०/३३ से,
१३	१०	शु.	८	१०	९	५५	पू.फा.	५०	५५	२७	०१	ऐं.	२८	५५	वि	९	५५	२७	०९	६	३९	१७	३१	२०	२३	४	सिंह	भद्रा ९/५५ तक,
१४	११	श.	१४	५५	१२	३७	उ.फा.	५८	२७	३०	०२	वै.	२९	४९	बा	१२	३७	२७	०५	६	३९	१७	३०	२१	२४	५	कं. ९/४६	विशाखा में सूर्य २७/१८, रमा ११ व्रत सबका,
१५	१२	र.	२१	२	१५	०५	ह.	६०	०	—	—	वि.	३०	२८	तै	१५	०५	२७	०१	६	४०	१७	२९	२२	२५	६	कन्या	स्वाती में बुध २६/०६, गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत, धनतेरस
१६	१३	चं	२६	१०	१७	०९	ह.	५	७	८	४४	प्री.	—	—	व	१७	०९	२६	५७	६	४१	१७	२८	२३	२६	७	तुला २१/५२	भद्रा १७/०९ से ३०/०१ तक, श्री धन्वन्तरी जयन्ती, यमदीपदान,
१७	१४	मं.	३०	७	१८	४५	चि.	१०	४२	१०	५९	प्री.	६/३०	४७/४२	श	१८	४५	२६	५३	६	४२	१७	२८	२४	२७	८	तुला	नरकहरा रूप १४, श्री हनुमज्जयन्ती,
१८	३०	बु.	३२	४७	१९	५०	स्वा.	१५	५	१२	४५	सौ.	३०	१४	च	७	२१	२६	५०	६	४३	१७	२७	२५	२८	९	तुला	बुध का अस्त पूर्व में ७/४०, दीपावली, श्री महालक्ष्मीपूजन, कमला जयन्ती, श्री महावीर निर्वाण दिन (जैन)

कार्तिक कृ० ८ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६८९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **कार्तिक कृ० ३० बुधे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६९७**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०६	०३	११	०५	०१	०५	०८	१०	०४
१५	१०	०६	२७	१०	०८	०५	१७	१७
०४	२०	१६	५३	११	४४	१३	१८	१८
५५	३८	११	०५	११	३५	११	५०	५०
६०	७२४	०३	८५	०६	७२	०५	०३	०३
०२	३२	१८	१२	४८	२४	२२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाती ३	पुष्य ३	उ.भा. १	चित्रा २	रोहिणी १	उ.फा. ४	मूल २	शत. ४	पू.फा. २

८, श९ ह ने, सू ७, बु ६ शु, के ५, १०, चं ४, रा ११, १, ३, १२ मं, गु २

इस पक्ष में प्रतिपदा बुधवार मध्यम फलप्रद है। यथा **"कार्तिके प्रथम पक्षे प्रथमा बुध संयुता। जायते मध्यमा वृष्टि रना वृष्टिः क्वचिद्भवेत्॥"** मंगल का नीच राशि के सूर्य से षड़ष्टक योग एवं शुक्र से समसप्तक योग होने से अर्नाय देशों में अशान्ति होगी। पाकिस्तान में आन्तरिक अशांति का वातावरण बनेगा। विरोधी पक्षों में विरोध की भावना जाग्रत होगी। श्रमजीवी वर्ग में भी असंतोष का वातावरण बनेगा। हिंसा, हड़ताल, बन्द, घेराव, आदि उत्पात बढ़ेंगे। इंगलैण्ड, पौलेण्ड, अरबराष्ट्र, जर्मनी, जापान, चीन, वियतनाम, मिश्र में राजनैतिक गतिरोध उत्पन्न होगा। इस पक्ष में तिथि क्षय होकर तिथि वृद्धि व्यापारिक वस्तुओं में मंदी के बाद तेजी कारक है। अनाज, चावल, गेहूँ, चना, मूंग, मोठ, बाजरा ज्वार, उड़द, अरहर में घटाबढ़ी से तेजी होगी। अमावस्या बुधवार की दीपावली लक्ष्मीपूजन श्रेष्ठ है। दीपावली प्रदोष व्यापिनी अमावस्या में करना ही शास्त्र सम्मत है। निर्णय सिंधु में लिखा है। दंडैक रजनी योगे दर्शः स्यात्तु परेऽहनि। तदाविहाय पूर्वद्युः परेऽह्नि सुखरात्रिके॥" लक्ष्मी पूजन में (सायंकाल) का समय ही मुख्य होता है।

८, श ह ९ ने, सू बु, चं ७, ६ शु, के ५, १०, ४, ११ रा, १, ३, मं १२, गु २

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा	के.
०६	०६	११	०६	०१	०५	०८	१०	०४
२३	१६	०७	१०	०९	१८	०५	१६	१६
०६	१२	०३	०३	१३	२६	५७	५३	५३
१६	३९	५२	०४	३४	३८	५२	२३	२३
६०	७५५	०९	९५	०७	७३	०५	०३	०३
११	०३	१२	४२	३६	०८	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशाखा १	स्वाती ३	उ.भा. २	स्वाती २	कृत्तिका ४	हस्त ३	मूल २	शत ४	पू.फा. २

आकाश लक्षण - पक्षारंभ में बुध शुक्र का योग पूर्वोत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में मेघ गर्जन, ओला वृष्टि करेगा। पक्षान्त में बुध का अस्त अकाल वृष्टि से कृषि उत्पादन में हानि करेगा। शरदी का जोर बढ़ने लगेगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० कार्तिक शुक्ल पक्षः १७

ता० १० से २३ नवम्बर सन् १९८८ ई० राष्ट्रीयमिति १९ कार्तिक से २ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैंण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हिं. कार्तिक	मु. र.आ.	अं. नव.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१९	१	गु	३४	१२	२०	२५	वि.	१८	१५	१४	०२	शो.	२९	२४	किं.	८	११	२६	४६	६	४४	१७	२६	२६	२९	१०	वृ.७/४३	अन्नकूट, गोर्वधन पूजा, बलिपूजा
२०	२	शु	३४	३०	२०	३२	अनु.	२०	२०	१४	५२	अ.	२८	१३	बा	८	३२	२६	४३	६	४४	१७	२६	२७	३०	११	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. १५, उत्तर श्रृंगोन्नति यम २, भैया दूज टिक्का, विश्वकर्मा जयन्ती,
२१	३	श.	३३	४७	२०	१६	ज्ये.	२१	२०	१५	१७	सु.	२६	४४	तै	८	२७	२६	४०	६	४५	१७	२५	२८	र.१	१२	ध. १५/१७	चित्रा में शुक्र २९/३८, रबि-उल-आखिर मु. ४,
२२	४	र.	३२	१२	१९	३९	मू.	२१	३०	१५	२२	धृ.	२५	००	व	८	००	२६	३६	६	४६	१७	२४	२९	२	१३	धनु	भद्रा ८/०० से १९/३९ तक, शत. ३ मे राहु, पू.फा. १ में केतु १०/३२
२३	५	चं.	२९	४७	१८	४२	पू.षा.	२०	५०	१५	०७	शू.	२३	००	व	७	१३	२६	३३	६	४७	१७	२४	३०	३	१४	म.२०/५९	पांडव ५ ज्ञान पंचमी (जैन) जन्म दिन श्री जवाहरलाल नेहरू (बाल दिवस) A शनि ३०/३९, सूर्यषष्ठी
२४	६	मं.	२७	४२	१७	२८	उ.षा.	१९	४०	१४	३५	गं	२०	४७	तै	१७	२८	२६	३०	६	४७	१७	२३	मा.१	४	१५	मकर	सं. वृश्चिक में सूर्य २५/५५, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन, विशा में बुध १०/२५, मूल ३ में A
२५	७	बु	२२	५२	१५	५७	श्र.	१७	२७	१३	४७	वृ.	१८	२०	व	१५	५७	२६	२७	६	४८	१७	२३	२	५	१६	कु. २५/१४	भद्रा १५/५७ से, २७/५ तक, पंचक प्रारंभ २५/१४, संक्रांति पुण्यकाल मध्याह्न तक
२६	८	गु	१८	२०	१४	०९	ध.	१४	४०	१२	४१	ध्रु.	१५	४०	व	१४	०९	२६	२४	६	४९	१७	२२	३	६	१७	कुंभ	दुर्गा ८, गोपाष्टमी, लाला लाजपतराय निधन दिवस, B भीष्म पंचक प्रारंभ, कालिदास जयन्ती
२७	९	शु	१३	७	१२	०५	श.	११	१५	११	२०	व्या.	१२	४७	कौ	१२	०५	२६	२१	६	५०	१७	२२	४	७	१८	मी. २८/९	तुला में शुक्र १६/१४, कूष्मांड ९ आमला ९ + श्री गुरुनानक ज., श्री निम्बार्काचार्य ज.,
२८	१०	श.	७	२०	९	४७	पू.भा.	७	१५	९	४५	ह.	९/३०	४३/२९	ग	९	४७	२६	१९	६	५१	१७	२२	५	८	१९	मीन	भद्रा २०/३४ से, अनुराधा में सूर्य ९/१५, प्रबोधिनी ११ व्रत स्मार्तों का, तुलसी विवाह B
२९	११	र	१	७	७	१८	उ.भा.	२/२८	४७/५	७/३०	५८/०५	सि.	२७	१०	वि	७	१८	२६	१६	६	५१	१७	२१	६	९	२०	मे. ३०/०५	भद्रा ७/१८ तक, पंचक समाप्त ३०/०५, प्रबोधिनी ११ व्रत वैष्णवों का, चातुर्मास *
०	१२	र	५४	३७	२८	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी का क्षय * व्रत नियम समाप्त, पण्ढर पुर यात्रा (महाराष्ट्र)
३०	१३	चं.	४८	१२	२६	०९	अश्वि	५३	२०	२८	१२	व्य.	२३	५०	कौ	१५	२४	२६	१३	६	५२	१७	२१	७	१०	२१	मेष	वृश्चिक में बुध १६/२२, सोम प्रदोष व्रत, विद्यापति जयन्ती
मा.१	१४	मं.	४१	५२	२३	३८	भ.	४८	५५	२६	२७	व.	२०	३५	ग	१२	५०	२६	११	६	५३	१७	२०	८	११	२२	मेष	भद्रा २३/३८ से, सायन धनु में सूर्य ७/४३, राष्ट्रीय मार्गशीर्ष प्रारंभ, वैकुण्ठ चतुर्दशी
२	१५	बु	३६	१२	२९	२३	कृ.	४५	१२	२४	५९	प.	१७	३२	वि	१०	२७	२६	०८	६	५४	१७	२०	९	१२	२३	वृ. ८/०५	भद्रा १०/२७ तक, अनु. में बुध १८/४२, स्वाती में शुक्र २६/१७, सत्यव्रत, कार्तिकी १५ E
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		E मेला पुष्कर राज, गढ़गंगा रेणुका तीर्थ, भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक स्नान स., +

कार्तिक शु० ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७०५ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **कार्तिक शु० १५ बुधे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७११**

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०७	१०	११	०६	०१	०५	०८	१०	०४
०१	०२	०८	२२	०८	२८	०६	१६	१६
०९	२७	३६	५२	१०	१३	४५	२७	२७
३०	१७	२७	५७	३९	२७	५८	५७	५७
६०	८४४	१४	९६	०८	७३	०६	०३	०३
३०	५९	३०	०९	०६	३६	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
विशाखा ४	धनिष्ठा ३	उ.भा. २	चित्रा १	कृत्ति. ४	चित्रा २	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

श ९ ह ने | सू ८ | ७ बु | ६ शु | १० | च | ५ के | १२ म | ११ रा | गु २ | ४ | १ | ३

इस मास में पांच बुधवार उत्तम है। फल - "बुधस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा श्च सुखसम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते।" प्रजा में सुख-शांति का संचार होगा। धान्य, जौ, गेहूँ, चना, मूंग, मोठ, बाजरा, आदि के भाव सम रहे। कृषि का उत्पादन श्रेष्ठ होने से सुभिक्ष का संचार होगा। बड़े राष्ट्र शान्ति स्थापना कार्यरत रहेंगे किन्तु यहाँ मंगल शनि हर्शल नेपच्यून का केन्द्र योग चल रहा है जो शान्ति कार्यों को पूर्ण सफल नहीं होने देंगे। सत्तापहरण, जनविद्रोह, पारस्परिक, मतभेद से बड़े राष्ट्रों के विकास में बाधा उत्पन्न करेंगे। वृश्चिक संक्रांति मंगलवारी होने से नारियल, सुपारी, लकड़ी, कोयला में तेजी, तथा गेहूँ, जौ, चना, मटर, मूंग, उरद, मसूर, अरहर, गुड़, खांड, शक्कर आदि रसपदार्थों में मंदी होगी। पक्षारंभ में चावल, सरसों, तिल, तेल, ऊनी वस्त्र में मन्दी तथा सोना, चांदी, रुई, में घटाबढ़ी होकर तेजी होगी।

श ९ ह ने | सू ८ बु | ७ शु | ६ | १० | रा ११ | ५ के | मं १२ | गु २ | ४ | १ चं | ३

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०७	००	११	०७	०१	०६	०८	१०	०४
०७	२८	१०	०२	०७	०५	०७	१६	१६
१२	२८	११	२७	२१	३६	२३	०८	०८
५०	१३	४४	३९	४५	००	५०	५२	५२
६०	८४९	१७	९५	०८	७३	०६	०३	०३
३९	५५	४२	१२	१३	५६	३०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु. २	कृत्ति. १	उ.भा. ३	विशा. ४	कृत्ति. ४	चित्रा ४	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

आकाश लक्षण - इस पक्ष के आरम्भ में सुदूर उत्तरी भारत में व्यापक रूप से हल्की वर्षा संभावित है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, म. प्र. में वायुमण्डल, दूषित रहेगा। कहीं झंझावात, तूफान, वायुवेग, बादल चाल रहे।

ता० २४ नवम्बर से ९ दिसम्बर सन् १९८८ ई०, राष्ट्रीयमिति ३ से १८ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः १८

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें वि. मार्ग.	तारीखें मु. र.अ.	तारीखें अं. नवम्बर	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. चं. मि.	
३	१	गु	३१	४०	१९	३४	रो.	४२	३७	२३	५७	शि	१४	४७	बा	८	२५	२६	५	६	५४	१७	२०	१०	१३	२४	वृष	
४	२	शु	२८	३२	१८	२०	मृ.	४१	२५	२३	२९	सि	१२	२८	तै	६	५६	२६	३	६	५५	१७	१९	११	१४	२५	मि. ११।४३	भद्रा २९।५७ से,
५	३	श	[illegible]	०५	१७	४६	आ.	४१	५७	२३	४३	सा	१०	४०	वि	१७	४६	२६	०	६	५६	१७	१९	१२	१५	२६	मिथुन	भद्रा १७।४६ तक, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय १९।४४,
६	४	र	२७	३५	१७	५९	पुन.	४४	२२	२४	४२	शु	९	२९	बा	१७	५९	२५	५८	६	५७	१७	१९	१३	१६	२७	क. १८।२८	
७	५	चं	३०	२	१८	५९	पुष्य.	४८	४०	२६	२६	शु	८	५०	तै	१८	५९	२५	५५	६	५८	१७	१९	१४	१७	२८	कर्क	वक्री कृत्ति. ३ में गुरू ८।१६,
८	६	मं.	३४	२५	२०	४४	आश्ले.	५४	४७	२८	५३	ब	८	४८	ग	७	४६	२५	५३	६	५८	१७	१९	१५	१८	२९	सिं. २८।५३	भद्रा २०।४४ से,
९	७	बु	४०	७	२२	०२	म.	६०	०	—	—	ऐं	९	१६	वि	९	५३	२५	५१	६	५९	१७	१९	१६	१९	३०	सिंह	भद्रा ९।५३ तक,
१०	८	गु.	४६	४०	२५	४०	म.	१	४७	७	४३	वै	१०	०५	बा	१२	२३	२५	४९	७	०	१७	१९	१७	२०	दिस १	सिंह	ज्येष्ठा में बुध २९।३४, दिसम्बर मा. १२ ता. ३१, काल भैरवाष्टमी,
११	९	शु	५१	२५	२८	२३	पू.फा.	९	३५	१०	५१	वि	११	०४	तै	१५	०३	२५	४७	७	१	१७	१९	१८	२१	२	कं. १७।३७	ज्येष्ठा में सूर्य १३।३७ तक,
१२	१०	श	५९	४२	३०	५४	उ.फा.	१७	१७	१३	५६	प्री	१२	०१	व	१७	४१	२५	४५	७	२	१७	१९	१९	२२	३	कन्या	भद्रा १७।४१ से, ३०।५४ तक,
१३	११	र.	६०	०	—	—	ह.	२४	१७	१६	४५	आ	१२	४५	ब	१९	५९	२५	४५	७	३	१७	२०	२०	२३	४	तु. २९।५५	विशाखा में शुक्र २१।००,
१४	११	चं.	४	४७	८	५८	चि.	३०	२०	१९	०४	सौ	१३	०९	बा	८	५८	२५	४२	७	४	१७	२०	२१	२४	५	तुला	उत्पन्ना ११ व्रत सबका
१५	१२	मं.	८	२७	१०	२७	स्वा.	३४	२२	२०	४९	शो	१३	०५	तै	१०	२७	२५	४०	७	४	१७	२०	२२	२५	६	तुला	भौम प्रदोष व्रत,
१६	१३	बु.	१०	३२	११	१७	वि.	३७	७	२१	५५	अ	१२	३१	व	११	१७	२५	३९	७	४	१७	२०	२३	२६	७	वृ. १५।३८	भद्रा ११।१७ से २३।२८ तक, सन्त ज्ञानेश्वर पुण्य तिथि,
१७	१४	गु.	११	०	११	२९	अनु	३८	२२	२२	२६	सु	११	२८	श	११	२९	२५	३७	७	५	१७	२०	२४	२७	८	वृश्चिक	मूल ३ में हर्षल २८।५०, मेला पुरमंडल देविका स्नान (काश्मीर) श्री बाला जयन्ती,
१८	३०	शु.	१०	०	११	०६	ज्ये.	३८	२०	२२	२६	धृ	९	५८	ना	११	०६	२५	३६	७	६	१७	२०	२५	२८	९	ध. २२।२६	शनि का अस्त पश्चिम में २५।३८, अमावस्या पुण्य,

मार्गशीर्ष कृ० ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७१९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) मार्गशीर्ष कृ० ३० शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७२७

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के
०७	०४	११	०७	०१	०६	०८	१०	०४
१५	१२	१२	१५	०६	१५	०८	१५	१५
१८	१३	४७	०५	१६	२८	१६	४३	४३
३६	४६	१९	३१	४९	५५	३१	२६	२६
६०	७०८	२१	१४	०८	७४	०६	०३	०३
५०	१६	३०	१२	००	१८	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु. ४	मघा ४	उ.भा. ३	अनु. ४	कृत्ति. ३	स्वाति ३	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

श ९ ह
ने
सू
शु ७
१०
८
बु
६
चं
रा ११
५ के
मं
गु
१२
२
४
१
३

इस मास में पांच गुरुवार और पांच शुक्रवार भारत के लिए श्रेष्ठ हैं। पश्चिमी-देश, अरबराष्ट्र, इजरायल, ईरान ईराक पाकिस्तान आदि में आपसी विग्रह, आन्तरिक कलह, मतभेद एवं प्राकृतिक आपदाओं से हानि होगी। यहाँ शुक्र अपनी स्वराशि तुला में है। जिसका फल श्रेष्ठदायक है। यथा—"यदा दैत्य-गुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेमभारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्॥"

ह ९ श
ने
सू
७ शु
८ बु
१०
६
चं
के
रा
५
११
मं
गु
१२
२
४
१
३

सू	चं.	मं.	बु	गु	शु.	श.	रा.	के.
०७	०७	११	०७	०१	०६	०८	१०	०४
२३	२०	१५	२७	०५	२५	०९	१५	१५
२५	३३	५०	३९	१५	२४	११	१७	१७
५०	१२	३०	००	०५	३९	१२	५९	५९
६०	८०४	२४	९४	०७	७४	०६	०३	०३
५९	४३	३५	११	१८	३६	५३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
ज्येष्ठा ३	ज्येष्ठा २	उ.भा. ४	ज्येष्ठा ४	कृत्ति. ३	विशा. २	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

पृथ्वी पर आरोग्यता तथा सुख शांति का वातावरण बनेगा। कहीं-कहीं असामाजिक तत्व अशांति भी पैदा कर सकते हैं। सोना, गुड़, खांड में तेजी तथा चांदी में घटावढ़ी रहेगी। रूई, में तेजी के बाद मंदी होगी। मार्गशीर्ष वदी एकादशी रविवार का फल – "मार्गे यदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा। कार्पासादिक सूत्राणि ग्राह्यं वैशाख लाभकृत्॥" यहाँ रूई, सूत, कपास, सन, पाट वारदाना, कपडा, आदि का संग्रह करने से वैशाख मास में लाभ प्राप्त होगा। अमावस्या को शनि का पश्चिम में अस्त होने से अलसी, सरसों, पाट, सूत, वारदाना, फलफूलों के भावों में तेजी तथा पशुओं में रोग की वृद्धि होगी।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में शीत वायु का संचार एवं यत्रतत्र न्यूनाधिक वर्षा बादल चाल बूंदाबांदी होगी। समुद्र तटवर्ती तथा पहाड़ों पर वर्षा एवं ओलावृष्टि तेज वायु के साथ होगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः १९

ता० १० से २३ दिसम्बर सन् १९८८ ई०, राष्ट्रीयमिति १९ मार्गशीर्ष से २ पौष तक। दक्षिणायनगोल, हेमन्तऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें शं. मार्ग.	तारीखें मु. र.आ.	तारीखें ख. दिस.	चन्द्र संचार स्टे. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।
१९	१	श.	७	५०	१०	१४	मू.	३७	१५	२२	००	शू	८/२९	६/५५	व	१०	१४	२५	३४	७	६	१७	२०	२६	२९	१०	धनु	रेवती मे मंगल २९।२८, मूल धनु में बुध १७।२४, द. भारत में चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ.शृ.,
२०	२	र.	०४	४२	९	००	पू.षा.	३५	२२	२१	१६	वृ	२७	३०	कौ	९	००	२५	३३	७	७	१७	२१	२७	ज.१	११	म. २७।०१	जमादि-उल-अव्वल मु. ५,
२१	३	चं.	०	५२	७	२९	उ.षा.	३२	५५	२०	१८	ध्रु	२४	५६	ग	७	२९	२५	३२	७	८	१७	२१	२८	२	१२	मकर	भद्रा १८।३९ से २९।४७ तक, वृश्चिक में शुक्र २२।०७,
०	४	चं.	५६	३७	२९	४७	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी का क्षय,
२२	५	मं.	५२	५	२७	५८	श्र.	३०	१०	१९	१२	व्या	२२	१६	व	१६	५३	२५	३०	७	८	१७	२१	२९	३	१३	कुं. ३०।३७	पंचक प्रारंभ ३०।३७, श्री गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस,
२३	६	बु.	४७	२०	२६	०५	ध.	२७	१०	१८	०१	ह	१९	१२	कौ	१५	०२	२५	२९	७	९	१७	२१	३०	४	१४	कुम्भ	चम्पा षष्ठी स्कन्द षष्ठी
२४	७	गु.	४२	२७	२४	०९	श.	२४	०	१६	४६	व	१६	४५	ग	१३	०७	२५	२८	७	१०	१७	२२	पौ. १	५	१५	कुंभ	भद्रा २४।०९ से, सं. मूल धनु में सूर्य १६।३२, मु. १५ पुण्यकाल १०।८ से, अनु. में शुक्र १४।२३, A
२५	८	शु.	३७	३२	२२	११	पू.भा.	२०	५०	१५	३०	सि	१३	५७	वि	११	१०	२५	२७	७	१०	१७	२२	२	६	१६	मी. ९।४९	भद्रा ११।१० तक, दुर्गाष्टमी,
२६	९	श.	३२	३५	२०	१३	उ.भा.	१७	३५	१४	१३	व्य	११	०८	बा	९	१२	२५	२६	७	११	१७	२२	३	७	१७	मीन	A मूल ४ में शनि २९।२८, सूर्य ७,
२७	१०	र.	२७	४०	१८	१६	रे.	१४	२०	१२	५६	व	८/२९	१९/३२	तै	७	१५	२५	२५	७	१२	१७	२३	४	८	१८	मे. १२।५६	भद्रा २९।१९ से, पू.षा. में बुध २८।२२, पंचक समाप्त १२।५६,
२८	११	चं.	२२	५७	१६	२३	अश्वि.	११	१५	११	४२	शि	२६	४९	वि	१६	२३	२५	२४	७	१२	१७	२३	५	९	१९	मेष	भद्रा १६।२३ तक, मोक्षदा ११ व्रत सबका, गीता जयन्ती,
२९	१२	मं.	१८	३०	१४	३७	भ.	८	२५	१०	३५	सि	२४	१४	बा	१४	३७	२५	२४	७	१३	१७	२३	६	१०	२०	वृ. १६।२१	भौम प्रदोष व्रत,
३०	१३	बु.	१४	२५	१३	०३	कृ.	६	२	९	३८	सा	२१	५१	तै	१३	०३	२५	२३	७	१३	१७	२४	७	११	२१	वृष	सायन मकर में सूर्य २०।५९, उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रारंभ,
पौ.१	१४	गु.	११	२५	११	४८	रो.	४	२२	८	५९	शु	१९	४५	व	११	४८	२५	२२	७	१४	१७	२४	८	१२	२२	मि. २०।५२	भद्रा ११।४८ से २३।२० तक, राष्ट्रीय पौष प्रारंभ, सत्य व्रत, श्री त्रिपुर भैरव जयन्ती श्री दत्त जयन्ती,
२	१५	शु.	९	२२	१०	५९	मृ.	३	४५	८	४४	शु	१८	००	ब	१०	५९	२५	२२	७	१४	१७	२५	९	१३	२३	मिथुन	अन्नपूर्णा जयन्ती, मार्गशीर्ष पूर्णिमा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

मार्गशीर्ष शु० ८ शुक्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७३४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०८	१०	११	०८	०१	०७	०८	१०	०४
००	२७	१८	०८	०४	०४	१०	१४	१४
३३	२७	४९	४०	२६	०७	००	५५	५५
००	१५	४६	०४	१०	०४	०१	४४	४४
६१	८४५	२६	९४	०६	७४	०७	०३	०३
०४	१०	५४	४२	३०	४६	०२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
मू. १	पू.भा. ३	रेवती १	मू. ३	कृत्तिका ३	अनु. १	मूल ४	शत. ३	पू.फा. १

मार्गशीर्ष शु० १५ शुक्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७४१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०८	०२	११	०८	०१	०७	०८	१०	०४
०७	०४	२२	१९	०३	१२	१०	१४	१४
४०	५१	०३	४३	४३	५०	४९	३३	३३
३१	०६	३९	४५	५१	५५	२५	२८	२८
६१	७९४	२८	९४	०५	७४	०७	०३	०३
०६	०३	४२	३६	२४	५१	०५	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
मू. ३	मृग. ४	रेवती २	पू.षा. २	कृत्तिका ३	अनु. ३	मूल ४	शत. ३	पू.फा. १

इस पक्ष में प्रतिपदा शनिवार को दक्षिण भारत में तथा द्वितीया रविवार को उत्तरी भारत में चन्द्रदर्शन होगा। ता. १५ दिसम्बर से धनु-राशि में सूर्य-बुध-शनि-हर्षल-नेप. का योग अशुभ है। राष्ट्रनायकों में परस्पर मतभेद राजविग्रह, अराजकता, प्रकृति-प्रकोप से प्रजा में भय व्याप्त होगा। उत्तरी-भारत में शीत का प्रकोप बढ़ेगा। धनु संक्राति मार्गशीर्ष मास में है। जिसका फल – "मार्गशीर्षे धनुषिहि यदाऽऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकंजेयं विपरीतात्सुखं भवेत्॥" कहीं दुर्भिक्ष का भय व्यापेगा जिससे अन्नादि वस्तुओं में तेजी होगी। मंदी में खरीदने वालों को लाभ होगा। मार्गशीर्ष आदि चार महिनों में शुक्ल पक्ष की तिथि क्षय भी नेष्ट है। प्रजा में पीड़ा, दुर्भिक्ष, भय और कहीं छत्र भंग होगा। स्वार्थी नेता देश की भलाई नहीं कर पायेंगे। पक्ष के आरंभ में धान्य, चावल, गेहूँ, चना, बाजरा, मोठ, मूंग आदि एवं रसपदार्थ, धातुवाना, दालदाना, तिलहन तेज होकर पक्ष के अन्त में मंदी की चाल बनेगी।

आकाशलक्षण – इस पक्ष में पूर्वोत्तरीय भागों में आकस्मिक बादल वर्षा वायुवेग रहेगा। दक्षिण भारत में तथा पर्वतीय प्रदेशों में साधारण वर्षा के साथ शीत वायु का जोर होगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० पौष कृष्ण पक्षः २०	दिन मान	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय / सूर्यास्त	तारीखें हिं. / मु. / अं.	चन्द्र संचार स्टैं. टा.	ता० २४ दिसम्बर ८८ से ७ जनवरी सन् १९८९ ई० राष्ट्रीयमिति ३ से १७ पौष तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हिं.	मु.	दिसम्बर	रा. चं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
३	१	श.	८	३५	१०	४१	आ.	०४	५२	९	००	ब्र	१६	४१	कौ	१०	४१	२५	२३	७	१५	१७	२६	१०	१४	२४	क. २७।३८	बुध का उदय पश्चिम में २२।१७,
४	२	र.	९	२२	११	००	पुन.	६	३०	९	५१	ऐं	१५	५२	ग	११	००	२५	२४	७	१५	१७	२६	११	१५	२५	कर्क	भद्रा २३।२५ से, ज्येष्ठा में शुक्र ३०।५८, क्रिसमस डे (बड़ा दिन)
५	३	चं.	११	४७	११	५९	पु	१०	१०	११	२०	वै	१५	३३	वि	११	५९	२५	२४	७	१६	१७	२७	१२	१६	२६	कर्क	भद्रा ११।५९ तक, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०।२८,
६	४	मं.	१५	५२	१३	३७	अश्ले.	१५	२५	१३	२६	वि	१५	४२	बा	१३	३७	२५	२५	७	१६	१७	२७	१३	१७	२७	सिं. १३।२६	उ.षा. में बुध १५।३७, वक्री कृति. २ में गुरू २१।४०,
७	५	बु	२१	२०	१५	४९	म.	२१	५७	१६	०४	प्री	१६	१७	तै	१५	४९	२५	२६	७	१७	१७	२८	१४	१८	२८	सिंह	पू.षा. में सूर्य १८।४९,
८	६	गु	२७	४५	१८	२३	पू.फा.	२९	२७	१९	०४	आ	१७	०८	द	१८	२३	२५	२७	७	१७	१७	२८	१५	१९	२९	कं. २५।५१	भद्रा १८।२३ से, मकर में बुध १९।२८,
९	७	शु	३४	३२	२१	०७	उ.फा.	३७	१५	२२	१२	सौ	१८	०६	वि	७	४५	२५	२८	७	१८	१७	२९	१६	२०	३०	कन्या	भद्रा ७।४५ तक,
१०	८	श.	४१	२	२३	४३	ह.	४४	४२	२५	११	शो	१९	००	बा	१०	२४	२५	२९	७	१८	१७	३०	१७	२१	३१	कन्या	
११	९	र.	४६	३०	२५	५४	चि.	५१	१५	२७	४८	अ	१९	३८	तै	१२	५३	२५	३१	७	१८	१७	३०	१८	२२	जन १	तु. १४।३०	जनवरी मा.१ ता. ३१ सन् १९८९ ई. प्रारंभ,
१२	१०	चं.	५०	३०	२७	३१	स्वा.	५६	१७	२९	५०	सु	१९	५२	व	१४	४८	२५	३२	७	१९	१७	३१	१९	२३	२	तुला	भद्रा १४।४८ से २७।३१ तक, श्री पार्श्वनाथ जयन्ती,
१३	११	मं.	५२	४२	२८	२४	वि.	५९	३७	३१	१०	धृ	१९	३४	ब	१६	०३	२५	३४	७	१९	१७	३२	२०	२४	३	वृ. २४।५०	सफला ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
१४	१२	बु.	५३	०	२८	३१	अनु	६०	०	–	–	शू	१८	४२	कौ	१६	३३	२५	३६	७	१९	१७	३३	२१	२५	४	वृश्चिक	सफला ११ व्रत निम्बार्कों का,
१५	१३	गु	५१	२७	२७	५४	अनु.	१	७	७	४६	गं.	१७	१४	ग	१६	१७	२५	३७	७	१९	१७	३३	२२	२६	५	वृश्चिक	भद्रा २७।५४ से, श्रवण में बुध १८।१८, मूल धनु में शुक्र २२।५६, प्रदोष व्रत,
१६	१४	शु	४८	१७	२६	३९	ज्ये.	०/५९	५०/०२	७/३०	४०/५७	वृ	१५	१५	वि	१५	२१	२५	३९	७	२०	१७	३४	२३	२७	६	ध. ७।४०	भद्रा १५।२१ तक,
१७	३०	श.	४३	५०	२४	५२	पू.षा.	५६	५	२९	४६	ध्रु	१२	४८	च	१३	४९	२५	४१	७	२०	१७	३५	२४	२८	७	धनु	अश्वि. मेष में मंगल २३।२८, शनैश्चरी अमावस्या पुण्य,
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		

पौष कृ० ८ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७४९ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **पौष कृ० ३० शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७५६**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०८	०५	११	०९	०१	०७	०८	१०	०४
१५	१३	२५	०२	०३	२२	११	१४	१४
४९	३५	५९	०९	०५	५०	४६	०८	०८
२९	२४	२५	१३	१९	१८	१३	०२	०२
६१	७१२	३०	८९	०४	७५	०७	०३	०३
०९	५३	२९	२८	०१	०१	०५	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	भा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
१ पू.षा.	२ हस्त	३ रेवती	२ उ.षा.	२ कृत्तिका	२ ज्येष्ठा	४ मूल	३ शत.	१ पू.फा.

इस पक्ष के प्रारंभ में धनुराशी में पांच ग्रहो का एवं ता० ६-७ जनवरी को छ. ग्रहों का योग नेष्ट है। **"षड्वै ग्रहाः ध्नन्ति समस्त भूपान्।"** यह षड्ग्रही योगजन्य अशुभ फल अमावास्या के आसपास अल्पकालीन होगा। पश्चिमी देश इससे विशेष प्रभावित होंगे। विश्व के अनेक शासनकर्त्ता के सामने अ-कल्पित समस्याओं का सामना करना पडेगा। प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा त्रस्त होगी। प्रतिपदा शनिवार को बुध का उदय पश्चिम में होने से धान्य, जौ, गेहूँ, चावल, मूंग, मोठ, बाजरा, ज्वार, मक्का, रुई, सूत सोना, चांदी, गड, रवौंड, घृत, तेल, तिल में मंदी का वातावरण बनेगा। पौष की अमावस्या शनिवारी है। जिसका फल अच्छा नहीं है। यथा– **"अमावस्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे। यदि स्याद्भयं मादेश्यं तदासस्य महर्घता।।"** अन्न-तृण में महंगाई बढेगी और जनता में भय उत्पन्न होगा। यहाँ मंदी में खरीदने वालों को लाभ होगा।

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०८	०८	११	०९	०१	०८	०८	१०	०४
२२	१२	२९	११	०२	०१	१२	१३	१३
५७	२८	३६	५१	४१	३५	३५	४५	४५
३९	४८	१७	००	२४	३६	३५	४६	४६
६१	८४१	३१	७०	०२	७५	०७	०३	०३
१०	१६	४१	०५	४३	०४	०६	११	११
मा	मा	पा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
३ पू.षा.	४ मूल	४ रेवती	४ श्रवण	२ कृत्तिका	१ मूल	४ मूल	३ शत.	१ पू.फा.

आकाश लक्षण – इस पक्ष के आरंभ में बादल चाल एवं वर्षा के योग है। आसाम, बंगाल, नेपाल, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, के उत्तरी भागमे वर्षा होने से भी शुष्क सरदी- पड़ेगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० पौष शुक्ल पक्षः २१

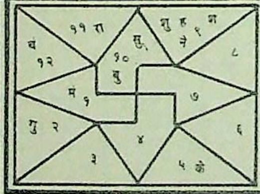
ता० ८ से २१ जनवरी सन् १९८९ ई० राष्ट्रीयमिति १८ पौष से १ माघ तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

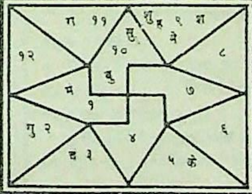
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैंण्डर्ड टाईम) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. पौष	मु.	अं. जन.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१८	१	र.	३८	२७	२२	४३	उ.षा.	५२	१२	२८	१३	व्या	९/३०	५९/५४	किं	११	५०	२५	४३	७	२०	१७	३६	२५	२९	८	म. ११/२३	* पोंगल दक्षिण भारत में **प्रयाग कुम्भ प्रथम स्नान**
१९	२	चं.	३२	२०	२०	१६	श्र.	४७	५०	२६	२८	व	२७	४०	बा	९	३२	२५	४४	७	२०	१७	३७	२६	३०	९	मकर	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उत्तर शृंगोन्नति,
२०	३	मं.	२६	०७	१७	४७	ध.	४३	१५	२४	३८	सि	२५	२२	ग	१७	४७	२५	४६	७	२०	१७	३८	२७	ज.१	१०	कु. १३/३३	भद्रा २८/३० से, उ.षा. में सूर्य २०/४५, जमादि-उल-आखिर मु. ६, पंचक प्रारंभ १३/३३,
२१	४	बु.	१९	४७	१५	१५	श.	३८	४२	२२	४९	व्य	२१	०५	वि	१५	१५	२५	४८	७	२०	१७	३८	२८	२	११	कुंभ	भद्रा १५/१५ तक,
२२	५	गु	१३	४०	१२	४८	पू.भा.	३४	२७	२१	०७	व	१७	५४	बा	१२	४८	२५	५०	७	२०	१७	३९	२९	३	१२	मी. १५/३२	पू.षा. १ में नेपच्यून २६/३४, शनि का उदय पूर्व में ८/३९, **लोहड़ी महोत्सव पंजाब प्रान्त में,**
२३	६	शु	७	५७	१०	३०	उ.भा.	३०	४०	१९	३५	प	१४	५०	तै	१०	३०	२५	५३	७	१९	१७	४०	मा.१	४	१३	मीन	सं. मकर में सूर्य २७/१५, मु.३०, पुण्यकाल अगले दिन, पू.षा. १ में शनि १४/१७,
२४	७	श.	२	४२	८	२४	रे.	२७	२५	१८	१७	शि	११	५७	व	८	२४	२५	५५	७	१९	१७	४१	२	५	१४	मे. १८/१७	भद्रा ८/२४ से १९/२८ तक, पंचक समाप्त १८/१७, गंगासागर यात्रा संक्रान्ति पुण्यकाल, A
०	८	श	५८	१०	३०	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	अष्टमी का क्षय, A श्री गुरू गोबिन्द सिंह जन्म दिन, श्री दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी नवरात्रारंभ *
२५	९	र.	५४	१५	२९	०१	अश्वि.	२४	५०	१७	१५	सि	९/३०	१७/४९	बा	१७	४६	२५	५७	७	१९	१७	४२	३	६	१५	मेष	शत. २ में राहु, मघा ४ मे केतु ७/५३, वक्री बुध ३१/०८,
२६	१०	चं.	५१	०५	२७	४५	भ.	२२	५२	१६	२८	शु	२८	३९	तै	१६	२१	२५	५९	७	१९	१७	४३	४	७	१६	वृ. २२/२१	पू.षा. में शुक्र १४/३७,
२७	११	मं.	४८	४७	२६	४९	कृ.	२१	४७	१६	०१	शु	२६	३७	व	१५	१४	२६	०२	७	१८	१७	४३	५	८	१७	वृष	भद्रा १५/१४ से २६/४९ तक, पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
२८	१२	बु	४७	२०	२६	१४	रो.	२१	२७	१५	५३	ब्र	२४	५६	ब	१४	२८	२६	०४	७	१८	१७	४४	६	९	१८	मि. २८/०१	बुध का अस्त पश्चिम में १६/१०, पुत्रदा ११ व्रत निम्बार्कों का
२९	१३	गु	४६	५२	२६	०३	मृ.	२२	०५	१६	०८	ऐं	२३	३४	कौ	१४	०५	२६	०६	७	१८	१७	४५	७	१०	१९	मिथुन	प्रदोष व्रत
३०	१४	शु	४७	३२	२६	१९	आ.	२३	४२	१६	४७	वै	२२	३२	ग	१४	०७	२६	०९	७	१८	१७	४६	८	११	२०	मिथुन	भद्रा २६/१९ से, मार्गी गुरू ११/४५, सायन कुंभ में सूर्य ७/३८,
मा.१	१५	श.	४९	२२	२७	०२	पुन.	२६	३०	१७	५४	वि	२१	५२	वि	१४	३७	२६	१२	७	१८	१७	४७	९	१२	२१	क. ११/३७	भद्रा १४/३७ तक, राष्ट्रीय माघ प्रारंभ, सत्यव्रत, शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रारंभ, पौषी १५,

पौष शु० ७ शनी प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७६३ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **पौष शु० १५ शनी प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७७०**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	११	००	०९	०१	०८	०८	१०	०४
००	२२	०३	१७	०२	१०	१३	१३	१३
०५	२९	२१	४७	२७	२१	२४	२३	२३
४३	३८	२५	३४	१०	१४	२२	३०	३०
६१	८४१	३२	१७	०१	७५	०६	०३	०३
०७	३६	४२	१८	१२	०७	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.षा. २	रेवती २	अश्वि. २	श्रवण ३	कृत्ति. २	मूल ४	पू.षा. १	शत. ३	पू.फा. १



इस मास में पाँच शनिवार तथा शुक्ल पक्ष की तिथि क्षय अशुभ फलप्रद है। राजप्रजा में अशांति व्याप्त होगी। पाँच शनिवार का फल – "शनिवाराः यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्चश्चिदाहो महर्घता॥" पूर्वोत्तर देश- आसाम, वर्मा, चीन, जापान, अमेरिका में उपद्रव होंगे। प्रकृति-प्रकोप, रोग, चौरादि से जनता त्रस्त रहे। हिमपात और शीत-प्रकोप से कृषि में हानि होगी।



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	०२	००	०९	०१	०८	०८	१०	०४
०७	२६	०७	१५	०२	१९	१४	१३	१३
१३	४६	१३	५१	२३	०७	१२	०१	०१
१५	२५	०३	५७	११	०३	०९	१५	१५
६१	७५७	३३	५९	०	७५	०६	०३	०३
०२	४१	३६	१२	१६	०७	४२	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.षा. ४	पुन. ३	अश्वि. ३	श्रवण २	कृत्ति. २	पू.षा. २	पू.षा. १	शत. २	मघा ४

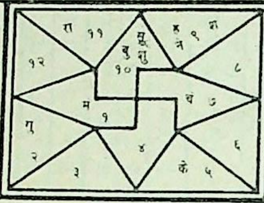
अनाज आदि खाद्य वस्तुओं में तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु, सरसों, तिल, मूगंफली, तेल, घी, गुड़ खांड का संग्रह करने वालों को लाभ होगा। मेष राशि के मंगल का फल – "भूमिपुत्रो यदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोध वांस्तु भवेन्नृपः॥" धान्यादि में मंदी तथा सोना, चांदी आदि धातु, मूंगा, मोती, रत्न रसादि पदार्थ गुड़, खांड, शक्कर, रूई, वस्त्र, पाट, वारदाना में तेजी होगी।

आकाश लक्षण – शनि का उदय एवं बुध का अस्त होने से दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आसाम, उत्तरी पूर्वी राजस्थान में बादल चाल व वर्षा होगी। शरदी एवं वायुवेग की प्रबलता से तापमान गिरेगा। पहाड़ों पर भारी हिमपात से शीत लहर जोर पकड़ेगी।

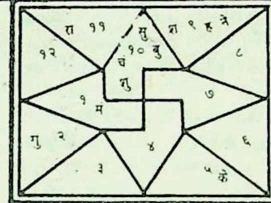
श्री संवत् २०४५ शकः १९१० माघ कृष्ण पक्षः २२																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं. टा.	२२ जनवरी से ६ फरवरी सन् १९८९ ई०, राष्ट्रीयमिति २ से १७ माघ तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।
रा. दि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	मास	उ.अ.	मास	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२	१	र.	५२	३५	२८	१९	पुष्य	३०	३०	११	२९	प्री	२४	३५	बा	१५	३७	२६	१५	७	१७	१७	४८	१०	[illegible]	२२	कर्क	
३	२	चं.	५६	५७	३०	०४	आश्ले.	३५	४२	२१	३४	आ	२१	४१	तै	१७	०८	२६	१७	७	१७	१७	४८	११	१४	२३	सिं. २१/३४	श्रवण में सूर्य २३/०५, श्री सुभाष चन्द्र बोस नेताजी जयन्ती,
४	३	मं.	६०	०	—	—	म.	४२	००	२४	०५	सौ	२२	०८	व	१९	०७	२६	२०	७	१७	१७	४९	१२	१५	२४	सिंह	भद्रा १९/०७ से, A चन्द्रोदय २१/०२,
५	३	बु.	२	२७	८	१६	पू.फा.	४९	१२	२६	५८	शो	२२	५२	वि	८	१६	२६	२३	७	१७	१७	५०	१३	१६	२५	सिंह	भद्रा ८/१६ तक, वक्री उ.षा. में बुध ३०/०७, श्री गणेश ४ व्रत, संकटहारिणी ४ A
६	४	गु.	८	५२	१०	४९	उ.फा.	५७	०	३०	०४	अ	२३	४७	बा	१०	४९	२६	२६	७	१६	१७	५१	१४	१७	२६	कं. ९/४५	उ.षा. में शुक्र ३०/१२, भारतीय गणराज्य दिवस,
७	५	शु.	१५	३७	१३	३५	ह.	६०	०	—	—	सु	२४	४६	तै	१३	३१	२६	२९	७	१६	१७	५२	१५	१८	२७	कन्या	
८	६	श.	२२	१५	१६	१०	ह.	४	४५	९	१०	धृ	२५	३७	व	१६	१०	२६	३२	७	१६	१७	५२	१६	१९	२८	तु. २२/३७	भद्रा १६/१० से २९/२४ तक, लाला लाजपतराय जयन्ती.
९	७	र.	२८	१२	१८	३२	चि.	१२	०	१२	०३	शू	२६	१३	ब	१८	३२	२६	३५	७	१५	१७	५३	१७	२०	२९	तुला	मकर में शुक्र २२/०७, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती
१०	८	चं.	३२	५०	२०	२३	स्वा.	१८	१०	१४	३१	गं	२६	२३	बा	७	३२	२६	३९	७	१५	१७	५४	१८	२१	३०	तुला	महात्मा गांधी निधन दिवस + नक्त नवारण चतुर्दशी
११	९	मं.	३५	४५	२१	३३	वि.	२२	४५	१६	२१	वृ	२६	००	तै	९	०४	२६	४२	७	१५	१७	५५	१९	२२	३१	वृ. ९/५४	भरणी में मंगल २४/११, बुध का उदय पूर्व में ८/२४,
१२	१०	बु.	३६	४७	२१	५७	अनु.	२५	३५	१७	२८	ध्रु	२५	०२	व	९	५१	२६	४५	७	१४	१७	५६	२०	२३	१ फ.	वृश्चिक	भद्रा ९/५१ से २१/५७ तक, फरवरी मा. २ ता. २८,
१३	११	गु.	३५	४५	२१	३२	ज्ये.	२६	२२	१७	४७	व्या	२३	२६	ब	९	५१	२६	४९	७	१४	१७	५७	२१	२४	२	ध. १७/४७	षट्तिला ११ व्रत सबका,
१४	१२	शु.	३२	४७	२०	२०	मू.	२५	१७	१७	२०	ह	२१	१३	कौ	९	०१	२६	५२	७	१३	१७	५८	२२	२५	३	धनु	= मौनी अमावस्या पुण्य, मेला प्रयागराज, कुम्भ महापर्व मुख्य स्नान
१५	१३	श.	२८	५	१८	२६	पू.षा.	२२	३०	१६	१२	व	१८	२८	ग	७	२८	२६	५६	७	१२	१७	५९	२३	२६	४	म. २१/४७	भद्रा १८/२६ से २९/१५ तक, शनि प्रदोष व्रत मेरु त्रयोदशी जैन
१६	१४	र.	२१	५७	१५	५९	उ.षा.	१८	१५	१४	३०	सि	१५	१५	श	१५	५९	२६	५९	७	१२	१७	५९	२४	२७	५	मकर	धनिष्ठा में सूर्य २६/१५, मार्गी बुध २५/३६, मूल ४ में हर्षल १३/३८, +
१७	३०	चं.	१४	५०	१३	०७	श्र.	१२	५७	१२	२२	व्य	११	४२	ना	१३	०७	२७	३	७	११	१८	००	२५	२८	६	कुं. २३/१०	श्रवण में शुक्र २१/५०, पंचक प्रारंभ २३/१०, सोमवती अमावस्या =

माघ कृ० ८ चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७७९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) माघ कृ० ३० चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७८६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	०६	००	०९	०१	०९	०८	१०	०४
१६	१५	१२	०५	०२	००	१५	१२	१२
२२	२५	१८	२८	३२	२३	११	३२	३२
०३	०२	४४	२०	४४	०६	२०	३७	३७
६०	७३५	३४	५२	०२	७५	०६	०३	०३
५६	४०	२४	३६	०६	०७	२४	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रवण २	स्वाती ३	अश्वि. ४	उ.षा. ३	कृत्तिका २	उ.षा. २	पू.षा. १	शत. २	मघा ४



इस पक्ष के आरंभ में धनु राशि में तथा अमावस्या के नजदीक मकर राशि में चन्द्रमा के आने से चतुर्ग्रही योग बनेगा। जिसका फल – **"एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वांरुधिरेण जलेन वा॥"** विश्व के अनेक क्षेत्रों में वैर-विरोध, हिंसा, आन्दोलन, प्रकृति-प्रकोप, अराजकता से प्रजा में भय व्याप्त होगा। युद्धप्रिय राष्ट्र अपने बल पर स्वार्थ सिद्धि की भावना प्रबल होगी। सोमवती अमावस्या धान्यादि वस्तुओं में मंदी कारक है। किन्तु सूर्य, बुध, शुक्र का योग वर्षाक्रम तथा धान्य वस्तुओं में तेजी करेगा। फल – **"एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥"** सभी प्रकार के अनाजों में तेजी रहेगी। मंदी के झटकों में खरीदना अच्छा है। माघ कृष्ण पक्ष की ५-६-७ तिथि शुक्र-शनि-रविवार की है। यह विश्व में युद्ध भयकारक है। भारत को भी सावधान रहना आवश्यक है। दक्षिण पश्चिम दिशा में विशेष उत्पात संभव है।



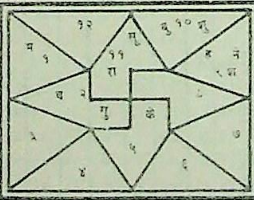
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	०९	००	०९	०१	०९	०८	१०	०४
२३	१९	१६	०२	०२	०९	१५	१२	१२
२८	०६	२१	१६	५१	०८	५५	१०	१०
१४	५३	३६	३७	३१	५४	१३	२२	२२
६०	८८६	३५	०४	०३	७५	०६	०३	०३
४८	२८	०४	४८	२४	०७	००	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
धनि. १	श्रवण ३	भरणी १	उ.षा. २	कृत्तिका २	उ.षा. ४	पू.षा. १	शत. २	मघा ४

आकाश लक्षण – इस पक्ष के मध्य में बुध का उदय पूर्वी प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में कहीं वर्षा बादल चाल रहेगी। वायु का जोर रहेगा। ऋतु विपर्यय होगा।

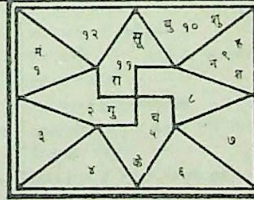
श्री संवत् २०४५ शकः १९१० माघ शुक्ल पक्षः २३																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टें. टा.	ता. ७ से २० फरवरी सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १८ माघ से १ फाल्गुन तक। उत्तरायण दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	माघ	र.अ.	फ.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
१८	१	म.	७	०२	९	५९	ध.	७	००	९	५८	व	७/२८	५६/४	ब	९	५९	२७	०६	७	१०	१८	०१	२६	२९	७	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. १५, उ. श्रृंगोन्नति
०	२	म	५८	५५	३०	४४	०	० ०	० ४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	द्वितीया का क्षय,
१९	३	बु.	५०	५५	२७	३२	श.	५४	३२	७/२८	२७/५९	शि	२४	१२	तै	१७	०७	२७	१०	७	१०	१८	०२	२७	र.१	८	मी. २३/३६	रज्जब मु. ७,
२०	४	गु	४३	२०	२४	२९	उ.भा.	४८	५२	२६	४२	सि	२०	२८	व	१३	५९	२७	१४	७	०९	१८	०३	२८	२	९	मीन	भद्रा १३/५९ से २४/२९ तक, तिल चतुर्थी,
२१	५	शु	३६	३०	२१	४४	रे.	४३	५७	२४	४३	सा	१६	५७	ब	११	०४	२७	१८	७	०८	१८	०४	२९	३	१०	मे. २४/४३	पंचक समाप्त २४/४३, बसन्त पंचमी, श्री ५, श्री सरस्वती जयन्ती,
२२	६	श.	३०	४०	१९	२३	अश्वि	४०	२	२३	०८	शु	१३	४५	कौ	८	३०	२७	२२	७	०७	१८	०४	३०	४	११	मेष	
२३	७	र.	२६	००	१७	३०	भ.	३७	१७	२२	०१	शु	१०	५४	व	१७	५४	२७	२६	७	०६	१८	०५	फा.१	५	१२	वृ २७/५२	भद्रा १७/३० से २८/४५ तक, सं. कुंभ मे सूर्य १६/१७, मु. १५ पुण्यकाल ९/५३ से, रथसप्तमी,
२४	८	चं.	२२	३७	१६	०८	कृ	३५	५२	२१	२६	ब्र	८/३०	२७/२७	ब	१६	०८	२७	३०	७	०५	१८	०६	२	६	१३	वृष	कृत्तिका ३ मे गुरु ७/३०, पू.षा. २ में शनि १९/२४, दुर्गाष्टमी, भीष्म ८,
२५	९	मं	२०	२२	१५	१८	रो.	३५	४२	२१	२२	वै	२८	५२	कौ	१५	१८	२७	३४	७	०५	१८	०७	३	७	१४	वृष	A मेला जैसलमेर (राजस्थान) ३ दिन का,
२६	१०	बु	१९	५५	१५	०२	मृ	३६	५७	२१	५१	वि	२७	४३	ग	१५	०२	२७	३८	७	०४	१८	०७	४	८	१५	मि. ९/३७	भद्रा २७/६ से,
२७	११	गु	२०	३७	१५	१८	आ.	३९	३०	२२	५१	प्री	२६	५८	वि	१५	१८	२७	४२	७	०३	१८	०८	५	९	१६	मिथुन	भद्रा १५/१८ तक, वक्री प्लूटो १५/२५, जया एकादशी व्रत सबका,
२८	१२	शु	२२	३७	१६	०५	पुन.	४३	१२	२४	१९	आ	२६	३६	बा	१६	०५	२७	४६	७	०२	१८	०९	६	१०	१७	क. १७/५७	धनिष्ठा में शुक्र १३/३६, भीष्म द्वादशी, प्रदोष व्रत, शुक्र वृद्धत्व प्रारंभ ११/४७,
२९	१३	श.	२५	४५	१७	१९	पु	४८	१२	२६	१४	सौ	२६	३४	तै	१७	१९	२७	५०	७	०१	१८	१०	७	११	१८	कर्क	शतभिषा मे सूर्य ३०/४६, श्रवण मे बुध २४/५२, सायन मीन मे सूर्य २१/५२, बसंत ऋतु प्रा., A
३०	१४	र	३०	०	१९	००	आश्ले	५३	५०	२८	३२	शो	२६	५१	व	१९	००	२७	५४	७	००	१८	१०	८	१२	१९	सि. २८/३२	भद्रा १९/०० से, रथयात्रा जैन पर्व, श्री रामचरण महाप्रभु जयन्ती (रामस्नेही सम्प्रदाय)
फा.१	१५	चं	३५	७	२१	०२	म	६०	०	—	—	अ	२७	२४	वि	७	५८	२७	५८	६	५९	१८	११	९	१३	२०	सिंह	भद्रा ७/५८ तक, शुक्र अस्त पूर्व मे ११/४७, राष्ट्रीय फाल्गुन प्रारंभ, सत्यव्रत +
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	+ माघस्नान समाप्त, माघी १५, श्री ललिता जयन्ती, श्री रविदास जयन्ती, खग्रास चन्द्रग्रहण,

माघ शु० ८ चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७९३ **(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)** **माघ शु० १५ चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८००**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा	के
१०	०१	००	०९	०१	०९	०८	१०	०४
००	००	२०	०४	०३	१७	१६	११	११
३३	५६	२८	५८	१९	५४	३६	४८	४८
२५	५८	१०	३६	३७	३०	४२	०६	०६
६०	८१४	३५	४३	०८	७५	०५	०३	०३
२८	०५	२३	२४	४८	०३	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३	२	३	३	२	३	१	२	४
धनि	कृत्ति	भरणी	उ.षा	कृत्ति	श्रवण	पू.षा	शत	मघा



इस पक्ष मे मंगलवार का चन्द्रदर्शन मु. १५ पर होगा तथा द्वितीया क्षय होने से रुई, अनाज, सोना, चांदी, गुड़, खांड, में तेजी होगी। युद्धप्रिय मंगल का मजदूर नेता शनि से त्रिकोण-योग तथा ता. १२ फरवरी से सूर्य राहु से त्रिरेकादश योग बनेगा। यह विनाशोन्मुख विश्व को बचाने का भरसक प्रयत्न करेंगे। एक ओर विश्व में जहां संकट जोर पकड़ेगा तो दूसरी ओर विश्वशांति सुरक्षा के प्रबल प्रयत्न होंगे। भारत को विदेशों से पूर्ण सहायता मिलेगी किन्तु आन्तरिक दुर्व्यवस्था से उसका उपयोग ठीक नहीं होगा। पूर्णिमा को शुक्र का अस्त राक्षस गण में अशुभ फलप्रद है। भारत की राजधानी दिल्ली में असामाजिक तत्व मौका पाकर बम विस्फोट, गुण्डागर्दी, अराजकता फैलायेंगे। अतः भारत सरकार को सतर्क रहना आवश्यक है। मारवाड़ देश एवं सिंधु प्रदेश में दुर्भिक्ष भय व्यापेगा। विपक्षी लोग प्रबल होकर प्रधानमंत्री को हटाने की कोशिश करेंगे। असामयिक वर्षा से कृषि में हानि होगी। गुड़-खांड, अलसी, सरसों, सोना, ताम्बा, रुई, लालवस्तुओं में तेजी होगी। चांदी में मंदी की चाल बनेगी।



सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा	के
१०	०४	००	०९	०१	०९	०८	१०	०४
०७	००	२४	११	०३	२६	१७	११	११
३७	२८	३७	१४	५६	३९	१५	२५	२५
१६	३२	०१	०५	३५	४५	३५	५१	५१
६०	७२१	३५	६४	०५	७५	०५	०३	०३
२६	०६	४५	५९	५४	००	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१	१	४	१	३	१	२	२	४
शत	मघा	भरणी	श्रवण	कृत्तिका	धनि	पू.षा	शत	मघा

आकाशलक्षण – इस पक्ष में पर्वतीय प्रदेशों में बूंदाबादी होगी। मैदानी प्रदेशों में वायुवेग अधिक कहीं बादल-चाल रहेगी। दक्षिणभारत [illegible] शुक्र का अस्त वायुवेग के साथ वर्षा कारक है।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० फाल्गुन कृष्ण पक्षः २४																		दिन मान		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्योदय		स्टॅण्डर्ड टाईम सूर्यास्त		तारीखें हिं.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टॅं. टा.	ता. २१ फरवरी से ७ मार्च सन् १९८९ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १६ फाल्गुन तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, वसंतऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	फाल्गुन	रजब	फ़र.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅं. टा. घंटा मिनटों में है।
२	१	म.	४१	०	२३	२२	म.	०	३०	७	१०	सु	२८	०९	बा	१०	१०	२८	२	६	५८	१८	१२	१०	१४	२१	सिंह	
३	२	बु	४७	२५	२५	५५	पू.फा.	७	४५	१०	०३	धृ	२९	०४	तै	१२	३७	२८	६	६	५७	१८	१२	११	१५	२२	क. १६/४९	कुंभ में शुक्र २१/३५,
४	३.	गु.	५४	७	२८	३५	उ.फा.	१५	२५	१३	०६	शू	३०	०२	व	१५	१५	२८	१०	६	५६	१८	१३	१२	१६	२३	कन्या	भद्रा १५/१५ से, २८/३५ तक, कृतिका में मंगल १५/४९,
५	४	शु	६०	०	—	—	ह.	२३	१२	१६	१२	गं	—	—	बा	१७	५४	२८	१४	६	५५	१८	१३	१३	१७	२४	तु. २९/४२	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१/३९,
६	४	श.	०	४५	७	१२	चि.	३०	४५	१९	१२	गं	६	५८	बा	७	१२	२८	१९	६	५४	१८	१४	१४	१८	२५	तुला	
७	५	र.	६	५०	९	३७	स्वा.	३७	३७	२१	५६	वृ	७	४६	तै	९	३७	२८	२३	६	५३	१८	१५	१५	१९	२६	तुला	
८	६	चं.	११	५७	११	३९	वि.	४३	२५	२४	१४	ध्रु	८	१७	व	११	३९	२८	२७	६	५२	१८	१५	१६	२०	२७	वृ. १७/३९	भद्रा ११/३९ से, २४/२८ तक, शतभिषा में शुक्र २९/४२,
९	७	मं.	१५	४२	१३	०८	अनु.	४७	४२	२५	५६	व्या	८	२४	ब	१३	०८	२८	३१	६	५१	१८	१६	१७	२१	२८	वृश्चिक	वृष में मंगल २८/५४,
१०	८	बु	१७	४७	१३	५७	ज्ये.	५०	१२	२६	५५	ह	८	०२	कौ	१३	५७	२८	३५	६	५०	१८	१६	१८	२२	मा.१	ध. २६/५५	धनिष्ठा में बुध २६/१९, मार्च मा. ३ ता. ३१, श्री सीता ८ हलाष्टमी,
११	९	गु.	१७	५५	१३	५९	मू.	५०	५२	२७	१०	व	७/२९	५/३१	ग	१३	५९	२८	४०	६	४९	१८	१७	१९	२३	२	धनु	भद्रा २५/४२ से, श्रीरामदासनवमी,
१२	१०	शु	१६	५	१३	१४	पू.षा.	४९	३२	२६	३७	व्य	२७	१९	वि	१३	१४	२८	४४	६	४८	१८	१८	२०	२४	३	धनु	भद्रा १३/१४ तक,
१३	११	श.	१२	१७	११	४२	उ.षा.	४६	२५	२५	२१	व	२४	३५	बा	११	४२	२८	४८	६	४७	१८	१८	२१	२५	४	म. ८/१९	पू.भा. में सूर्य १३/०८, विजया ११ व्रत सबका,
१४	१२	र	६	४५	९	२८	श्र.	४१	४५	२३	२८	प	२१	१६	तै	९	२८	२८	५३	६	४६	१८	१९	२२	२६	५	मकर	भद्रा ३०/२९ से, प्रदोष व्रत,
०	१३	र	५९	४२	३०	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी का क्षय * १४ व्रत सबका, मेला शिवरात्रि,
१५	१४	चं.	५१	३५	२७	२३	ध.	३५	५०	२१	०५	शि	१७	३३	वि	१७	०४	२८	५७	६	४५	१८	२०	२३	२७	६	कुं. १०/१७	भद्रा १७/०४ तक, कुंभ में बुध १९/२६, पंचक प्रारंभ १०/१७, श्री महाशिवरात्रि *
१६	३०	मं.	४२	४२	२३	४९	श.	२९	०	१८	२०	सि	१३	३२	च	१३	३७	२९	१	६	४४	१८	२०	२४	२८	७	कुंभ	भौमवती अमावस्या पुण्य,

फाल्गुन कृ० ८ बुधे प्रातः स्टॅं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८०९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) फाल्गुन कृ० ३० भौमे प्रातः स्टॅं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८१९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.	रा.	के.
१०	०७	०१	०९	०१	१०	०८	१०	०४
१६	१८	००	२२	०४	०७	१८	१०	१०
४०	३२	००	०९	५५	५४	००	५७	५७
१७	२१	५४	३४	५८	१९	५८	१४	१४
६०	८१०	३६	८१	०७	७४	०४	०३	०३
१३	४८	१०	१२	२४	५६	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
शत. ४	ज्येष्ठा १	कृति. २	श्रवण ४	कृति. ३	शत. १	पू.षा. २	शत. २	मघा ४

यहाँ युद्ध प्रिय मंगल शान्ति प्रिय गुरू के साथ होने का बढ़ रहा है और २ मार्च से इन दोनों का सूर्य-शुक्र-राहु से केन्द्र योग तथा शनि-हर्षल-नेपच्यून से षड्ष्टक योग है अतः अकल्पित उलटफेर की संभावना बनेगी। युद्धोन्मादी राष्ट्र शांति भंग करके युद्धरत दिखाई देंगे। मध्य पूर्व एशिया, चीन, जापान, वर्मा, आसाम, नेपाल, भूटान में उत्पात होंगे। पश्चिमी देशों में भी उग्र प्रदर्शन, मतभेद, हिंसाकांड होंगे। भारत में भी भय व्याप्त होगा। सीमा संघर्ष, श्रमिक आन्दोलन तोड़फोड़ से हानि होगी। प्रजा में रोगोत्पात, प्रकृति प्रकोप से भय व्याप्त होगा। व्यापारिक वस्तुओं में भारी उथल-पुथल होगी। चतुर व्यापारी ही लाभ ले सकेंगे। कुंभ राशि का शुक्र अनाज, रसपदार्थ, धातु आदि में मंदीकारक है। यथा –"कुंभराशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचूरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोका सर्वेनिरामयाः॥" प्रजा में सुखशांति की वृद्धि होगी। श्रेष्ठ समयानुकूल वर्षा होगी जिससे धान्यादि के भाव मंदे होंगे किन्तु शुक्र के साथ सूर्य-राहू भी हैं अतः यह मन्दी को रोककर तेजी को प्रोत्साहन देंगे।

सू.	च.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा	के
१०	१०	०१	१०	०१	१०	०८	१०	०४
२२	११	०३	००	०५	१५	१८	१०	१०
४१	५४	३८	३६	४२	२३	२८	३८	३८
१०	५८	२३	५१	२७	४६	०९	०९	०९
६०	९०७	३६	८९	०८	७४	०४	०३	०३
०३	१३	२२	००	१८	५१	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पू.भा. १	शत. २	कृति. ३	धनि. ३	कृति. ३	शत. ३	पू.षा. २	शत. २	मघा ४

आकाशलक्षण – पक्षारंभ में पर्वतीय प्रदेशों में ओला और पाला पड़ने की संभावना है। पूर्वी वायु के साथ आकाश में बादल भर जायेंगे। बूंदाबांदी अथवा कुछ प्रदेशों में वर्षा होगा। मौसम का क्रम अनिश्चित रहेगा।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० फाल्गुन शुक्ल पक्षः २५

ता० ८ से २२ मार्च सन् १९८९ ई० राष्ट्रीय मिति १७ फाल्गुन से १ चैत्र तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, 'बसंत ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैण्डर्ड टाईम) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हिं.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.	
१७	१	बु	३३	३०	२०	०७	पू.भा	२१	४७	१५	२६	सा	९/२९	२१/७	कि	९	५८	२९	६	६	४३	१८	२१	२५	२९	८	मी. १०/१०	
१८	२	गु	२४	२२	१६	२७	उ.भा.	४	३२	१२	३१	शु	२४	५८	कौ	१६	२७	२९	१०	६	४२	१८	२२	२६	३०	९	मीन	चन्द्रदर्शन मु. ३०, दक्षिण श्रृंगोन्नति, श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
१९	३	शु	१५	४७	१२	५९	रे.	७	४५	९	४६	ब्र	२१	०३	ग	१२	५९	२९	१४	६	४०	१८	२३	२७	शा.१	१०	मे ९/४६	भद्रा २३/२३ से, शतभिषा में बुध २९/२६, पू.भा. में शुक्र २२/०४, शाबान मु. ८, पंचक समाप्त ९/४६,
२०	४	श.	८	५	९	५३	अश्वि.	१/५७	४७/०	७/२९	२२/२७	ऐ	१७	२९	वि	९	५३	२९	१९	६	३९	१८	२३	२८	२	११	मेष	भद्रा ९/५३ तक,
२१	५	र	०१	३७	७	१७	कृ.	५३	४५	२८	०८	वै	१४	२१	बा	७	१७	२९	२३	६	३८	१८	२४	२९	३	१२	वृ. ११/०७	E होलिका दहन स्टै २१/३० पश्चात्, दारुण रात्रि, हुताशनी १५, सत्यव्रत,
०	६	र	५६	४२	२९	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी का क्षय, A जैन व्रत प्रारंभ, दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रारंभ,
२२	७	चं	५३	३२	२८	०२	रो	५२	१५	२७	३१	वि	११	४५	ग	१६	३५	२९	२७	६	३७	१८	२४	३०	४	१३	वृष	भद्रा २८/०२ से, कृत्तिका ४ मे गुरु २१/३०,
२३	८	म.	५२	१५	२७	३०	मृ	५२	३५	२७	३८	प्री	९	४४	वि	१५	४१	२९	३१	६	३६	१८	२५	चै.१	५	१४	मि. १५/३५	भद्रा १५/४१ तक, सं. मीन मे सूर्य १३/१३, मु. ३० पुण्यकाल दिनभर, अष्टाह्निक A
२४	९	बु	५२	५०	२७	४३	आ	५४	४२	२८	२८	आ	८	१९	बा	१५	३१	२९	३५	६	३५	१८	२५	२	६	१५	मिथुन	+ महोत्सव प्रारंभ, मेला खाटू श्यामजी (राज.) दो दिन का,
२५	१०	गु	५५	१०	२८	३७	पुन.	५८	३२	२९	५८	सौ	७	२७	तै	१६	०५	२९	४०	६	३३	१८	२६	३	७	१६	क. २३/३५	* आमला ११ व्रत स्मार्तो का, रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा का फूलडोल +
२६	११	शु	५८	५५	३०	०६	पुष्य	६०	०	-	-	शो	७	०७	व	१७	१८	२९	४४	६	३२	१८	२६	४	८	१७	कर्क	भद्रा १७/१८ से, ३०/६ तक, उ.भा. में सूर्य २१/३३, रोहिणी में मंगल १६/२४, *
२७	१२	श	६०	०	-	-	पुष्य	३	७	८	०२	अ	७	१४	व	१९	०२	२९	४८	६	३१	१८	२७	५	९	१८	कर्क	मीन मे शुक्र २२/४०, शत. १ मे राहु, मघा ३ मे केतु २९/३०, आमला ११ व्रत वैष्णवों का,
२८	१२	र	३	५५	८	०४	अश्ले.	१०	५	१०	३२	सु	७	४२	बा	८	०४	२९	५३	६	३०	१८	२७	६	१०	१९	सि. १०/३३	पू.भा. मे बुध ९/५, प्रदोष व्रत,
२९	१३	चं	९	४२	१०	२२	म.	१७	१०	१३	२१	धृ	८	२५	तै	१०	२२	२९	५७	६	२९	१८	२८	७	११	२०	सिंह	सायन मेष मे सूर्य २१/००, उत्तर गोल में सूर्य प्रवेश, महाविषुव दिन,
३०	१४	मं	१६	०	१२	५२	पू.फा	२४	३२	१६	२१	शू	९	१८	व	१२	५२	३०	१	६	२८	१८	२८	८	१२	२१	कं. २३/०७	भद्रा १२/५२ से २६/१० तक, उ.भा. मे शुक्र १४/५८ बुध का अस्त पूर्व मे १८/५२, E
चै.१	१५	बु	२२	३५	१५	२८	उ.फा.	३२	२७	१९	२५	गं	१०	१७	व	१५	२८	३०	६	६	२६	१८	२८	९	१३	२२	कन्या	राष्ट्रीय चैत्र प्रारंभ, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, धुलैंडी

फाल्गुन शु. ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८२२ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) फाल्गुन शु० १५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८३०

फाल्गुन शु. ८ भौमे प्रातः

सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
१०	०१	०१	१०	०१	१०	०८	१०	०४
२९	२४	०७	११	०६	२४	१८	१०	१०
४०	२५	५३	२५	४३	०७	५६	१५	१५
४७	५२	३४	२०	०२	३२	१४	५४	५४
५९	७९४	३६	९७	०९	७४	०३	०३	०३
४८	१७	३४	२४	१२	४६	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पू.भा. ३	मृ. १	कृत्ति. ४	शत. २	कृत्ति. ४	पू.भा. २	पू.षा. २	शत. २	मघा ४

फाल्गुन शु० १५ बुधे प्रातः

सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श.	रा	के
११	०५	०१	१०	०१	११	०८	१०	०४
०७	०३	१२	२४	०७	०४	१९	०९	०९
३८	०८	४६	५८	५९	०५	२३	५०	५०
०९	०७	४३	४३	३७	१२	२५	२७	२७
५९	७०८	३६	१०७	१०	७४	०३	०३	०३
३१	५८	४३	१८	०६	३७	००	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
उ.भा. ३	उ.फा. ३	रोहिणी १	पू.भा. २	कृत्तिका ४	उ.भा. १	पू.षा. २	शत. १	मघा ३

इस मास में पांच मंगलवार पांच बुधवार मध्यम फलप्रद हैं। तिथि २ गुरुवार को चन्द्रदर्शन होने से सोना-चांदी, गुड़, खांड, चना, चावल, उड़द में मन्दी होगी। इस पक्ष के पूर्वार्ध में कुंभ राशि में चतुर्ग्रही योग एवं षष्ठी तिथि का क्षय अच्छा नहीं है। राज-प्रजा में अशान्ति, उत्पात, मंहगाई एवं बेरोजगारी से जनमानस त्रस्त होगा। पश्चिमी देश, यूरोप अफ्रीका, अरब राष्ट्र, एवं पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक आदि में अशुभ फल होंगे। मीन संक्रांति व होली मंगलवारी नेष्ट फलप्रद है। राजनैतिक वातावरण में भारी उथल-पुथल होगी। अनाज, जौ, गेहूं, चना, रुई, सूत, कपास, नारियल, जायफल, लौंग, कोयला, लकड़ी में तेजी होगी। होलिका दहन के समय पूर्व, उत्तर, ईशान, पश्चिम, की हवा चले तो सुभिक्षकारक एवं अन्य दिशाओं की हवा चले तो दुर्भिक्ष कारक होती है। होली की झाल सीधी आकाश में जाये तो महा अशुभ होती है।

आकाशलक्षण – इस पंक्ष में तेज हवा के वेग से अनाज समय से पूर्व ही पकने लगेंगे। पक्षांत में कहीं बूंदा-बांदी बादल चाल होगी। दिन में गरमी और रात्रि में गुलाबी ठंडक पड़ेगी। पहाड़ों पर वायु के साथ ओला वृष्टि होगी।

श्री संवत् २०४५ शकः १९१० चैत्र कृष्ण पक्षः २६																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम				तारीखें			चन्द्र संचार	ता. २३ मार्च से ६ अप्रैल सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २ से १६ चैत्र तक। उत्तरायण गोल, वसन्त ऋतु।
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		हि.	मु.	अं.	स्टैं. टा.	
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	चैत्र	शाबान	मार्च	रा. चं. मि.	**इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।**
२	१	गु.	२९	५	१८	०३	ह.	४०	१०	२२	२९	वृ	११	१५	कौ	१८	०३	३०	१०	६	२५	१८	२९	१०	१४	२३	कन्या	होला १, वसंतोत्सव, मेला फूलडोल शाहपुरा व आनन्दपुर साहब (पंजाब) +
३	२	शु.	३५	२२	२०	३२	चि.	४७	३५	२५	२५	ध्रु	१२	११	तै	७	१९	३०	१५	६	२३	१८	२९	११	१५	२४	तु. ११/५७	मीन में बुध २४/१०, श्री सन्त तुकाराम जयंती, गुड फ्राइडे,
४	३	श.	४१	७	२२	४९	स्वा.	५४	२७	२८	०९	व्या	१२	५८	व	९	४३	३०	१९	६	२२	१८	२९	१२	१६	२५	तुला	भद्रा ९/४३ से २२/४९ तक, +शबरात महोत्सव यवनों का,
५	४	र.	[illegible]	७	२४	४८	वि.	६०	०	—	—	ह	१३	३४	ब	११	५१	३०	२४	६	२१	१८	३०	१३	१७	२६	वृ. २३/५८	उ.भा. में बुध १९/१४, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२/१९, इस्टर संडे
६	५	चं.	५०	५	२६	२२	वि.	०	३७	६	३५	व	१३	५४	कौ	१३	३९	३०	२८	६	२०	१८	३०	१४	१८	२७	वृश्चिक	रंग पंचमी,
७	६	मं.	५२	४७	२७	२६	अनु.	५	०२	८	३६	सि	१३	५३	ग	१४	५८	३०	३२	६	१९	१८	३१	१५	१९	२८	वृश्चिक	भद्रा २७/२६ से एक नाथ षष्ठी
८	७	बु.	५३	५७	२७	५३	ज्ये.	९	३०	१०	०६	व्य	१३	२६	वि	१५	४४	३०	३६	६	१८	१८	३२	१६	२०	२९	ध. १०/०६	भद्रा १५/४४ तक, शीतला सप्तमी
९	८	गु.	५३	२५	२७	३९	मू.	११	४५	१०	५९	व	१२	३०	बा	१५	५१	३०	४०	६	१७	१८	३२	१७	२१	३०	धनु	श्री शीतला पूजन व श्री शीतला अष्टमी, जैन वर्षी तपारम्भ,
१०	९	शु.	५१	५	२६	४२	पू.षा.	१२	२०	११	१२	प	११	००	तै	१५	१६	३०	४४	६	१६	१८	३३	१८	२२	३१	म. १७/०५	रेवती में सूर्य ८/२९,
११	१०	श.	४७	२	२५	०४	उ.षा.	११	१०	१०	४३	शि	८	५७	व	१३	५७	३०	४८	६	१५	१८	३३	१९	२३	अ.१	मकर	भद्रा १३/५७ से २५/०४ तक, रेवती मे शुक्र ८/२८, अप्रैल मा. ४ ता. ३०,
१२	११	र.	४१	१७	२२	४५	श्र.	८	१५	९	३२	सि·	६/२७	२१/१२	ब	११	५९	३०	५२	६	१४	१८	३४	२०	२४	२	कु. २०/३८	रेवती में बुध १५/१३, पंचक प्रारंभ २०/३८, पापमोचनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
१३	१२	चं.	३४	०७	१९	५२	ध.	३/५७	४७/५७	७/२९	४४/२४	शु.	२३	३७	कौ	९	२२	३०	५७	६	१३	१८	३४	२१	२५	३	कुंभ	पापमोचनी ११ व्रत निम्बार्कों का, सोम प्रदोष व्रत
१४	१३	मं.	२५	५०	१६	३१	पू.भा.	५०	१२	२६	४०	शु	१९	४०	ग	६	१४	३१	०१	६	११	१८	३५	२२	२६	४	मी. २१/२१	भद्रा १६/३१ से २६/४३ तक,
१५	१४	बु.	१६	४२	१२	५१	उ.भा.	४३	५०	२३	४२	ब्र	१५	२९	श	१२	५१	३१	०५	६	१०	१८	३६	२३	२७	५	मीन	मेला पृथूदक पिहोवा (हरियाणा) चैत्री १४
१६	३०	गु.	७	१५	९	०३	रेवती	३६	२०	२०	४१	ऐं	११	११	ना	९	०३	३१	०९	६	०९	१८	३६	२४	२८	६	मे. २०/४१	पंचक समाप्त २०/४१, अमावस्या पुण्य ९/०३ तक, नूतन सम्वत्सर प्रारंभ P
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	P प्रतिपदा तिथि क्षय, चैत्र नवरात्रारम्भ घट स्थापन ९.०३ उपरान्त

चैत्र कृ० ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८३८ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) चैत्र कृ० ३० गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०८	०१	११	०१	११	०८	१०	०४
१५	१०	१७	०९	०९	१४	१९	०९	०९
३३	१०	४०	५३	२३	०१	४५	२५	२५
[illegible]	१३	४९	१९	१८	४८	०१	००	००
५९	७९८	३६	११७	१०	७४	०२	०३	०३
१५	४१	४८	३५	५४	३२	१७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
४ उ.भा.	४ मूल	३ रोहि.	२ उ.भा.	४ कृत्ति.	४ उ.भा.	२ पूषा.	१ शत.	३ मघा

इस पक्ष में मंगल गुरू का योग वृष राशि में चालू है। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के लिए प्रतिकूल है। प्रजा में सांसर्गिक रोग फैलेगा। गर्मी का जोर बढ़ेगा। किसी महान् व्यक्ति के अवसान या सैन्य संघर्ष से अशांति उत्पन्न होगी। इस मास में पांच गुरूवार पांच शुक्रवार भारत के लिए श्रेष्ठ हैं। भारत को विदेशों में सम्मान प्राप्त होगा। शान्तिवादी गुट-निरपेक्ष देश संघटित होकर युद्धप्रिय राष्ट्रों के विचार विफल करेंगे। किन्तु अमावस्या को मीन राशि में चतुर्ग्रही योग अड़चने पैदा करेगा। ता. २४ मार्च को मीन का बुध आने से रुई में तेजी तथा सोना, चांदी, जौ, गेहूँ, गुड़, खांड आदि में मंदी होगी। चैत्रवदी अष्टमी व चर्तुदशी के दिन बादल चाल एवं उत्तर दिशा की वायु चले तो आने वाला वर्ष शुभफलप्रद होता है। यथा – "चैत्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यष्टमी तिथौ। तत्रा श्रमुतरो वायुः शुभायवत्सरे भवेत्॥"

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०१	११	०१	११	०८	१०	०४
२२	२०	२०	२४	१०	२२	१९	०९	०९
२७	२०	५८	००	४१	४३	५८	०२	०२
३७	३३	५३	११	२९	१७	५९	४५	४५
५९	८१३	३६	१२४	११	७४	०१	०३	०३
०२	५२	५८	३५	२८	३२	३८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
१ रेवती	१ रेवती	४ रोहि.	३ रेवती	१ रोहि.	१ रेवती	१ पूषा.	१ शत.	३ मघा

आकाशलक्षण – दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, [illegible] मैदानी इलाकों में गर्मी का जोर बढ़ेगा।

स्मार्त्त वैष्णव विचार

पंचाङ्ग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त वैष्णव भेद से दो दिन अलग - अलग होते हैं, स्मार्त्तव्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म - शास्त्रीय व्यवस्था से पंचाङ्गों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस समय अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण - जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन ?—साधारण जन यह नहीं समझ पाते कि वे स्मार्त्त हैं या वैष्णव ! उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति- स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज- मात्र (ब्राह्मण- क्षत्रिय- वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। "श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।" (मनुः) जो लोग यह समझते है कि मांस मदिरा प्याज लहसुन से दूर रहने वाले राम- कृष्ण- विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख चक्र अंकित करवाये हैं वे, या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

दैनिक—लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए हुए लग्न का समाप्तिकाल रेलवे- स्टैण्डर्ड- टाइम में घण्टा- मिनट के रूप में लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भ काल समझें। ता० ३ अप्रैल, १९८५ ई० को सारिणी में मीन लग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखें हैं, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखें हुए घण्टा- मिनट अर्धरात्रोत्तर क्रमशः अर्धरात्रि- पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे हैं। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घण्टा मि० १५ लिखे हुए मिलेंगे, ऐसे ही मध्यान्ह के पश्चात् एक बजे की जगह १३ दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी—परिवर्तन उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न- समाप्ति- काल लाना होतो जिस तारीख को जो लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न- समाप्ति काल का घण्टा- मिनट लिखें, पश्चात्—पंचांग- परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगर के आगे या नगर के समीपके नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनट ऋण(-) होतो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न समाप्ति- काल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन (+) होतो ऋण करें तो वह देशान्तर सस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न- समाप्ति- काल होगा फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति- काल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिलादें, ऋण आया हो तो घण्टा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति- काल होगा। उदाहरण ता० ३ अप्रैल १९८५ को मीन लग्न समाप्तिकाल ६ घण्टा ४२ मिनट है, इसी लग्न क मथुरा में समाप्ति- काल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि- सारिणी में दिल्ली से मथुरा में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि- सारिणी में दिल्ली से मथुरा का देशान्तर मिनट २ है, वहां यह मिनट धन होने से ६ घण्टा ४२ मिनट, में घटाये तो ६ घण्टा ४० मिनट, यह मथुरा का देशान्तर संस्कृत मीनलग्न का समाप्ति - काल हुआ। इस दिन ३ अप्रैल को सूर्य की क्रांति+उत्तर ५ अंश ७ क० है और मथुरा के अक्षांश २७।२८ हैं इन क्रांति और अक्षांश से चरान्तर लिया तो वह ० शून्य आया, अतः उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल घण्टा ६ मिनट ४० यही मथुरा का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्ली के समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिए संस्कार नहीं किया जाय तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिए ऊपर दिए उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न - समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश - समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्ति - काल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय ही न करें, शेष घ० मि० रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनट होंगे, उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्ध १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेषको ६० से गुणा कर फिर ९ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भ काल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्ति - काल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्नमें नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्नमें नवांश का मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्नमें नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ (—) उपर्युक्त मथुरा का आया हुआ मेषारम्भ समय घंटा ६ मिनट ४० तथा अन्त घंटा ८ मिनट १७ अन्तमें प्रारम्भ घटाया तो घंटा १ मि० ३७ इसके मिनट किये तो मिनट ९७ हुए इसमें ९ का भाग देने पर मिनट १० से ४७ यह एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्न में वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश मुक्त हुए, अतः एक नवांश के मानको (मि० १० से० ४७ को) ७ से गुणा किया तो घंटा १ मि० १५ से २९ आये, यह घण्टादि मेष लग्न के प्रारम्भ समय घंटा ६ मि० ४० में छोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं० ७ मिनट ५५ से० २९ हुआ, इसी में एक नवांश का मान मि० १० से० ४७ जोड़ें तो घण्टा ८ मि० ६ से० १६ हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति - काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों [illegible] करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

अप्रैल की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाइम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४। ७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।४५	२४। ३	२। ७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२। ३	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५। ६
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५। २
७	६।२७	८। २	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।३०
१५	५।५६	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२८	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। १	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। ०	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४। ७
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४। ३
२२	५।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४४	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५। ६	६।४२	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२। ९	३।३७
२८	५। २	६।३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।२९
३०	४।५५	६।३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मई की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाइम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४।३५
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४।३१
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४।२७
७	६। ३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४।२३
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४२	१।२६	२।५५	४।१९
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४।१४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१०
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४। ५
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२७	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४। १
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३।५८
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३।५४
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५७	२।२७	३।५१
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३।४८
१७	५।२५	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३।४५
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३।४१
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३।३८
२०	५।१४	७। ९	९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३।३४
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३।३०
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३।२५
२३	५। २	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३।२२
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३।१८
२५	४।५४	६।४९	९। १	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३।१४
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३।१०
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३। ६
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३। २
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१७	२२।२१	०। ५	१।३४	२।५८
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।१४	२२।१७	०। १	१।३०	२।५४
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२।४९

जून की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६।१९	८।३१	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२१
२	६।१५	८।२८	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१६
३	६।११	८।२४	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१२
४	६। ७	८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४। ८
५	६। ३	८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४। ४
६	५।५९	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४। ०
७	५।५५	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५६
८	५।५२	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
९	५।४८	८। १	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
११	५।४०	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
१२	५।३६	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
१३	५।३२	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
१४	५।२९	७।४२	१०। १	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
१७	५।१७	७।३०	९।४९	१२। ७	१४।२४	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
१८	५।१३	७।२६	९।४५	१२। ३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
१९	५।१०	७।२३	९।४२	१२। ०	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
२०	५। ६	७।१९	९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
२१	५। २	७।१५	९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
२२	४।५८	७।११	९।३०	११।४८	१४। ६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७। ७	९।२६	११।४४	१४। २	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
२४	४।५०	७। ३	९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
२५	४।४७	७। ०	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५६	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	१। ८	२।४४
२७	४।३९	६।५२	९।११	११।२९	१३।४७	१६। ६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	१। ४	२।४०
२८	४।३५	६।४८	९। ७	११।२५	१३।४३	१६। २	१८।२०	२०।२३	२२। ७	२३।३५	१। ०	२।३६
२९	४।३१	६।४४	९। ३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२। ३	२३।३१	०।५५	२।३२
३०	४।२७	६।४०	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	०।५२	२।२८

जुलाई की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। ०	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। २	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। १	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। ०
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५५
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४४	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३८	६।५९	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।३१
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६। ४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।२७
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। ०	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।२३
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।१९
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।१५
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।११
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। ०	१।५४	४। ७
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४। ४
९	६।२४	८।४२	११। ०	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४। ०
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।४८
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।४४
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।४०
१५	६। ०	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।३६
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।३२
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।२७
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।२३
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।१९
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।१५
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।११
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३। ७
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३। ३
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।५९
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।५५
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।५२
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।४८
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।४४
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।४०
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३४

सितम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७।१२	९।३०	११।५०	१४। ७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०
२	७। ८	९।२६	११।४६	१४। ३	१६। ७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६
३	७। ४	९।२२	११।४२	१३।५९	१६। ३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२
४	७। ०	९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८
५	६।५६	९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९। ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४
६	६।५२	९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९। ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०
७	६।४८	९। ६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६
८	६।४४	९। २	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२
९	६।४०	८।५८	११।१८	१३।३५	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४
११	६।३२	८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६
१३	६।२४	८।४२	११। २	१३।१९	१५।२३	१७। ६	१८।३५	२०। ०	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। २
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७। २	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१३। २	१५। ६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४६
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५। २	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४१	०।५३	३।१३
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१२।२२	१४।२६	१६। ९	१७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५
२८	५।२३	७।४१	१०। १	१२।१८	१४।२२	१६। ५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। १
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१२।१४	१४।१८	१६। १	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४

अक्तूबर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	११।५९	१४। ३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६। ०	१७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७। ८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७। ४	१८।३९	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१२।२३	१४। ६	१५।३३	१७। ०	१८।३५	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१२।१९	१४। २	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

नवम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाइम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०। ३	१२। ७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३। ३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२। ३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०। ६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५। ७	१६।३१	१८। ७	२०। २	२२।१४	०।३४	२।५१	५। ८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५। ३	१६।२७	१८। ३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५। ५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२। ६	०।२६	२।४३	५। १
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२। २	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४८	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६। ८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७। ६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६। ४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०। ७	२।२४	४।४२
१२	७। २	९।२०	११।२४	१३। ७	१४।३६	१६। ०	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०। ३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१६	११।२०	१३। ३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९। ९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२। ८	४।२६
१६	६।४७	९। ६	११। ९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२। ५	४।२३
१७	६।४३	९। २	११। ५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२। १	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११। १	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९। ८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३५	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४। ९	१५।३३	१७। ९	१९। ४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४। ५	१५।२९	१७। ५	१९। ०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४। ७
२१	६।२७	८।४६	१०।४९	१२।३२	१४। १	१५।२५	१७। १	१८।५६	२१। ९	२३।२९	१।४५	४। ३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१। ५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१। १	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५। ९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६। ७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५। ५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३। ९	१।२५	३।४३
२७	६। ३	८।२२	१०।२५	१२। ८	१३।३७	१५। १	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३। ५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२। ४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३। १	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२। ०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५२	८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

सितम्बर की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८। ५	१०। ९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१। ६	३।२३	५।४३
२	८। १	१०। ५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१। २	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०। १	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८। ८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३। ९	१४।३४	१६। ९	१८। ४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३। ५	१४।३०	१६। ५	१८। ०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३। ७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३। १	१४।२६	१६। १	१७।५६	२०। ९	२२।२८	०।४६	३। ३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०। ६	२२।२५	०।४३	३। ०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०। ३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५। ९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४। ८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५। ५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४। ४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२। ६	०।२४	२।४१	५। १
१३	७।१९	९।२३	११। ७	१२।३५	१४। ०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२। २	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११। ३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७। ६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०। ७	२।२४	४।४४
१७	७। २	९। ६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४३	०। ३	२।२०	४।४०
१८	६।५८	९। २	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७। ९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
१९	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७। ५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
२०	६।५०	८।५४	१०।३८	१२। ६	१३।३१	१५। ६	१७। १	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२। ८	४।२८
२१	६।४६	८।५०	१०।३४	१२। २	१३।२७	१५। २	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२। ४	४।२४
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९। ६	२१।२५	२३।४३	२। ०	४।२०
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९। २	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
२४	६।३५	८।३९	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
२५	६।३१	८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४। ९
२६	६।२८	८।३२	१०।१६	११।४४	१३। ९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४। ६
२७	६।२४	८।२८	१०।१२	११।४०	१३। ५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१। ७	२३।२५	१।४२	४। २
२८	६।२०	८।२४	१०। ८	११।३६	१३। १	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१। ३	२३।२१	१।३८	३।५८
२९	६।१६	८।२०	१०। ४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
३०	६।१२	८।१७	१०। १	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।५१
३१	६। ९	८।१३	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

जनवरी की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८। ९	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३। ६	१।२४	३।४३	६। १
२	८। ५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३। २	१।२०	३।३९	५।५७
३	८। १	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६। ८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।५३
४	७।५७	९।४१	११। ९	१२।३४	१४।१०	१६। ४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।४९
५	७।५३	९।३७	११। ५	१२।३०	१४। ६	१६। ०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१। ८	३।२७	५।४५
६	७।४९	९।३३	११। १	१२।२६	१४। २	१५।५६	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ४	३।२३	५।४१
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८। ५	२०।२५	२२।४२	१। ०	३।१९	५।३७
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८। २	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।३४
९	७।३७	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।३०
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३। ८	५।२६
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२। ८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३। ५	५।२३
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२। ४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४२	३। १	५।१९
१३	७।२४	९। ८	१०।३६	१२। १	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०। ४	२२।२१	०।३९	२।५८	५।१६
१४	७।२०	९। ४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०। ०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।१२
१५	७।१७	९। १	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५। ९
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५। ५
१७	७। ९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२। ६	०।२४	२।४३	५। १
१८	७। ४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२। १	०।१९	२।३८	४।५६
१९	७। ०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५। ७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।५२
२०	६।५६	८।४०	१०। ८	११।३३	१३। ९	१५। ३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।४८
२१	६।५२	८।३६	१०। ४	११।२९	१३। ५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०। ७	२।२६	४।४४
२२	६।४८	८।३२	१०। ०	११।२५	१३। १	१४।५५	१७। ८	१९।२८	२१।४४	०। ३	२।२२	४।४०
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७। ३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।३५
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।३१
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२। ९	४।२७
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११। ८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२। ५	४।२३
२७	६।२७	८।११	९।३९	११। ४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९। ७	२१।२४	२३।४२	२। १	४।१९
२८	६।२३	८। ७	९।३५	११। ०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९। ३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।१५
२९	६।१९	८। ३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।११
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।१२	२३।३०	१।४९	४। ७
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१। ७	२३।२६	१।४५	४। ३

फरवरी की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम पर्यंताम्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः
१	७।५०	९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२२	१।४१	३।५८	६। २
२	७।४६	९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
३	७।४३	९।१२	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
४	७।३९	९। ८	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
५	७।३६	९। ५	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
६	७।३२	९। १	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
७	७।२८	८।५७	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
८	७।२४	८।५३	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
९	७।२०	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
१०	७।१५	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७।११	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ७	८।३६	१०। ०	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	७। ३	८।३२	९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	६।५९	८।२८	९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	६।५५	८।२४	९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	६।५१	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ३
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४३	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	६।३४	८। ३	९।२७	११। ३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	६।३०	७।५९	९।२३	१०।५९	१२।५४	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	६।२६	७।५५	९।१९	१०।५५	१२।५०	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	६।२२	७।५१	९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	६।१८	७.४७	९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	६।१४	७।४३	९। ७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	६।११	७।४०	९। ४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।४२	०। २	२।२०	४।२३
२७	६। ७	७।३६	९। ०	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	६। ३	७।३२	८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	२।१२	४।१५

यह लग्न का समाप्तिकाल है। प्रत्येक मास में दिये हुए स्टैण्डर्ड टाइम को ऊपर लिखी राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम पर्यंताम्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५२
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। ०	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। १	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५२	८।१७	९।५२	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	१८।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	१८। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। ०	७।२५	९। ०	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	१८। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५५	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। १	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

अथ जन्म—समयादि विचार

सर्वशास्त्र- शिरोमणि ज्योतिःशास्त्र की महत्ता को सारा संसार जानता है, क्योंकि वह प्रत्यक्षफलदायक है, अतः प्राचीनकाल से लेकर आजतक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके विना और कोई शास्त्र नहीं, जो कि तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) की वर्ता को वतला सके और वेद के छः अंगों में से यह नेत्र स्थानीय है। जिसप्रकार सम्पूर्ण अंगों के सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्र बिहीन मनुष्य का जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रों के पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत, भविष्य को बतलाने में मूक सा रह जाता है। परन्तु खेद इस बात का है कि ऐसा होने पर भी आजकल फलादेश के पूरा न मिलने से लोगों की श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत हैं, परन्तु दो चार यहां बतलाये जाते हैं-- जब बालक का जन्म होता है उस समय गांववालों के पास कोई घड़ी आदि का सुप्रबन्ध न होने से वे लोग समय आदि को निश्चित रूप से नहीं बता सकते, यदि किसी ने सब प्रकार से अपना प्रबंध करके समय को निश्चित रूप से नोट किया भी हो तो वह घर में आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्र के अनभिज्ञ पंडित से कुण्डली बनवाकर रख लेते हैं और पंडितजी भी एक रुपये के लालच में फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमान को दे देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परंतु कलंक का टीका ज्योतिःशास्त्र पर मढ़ा जाता है। क्योंकि लग्न के ठीक होने पर ही फलादेश ठीक मिल सकता है, वह फलादेश इष्ट पर निर्भर है, और वह इष्ट नोट किये हुए समय पर निर्भर है, अतः समय के नोट करने में सावधानी रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं, इसके निश्चय के लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिएः—

तत्रादौ पितृपरोक्ष ज्ञान—बालक के जन्म के समय पिता घर में था कि नहीं ? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिए कि जन्मकुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्मलग्न से अष्टम्, नवम्, एकादश तथा द्वादश स्थान में चरराशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था, इन्हीं स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा लग्न को न देखे तो पिता अपने देश में ही था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसे कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था ऐसा जानना चाहिए।

जन्म समय शनि लग्न में हो अथवा मंगल सातवें स्थान में पड़ा हो अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्र में से एक तो चन्द्रमा से द्वादश स्थान में और दूसरा द्वितीय स्थान में पड़ा हो तो भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म जानना, परन्तु यहाँ चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में होना अंशों के योग से भी जान लेना, जैसे बुध के स्पष्ट पांच अंश हों चन्द्रमा के दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो भी पूर्वोक्त [illegible] चाहिए।

चिन्हज्ञानः—जिसके जन्म समय १।५।६।९ इन स्थानों में सूर्य हो उसकी भुजा में कोई चिन्ह होगा, यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और केन्द्र में चन्द्रमा हो तो [illegible] बालक की छः अंगुलियाँ होती हैं। चिन्ह विचार करते समय इतना पहले विचार कर लेना कि योगकर्त्ता ग्रह कौन है ? उसमें यदि सूर्य हो तो शिर में, चन्द्रमा के होने से मुख में, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि में, शुक्र पीठ या जांघ में, शनि राहु तथा केतु इनके योग से पेट, होठ या दाँतों पर चिन्ह जानना। विशेष विचार - सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर पापग्रह हों या लग्न में शुक्र और आठवें पापग्रह के होने से बाँई भुजा पर चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु होवे तो माथे में या बाएँ कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११ इन स्थानों में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगल की ओर तिल का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थान में शनि हो, इसको शुक्र देखे तो गुदा (मलद्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।६ स्थान में शनि हो, इसको ८ वें बुध, गुरु लब्ध में या चौथे शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर पर शुक्र या तीसरे मंगल शनि हो, लग्न में आठवें सूर्य हों तो कमर में चिन्ह होगा। चौथे घर पर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो तो पादमूल या बाएँ पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६ ११वें स्थान में बुध के होने से गुदा के समीप गोलाकार चिन्ह या व्रणादि होते हैं। छठे घर का स्वामी पापग्रह के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। लग्न में मंगल सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या व्रण आदि के चिन्ह हों। लग्न में मंगल, शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जानना।

अन्तरिक्षजन्मज्ञान—यहाँ पर समभूमि से जो ऊँचा स्थान हो उसकी अंतरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनुः और मीन ये लग्न हों उसका जन्म अंतरिक्ष में जानना, शेष लग्न हों तो समभूमि में जानना।

बालक का रोदनज्ञान—जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न हों, तो बालक ने जन्म समय के बाद जल्दी ही रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया हो, शेष लग्नों में बालक ने देरी से शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान—लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार—लग्न और चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्न से सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्थ और सप्तम से लग्न पर्यन्त दृश्यार्थ होता है, लग्न से लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्थ में हों तो उपसूतिका घर के अन्दर और दृश्यार्थ में हों तो उपसूतिका बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, अवस्था आदि का विचार उन ग्रहों से ही कहना, परन्तु उन ग्रहों में जितने ग्रह उच्च के तथा बक्री हों उनकी संख्या को तीन से गुणा, अपने नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काण में स्थित की संख्या को दूगुना और नीच राशि में स्थित और अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके सूतिका के पास उपसूतिकाएँ कहनी चाहिये।

शिरः पादजातज्ञान—शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म के समय इन राशियों का नवाँश लग्न में हों तो शिर से, पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय में हो तो पैरों से और मीन का नवांश हो तो हाथ से जन्म जानना।

सूतिकागृह द्वारज्ञान—केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका गृह का द्वार जानना, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हो तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में कहना।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि—ग्रहों का अधिकार—पुरुष के शिर और मुखप्रदेश में सूर्यका अधिकार है, वक्षःस्थल और गले में चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठ स्थल और उदर में मंगल का अधिकार है। हस्त और पादों में बुध का अधिकार है। कटि प्रदेश और जघन स्थान में गुरु का अधिकार है। गुप्तेन्द्रिय और वृष्णों में शुक्र का अधिकार, जानु और उरुप्रदेश में शनि का अधिकार है। जन्मसमय प्रश्नसमय और गोचर में जब-जब सूर्यादि ग्रह अनिष्ट- स्थान में जाते है तब पुरुषों के उपरोक्त अंगों को पीड़ित करते हैं।

मेषादि—राशियों का अंग—विभाग—कालपुरुष के शिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृषराशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्कराशि का, उदर में सिंहराशि का, कमर में कन्या राशि का, बस्ति (मुत्राशय) में तुलाराशि का, गुप्तेन्द्रिय में बृश्चिकराशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनुःराशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भराशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थभाव में हृदय, पचमभाव में उदर, छठेभाव में कमर, सप्तमभाव में वस्ति, अष्टमभाव में गुप्तेन्द्रिय, नवमभाव में उरु, दशमभाव में जानु, एकादशभाव में जंघा और द्वादशभाव में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता हैं, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

अथ प्रसूतिलग्न—विचार

मेष—सुतिकागृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लाल रंग के। प्रसव से पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव में कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३। बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात- श्लेष्म कद छोटा, शरीर दृढ़, वाणी चंचल। कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८। उपाय—गोदान, तुलादान, मृत्युंजय जप इत्यादि। उपरांत आयु १०० वर्ष।

वृष—माता का शिर दक्षिण में, सुतिका घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्तपित्त। कष्टवर्ष १।२।८।३३।४४।६१। उपाय—अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रंग के पुराने, प्रसव से पहले भोजन नमकीन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह हो, जन्म अंतरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर से, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, बालक के नेत्र रोगयुक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो। कष्टवर्ष ४।१०।१४।३८।५८। उपाय—शिवार्चन, मृत्युंजय जप, होम। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तर में, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिन्ह, बालक का शिर मोटा, आँखें चंचल, प्रकृति वात श्लेष्म, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। उपाय—छायापात्र, तुलादान, मृत- संजीवनी- मंत्र का जप। उपारान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का शिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदनस्वर दीर्घ, उपसुतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८। उपाय—सूर्य पूजन, आदित्य- हृदय का पाठ, अपूपान्न- दान यदि कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष आयु हो।

कन्या—माता का शिर उत्तर में, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रंग के, मिष्ठान भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले और जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।२६।५५। उपाय—मुद्गान्न दान, गोदान, मृत्युंजय- जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसव कष्ट अधिक, पिता क्लेश में, माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो, भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो दीपक हाथ में उठाया गया, बालक का रंग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।३१।३५।६२।६४। इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षो से बचे तो ८५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक—माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में, वस्त्र लाल या दग्ध, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी

आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। उपाय—तुलादान, मृत्युंजय- जप और मिष्ठान भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनुः—माता का शिर पूर्व में, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थान या छत पर, रोदन स्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, २।१०।१८।३१।३८।४२। वें वर्षों में महाकष्ट भोग कर बचे तो ८१ वर्ष जिये। कष्टकारक वर्षारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप और ब्राह्मण- भोजन कराने से कल्याण हो।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में, प्रसुति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले, पुराने, शाकादि के साथ भोजन करके ठण्डा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर के बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५ बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। उपाय—रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम में, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, साधारण कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घर में न हो, भूमि पर जन्म होने के चिर पीछे बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट २।२८।३३।४८।६४। उपाय—तुलादान, महिषीदान, मृत्युंजय- जप, उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसुति गृह उत्तर भाग में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में, बालक जन्म के उपरान्त देर से रोया, माता ने ठण्डा जल पिया, उपसूतिका पहले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी हुई, आंखें भूरी, सिर ऊँचा बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८ इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। उपाय—मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय- जप कराने से कल्याण हो।

सूचना—जिस लग्न के लक्षण अधिक मिलें, वही लग्न ठीक मानना चाहिए। ऊपर लिखें लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये हैं अतः सम्भव है कि किसी- किसी स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति ज्ञान का विचार पहले किया जा चुका है।

बालारिष्ट के योग—जन्म लग्न से ६।८।१२वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जाननी। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों, या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक की आयु एक मास जाननी। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़े हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई को भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छठे चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हों बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जाननी। जन्म लग्न से बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न बारहवें तथा छठे आठवें दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक की शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्टभंगयोग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमे से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान् होकर यदि बृहस्पति लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहो से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पाँचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

माता—पिता को अरिष्ट योग—हर एक बालक के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में और ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल—चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोडी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हों तो पिता या गर्भवती की ६ मास में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घरधनी को महाभय अरिष्ट होवे। शान्त्यर्थप्रसूता गौ आदि का शीघ्र दान करें, घर में हवन शान्तिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन कर व्याहृति मन्त्रों से आहुति दें, जिससे शान्ति हो।

त्रिखल—जन्म—फल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, या तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता- पिता को अरिष्ट, महामय धनहानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

दन्तोत्पत्तिफल—बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता- पिता को महा अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में

दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकलें तो मातुल पक्ष को भय हो। १ मांस में दांत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनि नष्ट चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७ वें में पितृसुख, ८ वें में पुष्टि, ९ वें में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

एकनक्षत्रजातफल—पिता पुत्र, माता पुत्र या कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

गण्डमूल के नक्षत्र					
अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक, माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट नहो तो धन वैभव ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्णदान आदि शांति कर पश्चात् शुभ बेला में बालक का मुख देखे।

मूलनिवासचक्र

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२ । ५ । ८ । ११	३ । ६ । ९ । १२	१ । ४ । ७ । १०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

अथ मूलाश्लेषा-पादफल

मूलपादफल		अश्लेषापादफल		समयफल	
चरण	फल	चरण	फल	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

मूलजनने वृक्षविभागः

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग:
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्य:
मूलनाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुल नाशः	मंत्री-पदम्	मंत्री-पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.म.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशुनाश	धननाश	धनलाभ	कुटिला	धनला.	दयावः	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्यं	फलम्

अथ अश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्रीलाभ	गुरुभक्त	बली	आत्महा.	भ्रमः	तपस्वी	धनहा.	फलम्

अथ अश्लेषापुरुषवृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृहानिः	पितृहानिः	अल्पायुः

अथ अभुक्तमूलविचार—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करे।

अश्विनीपादफल	मघापादफल	ज्येष्ठापादफल	रेवतीपादफल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बडे भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृभय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अथ कृष्णचतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृनाश	मातृनाश	मातुलनाश	कुलहानिः	धनहानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहूजनन फल

सिनीवालीजननफल—सिनीवाली उसे कहते हैं कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हों अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो। ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस घोड़ी आदि पशु प्रसूति हुए हों तो धन हानि, अपयश आदि भय होते हैं।

कुहूजननफल—कुहू कहते हैं चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जायें। अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक-ठीक समय आयेगा प्राचीन गणित से नहीं), उस समय में बालक का जन्म या पशुजन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है, इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति-विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट-दोषों में जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृहानि, परिध योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, सक्रान्तिदिन, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथि, महापात (क्रांति साम्य) विश्वधस्र-पक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट-शान्त्यर्थ शांति-विधान करना चाहिए, ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हो।

स्त्री–दासी–गौ–आदि पशु–यमल जन्मफलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
एंकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोविघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते॥

जन्म-स्थान विचार—जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्णचन्द्र लग्न को पूर्णदृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जलके ऊपर या जल के समीप स्थान में पैदा हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचरराशि हो, चन्द्रमा सातवें हों तो बालक का जन्म नौका में जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा कहना। लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि, कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नरराशि में शनैश्चर लग्न में हो और मंगल देखता हो तो स्मशान के समीप जन्म हुआ कहना और नरलग्नगत शनि को शुक्र चन्द्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना। बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय गोशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुध देखता हो तो शिल्पालय, चित्रकारी से बने हुए सुन्दर स्थान में जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहे।

अन्य शुभाशुभ योग—मङ्गल शनि दोनों त्रिकोण में हों और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो जन्मा बालक माता से जुदा हो जाए तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता से त्यागा हुआ बालक दीर्घायु और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मङ्गल हो ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो बालक को छः अंगुली हैं ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मंगल हो, तो बायां नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक का दुःखित हो या नष्ट हो ऐसा कहें। मङ्गल, शनि राहु पांचवे स्थान में हो तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह का बृहस्पति हो, दसवें घर में सूर्य मङ्गल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८ वें में, मंगल सातवें में, राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक की जन्म कुण्डली में लग्न में बुध शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो, दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है, अर्थात् उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दसवें स्थान में मंगल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान, दीर्घायुषी, बुद्धिमान् चतुर (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्तव्यमान, कीर्तिमान्, सर्वमानी, राज में तथा जनसमाज में बहुमानी, अधिकारी महान् पुरुष होता है। लग्न में शनि हो छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो या चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जानना। दशम स्थान में पापग्रह हो तो पिता को अरिष्ट जाने। दशम स्थान में पापग्रह हो और दशममें मंगल शत्रुराशिका हो तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, सूर्य भौम तथा बुध हो तो बालक के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली में सातवें राहु छठे ८वें में चन्द्रमा हो शेषग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक की आयु बहुत अल्प होती है, ऐसा आचार्यों का मत है। शनिके घरमें सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो या लग्नमें मगल, ८वें में गुरु हो तो बालककी केवल १२ वर्ष की आयु होती है। जन्मसमय लग्नमें छठे ८वें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश पापग्रहयुक्त या परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है। मंगल के घर में बृहस्पति हो और ६।८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठ वें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो या अष्टमेश क्षीणचन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता-पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहु के साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालक की कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहां का जन्म हो वहां के सूर्योदय से तथा उसी प्रकार की लग्नसारिणी से लग्नसाधन करे। जन्म-टाइम स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनावें। सूर्योदय और जन्म-टाइम समानजाति के लेकर इष्टसाधन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम्

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर सिर पर फिरा कर उचित स्थान पर मौन से रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	प्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थं द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५. ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५पूर्ण पोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वहलास्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई, कस, कमल के फूल बिल्ली और,
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्-रुद्राज्ञया स्वाहा।	मनुष्यके बाल निम्बपत्र, गोघृत। ,
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हृत्कूटन, खांसी, सिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग सांप की
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	मात्र भय, सिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, सेर आटेके पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेटमें दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे भण्डिके ठःठः स्वाहा	बाल, गोघृत।
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हृत्कूटन, हंसना, कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल,
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	बिडालिका विधानोक्त	राई, हाथीदांत घृत।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचंदन, ५ रंग की झण्डी ५, दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस, संध्यामें चौरास्तेपर रखना।	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट स्वाहा	गोश्रृंग, लसुन,
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हृत्कूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़के घीमुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैनतेयाय हन हुं फट् स्वाहा।	सांप की कांचली, निम्ब
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हृत्कूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास दश हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई,
द्वादश दिन मास वर्ष में वहुमुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, वमनरोदन, नेत्रपीड़ा, सन्ताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुं२ हन२ दुष्टाना ह्रां हुं फट् स्वाहा	गोघृत।

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्टलक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन १	२	३	४	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
अश्विनी दस्रौ	वातज्वर, गात्रपीडा निद्राभय, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेतचन्दन कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य ।	सुवर्ण घृतकुम्भ	कुल्थीदन तिल	स्वच्छ यव घृत	अपमार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ अश्विनातेजसाचक्षु: प्राणेनसरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नम: ॥
(भरणी) (यम:)	हृद रोग, तीव्रज्वर अनेकरोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीरपुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुलधूप, गुडोदन नैवेद्य ।	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचडी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे ॥ ॐ यमाय नम:
कृत्तिका (अग्नि:)	नेत्रपीडा, अनिद्रा अतिदाह, उरूशूल	९	९	११	१६	२८	श्वेतचन्दनगंध, जुहीपुष्प, घृतदीप घृत गुग्गुलधूप, तिलमाषान्न,वडापीकानैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायसघृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति:पृथिव्या अयम् । अपा ᳩ रेता ᳩ सिजिन्वति ॐ अग्नये नम: ॥
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिरपीडा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	३०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	सप्तधान्य,कृष्णाधीदान५ कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरुचोवेनआव:सुबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठा:सतश्चयोनिमसतश्चविव:ॐब्रह्मणेनम:
मृगशीर्ष (चन्द्र:)	त्रिदोष, महाकष्ट अर्द्ध गात्र पीड़ा	३	९	५	७	१०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्गधूप घृतदीप,पायस अपूपमध्वोदननैवेद्य ।	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधि पायस	जयन्ती मूलम्	१० सहस्र	ॐइमन्देवा असपत्न ᳩ सुवध्वं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविशएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजा ॐचन्द्रमसेनम:
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर सर्वाङ्ग पीडा,अनिद्रा	मृतु	०	१८	०	०	श्वेतचन्दनगंध, सौरभपुष्प, दशांङ्गधूप घृतदीप, पायसौदननैवेद्य ।	श्यामवृषभदान श्यामवस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	सचंदनाभ्य त्वमूलम्	१० सहस्र	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: । बाहुभ्यामुतते नम: । ॐ रुद्राय नम: ॥
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिरपीडा कटिपीडा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुंकुमगंध, सेवन्तिकापुष्प अष्टगंध धूप, घृतदीप घृताक्तपीतवर्णान्ननैवेद्य	वस्त्र,स्वर्ण, कमल५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्कमूलम्	१० सहस्र	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता स पुत्र:विश्वेदेवा अदिति: पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्ॐअदि०
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	८	७	७	१०	२१	कुंकुमगंध कमलपुष्प, घृतगुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायसशर्करा नैवेद्य	सुवर्ण गौ पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नम: ॥
आश्लेषा (सर्प:)	सर्वाङ्ग पीडा, पाद पीडा, मृत्युसमकष्ट	मृ.तु.	०	०	४१	०	कुंकुमअगरगंध, अगस्तपुष्प,घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतक्षीर नैवेद्य ।	सवत्सा श्याम गौ छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु: ये अन्तरिक्षे ये दिविशतेभ्य: सर्प्पेभ्यो नम. ॥ ॐ सर्प्पेभ्यो नम: ॥
मघा (पितर:)	शिर पीड़ा अर्द्ध गात्रपीड़ा	२०	१५	७	१७	२०	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतमिष्टान्न नैवेद्य ।	वस्त्र, तिल माष दान	सतिलाज्य दुग्धान	तिल घृत तण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐपितृभ्य:स्वधायिभ्य:स्वधानम: पितामहेभ्य:स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्यस्स्वधायिभ्य:स्वधा नम: अक्षन्नपितरोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितर:पितर:शुन्धध्वम्। ॐ पि०
पू. फा. (भग:)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०	१५	०	३०	श्वेतचन्दनगंध मालतीपुष्प, घृतबिल्व धूप, घृतदीप अपूपोदनमोदक नैवेद्य ।	पित्तल यवमाषान्न स्वर्ण गौ दान	घृतोदन पायस	फल्गुनी तिलघृत	कण्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्न: । भगयेप्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन:स्याम॥ ॐ भगायनम:।
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशुल, ज्वर शिरपीड़ा अतिकष्ट	७	७	१४	७	६०	कर्पूर, केसरगंध, अर्कपुष्प,घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	सुवस्त्र, स्वर्ण, रजत,अन्न, गोदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐदेवावध्वर्यू एचागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वायज्ञ ᳩ समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐ अर्यम्णे नम: ॥
हस्त (सविता)	उरुशूल, अफारा सर्वांग पीड़ा प्रस्वेद	१५	१५	७	१५	०	रक्तचन्दन, केसरगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, घृतपायसनैवेद्य	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान	मिष्टान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजा:पुपोषपुरुधा विराजति ॐ सवित्रे नम: ।
चित्रा विश्वकर्मा	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११	९	९	१६	केसरगंध, [illegible] धूप, घृतदीप, विचित्रान्नमोदकनैवेद्य	[illegible] वृषभ, छायापात्र	[illegible] घृत	तिलाज्य घृततण्डुल	[illegible] मूलम्	१० सहस्र	ॐ त्वष्टातुरीपोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदाछन्दइन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदधु: ॥ ॐ विश्वकर्मणे नम: ॥

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	रोग	कष्ट दिन	चरणगत कष्टदिन				गन्धादि पदार्थ	दानवस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः
स्वाति(वायुः)	नानाकष्ट ज्वरपीड़ा	मृ.तु.	६०	१५	३०	०	चन्दनगन्ध (दमनकपुष्प) अगरु गुग्गुल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वा म सोम पीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा कुक्षिशूल	१५	१५	०,	४	१३	चन्दन केसरगन्ध, कमलपुष्प, देवदारु घृतधूप, घृतदीप घृतपायस नैवेद्य ।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्र दान	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगत ᳚ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥
अनुराधा (मित्रः)	शिर पीड़ा तीव्रज्वर	[illegible]	१०	१२	३६	३०	केसरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य मुद्गमाषान्न	यव घृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ᳚ सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्याय ᳚ सत ॥ ॐ मित्रायनमः ॥
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन व्याकुलता	मृ.तु.	१२	६	६	४	श्वेतचन्दनगन्ध, चम्पकादिपुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य ।	स्वर्णतिल, नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र ᳚ हवे हवे सुहव ᳚ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ᳚ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदररोग सन्निपात	७	०	६	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृत-दीप कृष्णागुरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य ।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारीपूजा	सहवि माषान्न	कन्दमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमग्नि ᳚ स्वेयोनावभारुखा । तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥ ॐ निर्ऋतये नमः ॥
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कम्पन महाकष्ट	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	१८	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	स्वर्णवस्त्र तिल तंदुल जल कुम्भ गोदान	घृतपायस मिष्टान्नहवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्गत्वमस्मदप दुःस्वप्न्य ᳚ सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥
उ. षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा उदशूल प्रलाप	३०	२०	[illegible]	[illegible]	१६	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	आमान्न स्वर्णदान	सहवि पायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वे देवाः शृणुतेम ᳚ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठ । अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥
श्रवण (विष्णुः)	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोषमय, अतिसार	११	६०	२८	६	[illegible]	श्वेतचन्दनगन्ध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, दध्यन्न शाल्यन्न नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ छायापात्र दान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार मूत्रकृच्छ्र	२५	[illegible]	२	[illegible]	१२	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ,	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ ॐ वसुभ्यो नमः ॥
शतभिषा (वरुणः)	वातज्वर सन्निपात कष्ट	१३	०	[illegible]	९	[illegible]	केसर अगरगंध, कमलपुष्प, कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतगोलिका नैवेद्य ।	स्वर्ण, तिलान्न घट, अश्व, छायापात्र	घृतचित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥
पू. भा. अजैकपाद	वमन, व्याकुलता शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०	१२	[illegible]	१५	केसरचन्दनगंध, श्वेतार्क पुष्प शालीयवि मिश्रितधूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत अश्व, श्वेत वस्त्र, छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॥ ॐ अजैकपदे नमः ॥
उ. भा. अहिर्बुध्न्य	कामला, अतिसार शूल वातज्वर	७	[illegible]	२०	[illegible]	[illegible]	चन्दन कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्व-गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्र दान	तिल घृत मुद्ग माष	तिलाज्य यव	अश्वरत्न मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ᳚ सीः. नवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥
रेवती (पूषा)	कफ पित्तमय ज्वर उदशूल चित्तभ्रम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	१४	रक्तचन्दनगंध, मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वस्य मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥

अर्कतिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च । अर्कांशो वर्जयित्वान्यत्सर्वकार्येषु शोभनम् ॥

अथ घातचक्र

{ यह घातचक्र यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्यं करें। विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्यं नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।६।१४	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुष घातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु:	वृषभ	मीन	सिंह	धनु:	कुम्भ
स्त्री. घातचन्द्र	मेष	धनु:	धनु:	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु:	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधकचक्र

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	अश्विनी आद्या नाड़ी अश्व योनी देवगण	भरणी मध्या नाड़ी गज योनी मनुष्य गण	कृत्तिका अन्त्या नाड़ी मेष योनी राक्षस गण	रोहिणी अन्त्या नाड़ी सर्प योनी मनुष्य गण	मृगशीर्ष मध्या नाड़ी सर्प योनी देवगण	आर्द्रा आद्या नाड़ी श्वान योनी मनुष्य गण	पुनर्वसु आद्या नाड़ी मार्जार योनी देव गण	पुष्य मध्या नाड़ी मेष योनी देव गण	आश्लेषा अन्त्या नाड़ी मार्जार योनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लु, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ क, ४ की	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हू, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो

राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद	वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद	मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव	कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर

नक्षत्र नाड़ी योनी गण	मघा अन्त्या नाड़ी मूषक योनी राक्षस गण	पूर्वाफाल्गुनी मध्या नाड़ी मूषक योनी मनुष्य गण	उत्तरा फाल्गुनी आद्या नाड़ी गो योनी मनुष्य गण	हस्त आद्या नाड़ी महिष योनी देव गण	चित्रा मध्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	स्वाति अन्त्या नाड़ी महिष योनी देव गण	विशाखा अन्त्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	अनुराधा मध्या नाड़ी मृग योनि देव गण	ज्येष्ठा आद्या नाड़ी मृग योनी राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू

राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर	कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव	तुला शुक्र शूद्रवर्ण मानव	वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक

नक्षत्र नाड़ी योनी गण	मूला आद्या नाड़ी श्वान योनि राक्षस गण	पूर्वाषाढा मध्या नाड़ी वानर योनी मनुष्य गण	उत्तराषाढा अन्त्या नाड़ी नकुल योनी मनुष्य गण	श्रवण अन्त्या नाड़ी वानर योनी देव गण	धनिष्ठा मध्या नाड़ी सिंह योनी राक्षस गण	शततारका आद्या नाड़ी अश्व योनी राक्षस गण	पूर्वाभाद्रपदा आद्या नाड़ी सिंह योनी मनुष्य गण	उत्तराभाद्रपदा मध्या नाड़ी गो-योनि मनुष्य	रेवती अन्त्या नाड़ी गज योनि देव गण
चरणांक चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची

राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	धनु: गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव	मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर	कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव	मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु- ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जडः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीडितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्यः	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्र
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनः २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ.	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानाश	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	गुरु.ना.	सिद्धिः	धनला.	द्रव्यना
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनला.	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मला.	सौख्य	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनला.	स्त्रीकष्टः	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुख	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनला.	पीड़ा.
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनला	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनला.	धनला.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्युः	दुःख	वैरं	सुख	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सुख	भयं	सुख	धनला	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्ति.	शत्रुभीः

अथ वर्षकुण्डल्यांतन्वादिभावस्य ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रलाभ	कलह.	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाहृला.	पुत्रः प्रा	अष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ.	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनिः	बातार्ति	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्याहृ.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महानि	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्याना.	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्धा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है । इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना । पैरके तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो । राजाओंके हाथमें तिल या खाज उठे तो जय होती है । साधारण व्यक्ति को लाभ होता है ।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य लाभ	पादोपरि	स्थानलाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोष लाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रू मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोदर्व	विजय	वक्षः स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आंत्रिक	कोषवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्री लाभ

ग्रहाः	गौचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः											जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगो	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथी दांत	मुथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधं रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सूरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलठ्ठी	सुवृक्षमूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
खश	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
केशर	श्वेत चंदन	सिंगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठ्ठी	स्फटिक	माल कंगनी	मोती			मुत्थरा		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूँ) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७॥

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्लां, कांगनी, जव सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधी, लोध इन सब औषधियों के जलसे सतीर्थोदक स्नान करनेसे सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करनेसे शांति होती है । गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणोंकी वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मनकी शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञके करनेसे दुष्ट स्थानोंमें स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार—गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः । द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये धना नादौ च विलोमतः ॥ फलं—नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृद मानसीव्यथा, चरणे भ्रमणं देशे देशः संचारयेच्छनिः ॥ अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणीं प्रवदन्ति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधि बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् । मृत्यु चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं, लोहं शस्त्र भयं, सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढ़ेसती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिर्नाना क्लेश करोति दुर्जनभयं [illegible] विदेशगमनं गौख्यं च साधारणम् । रामाऋद्धि विनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥२॥

अथ ग्रहाणां राशि प्रवेश समये पाद निर्णयः—किसी ग्रह का राशि प्रवेश समय में पाद देखना हो तो अपनी राशिसे जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि तक गिनें, वह संख्या २।५।९ हो तो रजतपाद, ३।७।१० मे ताम्रपाद, १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना । गुरु सुवर्णपादमें, शनि लोहपादमें, मङ्गल ताम्रपाद में, शुक्र रजतपाद में शुभ होते हैं । शनिवाहन—जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि बदले उस दिनके नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें, शेष क्रमशः [illegible] ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ छाग. ८ मयूर, ९ हंस । इसमें वाहनों के गुणानुसार फल समझें ।



वर-वधू गुणमेलापक सारिणी भाग-१



ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	उ.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	भा.
बधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२७॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३५	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	११॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	२३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	११॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	११॥	१२॥ १	११॥	२४॥	२६॥	२२॥ २	१५॥ ३५	१२ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ ६-	२५॥ -६	२५ ५+	१९॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२१	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	११॥ १४	१०॥ ३४	कृ.
४	वृ.	।।।	कृ.	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	११ १२६	० १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ५+	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२।	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२२॥	२३॥ १	१३॥ १	११॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३	रो.
६	वृ.	।।	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१९ ३	२१	११॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ ६-	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३१	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७	मृ.
७	मि.	।।	मृ.	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ०३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२१ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० २६	१२ ५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२१	मृ.
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ १+	२४ ४+	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० +१५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२५	आ.
९	मि.	।।।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ २+	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	११॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२०	२७	२१॥ -६	२२॥ ६	१६॥ -६	१८॥ ५+	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२१	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	११॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१९ ३५	२५ ५+	२४॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२१॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२१	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ५	३४	१८ ३	२९ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	११॥ १	११॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	१० १५	१९ ३५	आ.
१३	सिं.	१	म.	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१०॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३६	म.
१४	सिं.	१	पू.	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१८॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ ६-	पू.
१५	सिं.	।	उ.	१५॥ ३१	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	।।।	उ.	११ २३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२५ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२० ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२४	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ ५+	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	११ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	११ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१९ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६	ह.
१८	क.	।।	चि.	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ ११	१०॥ ३५	१८ ३	२६ १	२२॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१९ ०४	२५॥ ४+	२७	११ ३	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ ११	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं; उपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. चिन्होंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह भर्ताके नक्षत्रसे पूर्व वधूका नक्षत्र है (इसकामी महादोप) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.



वर-वधू गुणमेलापक सारिणी भाग–२





			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी	मी	मी	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।,	१	।।।	।	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ	कृ.	कृ.	रो	मृ	मृ.	आ	पु	पु.	पु	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	।।	चि.	२२	१४ / १३	२८	२३ / ६+	१८॥ / १६	१०॥ / ३६	१२ / ३५	२० / १५	१८॥ / ५+	१९	११ / ३	२१	२४॥	१०॥ / १३	१६॥ / १२	१७॥ / १२४	२० / ४+	२० / ३४	२८ / ३	२७ / ०	३३॥	२२॥ / ४	६॥ / ३४	२०॥ / ४	२७	१३ / १३	२१ / १	२३॥ / ०१	२५	२३ / ३	१८ / ३५	२६ / ५+	१८॥ / १५	१२ / १६	३ / १३६२	१२ / ६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२१ / २+	२८	१६ / ३	११ / ३६	१४ / ३६	२४ / -६	२६ / ५+	२६ / ५+	२७ / ५+	२७॥	२६	१३ / ३	१२॥ / ३	२४	२५॥	२५॥ / +४	२७॥ / ४+	२१ / ४+	२८	२८ / ३	२७ / ६०	९ / ३६०	२१॥ / ४	१६॥ / ४	२३	२७	१९ / ३	२१॥ / ३	२२॥ / ३	२६	२१ / ५+	२२ / ५२+	२५ / ५+	१८॥ / ६	१९ / ६	११ / ३६	स्वा.
२१	तु.	।।।	वि.	२१	२२ / १	२० / ३	१५ / ३६	९ / १३६	१७ / -६	१८॥ / ५+	२० / १५	२० / ५+	२०॥	२०॥	१७ / ३	१६॥ / ३	१८॥ / १	१७॥ / १२	१७॥ / १४२	१८॥ / ४+	२६ / ४+	३३॥	१९ / ३	२८ / ३	१६ / ३४	१६ / ०४	२१॥ / ४	२७	२१ / १	१३ / १३	१५॥ / १३	१५॥ / ३	२१॥	२४ / ५+	२६ / ५+	२० / १५	१३॥ / १६	१२॥ / १६२	४ / ३६	वि.
२२	वृ.	।	वि.	१६॥ / ६+	१६॥ / १६	१४॥ / ३६	१९॥ / ३	१३॥ / १३	२३॥	११ / ६	१२॥ / १६	१२॥ / ६	१८ / -५	१८ / ५-	१४॥ / ५-	२४॥ / ३	२२॥ / १	२१॥ / १२	१७ / १२	१८	२६	२३	७ / ३४	१५ / ३४	२८ / ३	२७ / ०	३१॥	२१॥ / ४+	१५॥ / ४१	७॥ / १३४	११ / १३	११ / ३	२५	२४	२५॥	१९॥ / १	१९ / १५	१८ / १५	९॥ / ३२५	वि.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥ / -६	१४॥ / ३६	१८॥ / -६	२३॥	२७॥	२०॥ / ३	१० / ३६	१५ / २६	१९॥ / ६	२५ / -५-	१७ / ३५	२० / -५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ / ३	६॥ / ३४	२०॥ / ४	१६ / ४	२८	२८ / ३	३१ / ०	१५॥ / २४+	१३॥ / ३४	२१॥ / ४+	२५	२६	१२ / ३	११ / ३	२०	२४॥	२४ / ५+	१७ / ३५	२६ / ५+	अ.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१० / ३६	१७॥ / १६	२३॥ / -६	२८॥	२२॥ / १	२९॥	१२ / ६	२ / ३१६२	४ / ६३	९॥ / ५३	१९ / ५+	२५ / ५-	३१	२३॥ / १	१५॥ / १३	११ / १३	११ / ३	२४	१९॥ / ४	१४॥ / ४	९ / ४	३१॥	३०	२८ / ३	१४ / ०२३४	१६॥ / १४	१६॥ / १४	२० / १	२०	२५	२४	१७ / ३	१० / १३	९॥ / १३५	२० / १५	२० / ५+	ज्ये.
२५	ध.	१	मू.	११॥ / ३५	१९ / १५	२५ / ५+	१९॥ / ६	१२॥ / १६	१२॥ / ६	२१	१४ / १३	१२ / ३	७॥ / ३६	१७॥ / ६	२३ / ६	२४ / ५+	१८ / १५	१९॥ / ११३	१३ / ३१	१३ / ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ / ४+	१६॥ / +२४	१६ / ३४२	२८ / ३	२८ / ०१	१५॥ / १	१३॥ / १४	१४॥ / ४	१९॥ / ४	२८॥	२१॥ / ३	१४॥ / १३	१६॥ / १३	२४॥ / १	२६	मू.
२६	ध.	१	पू.	२५॥ / ५+	१७॥ / ३५	१९॥ / -१२५	१४ / १६२	१८॥ / ६	१०॥ / ३६	१२ / ३	२६	२७	२२॥ / ६	१४॥ / २३६	१६॥ / १६	१९ / -१५	१७ / ३५	२५ / ५+	२८॥	२७	१२ / १३	१२ / १३	२७	२० / १	१६॥ / -१४	१५॥ / ३४	१७॥ / -१४	२७ / १+	२८ / ३	३४ / ०	२२ / ०४	२२॥ / ४	५॥ / १३४	१४॥ / १३	२३॥ / १	२८॥	२९॥	२२॥ / ३	३०॥	पू.
२७	ध.	।	उ.	२४ / ५+	२५॥ / ५+	११॥ / १३५	६ / १३६	१० / २३६	१६॥ / २६	२५ / २+	२६	२७	२२॥ / ६	२२॥ / ६	८॥ / १६३	८॥ / १५३	२४ / ५+	२५ / ५+	२८॥	२८॥	२० / १	२० / १	१९ / ३	१२ / १३	८॥ / १३४	२३॥ / ४+	१७॥ / -१४	२५ / -१	३५	२८ / ३	१६ / ३४	१५ / ३४०	१३॥ / १४	२२॥ / १	२३॥ / १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ / ३	उ.
२८	म.	।।।	उ.	२७	२८॥	१४॥ / १३	१२ / १३५	१६ / २३५	२२॥ / २५+	१९॥ / २६+	२४॥ / -६	२१॥ / -६	२८	२८	१५ / १३	४॥ / १३६	२० / ६	२१ / ६	२१ / ५+	२४ / ११	१५॥ / १५	२२॥ / -१	२१॥ / ३	१४॥ / १३	१२ / ३१	२७	२१ / १	१४॥ / १४	२४ / ४	१७ / ३४	२८ / ३	२७ / ३०	२५॥ / १+	१५॥ / १४+	९॥ / १४+	२१॥ / ४+	२९॥	३०॥	२२॥ / ३	उ.
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥ / ३२	१२ / ३५२	१७ / ३५	२६ / ५+	२३ / -६	१९॥ / -६	२१॥ / -६	२८	२८ / २+	१४ / ३	५॥ / ३६	१८॥ / ६	२० / ६	२३ / ५+	२४ / ५+	१७ / ५	२४	२१॥ / ३	१४॥ / ३	१२ / ३	२७	२१	१४ / ४	२२॥ / ४	१५ / ३४	२६ / ३	२८ / ३	२७- / ०	१७ / ०४	१७॥ / ४+	२०॥ / ४+	२८॥	२२॥	२३॥ / ३	श्र.
३०	म.	।।	ध.	२०	११ / १३२	२६	२३॥ / ५+	१९ / १५	११ / ३५	८ / ३६	१६ / १६	१४॥ / -६	२१	१३ / ३	२७	१८॥ / ६	४॥ / १३६	१०॥ / १६	१५॥ / १५	१७ / ५+	१५ / ३५	२९ / ३	२४	२८॥	२६	१२ / ३	२६	२०॥ / ४	६॥ / ३४१	१४॥ / ४१	२५॥ / १	२७	२८ / ३	१७ / ३४	२३ / ४०	१७॥ / १४	२४॥ / १	१५ / १३	२२॥ / २+	ध.
३१	कुं.	।।	ध.	१९॥	१०॥ / १३२	२५॥	३०	२५॥ / १	१७॥ / ३	११ / ३५	१८ / १५	१७ / ५+	१२ / ६	४ / ३६	१८ / ६	२२॥	१०॥ / १३	१८॥ / १	१७॥ / १६	१९ / ६+	१७ / ३६	१८ / ३५	२० / -५	२४॥ / -५	२५	११ / ३	२५	२९॥	१५॥ / १३	२३॥ / १	१६॥ / १४	१८ / ४+	१८ / ३४	२८ / ३	३३ / ०	२७॥ / १	१६॥ / १४	६॥ / १३४	१३॥ / ४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥ / ३	२०॥ / १	२६॥	३१	२५ / १	२६॥	२० / ५+	१२ / १३५	१२ / ३५	६॥ / ३६	१३ / ६	१९ / ६	२५॥	१९॥ / १	१७॥ / १३	१०॥ / १३६	१०॥ / २३६	२५ / ६	२६ / ५+	२१ / ५+	२६ / ५+	२६॥	२०	१८ / ३	२२॥ / ३	२४॥ / १	२४॥ / १	१७ / १४	१७॥ / ४+	२४ / ४+	३३	२८ / ३	२९ / १३ / ०	८ / १३४ / ०	१४॥ / १४	१५॥ / ४	श.
३३	कुं.	।।।	पू.	१७॥ / ३	२४॥ / २+	१९॥ / -१	२४ / -१	३०	३०	२३॥ / ५+	१७ / ३५	१७ / ३५	११॥ / ३६	१९॥ / ६	१२ / १६	१८॥ / १	२४॥	१६॥ / ३	१५॥ / ३६	१५॥ / ३६+	१५॥ / १६	१८॥ / -१५	२६ / ५+	२० / -१५	२०॥ / १	२६॥	११ / १३	१५ / १३	२९॥	२९॥	२२॥ / +४	२२॥ / ४+	१८॥ / -१४	२७ / -१	१९ / १३	२८ / ३	१६ / ३४	२२ / ०४	१९॥ / ४२	पू.
३४	मी.	।	पू.	१४॥ / ३४	२१॥ / ४२+	१६॥ / -१४	१९ / १	२१	२१	२४	१७॥ / ३	१७॥ / ३	१७ / ३५	२५ / ५	१७॥ / १५	१६॥ / -३६	२२॥ / ६+	१४॥ / ३६	१६ / ३	१६ / ३	१८ / १+	११ / १६	१८॥ / ६	१२॥ / १६	१९ / -१५	२५ / ५+	९॥ / १३५	१४ / १३	२८॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥ / १	१५॥ / १४	७ / १३४	१५ / ३४	२८ / ३	३३ / ०	३०॥ / २+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥ / ४+	१५॥ / ३४	१८॥ / -१४	२१ / १	२६	१८ / ३	१७ / ३	२५	२६॥	२६ / ५	१९ / ३५	२० / १४	१७॥ / -१६	१५ / ३६	२५॥ / ६+	२७	२६	९ / १३२	२ / १३६२	१९ / ६	११॥ / १६२	१८ / १५२	१८ / ३५	२० / -१५	२३॥ / -१	२१॥ / ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ / १३	५॥ / १३४	१२॥ / १४	२१ / ४	३३	२८ / ३	३३ / ०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२५ / ४+	२३॥ / ४+	१०॥ / ३४	१३ / [illegible]	१७ / [illegible]	२६	२५	२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] / ६	[illegible] / ३६	[illegible] / ३६	[illegible] / ३५	[illegible] / ५+	[illegible] / १+	२६	२८॥	[illegible] / ३	२३॥ / ३	२१॥ / ३	२२॥ / -२	१३॥ / ४२	१५॥ / ४	१७॥ / ४२	२९॥ / २+	३३	२८ / ३	रे.
			न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ	मृ.	आ	पु.	पु.	पु	आ	म	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रि-ज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्यामेंसे एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिकमें भी विवाह होते हैं। इस पंचांग के प्रारंभमें देशभेदानुसार बहुत विचारपूर्वक सभी विवाह मुहूर्त दिये गये हैं।

त्रिबल शुद्धिः—

श्रेष्ठ गुरु—जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु—१।३।६।१० वाँ।
नेष्ट गुरु—४।८।१२ वां। उच्चमित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।
श्रेष्ठ सूर्य—३।६।१०।११वाँ।पूज्य सूर्य १।२।५।७।९वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।
श्रेष्ठ चन्द्र—१।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ।पूज्यचन्द्र १२ वाँ। नेष्टचन्द्र ४।८ वाँ।

उपनयनमें बालक १६वर्षसे ऊपर हो गया हो और विवाहमें कन्या १८ वर्षसे अधिक हो गई हो तो स्वराशि (धनुः मीन राशि) और उच्च (कर्कराशि) का गुरु जन्म या नाम-राशिसे चौथा १२वां हो तो द्विगुणपूजासे और अष्टम हो तो भी त्रिगुणित पूजासे विवाह और उपनयन संस्कार शुभदायक होता है, ऐसा ऋषियोंका मत है।

विवाह में स्तम्भ स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिये सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ की संक्रांति में नैर्ऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में अग्निकोण में विवाह कार्य के लिए स्तम्भ स्थापित करें।

वधू वर तथा बटु की राशि पर से तैलादि लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधू वर तथा बटु की राशि से दिन तथा मौंजी दिवस के पूर्व दिन लेवें।

१- नृदूरदोष—वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से नृदूर दोष होता है।
२- कन्या दूर—कन्या के नक्षत्रसे वरका नक्षत्र बहुत दूर होने से 'कन्या दूर' शुभ है।
३- कन्या राक्षसगण की हो और वर मनुष्यगण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हों तो विवाह कल्याणप्रद होता है।
४- वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।
५. कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।
६. वर कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हो तो विवाह शुभ होता है।
७- अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्युषडष्टक) हो और राशिकूटमैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे॥

नाड़िदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्॥
एकनक्षत्रजातानां नाडिदोषो न विद्यते। अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहे वर्जितः सदा॥
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडिदोषो न विद्यते॥

मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।

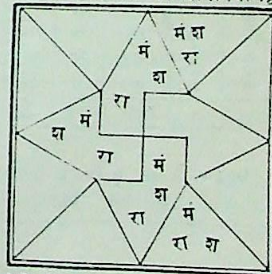
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः। एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम्॥

कुण्डली मिलान—वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि द्रव्य, पुत्र, पति, पत्निसुख, ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से दाम्पत्य में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो मनुष्य स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान् हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हो तो नेष्ट होता है। ऐसे ही वर को द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या की कुण्डली में परस्पर मारक हो तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या योग हो और कन्या की कुण्डली में पतिसुखयोग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुरयोग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्व को ग्राह्य मानकर मंगल आदिका दोष लिखा है। विशेषतः मंगल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या-विनाशकृत्॥

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है, इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली से देखना चाहिए। एक के तो मंगल हो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पापग्रह (शनि राहु) हो तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा—

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥



अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते॥
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्॥
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः॥
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥

इत्यादि परिहारसे भौमदोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम- अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली का मिलान करें। परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक ठीक बनी होनी

चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्ययोग जानपड़े तो शालिग्रामसे, पिप्पलवृक्ष से, अर्कवृक्ष से, वा कुम्भसे यथाविधि विवाहकर गोदान, सुवर्ण-दान, महामृत्युञ्जयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य,पुत्र, धनसे युक्त होती है। इस पंचांग में आगे दी गई मेलापकसारिणी से गुण मिलान करें।

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥

विवाहांग कार्यारम्भ—पंचाग शुद्धि देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।६ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्र बल देखकर विवाह के नक्षत्र में जिस स्त्री को चन्द्रबल उत्तम हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना, कूटना, कलशादि, स्थापना करना, घरलीपना, आंगन सफाई, भूषण घडाना, वेदी रचना, चंदोवा, बांधना, वस्त्र सिलाना गणेशादि पूजन, नांदि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

विवाह में दश दोषों का विचार—विवाह समय निश्चित करनेके लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्यागने को लिखा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होनेसे दश दोषों का विचार करते हैं और इन दश में से क्रूरयुति, वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा ये पांच महादोष ही विवाह में सर्वत्र वर्ज्य हैं।

चैत्र, पोष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासो में रो. मृ. उतरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य (महापात) और दग्धा-तिथि ये दश दोष हैं। इनका विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। हमने ये दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त इस पंचांगमें दिये हैं। दोषों के क्रम से जहां दोष हैं वहां (s) और जहां दोष नहीं हैं वहां (।) ऐसी खडी लकीर दी है। विवाह मुहूर्तमें वर कन्याके जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, लग्नसे तथा राशिसे अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न तथा राशीश के शत्रु राशि का लग्न नवांश न लें। यह विवाह सूक्ष्म केतकी गणित से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। अन्तर वाले प्राचीन स्थूल गणितसे विवाह मुहूर्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त होती हैं और अशुभ होने की सम्भावना रहती हैं।

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥

लत्तादोष चक्र १

ग्रहा.	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
बि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	६
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरण

उदाहरण :—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से १२वां होने से यह सूर्यका लत्तादोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहोंका लत्ता दोष भी जानें।

पातदोष चक्र २— हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करनेसे पात दोष होता हैं।

रो.	मृ.	म.	उफा	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि०न०
आर्द्रा पुनः श पूफा चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध म. ह.	अश्वि मृ. ज्ये पुष्य ह रे	कृ. आ. वि. पूफा उभा पूभा	भ. मृ. श. पूभा स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य. ह. रे.	अ आ उषा पूभा पूषा पूफा	रो ज्ये ध. अश्ले. मू उभा	भ पुन. श. वि. अनु. उषा	भ. श. वि. उफा मू. पूफा	अ. म. ध. ज्ये. पूफा स्वा	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

३. युतिदोष :—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युतिदोष समझा जाता हैं। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युतिदोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू.मं श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई हैं। शुक्रकी युति विशेष करके वर्जित हैं।

वेधदोषचक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अभि.	उषा.	पू.	रे.	उभा.	श.	म.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.	प्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेधदोष होता है, यह सर्वत्र विशेषरूपसे त्याज्य है।

जामित्रदोष चक्र ५

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ.	उ.	रे.	वि.
अनु	ज्य	ध.	पू. भा	उ. भा	अश्वि	कृ	मृ.	पुन	उ. फा	ह.	ग्र. न.

बाणज्ञानाय सुलभचक्र ६

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशि अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय-परत्वेन वर्ज्या
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ-त्याज्यं
वह्नि	२।११।२०। २६	गेहगोपे	भौमे	सदैव-वर्ज्यं
नृप	४।१३।२२	नृप सेवायां	मन्दे	दिवा-त्याज्यं
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ-वर्ज्यंम्
मृत्यु	१।१०।१६। २८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यंम्

विवाह लग्न से ७ वें ग्रह होने पर जामित्रदोष होता हैं। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, अर्थात् १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्ज्य है।

एकार्गल दोष ७—व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,

अतिगंड ये योग हों और सूर्यके नक्षत्रसे विवाहका नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गलदोष होता है ।

उपग्रह दोष ८—सूर्यके नक्षत्रसे ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें २१वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें नक्षत्र पर चन्द्र होतो एकार्गलदोष होता है ।

क्रान्तिसाम्यदोष चक्र ९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनुः	वृश्चिक	मीन	कुम्भ

उदाहरण—मेष के सूर्य सिंहके चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमामें स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है, यह सर्वत्र वर्ज्य है । सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणितसे सिद्ध होता है । इस पंचांगके विवाह मुहूर्तोंमें गणितागत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है ।

दग्धा तिथिदोषः १०

ध०	वृष	कर्क	क.	सिंह	म०	सूर्य
मी.	कुम्भ	मे.	मि.	वृश्चिक	तु०	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय हैं ।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च । लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत् । लत्तादिदोषाणां परिहारव्याख्यानि—लत्तामालवके (उज्जैनप्रान्त) देशे पातश्च कुरु(कुरुक्षेत्र बांगर जांगले(फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् । उपग्रहर्क्ष कुरुवाल्हीकेषु(आगरा प्रान्त बलखबुखारा)कलिंगवंगेषु(जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या)च पातितं भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड)शाल्वे (उज्जैन प्रान्त)च लत्तितं भम् । त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहारः—चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः । पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः ।

युतिपरिहारः—स्वर्क्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः । युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) । अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम् । तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च । शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः । अस्यापवादः-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते । जामित्रपरिहारः (व्यवहारसमुच्चये)-स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे । हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः । नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं० पापा.	०	शुक्र	०	०	चं० शु० लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्या ग्रहाः

चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रान्ति साम्यंच	चं.	मं.	चंद्र भौम	विद्धभंच गोधूली त्याज्याः

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौः लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनांत्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतस्सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः । वादरायणः—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्त्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वोः । सा कर्त्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः । "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" । केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी । दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादा ज्योतिर्निबंधे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह । अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थे सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा । मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तु मासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वं ग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिराः ॥

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	के०	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३ ६ ८ १	२ ३ ११	३ ६ ११	१।२ ३।४ ५।६ ९ १० ११	२।१ ३।४ ६।५ ९ १० ११	१।२ ४।५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम् ।
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबलम

अथ गोधूलिलग्नविचार——लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डाकृते भास्करे । ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते ...तस... भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥

गोधूलिके त्याज्यदोषाः—कुलिकक्रान्तिसाम्यश्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा गोधूलिकस्त्याज्यः ...पैस्तु दूषितः ॥ अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे । लग्ने षष्ठेऽष्टमे ...स्तदा गोधूलिनाशकः ॥ "अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के ।" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होनेके पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवारको सूर्यास्तसे पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जानेसे कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाहमुहूर्त्तः—कृष्णेपक्षे भानुभौमार्कजानां वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः ।

पुर्नविवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सङ्ख्यकसाभिजिद्भेषु पुर्नविवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभगुरु...स्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधू प्रवेश मुहूर्त्तः—जब विवाह होने पर वधू पतिके घर पहले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाहसे १६ दिनके भीतरके दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनोंमें, एक वर्षके भीतर विषम मासमें और एक वर्षके उपरांत ३ रे ५वें वर्षमें भी स्थिर लग्नमें वधू प्रवेश शुभ है । ५ वर्षके उपरात जब चाहे तब शुभ मुहूर्तमें हो सकता है । १६ दिनके भीतर पूर्वोक्त दिनमें तिथ्यादि पचाग शुद्धि चन्द्रबल गुरु शुक्रके मूढत्वका भी विचार नहीं करना । "व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासङ्क्रान्ति...आदौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ।" रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध.ह. चि. स्वा. भ. म. उत्तरा ३ पूर्व. अनु. इन नक्षत्रों और चं. बु. बृ. शु. इन वारों में, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियोंमें, २।५।८।११ लग्नों में, चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य समयमाह: ...र्ध प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
...दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

द्विरागमन मुहूर्त—पिताके घर से दूसरी बार पतिके घर जानेको द्विरागमन कहते हैं विवाहसे एक वर्षके भीतर अथवा तीसरे वा ५वें वर्षमें वृश्चिक, कुम्भ, मेषके सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, ... राशिके लग्नमें, ह... रेवती तीनों उत्तरा.रो.स्वा. पुन. पुष्य.श्र.ध.श.मृ.मू. चित्रा और अनुराधा नक्षत्रोंमें शुभ है ।

सम्मुख दक्षिण शुक्रनिषेधः—सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृहसे पतिके घर जाना निषेध है । सम्मुख वा दक्षिण शुक्रमें नववधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालककी मृत्यु हो । गर्भिणी जावे तो गर्भका सुख न हो, परन्तु रेवतीसे मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं । यथा—**रेवत्यादि मृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा । तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥** अति आवश्यकतामें शुक्रकी शान्ति कर श्वेतवस्त्र, छत्र, स्वर्णदान देकर जावे । राजविग्रह, उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, देवता यात्रा आदिमें जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्रका दोष नहीं ।

विवाह के पश्चात् वधू के रहने का नियम—विवाहके पश्चात् प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ताके घर रहे तो पतिके ज्येष्ठ भ्राताको, आषाढ़में सासको, पौषमें ससुरको. अधिक मासमें अपने आपको हानि करती है । चैत्रमें पिताके यहां रहे तो पिताको हानि करती है । ज्येष्ठादिके अभावमें (न हो तो) उस मासका कोई दोष नहीं होता ।

प्रथम युवति स्त्रीसंगम मुहूर्त्त—पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्री के बाद समरात्रिमें, रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३. रे. रिक्ता अमावसरहित तिथिमें, शुभ वार, रात्रिके प्रथम प्रहरको छोड़कर शुभ समय में चितको प्रसन्न कर प्रथम स्त्रीप्रसंग करे ;

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त—पंचाग शुद्धि देखकर वधूको चन्द्रबल देख, रिक्ता और क्षयरहित तिथि, शुभवार उ.रो.मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि.ज्ये.श्र.ध.श. रेवती इन नक्षत्रोंमें २।५।८।११ लग्नोंमें, लग्न चतुर्थ अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान् होनेपर नूतन वधूसे रसोई बनवाये ।

पतिगृहसे पितृगृह आनेका मुहूर्त—गुरु, चन्द्र, शुक्रवार, शुभतिथि, भ. आ. अश्ले. मघा. पूर्वा.ज्ये.मू. इन नक्षत्रोंके बिना अन्य नक्षत्रोंमें शुभलग्नपंचांगशुद्धि देखकर मुहूर्त निश्चित करें ।

स्त्री को वस्त्राभूषण धारण मुहूर्त—रिक्तामारहिततिथि.चं.गु.शु.बु. वारा.अश्विनी ह.चि.स्वा.अनु.ध.रे. इन नक्षत्रोंमें नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना शुभ है ।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—आश्विन का.वै.माघ.मार्ग.फा. तथा मेष.कन्या तु. वृश्चिक.म. कुम्भके सूर्यमें १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि, र.शु.गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम. पुन. पुष्य स्वा. उ.३.श्र.ध.श.रे.अ.ह.अनु.रो.मृ.वि.ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रोंमें लग्नसे ३।६।११वें पापग्रह, १।४।५।७।९।१०वेंमें शुभग्रह, चन्द्र ताराबल सहित, गुरु शुक्रके उदयमें, शुभ लग्न, मृत्यु आदि कुयोग रहित समयमें, विष्णुका स्थिरमें, शिवका चरमें, दुर्गाका द्विस्वभावलग्नमें, कूर्मचक्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें ।

... त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥

बावड़ी, बगीचा, तालाब. कूआं, मकानका आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ व्रतोद्यापन दान, गोदान. प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन) देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत,

विवाह अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास. अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरुके अस्त, बाल वृद्धत्व, और मलमासमें करना निषेध है।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः । हूणबंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥

कुयोग परिहार—तिथि वारमें उत्पन्न हुए क्रकच (वारदग्ध) मृत्यु आदि योग हूणदेश बंगाल और खसदेश (शिलांग)में ही वर्ज्य करने चाहिए, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्धं पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः। व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥

परिघयोगका अर्धयोग, शूलयोगकी ५ घटी, गण्ड और अतिगण्डकी ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, सर्व कार्यमें वर्ज्य करें। तथा जन्ममास, जन्मतिथि जन्मनक्षत्र व्यतीपात, वैधृति, भद्रा,पितृदिन, श्राद्ध,तिथिका क्षय वृद्धिकाल, अधिकमासं क्षयमास, कुलिक. प्रहरार्ध पात, महापात, (क्रान्तिसाम्य) और विष्कम्भयोगकी तीन घटी प्रारम्भकी सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलनेका मुहूर्त—रिक्ता तिथि और मंगलके अतिरिक्त अन्य वारोंमें ह.चि.रो.रे. तीनों उत्तरा पुष्य, अनु. अश्वि.अभि. नक्षत्रोंमें कुम्भ लग्नको त्यागकर अन्य लग्नोंमें, २।१० ११ भावों में शुभग्रह हों, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२वां स्थान पापरहित हो, चन्द्र शुक्र लग्नमें हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि. रो.मृ.पुन. उत्तरा ३. ह.चि.अनु.श्र.रे. नक्षत्र रिक्तारहित तिथि, र.चं.बु.गु.शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो और ८।१२वें स्थानमें पापग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ.मृ.चि.ह. पुष्य अनु. रे नक्षत्र, रिक्तारहित तिथि, र. चं.बु.गु.शु. वार, शुभग्रह लग्नमें हों, १०वें या ११वें सूर्य मंगल हो तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवककी परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहारः—नीचराशिगते चन्द्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
चन्द्रेऽष्टमारिरिःफस्थे दोषो नास्ति न संशयः ॥

अष्टम भौमदोष परिहारः—नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते ॥

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहारः—नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः ॥

द्रव्य प्रयोग मूहूर्त—पुन. स्वा.मृग.रे.चि,अनु.वि. पुष्य,श्र.ध.श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु,६।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ६।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवारको धन नहीं देना चाहिए। कृ.रो. आर्द्रा. अश्ले. उ. ३. वि.ज्ये. मू. नक्षत्रोंमें भद्रा व्यतिपात और अमावसमें गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट का भट्टा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिवार शुभ हैं।

श्री काशीनाथमते क्रय-विक्रय मूहूर्त—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र.ह.म. स्वा,उत्तरा ३, आश्ले. रे. एषु. भेषु. सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा.पू.षा.पू.भा.वि.कृ.अश्ले.भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं। **नोट**—बेचने के नक्षत्रोंमें खरीदना और खरीदनेके नक्षत्रोंमें बेचने वालों को ९५ प्रतिशत हानि रहेगी, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचनेके नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापारमें तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहटके दिन भरमें १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टेमें भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियोंके वाक्य कहां तक सत्य हैं।

नालिश अर्जी का मूहूर्त—४।६।१४ तिथि हों, मं.श. वार हो। कृ.आ.पुन.अश्ले.म. ज्ये.मू.वि.पूर्वा ३नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है। **गृहादि निर्माणमें आय विचार**—

ग्रामभात् वास्तुकतुं नक्षत्र यावद् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तके	७	धनलाभ
पृष्ठे	७	हानि नैःस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामीके हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणाकर आठ का भाग देवे जो शेष रहे वह क्रमसे ध्वजादि आय होती है। १ ध्वज, २ धूम्र. ३ सिंह. ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमिको अन्दर से मापना चाहिए। और देवस्थान की भूमिको बाहर से नापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घरमें आयादि विचारकी आवश्यकता नहीं हैं, और न चार द्वार वाले घरमें ही। ब्रह्माणको ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय वैश्यको गजाय और शूद्रको वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीचजातिके लिए शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—घरके क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाईके गुणन) को ८ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्रको ८ से भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय कम हो तो शुभहै, अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमिका शुभाशुभ जानना—नई बस्तीमें गृहादि बनाना होतो भूमि पूजन-पूर्वक शामको एकहाथ चौडा एकहाथ लम्बा एकहाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जलसे

भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें, यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—मकानकी नींवको इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जबतक निकले, अथवा साढ़ेतीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्यके बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयुकी वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन. और मे. वृष. कर्क. सिं. तु. वृ. म. कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भमें श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्षकी प्रतिपदा इन तिथियोंमें, च,बु.गु.शु.श. वारों मे,रो.मृ. चित्रा ह.स्वा.अनु. उत्तरा ३.ध.श.रे. वेधरहित नक्षत्रोंमें, १।३।५।६।८।११।१२ लग्नोंमें, पंचवाण और भूमिशयनसे रहित दिनोंमें, लग्नसे केन्द्र त्रिकोण स्थानोंमें शुभग्रह और ३।६।११वें स्थानमें पापग्रह तथा अष्टमस्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भमें वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष.	फल
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो.म. आश्ले.पू. पा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्रमें और बृहस्पतिवारको गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो.ह.श्र. उफा. चि. इनमें से जिसपर बुध हो उस नक्षत्रमें बुधवारको गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमेंसे जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्रमें और शुक्रवारको गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पाचवें सप्तम नवमे जोय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय॥ तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्याके नक्षत्रोंमें पृथ्वी शयनके कारण मकानकी नींव, तडाग, वापी, कूपादिका खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे॥ त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्रविचार—सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र पीठके सुखप्रद। ४ मस्तकके मृत्युप्रद। ८ बाहुके सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भके नाशक। २ भुजाके भोगदायक। २ चरणके नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्यने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रोंमें प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त—माघ-फालगुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा३, अनु.रो.मृ.चि.रे. इन नक्षत्रोंमें, रिक्तामारहित तिथियोंमें, चं.बु.गु.शु. इन वारोंमें, २।५।८।११ लग्नमें। अत्यावश्य के ३।६।९।१२ लग्नमें भी, लग्नसे १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११में क्रूरग्रह हों, १,६,८,१२वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८वीं राशि लग्नमें न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्रकी भी शुद्धिहो ऐसे समय में आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्यके साथसे दम्पतिको गृह-प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेशका विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भयसे बनवाये हुए नए घरमें भी वै.श्रा.का. मार्ग. फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रोंमें तथा गुरु. शुक्रके अस्तमें भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मु खात्पृष्ठेदिग्भागः शुभदो भवेत्,

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनुः मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	म. कु. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनुः
खातदिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्र सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि.
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों उ.रो.ध.श.म.पूषा.रे.पुष्य. [illegible] मीन या कर्कमें हो लग्नमें बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थानमें हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्नेय ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्नेय. २ जलाविक्रय
उत्तर २ अमृतं जल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	प. २ बहुजल	नैऋत्य २ अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति । तत्फलं-वारिवाहे वारिहानिः । गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द.नै.प.वा. उ.ई. मध्य, वारिवाह । वाहे चामृत संज्ञकम् ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान म.भ.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.अश्ले जलाभाव.	आग्नेय म.पूफा.उफा. सुजलं
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजलं	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजलं	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे,
माघादि पञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा. अनु.श्र.ध. श. उत्तरा. ३. रे. एषु भेषु, कुजशनिवर्जितवारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्र योः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु । लग्नात् १।४।७।१०।६।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः, पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्–सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्रा द्व्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्ति मुहूर्तः–अ. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ॥

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वारकी संख्या जोड़कर एकऔर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना । यदि पूरा भाग लगजाय (०शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्निका वास पृथ्वीपर सुखकारक होता है, शेष १ बचनेपर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है । तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिये ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा । नित्येनैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः । दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्तिकर्मे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे । शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रचिता प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना । फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना ।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पू.-फा. वि. अनु. मूल पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है ।

हलप्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि, एषु. भेषु, रिक्तामावष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	६	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवेरौद्रा(आर्द्रा)द्यपादस्थे भूमेःसंजायते रजः। तस्माद्दिनत्रयंतत्तु बीजवापे परित्यजेत् ।

नवान्नभक्षण मुहूर्त—मू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विषघटी रहित नक्षत्रोंमें शुभ है । नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्रको छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थ लाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक, फिर दो-दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्र-गणना क्रम शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिने (नौमी चौदस चौथ चौपाया, मंगल हानि करे घर आया) ।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहाराम्रादि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा. ३ रो. ह. पुष्य. अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । तृणकाष्ठादि संग्रह निषेध तृण कष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चंद्रमा में नहीं करना चाहिए ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि.,हस्त-चित्रा.,अनु. पुन.पुष्य. ज्ये. एव रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है ।

औषध मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा.पुन. श्र. ध. श. मूल. जन्म-नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।६।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है ।

यात्रा मुहूर्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम । रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रामें निन्द्य हैं । आत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों में आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४।११।४०। १४।१४।१४ घटियां यात्रामें त्याज्य करें । कृष्णपक्षकी प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है । जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांशमें यात्रा कदापि न करें ।

चन्द्रवास

मेष, सिंह, धनुः का चन्द्र पूर्व में । वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में । मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिममें । कर्क, वृश्चिक, मीनका चन्द्र उत्तर दिशा में । सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः । पृष्ठे मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ।
सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥

अथ योगिनीवास चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा
चंद्र	रवि	गुरु	बुध	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार

कालराहु चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै०	प०	वा०	उ०	दिशा
श,	शु.	गु.	बुध	मं०	चं०	र०	वार

संमुखकालवासवर्ज्यम्

समय	शूल
प्रातःकाल	पूर्व दिशा
माध्याह्न	दक्षिण
संध्याकाल	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः

र०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	वा.
घृत	पय	गुड	पुष्प	दधि	घृत	तिल	मत्स्य
ताम्बूल	चन्दन	मृद्	तिल	दधि	यव	माषान्न	धारणा

एकराशिस्थ चन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१७	३२	५१	६६	८६	१०१	१३१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि—जन्म लग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त सिंहस्थ गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें ।

लग्न शुद्धि—शुभग्रह १।४।५।७।६।१०वें, पापग्रह ३।६।१०।११वें श्रेष्ठ हैं । चन्द्रमा १।६।८।१२वें, लग्नेश ६।७।८।१२वें, शनि १०वें शुक्र ७ वें नेष्ट हैं ।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोश्री	ति.अ.	वस्तुनि

अथ नक्षत्रशूलम्

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
ज्ये.	पूभा.	रो.	उफा.	भानि

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः—१। २। ३। ५। ७।१०।११।१३ तिथि । चं.बु.गु.शु.श. वार । अ. रो, मृ.पुष्य.उ. ३. ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र. रे.ध. श. नक्षत्र । ३।५।६।८।६।११।१२ लग्न, ४।८ शुद्ध हों १।४।७।१०।५।६ स्थानमें शुभग्रह हों, ३।६।११वें में पापग्रह हो । शुभ नवांश में प्रवेश करें ।

यात्रायां शुभशकुनानि—विप्र २, अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि,

मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाण-समये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति । अशुभशकुनानि—वन्ध्यास्त्री, चर्म, ईन्धन, संन्यासी, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, रोदन, शत्रु, महिषयुद्ध, छिक्का, दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा भवन्ति ।

सर्वाङ्कसिद्धि योग—शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना । शेष प्रथन अंकमें शून्य हो तो यात्रामें क्लेश, मध्यमें शून्य हो तो धनक्षति और अन्तमें शून्य हो तो महाकष्ट होता है । सर्वत्र अंक आनेसे सौख्य जय लाभ हो ।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् । विप्रादि क्रमतः स्वर्णसर्वधान्याम्बरादिकम् । (सर्वे स्वप्रियवस्तु वा) । गमनदिशि नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विप्रादिभिः यज्ञोपवीतादिना प्रस्थानं कार्यम् । तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्यजन ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या । परतोऽन्यमुहूर्तस्यावश्यकता बोध्या । प्रस्थान-कर्तु र्नियमाः—त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म्म च । तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्यजेत् ॥ १ ॥ कटुतैलगुडक्षारं पक्व मासाशनं तथा । भुक्त्वा यो यात्यसौ मोहाद् व्याधितः स निवर्तते ॥

उ (उद्वेग) च (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)

इस चतुर्घटिका मुहूर्तमें ३।।। घटीकी जगह दिनमान व रात्रिमानके अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं ।

कन्यावरणगृहप्रवेशाः—इषि-भवन-विवाहेऽआनने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादि कृत्ये । पण्टविधिक्रमिषेके जन्मबन्धः प्रशस्त इति वदति वराहः क्षौर-यात्रां विहाय ॥ गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने । पाणिग्रहे प्रयाणे च कन्यो दाहकर्मणः शुभः ॥

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त								रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त						
सू	चं	मं	बु,	गु	शु	श	घटी	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	३।।।	अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	३।।।	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३।।।	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
का	उ	अ	र	ला	शु	चं	३।।।	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३।।।	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
उ	ला	शु	चं	का	उ	अ	३।।।	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
रो	अ	रो	ला	शु	चं	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

प्रश्न-विचारः

कार्यसिद्धिज्ञानम्—लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ । मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥ १ ॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यम्भवत्यन्यथा सन्देहः ।

प्रश्नतो वर्षशुभाशुभविचारः—तिथिवारर्क्षयोगानां युतिः संवत्सरान्विता । प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहृता शेषकैः फलम् ॥ १ ॥ एकेन क्लेश, समता द्वाभ्यां, त्रितये महात्सुखम् ।

पथिकागमन विचारः—

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम् । अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥
एकेन गमनं भवति द्वाभ्यां मार्ग उच्यते । तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमागतः ॥
पञ्चमे पुनरावृत्ति षष्ठे व्याधि समन्वितः । सप्तमे शून्यतावृत्ति अष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥

प्रश्नाक्षरों को द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें । जो शेष बचे उनका फल इस प्रकार बताए—१. आनेकी सोच रहा है । २. चल पड़ा है । ३. रास्तेमें है । ४. शीघ्र आ जाएगा । ५. ठहरके आएगा । ६. अस्वस्थ है । ७. नहीं आएगा । ८. मृत्यु या कष्टमें है ।

देशान्तर से पत्र आयेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशिका हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थानमें शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो पत्र जल्दी आयेगा, मार्गमें है । स्थिर लग्नमें विलम्बसे पत्र मिले । प्रश्न लग्नमें चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत होतो उत्तर नहीं मिलेगा ।

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तत्कालीन तिथिकी संख्याको ४ से गुणाकर, १ जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योगकी संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आवे उसको तीनसे गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें । १ शेष बचे तो विलम्बसे पुत्र सन्तान होगा, चिरंजीवताके लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए । शेष २ बचेतो पूर्व जन्मके पापके कारण सन्तानसुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराणका नवाह सुनने तथा सन्तानगोपालके सवालक्ष जपसे सम्भव है कि ईश्वर कृपा करें । ३ शेष रहें तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीबकी कन्याकी विवाह दें, या उस विवाहमें गुप्त दानसे मदद करें, ऐसा करनेमें होने वाले पुत्रका पूर्ण सुख होगा । ४।१।० शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी ।

विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्नसे २।३।६।७।१०।११ स्थानोंमें चन्द्रमाको बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा । यदि चन्द्रमाके साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहोंकी दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा । यदि लग्नमें ३।५।६।७।११ स्थानमें चन्द्रमाको सूर्य, बुध बृहस्पति इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तममें और सप्तमेश लग्नमें हो, अथवा २।४।७ इन राशियोंमें से किसी एक राशिमें चन्द्रमा या शुक्र होतो अवश्य विवाह हो जायेगा ।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंकके भीतर कोई एक अंक मुखसे कहलायें या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध हो । यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो । ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।९।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि हो, यह फल कहे ।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिननक्षत्र और जन्मनक्षत्र या नामनक्षत्र रोगत्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ी पर होंतो रोगी की मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्धके समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्—तृतीय, नवम, द्वादश, उक्त स्थान में प्रश्न लग्नसे कोई पापग्रह हो तो विष, जल, शस्त्रसे मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहोंके साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थानमें राहु हो तो प्रेतदोष, बृहस्पति के होने से पितरदोष, चन्द्रमाके होने से जलदेवीका दोष कहे। सूर्यके होनेसे देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादशमें सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहें। शनिके होनेसे अपने गोत्रकी देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थानमें भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्रके होनेसे जलदेवीका दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं हैं अथवा जो ईश्वरसे विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोष सूचक ग्रह अपनी राशी तथा उच्च में हो, बलवान् हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्रमें हो तो उक्त दोष असाध्य होते हैं। बलवान् पाप ग्रह केन्द्रमें हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानोंमें हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्रस्तुति पूजन आदिसे उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेतकी बाधा जानना। "उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्राश्च (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युग (४), सप्त (७), दशा (१०) अर्काः (१२) नात्र जीवति।"

अथ गर्भिण्याः पुत्रादि ज्ञानम्—तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः ॥१॥ तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्रकी अश्विनी से करना।

आयुर्निर्णयः—जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्रसे आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्नसे प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावे- अल्पायुः। १।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में लग्नेश अष्टमेश तथा दशमेश हो तो दीर्घायु होती है। २।३।४।५।८।११ इन स्थानोंमें [illegible] हो तो मध्यमायु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्यका मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायुः, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तुज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक् संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तदा ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो. पुष्य. उ. फा. वि. पूषा ध. रे.	मृ. आश्ले. ह.अनु.उषा. श. अ.	आ. म.चि. ज्ये.अभि. पूभा.भ.	पुन.पू.फा. स्वा.मू.श्र. उभा.कृ.	नक्षत्राणि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवणं	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात्)
९ भ्रमति बनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ गृहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न—यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घरमें हो तो हार जायेगा। यदि लग्न और सप्तम स्थानमें पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्नस्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थानमें दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते हैं। प्रश्नकालमें लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

देशान्तर=दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम—अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
अंकलेश्वर	२१।३६	७२।५९	—३८। ४	—१६।५२
अंजार	२३। ७	७०। १	—४६।५६	—२८।४४
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	—३७।२०	—१६। ८
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	—३८।१६	—१८। ४
अंबाला	३०।२३	७६।४९	—२२।५६	—१ ।४४
अंबिकापुर	२३।१०	८३।१५	+३ । ०	+२४।१२
अक्कलकोट	१७।२२	७६।१३	—२५। ८	—३ ।५६
अकोला	२०।४३	७७। ०	—२२। ०	—० ।४८
अगरतला	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	—३८।४८	—१७।३६
अचलपुर	२१।१९	७७।३०	—२०। ०	+१ ।१२
अजन्ता	२०।३६	७५।३६	—२७।३६	—६ ।२४
अजमेर	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०। ८
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	—१९।४०	+१ ।३२
अनन्तनाग	३३।४४	७५।१०	—२९।२०	—८ । ८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	—४५।१२	—२४। ०
अमरावती	२०।५६	७७।५१	—१८।३६	+२ ।३६
अमलनेर	२१। ३	७५। ३	—२९।४८	—८ ।३६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९ ।१६
अयोध्या	२६।४८	८२।१८	—१ । ४	+२०। ८
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२९।२८	—२ ।१६
अल्लेपि	९।३०	७६।२२	—२४।३२	—३ ।२०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९ ।५२
अलीबाग	१८।३९	७२।५२	—३८।३२	—१७।१०
अलीगढ़	२७।५४	७८। ४	—१७।४४	+३ ।२८
अहमदनगर	१९। ५	७४।४४	—३१। ४	—९ ।५२
अहमदाबाद	२३। २	७२।३७	—३९।३२	—१८।२०
आंबलीयासण	२३।१७	७२।२५	—४०।२०	—१९। ८
आगरा	२७।११	७८। २	—१७।५२	+३ ।२०
आणास	२२।३०	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
आजमगढ़	२६। ५	८३।१२	+२ ।४८	+२४। ०
आणंद	२२।३५	७२।५८	—३८। ८	—१६।५६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	—१५।५६	+५ ।१६
आदोनी	१५।३४	७७।१८	—२०।४८	+० ।२४
आबू	२४।३७	७२।४३	—३९। ८	—१७।३६
आमोद	२२। ०	७२।५३	—३८।२८	—१७।१६
आरकोणम्	१३। ६	७९।४२	—११।१६	+९ ।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
आर्वी	२०।५९	७८।१३	—१७। ८	+४ । ४
आर्द्रा	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६
ओखा	२२।२८	६९। ५	—५३।४०	—३२।२८
अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।२८
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	—१६।२८	+४ ।४४
अलीगंज भो.	२७।२०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०
अलीगंज ह.	२६।१२	८४। ८	+६ ।३२	+२७।४४
अमेठी	२६। ७	८१।४७	—२ ।५२	+१८।२०
अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०
अमरोहा	२८।५४	७८।३४	—१५।४४	+५ ।२८
आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२
इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	—३५।४०	—१४।२८
इचलकरंजी	१६।४१	७४।२८	—३२।१२	—११। ०
इटारसी	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२ ।१६
इटावा	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+७ ।२०
इटावा बीना	२४।१०	७८।११	—१३।१६	+३ ।५६
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	—२५।१२	+४ । ०
इन्दौर	२२।४३	७५।५३	—२६।२८	+५ ।१६
इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	—२ ।३२	+१२।४०
इलोरा	२०। ५	७५।१०	—२९।२०	—८ । ८
ईडर	२३।५०	७३। ०	—३८। ०	—१६।४८
उज्जैन	२३।११	७५।४३	—२७। ८	—५ ।५६
उधना	२१।१२	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
उमरखेड	१९।३६	७७।४१	—१९।१६	+१ ।५६
उटकमंड	११।१७	७६।४४	—२३। ४	—१ ।५२
उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४। ०
उन्नाव	२६।४८	८०।४३	—८ ।१७	+१२।५५
उम्बरगाँव	२०।१२	७२।४४	—३९। ४	—१७।५२
उमरकोट	[illegible]	७४।५०	—३०।४०	—९ ।२८
उमरेठ	२२।४२	७३। ८	—३७।२८	—१६।१६
उल्हासनगर	१९।१३	७३। ७	—३७।३२	—१६।२०
उस्मानाबाद	१८। ८	७६। ५	—२१।४०	—० ।२८
[illegible]	२२।५५	७५। ७	—२९।३२	—८ ।२०
उडीपी	१३।२१	७४।४५	—३१। ०	—९ ।४८
ऊंझा	२३।४७	७२।२४	—४०।२४	—१९।१२
एकलिंगजी	२४।४२	७३।४३	—३५। ८	—१३।५६
एटा कासगंज	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५ ।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
एर्नाकुलम्	९।५९	७६।१८	—२४।४८	+३ ।३६
एरंडोल	२०।५५	७५।१९	—२८।४४	—७ ।३२
एल्लोर	१६।४३	८१। ५	—५ ।४०	+१५।३२
एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१ ।२४
ओरछा	२५।२१	७८।३८	—१५।२८	+५ ।४४
औरंगाबाद	१९।५९	७५।१९	—२८।४४	—७ ।३२
औरंगा. बि.	२४।४५	८४।२५	+७ ।४०	+२८।५२
कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४	—१३।१२
कांडला	२३। १	७०।१४	—४९। ४	—२७।५२
कड़पा	१४।२८	७८।४९	—१४।४४	+६ ।२८
कडी	२३।१८	७२।२०	—४०।४०	—१९।२८
कडोद	२१।१३	७३।१४	—३७। ४	—१५।५२
कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८
कटनी	२३।५०	८०।२३	—८ ।२८	+१२।४८
कटोसन	२३।२८	७२।१४	—४१। ४	—१९।५२
कण्णूर	११।५१	७५।२१	—२८।३६	—७ ।२४
कन्याकुमारी	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+१ ।३६
कन्नौज	२७। १	७९।५६	—१०।१६	+१०।५६
कपडवंज	२३। २	७३। ५	—३७।४०	—१६।२८
कपूरथला	३१।२२	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०
करजन	१८।५५	७३।२०	—३६।४०	—१५।२२
करमाला	१८।२४	७५।१२	—२९।१२	—८ । ०
कर्नूल	१५।५०	७८। ३	—१७।४८	+३ ।२४
करनाल	२९।४२	७७। २	—२१।५२	—० ।४०
करमसद	२२।३४	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
करीमनगर	१८।२८	७९। ६	—१३।३६	+७ ।३६
कलकत्ता	२२।३५	८८।२३	+२३।३२	+४४।४४
कलोल	२३।१४	७२।२८	—४०। ८	—१८।५६
कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	—११। ८	+१०। ४
काकीनाडा	१६।५९	८२।१३	—१ । ८	+२०। ४
कानपुर	२६।२७	८०।२१	—८ ।३६	+१२।३६
काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।२०
कानानोर	११।५२	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८
कामठी	२१।१०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०
कारंजा	२०।२९	७७।२९	—२०। ४	+१ । ८
कारवार	१४।४८	७४। ८	—३३।२८	—१२।१६
कालपी	२६। ८	७९।४५	—११। ०	+१०।१२

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
कालका	३०।४७	७६।५७	—२२।१२	—१ । ०
कालीकट	११।१५	७५।४५	—२७। ०	—५ ।४८
कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
कासगंज	२७।४८	७८।३९	—१५।२४	+५ ।४८
किशनगंज	२६। ७	८७।५८	+२१।५२	+४३। ४
किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	—४७।२८	—२६।१६
किशनगढ़ ब.	२६।३५	७४।५१	—३०।३६	—९ ।२४
किशनगढ़ ज.	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०
कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	—१२।२८	+८ ।४४
कुमठा	१४।२५	७४।२८	—३२।२४	—११।१२
कुर्डुवाड़ी	१८। ५	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८
कुशलगढ़	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ०
कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
कृष्णा	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+० ।२८
केशरीयाजी	२४। ५	७३।४०	—३५।२०	—१४। ८
कोचीन	९।५८	७६।१५	—२५। ०	—३ ।४८
कोटा	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५ ।२८
कोटायम	९। ५	७६।३२	—२३।५२	—२ ।४०
कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	—२०। ८	+१ । ४
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	—३३। ८	—११।५६
कोन्नूर	११।२०	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
क्वीलोन	८।५३	७६।३८	—२३।२८	—२ ।१६
कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०। ८
कांगड़ा	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	—३ ।३६
कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	—४३।३६	—२२।२४
काबुल अफ.	३४।२७	६९। ६	—५३।३६	—३२।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+२ । ०	+२३।१२
काण्डी लंका	७।२०	८०।४५	—७ । ०	+१४।१२
कायमगंज	२७।३५	७९।२१	—१२।३६	+८ ।३६
किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५ ।३६
कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
कैम्बलपुर पा.	३३।४८	७२।१८	—४०।४८	—१९।३६
कोलम्बो	६।५६	७९।५६	—१०।१६	+१०।५६
खंडवा	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३ ।२८
खंडाला	१८।४५	७३।२२	—३६।३२	—१५।२०
खंभात	२२।१९	७२।३६	—३९।३६	—१८।२४
खंभालिया	२२।१२	६९।४०	—५१।२०	—३०। ८

देशान्तर=दिल्ली से पूर्व + पश्चिम — अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश प्रं. कं.	पूर्व रेखांश प्रं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.	देशान्तर मि. सैं.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश प्रं. कं.	पूर्व रेखांश प्रं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.	देशान्तर मि. सैं.	नाम नगर	उत्तर अक्षांश प्रं. कं.	पूर्व रेखांश प्रं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.	देशान्तर मि. सैं.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश प्रं. कं.	पूर्व रेखांश प्रं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.	देशान्तर मि. सैं.
खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	+१९।१६	+४०।२८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	—२६।२४	पानीपत	२९।२३	७६।५८	—२२।०८	— ०।५६	मैसूर स्टेट	१२।१९	७६।४०	—२३।२०	— २। ८
खारापोड़ा	२३।१०	७१।४२	—४३।१२	—२२। ०	झालावाड़	२४।३६	७४।०९	—३३।२४	—१२।१२	पुरणिया	२५।४९	८७।३१	+२०। ४	+४१।१६	मुंगेर	२५।२३	८६।३०	+१६। ०	+३७।१२
खुर्जा	२८।१४	७७।५१	—१८।३६	+ २।३६	झांसी	२५।३०	७८।३६	—१५।३६	+ ५।३६	पूना	१८।३०	७३।५२	—३४।३२	—१३।२०	रतलाम	२३।१९	७५।०३	—२९।४८	— ८।३६
खेडब्रह्मा	२४। ३	७३। ४	—३७।४४	—१८।३२	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२	— ४। ०	पोरबन्दर	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।२४	रत्नागिरी	१७।००	७३।१९	—३६।४४	—१५।३२
खेड़ा	२२।४५	७२।४०	—३७।२०	—१८। ८	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०	— ०।४८	फतेहपुर	२७।०६	७७।४०	—१९।२०	+ १।५२	रांची, रामगढ़	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३२।३२
खेरालु	२३।५४	७२।३८	—३७।२८	—१८।१६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।२८	फर्रुखाबाद	२७।०३	७९।३७	—११।३२	+ ९।४०	रामपुर उ.प्र	२८।४७	७९।०२	—१३।५२	+ ७।२०
खैरपुर	२७।२८	६८।४७	—५४।५२	—३३।४०	डलहौजी	३२।३०	७५।५४	—२६।२४	— ५।१२	फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	—३१।००	— ९।४२	रामेश्वर	९।१७	७९।१८	—१२।४८	+ ८।२४
गया	२४।४८	८५।०१	+१०।०४	+३१।१६	डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७। ०	+ ४।१२	फिरोजपुर	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।२४	रायबरेली	२६।१४	८१।१३	— ५।०८	+१६। ४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+ ३।५२	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।५६	फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	—०१।२८	+१९।४४	राजमहेन्द्री	१७। ५	८१।४८	—०२।४८	+१८।२४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+ ४।२२	+२५।३४	डूंगरपुर राज.	२३।५०	७३।४३	—३५। ८	—१३।५६	बड़ौदा	२२।१८	७३।१३	—३७।०८	—१५।५६	रायपुर-म.प्र.	२१।१५	८१।३८	—०३।२८	+१७।४४
गिद्धोर	२४।५१	८६। ७	+१४।२८	+३५।४०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८	—१८।५६	बम्बई	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	— २।१६
गिलगित	३५।५४	७४।२२	—३२।३३	—११।२१	त्रिवेन्द्रम	८।३०	७६।५७	—२२।१२	— १। ०	बरेली	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+ ८।४२	रोपड-पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४।००	— २।४८
गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—१८।१२	— ७। ०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४२	—१५।१२	+ ६। ०	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	—१२।००	+ ९।१२	लखनऊ	२६।५१	८०।५६	— ६।२०	+१४।५२
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+ ३।३६	+२४।४८	दरभंगा	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।५२	बर्धमान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	+४२।४०	लुधियाना	३०।५६	७५।५२	—२६।३२	— ५।२०
गोण्डा	२७।१०	८१।५७	— २।१२	+१९। ०	द्वारका	२२।१९	६८।५७	—५४।१२	—४२। ०	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	—१८।३६	+ २।३६	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४८
गोवा	१५।२५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	दारजिलिंग	२७।०३	८८।१६	+२३। ४	+४४।१६	बीजापुर	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	— ६। ०	शाहजहांपुर	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+११।००
गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	—५८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१७	—२०।५२	०। ०	बीकानेर	२८।०१	७३।१९	—३६।४४	—१५।३२	शिमला	३१।०६	७७।१०	—२१।२०	— ०। ८
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।००	देहरादून	३०।१९	७८।०४	—१७।४४	+ ३।२८	बंगलौर	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+ १।३२	श्रीनगर का.	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	— ९।२४
चित्रकूट	२५।१५	८०।२८	— ८। ८	—१३। ४	धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६	बांदा उ.प्र.	२५।२८	८०।१२	—०९।१२	+१२। ०	सवाईमाधोपुर	२६।००	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+५८।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+ २।४४	बांसवाड़ा	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+ ४।५६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+ ५।२४
चम्बा	३२।२५	७६।१०	—२५।२०	— ४। ८	धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	— ८। ०	बिलासपुर हि.	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	— ६।२८	सतारा	१७।४२	७४।००	—३४।००	—१२।४८
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	— १।२०	धूलिया	२०।५८	७४।४२	—३१।१२	—१०। ०	बिलासपुर म.	२२।०५	८२।१०	— १।२०	+१९।५२	सागर म.प्र.	२३।५०	७८।४५	—१५।००	+ ६।१२
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+ ९।३६	ध्रांगध्रा	२३।००	७१।२८	—४४।०८	—२२।५६	भड़ोंच	२१।४१	७३।००	—३८।००	—१६।४८	सूरत	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८
छपरा बिहार	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	+२९।५६	नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	—३६।५०	—१५।३८	भटिन्डा	३०।११	७४।५७	—३०।१२	— ९। ०	सोलन	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	— ०।१२
छिबरा मऊ	२७।१८	७९।२९	—१२। ४	+ ९। ८	नडियाद	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२०	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०।००	— ८।४८	सोलापुर	१७।४०	७५।४८	—२६।४८	— ५।३६
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०	+३४।३२	नाथद्वारा	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।२६	भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४८	सोमनाथ	२१। १	७०।२६	—४८।१६	—२७। ४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५८	—१०।०८	+११। ४	नाभा	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	— ४। ८	भोपाल	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।४४	सिरोही	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।२४
जयपुर	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	— ५।२२	नागपुर	२१।०९	७९।०६	—१३।३६	+ ७।३६	भूटान	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	+५१।१२	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	—१७। ८	+ ४। ४
जलपाई गुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	+४६।१६	नासिक	२०।००	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	भुज	२३।१५	६९।४८	—५०।४८	—२९।३६	हिसार	२९।१४	७५।४४	—२७।०८	— ५।३६
जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	— ९।१२	नैनीताल	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+ ९। ०	मथुरा	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।५६	हाथरस	२७।३६	७८।०६	—१७।३६	+ ३।३६
जसवन्त नगर	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+ ६।५२	नीमच	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	— ९।२४	मद्रास	१३।०६	८०।१५	—०९।००	+१२।१२	हैदराबाद	१७।२७	७८।३०	—१६।००	+ ५।१२
जालन्धर	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	— ६।२८	पटना	२५।३५	८५।१५	+११।००	+३२।१२	मण्डी (हि.प्र)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	— ०।५६	होशियारपुर	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	— ५। ८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	—४९।४०	—२८।२२	पठानकोट	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	— ६। ०	मणिपुर स्टेट	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६७। ४	होशंगाबाद	२२।४६	७७।४३	—१९।०८	+ २। ४
जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	—४६।२४	—२५।१२	पटियाला	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	— ३। ८	मालेगांव ना.	२०।३१	७४।३०	—३२। ०	—१०।४८	हथुवा	२६।१२	८४।०५	+ ६।२०	+२७।३२
जोधपुर	२६।१८	७३।०२	—३७।५२	—१६।४०	प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	— [illegible]	+ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	हरदोई	२७।२३	८०।१०	+ ६।२०	+३०।३२
जौनपुर	२५।४६	८२।४३	+००।५२	+२२। ४	पाटन (राज.)	२७।२२	७३।५३	—३४।२८	—१३।२६	मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+११।४२	+३२।५४	हाजीपुर	२५।३५	८३।११	+ १।४४	+२२।५६
जींद	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।२४	मेरठ	२९।०१	७७।४५	—१९।००	+ २।१२	हजारीबाग	२४। ०	८५।२३	+११।३२	+३२।४४

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण–

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो उस नगरके आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लेवे, वह मिनट+पूर्व के हो तो इस पंचांग के सूर्योदय हीन करें और मिनट– पश्चिम के हो तो धन करें, अर्थात् जोड़े। अक्षांशादि सारिणी में देशान्तर मिनट से पहले धन+चिन्ह हों तो ऋण करें, ऋण–चिन्ह हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा, पश्चात् इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति– सारिणी से रविक्रान्ति लेवे। रविक्रान्ति और इष्टनगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरांतर मिनट लें, वह धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हो तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टैं. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें, वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के, घंटा मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी– पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से है। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें, और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों–इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें, तो अपने– अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण–संवत् २०४४ भाद्रपद शु. ६ रविवार दिनांक ३० अगस्त १९८७ तदनुसार राष्ट्रीय मिति ८ भाद्रपद शाके १९०९ को वाराणसी (काशी) नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. २ है। वाराणसी (काशी) दिल्ली से २३ मिनट पूर्व में है (अक्षांशादि सारिणी में देखो) अतः यह २३ मिनट इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. २ में घटा दिये तो घं. ५ मि. ३९ हुए। यह वाराणसी का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब अगस्त मास की दैनिक ग्रह सूर्य क्रान्ति में देखें ता० ३० अगस्त को रवि क्रान्ति उत्तर + ९।१६ है। वाराणसी के अक्षांश २५।२० है (अक्षांशादि सारिणी देखो)। आगे चरान्तर सारिणी से २५ अक्षांश और-९ क्रांत्यंश के कोष्ठक में ३ मिनट है और १० क्रांत्यंश में भी ३ मिनट है, यहाँ क्रांत्यंश ९।१६ होने के कारण चरान्तर मिनट ३ प्राप्त हुए, यह मिनट धन आये। ऊपर के मध्यम सूर्योदय घं. ५ मि.-३९ में जोड़ दिये तो वाराणसी में स्टैं. टा. घं. ५ मि. ४२ यह स्पष्ट सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट ३ को ५ से गुणा करे तो १५ पल हुए। चरान्तर धन होने के कारण इस पंचांग में दिनमान ३१।४० में १५ पल हीन करने (विपरिणमन करने) से ३१।२५ यह वाराणसी का दिनमान हुआ। इसके घण्टा मिनट किए तो घं. १२ मि. ३४ हुए, यह ऊपर आये हुए वाराणसी सूर्योदय के स्पष्ट सूर्योदय घं. ५ मि. ४२ में जोड़ दिये तो घं. १८ मि. १६ यह वाराणसी का स्टैं. टा. से सूर्यास्त हुआ। यहाँ वाराणसी का स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय घं. ६ मि. २ से २० मिनट पहले है। इसके घटी पल किये तो ० घटी ५० पल हुए। यह घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से वाराणसी का स्पष्ट सूर्योदय पहले होने से, इस

क्रान्त्यंशाः	उत्तराक्षांशः चरान्तरमिनट चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर होतो धन																					क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर होतो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१३	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	२	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१४	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
अक्षांशाः	यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																					क्रांति के विपरीत समझें							

पंचांग के तिथ्यादि की घटी पलों में जोड़ देने से भाद्रपद शु-६ रविवार को षष्ठी तिथि घट्यादि ४२।५७ स्वाती नक्षत्र १९।४२, यह वाराणसी के स्पष्ट सूर्योदय से तिथि नक्षत्र स्पष्ट हुए। इसी प्रकार योग कारण की घटी पल जोड़ कर बना लें। इसी प्रक्रिया से संसार के किसी भी नगर का सूक्ष्म पंचांग "श्री विश्व विजय पंचांग" द्वारा बन सकता है। विशेष बात यह है कि श्री विश्व विजय पंचांग में तिथि, नक्षत्र, योग, करण,भद्रा, चन्द्रमा एवं ग्रहचार आदि के घण्टा मिनट दिये है। यहें भारत में सर्वत्र समान है–यह इसकी अनुपम विशेषता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

जैसे ता० ३० अगस्त १९८७ को वाराणसी (काशी) का चरान्तर लाना है-तो दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रवि क्रांति + ९।१६ है और काशी के अक्षांश २५।२० है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्त्यंश की है। और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है। क्रांत्यंश ९।१६ तथा अक्षांश २५।२० में देखो तो अनुपात से दो में लाइनों के सम्पात में ३ मिनट प्राप्त हुए। अब यह क्राति उत्तर +होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाइम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर ऋण धन चिह्नानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाइम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घंटा. मि०
न्यूजीलंड (क)	+६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकेन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+४।३०
जापान कोरिया	+३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकेनहिल प्रांत उत्तर टेरोटोरी (आस्ट्रेलिया)	+४।०
सायबेरिया, रेखांश ९७।३०से १११।३० पूर्व तक तथा चीन हाँगकांग	+२।३०
सारावान (ख)	+२।०
भारत (इण्डिया)	०।०
यूरोपियन (रसिया)	—२।३०
यूगेण्डा केनिया कालोनी	—३।०
पूर्वीय यूरोप फिनलंड (ग) तथा यूरोप कण्ट्री पूर्वीय विभाग तथा यूरोप जोन	—३।३०
पेलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रिका मध्ययूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रीया, हंगरी, स्विटजरलेंड, युगोस्लाविया अलबानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसलीमाल्टा ग्रीनवीच (घ) ब्रिटिश द्वीप	-४।३०
पश्चिमी यूरोप (ङ)	—५।३०
हालैण्ड	—५।१०
आइसलैण्ड	—६।३०
पूर्वीय ब्राजील	—८।३०
युरुगुवा	—६।०
न्यूफाउण्डलेण्ड (ब)	—६।१
अटलांटिक केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	—६।०
पूर्वीय केनेडा ६८से८६रेखांशपूर्वीयU. स्टेट्स चील (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	-१०।३०
मध्य केनेडा ८९से१०३ रेखांश पर मध्य U.S.A. स्टेट्स ब्रिटिश होण्डर्स (ज)	-११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	-१२।३०
(पॅसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया नेवडा आरगिन, वाशिंगटन	-१३।३०

टिप्पणी (क) अक्तूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक + घं० ६ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता० १४ से दिसम्बर ता० १४ तक + घं० २ मि० २० का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता० ३० तक अन्तर घं० २ मि० ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता० २२ से अक्तूबर ता० ७ तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और बेल्जियम के लिए ता० १९ अप्रैल से ता० ४ अक्तूबर तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्तूबर के पहले रविवार तक घं० ८ मि० १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता० १ से ३१ मार्च तक—घं० ९ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ज) अक्तूबर ता० १ से फरवरी ता० १४ तक घं० ११ मि० ०का अन्तर रहता है।

इसप्रकार उपरोक्तकोष्ठकको काम में लाते समय, समयका अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर उपयोग करें।

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	+४	+१४	+१२	+३	—३	—३	+३	+६	०	—९	—१६	—११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	—१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	—१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	—१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	—१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	—३	३	+३	६	१	—९	१६	१२	३
३१	+१४		+४		—३		+६	+१		—१६	—१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यमकाल और स्पष्ट काल—स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाइम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाइम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारिणी पृ० ९५, ९६, ९७ में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं वे मिनट ऋण हों तो घटाने और धन हों तो जोड़ने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाइम) होगा। इस स्थानीय मध्यम टाइम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख का वेलांतर लेकर ऋण हों तो जोड़ने और + धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाइम) का मान होगा।

समय-भेद विवरण—आजकल प्रायः सर्वसाधारण ज्योतिषियों को "समय भेद" का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचाङ्ग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे एक अपराध है। ज्योतिषियोंको चाहिए कि पहले इस भेदको भलीभांति समझकर तदनन्तर जन्मपत्र आदि बनावें। और एक बातका स्मरण रखना चाहिए

मानका जन्म टाइम बनाकर इष्ट शोधन करना चाहिए। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टेण्डर्ड लेकर दिनार्धसे या दिनमाससे इष्ट बना लिया करते हैं, यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमानसे इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमानका टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकारने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिए एक स्थान के मध्यम टाइम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में ... टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व, भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था, तदनन्तर ग्रीनिच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२:३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टेण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है, उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों से आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण धन चिन्ह हैं, जिनमें ऋण के चिन्ह हो वह नगर स्टेण्डर्ड स्थान के पश्चिम में समझे और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

"वर्षफल"—प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते हैं। परन्तु आधुनिक विज्ञानवेताओं ने सूक्ष्म यन्त्रों के वेधद्वारा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान ८½ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ गताब्द) में ही नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक गताब्द में अधिक अन्तर पड़ने से प्रायः लग्न भी बदल जाता है। पुना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिर्विज्ञा वेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक मिलता है और कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल घटित होता है। यहां विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की दोनों वर्ष प्रवेश सारिणियां दे रहे हैं—

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वेधसिद्ध नवीनवर्षमानानुसारेण वर्षप्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
बार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
बार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
बार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
बार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेशसारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
बार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
बार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
बार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
बार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मुद्दादशा विधिः

जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ के २ घटा दें, ९ सेभागकरने पर जो शेष बचेवह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ कर ३ और जोड़ें, ८ से शेष करें तोमंगलादि योगिनीदशा होती है।

मुद्दादशाक्रम

श.	ग्रह	मा.	दि.
१	सूर्य	०	१८
२	चन्द्र	१	०
३	मं.	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांशा २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ४४	२ ५१	२ ५८	३ ५	३ १३	३ २०	३ २९	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५६	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३२	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ५	५ १३	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ १०	६ १९	६ २७	६ [illegible]
वृषभ १	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १६	७ २५	७ ३३	७ ४१	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २१	९ ३१	९ ४१	९ ५१	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११	११ [illegible]
मिथुन २	११ ३१	११ ४१	११ ५१	१२ १	१२ ११	१२ २१	१२ ३१	१२ ४१	१२ ५२	१३ ४	१३ १५	१३ २७	१३ ३८	१३ ५०	१४ १	१४ १३	१४ २४	१४ ३६	१४ ४७	१४ ५९	१५ १०	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५६	१६ ७	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ [illegible]
कर्क ३	१७ ५	१७ १६	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ०	१९ १२	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५९	२० १०	२० २२	२० ३४	२० ४५	२० ५७	२१ ९	२१ २०	२१ ३२	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३०	२२ ४२
सिंह ४	२२ ५४	२३ ६	२३ १७	२३ २९	२३ ४१	२३ ५३	२४ ४	२४ १६	२४ २७	२४ ३९	२४ ५०	२५ २	२५ १३	२५ २५	२५ ३६	२५ ४८	२५ ५९	२६ ११	२६ २२	२६ ३४	२६ ४५	२६ ५७	२७ ८	२७ १९	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५४	२८ ५	२८ १७	२८ [illegible]
कन्या ५	२८ ४०	२८ ५१	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ९	३१ २०	३१ ३२	३१ ४३	३१ ५४	३२ ६	३२ १८	३२ २९	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १५	३३ २६	३३ ३८	३३ ४९	३४ १	३४ [illegible]
तुला ६	३४ २४	३४ ३५	३४ ४७	३४ ५८	३५ १०	३५ २१	३५ ३३	३५ ४४	३५ ५६	३६ ७	३६ १९	३६ ३१	३६ ४२	३६ ५३	३७ ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४१	३७ ५२	३८ ४	३८ १६	३८ २८	३८ ३९	३८ ५१	३९ ३	३९ १५	३९ २७	३९ ३८	३९ [illegible]	४० १
वृश्चिक ७	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४८	४१ ०	४१ १२	४१ २३	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५८	४२ ९	४२ २१	४२ ३२	४२ ४४	४२ ५५	४३ ७	४३ १८	४३ ३०	४३ ४१	४३ ५३	४४ ४	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ५०	४५ १	४५ [illegible]	४५ [illegible]	४५ ३६	४५ [illegible]
धनु ८	४५ ५९	४६ १०	४६ २२	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १९	४७ २९	४७ ३९	४७ ४९	४७ ५९	४८ ९	४८ १९	४८ २९	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ९	५० १९	५० २९	५० ३९	५० ४९	५० ५९
मकर ९	५१ ९	५१ १९	५१ २९	५१ ३९	५१ ४९	५१ ५९	५२ ९	५२ १९	५२ २७	५२ ३५	५२ ४४	५२ ५२	५३ ०	५३ ८	५३ १७	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ५०	५३ ५८	५४ ६	५४ १४	५४ २२	५४ ३०	५४ ३९	५४ ४७	५४ ५५	५५ ४	५५ १२	५५ २०
कुम्भ १०	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५५	५७ २	५७ ९	५७ १६	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५१	५७ [illegible]	५८ ६	५८ १३	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ [illegible]	५८ [illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन ११	५९ १०	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५५	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	२ ३०	२ ३७

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३ ३४	३ ४३	३ ५२	४ २	४ ११	४ २०	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ७	७ १७	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ [illegible]	८ ७	८ [illegible]
वृषभ १	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५९	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ [illegible]	१३ २३	१३ ३४
मिथुन २	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ १९	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ [illegible]	१८ ४६	१८ [illegible]
कर्क ३	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५१	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १३	२१ २३	२१ ३३	२१ ४३	२१ ५३	२२ ३	२२ १३	२२ २३	२२ ३३	२२ ४३	२२ ५२	२३ २	२३ १२	२३ २२	२३ ३२	२३ [illegible]	२३ ५२	२४ [illegible]
सिंह ४	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२७ ५९	२८ ८	२८ १८	२८ [illegible]	२८ ३७	२८ ४६
कन्या ५	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५६	३१ ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३१ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४७	३२ ५६	३३ ५	३३ १५	३३ २४
तुला ६	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३५ २८	३५ ३८	३५ ४८	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ७	३७ १७	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ [illegible]	३८ १७
वृश्चिक ७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३९ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४७	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४० ५२	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३	४३ ३४
धनु ८	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४१	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५७
मकर ९	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३३	५२ ४३	५२ ५३	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२	५४ २
कुम्भ १०	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ४	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७	५८ ४६
मीन ११	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५६	१ ५	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १५	३ २४

किसी भी स्थान के समय (घंटा मिनट) से सूक्ष्म लग्न और दशमभाव निकालने की रीति

स्थानीय लग्न सारिणियों की अपेक्षा साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट अधिक सूक्ष्मतर आता है, अतः गत वर्ष से इस पंचाङ्ग में हमने साम्पातिक काल से लग्नानयन विधि देनी प्रारम्भ की है। भारत के मूर्द्धन्य गणितज्ञ वयोवृद्ध विद्वान् सुप्रसिद्ध 'सन्देश-प्रत्यक्षपंचांग' (गुजराती) के प्रधान सम्पादक श्रद्धेय श्री हरिहर प्राणशंकर भट्टजी ने इस वर्ष 'श्रीविश्वविजयपंचांग' के लिए अपनी निर्माण की हुई यह विशेष लग्न-दशमसारणियां उदाहरण सहित प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान कर हिन्दी जगत् के ज्योतिष जिज्ञासू पाठकों का महदुपकार किया, एतदर्थ पंचाङ्ग परिवार श्री भट्टजी का आभारी है।

—सम्पादक]

यहां हम 'श्रीविश्वविजय पंचांग' से संसार के किसी भी स्थान के समय (घंटा मिनट) से लग्न और दशम भाव निकालने की पद्धति देते हैं।

इस गणित के तीन विभाग हैं (१) स्थानिक मध्यम समय निकालना (२) सांपातिकाल निकालना (३) सायन निरयण लग्न एवं दशम भाव निकालना। स्थानिक मध्यम समय सारे देश में एक प्रमाण समय से (स्टैण्डर्ड समय) चलता है, ग्रीनविच के समय से अधिकतर अन्तर से रखा जाता है। परन्तु किसी समय वह आधा घंटे के अन्तर से रखा जाता है। जैसे कि स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच समय से ५ ॥ घंटे आगे रहता है, तथा ग्रीनविच के पूर्व स्थानों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से आगे होता है और ग्रीनविच के पश्चिम स्थानों में स्टैण्डर्ड समय से पीछे होता है। अतः इन घंटों के अंतर को १५ से गुणा करने पर स्टैण्डर्ड समय के रेखांश आयेंगे। जैसेकि भारत के स्टैण्डर्ड समय के रेखांश ५ ॥×१५=८२ ॥ पूर्व हुआ, क्योंकि भारत का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से आगे है। अब इस स्टैण्डर्ड समय के रेखांशों का एवं इष्ट स्थान के रेखांशों का अंतर करके १५ से भाग दें, फिर स्टैण्डर्ड समय में जोड़ने अथवा घटाने से इष्ट स्थान का स्थानिक मध्यम समय आता है। इष्ट स्थल स्टैण्डर्ड समय के रेखांशों से पूर्व में हो तो यह अंतर जोड़ा जाता है, तथा स्टैण्डर्ड समय से पश्चिम में हो तो घटा दिया जाता है। उदाहरण (पहला) सन् १८९५ के मई महीने की १ तारीख का ५ घंटे ३० मिनट भारत का स्टैण्डर्ड समय रेखांश ७१ अंश, १५ कला पूर्व।

इस पद्धति के पहले अर्थात् जिस समय का लग्न और दशमभाव निकालना हो उस समय का सांपातिक काल निकालना पड़ता है। इसलिये सांपातिक काल निकालने की पद्धति लिखते हैं।

किसी भी समय का सांपातिक काल निकालने की पद्धति यह है कि सबसे पहले इष्ट समय का स्टैण्डर्ड समय घंटे मिनट में निकालो, फिर आये हुए स्टैण्डर्ड समय से स्थानिक समय (लोकल टाइम) निकालो। स्थानिक समय निकालने की पद्धति इस प्रकार है—जहां का लग्न और दशमभाव निकालना हो उस स्थान के रेखांशों में से ८२ ॥ अंश घंटा करके जो आवे उसको ४ से गुणा करने से जो आवे उस समय को स्टैण्डर्ड टाइम में जोड़ने अथवा घटाने से स्थानिक समय आता है। अब यहां पर जोड़ने और घटाने हेतु स्पष्टीकरण यह है कि अगर इष्ट स्थल के रेखांश ८२ ॥ अंश से ज्यादा हो तो जोड़ना चाहिये, एवं ८२ ॥ से कम होवे तो घटाना चाहिये। आगे इसका उदाहरण दिया है, जिससे पूर्ण स्पष्ट हो जायेगा।

समय संस्कारः—स्थानिक समय प्रति घंटा १० सैकण्ड के हिसाब से गिनने पर जो आवे उसको समय संस्कार कहते हैं। अब जन्म समय जो तारीख होवे उस तारीख का सारणी में को० १ दिया गया सांपातिककाल लो, परन्तु इतना ध्यान रखोकि तारीख रात्री के १२ बजे बदलती है। अब जो सांपातिकाल सारणी में से लिया तथा जो पहले स्थानिककाल आया उसे और समय संस्कार इन तीनों को जोड़ा, जो आवे वह इष्ट समय का सांपातिक काल होगा। इस सांपातिक काल से लग्नसारणी और दशम सारणी द्वारा लग्न और दशम भाव निकालो, तथा यह लग्न और दशम भाव हमने अयनांशा २३ और १५ कला क हिसाब से निरयण मानके दिये हैं। लग्न २३ उत्तर अक्षांशके हिसाब से दिया है, जो सारे गुजरात प्रांत के लिये चलेगा तथा यदि अयनांशा ज्यादा कमती होंगे तो निम्न संस्कार करने से इष्ट अयनांशा का लग्न आयेगा। इष्ट अयनांश और २३ अंश १५ कला का अन्तर निकालो। जो यदि अयनांशा २३ अंश और १५ कला से ज्यादा होवे तो इस अन्तर को सारणी के आंकड़ो में से घटाओ एवं अगर इष्ट अयनांशा २३ अंश १५ कला से कम होवे तो अंतर को लग्न सारणी से मिले आंकड़ों में जोड़ो।

उदाहरणः—पंचांग में अमुक दिन के लिए सांपातिक काल २३ घंटे ४४ मिनट २३ सैकेण्ड लिखा है तो उस दिन का ९ घंटे ५७ मिनट स्टै० समय का अहमादाबाद का लग्न और दशम भाव निकालो।

अहमदाबाद रेखांशा ७२ ॥ है। ८२ ॥—७२ ॥=१० आया १०×४=४० गि. यह स्टै. समय के ९ घंटे ५७ मिनट में से घटाया तो ९ घंटा १७ मि० यह अहमदाबद का स्थानिक समय आया, इसमें प्रति घंटा १० सैकेण्ड के हिसाब से १ मिनट ३३ से. समय संस्कार आया।

सारणी में इष्ट दिन का सांपातिक काल २३ घंटा ४४ मि. २६ सैं. दिया है। अतः इस सांपातिक काल स्थानिक काल और समय संस्कार इन तीनों को जोड़ने से जन्म समय का सांपातिक काल आयेगा। सारणी में दिया गया सांपातिकाल इस जोड़ में २४ घंटे से ज्यादा होने पर २४ घंटे घटा दिये गये हैं।

	घंटा मि. सैं.
	२३-४४-२६
स्थानिक समय	९-१७-०
समय संस्कार काल	०-१-३३
इष्ट समय का सांपातिककाल	९-२-५९

अब लग्न सारणी और दशम भाव सारणी में ९ घंटे २ मिनट ५९ सैं० से सांपातिक समय से लग्न और दशम भाव निकालने के लिये सिर्फ इतना ही रहता है कि सारणियों में देखने पर ९ घंटे ० मिनट सांपातिक समय का लग्न ६-१७-३७ दशम भाव ३-१९-१८ दिया गया है और ९ घंटे ५ मिनट सां० समय के लिए लग्न ६-१८-४३ दशम भाव ३-२०-३३ दिया है। अब ऊपर के त्रिराशि हिसाब से ९ घंटे २ मि. ५९ सैं. से लग्न ६-१८-१७ और दशम भाव ३-२०-२ आया। अयनांश २३ अंश २२ कला है। २३ अंश १५ कला से ७ कला ज्यादा है तो ऊपर आये हुए आंकड़ो में से ७ कला घटाने से लग्न ६ राशि १८ अंश १० कला तथा दशम भाव ३ राशि १९ अंश ५५ कला आया।

अक्षांश २१ अंश ३६ कला उत्तर का सायन तथा निरयण लग्न निकालो। अयनांश २२ अंश २४ कला है। (१) स्थानिक मध्यम समयः—इष्ट स्थान के रेखांश ७१ अंश १५ कला है, इसको भारत स्टैण्डर्ड समय के रेखांश ८२ अंश ३० कला में से घटाने पर ११ अंश

१५ कला आती है। इसको १५ से भाग देने पर ० घंटा १५ मिनट आता है, इसको स्टैण्डर्ड समय ५ घंटा ३० मिनट में से घटाने पर ४ घंटा ४५ मिनट आता है, यहां स्थानिक समय आया। यहां ८२ अंश ३० कला के लिए पहले समझाया गया है। तथा यहां पर इष्ट स्थल के रेखांश कम होने से इष्ट स्थल भारत स्टैण्डर्ड टाइम के रेखांश पश्चिम में होने से ४५ मिनट घटायें हैं। (२) सांपातिक कालः—सांपातिक काल निकालने के लिए कोष्ठक नं० १ इसके साथ आगे दिया है जिसमें ई० सन् के वर्ष महीनों की तारीख के लिए सांपातिक काल के आंकड़े हैं, इसका उपयोग इसप्रकार करना है। को. नं. १. में ई. सन् के वर्ष जनवरी ता० १ के घं. मि. (मध्यरात्रि) स्थानिक मध्यम समय का सांपातिक काल दिया है। परन्तु यह ग्रीनवीच का होने से इष्ट स्थल के रेखांशों के लिए इसमें निम्न परिवर्तन करना चाहिए। रेखांश का तीसरा भाग रेखांशों मेंसे घटा करके जो बचे उसके प्रति अंश प्रति सैकेण्ड के हिसाब से रे. पूर्व होवे तो घटाओ रे. पश्चिम होवे तो जोड़ो। उदाहरणः—ऊपर उदाहरण में रेखांश ७१ अंश १५ कला पूर्व का है, इसका तीसरा भाग २३ अंश ४५ कला इसको रे. ७१ अंश १५ क. में से घटाया तो ४७ अंश ३० क. आया, जो ४८ से. के लगभग है। उदाहरण का वर्ष १८९५ है इससे कोष्ठक नं. १ में सांपातिक काल ६ घंटा ४१ मि. ३८ से. दिया है, इसमें से ४८ से. घटाने से ई. सन् १८९५ के लिए सांपातिक काल ६ घं. ४० मि. ५० सै. आया। अंग्रेजी वर्षों में साधारणतया ३६५ दिन होते हैं, तथा ऐसे वर्षों को सामान्य वर्ष कहते हैं, परन्तु किसी वर्ष में फरवरी २९ दिन की होने से वर्ष के दिन ३६६ होते हैं, ऐसे वर्षों को प्लुत वर्ष कहते हैं। उदाहरण—जिस ई. सन् के आंकड़े को ४ से भाग देने पर शेष ० बचे तो वह प्लुत वर्ष मानना चाहिए। सैकड़े के वर्ष को ४०० से भाग देने पर ० बचे तो प्लुत वर्ष होता है। एवं ४ और ४०० से भाग देने पर शेष १-२-३-४ बचे तो सामान्य वर्ष कहा जाता है। जैसे कि ई. सन् १९६४ और २००० प्लुत वर्ष है। १९६५-१९९० सामान्य वर्ष है, तथा १९०० यह सै. का वर्ष है, एवं कोष्ठक नं. १ में १९०० का वर्ष आया हैं, तथा सांपातिक काल में सामान्य एवं प्लुत वर्ष का विचार करने हेतु नीचे दिया है इसलिए यह आगे की बात है। ऊपर बताई गई पद्धति के अनुसार सांपातिक काल निश्चित करने के बाद सामान्य एवं प्लुत वर्ष के अनुसार आंकड़ा लेना है। इसलिए जनवरी आदि महीनों के लिए सामने दो तरह के आंकड़े दिये हैं, एक सामान्य वर्ष के लिए, दूसरा प्लुत वर्ष के लिए। समय स्थानिक मध्यम काल लेना है। तदुपरान्त समय संस्कार के नाम से एक संस्कार जोड़ना है। यह संस्कार स्थानिक मध्यम काल प्रति १० सैकण्ड के हिसाब से लेना

इष्ट काल (१) वर्ष का आंकड़ा (२) महीने का आंकड़ा (३) तारीख का आंकड़ा (४) स्थानिक मध्यम काल और (५) समय संस्कार, इन पांचों आंकड़ों का जोड़ करनेसेइष्ट समय का सांपातिक काल आता है। यह जोड़ अगर २४ घंटों से ज्यादा हो तो २४ घंटे घटाना चाहिए।

उदाहरण—अपने उदाहरण (१) ई. सन् १८९५ के आंकड़े में से ४८ से. घटाने के बाद ६ घं. ४० मि. ५० से. रहता है। (२) वर्ष सामान्य वर्ष होने से कोष्ठक नं. (१) में मई महीने के लिए ७ घं. ५३ मि. ७ से. दिया है (३) तारीख १ के लिए कोष्ठक नं. १ में ० घंटे ० मि. ० से. दिया है। (४) स्थानिक मध्यम काल ४ घंटे ४५ मि. दिया है (५) इन ४ घंटे ४५ मि. का प्रति दश सैकेण्ड के हिसाब से ४८ से. समय संस्कार आता है। इन पाँचों आंकड़ों का जोड़ इस प्रकार है।

	घंटा	मिनट	सैंकण्ड
(१) वर्ष ई. सन् १८९५	६	४०	५०
(२) मई महीना	७	५३	७
(३) ता० १	०	०	०
(४) स्थानिक मध्यम् काल	४	४५	०
(५) समय संस्कार	०	०	४८
सांपातिक काल (जोड.)	१९	१९	४५

उत्तर अक्षांशों का सायन और निरयण लग्न

इसके लिए कोष्ठक नं. २ दियाहै। इससे सांपातिक काल २०-२० मिनट के अन्तर से और अक्षांश ५-५ के अन्तर से दिया गया तथा यह अंश और कला में दिया गया है। इससे त्रिराशि के हिसाब के अनुसार सांपातिक काल और अक्षांशों के लिए सायन लग्न निकालना चाहिए, तथा अंशों को ३० से भागकर राशि निकालना चाहिए।

उदाहरणः—अपने उदाहरण में सांपातिक काल घंटे १५-१५-४५ और अक्षांश २१-३६ है इसके लिए कोष्ठक नं. २ में आंकड़े मिलते हैं। अक्षांश २० अक्षांश २५ सांपातिक काल १९-०० अं. १९-१५ अंश २०-१७ स्टे. टा. धं. १९-२० अं. २५-३० अंश २६-३६ इससे सबसे पहले अक्षांश २१-४९ के लिए सां. का. ध. का आंकड़ा निकालिए इसके लिए अक्षांश २० के लिए १९-१५ और अक्षांश २५ के लिए २०-१७ दिया गया है। इसका अन्तर अंश १-२ अर्थात् ३०० कला हुई। अक्षांश २० और २१-३६ का अन्तर अंश १-३६अर्थात्९६ कला हुई, इसके अनुसार त्रिराशि इसप्रकार आता है, तथा अक्षांश की ३०० कलाए लग्न का अन्तर ६२ कला आवें तो अक्षांश की ९६ कला में लग्न का अन्तर कितना आयेगा ? इस त्रिराशि का उत्तर लगभग २० कला आता है, अतः अक्षांश १९-१५ में अंश ०-२० जोड़ने से अं. १९-३५ आये तथा सां. का. घं. १९-० और अंश २१-३६ सायन लग्न आया, इसप्रकार करने में सां. का. घं. १९-२० और अक्षांश २१-३६ का सायन लग्न अंश २५-५५ आया वह इसप्रकार है। अक्षांश अंश २१-३६ के सायन लग्न सां. का. घं. १९-० अं. १९-३६ सां. का. घं. १९-२० अंश २५-५५ इन दोनों लग्नों का अन्तर अंश ६-२० अर्थात् ३८० कला हैं और यह अन्तर २० मि.यानि १२०० सैकण्ड में होता है। अब घं. १९-२० में से सां. का. १९-१९-४५ घटाने से १५ से. आया। जिससे त्रिराशि जो १२०० सें. में ३८० कला का अन्तर पड़ता है वो १५ से. में कितना पड़े ? इस त्रिराशि का उत्तर करीब ६ कला आया। अतःअन्तर २५-५५ में से घटाने पर सां. का. घं. १९-१९-४५ का अक्षांश अं. २१-३६ का सायन लग्न ० राशि २५ अंश ५० कला आया। इसमें से अयनांश को घटाने पर निरयण लग्न ० राशि ३ अंश २६ कला आया। यह दोनों लग्न इष्ट समय और इष्ट अक्षांश का आया।

दक्षिण अक्षांशों का सायन और निरयण लग्न

दक्षिण अक्षांश को उत्तर अक्षांश मानकर पहले की पद्धति के अनुसार इष्ट समय का सांपातिक काल निकाल लेना चाहिए। इस प्रकार आये हुए सांपातिक काल में १२ घंटे जोड़ो एवं जो आये उसे सांपातिक काल समझकर उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी में से उत्तर

...के अनुसार लग्न निकालो, इससे जो लग्न आवे उसमें ६ राशि जोड़ देने से दक्षिण अक्षांशों का लग्न आ जायेगा। उदाहरण २– ई. सन् १८९५ के मई महीने की १ तारीख को ५ घंटा ३० मिनट भारत के स्टैण्डर्ड समय रेखांश १ अंश १५ कला पूर्व और अक्षांश २० दक्षिण का सायन और निरयण लग्न निकालो, अयनांश २२ अंश २४ कला है।

इस उदाहरण में इष्ट समय और रेखांश उदाहरण नं. १ के अनुसार ही है। अतः सां. का. १९– १९– ४५ आयेगा। इसमें १२ घंटे जोड़ दे तो ३१– १९– ४५ आया। इसमें से २४ घंटे घटा दो तो ७– १९– ४५ रहा, इसको सांपातिक काल समझकर दक्षिण अक्षांश २० के बजाय उत्तर अक्षांश २० मानकर कोष्ठक नं. २ में देखने से निम्न आंकड़ा मिलता है। सां. का. घं. ७– ० उत्तर २० अं. १९८– ४६। दोनों लग्नों का पहले की तरह सां. का. घं. ७– १९– ४५ का लग्न अंश १९८– ४२ अर्थात् राशि ६।१८।४२ आया, इसमें ६ राशि जोड़ने से ०– १८– ४२ आया। इसमें से अयनांश २२– २४ घटाने पर स्पष्ट लग्न ११– २६– १८ आया, यह दोनों लग्न दक्षिण अक्षांश २० के हैं।

उत्तर अथवा दक्षिण अक्षांशों का सायन और निरयण दशमभाव

दशमभाव निकालने के लिए अक्षांश उत्तर हो या दक्षिण होवे इससे दशमभाव में कुछ अन्तर नहीं पड़ता है।

सायन दशमभाव निकालने की पद्धति—

सांपातिक काल में से ६ घंटे घटाओ जो शेष बचे उसे सांपातिक काल समझकर लग्न निकालने की पद्धति द्वारा कोष्ठक नं. २, में शून्य अक्षांशों में देखने से सायन दशमभाव आता है। उदाहरण (३) ई. सन् १८९५ किसी महीने की तारीख को ५ घंटा ३० मिनट भारत स्टै. रेखांश ७५ अं. १५ काल पूर्व तथा जो भी अक्षांश उत्तर अथवा दक्षिण हों, वहां का सायन दशमभाव निकालो। अयनांश २२– २४ है।

यहां पर इष्ट समय और रेखांश उदाहरण नं. १ के अनुरूप होने से सां. का. १९– १९– ४५ आवेगा इसमें से ६ घंटे घटाओ तो १३– १९– ४५ आया इसको, सां. का. समझकर कोष्ठक नं. २ में शून्य अक्षांश देखने से जो आंकड़े आये वो इस प्रकार हैं।

सां. का. घं. १३– ० सायन लग्न अं. २८– ३– ४९ सां. का. घं. १३।२० सायन लग्न अं. २८८– २८ इन दोनों लग्नों द्वारा पहले की तरह सां. का. घं. १३– १९– ४५ के लिए लग्न अं. २८८– २४ अर्थात् ९ राशि १८ अंश २४ कला सायन दशमभाव हुआ। अयनांश २२– २४ घटाने पर ८– २६– २० स्पष्ट दशमभाव आया।

दशमभाव की दूसरी पद्धति

उत्तर अथवा दक्षिण किसी भी अक्षांश का सायन और निरयण दशमभावः—पीछे २३ अंश १५ कला अयनांश की किसी भी स्थान की निरयण दशम सारिणी सांपातिक काल के ५– ५ मिनट के अन्तर पर दी है, इससे किसी भी स्थान का सायन दशमभाव निकाला जा सकता है। इस पद्धति में सांपातिक काल में से ६ घंटा घटाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। परन्तु सांपातिक काल द्वारा सारणी में से दशमभाव निकाला जाता है। यदि सायनभाव निकालना हो तो सारणी में से लिये गए दशम में सारणी के अयनांश २३ अंश १५ कला को जोड़ देना चाहिए, तथा निरयण दशमभाव निकालना हो तो अयनांश एवं २३ अंश १५ कला का अन्तर निकाल कर उस अन्तर को सारणी में से आये हुए दशमभाव में जोड़े अथवा घटावे जैसे कि अगर अयनांश २३ अंश १५ कला से ज्यादा हो तो अयनांश अन्तर को घटाओ, और अगर अयनांश २३ अं. १५ क. से कम होवे तो जोड़ो।

उदाहरण:—दशमभाव का पहले का उदाहरण यहां लेते हैं। इसमें सांपातिक काल १९– १९– ४५ है (इसमें ६ घंटे घटाये) सांपातिक काल घंटा १९– १५ के लिए इस दशमभाव सारणी में दशम भाव रा. ८– २४– ३ और सांपातिक काल घं. १९– २० के लिये दशमभाव का अन्तर १ अं. १० कला अर्थात् ७० कला है। यह अन्तर ५ मिनट अर्थात् ३०० सैकण्ड में पड़ता है। सांपातिक काल घं. १९– २० और घं. १९– १९– ४५ का अन्तर १५ सैकण्ड है, इसलिए त्रिराशि जो ३०० सैकण्ड में ७० कला का फरक पड़ता है तो १५ सैकण्ड में कितना फरक पड़ेगा? उत्तर ३॥ अर्थात् ४ कला तो राशि ८– २५– १३ में से घटाने पर दशम ८– २५– ९ आये। यह अयनांश २३ अंश १५ कला के लिए आया। इसलिए निरयण दशमभाव में इस अयनांशों को जोड़ने से सायन दशमभाव राशि ९– १८– २४ आया। यह पहली पद्धति द्वारा लाये गये दशमभाव से बराबर मिलता है। इसमें से अपने अयनांश २२– २४ घटाने से निरयण दशमभाव ८– २६– ० आया, अथवा अपने अयनांश २२– २४ उस सारिणी के अयनांश २३– १५ से ५१ कला कम आती है इसलिए सारणी में आये दशमभाव राशि ८– २५– ९ में ५१ जोड़ने से निरयण दशमभाव ८– २६– ० आयेगा।

पढ़ने वाले देख सकेंगे कि कोष्ठक नं. २ में सांपातिक काल २०– २० मिनट के अन्तर से दिया गया है, फिर भी उसमें से आये हुए आंकड़े ५– ५ मिनट के अन्तर से दिये गये हैं। सांपातिक काल वाली सारिणी के साथ बराबर मिलते हैं।

इस गणित की सूक्ष्मताः—

अब ऊपर किए गए गणित में सूक्ष्मता कितनी है। इसको सांपातिक काल के लगभग ४– ४ मिनट के अन्तर और अक्षांश १– १ अंश के अन्तर से पाश्चात्यों के बनाए गए कोष्ठकों से गणित करके देखिए। इसके लिए हमने राफेल की पुस्तक "टेबल्स आफ हाउसेज" १९– २० की आवृत्ति में से गणित करके नीचे देते हैं। इस पुस्तक में नीचे मुजब आंकड़े दिए हैं तथा यह सभी सायन हैं।

सां. का. दशम लग्न	लग्न	घं. मि. से.	रा. अं.	रा. अं. कं.	रा. अ. कं.
अक्षांश	अक्षांश	१९.१८.१	९.१८	०.२५.७	०।२५।२२
२१.०	२१– ५९	१९.१२.१८	९.१९	०.२६.२७	०।२६।४३

इससे अपने सां. का. घं. १९– १९– ४५ के लिए सायन दशमभाव ९– १८– २४– २५ आया। अपने सायन दशमभाव रा. ९– १८– २४ आया है अतः इन दोनों गणितों के मध्य में २५ विकला का फर्क आता है। उपर के आंकड़े का सां. का. घं. १९– १९– ४५ और अक्षांश २१– ३६ के लिए सायन लग्न रा. ०– २५– ४९ आता है। अपना सायन लग्न रा. ०– २५– ५० आया हुआ है इसलिए इन दोनों गणित में एक कला का फर्क आया। लग्न में एक कला का फर्क लगभग ४ सेकेण्ड आया है। अगर यह गणित जन्मकुण्डली वाले के लिए होवे तो अपने को यह मालूम करना चाहिए कि भगवान ने जिस मनुष्य को जन्म दिया है उसके जन्म के समय को लिखने में ४ सेकेण्ड का फर्क न पड़े ऐसा नहीं हो सकता। अर्थात् इतनी सूक्ष्मता की आवश्यकता नहीं है। अतः व्यावहारिक काम के लिए दशम और लग्न के लिए अपने गणित की पद्धति बराबर है। इसके लिए इतना सूक्ष्म गणित करने की आवश्यकता अतिशयोक्ति है।

सांपातिक-काल

कोष्ठक १

इस्वी सांपातिक-काल		इस्वी सांपातिक-काल		इस्वी सांपातिक-काल		इस्वी सांपातिक-काल		इस्त्री सांपातिक-काल	
सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घ. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घ. मि. से.
१८८६	६-४२-२१	१९१३	६-४०-१२	१९४०	६-३८- २	१९६७	६-३९-४९	१९९४	६-४१-३५
१८८७	६-४१-२४	१९१४	६-३९-१४	१९४१	६-४१- १	१९६८	६-३८-५१	१९९५	६-४०-३८
१८८८	६-४०-२६	१९१५	६-३८-१७	१९४२	६-४०- ४	१९६९	६-४१-५०	१९९६	६-३९-४०
१८८९	६-४३-२५			१९४३	६-३९- ७	१९७०	६-४०-५३	१९९७	६-४२-३९
१८९०	६-४२-२८	१९१६	६-३७-२०	१९४४	६-३८- ९	१९७१	६-३९-५६	१९९८	६-४१-४२
		१९१७	६-४०-१९						
१८९१	६-४१-३१	१९१८	६-३९-२२	१९४५	६-४१- ८	१९७२	६-३८-५८	१९९९	६-४०-४५
१८९२	६-४०-३३	१९१९	६-३८-२५	१९४६	६-४०-११	१९७३	६-४१-५७	२०००	६-३९-४७
१८९३	६-४३-३२	१९२०	६-३७-२७	१९४७	६-३९-१४	१९७४	६-४१- ०		
१८९४	६-४२-३५			१९४८	६-३८-१६	१९७५	६-४०- ३		
१८९५	६-४१-३८	१९२१	६-४०-२६	१९४९	६-४१-१५	१९७६	६-३९- ५		
		१९२२	६-३९-१९						
१८९६	६-४०-४०	१९२३	६-३८-३२	१९५०	६-४०-१८	१९७७	६-४२- ४		
१८९७	६-४३-३९	१९२४	६-३७-३४	१९५१	६-३९-२१	१९७८	६-४१- ७		
१८९८	६-४२-४२	१९२५	६-४०-३३	१९५२	६-३८-२३	१९७९	६-४०-१०		
१८९९	६-४१-४५			१९५३	६-४१-२२	१९८०	६-३९-१२		
१९००	६-४०-४७	१९२६	६-३९-३६	१९५४	६-४०-२५	१९८१	६-४२-११		
		१९२७	६-३८-३९						
१९०१	६-३९-५०	१९२८	६-३७-४१	१९५५	६-३९-२८	१९८२	६-४१-१४		
१९०२	६-३८-५३	१९२९	६-४०-४०	१९५६	६-३८-३०	१९८३	६-४०-१७		
१९०३	६-३७-५६	१९३०	६-३९-४३	१९५७	६-४१-२९	१९८४	६-३९-१९		
१९०४	६-३६-५९			१९५८	६-४०-३२	१९८५	६-४२-१८		
१९०५	६-३९-५८	१९३१	६-३८-४६	१९५९	६-३९-३५	१९८६	६-४१-२१		
		१९३२	६-३७-४८						
१९०६	६-३९- ०	१९३३	६-४०-४७	१९६०	६-३८-३७	१९८७	६-४०-२४		
१९०७	६-३८- ३	१९३४	६-३९-५०	१९६१	६-४१-३६	१९८८	६-३९-२६		
१९०८	६-३७- ६	१९३५	६-३८-५३	१९६२	६-४०-३९	१९८९	६-४२-२५		
१९०९	६-४०- ५			१९६३	६-३९-४२	१९९०	६-४१-२८		
१९१०	६-३९- ७	१९३६	६-३७-[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
		१९३७	६-४०-५४						
१९११	६-३८-१०	१९३८	६-३९-५७	१९६५	६-४१-४३	१९९२	६-३९-३३		
१९१२	६-३७-१३	१९३९	६-३९- ०	१९६६	६-४०-४६	१९९३	६-४२-३२		

मास	स मान्यवर्ष (३६५ दिनका)	प्लुत-वर्ष (३६६ दिनका)
जनवरी	०- ०- ०	०- ०- ०
फरवरी	२- २-१३	२- २-१३
मार्च	३-५२-३७	३-५६-३४
अप्रेल	५-५४-५०	५-५८-४७
मई	७-५३- ७	७-५७- ४
जून	९-५५-२०	९-५९-१७
जुलाई	११-५३-३७	११-५७-३४
अगस्त	१३-५५-५०	१३-५९-४७
सितम्बर	१५-५८- ३	१६- २- ०
ग्रक्टूबर	१७-५६-२०	१८- ०-१७
नवम्बर	१९-५८-३३	२०- २-३०
दिसम्बर	२१-५६-५०	२२- ०-४७

तारीख	घं. मि. से.	तारीख	घं. मि. से.
१	०— ०— ०	१७	१— ३— ५
२	०— ३—५७	१८	१— ७— २
३	०— ७—५३	१९	१—१०—५८
४	०—११—५०	२०	१—१४—५५
५	०—१५—४६	२१	१—१८—५१
६	०—१९—४३	२२	१—२२—४८
७	०—२३—३९	२३	१—२६—४४
८	०—२७—३६	२४	१—३०—४१
९	०—३१—३२	२५	१—३४—३७
१०	०—३५—३०	२६	१—३८—३४
११	०—३९—२६	२७	१—४२—३०
१२	०—४३—२३	२८	१—४६—२७
१३	०—४७—१९	२९	१—५०—२४
१४	०—५१—१६	३०	१—५४—२०
१५	०—५५—१२	३१	१—५८—१७
१६	[illegible]— ९		

इन सारणियों से संसार के किसी भी स्थान का सूक्ष्म लग्न और दशम भाव निकालने की विधि उदाहरण सहित पहले दी है।

इष्ट सांपातिक काल के घंण्टे मिनटों पर से अयनांश २३-१५ और उत्तर अक्षांश २३ की निरयण लग्न सारिणी

घटा	मिनट ० रा. अं. क.	५ रा. अं. क.	१० रा. अं. क.	१५ रा. अं. क.	२० रा. अं. क.	२५ रा. अं. क.	३० रा. अं. क.	३५ रा. अं. क.	४० रा. अं. क.	४५ रा. अं. क.	५० रा. अं. क.	५५ रा. अं. क.
०	२ १६ २०	२ १७ २७	२ १८ ३४	२ १९ ४१	२ २० ४८	२ २१ ५४	२ २३ ०	२ २४ ९	२ २५ ११	२ २६ १७	२ २७ २३	२ २८ २९
१	२ २९ ३४	३ ० ४०	३ १ ४५	३ २ ५१	३ ३ ५६	३ ५ २	३ ६ ७	३ ७ १२	३ ८ १८	३ ९ २४	३ १० ३०	३ ११ ३६
२	३ १२ ४२	३ १३ ४७	३ १४ ५३	३ १५ ५९	३ १७ ५	३ १८ ११	३ १९ १७	३ २० २३	३ २१ २९	३ २२ ३५	३ २३ ४१	३ २४ ४७
३	३ २५ ५३	३ २७ ०	३ २८ ७	३ २९ १४	४ ० २१	४ १ २८	४ २ ३५	४ ३ ४२	४ ४ ४९	४ ५ ५७	४ ७ ४	४ ८ ११
४	४ ९ १९	४ १० २७	४ ११ ३५	४ १२ ४३	४ १३ ५१	४ १४ ५९	४ १६ ७	४ १७ १५	४ १८ २४	४ १९ ३३	४ २० ४२	४ २१ ५१
५	४ २२ ५९	४ २४ ७	४ २५ १६	४ २६ २५	४ २७ ३३	४ २८ ४२	४ २९ ५१	५ ० ५९	५ २ ८	५ ३ १७	५ ४ २६	५ ५ ३६
६	५ ६ ४५	५ ७ ५४	५ ९ ४	५ १० १३	५ ११ २२	५ १२ ३१	५ १३ ३९	५ १४ ४८	५ १५ ५७	५ १७ ५	५ १८ १४	५ १९ २२
७	५ २० ३१	५ २१ ३९	५ २२ ४८	५ २३ ५७	५ २५ ६	५ २६ १५	५ २७ २३	५ २८ ३१	५ २९ ३९	६ ० ४७	६ १ ५५	६ ३ ३
८	६ ४ ११	६ ५ १९	६ ६ २६	६ ७ ३३	६ ८ ४१	६ ९ ४८	६ १० ५५	६ १२ २	६ १३ ९	६ १४ १६	६ १५ २३	६ १६ ३०
९	६ १७ ३७	६ १८ ४३	६ १९ ४९	६ २० ५५	६ २२ १	६ २३ ७	६ २४ १३	६ २५ १९	६ २६ २५	६ २७ ३१	६ २८ ३७	६ २९ ४३
१०	७ ० ४८	७ १ ५४	७ ३ ०	७ ४ ६	७ ५ १२	७ ६ १८	७ ७ २३	७ ८ २८	७ ९ ३४	७ १० ३९	७ ११ ४५	७ १२ ५०
११	७ १३ ५६	७ १५ १	७ १६ ७	७ १७ १३	७ १८ १९	७ १९ २४	७ २० ३०	७ २१ ३६	७ २२ ४२	७ २३ ४९	७ २४ ५६	७ २६ ३
१२	७ २७ १०	७ २८ १६	७ २९ २३	८ ० ३०	८ १ ३८	८ २ ४६	८ ३ ५५	८ ५ ३	८ ६ ११	८ ७ २०	८ ८ २९	८ ९ ३९
१३	८ १० ४९	८ ११ ५९	८ १३ ९	८ १४ २०	८ १५ ३१	८ १६ ४३	८ १७ ५४	८ १९ ६	८ २० १९	८ २१ ३३	८ २२ ४६	८ २४ ०
१४	८ २५ १५	८ २६ ३०	८ २७ ४५	८ २९ १	९ ० १८	९ १ ३६	९ २ ५४	९ ४ १२	९ ५ ३१	९ ६ ५१	९ ८ ११	९ ९ ३२
१५	९ १० ५५	९ १२ १८	९ १३ ४०	९ १५ ३	९ १६ २७	९ १७ ५३	९ १९ १९	९ २० ४५	९ २२ १२	९ २३ ४०	९ २५ ८	९ २६ ३६
१६	९ २८ ५	९ २९ ३५	१० १ ७	१० २ ३९	१० ४ १२	१० ५ ४६	१० ७ २०	१० ८ ५४	१० १० ३०	१० १२ ६	१० १३ ४२	१० १५ १८
१७	१० १६ ५४	१० १८ ३०	१० २० ९	१० २१ ४८	१० २३ २७	१० २५ ७	१० २६ ४६	१० २८ २५	११ ० ५	११ १ ४५	११ ३ २५	११ ५ ५
१८	११ ६ ४५	११ ८ २५	११ १० ५	११ ११ ४५	११ १३ २५	११ १५ ५	११ १६ ४४	११ १८ २३	११ २० ३	११ २१ ४२	११ २३ २१	११ २५ ०
१९	११ २६ ३६	११ २८ १२	११ २९ ४८	० १ २४	० ३ ०	० ४ ३६	० ६ १०	० ७ ४४	० ९ १८	० १० ५१	० १२ २३	० १३ ५५
२०	० १५ २५	० १६ ५४	० १८ २२	० १९ ५०	० २१ १८	० २२ ४५	० २४ ११	० २५ ३७	० २७ ३	० २८ २७	० २९ ५०	१ १ १२
२१	१ २ ३५	१ ३ ५८	१ ५ १९	१ ६ ३९	१ ७ ५९	१ ९ १८	१ १० ३६	१ ११ ५४	१ १३ १२	१ १४ २९	१ १५ ४५	१ १७ ०
२२	१ १८ १५	१ १९ ३०	२ २० ४४	१ २१ ५७	१ २३ ११	१ २४ २४	१ २५ ३६	१ २६ ४७	१ २७ ५९	१ २९ १०	२ ० २१	२ १ ३१
२३	२ २ ४१	२ ३ ५१	२ ५ १	२ ६ १०	२ ७ १९	२ ८ २७	२ ९ ३५	२ १० ४४	२ ११ ५२	२ १३ ०	२ १४ ७	२ १५ १४

इष्ट घड़ी की लग्नसारणी और इष्ट नतकी दशम सारणी के लिए कोष्ठक २ दूसरे का उपयोग

जिन्हें सांपातिक काल की पद्धति से लग्न एवं दशम भाव नही निकालना हो तथा अपनी पुरानी पद्धति से इष्ट घड़ी से लग्न दशम निकालना चाहे तो भी उनके लिये कोष्ठक नं. २ को उपयोग में ले सकेगें। इस पद्धति को समझाने के लिये हम पहले का उदाहरण इष्ट घड़ी की पुरानी पद्धति से कोष्ठक नं. २ की मदद से लग्न दशम निकाल कर बताते है।

अपने उदाहरण के लिये गणित करने से ता. १-५-१८९५ का ५ घंटा ३० मिनट स्टेण्डर्ड समय का सायन सूर्य ४० अंश २१ कला आता है और तारीख ३०-४-१८९५ का इष्ट स्थान का सूर्योदय ६ घ. १७ मिनट स्टेण्डर्ड समय आता है। इस को इष्ट समय ५घ. ३० मि. में से घटाने पर २३ घ. १३ मिनट इष्ट घड़ी के बजाय इष्ट घं.मि. आये। अब कोष्ठक नं. २ मे सायन सूर्य ४० अं. २० कला और अक्षांश २१ अं. ३६ कला के लिये देखा तो २० और २५ अक्षांश के लिये तथा २० घ. ० मिनट और २०

घं.२० मिनटके लिये यह अंकड़े मिलते हैं। ३७ अं.३५ कला,४३ अंश २४ कला.३९ अंश ३३ कला और ४५ अंश २३ कला इनसे इनके अंतर द्वारा त्रिराशि गणित करनेपर अक्षांश २१ अं ३६ क. के लिये और ४० अंश २१ कला के लिये २० घंटा ७ मि. आते हैं । इसमें उपर के. इष्ट २३ घ. १३ मिनट को जोड़ कर २४ घं. घटाने पर १९ घं. २० मिनट सांपातिक काल इस पद्धति से आया तथा अपना पहले का सांपातिक काल १९-१९-४५ आता था, इस लिये अपने सां. का. में १५ सेकड ज्यादा आया और इसका कारण ऊपर अपने सूर्योदय में और ऊपर के २० घ.७ मि. में सेकडों को छोड़ दिया है इसलिये सेकण्डों का फर्क आयाहै ।

अपने सां.का. घं. १९-२० मि. ऊपर से कोष्ठक २ से सायन लग्न ० राशि २० अंश ५५ कला ओर दशम भाव निकालने के पहले की पद्धति द्वारा कोष्ठक नं. २ से दशम भाव ९ राशि १८ अंश २९ कला आया । आगे यह आंकड़े क्रमशः ० राशि २५ अंश ५० कला ओर ९ राशि १९ अंश २४ क. आया था । अत. इस पद्धति से लग्न में ५ कला तथा दशम भाव में ४ कला ज्यादा आई, परन्तु इसके बदले सूर्योदय निकालने एवं सूर्य स्पष्ट करने की महनत बढ़ गई । एवं अगर इसको महत्व न भी दें तो अन्य मेहनत वहुत बढ़ जाती है । इसलिये इष्ट घड़ी के बजाये सांपातिक काल उपर से लग्न और दशम भाव निकालने में हम ज्यादा सहमत हैं ।

सांपातिक काल के घंटे मिनटों पर से अयनांश २३।१५ की प्रत्येक स्थान की निरयण दशमभाव सारिणी

घंटा	मिनट ०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
०	११ ६ ४५	११ ८ ७	११ ९ २८	११ १० ५०	११ १२ १२	११ १३ ३३	११ १४ ५५	११ १६ १६	११ १७ ३८	११ १८ ५९	११ २० २०	११ २१ ४१
१	११ २३ २	११ २४ २२	११ २५ ४३	११ २७ ३	११ २८ २३	११ २९ ४३	० १ ३	० २ २३	० ३ ४२	० ५ १	० ६ १९	० ७ ३८
२	० ८ ५६	० १० १४	० ११ ३२	० १२ ४९	० १४ ६	० १५ २३	० १६ ३९	० १७ ५६	० १९ १२	० २० २७	० २१ ४२	० २२ ५८
३	० २४ १३	० २५ २७	० २६ ४२	० २७ ५६	० २९ १०	१ ० २३	१ १ ३६	१ २ ४९	१ ४ २	१ ५ १४	१ ६ २७	१ ७ ३९
४	१ ८ ५०	१ १० २	१ ११ १३	१ १२ २४	१ १३ ३५	१ १४ ४६	१ १५ ५६	१ १७ ७	१ १८ १७	१ १९ २७	१ २० ३७	१ २१ ४७
५	१ २२ ५७	१ २४ ६	१ २५ १५	१ २६ २४	१ २७ ३४	१ २८ ४३	१ २९ ५२	२ १ १	२ २ १०	२ ३ १९	२ ४ २७	२ ५ ३६
६	२ ६ ४५	२ ७ ५४	२ ९ ३	२ १० ११	२ ११ २०	२ १२ २९	२ १३ ३८	२ १४ ४७	२ १५ ५६	२ १७ ६	२ १८ १५	२ १९ २४
७	२ २० ३३	२ २१ ४३	२ २२ ५३	२ २४ ३	२ २५ १३	२ २६ २३	२ २७ ३४	२ २८ ४४	२ २९ ५५	३ १ ६	३ २ १७	३ ३ २८
८	३ ४ ३९	३ ५ ५१	३ ७ ३	३ ८ १६	३ ९ २८	३ १० ४१	३ ११ ५४	३ १३ ७	३ १४ २०	३ १५ ३४	३ १६ ४८	३ १८ ३
९	३ १९ १८	३ २० ३३	३ २१ ४८	३ २३ ३	३ २४ १८	३ २५ ३४	३ २६ ५१	३ २८ ७	३ २९ २४	४ ० ४१	४ १ ५८	४ ३ १६
१०	४ ४ ३४	४ ५ ५२	४ ७ ११	४ ८ २९	४ ९ ४८	४ ११ ७	४ १२ २७	४ १३ ४७	४ १५ ७	४ १६ २७	४ १७ ४७	४ १९ ८
११	४ २० २८	४ २१ ४९	४ २३ १०	४ २४ ३१	४ २५ ५२	४ २७ १४	४ २८ ३५	४ २९ ५७	५ १ १८	५ २ ४०	५ ४ २	५ ५ २३
१२	५ ६ ४५	५ ८ ७	५ ९ २८	५ १० ५०	५ १२ १२	५ १३ ३३	५ १४ ५५	५ १६ १६	५ १७ ३८	५ १८ ५९	५ २० २०	५ २१ ४१
१३	५ २३ २	५ २४ २२	५ २५ ४३	५ २७ ३	५ २८ २३	५ २९ ४३	६ १ ३	६ २ २३	६ ३ ४२	६ ५ १	६ ६ १९	६ ७ ३८
१४	६ ८ ५६	६ १० १४	६ ११ ३२	६ १२ ४९	६ १४ ६	६ १५ २३	६ १६ ३९	६ १७ ५६	६ १९ १२	६ २० २६	६ २१ ४२	६ २२ ५८
१५	६ २४ १३	६ २५ २७	६ २६ ४२	६ २७ ५६	६ २९ १०	७ ० २३	७ १ ३६	७ २ ४९	७ ४ २	७ ५ १४	७ ६ २७	७ ७ ३९
१६	७ ८ ५०	७ १० २	७ ११ १३	७ १२ २४	७ १३ ३५	७ १४ ४६	७ १५ ५६	७ १७ ७	७ १८ १७	७ १९ २७	७ २० ३७	७ २१ ४७
१७	७ २२ ५७	७ २४ ६	७ २५ १५	७ २६ २४	७ २७ ३४	७ २८ ४३	७ २९ ५२	८ १ १	८ २ १०	८ ३ १९	८ ४ २७	८ ५ ३६
१८	८ ६ ४५	८ ७ ५४	८ ९ ३	८ १० ११	८ ११ २०	८ १२ २९	८ १३ ३८	८ १४ ४७	८ १५ ५६	८ १७ ६	८ १८ १५	८ १९ २४
१९	८ २० ३३	८ २१ ४३	८ २२ ५३	८ २४ ३	८ २५ १३	८ २६ २३	८ २७ ३४	८ २८ ४४	८ २९ ५५	९ १ ६	९ २ १७	९ ३ २८
२०	९ ४ ३९	९ ५ ५१	९ ७ ३	९ ८ १६	९ ९ २८	९ १० ४१	९ ११ ५४	९ १३ ७	९ १४ २०	९ १५ ३४	९ १६ ४८	९ १८ ३
२१	९ १९ १८	९ २० ३३	९ २१ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ० ४१	१० १ ५८	१० ३ १६
२२	१० ४ ३४	१० ५ ५२	१० ७ ११	१० ८ २९	१० ९ ४८	१० ११ ७	१० १२ २७	१० १३ ४७	१० १५ ७	१० १६ २७	१० १७ ४७	१० १९ ८
२३	१० २० २८	१० २१ ४९	१० २३ १०	१० २४ ३१	१० २५ ५२	१० २७ १४	१० २८ ३५	१० २९ ५७	११ १ १८	११ २ ४०	११ ४ २	११ ५ २३

✵ इष्ट सांपातिक काल ✵

कोष्ठक "अ"

पं. मि.	से. प्रसे	पं.							
मि. से.	प्रसे —	मि.							
से. प्रसे	— —	से.							
१	०	९	५१	१	३२	५	१५	२४	३२
२	०	१९	४२	२	३३	५	२५	१६	३३
३	०	२९	३४	३	३४	५	३५	७	३४
४	०	३९	२५	४	३५	५	४४	५९	३५
५	०	४९	१६	५	३६	५	५४	५०	३६
६	०	५९	८	६	३७	६	४	४१	३७
७	१	९	०	२५	३८	६	१४	३३	३८
८	१	१८	५१	८	३९	६	२४	२४	३९
९	१	२८	४३	९	४०	६	३४	१५	४०
१	३८	१०	३४	११	४१	६	४४	७	४१
१	११.	४८	११	११	४२	६	५३	५८	४२
१२	१	५८	१७	१२	४३	७	३	५०	४३
१३	२	८	८	१३	४४	७	१३	४१	४४
१४	२	१८	०	१४	४५	७	२३	३२	४५
१५	२	२७	५१	१५	४६	७	३३	२४	४६
१६	२	३७	४३	१६	४७	७	४३	१५	४७
१७	२	४७	३३	१७	४८	७	५३	६	४८
१८	२	५७	२५	१८	४९	८	२	५८	४९
१९	३	७	१६	१९	५०	८	१२	४९	५०
२०	३	१७	८	२०	५१	८	२२	४१	५१
२१	३	२६	५९	२१	५२	८	३२	[illegible]	५२
२२	३	३६	५०	२२	५३	८	४२	२३	५३
२३	३	४६	४२	२३	५४	८	५२	१५	५४
२४	३	५६	३३	२४	५५	९	२	६	५५
२५	४	६	२५	२५	५६	९	११	५८	५६
२६	४	१६	१६	२६	५७	९	२१	४९	५७
२७	४	२६	७	२७	५८	९	३१	४०	५८
२८	४	३५	५९	२८	५९	९	४१	३२	५९
२९	४	४५	५०	२९	६०	९	५१	६०	६०
३०	४	५५	४२	३०	१२	३	४	५	६ ७
३१	५	५	३३	३१	८९	१०	११	१२	

कोष्ठक "ब

पं.	मि.	से.	प्रसे				
मि.	से.	प्रसे	—				
से.	प्रसे	—	—				
०	५९	५०	१०	३०	५४	५५	१७
१	५९	४०	२०	३१	५४	४५	२७
[illegible]	५९	३०	३१	३२	५४	३५	३७
[illegible]	५९	२०	४१	३३	५४	२५	४८
[illegible]	५९	१०	१	३४	५४	१५	५८
[illegible]	५९	१	१	३५	५४	६	८
६	५८	५१	१२	३६	५३	५६	[illegible]
७	५८	४१	२२	३७	५३	४६	२८
८	५८	३१	३२	३८	५३	३६	३९
९	५८	२१	४२	३९	५३	२६	४९
१०	५८	११	५२	४०	५३	१६	५९
११	५८	२	३	४१	५३	७	९
१२	५७	५२	१३	४२	५२	५७	२०
१३	५७	४२	२३	४३	५२	४७	३०
१४	५७	३२	३३	४४	५२	३७	४०
१५	५७	२२	४४	४५	५२	२७	५०
१६.	५७	१२	५४	४६	५२	२७	०
१७	५७	३	४	४७	५२	१८	११
१८	५६	५३	१४	४८	५१	८	२१
१९	५६	४३	२५	४९	५१	५८	३१
२०	५६	३३	३५	५०	५१	४८	४१
२१	५६	२३	४५	५१	५१	३८	५२
२२	५६	१३	५५	५२	[illegible]	[illegible]	२
२३	५६	४	५	५३	५१	१९	१२
२४	५५	५४	१६	५४	५०	९	२२
२५	५५	४४	२६	५५	५०	५९	३२
२६	५५	३४	३६	५६	५०	४९	४३
२७	५५	२४	४६	५७	५०	३९	५
२८	५५	१४	५७	५८	५०	२९	३
२९	५५	१५	७	५९	५०	२०	३३

इस पंचांग में अन्यत्र दैनिक मध्य रात्रि १२ बजे का साम्पातिक काल दिया गया है। जो कि ८२।३० देशान्तर रेखा के आधार पर आधारित घं० मि० से० में है। जिस समय की आपको कुण्डली बनानी हो उसी समय का इस्ट साम्पातिक काल पहले आप दिल्ली का बना लीजिये।

२—दिल्ली के इष्ट साम्पातिक काल में आप जिस किसी भी स्थान का देशान्तर संस्कार अक्षांशादि सारिणी से लेकर ऋण-धन चिन्हानुसार कर देगें तो फौरन उसी स्थान का उसी समय का इष्ट साम्पातिक काल बन जायेगा। जिस समय का आपने दिल्ली का बनाया था।

नोटः—देशान्तर संस्कार पूर्व के स्थानों में प्रति एक रेखांश बराबर ४ मिनट धन व पश्चिम में एक रेखांश बराबर ४ मिनट ऋण होता है।

३—जिस स्थान की कुण्डली बनानी हो उसी स्थान का साम्पातिक बनाकर उसे उसी स्थान के आधार पर बनी लग्न सारिणी में देखकर लग्न निश्चय कर लेनी चाहिये। (प्रत्येक अक्षांस के आधार पर बनी लग्न सारिणी की पुस्तक श्री निर्मल चन्द लाहिरी द्वारा बनी आपको बाजार में मिल जायेगी।)

४—कोष्ठक अ एवं ब का प्रयोग लोकल टाइम से संस्कार ज्ञात कर साम्पातिक काल में संस्कार करने से इष्ट समय का साम्पातिक काल फौरन बन जाता है।

सांपातिक काल
ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (−)
ग्रीनविच से पश्चिम रेखांश (+)

रेखांश	सा.का.संस्कार मि.	सेकन्ड	रेखांश	मि.	सेकन्ड	रेखांश	सा.का.संस्कार मि.	सेकन्ड
१	०	१	१०	०	७	७५	०	५०
२	०	१	११	०	७	९०	१	००
३	०	२	१२	०	८	१०५	१	१०
४	०	३	१३	०	८	१२०	१	२०
५	०	३	१४	०	९	१३५	१	३०
६	०	४	१५	०	१०	१५०	१	४०
७	०	५	३०	०	२०	१६५	१	५०
८	०	५	४५	०	३०	१८०	२	००
[illegible]	०.	६	६०	०	४०			

सांपातिक काल (वृद्धि संस्कार)

समय घं.	मि.	सै.	समय घं.	मि.	सै.	समय मिनट.	मि.	सै.
१	+०	१०	१३	+२	८	६	+०	१
२	०	२०	१४	२	१८	१२	०	२
३	०	३०	१५	२	२८	१८	०	३
४	०	३९	१६	२	३८	२४	०	४
५	०	४९	१७	२	४८	३०	०	५
६	०	५९	१८	२	५७	३६	०	६
७	१	९	१९	३	७	४२	०	७
८	१	१९	२०	३	१७	४८	०	८
९	१	२९	२१	३	२७	५४	०	९
१०	१	३९	२२	३	३७	६०	०	१०
११	१	४८	२३	३	४७			
१२	१	५८	२४	३	५७			

कोष्ठक २ (क) सायन लग्न उत्तर अक्षांश

सां.काल	० घं.क.	५ घं.क.	१० घं.क.	१५ घं.क.	२० घं.क.	२५ घं.क.	३० घं.क.	सां.काल	० घं.क.	५ घं.क.	१० घं.क.	१५ घं.क.	२० घं.क.	२५ घं.क.	३० घं.क.
०। ०	६०। ०	६२। ०	६४। १	६६। ५	६८।१५	१००।३१	१०२।५६	१२। ०	२७०। ०	२६८। १	२६५।५९	२६३।५५	२६१।४६	२५९।२९	२५७। ४
०।२०	६४।३५	६६।३४	६८।३४	१००।३७	१०२।४३	१०४।५६	१०७।१६	१२।२०	२७४।३५	२७२।३६	२७०।३४	२६८।२८	२६६।१८	२६३।५७	२६१।२७
०।४०	६९।११	१०१। ९	१०३। ७	१०५। ७	१०७।१०	१०९।१८	१११।३४	१२।४०	२७९।११	२७७।१२	२७५।१०	२७३। ४	२७०।५१	२६८।२८	२६५।५५
१। ०	१०३।४७	१०५।४४	१०७।४०	१०९।३६	१११।३६	११३।२९	११५।४९	१३। ०	२८३।४९	२८१।५१	२७९।५०	२७७।४२	२७५।२९	२७३। ५	२७०।२७
१।२०	१०८।२८	११०।२१	११२।१३	११४। ६	११६। १	११७।५९	१२०। ३	१३।२०	२८८।२८	२८६।३२	२८४।३२	२८२।२६	२८०।१२	२७७।४६	२७५। ७
१।४०	११३।१०	११५। ०	११६।४८	११८।३७	१२०।२६	१२२।१९	१२४।१६	१३।४०	२९३।१०	२९१।१६	२८९।१९	२८७।१४	२८५। ०	२८२।३५	२७९।५३
२। ०	११७।५५	११९।४१	१२१।२५	१२३। ८	१२४।५२	१२६।३९	१२८।२९	१४। ०	२९७.५५	२९६। ५	२९४।१०	२९२। ८	२८९।५५	२८७।३०	२८४।४९
२।२०	१२२।४३	१२४।२४	१२६। ३	१२७।४१	१२९।२०	१३०।५९	१३२।४२	१४।२०	३०२।४३	३००।५८	२९९। ६	२९७। ७	२९४।५८	२९२।३५	२८९।५४
२।४०	१२७।३५	१२९।११	१३०।४५	१३२।१६	१३३।४८	१३५।२१	१३६।५६	१४।४०	३०७।३५	३०५।५५	३०४। ९	३०२।१४	३००। ९	२९७।४९	२९५।१०
३। ०	१३२।३२	१३४। २	१३५।२८	१३६।५३	१३८।१८	१३९।४३	१४१।१०	१५। ०	३१२।३२	३१०।५८	३०९।१७	३०७।२८	३०५।२८	३०३।१४	३००।३९
३।२०	१३७।३३	१३८।५६	१४०।१५	१४१।३३	१४२।५०	१४४। ७	१४५।२५	१५।२०	३१७।३३	३१६। ६	३१४।३३	३१२।५१	३१०।५८	३०८।४९	३०६।२१
३।४०	१४२।३९	१४३।५४	१४५। ५	१४६।१५	१४७।२३	१४८।३२	१४९।४२	१५।४०	३२२।३९	३२१।२०	३१९।५५	३१८।२१	३१६।३६	३१४।३७	३१२।१७
४। ०	१४७।४९	१४८।५५	१४९।५८	१५०।५९	१५१।५८	१५२।५८	१५३।५९	१६। ०	३२७।४९	३२६।३९	३२५।२३	३२३।५९	३२२।२५	३२०।३७	३१८।२९
४।२०	१५३। ४	१५४। ०	१५४।५३	१५५।४५	१५६।३६	१५७।२६	१५८।१७	१६।२०	३३३। ३	३३२। ३	३३०।५८	३२९।४५	३२८।२३	३२६।४८	३२४।५५
४।४०	१५८।२२	१५९। ८	१५९।५१	१६०।३३	१६१।१४	१६१।५५	१६२।३६	१६।४०	३३८।२२	३३७।३२	३३६।३९	३३५।३९	३३४।३०	३३३।११	३३१।३६
५। ०	१६३।४३	१६४।१९	१६४।५१	१६५।२३	१६५।५४	१६६।२५	१६६।५७	१७। ०	३४३।४३	३४३। ५	३४२।२४	३४१।३८	३४०।४५	३३९।४३	३३८।२९
५।२०	१६९। ७	१६९।३१	१६९।५३	१७०।१५	१७०।३६	१७०।५६	१७१।१७	१७।२०	३४९। ७	३४८।४२	३४८।१४	३४७।४२	३४७। ६	३४६।२४	३४५।३३
५।४०	१७४।३३	१७४।४५	१७४।५६	१७५। ७	१७५।१८	१७५।२८	१७५।३९	१७।४०	३५४।३३	३५४।२०	३५४। ६	३५३।५०	३५३।३२	३५३।११	३५२।४४
६। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०
६।२०	१८५।२७	१८५।१५	१८५। ४	१८४।५३	१८४।४२	१८४।३२	१८४।२२	१८।२०	५।२७	५।४०	५।५४	६।१०	६।२८	६।५०	७।१६
६।४०	१९०।५३	१९०।२९	१९०। ७	१८९।४५	१८९।२४	१८९। ४	१८८।४३	१८।४०	१०।५३	११।१८	११।४६	१२।१८	१२।५४	१३।३६	१४।२७
७। ०	१९६।१७	१९५।४२	१९५। ९	१९४।३७	१९४। ६	१९३।३५	१९३। ४	१९। ०	१६।१७	१६।५५	१७।३६	१८।२२	१९।१५	२०।१७	२१।३३
७।२०	२०१।३८	२००।५२	२००। ९	१९९।२७	१९८।४६	१९८। ५	१९७।२४	१९।२०	२१।३८	२२।२८	२३।२२	२४।२२	२५।३०	२६।४९	२८।२५
७।४०	२०६।५७	२०६। ०	२०५। ७	२०४।१५	२०३।२४	२०२।३४	२०१।४३	१९।४०	२६।५७	२७।५७	२९। २	३०।१५	३१।३७	३३।१२	३५। ७
८। ०	२१२।११	२११। ५	२१०। २	२०९। १	२०८। २	२०७। २	२०६। १	२०। ०	३२।११	३३।२१	३४।३७	३६। १	३७।३५	३९।३३	४१।३१
८।२०	२१७।२१	२१६। ७	२१४।५५	२१३।४६	२१२।३७	२११।२८	२१०।१८	२०।२०	३७।२१	३८।४०	४०। ६	४१।३९	४३।२४	४५।२३	४७।४३
८।४०	२२२।२७	२२१। ४	२१९।४५	२१८।२७	२१७।११	२१५।५३	२१४।३५	२०।४०	४२।२७	४३।५३	४५।२७	४७। ९	४९। ३	५१।११	५३।३९
९। ०	२२७।२८	२२५।५८	२२४।३२	२२३। ७	२२१।४२	२२०।१७	२१८।५०	२१। ०	४७।२८	४९। २	५०।४३	५२।३२	५४।३२	५६।४७	५९।२१
९।२०	२३२।२५	२३०।४९	२२९।१६	२२७।४४	२२६।१२	२२४।४०	२२३। ४	२१।२०	५२।२५	५४। ५	५५।५१	५७।४६	५९।५१	६२।११	६४।५०
९।४०	२३७।१७	२३५।३६	२३३।५७	२३२।१९	२३०।४१	२२९। १	२२७।१८	२१।४०	५७।१९	५९। ३	६०।५४	६२।५३	६५। २	६७।२५	७०। ६
१०। ०	२४२। ६	२४०।१९	२३८।३५	२३६।५२	२३५। ८	२३३।२१	२३१।३१	२२। ०	६२। ६	६३।५५	६५।५०	६७।५३	७०। ५	७२।३०	७५।१२
१०।२०	२४६।५०	२४५। ०	२४३।१२	२४१।२३	२३९।३४	२३७।४१	२३५।४४	२२।२०	६६।५०	६८।४४	७०।४१	७२।४६	७५। ०	७७।२६	८०। ७
१०।४०	२५१।३२	२४९।३९	२४७।४७	२४५।५४	२४३।५८	२४२। १	२३९।५७	२२।४०	७१।३२	७३।२८	७५।२८	७७।३४	७९।४९	८२।१४	८४।५४
११। ०	२५६।११	२५४।१६	२५२।२०	२५०।२४	२४८।२४	२४६।११	२४४।१२	२३। ०	७६।११	७८। ६	८०।१०	८२।१७	८४।३१	८६।५६	८९।३३
११।२०	२६०।४९	२५८।५१	२५६।५३	२५४।५३	२५२।५०	२५०।४२	२४८।२७	२३।२०	८०।४९	८२।४८	८४।५०	८६।५६	८९।१०	९१।३२	९४। ६
११।४०	२६५।२५	२६३।२६	२६१।२६	२५९।२४	२५७।१७	२५५। ५	२५२।४४	२३।४०	८५।२५	८७।२४	८९।२६	९१।३२	९३।४९	९६। ३	९८।३३
								२४। ०	९०। ०	९२। ०	९४। १	९६। ५	९८।१५	१००।३१	१०२।५६

सां. का.	३५ घ. क.	४० घं. क.	४५ घं. क.	५० घं. क.	५५ घं. क.	६० घं. क.	सां. का.	३५ घं. क.	४० घं. क.	४५ घं. क.	५० घं. क.	५५ घं. क.	६० घं. क.
०। ०	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५	१२। ०	२५४।२६	२५१।३२	२४८।१८	२४४।३८	२४०।२३	२३५।२५
०।२०	१०९।४८	११२।२४	११५।३८	११९। ५	१२३। ३	१२७।४०	१२।२०	२५८।४३	२५५।४२	२५२।१८	२४८।२४	२४३।५३	२३८।३३
०।४०	११३।५९	११६।३६	११९।३०	१२२।४५	१२६।२८	१३०।४५	१२।४०	२६३। ६	२५९।५७	२५६।२३	२५२।१६	२४७।२७	२४१।४३
१। ०	११८। ७	१२०।३६	१२३।२०	१२६।२३	१२९।५०	१३३।४९	१३। ०	२६७।३३	२६४।१८	२६०।३४	२५६।१४	२५१। ५	२४४।५६
१।२०	१२२।१४	१२४।३५	१२७। ८	१२९।५९	१३३।११	१३६।५२	१३।२०	२७२। ९	२६८।४६	२६४।५३	२६०।१९	२५४।५१	२४८।१३
१।४०	१२६।१९	१२८।३२	१३०।१५	१३३।३४	१३६।३२	१३९।५५	१३।४०	२७६।५२	२७३।३४	२६९।२१	२६४।३३	२५८।४४	२५१।३६
२। ०	१३०।२५	१३२।२८	१३४।४१	१३७। ८	१३९।५२	१४२।५८	१४। ०	२८१।४५	२७८।१२	२७४। १	२६[illegible]।५८	२६२।४७	२५५। ९
२।२०	१३४।३०	१३६।२४	१३८।२७	१४०।४१	१४३।११	१४६। १	१४।२०	२८६।४९	२८३।१३	२७८।५४	२७३।३८	२६७। ३	२५८।४५
२।४०	१३८।३५	१४०।२०	१४२।१२	१४४।१५	१४६।३१	१४९। ५	१४।४०	२९१। ६	२८८।२८	२८४। ३	२७८।३४	२७१।३६	२६२।३६
३। ०	१४२।४१	१४४।१६	१४५।५८	१४७।४८	१४९।५१	१५२। ९	१५। ०	२९७।३८	२९४। ०	२८९।३२	२८३।५२	२७६।२९	२६६।४३
३।२०	१४६।४७	१४८।१२	१४९।४३	१५१।२२	१५३।११	१५५।१३	१५।२०	३०३।२५	२९९।५१	२९५।२२	२८९।३४	२८१।४९	२७१।१२
३।४०	१५०।५४	१५२। ९	१५३।२९	१५४।५५	१५६।३१	१५८।१८	१५।४०	३०९।३०	३०६। ३	३०१।३९	२९५।४८	२८७।४३	२७६।१२
४। ०	१५५। १	१५६। ६	१५७।१५	१५८।३०	१५९।५१	१६१।२३	१६। ०	३१५।५४	३१२।३९	३०८।२५	३०२।३८	२९४।२०	२८१।५३
४।२०	१५९।१०	१६०। ४	१६१। २	१६२। ४	१६३।१२	१६४।२८	१६।२०	३२२।३६	३१९।३९	३१५।४४	३१०।१२	३०१।५४	२८८।३६
४।४०	१६३।१९	१६४। ३	१६४।४९	१६५।३९	१६६।३३	१६७।३४	१६।४०	३२[illegible]।३७	३२७। ४	३२३।३७	३१८।३६	३१०।४०	२९६।४८
५। ०	१६७।२८	१६८। १	१६८।३६	१६९।१४	१६९।५५	१७०।४०	१७। ०	३३६।५५	३३४।५३	३३२। ४	३२७।५१	३२०।५१	३०७।२६
५।२०	१७१।३९	१७२। १	१७२।२४	१७२।४९	१७३।१६	१७३।४७	१७।२०	३४४।२८	३४३। ३	३४१। २	३३७।५९	३३२।३७	३२०।५८
५।४०	१७५।४९	१७६। ३	१७६।१२	१७६।२५	१७६।३८	१७६।५३	१७।४०	३५२।११	३५१।२७	३५०।२५	३४८।४७	३४५।५०	३३८।४८
६। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०
६।२०	१८४।११	१८४। ०	१८३।४८	१८३।३६	१८३।२२	१८३। ७	१८।२०	७।४१	८।३३	९।३५	११।१३	१४।१०	२१।१२
६।४०	१८८।२१	१८७।५९	१८७।३६	१८७।११	१८६।४४	१८६।१३	१८।४०	१५।३२	१६।५७	१८।५८	२२। २	२७।२३	३९। २
७। ०	१९२।३२	१९१।५९	१९१।२४	१९०।४६	१९०। ५	१८९।२०	१९। ०	२३। ५	२५। ७	२७।५६	३२। ९	३९।१०	५२।४४
७।२०	१९६।४१	१९५।५८	१९५।११	१९४।२१	१९३।२७	१९२।२६	१९।२०	३०।२३	३२।५७	३६।२३	४१।२५	४९।२१	६३।१२
७।४०	२००।५१	१९९।५६	१९८।५८	१९७।५६	१९६।४८	१९५।३२	१९।४०	३७।२४	४०।२१	४४।१६	४९।४८	५८। ६	७१।२४
८। ०	२०४।५९	२०३।५४	२०२।४५	२०१।३१	२००। ९	१९८।३७	२०। ०	४४। ६	४७।२१	५१।३५	५७।२२	६५।४०	७८। ७
८।२०	२०९। ७	२०७।५१	२०६।३१	२०५। ५	२०३।२९	२०१।४३	२०।२०	५०।३०	५३।५७	५८।२१	६४।१२	७२।१७	८३।४८
८।४०	२१३।१३	२११।४८	२१०।१७	२०८।३८	२०६।५०	२०४।४७	२०।४०	५६।३५	६०। ९	६४।३८	७०।२६	७८।११	८८।४८
९। ०	२१७।२०	२१५।४४	२१४। ३	२१२।१२	२१०। ९	२०७।५१	२१। ०	६२।२२	६६। ०	७०।२८	७६। ९	८३।३१	९३।१७
९।२०	२२१।२५	२१९।४०	२१७।४८	२१५।४५	२१३।२९	२१०।५५	२१।२०	६७।५४	७१।३२	७५।५७	८१।२६	८८।२४	९७।२४
९।४०	२२५।३०	२२३।३६	२२१।३३	२१९।१९	२१६।४९	२१३।५९	२१।४०	७३।११	७६।४७	८१। ६	८६।२२	९२।५७	१०१।१६
१०। ०	२२९।३५	२२७।३२	२२५।१९	२२२।५२	२२०। ८	२१७। २	२२। ०	७८।१५	८१।४८	८५।५९	९१। २	९७।१३	१०४।५४
१०।२०	२३३।४१	२३१।२८	२२९। ५	२२६।२६	२२३।२८	२२०। ५	२२।२०	८३। ८	८६।३६	९०।३९	९५।२७	१०१।१६	१०८।२४
१०।४०	२३७।४६	२३५।२५	२३२।५२	२३०। १	२२६।४९	२२३। ८	२२।४०	८७।५२	९१।१४	९५। ७	९९।४२	१०५। ९	१११।४७
११। ०	२४१।५३	२३९।२४	२३६।४०	२३३।३७	२३०।१०	२२६।११	२३। ०	९२।२७	९५।४२	९९।२६	१०३।४७	१०८।५५	११५। ४
११।२०	२४६। २	२४३।२४	२४०।३०	२३७।१५	२३३।३२	२२९।१५	२३।२०	९६।५५	१००। ३	१०३।३७	१०७।४४	११२।३३	११८।१७
११।४०	२५०।१२	२४७।२६	२४४।२२	२४०।५५	२३६।५८	२३३।२०	२३।४०	१०१।१७	१०४।१८	१०७।४२	१११।३६	११६। ७	१२१।२७
							[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]१।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५

अनुभूत सरल औषध प्रयोग

"यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्" अर्थात् जो प्राणी जिस देश में जन्म लेता है उसके लिये उसी देश की औषध हितकारी है। भारत देश की प्राचीन धरोहर आयुर्वेद दवायें भी आजकल बहुत कठिनाई से प्राप्त होती हैं। प्राप्त हो भी जायें तो पुरानी व गुणहीन होती हैं इसके उपरान्त कीमत में भी अधिक होती हैं। ऐसी कठिनाई को दूर करने के लिये मैं कुछ सस्ते व सरलता से निर्मित होने वाले व अनेकों बार सफल अनुभूत योग दे रहा हूं जिन्हें बनाकर तथा उपयोग करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

१. श्वास दमाः- इसबगोल की भूसी दिन में २ बार १० ग्राम तक लगातार ६ माह से लेकर १२ माह तक सेवन करते रहने सेश्वास की बीमारी ठीक होती है।

२. हिचकी (हिक्का):- हिचकी चाहे किसी भी कारण से आ रही हो तो बारीक पीसे हुए सैधा नमक की नस्य लेने से दूर हो जायेगी।

३. पेट के कीड़े:- महीन पीसा हुआ नमक ३ ग्राम प्रातः गाय की छाछ के साथ कई दिन तक पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

४. छाती की जलन में:—भोजन करने के बाद यदि छाती में जलन होती हो तो अजवाइन १ग्राम और बादाम की भींगी एक नग दोनों को खूब चबाकर खायें।

५. सन्धि वेदनातथा बात विकारों परः- अजवाइन के सत को आधी रत्ती से एक रत्ती की मात्रा तक खरल कर (यह एक मात्रा है) दिन में तीन बार दूध के साथ देने से पक्षाघात शूल वात प्रकोप जन्य व्याधियां तथा उच्च रक्त चाप (High Blood Pressure) आदि का शमन होता है।

६. खांसी:- काली मिर्च १० ग्राम, छोटी पीपर १० ग्राम, जवाखार ५ ग्राम, अनार दाना २० ग्राम, इन सब दवाओं का चूर्ण करके ९० ग्राम साफ गुड़ में सान कर जंगली बेर के बराबर गोली बना लेवें। जब खांसी आती हो मुंह में रख कर चूसने से खांसी व गले की खरास ठीक होती है। वैसे यह दवाई भरच्यादि बटी के नाम से बजार में भी मिलती है।

७. कमर दर्दः- खसखस और मिश्री मिला कर कुल २ तोले की मात्रा कई दिन तक खाने से कमर का दर्द मिट जाता है।

८. सब तरह के दर्द परः- असकन्ध को कूट कर कपड़े से छान लो, इसे मैदा जैसे महीन चूर्ण का जितना बजन हो उसका छठा भाग उत्तम गौ- घृत उसमें मिला दो और साफ कांच य चीनी के बर्तन में भरकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ ग्राम से ३ ग्राम तक है इसे चाटकर ऊपर से मिश्री मिला गाय का दूध पीने से समस्त वात विकार, सब तरह के दर्द, वात ज्वर, प्रसूति पीड़ा, धातुरोग गठिया, पसली का दर्द, सिर दर्द और पेट के सारे रोग नष्ट करके शरीर स्वस्थ करता है।

नोटः- दूध के अभाव में गरम पानी के साथ भी ले सकते हैं।

९. पाचकः- २०० ग्राम सफेद जीरा साबूत लेकर उसमें २० ग्राम सैंधा नमक पीस कर मिला दो, फिर कागजी नीबू के रस में जीरे को (काँच या चीनी के बर्तन) २४ घंटे भिगो कर रखो फिर जीरे को निकाल कर सुखा दो ऐसा जीरा हर गृहस्थी में रखना चाहिये यह बहुत काम देता है, जब भी जी मचलाये थोड़ा सा खालें। यह जीरा बहुत पाचक है।

उपरोक्त योग मेरे स्व० पिताजी हरकचन्द जी लोढ़ा जैन आयुर्वेदाचार्य के हैं जिसका प्रयोग वे सैकड़ों रोगियों पर कर चुके थे मैं भी आज तक सफलतापूर्वक कर रहा हूँ, सर्व साधारण उपयोग कर लाभ उठावे।

नोटः यदि ऊपर लिखे प्रयोगों के विषय में किसी पाठक को कोई बात समझ में न आई हो तो मुझे नीचे लिखे पते पर पत्र डाल कर इस विषय को समझ सकते हैं।

मूलचन्द्र जैन पो० करही जिला खरगोन (मध्य प्रदेश) पिन कोड ४५१२२०

संक्षिप्त सन्ध्योपासन विधिः

(द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) मात्र के लिए प्रतिदिन सन्ध्योपासन परमावश्यक है। परन्तु, अब इस भौतिक युग में अनेक ब्राह्मण बालक भी सन्ध्योपासन से विरत होते जा रहे हैं। कई लोग समझते हैं कि सन्ध्या के मंत्र कठिन हैं, समय अधिक लगता है, तो कुछ समझते हैं कि बिना पूर्ण विनियोग ध्यान न्यास उपस्थान आवाहन विसर्जन और मुद्रा के सन्ध्या नहीं हो सकती। इतने झंझट के लिए उनके पास समय नहीं। किन्तु यह उनका भ्रम है। सन्ध्या केवल ५ सात मिनट में सम्पन्न हो सकती है, लम्बे ध्यान आवाहन उपस्थान मुद्रा आदिकी आवश्यकता नहीं है। हमारे परमादरणीय बन्धुवर तंत्रिक- चूडामणि विद्वद्वरेण्य स्व० श्री सदाशिवजी दीक्षितने गुरुपरम्परा- प्राप्त संक्षिप्त सन्ध्या- विधि अपने कुछ भक्तों को लिखवाई थी। अनेक ग्रन्थों के आलोडन के बाद उनका मत था कि यह सन्ध्या द्विज मात्र के लिए पर्याप्त थी।गायत्री मंत्र की एक माला न कर सकें वे केवल २४ या १० मंत्र जप ले, इससे उन्हें सन्ध्या न करने का प्रत्यवाय दोष नहीं लगेगा। उनकी इच्छा थी कि यह सन्ध्या पाठकों के लाभार्थ 'ज्योतिष्मती' और 'श्रीविश्व- विजय- पंचांग' में प्रकाशित हो जावे। काशी के कई पंचांगों में सन्ध्योपासन तर्पणादि विधि छपती है, परन्तु वह इतनी सरल एवं संक्षिप्त नहीं। अतः "श्रीविश्वविजय" पंचांग पाठकों के लाभार्थ यह विधि प्रकाशित करके हम अपने एक स्वर्गस्थ स्नेही सहृदय मित्र की सदिच्छाको पूर्ण कर रहे हैं।

—सम्पादक)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

ॐ तत्सदद्य अमुकसंवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक-गोत्रोत्पन्न अमुक शर्माऽहं (वर्माहं गुप्तोऽहं वा) ममोपात्त- दुरित क्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्योपासनं करिष्ये ।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्नि- भरद्वाज- गौतमात्रिवसिष्ठकश्यपाऋषयः गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् बृहतीपंक्तित्रिष्टुप् जगत्यश्छन्दांसि अग्निर्वायव्यादित्य बृहस्पतिर्वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः मार्ज ने विनियोगः ।
ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

आपोहिष्ठेति ऋचः सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्रीं छन्दः आपो देवता मार्ज ने विनियोगः ।

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवः । ॐ ता न ऊर्जे दधातनः । ॐ महेरणाय चक्षसे । ॐ यो वः शिवतमोरसः । ॐ तस्य भाजयतेह नः । ॐ उशतीरिवमातरः । ॐ तस्माअरंग माम वः । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ । ॐ आपो जन यथा च नः ॥

ॐ पूर्वा सन्ध्या तु गायत्री रक्ताङ्गी रक्त- वाससा । अक्षसूत्रधरादेवी कमण्डलु-समन्विता । हंस- स्कन्धसमारूढा तथा च ब्रह्मदेवता । आया हि वरदे देवि व्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥ गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते ।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र- जमदग्निभरद्वाज- गौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः- गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् बृहती पंक्ति त्रिष्टुप् जगत्यश्छंदासि अग्निवायवादित्य-बृहस्पतिर्वरु- णेन्द्र- विश्वेदेवा देवताः प्राणायामे विनियोगः ।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥"
सूर्यश्चमेति मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छंन्दः सूर्यो देवता आचमने विनियोगः ।

(अपामुपस्पशनि विनियोगः)

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यद्रात्र्या पापम-कार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत् किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं माममृतयौनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

(अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।)

ऋतञ्चसत्यञ्चेति अघमर्षण सूक्तस्य अघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं देवता-मुपस्पशनि विनियोगः ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चा भीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः । समुद्रादर्णवाद्धि संवत्सरोऽजायत, अहोरात्राणि विदधद्वीश्वरस्य मिशतोवशी सूर्याचन्द्रमसौधाता यथा पूर्व मकल्पयत्, दिवञ्च पृथ्वीञ्च अन्तरिक्षमथो स्वः ।

उद्वयमिति प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उतरं देवं देवत्रा सूर्यमगम ज्योतिरुत्तमम् ।

उद्वयमिति प्रस्कण्वऋषिर्निचृद् गायत्री छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

ॐ उद्वयं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः, दृशे विश्वाय सूर्यम् ।

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्देवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता गायत्री- जपे विनियोगः ।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।"

अनेन सध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम ।

ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

स्तुतिः-

दुर्जनः सज्जनो भूयात्सज्जनः शान्ति माप्नुयात् ।
वान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत् ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी ।
राष्ट्रोऽयं क्षोभरहितो साधकास्सन्तु निर्भया ॥
शिवमस्तु सर्व जगतां हित- -
निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु शान्तिं,
सर्वत्र जनाः सुखिनो भवन्तु ॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्- दुःख भाग भवेत् ॥
'यानि कानि च पापानि जन्मान्तर- कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण्या पदे- पदे ॥
यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत् ।
पूर्णं भवतु तत् सर्वं त्वत् प्रसादान्महेश्वरि ॥
ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वत- मूर्द्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता, गच्छ देवि यथा सुखम् ॥
उत्तमे शिखरे इति वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्दः-
गायत्री देवता गायत्री- विसर्जने विनियोगः ॥

अनेन यथाशक्ति कृतेन गायत्री- जपाख्येन- -
कर्मणा भगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम ॥

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टे. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (कश्मीर)	
	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
जन. १	६।४७	१७।१५	७।१५	१८। ९	६।२०	१६।५९	६।१४	१६।३९	७।१९	१७।४१	६।५४	१७।३९	७।२१	१७।२८	६।३५	१७।५०	७।२८	१७।२८	७।३३	१७।३४
६	६।४९	१७।१९	७।१७	१८।१२	६।२२	१७। ३	६।१४	१६।४२	७।१९	१७।४४	६।५५	१७।४३	७।२२	१७।३२	६।३७	१७।५३	७।२८	१७।३२	७।३४	१७।३७
११	६।४९	१७।२२	७।१८	१८।१५	६।२२	१७। ६	६।१४	१६।४६	७।१९	१७।४८	६।५४	१७।४६	७।२२	१७।३६	६।३८	१७।५६	७।२९	१७।३७	७।३४	१७।४१
१६	६।४९	१७।२६	७।१८	१८।१८	६।२२	१७।१०	६।१४	१६।४९	७।१९	१७।५४	६।५३	१७।४९	७।२१	१७।४१	६।३९	१७।५७	७।२८	१७।४१	७।३३	१७।४६
२१	६।४९	१७।३०	७।१८	१८।२२	६।२२	१७।१३	६।१३	१६।५३	७।१९	१७।५७	६।५३	१७।५२	७।२०	१७।४५	६।३९	१८। १	७।२६	१७।४५	७।३२	१७।५१
२६	६।४७	१७।३३	७।१८	१८।२४	६।२१	१७।१६	६।१३	१६।५७	७।१८	१८। १	६।५३	१७।५५	७।१८	१७।४९	६।३९	१८। ३	७।२४	१७।४९	७।३०	१७।५६
३१	६।४५	१७।३७	७।१७	१८।२८	६।२०	१७।२०	६।१२	१७। १	७।१६	१८। ५	६।५२	१७।५९	७।१६	१७।५४	६।३९	१८। ६	७।२२	१७।५४	७।२७	१८। ०
फर. ५	६।४३	१७।४१	७।१५	१८।३०	६।१८	१७।२३	६। ९	१७। ५	७।१३	१८। ९	६।५२	१८। २	७।१४	१७।५८	६।३८	१८। ८	७।१९	१७।५९	७।२४	१८। ५
१०	६।४०	१७।४४	७।१३	१८।३३	६।१५	१७।२६	६। २	१७। ८	७।१०	१८।१३	६।५१	१८। ५	७।११	१८। २	६।३७	१८।१०	७।१५	१८। ४	७।२०	१८।१०
१५	६।३७	१७।४८	७।११	१८।३५	६।१२	१७।२९	६। ३	१७।१२	७। ६	१८।१६	६।४८	१८। ८	७। ७	१८। ६	६।३५	१८।११	७।११	१८। ८	७।१६	१८।१४
२०	६।३३	१७।५१	७। ८	१८।३७	६। ९	१७।३२	५।५९	१७।१५	७। २	१८।१९	६।४५	१८।१०	७। २	१८।१०	६।३३	१८।१३	७। ६	१८।१२	७।११	१८।१८
२५	६।२९	१७।५४	७। ५	१८।३९	६। ५	१७।३४	५।५५	१७।१८	६।५८	१८।२२	६।४१	१८।१३	६।५६	१८।१४	६।३१	१८।१४	७। ०	१८।१६	७। ९	१८।२२
मार्च २	६।२४	१७।५६	७। १	१८।४१	६। १	१७।३७	५।५०	१७।२१	६।५४	१८।२५	६।३८	१८।१५	६।४९	१८।१८	६।२८	१८।१४	६।५३	१८।२०	७। ०	१८।२९
७	६।२०	१७।५९	६।५८	१८।४३	५।५७	१७।३९	५।४५	१७।२४	६।४९	१८।२८	६।३३	१८।१६	६।४३	१८।२१	६।२५	१८।१५	६।४७	१८।२४	६।५४	१८।२९
१२	६।१५	१८। १	६।५४	१८।४४	५।५२	१७।४१	५।४०	१७।२६	६।४४	१८।३१	६।२९	१८।१८	६।३७	१८।२५	६।२२	१८।१६	६।४०	१८।२९	६।४८	१८।३१
१७	६।१०	१८। ४	६।५०	१८।४५	५।४८	१७।४३	५।३५	१७।२९	६।३८	१८।३३	६।२५	१८।२०	६।३०	१८।२८	६।१९	१८।१६	६।३४	१८।३३	६।४२	१८।३६
२२	६। ४	१८। ६	६।४५	१८।४७	५।४३	१७।४४	५।२९	१७।३१	६।३२	१८।३६	६।२०	१८।२२	६।२४	१८।३१	६।१६	१८।१७	६।२८	१८।३६	६।३६	१८।३९
२७	५।५९	१८। ८	६।४१	१८।४८	५।३८	१७।४६	५।२४	१७।३४	६।२६	१८।३८	६।१५	१८।२३	६।१८	१८।३४	६।१२	१८।१७	६।२१	१८।३९	६।२९	१८।४२
अप्रै. १	५।५४	१८।१०	६।३७	१८।४९	५।३३	१७।४८	५।१८	१७।३६	६।२०	१८।४१	६।११	१८।२५	६।१२	१८।३८	६। ९	१८।१७	६।१५	१८।४२	६।२३	१८।४६
६	५।४९	१८।१३	६।३३	१८।५०	५।२९	१७।५०	५।१३	१७।३८	६।१५	१८।४४	६। ६	१८।२६	६। ६	१८।४१	६। ६	१८।१८	६। ८	१८।४५	६।१७	१८।५०
११	५।४३	१८।१५	६।२९	१८।५१	५।२४	१७।५२	५। ८	१७।४१	६।११	१८।४७	६। २	१८।२८	६। १	१८।४५	६। २	१८।१८	६। २	१८।४९	६।११	१८।५३
१६	५।३९	१८।१७	६।२५	१८।५३	५।२०	१७।५३	५। ३	१७।४३	६। ६	१८।४९	५।५८	१८।२९	५।५५	१८।४८	५।५९	१८।१८	५।५६	१८।५२	६। ५	१८।५६
२१	५।३४	१८।१९	६।२१	१८।५४	५।१५	१७।५५	४।५८	१७।४५	६। १	१८।५१	५।५४	१८।३१	५।४९	१८।५१	५।५७	१८।१९	५।५०	१८।५६	५।५९	१८।५९
२६	५।३०	१८।२२	६।१८	१८।५५	५।१२	१७।५७	४।५४	१७।४८	५।५६	१८।५४	५।५०	१८।३३	५।४४	१८।५४	५।५४	१८।२०	५।४५	१८।५९	५।५३	१९। ३
मई १	५।२६	१८।२४	६।१५	१८।५७	५। ८	१७।५९	४।५०	१७।५०	५।५२	१८।५७	५।४७	१८।३५	५।३९	१८।५८	५।५२	१८।२१	५।४०	१९। २	५।४८	१९। ६
६	५।२२	१८।२७	६।१२	१८।५९	५। ५	१८। २	४।४६	१७।५३	५।४८	१८।५९	५।४४	१८।३७	५।३५	१९। १	५।५०	१८।२२	५।३६	१९। ६	५।४३	१९। ९
११	५।१९	१८।२९	६।१०	१९। ०	५। २	१८। ४	४।४३	१७।५६	५।४५	१९। २	५।४१	१८।३९	५।३१	१९। ४	५।४८	१८।२३	५।३२	१९। ९	५।३९	१९।१३
१६	५।१६	१८।३२	६। ८	१९। २	५। ०	१८। ६	४।४०	१७।५९	५।४२	१९। ५	५।३९	१८।४१	५।२८	१९। ८	५।४७	१८।२४	५।२८	१९।१३	५।३६	१९।१६
२१	५।१४	१८।३५	६। ६	१९। ४	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।३९	१९। ८	५।३७	१८।४३	५।२५	१९।११	५।४६	१८।२५	५।२५	१९।१६	५।३३	१९।१९
२६	५।१२	१८।३७	६। ५	१९। ६	४।५६	१८।११	४।३६	१८। ४	५।३७	१९।११	५।३६	१८।४५	५।२२	१९।१४	५।४५	१८।२७	५।२२	१९।२०	५।३०	१९।२३
३१	५।११	१८।३९	६। ४	१९। ८	४।५५	१८।१३	४।३५	१८। ६	५।३५	१९।१३	५।३५	१८।४७	५।२०	१९।१७	५।४५	१८।२८	५।२०	१९।२३	५।२८	१९।२६
जून ५	५।११	१८।४२	६। ४	१९।१०	४।५५	१८।१५	४।३४	१८। ८	५।३५	१९।१५	५।३५	१८।४८	५।१९	१९।१९	५।४५	१८।३०	५।१९	१९।२५	५।२७	१९।२९
१०	५।११	१८।४४	६। ४	१९।११	४।५५	१८।१७	४।३४	१८।११	५।३५	१९।१८	५।३५	१८।४९	५।१९	१९।२१	५।४५	१८।३१	५।१८	१९।२७	५।२७	१९।३२
१५	५।११	१८।४६	६। ५	१९।१३	४।५५	१८।१८	४।३४	१८।१२	५।३५	१९।२०	५।३५	१८।५१	५।२०	१९।२२	५।४६	१८।३३	५।१९	१९।२९	५।२७	१९।३४
२०	५।१२	१८।४७	६। ६	१९।१४	४।५६	१८।२०	४।३५	१८।१४	५।३६	१९।२१	५।३६	१८।५३	५।२०	१९।२४	५।४७	१८।३४	५।२०	१९।३०	५।२८	१९।३५
२५	५।१३	१८।४८	६। ७	१९।१५	४।५७	१८।२१	४।३६	१८।१५	५।३७	१९।२२	५।३७	१८।५५	५।२१	१९।२६	५।४८	१८।३५	५।२१	१९।३२	५।२९	१९।३६
३०	५।१४	१८।४९	६। ८	१९।१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।३६	५।२२	१९।३४	५।३१	१९।३६

यह सूर्योदयास्त, किरण वक्री संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टे. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (कश्मीर)	
	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.
जुला ५	५।१६	१८।४९	६।१०	१९।१६	५। ०	१८।२२	४।३९	१८।१५	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	५।५१	१८।३६	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६
१०	५।१८	१८।४८	६।११	१९।१६	५। २	१८।२१	४।४१	१८।१५	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	५।५२	१८।३६	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५
१५	५।२०	१८।४७	६।१३	१९।१६	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	५।५३	१८।३६	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४
२०	५।२३	१८।४६	६।१५	१९।१५	५। ६	१८।१९	४।४६	१८।१२	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	५।५५	१८।३६	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२
२५	५।२५	१८।४४	६।१७	१९।१४	५। ८	१८।१८	४।४९	१८।१०	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	५।५६	१८।३५	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९
३०	५।२७	१८।४१	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ८	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	५।५७	१८।३४	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६
अग. ४	५।३०	१८।३८	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	४।५३	१८। ५	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	५।५८	१८।३२	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२
९	५।३२	१८।३५	६।२२	१९। ७	५।१४	१८।१०	४।५६	१८। १	५।५८	१९। ६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९। ७	५।५९	१८।३०	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७
१४	५।३४	१८।३१	६।२३	१९। ४	५।१६	१८। ६	४।५८	१७।५७	६। १	१९। २	५।५५	१८।४२	५।४७	१९। २	६। ०	१८।२८	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२
१९	५।३६	१८।२७	६।२४	१९। १	५।१८	१८। २	५। १	१७।५३	६। ३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	६। ०	१८।२५	५।५२	१९। ४	६। ०	१९। ६
२४	५।३९	१८।२२	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	५। ३	१७।४८	६। ५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	६। १	१८।२२	५।५५	१८।५८	६। ३	१९। १
२९	५।४१	१८।१७	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	५। ५	१७।४३	६। ७	१८।४८	६। ०	१८।३०	५।५६	१८।४६	६। १	१८।१९	५।५९	१८।५१	६। ६	१८।५६
सितं ३	५।४३	१८।१२	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	५। ७	१७।३८	६। ९	१८।४२	६। १	१८।२५	५।५८	१८।४०	६। १	१८।१५	६। २	१८।४५	६। ९	१८।५०
८	५।४४	१८। ७	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	५। ९	१७।३३	६।१२	१८।३७	६। २	१८।२१	६। १	१८।३४	६। १	१८।१३	६। ६	१८।३८	६।१२	१८।४३
१३	५।४६	१८। २	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	५।११	१७।२७	६।१४	१८।३१	६। ३	१८।१६	६। ४	१८।२८	६। १	१८। ९	६। ९	१८।३२	६।१५	१८।३७
१८	५।४८	१७।५६	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	५।१३	१७।२२	६।१७	१८।२६	६। ५	१८।११	६। ७	१८।२२	६। १	१८। ५	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०
२३	५।५०	१७।५१	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	५।१५	१७।१६	६।१८	१८।२०	६। ६	१८। ७	६।१०	१८।१५	६। १	१८। २	६।१५	१८।१८	६।२१	१८।२४
२८	५।५२	१७।४६	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	५।१७	१७।११	६।२०	१८।१४	६। ७	१८। २	६।१४	१८। ८	६। २	१७।५८	६।१८	१८।११	६।२४	१८।१७
अक्टू ३	५।५४	१७।४०	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	५।२०	१७। ५	६।२३	१८। ९	६। ९	१७।५७	६।१७	१८। १	६। २	१७।५५	६।२२	१८। ५	६।२८	१८।११
८	५।५६	१७।३५	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	५।२२	१७। ०	६।२६	१८। ४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	६। २	१७।५२	६।२५	१७।५८	६।३१	१८। ५
१३	५।५९	१७।३०	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	५।२४	१६।५५	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	६। २	१७।४८	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९
१८	६। १	१७।२५	६।३७	१८।११	५।३७	१७। ६	५।२७	१६।५०	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	६। ३	१७।४६	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३
२३	६। ४	१७।२१	६।३९	१८। ८	५।४०	१७। २	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	६। ४	१७।४३	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८
२८	६। ७	१७।१७	६।४०	१८। ५	५।४२	१६।५९	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	६। ५	१७।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवं. २	६।१०	१७।१४	६।४२	१८। २	५।४५	१६।५६	५।३६	१६।३८	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३६	१७।३०	६। ६	१७।३९	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८
७	६।१३	१७।१०	६।४५	१८। ०	५।४८	१६।५३	५।३९	१६।३४	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	६। ८	१७।३८	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४
१२	६।१६	१७। ८	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	५।४३	१६।३२	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	६।१०	१७।३६	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०
१७	६।२०	१७। ६	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	५।४६	१६।३०	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	६।१२	१७।३६	६।५७	१७।२२	७। ३	१७।२७
२२	६।२३	१७। ५	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	५।५०	१६।२८	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	६।१४	१७।३६	७। २	१७।१९	७। ८	१७।२५
२७	६।२७	१७। ४	६।५६	१७।५७	६। १	१६।४८	५।५४	१६।२८	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७। ०	१७।१७	६।१७	१७।३६	७। ६	१७।१७	७।१२	१७।२४
दिसं २	६।३१	१७। ४	६।५९	१७।५७	६। ४	१६।४८	५।५७	१६।२७	७। २	१७।३१	६।३८	१७।२८	७। ३	१७।१६	६।१९	१७।३७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४
७	६।३४	१७। ४	७। २	१७।५८	६। ७	१६।४८	६। १	१६।२८	७। ६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७। ७	१७।१६	६।२२	१७।३८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४
१२	६।३७	१७। ५	७। ५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६। ४	१६।२९	७। ९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।२५	१७।४०	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५
१७	६।४१	१७। ७	७। ८	१८। १	६।१३	१६।५१	६। ७	१६।३१	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।२८	१७।४२	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६
२२	६।४३	१७। ९	७।११	१८। ३	६।१६	१६।५४	६।१०	१६।३२	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।३०	१७।४४	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८
२७	६।४५	१७।१२	७।१३	१८। ६	६।१८	१६।५६	६।१२	१६।३५	७।१७	१७।३८	६।५२	१७।३६	७।१९	१७।२३	६।३२	१७।४७	७।२५	१७।२३	७।३१	१७।३१
३१	६।४७	१७।१४	७।१४	१८। ८	६।२०	१६।५८	६।१४	१६।३८	७।१९	१७।४०	६।५३	१७।३८	७।२१	१७।२७	६।३४	१७।५०	७।२७	१७।२७	७।३३	१७।३४

यह सूर्योदयास्त, किरण वक्री भवन संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

हर्शल का संक्षिप्त फल—विचार

सूर्य की एक प्रदक्षिण करने में इस ग्रह को लगभग ८४ वर्ष लगते है, अर्थात् यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष तक रहता है। यह ग्रह शनि से अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ ग्रह है। आकस्मिक घटना तथा रोगोत्पादक विलक्षण प्रकृति का वियोग और स्थान त्याग प्रिय है। वर्तमान समय इस जगत् में मोटर, रेलवे, तार, बिजली, टेलीफोन आदि यन्त्रों का शोध तथा नित्य प्रयोग में और वायुप्रकोप सम्बन्धी इन्फ्लूएंजा आदि रोगों से तथा सुधारप्रिय देशों में स्त्री, पति, माता, पिता, बन्धु आदि के त्याग से सिद्ध होता है कि इस ग्रह का प्रभाव जगत् के मनुष्य प्राणी पर पड़ने लगा है। इस ग्रह की कुम्भ राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि शनि कुम्भ का स्वामी नहीं, प्रत्युत जैसे वृषभ और तुला का स्वामी शुक्र होता है, फिर भी वृषभ राशि का राहु स्वगृही माना जाता है, इसी प्रकार कुम्भ में हर्शल हो तो स्वगृही माना जाता है। यह वायुवेग- प्रिय ग्रह है। जिस पुरुष की कुण्डली में चन्द्र हर्शल से युक्त और स्त्री की कुण्डली में रवि हर्शल से युक्त हो अथवा केन्द्र तथा प्रतियोग करता हो तो ऐसे पुरुष या स्त्री को पूर्ण दाम्पत्य सुख नहीं होता। एवम् पाँचवें सातवें स्थान में हर्शल हो तो उस पुरुष और स्त्री की चित्तवृत्ति को चंचल करता है।

राशि विचार—हर्शल मिथुन, तुला और कुम्भ राशि में अत्यन्त बलवान् समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि में अत्यन्त घातक फल देता है।

भाव विचार—यह ग्रह ५- ९- १०- ११वें स्थान में शुभ और अन्य स्थानों में अशुभ माना गया है। लग्न में हर्शल हो तो मनुष्य विलक्षण स्वभाव का होगा। किन्तु मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का हो तो तीव्र बुद्धि और शोधक होगा। द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक सुख के लिए प्रतिकूल और अशुभ राशि का हो तो द्रव्य- हानि। तृतीय भाव में भ्रातृ सुख विघातक, सदा स्थानान्तर, यान्त्रिक वाहन से प्रवास योग। चतुर्थ भाव में आप्तवर्गों से शत्रुत्व, आयुष्य के अन्त समय में द्रव्य- हानि, भूमि- सम्बन्धी कलह। पंचम भाव में सन्तति- प्रतिबन्ध अथवा नाश, सन्तति सुख का अभाव। षष्ठ भाव में मातुलसुख का अभाव, रोग वृद्धि। सप्तम भाव में वैवाहिक जीवन दाम्पत्य सुख का नाश, परराष्ट्र सम्बन्ध। अष्टम भाव में आकस्मिक मृत्यु। नवम भाव में धार्मिक संस्था से सम्बन्ध, शास्त्रीय शोध में रुचि। दशम भाव में अधिकारी वर्ग से सम्बन्ध। ग्यारहवें भाव में कायदे कौंसिल देशी संस्था आदि से सम्बन्ध। बारहवें भाव में द्रव्य हानि, ऋण- योग, शत्रु के कारण कष्ट।

नेपच्यून का संक्षिप्त फल—विचार

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग १६५ वर्ष का समय लगता है, अर्थात् एक राशि में लगभग १३,३/४ वर्ष तक रहता है। यह [illegible] है। [illegible] इसकी राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नहीं है, प्रत्युत मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होते हुए भी जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का नेपच्यून स्वगृही माना जाता है। इसका अर्थ, धर्म गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जल में रंग मिलने से जिस प्रकार जल का रंग बदल जाता है—उसी प्रकार नेपच्यून से जो ग्रह युक्त होगा, वैसे ही वह फल देता है। इसका प्रभाव रुधिराभिसरण में अधिक होता है। यह ग्रह १- ५- ९वें स्थान में सत्वप्रधान, २- ४- ६- ८- १२वें तम प्रधान, ३- ७- १०- ११वें स्थान में रज प्रधान समझा जाता है। किन्तु यदि अशुभ स्थान और राशि में हो तो मनुष्य का स्वभाव पापवृत्ति की ओर होता है। इस ग्रह को ११- ७- ३- ४- १२ इस क्रम से राशि प्रियतर हैं। शेष राशियाँ अप्रिय हैं। यह ग्रह १- ३- ५- ९- ११वें स्थान में कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन, तुला राशि में स्थित हो तो ऊँचा फल मिलना निश्चित है।

भावफल—लग्न में नेपच्यून हो तो जल प्रवासी, गौरवपूर्ण, निद्रारोगी। दूसरे भाव में हो तो साम्पत्तिक- हानि, कुटुम्ब- हानि। तीसरे भाव में १- ३- ५- ९- ११वें स्थान के स्वामी शुभ योग करता हो तो प्रवास से लाभ, मानसिक उत्कर्ष। चतुर्थ भाव में माता को कष्ट, सापत्न मातृ योग, पापग्रह से युक्त हो तो कारावास, कृषि में हानि। पंचम भाव में पंचमेश और गुरु से युक्त हो तो पुत्र सन्तति, पंचमेश और शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति, शुक्र से अशुभ योग करता हो तो व्यभिचार वृत्ति। छठे भाव में र. चं. से युक्त या दृष्ट हो तो मूत्राशय रोग, अतिसार, संग्रहणी, विश्वासघात। ७वें भाव में सुन्दर रूप और स्वभाव की स्त्री का लाभ, स्त्री राशि या स्त्री ग्रह से युक्त हो तो स्त्री से लाभ, पापग्रह से पीड़ित हो तो स्त्री कष्ट, श. मं. रा. से युक्त और दृष्ट हो तो अत्यन्त अशुभ। अष्टम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो तो आकस्मिक लाभ पाप ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो गुह्य भाग में विकार, राजदरबार में हानि। नवम् भाव में चर राशि का हो तो प्रवासी। दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट व्यापार में हानि। ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र, जामाता, बन्धु लाभ, आदि विचार करे। बारहवें भाव में चन्द्र से युक्त हो तो जहाज में नौकरी का योग, मंगल से युक्त हो तो अस्पताल सम्बन्धी नौकरी, शनि से युक्त हो तो गुप्त विभाग की नौकरी। यह ग्रह हर्शल से अधिक सामर्थ्यवान् है। संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। इसभाव की राशि, स्वामी, ग्रह- दृष्टि ग्रहपूर्ति आदि का शुभाशुभ विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

मंगली योग परिहार—यदि कन्या की जन्मकुण्डली में १- ४- ७- १२वें घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण (१- ४- ५- ७- ९- १०) में बृहस्पति हो तो मंगलीदोष न होकर वह कन्या सुख सौभाग्य सम्पन्न रहती है। यथा—

"वाचस्पतौ नवमपंचमकेन्द्र- संस्थे, जाताऽङ्गना भवति पूर्ण- विभूतियुक्ता।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या, सप्ताष्टके यदि भवेदशुभग्रहोऽपि ॥"

विदेश और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नगर देश नाम	अक्षांश अं. क.	ग्रीनिच से रेखांश अं. क.	दिल्ली से देशान्तर घं. मि.
अदन (एडन अरब)	उ. १३।२५	पू. ४५।०	—२।९
अर्जेण्टाइना (द. अमे.)	द. २६।१२	प. ६४।४५	—९।२८
आस्ट्रेलिया दक्षि०	द. ३२।०	पू. १४६।१७	+४।३६
काबुल (अफगानिस्तान)	उ. ३४।३०	पू. ६९।१७	—०।३२
कांडी (सीलोन लंका)	उ. ७।११	पू. ८०।३२	+०।१३
कांगो (प. अफ्रीका)	द. ६।०	पू. १५।५०	—४।१६
काहिरा (मिस्र)	उ. ३०।२	पू. ३१।१५	—३।१४
क्वेटा (बिलोचिस्तान)	उ. ३०।१३	पू. ६७।१	—०।४१
ग्रीनिच (यूरोप)	उ. ५१।२०	०।०	—५।१९
जेनेवा (स्विट्जर. यू०)	उ. ४६।१३	पू. ६।७	—४।४५
जेरुसलम (इजरा०)	उ. ३१।४६	पू. ३५।१४	—२।४८
ट्रांसवाल (द. अफ्रीका)	द. २५।०	पू. २९।०	—३।१३
ट्रिपोली (उ. अफ्रीका)	उ. ३२।४५	पू. १३।१५	—४।१६
टाकियो (जापान)	उ. ३५।४२	पू. १३९।४५	+४।१०
तेहरान (ईरान)	उ. ३५।४१	पू. ५१।२५	—१।४३
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ. ४०।४३	प. ७४।०	—१०।५
नाईरोबी (पू० अफ्रीका)	द. १।२०	पू. ३६।४९	—२।४२
पेरिस (फ्रांस)	उ. ४८।५०	पू. २।२०	—५।०
पेकिंग (चीन)	उ. ३९।५५	पू. ११६।२४	+२।३७
बर्लिन (जर्मनी)	उ. ५२।३२	पू. १३।२५	—४।१५
बल्गारिया (यूरोप)	उ. ४३।१८	पू. २६।१७	—३।२४
बगदाद (ईराक)	उ. ३३।१८	पू. ४४।२७	२।११
मक्का (अरब)	उ. २१।२५	पू. ४०।१२	—३।२८
मास्को (रूस)	उ. ५५।४५	पू. ३७।३७	—२।३९
माण्डले (ब्रह्मा)	उ. २२।०	पू. ९६।८	+१।१६
रोम (इटली)	उ. ४१।५५	पू. १२।२८	—४।१९
लंदन (इंगलैंड)	उ. ५१।३०	प. ०।५	—५।१९
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१।५	+०।५५
वाशिंगटन (अमेरिका)	उ. ३८।५५	प. ७७।४	—१०।१९
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१९	पू. १०३।४५	+१।४९
हांगकांग (चीन)	उ. २२।०	पू. ११४।११	+२।२७

रवि क्रांति

तारीख	जन० द०		फरव० द०		मार्च द०		अप्रेल उ०		मई उ०		जून उ०		जुलाई उ०		अगस्त उ०		सित० उ०		अक्टु० द०		नवम्बर द०		दिस० द०	
	अं.	क	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	२३	४	१७	१०	७	५२	४	२१	१४	५६	२१	५९	२३	९	१८	९	८	२८	२	५९	१४	१६	२१	४३
२	२२	५९	१७	१	७	२९	४	४४	१५	१४	२२	७	२३	५	१७	५४	८	७	३	२२	१४	३६	२१	५३
३	२२	५४	१६	४४	७	६	५	७	१५	३२	२२	१५	२३	१	१७	३९	७	४५	३	४६	१४	५५	२२	१
४	२२	४८	१६	२६	६	४३	५	३०	१५	४९	२२	२२	२२	५६	१७	२३	७	२३	४	९	१५	१३	२२	१०
५	२२	४२	१६	९	६	२०	५	५३	१६	७	२२	२९	२२	५१	१७	७	७	१	४	३२	१५	३२	२२	१८
६	२२	३२	१५	५०	५	५७	६	१६	१६	२४	२२	३६	२२	४५	१६	५१	६	३८	४	५५	१५	५०	२२	२६
७	२२	२८	१५	३२	५	३४	६	३८	१६	४१	२२	४२	२२	३९	१६	३४	६	१६	५	१८	१६	८	२२	३३
८	२२	२१	१५	१३	५	११	७	१	१६	५७	२२	४७	२२	३३	१६	१८	५	५४	५	४१	१६	२६	२२	४०
९	२२	१३	१४	५४	४	४७	७	२३	१७	१३	२२	५३	२२	२६	१६	१	५	३१	६	४	१६	४३	२२	४६
१०	२२	५	१४	३५	४	२४	७	४६	१७	३०	२२	५७	२२	१९	१५	४३	५	८	६	२७	१७	१	२२	५२
११	२१	५६	१४	१६	४	०	८	८	१७	४५	२३	३	२२	११	१५	२६	४	४७	६	५०	१७	१७	२२	५८
१२	२१	४६	१३	५६	३	३७	८	३०	१८	१	२३	७	२२	३	१५	९	४	२४	७	१२	१७	३४	२३	३
१३	२१	३७	१३	३६	३	१३	८	५२	१८	१६	२३	११	२१	५५	१४	५०	४	१	७	३५	१७	५०	२३	७
१४	२१	३७	१३	१६	२	५०	९	१४	१८	३०	२३	१४	२१	४६	१४	३२	३	३८	७	५७	१८	५	२३	११
१५	२१	१६	१२	५६	२	२६	९	३५	१८	४४	२३	१७	२१	३७	१४	१३	३	१५	८	२०	१८	२२	२३	१५
१६	२१	५	१२	३५	२	२	९	५७	१८	५८	२३	२०	२१	२७	१३	५५	२	५२	८	४२	१८	३७	२३	१८
१७	२०	५४	१२	१४	१	३८	१०	१८	१९	१२	२३	२२	२१	१७	१३	३६	२	२८	९	४	१८	५२	२३	२०
१८	२०	४२	११	५३	१	५	१०	३९	१९	२६	२३	२४	२१	७	१३	१६	२	४	९	२५	१९	७	२३	२३
१९	२०	३०	११	३२	०	५८	११	०	१९	३९	२३	२५	२०	५८	१२	५७	१	४	९	४७	१९	२०	२३	२४
२०	२०	१७	११	११	०	३४	११	२१	१९	५२	२३	२६	२०	४७	१२	३६	१	१८	१०	९	१९	३४	२३	२५
२१	२०	५	१०	४९	०	१०	११	४१	२०	४	२३	२७	२०	३५	१२	१८	०	५६	१०	३०	१९	४८	२३	२६
२२	१९	५१	१०	२८	उ	१४	१२	२	२०	१७	२३	२७	२०	२४	११	५८	०	३२	१०	४१	२०	४	२३	२७
२३	१९	३८	१०	६	०	३७	१२	२२	२०	२७	२३	२७	२०	१२	११	३८	०	९	११	१३	२०	१४	२३	२७
२४	१९	२४	९	४४	१	, १	१२	४१	२०	४०	२३	२६	२०	०	११	१७	०	१५	११	३४	२०	२७	२३	२६
२५	१९	८	९	२२	१	२५	१३	२	२०	५१	२३	२५	१९	४७	१०	५७	०	३९	११	५६	२०	३९	२३	२५
२६	१८	५४	९	०	१	४८	१३	२१	२१	२	२३	२३	१९	३४	१०	३६	१	२	१२	१६	२०	५१	२३	२३
२७	१८	३९	८	३८	२	१२	१३	४१	२१	१२	२३	२१	१९	२०	१०	१५	१	२६	१२	३७	२१	२	२३	२१
२८	१८	२३	८	१५	२	४५	१४	३	२१	२२	२३	१९	१९	६	९	५४	१	४९	१२	५७	२१	१३	२३	१९
२९	१८	७	८	४	३	१५	१४	१९	२१	३२	२३	१६	१८	५३	९	३३	२	१२	१३	१७	२१	२४	२३	१६
३०	१७	५१	०	०	३	४२	१४	३७	२१	४१	२३	१३	१८	३८	९	१२	२	३६	१३	३७	२१	३४	२३	१२
३१	१७	३५	०	०	३	५६	०	०	२१	५०	०	०	१८	२४	८	५०	०	०	१३	५७	०	०	२३	९

"अनुभव सिद्ध अमोघ मारुति महामन्त्र"

वार्ता पुरानी है। लगभग ६२ वर्ष पहले की जब मैं बनारस में विद्याध्ययन हेतु निवास कर रहा था। ललिता घाट पर एक षड्दर्शन के आचार्य एवं पुराण साहित्यादि के तत्ववेत्ता, श्रीमद्भागवत के महोपाध्याय निवास करते थे। उनके यहाँ केवल श्रीमद्भागवत का रहस्य पूर्ण मार्मिक अध्यापन होता था। वयस्क अवस्था के ४०-५० विद्यार्थी पठनार्थ जाया करते थे। पंडितराज प्रत्येक श्लोक की व्याकरणी व्याख्या, कथा प्रसंग के माध्यम से रहस्यों का उद्घाटन भक्ति- ज्ञान और वेदांत आदि के विशद् प्रवचन साथ में स्वयं किया करते थे

उनके यहाँ यह नियम था कि उस बड़े होल में सभी खूंटियों पर तुलसी की मालायें ढेरों सी लगी रहती थी। जो भी कोई विद्यार्थी वहाँ जाते थे उनसे वे १०८ निम्न मन्त्र का जाप कराते थे। उसके बाद ही भागवत- पाठ आरम्भ करते थे।

आचार्य वर बड़े तेजस्वी, मनस्वी और मध्यकाय गौरवर्ण के थे। उनकी वाणी में वैदुष्य के साथ- साथ माधुर्य और ओज भी प्रचुर मात्रा में भरा हुआ था। वे अञ्जनानन्दन के परम भक्त थे।

उनका अभीष्ट जाप मन्त्र यह था:-
"ॐ मर्कटेश महोत्साह सर्वव्याधिविनाशनः"
शत्रून्संहर मांरक्ष श्रियं दापय देहि मे। ॐ ॥"

अर्थ (शब्दार्थ) ऐतिहासिक संकेत पूर्ण रहस्यार्थ से, यदि इसकी सप्रमाण व्याख्या की जाये तो लेख का कलेवर बहुत बड़ा हो जायेगा। मैं विश्वास करता हूँ कि मारुति के विषय में अभिज्ञ विद्वान् इस सांकेतिक अर्थ से भी गम्भीरता को समझ लेगें।

हे मर्कटेश! कपीश्वर समुद्रोलंघन, अशोक वन विध्वंशन, लंका दहन, आदि आदि अपरिमेय शक्तिशाली महान् कार्यों में अदम्य उत्साहों से सम्पन्न हे महोत्साह! लंका समर में मृतप्राय सुमित्रानन्दन के जब प्राणान्त का समय संनिकट था तब द्रोणागिरी पर्वत सहित संजीवनी औषधी लाकर लक्ष्मण जी के प्राण बचाये। तथा उपासकों की मानसिक व शारीरिक सभी प्रकार की व्याधियों का नाश करने वाले आप "सर्वव्याधि विनाशक" हैं। हे शरणागत वत्सल! शत्रु रूप राक्षसों का संहार करने वाले मेरे शत्रुओं का संहार भी कीजिये। मेरी रक्षा कीजिये। आपने लक्ष्मी रूप सीता को भगवान् रामचन्द्र जी से मिलाया है। मुझे भी धन रूप लक्ष्मी प्रदान कीजिये, दिलाइये इत्यादि।

यह महामंत्र मेरा और मेरे मिलने वाले सहयोगियों का अनुभव सिद्ध है। इस मन्त्र के जाप से सब रोगों की निवृत्ति, शत्रुओं का विनाश, इच्छित लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है। श्री हनुमान जी के आगे बैठ कर उनकी विधिवत् पूजा करके इस मन्त्र का १०८ जाप करें।

यदि शत्रु संहार करने की भावना (इच्छा) है तो मन्त्र के आगे ॐ ह्रीं और अन्त में ह्रीं ॐ लगावें।

यदि विद्या प्राप्ति, परीक्षा में सफलता की इच्छा है तो ॐ ऐं लगाकर मन्त्र बोले। ऐसे ही अन्त में भी ऐं ॐ लगावें।

यही लक्ष्मी प्राप्ति के लिए ॐ क्लीं लगा कर मन्त्र का उच्चारण करें। और क्लीं ॐ लगाकर मन्त्र समाप्त करें।

श्रद्धा, निष्ठा, दृढ़ता और भक्ति के साथ की हुई यह मर्कटेश मंत्र की साधना सर्वथा सफल एवं अमोघ है। मुझे स्वयं का अनुभव है जो लगभग ६० वर्ष का है। मैं अब अति बृद्ध हो चुका हूँ। अतः सर्व लोकोपकारार्थ प्रकाशित करा रहा हूँ।

इस मंत्र का सृजन अनेक हनुमत्त उपासना ग्रन्थों से उद्धृत करके किया गया प्रतीत होता है। कुछ भी हो मंत्र महामन्त्र है। यह प्रार्थना परक होने से इसमें किसी प्रकार का खतरा और भय भी नहीं है। इसमें पूजा विधान के सिवाय और कोई न्यासादि विधि भी नहीं है। नित्य करते रहने से मन्त्रोक्त लाभ सतत् होते रहते है। दशांश हवन तर्पण आदि का भी विधान नही है।

"आशुधनप्रद सिद्ध सावर महालक्ष्मी मंत्र"

यद्यपि यह मंत्र पहले पंचांग में प्रकाशित हो चुका है और अनेक साधक इसको बहुत प्रान्तों में करते हुए लाभान्वित हो रहे हैं। बहुतो की माँग है कि इसी मंत्र को पुनः पंचांग में और पत्रिका में प्रकाशित कराया जाय। मेरे पास भी इसकी माँगें आरही हैं और आपके पास भी पहुँच रही हैं, ऐसा उन्हीं के पत्रों से विदित हुआ। मेरा साग्रह अनुरोध है कि इस वर्ष पुनः पंचांग में भी प्रकाशित कराया जाय। मंत्र यह है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिन्यै महालक्ष्मै अस्माकं दारिद्रयं नाशय प्रचुरं धनं देहि, देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ"

इस मंत्र के १०८ जप कम से कम नित्य करें। किसी भी समय कोई भी शुद्ध होकर एकासन पर बैठ कर दिन या रात्रि में कर सकते हैं।

स्त्री- पुरुष सब कर सकते हैं। स्वयं करने में न्यास ध्यान आदि की आवश्यकता नहीं है। मंत्र अमोघ और शतशः अनुभूत सिद्ध है और हो रहा है। साधक जप करके लाभ उठावें व इसका चमत्कार देखें। जहाँ शंका हो पोस्टेज भेजकर मुझे पूछ लेवें।

गायत्री मन्त्र की तरह नित्य जप करना चाहिये। कहीं शंका हो तो पोस्टेज भेजकर पत्र द्वारा पूछ लेवें। उसकी कोई फीस नहीं होगी। पता यह है:--

पता:—
स्व० श्री पं० चन्द्रभूषण शास्त्री
काव्यतीर्थ
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

"ओ३म्"

तान्त्रिक शोध के सन्दर्भ में:–

"महाविद्या श्रीबगलामुखी के मन्त्रादि सम्बन्धित गुरुगम्य ज्ञान का अनुसन्धानात्मक विवेचन"

ले. "कापालिक"

महाविद्या भगवती श्री बगलामुखी से सम्बन्धित प्रस्तुत शोध पत्र का प्रकाशन विगत चार वर्षों से इस सुप्रसिद्ध श्री विश्वविजय पंचांग में धारावाहिक क्रम से होता आ रहा है। विक्रम सम्वत् २०४१ से २०४४ तक के चारों पंचांगों में दश विभागों वाले इस लेख के क्रमशः आठ भागों का प्रकाशन हो चुका है। गत सम्वत् २०४४ के इस पंचांग की पृष्ठ सख्या १२९ से १३४ तक पर लेख के आठवें विभाग (८) मन्त्रराज के शुद्ध रूप का निर्णय के अन्तर्गत इस भाग के पूर्वार्ध का विवेचन किया गया है। जिसमें विभिन्न सुप्रसिद्ध तन्त्रग्रन्थों में माता-पीता के मूलमन्त्र से सम्बन्धित जिन अशुद्ध रूपों का जिस प्रकार से निरुपण किया है, उसका प्रमाणों सहित विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। आइए !सम्वत् २०४५ के इस पंचांग में शोधपत्र के आठवें विभाग के उत्तरार्द्ध भाग, मंत्र के "शुद्ध रूप" का विचार-विमर्श पूर्वक निर्णय करें।

पिछले वर्ष मूलमन्त्र की अशुद्धता को लेकर जिन प्रामाणिक तन्त्र ग्रन्थों के नामो का उल्लेख किया गया है उनके विषय में आप जिज्ञासा कर सकते है कि उन सभी प्रसिद्ध ग्रन्थों में महाविद्या श्री बगलामुखी के मूलमन्त्र से सम्बन्धित अशुद्ध रूपवाले मन्त्रोद्धार का ही संग्रह कैसे किया गया? एक भी संग्रह कर्ता ग्रन्थकार उसके सही और शुद्ध रूप का प्रकाशन (संग्रह) करने में समर्थ या सफल क्यों नहीं हुआ? आपकी जिज्ञासा स्वाभाविक होगी। उत्तर में निवेदन है कि – गतवर्ष लेख के अन्तिम अंश में आपने प्रमाणों सहित यह प्रत्यक्ष रूप से पढ़ ही लिया है कि आर्य सभ्यता और संस्कृति के ईश्वरीय ज्ञान से सम्बन्धित विश्वमानव समाज के सर्वमान्य आदि ग्रन्थ "वेदों" का आर्येतर लोगों ने कितना कुत्सित, अश्लील,अनर्गल, अप्रामाणिक, अप्राकृतिक, अनुचित एवं घृणित अनर्थ करके उसे सर्वसाधारण में प्रचुरता से प्रचारित और प्रसारित किया। हमारा उद्देश्य उन्होंने ऐसा क्यों किया ? इस बात पर विचार करने का यहां नहीं है। किसी भी कारण विशेष या कारणों को लेकर उन्हों ने ऐसा अशास्त्रीय अनर्थ किया होगा। परन्तु किया, यह प्रमाण सहित आज हमारे सामने है। उन्होंने यह मनगढन्त कुत्सित कुकार्य किया। इसके नैपथ्य (Back ground)में मुख्य कारण यही समझ में आता है कि उनके पास गुरु परम्परा से प्राप्त प्रामाणिक "गुरु गम्य ज्ञान" नहीं था। अन्यथा वे ऐसा निन्दित कार्य नहीं करते।

आज के बहुत से सनातन धर्मावलम्बी आचार्यादि आधुनिक आर्यसमाज के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक स्वामी श्री दयानन्द जी सरस्वती पर यह आरोप लगाते नजर आते है कि – "दयानन्द सरस्वती ने अपने भाष्य में वेदों के अर्थ का अनर्थ प्रतिपादित किया है" और वे (सनातन धर्माचार्यादि) सायण, उव्वट, महिधर रावणादि दक्षिणायतों के वेद भाष्यों को ही प्रमाणिक मानते है। आर्यसमाज दयानन्दजी सरस्वती के द्वारा किए गए वेद-भाष्य कोनहीं। यह उनकी पूर्वाग्रहग्रसित बुद्धि का ही दोष है। मन्द बात तो यह कि श्रीगणेश में तो कट्टर सनातन धर्मी परिवार वाले दयानन्द जी ने भी अपनी ज्ञान-पिपासा की शान्ति के लिए दक्षिणायती आर्येत्तर समाजवाले विद्वानों के ही उन प्रचलित और सहज सुलभ वेद-भाष्यों को पढा था। परन्तु ईश्वरीय कृपा से उनकी नीर-क्षीर न्याय के सिद्धान्तवाली प्रतिभा सम्पन्न विवेक बुद्धि ने उन भाष्यों को हृदय से स्वीकार नहीं किया। दयानन्दजी वेदों के ईश्वर-परक यथार्थ ज्ञान की खोज यात्रा में विचरते हुए सौभाग्य वश अपनी मधुकरी ज्ञान वृत्ति के कारण अन्तर्मुनि दण्डी स्वामी श्री विरजानन्द जी सरस्वती के पास जा पहुंचे जो किसी योग्य शिष्य के आने की प्रतीक्षा में [illegible] गुरु परम्परा से प्राप्त वेदों के ईश्वरीय ज्ञान की ज्योति जगाए बैठे थे। दोनों में परस्पर हुए वार्त्तालाप के दौरान परमपूज्यपाद तपस्वी श्री विरजानन्द जी ने नवागन्तुक दयानन्द जी की पूर्वपठित सब ग्रन्थों को आश्रम के पीछवाड़े बहन वाली पवित्र नदी यमुनाजी में बहाकर आने की सलाह दी सत्य-ज्ञान-पिपासु दयानन्दजी ने उन के उस परामर्श (आदेश) को शिरोधार्य किया एव अपने पूर्व पठित सभी ग्रन्थ यमुना जी में बहाकर आगए। भावार्थ यह है कि उन्होंने जो कुछ भी पहले पढा था, उसे सत्य ज्ञान पाने की अभिलाषा के कारण त्याग दिया। भुलादिया और फिर नए सिरे से दण्डी स्वामी महात्मा विरजानन्द जी सरस्वती महाराज से वह गुरु गम्य ज्ञान प्राप्त किया जो ऊपर लिखे अनुसार परम पूजनीय स्वामी जी परम्परागत रूप से गुरु-शिष्य परम्परा से प्रचलित अपने गुरु महाराज से प्राप्त कर अपने मेंउस दिव्य ईश्वरीय ज्ञान की ज्योति को जागृत किए हुए किसी सुयोग्य पात्र (शिष्य) को देने के लिए ही अपनी योग शक्ति से प्रतीक्षा रत थे।

जो लोग यह बात सोचते है या कहते है कि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का भाष्य अपनी बुद्धि से किया, वे गलत है। उनकी यह धारणा गलत है। उनका यह सोचना और कहना भी गलत है। वास्तविक सत्य तो यह है कि आर्य जाति के धार्मिक ग्रन्थ "वेदों" का ईश्वरीय ज्ञान तो उन्हें प्रचलित गुरु परम्परा से भाष्य-स्वरूप अपने गुरुपाद श्री विरजानन्द जी सरस्वती से आशीर्वाद स्वरूप मिला था। अन्यमुनि योगीराज स्वामी श्री विरजानन्दजी दूरदर्शी थे। इसीलिए उन्होंने गुरु दक्षिणा में दयानन्दजी से यही मांगा कि – "तुम इस दिव्य ईश्वरीय ज्ञान को गुप्त मत रखना। इसे सर्वसाधारण में प्रचुरता से प्रचारित और प्रसारित करना। इस अमृत से सर्वसाधारण की ज्ञानपिपासा शान्त होगी, अन्यथा, सुयोग्य शिष्य की प्रतीक्षा-प्रतीक्षा में कभी यह दिव्यज्ञान लुप्त हो जायेगा।" अतः इससे यह सिद्ध होता है कि विद्यार्थी से सरस्वती बने स्वामी श्री दयानन्दजी ने तो अपने गुरु महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करके गुरु परम्परा से प्राप्त उस दिव्य गुरुगम्य ज्ञान को खुले दिल से संसार के मानवमात्र का पथ-प्रदर्शन करने के लिए एवं प्राणीमात्र के कल्याणार्थ इसका प्रचुर प्रचार एवं प्रसार किया है। जिसे उस समय भी परम्परागत रूढीवादी प्रथा के अनुसार कोई भी व्यक्ति "न दास्यंदुरात्मने"–"पिता पुत्र न दीयते" वाली कहावतों को चरितार्थ करते हुए प्रकट तक नहीं करता था। यानि कि पिता अपने पुत्र को भी गुरु परम्परा से प्राप्त ज्ञान नहीं देता था। इसी सकीर्ण वृत्ति एवं रूढीवादी मनोभावना के कारण हमारा विपुल ज्ञान साहित्य आज लुप्त प्राय हो गया है। परन्तु महात्मा विरजानन्दजी महाराज की अनुभव पूर्ण दूरदर्शिता ने यह भाप लिया था कि सुयोग्य पात्र (शिष्य) की खोज-खोज में यह परम्परागत गुरु गम्य दिव्य ईश्वरीय ज्ञान एक दिन लुप्त हो जाएगा। लुप्त होने की अपेक्षा तो यह अच्छा रहेगा कि इसका सर्व साधारण में प्रचुर प्रचार और प्रसार करवाया जावे। फलस्वरूप आने वाले कराल कलुषित काल में भी यह बचा रह सकेगा।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक स्वामी दयानन्दजी सरस्वती वे प्रथम आर्य विद्वान है जिसने अपने गुरु महाराज की आज्ञा से सर्वप्रथम गुरु परम्परा से प्राप्त गुरु गम्य ज्ञान से वेदों का भाष्य कर उसे प्रचुरता पूर्वक प्रचारित और प्रसारित किया, सूत्रात्मक आर्य-धर्म ग्रन्थ वेदों का शास्त्रीय मर्यादानुसार प्राकृतिक, प्रामाणिक, उपयोगी एव समुचित शुद्ध भाषा-भाष्य करने वाले वे प्रथम उत्तरी-भारतीय आर्य विद्वान है। उनके पहले जितने भी वेद भाष्य प्रचलित, प्रचारित एवं प्रसारित हुए है, वे सब आर्येतर जाति के दक्षिणायत लोगों के द्वारा किए गए है। उत्तरी-भारतीय आर्य एवं दक्षिण भारतीय द्राविड़ों की सभ्यता-संस्कृति में पर्याप्त विभेद आदिकाल से ही रहा है। इसीलिए उन दोनों संस्कृतियों के अनुसार किए गए वेद-भाष्यों में भी विभेद एवं भिन्नता है परन्तु "वेद" आर्यधर्म ग्रन्थ हैं। इसलिए इनका आर्यपरम्परा वादी भाष्य ही शुद्ध है।

उपर्युक्त विवेचित एव वर्णित प्रत्यक्ष प्रामाणिक उदाहरण से कोई यह न समझ लेना कि मै कोई आर्य समाजी हू और आर्य समाज एवं उसके प्रर्वतक स्वामी दयानन्दजी सरस्वती की प्रशंसा एवं प्रशस्ती में यह सब लिखा है नही मै तो दयानन्दजी द्वारा अपने "सत्यार्थ-प्रकाश" में कटु अलोचित पूर्णरूपेण पञ्चमकारों से प्रतिपादित एव पूजित उस "तन्त्रसमाज" का एक सदस्य हूं जिसको उनमें घृणित और कुत्सित बताया है, उसका खुलकर विरोध ही नहीं यहां तक कि गाली भी दी है। परन्तु मै उनके सत्यरूप का विरोधी नहीं हूं। जो पूर्वाग्रह ग्रसित हो सत्य को सत्य नहीं मानता उसे मनुष्य कहलाने काअधिकार नहीं है। यथार्थ में वह मनुष्य है भी नहीं। पंथ, सम्प्रदाय, समाजादि अपने आप में अलग है। उनके सिद्धान्त भी अलग-अलग हो सकते है।

परन्तु इन सबसे ऊपर मानव-धर्म है, जो हमें सत्य को सत्य मानना सिखाता है। जो सत्य को सत्य नहीं मानता, वह मानव नहीं। पूर्वाग्रहग्रसित होना दोष है। कमजोरी है। जब हम पूर्वाग्रहग्रसित रूढ़ीवाद को त्यागकर कोई निर्णय लेवेंगे, वही न्याय पूर्ण और सही निर्णय सर्वमान्य होवेगा। मैंने तो यह प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध एतिहासिक प्रामाणिक उदाहरण सिर्फ गुरु परम्परा से प्राप्त गुरु गम्य ज्ञान ही प्रामाणिक और सत्य सिद्ध होता है, यही बात पाठकों को बताने के लिए उपर्युक्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिस तरह आर्य गुरु परम्परा में प्राप्त दयानन्दजी सरस्वती द्वारा प्रतिपादित एवं प्रचारित एक मात्र वेद भाष्य शास्त्र सम्मत एवं प्रामाणिक है ; आर्येत्तर लोगों द्वारा किए गये अन्य भाष्य अप्रामाणिक, अशास्त्रीय, अप्राकृतिक और अव्यावहारिक। जैसा की पिछले वर्ष आप स्वयं पढ़ ही चुके है। स्वामी दयानन्दजी वाले सत्य सिद्ध प्रामाणिक कथानक के सन्दर्भ में अपने प्रिय सुधी पाठकों को मैं सिर्फ यही बात बताना चाहता हूँ कि गुरु परम्परा से प्राप्त गुरु गम्य ज्ञान ही सत्य शुद्ध और सही होता है। पिछले वर्ष लेख के अन्त में जिन प्रामाणिक माने जाने वाले तन्त्र ग्रन्थों से संग्रहित एवं संकलित महाविद्या बगला माता के अशुद्ध मन्त्रों को उधृत किया गया है, वे सब भी गुरु-परम्परा से प्राप्त ज्ञानाभाव में लिखे जाने के कारण ही उपर्युक्त स्वामी जी वाले उदाहरणानुसार गुरु-गम्य नहीं होने के फलस्वरूप, दक्षिणात्य विद्वानों के द्वारा किए गए अशुद्ध वेद-भाष्यों की तरह ही अशुद्ध, अप्रमाणिक, अशास्त्रीय एवं अव्यावहारिक है। अतः पाठक वृन्द !गुरु परम्परा से प्राप्त ज्ञान की प्रामाणिकता के परिप्रेक्ष्य में ही उपर्युक्त कथानक (उदाहरण) को पढेंगे। उस पर चिन्तन-मनन करेंगे। उसे किसी प्रकार के अन्य भावों के वशीभूत हो अन्यथा न लेवेंगे।

गत वर्ष महाविद्या श्री पीताम्बरा देवी जी के जिस मन्त्र पर विचार विमर्श किया गया है, उसकी अशुद्धता का कारण यह है कि उसके मन्त्रोद्धारों में "पद" शब्द का व्यवहार "पैर वाचक शब्द के रूप में किया गया है जो मूल मन्त्र की शुद्धता को सन्देहास्पद स्थिति में डाल देता है पूर्व वर्ष विवेचित मूल मत्र निम्न है यथा – "ॐ ह्लीं बगलामुखि !सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिस्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥"

देवी बगलामुखी के प्रस्तुत मूलमन्त्र में वाक्-मुख-जिस्वा के साथ "पैर" शब्द का व्यवहार उपयुक्त प्रतीत नहीं होता मंत्र में "पद" यानि कि "पैर" के स्तम्भन का कोई तात्पर्य या उपयोग ही समझ में नहीं आता वह मूलमन्त्र मुख्यतः बुद्धि, वाक् और जिस्वा से ही सम्बन्धित है बुद्धिका वाक् से वाक् का जिस्वा से एवं जिस्वा का मुख से सीधा प्रत्यक्ष सम्बन्ध है इसलिए मंत्र में मुख शब्द का प्रयोग एक तरह से उचित ही है. परन्तु पद यानि कि पैरों के स्तम्भन का यहा क्या तुक है? समझ के बाहर की बात है। 'पद' शब्द की जगह तो "कर" शब्द का उपयोग यदि किया जाता हो वह अधिक उपयुक्त और समीचीन होता– कारण बुद्धि में उत्पन्न हुई बात को पैदा हुए विचारों को पैरों की अपेक्षा हाथ अधिक शीघ्रता से कार्यान्वित करते हैं। पैरों की अपेक्षा हाथ ज्यादा गतिशील और आक्रामक होते है। शत्रु हथियारादि शस्त्रों से आक्रमण भी यदि करता है तो उसमें भी अपनी रक्षार्थ या फिर आक्रमण को निष्फल करने के लिए प्रत्याक्रमण करणार्थ हाथ का उपयोग ही पहले किया जाता है। न कि पैरो का। कारण शस्त्रादि हथियार शत्रु के हाथों में ही रहेंगे नकि पैरों में। दश महाविद्याओं के अन्तर्गत बगलामुखी देवी को जहां त्रैलोक्य स्तम्भनकारिनी विद्या कहा गया है यानि कि दैहिक, दैविक एवं भौतिक विघ्न-बाधाओं का स्तम्भन करनेवाली विद्या वहीं इसे लौकिक व्यवहारिक पक्षमें प्रमुखतः शत्रुसंहारिणी महाविद्या भी माना गया है। शत्रुओं से युद्ध होना स्वाभाविक है। युद्ध में अस्त्र एवं शस्त्रों का ही उपयोग किया जाता है। अस्त्र मंत्रपूरित होते है। जो बुद्धि, वाक् जिस्वा एवं मुख के सहयोग से चलाए जाते है। शस्त्र धातुनिर्मित वस्तु विशेष होते है जोकि हाथों के द्वारा ही चलाए जा सकते है न कि पैरों से। अतः अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोगार्थ मूल मन्त्र में बुद्धि, वाक्, जिस्वा एवं मुख के साथ कर (हाथ) शब्द का प्रयोग ही होना समुचित और यथार्थ सिद्ध होता है।

युद्ध क्षेत्र में शत्रु मन्त्र शक्ति पूरित किसी अस्त्र के द्वारा किसी प्रकार का अनिष्टकारी घातक अभिचारपूर्ण मारण प्रयोग न करने पावे, इसलिए सर्व प्रथम उसकी वाणी (वाकशक्ति) यानि मुख का स्तम्भन किया जाना तो उचित और यथार्थ है। उसके बाद यदि वह आक्रमण भी करेगा तो हाथों में पकड़े हुए शस्त्रादि हथियारों से। अतः वाचं मुखं शब्दों के बाद पद (पैर) शब्द के स्थान पर "करं" (हाथ) शब्द मूलमन्त्र में होना चाहिए मूलमन्त्र में करं (हाथ) शब्द का प्रयोग मन्त्र को अधिक उपयोगी बना सकता है।

उपर्युक्त मूलमन्त्र जिसमें "पदं" शब्द का व्यवहार किया गया है में जिस्वा शब्द के आगे "कीलय" शब्द एक बार लगाया गया है जबकि दूसरे मन्त्र में जहां "पदं" शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, उसमें जिस्वा शब्द के आगे कीलय शब्द का दो बार (कीलय-कीलय) प्रयोग किया गया है। जोकि उचित भी है। कारण उसमें जिस्वा के कीलन पर कीलय शब्द की दो आवृत्ति से जोर इसलिये दिया गया है कि मात्र जिस्वा (जीभ) ही शरीर का सबसे अधिक क्रियाशील वह अंग है जो बुद्धि में उपजी हुई बात को, मनमें उपजे विचारों की बोली (वाक्) द्वारा तत्क्षण प्रकट कर सकती है। बुद्धि एवं मन में उपजे विचारों को क्रियान्वित करने वाले दूसरे शरीरिक अङ्गों का नम्बर जिस्वा के बाद में ही आता है। अतः किसी भी प्रकार के युद्ध क्षेत्र में वह चाहे विद्वानों का वाक् क्षेत्र (शास्त्रार्थ सभादि) हो या फिर शूरवीरों का रण क्षेत्र (समराङ्गण) उसमें सबसे अधिक क्रियाशील अंग जीभ का जोर पूर्वक कीलन यथाशीघ्र किया जाना अनिवार्य है। उसके कीलन के साथ ही बुद्धि, वाक्, मुखादि सबका काम एक साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः भावार्थ की दृष्टि से भी यही सिद्ध होता है कि बगलामाता के मूल मन्त्र में न तो पद शब्द का उपयोग ही उचित है जो कि एक गलत परम्परा से लोग करते चले आ रहे है और न पद शब्द से अधिकावश्यक "करं" शब्द का ही अतः पद शब्द रहित माता पीताम्बरा के **मूल मन्त्र के जिस रूप में कीलय शब्द की दो बार आवृति हुई है, सब प्रकार** से वही मूल मंत्र शुद्ध और शास्त्रोचित तथा व्यावहारिक सत्यसिद्ध होता है।

पिछले वर्षों में अभी तक विभिन्न तन्त्रग्रन्थों से उधृत एवं संग्रहित कर बगला देवी के मूलमन्त्र के जितने भी रूपों का विवेचन किया गया है उन सबमें "पदं"शब्द का "पैर" वाचक शब्द के रूप में ही व्यवहार किया गया है जो तर्क सम्मत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी शास्त्रोचित एवं व्यवहारिक दृष्टि से भी उपयुक्त नहीं है। अतः अब तक के पूर्व विवेचित सभी मन्त्रोद्धार और उनसे उधृत मूलमन्त्र गलत एवं अशुद्ध सिद्ध हुए हैं। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि तन्त्र ग्रन्थों में महाविद्या बगलामुखी के ३६ अक्षरी मूल मन्त्र का शुद्ध और सही रूप उपलब्ध ही नहीं है। जिस तरह विश्व मानव समाज में श्रेष्ठ आर्य जाति की गुरु परम्परा से सूत्रात्मक वेदों का ईश्वरीय ज्ञान स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने अपने गुरु महाराज से प्राप्त करके बे रोक-टोक सर्वसाधारण के कल्याणार्थ भाष्यरूप में प्रकट किया है, उसी तरह महाविद्या पीता-माता के मूल मन्त्र का शुद्ध एवं सही स्वरूप भी हमें सही गुरु परम्परा से प्राप्त ज्ञान से प्रकाशित उनसे सम्बन्धित कुछेक तन्त्रग्रन्थों में देखने को मिलता है। आइए ! अब उस पर भी कुछ विचार-विमर्श करके अपनी ज्ञान पिपासा और जिज्ञासा को शान्त करें।

मूलमन्त्र के शुद्ध रूप का निर्णय–

महाविद्या श्री बगलामुखी देवी के स्वतंत्र तंत्र ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध "बगलामुखी तन्त्र" नामक एक तन्त्र ग्रन्थ में माता पीताम्बरा के मूलमन्त्र से सम्बन्धित जो मन्त्रोद्धार आज मिलता है, सुधी तन्त्र प्रेमी पाठकों की जानकारी के लिए वह अपने शुद्धरूप में अग्रांकित है। **यथा :–**

" प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम् । तदन्ते सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ॥१॥
स्तम्भयेति ततो जिस्वां कीलयेति पदद्वयम् । बुद्धिं नाशयपश्चातु स्थिरमायां समालिखेत् ॥२॥
लिखेच्च पुनरोङ्कारं स्वाहेति पदमन्ततः। षट्त्रिंशदक्षरा विद्या सर्व सम्पत्करी मता ॥३॥

उपर्युक्त मन्त्रोद्धार से मूलमन्त्र का जो स्वरूप सामने आता है वह इस प्रकार है अर्थात्– श्री गणेश में प्रणव यानि कि (ओ ३ म्) लिखे। उसके बाद स्थिरमाया (ह्लीं) लिखकर (बगलामुखी) लिखे। तदुपरान्त (सर्वदुष्टानां) लिखकर (वाचं मुखं) पद (शब्द लिखें) वाचं मुखं (पद) शब्द लिखने के पीछे (स्तम्भय) शब्द लिखकर (जिस्वां) शब्द लिखें। जिस्वा के बाद कीलय पद (शब्द) को दो बार (कीलय कीलय) लिखें। तत्पश्चात (बुद्धिंनाशय) स्थिरमाया (ह्लीं) लिखें। **तथा फिर ओंकार** (ॐ) लिखकर (स्वाहा) शब्द (पद) सबके अन्त में लिखें। यह षट्त्रिंशदक्षरा यानि कि ३६ (छतीस) अक्षरों वाली विद्या सब प्रकार से सम्पत्करी अर्थात् सम्पत् करने वाली मानी गई है। सब मतों से, सिद्धान्तों से सम्पत् करने वाली है। उपर्युक्त मन्त्रोद्धार

के विवेचन से मूलमन्त्र का जो स्पष्ट स्वरूप बनता है, वह जिज्ञासु पाठकों के लाभार्थ नीचे लिखा गया है। यथा:–

"ॐ ह्लीं बगलामुखी ! सर्वदुष्टानों वाचं मुखं स्तम्भय जिव्हां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।"

उपर्युक्त ३६ (छत्तीस) अक्षरी शुद्ध बगलामाता के मूल मंत्र को प्रस्तुत करने वाला सही मंत्रोद्धार सिर्फ उपर लिखे बगलामुखी तन्त्र में ही उपलब्ध है, ऐसी बात नहीं है। "बगलोपासना पद्धतिः" के अन्तर्गत "बगलामुखी पटल" में भी उपर्युक्त शुद्ध मन्त्रोद्धार का अक्षरश: वही शुद्ध स्वरूप विद्यमान है। जिसके द्वारा प्रस्तुत मूल मन्त्रराज भी तर्कसम्मत वैज्ञानिक दृष्टि से शास्त्रोचित सत्य सिद्ध होता है। परन्तु तत्त्वतो उनकी बुद्धि और विद्वतापर आता है, जिनके पास सम्भवतः गुरु या वंश- परम्परा से शुद्ध और सही स्वरूप में विषय वस्तु यानि कि सम्बन्धित मन्त्रोद्धार तो उपलब्ध है या फिर किन्ही भी कारणो से किसी तरह से भी उन्हें सही मन्त्रोद्धार मिल गया है। परन्तु गुरु गम्य ज्ञानाभाव के कारण वे उस अमूल्य पारसमणी को पहिचान नहीं सकते है तथा अपनी अल्पज्ञान दृष्टि से उसका एक साधारण कांच के टुकड़े के रूप में इस्तेमाल करते है। (व्यवहार करते है) ऐसे कई उदाहरण है जो प्रत्यक्ष प्रमाणों के साथ आपकी जानकारी के लिए दो चार ही आपके सामने रखे हैं।

(१) आज से लगभग ४६-४७ वर्ष पूर्व से ही "कौल कल्पतरु-चण्डी" नामक एक मासिक तान्त्रिक पत्रिका का तीर्थराज प्रयाग से प्रकाशन होता आ रहा है। इसके प्रवर्तक पं. श्री देवीदत्त जी शुक्ल ने सर्व साधारण को लुप्त हो रहे तान्त्रिक साहित्य से परिचित कराने और उसका पुनरुद्धार कर गीता प्रेस-गोरखपुर की सुप्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका "कल्याण" की तरह जनाता-जनार्दन को सस्ता-सुन्दर प्रामाणिक तान्त्रिक साहित्य सुलभ कराने के पवित्रोद्देश्य से उसका श्रीगणेश किया था जिससे कि लुप्त हो रहे तान्त्रिक साहित्य का पुनरुद्धार एवं प्रचार-प्रसार हो सके सर्वसाधारण का ध्यान इस महत्वपूर्ण भारतीय रहस्य विद्या की तरफ आकर्षित हो सके। उनका उद्देश्य और लक्ष्य सुन्दर था। परन्तु उनके बाद आज उनके उत्तराधिकारी उनके द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य और उद्देश्य में कितने कृत सकल्प है या सिर्फ तन्त्र प्रेमी पाठकों को ठगने में लगे हुए है यह सबके सामने है। "चण्डी" के आद्यसम्पादक और संस्थापक का मूल लक्ष्य आज गौण हो गया है और उनके उत्तराधिकारियों ने "जिमि श्रुति लाभ लोभ अधिकाई" वाली नीति को ही अपना मुख्य उद्देश्य बना लिया है चण्डी पत्रिका के लिए

विद्वान् लेखकों से प्राप्त सामग्री को पुस्तकाकार में छापकर एक रुपये की वस्तु को झूठी विज्ञापन बाजी के द्वारा पाठक वर्ग को बहकाकर ५ रुपयों में बेचना ही उन्होंने अब अपना अधर्मोचित परन्तु विशेष लाभदायक व्यापार बना लिया है पत्रिका के नाम पर मंगवाए गये लेखों को पुस्तक बना के येन केन प्रकारेण उन्हें पाठकों को बेचकर पैसा कमाना मात्र ही अब उनका प्रमुख व्यवसाय हो गया है। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित जिस श्री दुर्गा सप्तशती पाठ पुस्तक की अपनी "चण्डी" पत्रिका में उन्होंने धारावाहिक लेख की कई किश्तों में जितनी कटु आलोचना की थी उस सप्तशती (गीता प्रेस गोरखपुर वाली) में अन्य कई टीकाओं से उधृत एवं संग्रहित कर जो कुछ अधिक श्लोक टिप्पणी में लगाए गए है, आज उन्हें ही प्रचलित पाठ के साथ मिलाकर "विशुद्ध चण्डी" नामक एक पुस्तक छापकर पाठकों को ठग नहीं रहे है तो और क्या कर रहे है?

आज से २४-२५ वर्ष पहले वि० सं० २०२० में उपर्युक्त "चण्डी" पत्रिका के २२वें वर्ष का "श्री बगलामुखी महाविद्या" से सम्बन्धित एक विशेषांक निकला था। जिसमें "कुल-मार्तण्ड जैसी उच्च उपाधि से अलंकृत राजगुरु पण्डित श्री योगीन्द्र कृष्ण दौर्गादत्ति जी शास्त्री महोदय का "श्री ह्लीं भगवती बगलामुखी" शीर्ष से एक लेख प्रकाशित हुआ था उस लेख में तथा कथित "कुलमार्तण्डजी" ने बगला देवी का मंत्रोद्धार तो शुद्ध रूप में ही उधृत किया है। मन्त्रोद्धार का शुद्ध रूप उन्हें कुल-वंश या गुरु परम्परा से मिला या फिर अन्यत्र कहीं से यह तो वे ही जानते होवेंगे। परन्तु उपर्युक्त शुद्ध मन्त्रोद्धार की व्याख्या उन्होंने जिस प्रकार से करके शुद्ध मन्त्रोद्धार से अशुद्ध मन्त्र का उद्धार किया है, उसे देखते ही बनता है। वह व्याख्या प्रमाणस्वरूप अक्षरश: उनके ही शब्दों में पाठकों के ज्ञानार्थ यहां आगे अंकित की गई है। शुद्ध मन्त्रोद्धार अक्षरश: वही है जिसको "बगलामुखी तन्त्र" से ऊपर उधृत किया जा चुका है। अत: उसे यहां नहीं लिख रहे है। पाठक वृन्द उपर्युक्त मन्त्रोद्धार –"प्रणव स्थिरमायांच ----सर्वसम्भनकरी मता ।।" से ही मिलाकर कुलमार्तण्ड-राज गुरुजी महोदयवाले निम्नलिखित भाषा-भाष्य को पढ़ने की कृपा करें। जो इस प्रकार है। यथा:–

"अर्थात् प्रणव 'ॐ' कार, स्थिरमाया – ह्लीं, इसके अनन्तर 'बगलामुखी', तब सर्व दुष्टानां', इसके उपरान्त "वाचं मुखं पदं", फिर" स्तम्भय', इसके साथ "जिव्हां कीलय"-इन दो पदों को जोड़ें। और इन दो पदों के अन्त में 'ह्लीं ॐ और 'स्वाहा' इनके जोड़ने से ३६ अक्षरों का बगलामुखी का मन्त्र बन जाता है।"

यह है राजगुरुजी के द्वारा प्रस्तुत किया हुआ मन्त्रोद्धार के श्लोकों का शब्दार्थ इसके अनुसार निम्नलिखित मन्त्र बनता है। यथा:–

"ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।"

अब आप लोग ही देखिए कि ऊपर-लिखित मंत्र ३६ अक्षरों का बना है या ३५ अक्षरों का। यदि तन्त्र शास्त्र मर्मज्ञ कुल मार्तण्डजी को कुल वंश या गुरु परम्परा से यह ज्ञान मिला होता तो वे सीधे-साधे स्पष्ट श्लोकों का गलत अर्थ कदापि नहीं करते और उपर्युक्त शुद्ध मन्त्रोद्धार से ३५ अक्षरों की जगह ३६ अक्षरों वाले सही मन्त्र का ही उद्धार करते, परन्तु उन्हें कहीं से भी किसी तरह से शुद्ध मन्त्रोद्धार तो मिल गया। परन्तु उसको खोलने की "कुञ्जि" (चाबी) नहीं मिली। फलस्वरूप उन्होंने अपनी "अल्पविद्या" का प्रयोग किया। जिससे वह व्यवहारिक रूप से प्रचलित कहावत को सत्य चरितार्थ करती हुई "भयकरी" बन गई। प्रथम श्लोक के चतुर्थ पादमें "वाचं मुखं" शब्दों के बाद "शब्द" शब्द के पर्याय में व्यवहार किए गए पदं शब्द को 'पैर' वाचक मानकर उन्होंने पहली भूल की। दूसरे-दूसरे श्लोक के दूसरे चरण" कीलयेति पदद्वयम्" का सीधा साधा स्पष्ट यह अर्थ नहीं करके कि–" कीलय शब्द को दो बार लिखे "की जगह आपने" जिव्हां और कीलय" को दो शब्द समझकर जोड़कर दूसरी गलती करली। सम्पूर्ण मन्त्रोद्धार में पदम् शब्द तीन बार आया है। दूसरी और तीसरी बार वाले 'पदम्' शब्द को जहां आपने शब्द के पर्यायवाची रूप में ग्रहण किया, वहीं यदि प्रथम पदं शब्द को भी यदि उसी स्वरूप में स्वीकार कर लेते तो अर्थ का अनर्थ कदापि नहीं होता। परन्तु आपकी बुद्धि तो पूर्वाग्रहग्रसित जो थी। सही अर्थ करते भी तो कैसे?

विद्वान लेखक श्री योगीन्द्र कृष्णजी महोदय का ध्यान तो इस भूल पर नहीं गया अन्यथा वे ऐसी गलती नहीं करते। परन्तु पत्रिका के तन्त्र शास्त्र मर्मज्ञ विद्वान सम्पादक "कुल भूषणजी" महाशय का ध्यान तो इस भयंकर भूल पर जाना चाहिए था। यदि एक सतर्क एवं सही सम्पादक होने के नाते वे ही इसमें संशोधन कर देते तो हजारों तन्त्र प्रेमी पाठकों को पथ-भ्रष्ट नहीं होना पड़ता। और उनका सही मार्ग-दर्शन हो जाता। इससे यह सिद्ध होता है कि तन्त्र शास्त्र के शुद्धाशुद्ध रूप से तन्त्र प्रेमी पाठकों का परिचय कराना उनका लक्ष्य नहीं है। उनका उद्देश्य तो सिर्फ तन्त्रसाहित्य के नाम पर पाठकों को ठगना मात्र है, जिसमें वे सफल भी हो रहे हैं।

(२) इसी सन्दर्भ में दूसरा प्रत्यक्ष प्रमाण भी पढ़िये। विद्या के सुप्रसिद्ध क्षेत्र वाराणसी के धर्म ग्रन्थों के सुविख्यात् प्रकाशक "[illegible]" ने शताधिक पुस्तकों के लेखक साहित्य वारिधि, व्याकरणाचार्य जैसी उच्चउपाधियों से विभूषित पं. श्री शिवदत्तजी मिश्र शास्त्री महोदय की सन् १९६४ में "बगलामुखी रहस्यम्" नाम से एक पुस्तक छापी थी। आजतक के २४ वर्षों के दीर्घ अन्तराल में उस पुस्तक के अब तक कई संस्करण संशोधित और परिवर्द्धित रूप में निकल चुके है। उपर्युक्त पुस्तक में प्रथम पृष्ठ पर ही आपने भी कुलमार्तण्ड श्री योगीन्द्र कृष्ण जी की तरह ही कहीं से कैसे भी प्राप्त माता-पीताम्बरा के शुद्ध मन्त्रोद्धार को प्रकाशित किया है। यह अच्छी बात है। परन्तु शताधिक पुस्तकों के प्रणेता पं. श्री शिवदत्तजी ने उस शुद्ध मन्त्रोद्धार से निम्नलिखित अशुद्ध मन्त्र का ही उद्धार किया है।

यथा **"ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा"**– अब व्याकरणाचार्य जी को कोई यह पूछे कि महोदय आपने उपर्युक्त मन्त्रोद्धार से जो यह मन्त्र बनाया है उसमें वाचं मुखं शब्दों के ——— बाद ("पद") एवं "बुद्धिंनाशय" वाले शब्द में "वि" का संयोग किस व्याकरण के आधार पर किया है? तो उनका क्या उत्तर होगा। वे ही [illegible] संस्करण १९६४ में छापा था। उसके बाद आज तक २४

वर्षों के लम्बे अर्से में उसके कई संशोधित संस्करण छप चुके है। परन्तु मूलमन्त्र के शुद्धाशुद्ध रूप पर अभी तक उनका ध्यान नहीं गया है। बलिहारी है उनकी बुद्धि की और उन पाठकों की बुद्धि की भी। जिन्होंने उनकी इस पुस्तक की अब तक लाखों प्रतियां खरीद ली है परन्तु अब तक किसी ने भी उनका लिखकर मूलमन्त्र की शुद्धता की ओर उनका ध्यान अकार्षित नहीं किया। धन्य है बाबा भोलेनाथ की विद्यापुरी काशी पुरी को जिसमें लाखों विद्वान बताए जाते है फिर भी वहां से प्रकाशित इस प्रकार की साधन भ्रष्ट करने वाली पुस्तकों को देखकर उन सबकी लोभ लालच परक सिर्फ अर्थकरी बुद्धि पर तरस आता है। उपाय कुछ भी नहीं। पुस्तक के लेखक एवं प्रकाशक को इस विषय में कई पत्र लिखे और लिखवाये। परन्तु उनको उन पर सोचने की सूक्ष्म अवधि ही कहां है जो वे प्रत्युत्तर दें।

(३) एक तीसरा और प्रामाणिक उदाहरण देखिए। विश्वविद्यालय की सर्वोच्च D. Litt. उपाधि से विभूषित, साहित्य-सांख्य-योग दर्शनादि कई विषयों के आचार्य श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत शोध संस्थान, दिल्ली प्राध्यापक डा. रुद्रदेव जी त्रिपाठी (M.A. Ph.D., D. litt)का नाम देश के पूर्णाभिषक्त तन्त्रमर्मज्ञ नामी विद्वानों में लिया जाता है। भारतीय रहस्य विद्या तन्त्र-मन्त्र-यन्त्रादि पर आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। नई दिल्ली के सुप्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशक "रंजन पब्लिकेशन्स" ने उपयोगी साहित्य माला के अन्तर्गत "मन्त्रशक्ति" शीर्षक से डा. त्रिपाठी जी की एक पुस्तक प्रकाशित की है। जिसके कि अबतक कई संस्करण निकल चुके है उक्त "मंत्रशक्ति" नामक पुस्तक के प्रयोग विभाग में " बगलामुखी मन्त्र प्रयोग " नाम से एक अलगप्रकरण भी है उस प्रकरण के अर्न्तगत पुस्तक की पृष्ठ संख्या १०८ पर बगलामुखी महाविद्या का मूलमन्त्र भी छपा हुआ है। पाठकों की जानकारी के लिए उस पुस्तक में जैसा मन्त्र का स्वरूप छपा है वह यहां दिया जा रहा है यथा

"ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा"

यह तो आप भी देख ही रहे है कि प्रस्तुत मूलमन्त्र ३६ अक्षरी नहीं ३८ अक्षरों का है। यह बात नहीं है कि इसमें कोई २ अक्षर भूल से अधिक छप गये है। पृष्ठ संख्या १०७ एवं १०८ पर मूलमन्त्र से जो करन्यास एवं हृदयन्यास लगाए गए है उनसे भी मूलमन्त्र ३८ अक्षरी स्वरूप वाली ही सिद्ध होता है। ३६ अक्षरी नहीं। उपर्युक्त प्रकरण में मूलमन्त्र का मन्त्रोद्धार उधृत नहीं किया गया है। यदि मन्त्रोद्धार दिया गया होता तो कम से कम ३८ अक्षरों वाले मन्त्रोद्धार को देखने का सौभाग्य तो पाठकों को मिल ही जाता। उपर्युक्त ३८ अक्षरों वाले मूलमन्त्र को विद्वान रुद्रदेव जी ने किस ग्रन्थ के मन्त्रोद्धार से यहां उद्धृत किया है यह तो वे ही तन्त्रप्रेमी पाठकों को बताकर मार्ग-दर्शन कर सकते है। किमधिकम्। तन्त्र के नाम पर जनता जनार्दन को दोनों हाथों से लूटनेवाले अर्थ लोलुप इन लेखकों और प्रकाशकों पर गुस्सा तो आता ही है। साथ ही उन पाठकों की बुद्धि पर आश्चर्य होता है कि वे स्वय जानते बूझते ऐसे ठगों से कैसे और क्यों ठगे जाते है? प्रतिकार क्यों नहीं करते?

(४) सिर्फ एक और उदाहरण देकर इस विवादात्मक ठगी प्रसंग को समाप्त करता हू। प्रयाग की "चण्डी" पत्रिका वालों ने पाठकों को ठगने, लेखकों को बेवकूफ बनाने, सरकार से पैसा हड़पने आदि कई कारणों से चण्डी कार्यालय से सम्बन्धित कई नाम से प्रकाशन संस्थान बना रखे है जैसे- कल्याणमन्दिर प्रकाशन, शाक्त- साधना पीठ प्रकाशन, गुप्तावतार बाबा की पुस्तकों का उपयोगी ग्रन्थ माला, प्रकाशन आदि। जिनमें वे चण्डी पत्रिका की पुरानी फाइलों का एवं "चण्डी" के लिए आए हुए नये लेखों का पुस्तकाकार में प्रकाशन कर कई नामों से पाठकों को बेवकूफ बनाते है। पुराने की जगह नए नाम रख देने के कारण पाठक भ्रमित हो पास में होते हुए भी नई पुस्तक के भ्रम से उन्हें खरीद लेते है। मंगवा लेते है फिर पछताते है। आज से २४ वर्ष पहले "चण्डी पत्रिका" का सम्वत् २०२० में "श्री बगलामुखी विशेषांक" प्रकाशित किया था। **मानद सम्पादक "कुल भूषण जी" के "प्राक्कथन" के अनुसार उस विशेषांकको पुनः सम्पादित करके अब "श्री बगला कल्पतरू के नाम से प्रकाशित किया गया है।** लिखने का कारण यही है कि २४ वर्षों के पश्चात जब पुनः उस विशेषांक की सामग्री को पुनः संशोधित करके प्रकाशित किया है तो तन्त्रमर्मज्ञता का दावा करने वाले विद्वान सम्पादकों को उसमें पूर्व रही त्रुटियों को तो अब नए संस्करणों में सुधार देना चाहिए था। "लेबुल है नया पर माल पुराना वाली कहावत के अनुसार उनके नवीन प्रकाशन श्री बगलाकल्पतरू" में मानद-सम्पादक कुलभूषण श्री रमादत्तजी शुक्ल M.A महोदय का "श्री बगलामन्त्र की साधना" शीर्षक से एक लेख छपा है। जिसकी पृ.सं. ४४ पर उन्होंने बगलामाता के जिस ३६ (छतीस) अक्षरी मूलमन्त्र को प्रकाशित किया है, उसमें पैरवाचक शब्द के रूप में "पद" शब्द का व्यवहार तो किया ही है तथा मन्त्र के आदि अन्त में लगाए गए बीज मन्त्र का रूप भी अशुद्ध है जिससे कोई भी तन्त्र प्रेमी पाठक साधना करके **सफल नहीं हो सकता** पाठकों का गलत मार्ग दर्शन करने की अपेक्षा उन्हें मार्ग दिखाना ठीक नहीं। !खैर !जनता-जनार्दन को ठगने वाले अर्थ लोलुप लेखकों और प्रकाशकों की बात अब यहीं छोडिए और अपने मूल विषय पर आईए।

साहित्य के मुख्यतः दो पक्ष होते है। एक कलापक्ष एवम् दूसरा भावपक्ष। साहित्य चाहे तान्त्रिक हो या धार्मिक। सामाजिक हो या सांस्कृतिक ऐतिहासिक हो या राजनैतिक सब के दो पक्ष मुख्यतः रहेंगे ही। यहां हम तन्त्र **साहित्य की चर्चा कर रहे है। माता बगलामुखी से संबंधित सम्पूर्ण साहित्य तंत्र साहित्य** का ही एक ही एक अंग है। जिसमें मूलमन्त्र एवं उससे सम्बन्धित मन्त्रोद्धार यहां हमारे लिए विवेचना की विषय वस्तु है। कलापक्ष के अन्तर्गत गद्य, पद्य भाषा शब्दन्यास पद विन्यासादि आते है। अभीतक बगलामुखी देवी से सम्बन्धित हमने विभिन्न तन्त्रग्रन्थों से संग्रहित एवं संकलित जिन मन्त्रोद्धारों को इस लेख में उधृत कर उन पर विश्लेषण किया है वे सब ही साहित्य के कलापक्ष – भाषा, शब्द, पदन्यासादि को लेकर विविध प्रकार के थे। कोई गद्य में तो कोई पद्य में। किसी में शब्द अलग थे तो किसी की पद गठन प्रणाली अलग थी। परन्तु उन सब का भावपक्ष एक था, यानि कि बगला मन्त्र के मूलरूप को प्रकट करना। जिसे उन सब ग्रन्थ रचेताओं ने अपने ज्ञानानुसार प्रकट भी किया है। परन्तु उन सभी ग्रन्थ प्रणेताओं को भाव पक्ष के कारण हम दो भागों में बांट सकते है क्यों कि उनमें से कितनों ने मूलमन्त्र का एक रूप प्रकट किया है तो कितनों ने एकाध शब्द के हेर फेर से उसे दूसरा भिन्न रूप दे दिया है। यथा एक पक्ष वाले विद्वान वे है जिन्होंने मूलमन्त्र में पैरवाचक शब्द की जगह "पदं" शब्द का प्रयोग किया है एवं नाशय शब्द के साथ "वि" लगाकर उसको **विनाशय बना दिया है एवं मूल मंत्र को रखा ३६ अक्षरों वाला ही है** इस पक्ष की मान्यता के विपरीत दूसरे पक्षवाले पण्डितजन वे लोग है जिन्होंने मूलमन्त्र में पदं शब्द का व्यवहार नहीं किया है, परन्तु मूलमन्त्र के शुद्ध ३६ अक्षरी स्वरूप को बनाए रखने के लिए उन्होंने कीलय शब्द की दो बार आवृति की है। परन्तु इन दोनों रूपों में शुद्ध और प्रामाणिक स्वरूप कौन सा है। इस लेख में उसका निर्णय करना ही हमारा उद्देश्य और लक्ष्य है।

मूलमन्त्र में पैर वाचक पद शब्द को बनाए रखनेवाले पक्ष की ओर से यह तर्क दिया जा सकता है कि युद्ध क्षेत्र में शत्रु के पैरों की गति को स्तम्भित कर रोक देने से उसकी आवागमन की गति अवरुध हो जाएगी वह निष्क्रिय हो जायेगा और युद्ध करने में असमर्थ हो किसी पर मारक प्रहार नहीं कर सकेगा इस पक्ष के इस तर्क के उत्तर में दूसरे पक्ष वाले यह तर्क दे सकते है कि शस्त्रादि हथियार पैरों से नहीं हाथों से चलाए जाते है। यदि आप मन्त्रास्त्र से शुत्र के पैरो की गति अवरूद्ध भी कर देवेंगे तो वह एक जगह खड़ा हुआ भी हाथों के द्वारा धनुष-बाण भाला-बरछी, तलवार-बन्दूक, स्टेनगन-रायफलादि सब कुछ चला सकेगा एवं विपक्षी दल का संहार करने में समर्थ रहेगा। अतः मूलमन्त्र में पदं (पैर) की जगह करं (हाथ) शब्द होना चाहिए। तर्क दूसरे पक्ष का भी उचित और यथार्थ है।

परन्तु सर्वसाधारण तन्त्र प्रेमी पाठकों का मार्ग दर्शन करने के लिए दोनों पक्षों के तर्क सम्मत विचार सुनने के बाद, उन पर पूर्वाग्रह-ग्रसित बुद्धि को छोडकर अपने नीर-क्षीर न्याय विवेक से कुछ तो निर्णय देना ही होगा जिससे साधक समुदाय का पथ-प्रदशर्न हो सके। यह निणर्य करने का अधिकार सिर्फ उस व्यक्ति का ही हो सकता है जिस के पास एक तो गुरु परम्परा, कुल या वंश परम्परा से प्राप्त विषय सम्बन्धित सम्यक् ज्ञान हो एवं दूसरे उसने स्वयं इस का अपने जीवन में व्यवहार कर उपयोग और प्रयोग कर अनुभव सिद्ध किया हो। जिसने स्वयं रास्ता देखा ही नहीं वह दूसरों को सही मार्ग दर्शन करा ही नहीं सकता। एक तो दूसरों की सुनकर या पढकर मार्ग बतायेगा तथा दूसरा जो स्वयं जाकर – देखकर आकर पथ प्रदर्शन करेगा, इन दोनों में से सुनकर या पढकर बताने वाले की जगह जिसने स्वयं रास्ता जा कर देखा है वही जो मार्ग दर्शन देगा वह निश्चित रूप से सही होगा इसमें दो मत नहीं हो सकते। बगलामुखी देवी के मूलमन्त्र के दोनों में प्रचलित रूपों में से सही और शास्त्रीय प्रमाणानुसार शुद्ध कौन सा है। बीज मन्त्र जो कि मूलमन्त्र से भी विशेष शक्ति सम्पन्न होता है वह कौनसा सही है? [illegible] ग्रन्थों से संग्रहित मूलमन्त्रों का विवेचन किया है उनमें से एक का भी बीजमन्त्र शुद्ध और सही नहीं है। हां, मूलमन्त्र किसी का गलत है, तो किसी का सही भी है।

शेष पृष्ठ १३६ पर

विश्व रंगमंच सन् १९८८

लेखकः– एस.के. केलकर

इस वर्ष विशेष ग्रहयोग बनते हैं। २३ फरवरी १९८८ को शनि मंगल युति, उसी धनु राशि में शनि हर्षल युति व संक्रमण तथा चन्द्र व सूर्य ग्रहणों का विपुल प्रभाव न केवल भारत अपितु समूचे विश्व पर पड़ेगा। अतः इस निबन्ध को दो भागों-१ भारत २- अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में बांटा गया है।

भारत

सूर्य के विभिन्न राशियों में प्रवेश तथा चन्द्र संक्रमण व ग्रहणों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि देश में दूरगामी परिणामों वाली राजनीतिक घटनाएं होंगी। फरवरी, मध्य मार्च, जुलाई और अगस्त सितम्बर में भारतीय राजनीति में अप्रत्याशित घटनाए घटित होंगी। वर्तमान केन्द्रीय मन्त्रिमडल को आन्तरिक व बाह्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **वित्त-अर्थ** व्यवस्था मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है। इस वर्ष सन्तोषजनक वर्षा की आशा नहीं है, फलतः देश के कई भागों में सूखा पड़ेगा। परिणामतः भारत सरकार को अपनी पूर्ण शक्ति से अभावों के विरुद्ध लड़ाई लडनी पड़ेगी। इससे भी अधिक विश्व बैंक व अन्य वित्तीय संस्थाऐं भारत पर रुपये का अवमूल्यन करने के लिए भारी दबाव डालेंगी। इस स्थिति को बुद्धि व राजनीतिक कूटनीति द्वारा कुछ समय के लिए टाला जा सकता है, किन्तु अगस्त के बाद यह बहुत कठिन हो जाएगा, क्योंकि २७ अगस्त का चन्द्र ग्रहण और सितम्बर का सूर्यग्रहण इस सन्दर्भ में बहुत प्रतिकूल हैं। इस पर और अन्य मुद्दों पर सरकार को पुर्ननिर्वाचन के लिए कहा जाएगा। कुछ एक कांडो के कारण आश्चर्य न होगा यदि सितम्बर, अक्टूबर में अविश्वास प्रस्ताव लाए जाएं।

मध्यावधि चुनाव

१९८८ में सत्तारूढ कांग्रेस पार्टी की कुंडली जन्मकालिक सूर्य के निकट दशम में शनि मंगल युति के कारण पीडित है। इसके अतिरिक्त लग्न और सप्तम में मीन और कन्या में होने वाले सूर्य चन्द्रग्रहण और जुलाई से दिसम्बर १९८८ तक लग्न पर से मंगल का संक्रमण ध्यातव्य है। इन योगाशों के कारण कांग्रेस की एकता विचलित होगी और आश्चर्य न होगा यदि फरवरी के अन्तिम सप्ताह या मध्य जुलाई में कांग्रेस विभाजित हो जाए। इसका यह निष्कर्ष है कि मार्च से जुलाई के बीच सत्तारूढ पार्टी के नेता मार्च, जुलाई या सितम्बर १९८८ में मध्यावधि चुनावों के विषय में सोच सकते हैं।

श्री राजीव गांधीः– प्रधान मन्त्री की कठिनाइयां अभी समाप्त नहीं हुई हैं। १९८७ में यह दो बार बचे। फरवरी, जुलाई और सितम्बर में उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए सचेत रहना चाहिए। संक्षेप में वर्ष १९८८ शुभ नहीं है। यह उनकी सिंह लग्न २७° की कुंडली के आधार पर है (जन्म तिथि २० अगस्त, १९४४)

श्री वी.पी.सिंह :– भूतपूर्व वित्त मंत्री, रक्षामंत्री की प्रामाणिक कुंडली उपलब्ध नहीं है। उन की जन्म तिथि (२५ जून १९३१ ई.) के अनुसार सूर्य मिथुन १० पर है। शनि वक्री व प्लूटो (यम) की प्रतियुति तथा हर्षल से केन्द्र योग है। इन ग्रहयोगों में वह उतार चढाव देख रहे है। दशा पद्धति का प्रयोग नहीं हो सकता क्योंकि लग्नोदय बिन्दु का ज्ञान नहीं है तथापि जन्म कालिक सूर्य से प्रतियोग कर्ता शनि जब तक संक्रमणशील रहेगा उनके उत्कर्ष की सम्भावना नहीं है नवम्बर, दिसम्बर १९८८ तक यह अशुभ योग उनकी कुंडली में बना रहेगा। अतः उनके भविष्य के विषय में दिसम्बर १९८८ या १९८९ के आरम्भ में पुनः विचार किया जावेगा।

अमिताभ बच्चन – सप्तमस्थ पांच ग्रहों से शनि १९८८-८९ में केन्द्र योग करेगा। अप्रैल-मई तथा पुनः नवम्बर दिसम्बर १९८८ में स्तब्ध कर देने वाली घटना घट सकती है। निस्सन्देह यह उनके लिए अनुकूल न होगी, तथा उनका राजनीति में पुनः प्रवेश की सम्भावना नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा।

महाराष्ट्र में परिवर्तन की सम्भावना – न केवल महाराष्ट्र बल्कि अन्य प्रान्तों में भी नेतृत्व परिवर्तन की सम्भावना है।

आर्थिक मन्दी – संयुक्त राज्य अमेरिका की वास्तविक आर्थिक स्थिति का ज्ञान अमेरिका के स्टाक एक्सचेंज द्वारा होता है। यह १८ मई १७९२ का मध्यान्ह १२ बजे कन्या लग्न ३°-४५' तथा दशम वृषभ २९° पर स्थापित हुआ १९ अक्टूबर १९८९ को शनि १७° हर्षल २४° ओर मकर ५° पर नेपच्यून धनु में थे तथा मंगल से केन्द्र योग कर रहे थे फलतः वाल स्ट्रीट का आर्थिक संकट आया। श्री रीगन ने कांग्रेस पर वित्तसंकट का उत्तरदायित्व डाला, वह अभी भी अपनी भूल मानने को तैयार नहीं है। शनि और हर्षल फरवरी १९८८ के पूर्वार्ध में पुनः जन्म कालिक मंगल से केन्द्र योग करेगा अतः विश्व

के स्टॉक मार्केट में पुनः गिरावट आवेगी। जून १९८८ से आगे पुनः इसी प्रकार का योग होगा जब हर्षल शनि वक्री होंगे अतः नवम्बर १९८८ पुनः नाजुक महीना होगा।

अर्न्तराष्ट्रीय दिग्दर्शन

जापान

भूकम्प से सम्बन्धित मेरी सभी भविष्य वाणिया सत्य सिद्ध हुई हैं। इससे पुष्टि होती है कि जापान का विवरण पत्र (चार्ट) विश्वसनीय है। उसी सिद्धान्त पर मैं अनुभव करता हूँ कि जापान कुछ वर्षों के लिए भूकम्प से मुक्त रहेगा। बृहस्पति सम्पूर्ण वर्ष के लिए अनुकूल है, देश की आर्थिक स्थिति अनुकूल ग्रहों के अन्तर्गत रहेगी। जनवरी-फरवरी एवं पुनः नवम्बर-दिसम्बर १९८८ में शनि पाचवें भाव में मौलिक स्वभावानुसार स्थित मंगल से स्पर्श करता है। इसके साथ ही हर्षल इसका स्पर्श करेगा। इसका तात्पर्य यह है कि सन्तति नियमन एवं जन्म दर से सम्बन्धित किन्ही क्रांतिकारी विचारों का उदय होगा।

रूस

प्लूटो अभी भी चतुर्थ भाव में संक्रमण कर रहा है। वर्ष १९८८ में यह सूर्य एवं बुध के निकट पँहुचता है और शनि मौलिक स्वभावी शुक्र के समीप होगा। ये संक्रमण अनुकूल नहीं है। विद्यमान वैचारिकता में परिवर्तन होगा और नई आदर्शवादिता प्रारम्भ की जाएगी। दैवीय आपदा से शक्ति का ह्रास होगा। फरवरी-मार्च अथवा वर्ष १९८८ के अन्त तक नेतृत्व में परिवर्तन होगा।

अमरीका

विदेश नीति में निरन्तर असफलताओं के कारण सीनेट पर श्री रोनाल्ड रीगन का नियन्त्रण समाप्त हो गया है। 'व्हाइट हाऊस' में अन्य किसी दल के राष्ट्रपति होने के बावजूद भी आगामी कुछ वर्षों में अमरीका की विदेश नीति सफल नहीं होगी।

फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नास्त्रेडम ने पूर्व शताब्दियों में भविष्य वाणी की थी कि मई १९८८ में बडे भूकम्प से अमरीका के प्रभावित होने की सम्भावना है। अमरीका में प्रकाशित और इस समय भारत में उपलब्ध 'वीडियो सीरीज' में इसकी चर्चा की गई है। उनकी भविष्य वाणी की प्रामाणिकता को परखने के लिए मैंने अमरीका के जन्मांग चक्र (चार्ट) का अध्ययन किया। मई के महीने में राहु एवं केतु मीन-कन्या में २० के होंगे। इस समय चतुर्थ भाव (सिंह २६) किसी भी ग्रह से पीडित नहीं है वर्ष १९९० का क्रान्ति वृत्त चतुर्थ और दशम भाव के निकट है और शनि अष्टम भाव में प्लूटो के निकट होंगे। अतः अमरीका में मई १९८८ में बडे भूकम्प की सम्भावना नहीं है वरन् १९९० में है।

ए.एफ.ए. की बुलैटिन के ग्रन्थ ४८ जिल्द संख्या ७ के पृष्ठ २२६ में अमरीका का ज्योतिषीय मानचित्र है। कोलाराडो, न्यूमैक्सिको का उत्तर पूर्वीय कोण, ओखामा, कंसास, नेब्रास्का और दक्षिणी डाकोटा इस राशि के अन्तर्गत आते है इन राज्यों में से न्यू मैक्सिको एव कोलाराडो में भूकम्प शंकास्पद है। मीन और कन्या का क्रान्ति वृत्त इस क्षेत्र को पीडित कर सकता है।

इंग्लेंड

गत वर्ष के पचांग में, उसके प्रकाशन से पूर्व मैंने संकेत दिया था कि वर्षान्त से पूर्व श्रीमती थ्रैचर मध्यावधि चुनाव करायेंगी। उन्होंने मई में उसका आदेश दिया। वह तीसरी बार प्रधान मन्त्री निर्वाचित हुई क्योंकि सम्पूर्ण समय बृहस्पति उन्नत था। वर्ष १९८८ के अन्त में शनि का मकर राशि में संक्रमण होगा, दशम भाव को स्पर्श करेगा और मौलिक स्वभावी सूर्य के ऊपर से जनवरी-फरवरी १९८९ में भ्रमण करेगा। यह सत्ताधारी दल को नेष्ट है। मध्यावधि चुनाव की घोषणा की जाएगी। मजदूर दल शासनाधिकार प्राप्त करेगा। इससे पूर्व कन्या-मीन (१९८८) की क्रान्ति वृत्त रेखा श्रीमती थ्रैचर के अनुकूल नहीं है। उनका स्वास्थ्य नाजुक स्थिति में होगा और उस वर्ष में वह प्रधान मन्त्री पद के दायित्व के निर्वहन की स्थिति में नहीं होंगी। इसके अतिरिक्त उन्हें दल में और बाहर विरोध का सामना करना पडेगा।

तिब्बत

चीनियों द्वारा तिब्बतियों के स्वाभिमान को ठेस पहुचाने के कारण संसार की छत अक्तूबर '८७ में अशान्त थी। इतना ही नहीं देश को चीनियों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए तिब्बतियों ने सम्पूर्ण संसार में प्रदर्शन किए थे।

यह कहना अनुपयुक्त है कि तिब्बत का प्रसंग चीन के लिए सर्वाधिक मर्मस्पर्शी है। चीन के प्रति हमारी सरकार का रुख अत्यधिक सद्भावना पूर्ण है और सम्बन्धो, जो कि १९६२ में तनावग्रस्त होगए थे, को बेहतर बनाने के लिए

प्रयत्नशील है। तिब्बत के जन्मांग चक्र की ग्रह स्थिति से यह संकेत मिलता है कि शताब्दी के अन्त तक अथवा अगली शताब्दी के प्रारम्भ २००१ तक वह चीन के चंगुल एवं आधिपत्य से मुक्त हो जाएगा। वर्तमान मुक्ति आन्दोलन वर्ष [illegible] के उत्तरार्ध से वर्ष १९८९ के पूर्वार्ध तक चरमोत्कर्ष पर पहुंचेगा। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उनकी मांगें पूर्णरूपेण एवं सन्तोषप्रद ढंग से मान ली जायेंगी।

आन्दोलन का दूसरा चक्र अत्याधिक तनावग्रस्त होगा और वह १९९२ में उभरेगा। चीनियों द्वारा तिब्बतियों को कुछ सुविधायें दिए जाने की सम्भावना है। तीसरा चक्र १९९६ और १९९७ के मध्य में होगा।

श्री लंका

पूर्व में अन्यत्र किए हुए भविष्य कथनानुसार जुलाई १९८७ में समझौता होगया है। भाग्य के प्रतिफल स्वरूप श्री लंका में प्रधान मन्त्री के भ्रमण के समय अशान्ति दृष्टिगत हुई। उसके साथ ही सितम्बर १९८७ के प्रथम सप्ताह में राष्ट्रपति जयवर्धने एवं मन्त्रियों के ऊपर 'टाइम बम्ब' फेंकने के प्रयास हुए। तत्पश्चात् जाफना एवं अन्य क्षेत्रों में आतंकवादी गतिविधियों को रोकने और समझौते में उल्लिखित सभी शर्तों के परिपालन हेतु भारतीय शान्ति सेना ने हस्तक्षेप किया।

यद्यपि श्री लंका और भारत सरकार वर्तमान स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए प्रयत्नशील हैं किन्तु श्री लंका का जन्मांग चक्र स्पष्ट रूप से भविष्य वाणी करता है। फरवरी १९८८ के उत्तरार्ध के आसपास स्थिति नियन्त्रण से बाहर होना सम्भावित है और यह स्थिति मार्च १९८८ के मध्य तक बनी रहेगी। अगस्त एवं सितम्बर १९८८ में इसका तीसरा चक्र होगा और अधिक तनाव ग्रस्त होगा।

अन्य किसी प्रकार के दुर्दैव (आपत्ति) के परिहार के लिए श्री लंका के राष्ट्रपति एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना चाहिए।

संक्षेप में १९८८ के अन्त तक शांति की उम्मीद करना गलत है।

चीन

चीनी पॉलिट ब्यूरो में अक्टूबर १९८७ में क्रान्तिकारी परिवर्तन की अन्यत्र संक्षेप में प्रकाशित मेरी भविष्य वाणी सत्य सिद्ध हुई। एशिया महाद्वीप के दो बड़े राष्ट्रों में कटुता के परिहार और सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए भारत ने प्रयास किया है। अन्त में सितम्बर में तिब्बत की क्रान्तिकारी गतिविधियों ने राजनैतिक क्षेत्र का ध्यान आकृष्ट किया है। इन सभी दृष्टिकोणों से चीन की आगामी वर्षों की स्थिति का मूल्यांकन उपयोगी होगा।

यदि हम इस अल्पकालिक सर्वेक्षण से देखें तो यह अनुभव होता है कि विशाल जनसंख्या बहुल साम्यवादी राष्ट्र में राजनैतिक अस्थिरता व्याप्त रहेगी। दिन प्रतिदिन विरोध का स्वर मुखरित एवं दृढ़ होगा तथा क्षेत्रीयता उभरेगी। साम्यवादी संसार, दल और सरकार में अप्रत्याशित परिवर्तन दृष्टिगत होंगे। साम्यवादी दल के कतिपय वरिष्ठ नेता संसार से विदा होंगे और रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए सक्षम नेतृत्व का अभाव होगा। वर्ष १९४९ से स्थापित जनगण राज्य का यह क्रांतिकारी संक्रमण काल है। राजनैतिक अस्थिरता के फलस्वरूप राष्ट्र के आर्थिक विकास और अन्य गतिविधियाँ वर्ष १९९१ तक दुष्प्रभावित होंगी।

यदि हम व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो यह दृष्टिगत होगा (यद्यपि असामयिक) कि चीन जैसा विशाल राष्ट्र प्लूटो के संक्रमण और अन्य अद्भुत ग्रह स्थिति, उदाहरणतः सूर्य एवं चन्द्रग्रहण, के कारण दो भागों में विभाजित होने की सम्भावना है। यह उल्लेखनीय काल वर्ष १९९५ एवं १९९७ का है।

पाकिस्तान

पाकिस्तान अपनी सीमाओं की सुरक्षा और पड़ोसी राष्ट्रों पर आक्रमण के लिए पर्याप्त हथियारों के एकत्रीकरण के लिए जी तोड़ प्रयास कर रहा है। इन गतिविधियों के लिए बृहस्पति सहयोगी है। किन्तु यह शस्त्रीकरण १९९१ में बूमरेंग (एक प्रकार का टेढ़ा तीर जो वार करके वापस लौट जाता है) के समान घातक होगा।

फ्रांस

सम्पूर्ण वर्ष बृहस्पति लाभप्रद स्थिति में है और राष्ट्र अपने अस्तित्व [illegible] आगामी कुछ वर्षों में स्थिर सरकार अस्तित्व में आएगी।

सम्पर्क सूत्र :- ९८३/२, शुक्रवार पेठ ए-२४, सारस नगर नेहरू स्टेडियम के सामने पुना-४११००२ (भारत)

चांदी के अचूक चांस

(सं. २०४५ वि. सन् १९८८ व १९८९ ई. के)

लेखक :- पं. नरोत्तम देव दीक्षित, ज्योतिषी, हाथरस (उ. प्र.)

चैत्र शुक्ल पक्ष :- २२ मार्च से २४ तक में चांदी पर हमारा ध्यान तेजी का है। २६ मार्च से २८ तक में चांदी पर मंदी भी आवेगी। २८ मार्च की दोपहर से ३१ की दोपहर तक चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। २८ मार्च व ३१ को तेजी फलैगी।

बैशाख :- ७ अप्रैल की शाम से १० की दोपहर तक चांदी पर मंदी भी अवश्य ही आवेगी। ८ अप्रैल व १० की मंदी भी फलैगी। १२ अप्रैल से १४ की दोपहर तक चांदी तेज जरूर रहेगी। १७ की मंदी फलैगी। १८ अप्रैल से २२ तक में चांदी पर तेजी घटा बढ़ी से आवेगी। ध्यान रखें २३ अप्रैल से २५ तक में चांदी पर जोरदार मंदी आवेगी। २३ अथवा २४ की मंदी भी फलैगी। २६।२७ अप्रैल तेज।

प्र. ज्येष्ठ :- २ मई की दोपहर से ४ की शाम तक तेजी जोरदार चांदी पर आवेगी। ८ मई से ११ तक में चांदी पर तेजी भी जोरदार आवेगी। १० अथवा ११ मई की तेजी भी फलैगी। ध्यान रखें २० मई से २२ मई तक में चांदी पर जोरदार मंदी आवेगी। २१ मई की मंदी भी फलैगी। २४ मई की शाम से २७ मई की दोपहर तक चांदी पर मंदी घटा बढ़ी से अवश्य आवेगी।

द्वि. ज्येष्ठ :- ३ जून से ७ तक में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। ४ व ७ जून की तेजी भी फलैगी। १० जून की तेजी चांदी की अवश्य फलैगी। १२ जून की दोपहर से १६ की दोपहर तक चांदी पर तेजी घटा बढ़ी से जरूर आवेगी। १६ जून की शाम से १८ तक मंदी। १९ जून की शाम से २१ की दोपहर तक चांदी तेज रहेगी। २६ जून की चांदी की मंदी फलैगी।

आषाढ़ :- २ जौलाई की दोपहर से ५ की दोपहर तक चांदी तेज रहेगी। ६ जौलाई की शाम से ७ की दोपहर तक चांदी पर जोरदार मंदी आवेगी। १० जौलाई से १३ तक चांदी पर घटा बढ़ी से तेजी जरूर आवेगी। १७ से १९ जौलाई में भी चांदी तेज रहेगी। २० जौलाई की मन्दी भी फलैगी। २६ की दोपहर से २७ की शाम तक चांदी पर मंदी जरूर आवेगी।

श्रावण :- ३० जौलाई से १ अगस्त तक चांदी तेज रहेगी। २ अगस्त की दोपहर से शाम तक चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। ५ अगस्त की दोपहर से ९ तक तेजी जोरदार चांदी पर घटाबढ़ी से आवेगी। १५ से १७ अगस्त तक में चांदी पर जोरदार घटा बढ़ी होगी। २२ अगस्त से २४ की दोपहर तक चांदी मंदी रहेगी।

भाद्रपद :- ३० अगस्त की तेजी फलैगी। ध्यान रखें ६ सितम्बर की दोपहर से ८ तक में चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी। ९ से १० सितम्बर चांदी तेज ११ सितम्बर में चांदी मंदी रहेगी। १२ से १६ सितम्बर तक में चांदी पर जोरदार घटा बढ़ी होगी और २३ सितम्बर से २५ तक में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी।

आश्विन :- २७ सितम्बर में चांदी की तेजी फलैगी। २९ सितम्बर से ३ अक्टूबर के दोपहर तक चांदी पर तेजी का प्रभाव रहेगा। ४ अक्टूबर कीशाम को भी चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। ध्यान रखें ५ अक्टूबर की दोपहर से ६ की दोपहर तक चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी। ध्यान रखें १३ अक्टूबर की दोपहर से १५ की शाम तक चांदी पर तेजी जोरदार ही आवेगी। १९ अक्टूबर से २२ की दोपहर तक चांदी पर हमारा ध्यान जोरदार तेजी का है।

कार्तिक :- २६ अक्टूबर से ३० तक में चांदी पर तेजी का प्रभाव अवश्य रहेगा। ३१ अक्टूबर से २ नवम्बर तक में चांदी पर कुछ मंदी आ जायेगी। ३ नवम्बर से ५ की दोपहर तक चांदी पर तेजी आवेगी। ७ व ८ नवम्बर में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। ध्यान रखें १४ नवम्बर से १८ तक में चांदी पर तेजी जोरदार ही आवेगी। पृष्ठ १३६ पर

संवत् २०४५ विक्रमी का द्वादश राशिफल

ज्यो. पं. दामोदर प्रसाद शर्मा, सिभारला पिन. ३३२७१९ सीकर (राजस्थान)

यह राशिफल गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार दिया गया है। जन्मकालीन ग्रहों एवं दशान्तर प्रत्यन्तर दशा का फल मुख्य है। एतदर्थ इस राशि फल का सत्यता की कसौटी पर बिल्कुल खरा उतरना सभी व्यक्तियों के लिये अनिवार्य नहीं है, क्योंकि एक ही राशि के सभी व्यक्तियों के कार्य एवं पेशा एक समान नहीं होते, अतः यह राशिफल एक स्थूल फलादेश मात्र है। मासिक तथा वार्षिक फलादेश, जन्मपत्र, वर्षफल आदि के सूक्ष्म गणित से ही मालूम किया जा सकता है। जिसके लिए लेखक के पते से फीस की जानकारी एवं सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। अनेक लोगों को अपनी जन्मराशि का या नाम राशि का भी ज्ञान नहीं होता। इसलिए यहां प्रत्येक राशि के आगे कोष्ठक में उस राशि के प्रधान अक्षर लिख दिये गये हैं। अपने नाम का प्रधान अक्षर जिस राशि के साथ कोष्ठक में मिलें, वही अपनी राशि समझनी चाहिए। व,ब,स, श तथा हृस्व-दीर्घ मात्राओं से राशि जानने में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

— सम्पादक

मेष-(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

यह वर्ष आपको मिश्रित फलप्रद है। बुद्धि की मंदता (स्थूलता) से बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी। सतान के स्वास्थ्य मे कमजोरी रहे।वर्षारंभ में वक्री शनि भाग्य स्थान में होने से भाग्य सहारा कम देगा। मानसिक व्यथा, धन व्यय तथा व्यर्थ के कामों में समय का दुरुपयोग होगा। किन्तु गुरु आपकी राशि पर है यह आपको हर संभव सहायता प्रदान करता रहेगा। धार्मिक कार्यों मे रुचि, वरिष्ठ लोगों से सम्पर्क, आरोग्य लाभ तथा स्त्री का सुख प्राप्त होगा। मान सम्मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। कारोबार धन्धों मे उन्नति होकर धन लाभ के चांस प्राप्त होंगे। वर्ष के उत्तरार्ध में परेशानी कम होकर स्वजनों के सहयोग से कई कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। अप्रैल मे स्वास्थ्य सुख ठीक रहेगा। काम धन्धों मे लाभ होकर खर्चा होगा। भाग्य सहारा कम देगा। मई जून में पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी कुछ रुके काम बनेंगे। समाज में मान प्रतिष्ठा बढेगी। जुलाई में पराक्रम पुरुषार्थ की वृद्धि होगी तथा धार्मिक कार्यों मे रुचि बढ़ेगी। कुछ धन खर्चा अवश्य बढेगा। अगस्त में बुद्धि की कमी से तथा क्रोध की अधिकता से काम धन्धों मे लाभ मे कमी रहेगी। सन्तान को पीड़ा होगी। सितम्बर अक्टूबर में शत्रु पक्ष से सावधान रहें। स्त्री से मनमुटाव तथा विचारों में तालमेल कम रहेगा। खर्चा की बढोत्तरी होगी। नवम्बर मे लाभ खर्च बराबर रहेंगे। शरीर मे रोग पीड़ा से कष्ट होगा। दिसम्बर में स्वजनों से मनमुटाव, मान सम्मान में कमी होगी। भाग्य सहारा मध्यम रहेगा। जनवरी ८९ से स्वास्थ्य सुख साधारण तथा राजकाज से दौड़ धूप अधिक होगी। फरवरी मार्च में यात्रा में लाभ, तथा सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके वित्त कोष में वृद्धि तथा स्वाभिमान को सहायता मिलेगी। यह वर्ष महिलाओं को अशुभ तथा विद्यार्थियों को उत्तम फलप्रद है।

वृष — (ई, उ, ए, ओ, व, वि, वू, वे, वो)

इस वर्ष वृष राशि वालों को ढैया शनि अच्छा नहीं है। गुरु बारहवें भाव में तथा केतु चतुर्थ भाव में नेष्ट फलप्रद है अतः स्वास्थ्य बाधा, धातु क्षय से निर्बलता, पड़ोसियों से विवाद भय उत्पन्न होगा। धन खर्चा भी बढ़ेगा। काम धन्धों में हानि का भय बना रहेगा। प्रयासों में विफलता, जीविका निर्वाह में कठिनाई होगी। ता. २० जून से वृष राशि में गुरुदेव आने से अशुभ फलों में कमी होगी। स्वास्थ्य सुख में सुधार होगा। उत्साह वृद्धि से अटके कामों में सफलता प्राप्त होगी। व्यापार धन्धों में सुधार होकर धन लाभ होगा। मान सम्मान यथावत् बना रहेगा। किन्तु ये फल अल्प ही होंगे। अशुभ फलों के निवारणार्थ शनि केतु की शांति शिवपूजन, रुद्राभिषेक, सप्तधान्य दानादि से करावें। अप्रैल में शरीरसुख में सुधार होगा। किन्तु धन खर्चा की अधिकता एवं सुख साधनों में कमी होगी। मई जून में राजकाज सम्बन्धी कठिनाई, समाज में मान सम्मान की कमी होगी। दौड़ धूप की अधिकता से मानसिक अशांति बढ़ेगी। जुलाई में व्यापार धन्धों में मन लगेगा। धन लाभ के चांस मिलेंगे। सन्तान सुख मध्यम रहेगा। अगस्त में पराक्रम पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। समाज मे प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मासान्त में स्वास्थ्य में गड़बड़ी चलेगी। सितम्बर अक्टूबर में मानसिक अशांति रहेगी। धनखर्चा अधिक होगा। शत्रु प्रबल होकर सामने आयेंगे। नवम्बर में कामधन्धों में प्रगति होगी तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किन्तु दौड़ धूप तथा मन में भय व्याप्त होगा। दिसम्बर में स्वास्थ्य सुख घटेगा। मन में खिन्नता रहेगी। स्त्री सुख ठीक रहेगा। जनवरी ८९ में व्यर्थ की बातों में न बैठें, नहीं तो मुकदमा-बाजी में फंसना पड़ेगा। कुछ लाभ के चांस भी मिलेंगे। फरवरी मार्च में कुटुम्ब-सुख तथा व्यवसाय में तरक्की होगी। मान में वृद्धि तथा स्वजनों से यश मिलेगा। इस वर्ष महिलाओं को साधारण तथा विद्यार्थियों को मध्यम फल प्राप्त होंगे।

मिथुन — (क, की, कु, घ, ड़, छ, के, को, ह)

आपको यह वर्ष अन्ततः अशुभ फलप्रद रहेगा। वर्षारंभ के तीन माह में कुछ अच्छे फल भी होंगे जिससे कुछ कामों में सफलता भी प्राप्त होगी। व्यापार धन्धों में उन्नति, संतान-सुख, तथा द्रव्य वस्त्रादि की प्राप्त होगी किन्तु धन खर्चा की अधिकता रहेगी। आलस्य प्रमाद और स्त्री कष्ट से मानसिक अशांति रहेगी। स्वास्थ्य में भी कमजोरी आयेगी। वर्षान्त में क्रोध की अधिकता से व्यापार में अवरोध की स्थिति बनेगी। स्त्री व स्वयं का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। जिसके सुख के लिए शिवपूजन, दुर्गापाठ सप्तधान्य दान आदि करावें। अप्रैल स्वसुख का अभाव तथा मित्रों से मनमुटाव रहे। धन लाभ होकर खर्चा हो। मई जून में मान सम्मान बढ़ेगा। व्यापार धन्धों में प्रगति होगी। स्त्री के द्वारा विशेष खर्चा होगा। जुलाई में शरीरसुख सामान्य, सन्तान सुख मध्यम मिलेगा। अगस्त मे स्वजनों के सहयोग से कुछ काम बनेंगे। पराक्रम, पुरुषार्थ बढ़ेगा किन्तु भ्रातृवर्ग को कष्ट होगा। सितम्बर अक्टूबर में बुद्धि में चंचलता तथा सुख साधनों का उचित प्रयोग होगा। गृहस्थी सुख ठीक चलेगा। नवम्बर में शत्रु मित्र भाव धारण करेंगे। कारोबार में दृढ़ता तथा यात्रा से लाभ होगा। दिसम्बर में चालू कार्यों में लाभ तथा नवीन कार्यों में अलाभ रहेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। जनवरी फरवरी ८९ मे कारोबार में प्रगति हो किंतु स्वास्थ्य में नरमी चलेगी आय व्यय समान रहेगा। मार्च में भाग्य सहारा कम देगा। मानसिक चिन्ता पीड़ा बढ़ेगी। स्त्री सन्तान सुख मध्यम रहेगा। यह वर्ष महिलाओं को अशुभ फलप्रद है। विद्यार्थियों को परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होगी।

कर्क — (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

इस वर्ष कर्क राशि वालों को प्रायः श्रेष्ठ फल ही प्राप्त होंगे। भाग्योन्नति एवं काम धन्धों में प्रगति होकर धन लाभ होगा। राजकाज तथा समाज मे सम्मान बढ़ेगा। नये नये लोगों से सम्पर्क-सत्परामर्श मिलेगा। उत्तरदायित्व की वृद्धि होगी शत्रु परास्त होंगे। स्त्री, पुत्रादि का सुख सहयोग ठीक मिलेगा किन्तु राहु केतु की प्रतिकूलता से व्यर्थ की दौड़ धूप अधिक होगी। परिश्रम की अधिकता से शरीर में कमजोरी महसूस होगी। ता. २० जून से गुरु लाभ घर में आने से व्यापार धन्धो मे बढ़ोत्तरी होगी। संतान का सुख सहयोग प्राप्त होगा। नये रोजगार धन्धों की भूमिका तैयार होगी। सद्बुद्धि एवं धार्मिक कार्यों मे रुचि बनेगी। अप्रैल में व्यापार धन्धों म प्रगति, शत्रु परास्त होंगे। किन्तु स्त्री को रोग पीड़ा से कष्ट होगा। मई मास मे भाग्योदय से कई कामों में सफलता मिलेगी। मान प्रभाव बढ़ेगा। जून जुलाई में बड़े लोगों से मेल जोल बढ़ेगा। राज में विजय होगी किन्तु स्वास्थ्य सुख में गड़बड़ी चलेगी। अगस्त में शिरव नेत्र में पीडा, दौड़ धूप की अधिकता तथा मानसिक चिन्ताओं से मन खिन्न रहेगा। सितम्बर अक्टूबर में शरीर सुख ठीक रहेगा। मान सम्मान बढ़ेगा। भाइयों से सहयोग प्राप्त होगा। नवम्बर मे घरेलू सुखों में सफलता, कुछ बौद्धिक परेशानी रहेगी। भाग्य फल मध्यम रहेगा। दिसम्बर में शत्रु उत्पन्न होकर परास्त होंगे। धन खर्चा में बढ़ोत्तरी होगी। जनवरी ८९ से शुभ फलों की वृद्धि होगी। भाग्य सहारा से रुके काम बनेंगे। फरवरी मार्च में शरीर सुख में वृद्धि, मान सम्मान अच्छा मिलेगा। हिम्मत शक्ति से व्यापार धन्धों में प्रगति होगी। महिलाओं को यह वर्ष साधारण से अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों के लिए उत्तम फल प्रद है।

सिंह — (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंह राशि वालों को इस वर्ष शनि, राहु, केतु की प्रतिकूलता से स्वास्थ्य में कमजोरी, मन में उच्चाटन तथा क्रोध की अधिकता रहेगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी नरम चलेगा। परिश्रम अधिक करने से भी लाभ कम होवे। वाणी पर संयम रखना आवश्यक है वरना हानि की सम्भावना रहेगी। वर्षारंभ से गुरु भाग्य घर में तथा जून अन्त से दाम (राज्य) भवन में होने से यह आपकी

हर समय सहायता करेगा। मान सम्मान यथावत् बना रहेगा। स्वजनों के सहयोग से कुछ कार्य सफल भी होंगे। उच्चाधिकारियों से मेल जोल बढ़ेगा। शरीर सुख के लिए राहु केतु की शांति दान जपादि से करावें। अप्रैल में स्वास्थ्य कमजोर तथा स्त्री पुत्रादि को रोग पीड़ा से कष्ट होगा। मान सम्मान तथा भाग्य फल ठीक रहेगा। मई में धन लाभ की अच्छी सफलता रहेगी। स्वजनों से सहयोग मिलेगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जून में राज काज में सफलता तथा घर गृहस्थी के सुख में वृद्धि होगी। जुलाई में स्वास्थ्य में गड़बडी तथा दौड़ धूप की अधिकता रहेगी। स्त्री पुत्रादि का सहयोग ठीक मिलेगा। अगस्त में असामयिक खर्चा बढ़ेगा। शत्रु उत्पन्न होकर दब जायेंगे। सितम्बर अक्टूबर में पराक्रम पुरूषार्थ की वृद्धि होगी। व्यापार धन्यों में धन लाभ के साधन बढेंगे। शत्रुओं से सावधान रहें तथा स्वास्थ्य की तरफ ध्यान दें। नवम्बर में भाइयों से सुख सहयोग मिलेगा। गृहस्थी एवं रोजगार मे सफलता और प्रभाव बढ़ेगा तथापि कुछ न कुछ परेशानियां भी चलती रहेंगी। दिसम्बर में बुद्धि में कमज़ोरी तथा संतान को कष्ट संभव है। स्वास्थ्य में कमजोरी महसूस होगी। जनवरी ८९ में सेहत में कुछ सुधार दिखाई देगा। भाग्य सहारा से कुछ काम भी बनेंगे। फरवरी में शत्रु रोग उत्पन्न होकर परास्त होंगे। कारोबार धन्धों में प्रगति होगी स्वजनों से मेलजोल बढेगा। मार्च में स्त्री सुख में कमी महसूस होगी। क्रोध की अधिकता रहेगी जिससे कुछ परेशानियाँ बढ़ेंगी। इस वर्ष महिलाओं को मध्यम फल प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए उत्तम मध्यम रहेगा।

कन्या – (टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

इस वर्ष आपको ढ़ैया शनि है। वर्षारंभ से १९ जून तक गुरु की प्रतिकूलता भी नेष्ट फलप्रद है, अतः स्वास्थ्य मे गिरावट वैर विरोध, रोजगार धन्धों में विघ्न-बाधा उत्पन्न होगी। कुटुम्ब सुख तथा वाहनादि सुख में कमी आयेगी। निकृष्ट भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। धन खर्चा अधिक होने से मानसिक अशांति बढ़ेगी। ता. २० जून से गुरु नवम (भाग्यघर) में आने से शुभ फलों का संचार होने लगेगा। भाग्य सहारा देने लगेगा। स्वजनों के सहयोग से बिगड़े काम बनेंगे। रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्ति एवं उद्योग क्षमता में वृद्धि होगी। अप्रैल में घरेलू वातावरण क्षुब्ध तथा मानसिक चिन्ताओं की वृद्धि होगी। मई जून में धन बड़े परन्तु व्यय भी बढ़ेगा। कारोबार धन्धों में उन्नति होगी। बड़े लोगों से मेल जोल बढ़ेगा। जुलाई में संतान सुख ठीक, पत्नी सुख मध्यम रहेगा। यात्रा में कष्ट तथा उदर विकार आदि पीड़ा होगी। अगस्त में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। समाज में सम्मान बढ़े। सितम्बर अक्टूबर में खर्चा की अधिकता रहेगी। शरीर में कमजोरी रहेगी। स्वजनों से मेल जोल बढ़ेगा। नवम्बर मे पराक्रम पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। राजकार्य में सफलता मिलेगी। दिसम्बर में मान सम्मान बढ़े, चिन्ता, कलह, बुद्धि में निर्बलता आदि होंगे। जनवरी फरवरी ८९ में मित्रों एवं स्वजनों का सुख प्राप्त होगा। कारोबार, वाहन, कृषि आदि में लाभ होगा। स्त्री सुख उत्तम तथा शत्रु पक्ष सबल होगा। मार्च में यात्रा में परेशानी तथा सन्तान सुख में कमी अनुभव होगी। महिलाओं के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। विद्यार्थियों को परिश्रम प्रयत्न से सफलता प्राप्त होगी।

तुला – (रा, री, रु, रे, रो, तो, ता, ती, तू, ते)

यह वर्ष आपको आरंभ श्रेष्ठ रहकर अन्त में साधारण से अच्छा रहेगा। पुरुषार्थ शक्ति एवं आत्मबल की वृद्धि होगी। शत्रु परास्त होंगे। स्वास्थ्य सुख प्रियजन समागम, सफल प्रयत्न तथा मांगलिक उत्सवादि से चित्त प्रसन्न रहेगा। सन्तान पक्ष को कष्ट तो संभव है किन्तु अन्य सभी फल उत्तम होंगे। ता. २० जून से गुरू की प्रतिकूलता आने के कारण अशुभ फलों में वृद्धि होगी। शत्रु प्रबल होकर मुकदमा बाजी में फंसायेंगे। स्वास्थ्य में भी नरमी चलेगी। मन में चिडचिड़ा पन, क्रोध की अधिकता रहेगी। भाइयों से मनमुटाव होगा परन्तु मान सम्मान यथावत् बना रहेगा। बुद्धि की स्थूलता से कुछ कार्यों में रूकावटें पैदा होंगी। चलते कामों में धन लाभ होकर खर्चा होगा। अप्रैल में स्वजनों एवं बड़े लोगों से मेल जोल बढ़ेगा। शरीर में कमजोरी तथा पारिवारिक सुख में कमी होगी। मई में बुद्धि की कमजोरी से लाभ के चांस हाथ न लगेंगे। क्रोध में बढ़ोतरी होगी। जून जुलाई मे सेहत खराब तथा धन खर्चा की अधिकता रहेगी। काम धन्धों में उच्चाटन रहेगा। अगस्त मास में शुभ फलों की वृद्धि होगी। शत्रु हार मानेंगे। रोजी रोजगार में सफलता प्राप्त होगी। सितम्बर में धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। भाग्य सहारा से कई रूके काम बनेंगे। नवम्बर दिसम्बर में मान सम्मान ठीक रहेगा। वाहन सुख, शुभ यात्रा तथा मनोरंजन हो। आर्थिक उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना होगा। जनवरी ८९ से बुद्धि का विकास होगा। मित्र एवं सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा। हिम्मत न हारें, मेहनत करते रहें। फरवरी मार्च में राजकाज में सफलता तथा धन लाभ की वृद्धि होगी। किन्तु स्वास्थ्य में नरमी रहेगी। यह वर्ष महिलाओं के लिए उत्तम मध्यम है। विद्यार्थियों के लिए अशुभ फलप्रद है। परिश्रम प्रयत्न से सफलता मिलेगी।

वृश्चिक – (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिक राशि वालों को इस वर्ष शनि की उतरती साढेसाती लोहे के पाये से चालू है। गुरु राहु की स्थिति भी अच्छी नहीं है अतः स्वास्थ्य पीड़ा, वैर विरोध धन खर्चा की अधिकता से मन में अशांति उत्पन्न होगी। उद्यमहीनता से कीर्ति का ह्रास होगा। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आयेगा। शत्रु उत्पन्न होकर दब जायेंगे। अपने किये कामों पर पश्चात्ताप करना पड़ेगा। ता. २० जून से गुरू अनूकूल स्थान पर आने से शुभ फलों का संचार होने लगेगा। स्वास्थ्य सुख, के साथ सद्विचारों का उद्भव होगा। धार्मिक कर्मों में मन लगेगा। शनि राहु की शांति, शिव पूजन, सप्तधान्य दान दुर्गा पाठ से करावें। अप्रैल में भूमि, वाहन, जायदाद, व्यवसाय, नौकरी आदि से सामान्य लाभ मिलेगा। यात्रा में कष्टानुभव होगा। मई जून में स्वजनों का सहयोग यथावत् मिलता रहेगा। किन्तु घर गृहस्थी में अशांति बढ़ेगी। मन में खिन्नता रहेगी। धन खर्चा में वृद्धि होगी। जुलाई में पारिवारिक सुख शांति में वृद्धि होगी। शरीर सुख तथा समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन लाभ भी होगा। अगस्त में पुरुषार्थ कर्म से सफलता रहेगी। भाग्यफल ठीक रहेगा। सितम्बर में स्थायी कामों में अल्प लाभ होगा। राज काज में सफलता तथा पितृपक्ष अनुकूल रहेंगे। अक्टूबर नवम्बर में लाभ तो कम होगा पर मान सम्मान यथावत् मिलता रहेगा। परिवार सुख सामान्य तथा यात्रा में कष्ट होगा। दिसम्बर में स्वास्थ्य सुख ठीक तथा स्त्री पुत्रादि का सहयोग मध्यम मिलेगा। जनवरी ८९ में साधारण फल ही प्राप्त होंगे। परिश्रम मेहनत से काम बनेंगे। फरवरी में भाइयों से सहयोग, समाज में सम्मान तथा शत्रु पराजित होंगे। मार्च में पारिवारिक व्यवस्था में बिगड़ाव आयेगा। स्वास्थ्य ठीक चलेगा। स्त्री सुख श्रेष्ठ किन्तु संतान सुख मध्यम है। महिलाओं को इस वर्ष में उत्तम फल प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए श्रेष्ठ है।

धनु – (ये, यो, भा, भी, झ, धा, फा, ढा, भे)

इस राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती हृदय पर सोने के पाये से चालू है। गुरू राहु की स्थिति सानुकूल होने से यह वर्ष उत्तम मध्यम फलप्रद है। शरीर में पीड़ा तथा मानसिक चिन्ता रहेगी। व्यापार धन्धों में भी बाधाऐं आयेंगी किन्तु उनको बुद्धि की चातुर्यता से दूर कर लोगे। स्वजनों का सहयोग एवं पराक्रम प्रतिष्ठा की बढ़ोत्तरी होगी। ता. २० जून से गुरू की भी प्रतिकूलता आरंभ हो जायेगी जिससे अशुभ फलों में वृद्धि होगी। शत्रु आपके विरुद्ध कोई नई समस्या पैदा करेंगे। स्वास्थ्य में नरमी तथा क्रोध की अधिकता से बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी। धन खर्चा भी अधिक होगा। अप्रैल में परिश्रम प्रयत्न करने से धन लाभ के चांस मिलेंगे। जमीन, वाहन, कृषि का सुख मध्यम रहेगा। मई में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, तथा स्त्री पुत्रादि से सहयोग प्राप्त होगा। कर्म क्षेत्र की वृद्धि होगी। जून जुलाई में भोजन में अरुचि, परिवार से कलह, मन में अशांति रहेगी। शत्रु वृद्धि के साथ धन खर्चा में बढोत्तरी होगी। अगस्त में उपरोक्त मास के फल ही होते रहेंगे। सितम्बर में उत्तम कर्म से काम धन्यों में लाभ बढ़ेगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा मुकदमे में जीत होगी। अक्टूबर में व्यापार धन्धों में नई नीति पर विचार होगा। आपके सुकार्यों से आपकी ख्याति फैलेगी। नवम्बर में मनोबल मजबूत होगा। धनार्जन तो होगा परन्तु परिवार में अशांति के वातावरण से मन में अशांति रहेगी। दिसम्बर में शरीर सुख में कमी तथा धन खर्चा की अधिकता रहेगी। स्वजनों से मनमुटाव होगा। जनवरी ८९ में स्त्री पुत्रादि की तरफ से चिन्ता होगी धन व्यय, उत्सवादि शुभ कार्य होंगे। फरवरी मार्च में व्यवसाय तथा पेशा में लाभ ठीक होगा। पराक्रम की वृद्धि होगी। राज में विजय तथा शत्रु बगलें झाकेंगें। यह वर्ष महिलाओं के लिए मध्यम है तथा विद्यार्थियों को अशुभ फलप्रद है।

मकर – (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

इस वर्ष मकर राशि वालों के मस्तक पर शनि की साढ़ेसाती तथा राहु केतु की स्थिति अनूकूल नहीं है। स्वास्थ्य में पीड़ा

चिन्ता तथा धन व्यय की अधिकता रहेगी। नौकरी वालों का स्थानान्तर होगा। मानसिक चिन्ता, अपव्यय तथा कार्यों में बाधाएँ आयेंगी। स्त्री पुत्रादि का सुख साधारण से अच्छा मिलेगा। यात्रा में कष्ट, वाणीमें कठोरता तथा मान सम्मान में कमी होगी। शनि राहु केतु की शांति कराना हितकर है। ता. २० जून से कर्म क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा बुद्धि का विकास होगा। धन लाभ के भी चांस मिलेंगे। स्वजनों एवं सत्कर्मों के कारण समाज में सम्मान प्राप्त होगा। अप्रैल में शरीर एवं धनपक्ष कमजोर रहेगा किन्तु मान सम्मान यथावत् मिलता रहेगा। मई में क्रोधाधिक्य से शत्रुता बढे। धन व्यय की अधिकता से ऋण लेनी की संभावना होगी। शत्रुओं से सावधान रहें। जून जुलाई में हिम्मत शक्ति की वृद्धि से काम धन्धों में बढोत्तरी होगी। सन्तान सुख ठीक मिलेगा। अगस्त में स्वजनों के यहां मांगलिक कार्य होंगे। मुकदमे में खर्चे से जीत होगी। सितम्बर में कामधन्धा सामान्य चले। जुआ, सट्टा, आदि में न फंसे। स्वास्थ्य में नरमी चलेगी। अक्टूबर में भाग्य से कुछ सहारा मिलेगा जिससे व्यापार धन्धों में लाभ होगा। नवम्बर दिसम्बर में पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। सरकारी कामों में भी सफलता मिलेगी। वर्षान्त दिसम्बर मास के उत्तरार्ध में स्थानान्तरण, दौड़-धूप की अधिकता तथा मानसिक तनाव में वृद्धि होगी। धन व्यय भी ज्यादा होगा। जनवरी ८९ में किसी नवीन कार्य का आरंभ होगा। चित्त में उत्साह तथा लाभ उत्तरोत्तर बढ़ेगा। स्वजनों से मेल जोल बढेगा। फरवरी मार्च में धार्मिक कार्यों में धन लगे। व्यक्तिगत जीवन भ्रमित होगा। शत्रु पक्ष लज्जित होगा। मित्र वर्ग सहयोग देगा। महिलाओं के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होगी।

कुम्भ – (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

इस वर्ष आपकी राशि पर राहु है और स्त्री के घर में केतु है। यह अच्छे नहीं है। रोग पीड़ा, चिन्ता, दुखः आदि अशुभ फल होंगे। वृथा विवाद, लोक निन्दा का भय से मन में अशान्ति रहेगी। वर्षारंभ में गुरू पराक्रम स्थान में होने से शुभ फल भी होंगे। बड़े लोगों से मेल जोल बढ़ेगा। मान सम्मान यथावत् बना रहेगा। भाग्य सहारा देने से व्यापार धन्धों में लाभ भी होगा। ता. २० जून से गुरू की प्रतिकूलता आने से शारीरिक कष्ट, आर्थिक क्षति, कुटुम्बियों से असन्तोष तथा भाग्य बाधक स्थिति बनेगी। कामधन्धों में मन नहीं लगेगा। अशुभ फलों के निवारणार्थ राहु केतु की शांति जपदानादि से कराना श्रेयष्कर रहेगा। अप्रैल में परस्पर मनमुटाव तथा आमदनी के स्त्रोत कम होंगे। मानसिक असन्तोष होगा। मई जून में स्वास्थ्य में कमजोरी रहेगी। कारोबार धन्धों में लाभ यथावत् होता रहेगा। पारिवारिक सुख-साधनों में वृद्धि होगी। जुलाई में परिवार के लोगों से कलह होगी। शत्रु उत्पन्न होकर परास्त होंगे। राजकाज में सफलता प्राप्त होगी। अगस्त सितम्बर में शरीर में कमजोरी तथा दौड़-धूप की अधिकता रहेगी। स्त्री को भी पीड़ा हो। काराबार धन्धों में लाभ सुचारू रूप से होता रहेगा। अक्टूबर में भाग्योदय में बाधा होगी। लाटरी में लाभ असंभव। नवम्बर में बिगड़े काम बनेंगे। सज्जनों की राय से कल्याण होगा। धन लाभ होकर शुभ व्यय होगा। दिसम्बर में श्रेष्ठ फलों का ही संचार रहेगा। जनवरी ८९ में व्यापार धन्धों में लाभ, स्वास्थ्य ठीक तथा मान सम्मान में वृद्धि होगी। भाइयों से मेलजोल बढ़ेगा। फरवरी मार्च में मानसिक अवसाद, शत्रुभय, पदावनति तथा बुद्धि में कमी आयेगी। स्वजनों से मनमुटाव तथा दौड़ धूप की अधिकता रहेगी। इस वर्ष महिलाओं को उत्तम मध्यम तथा विद्यार्थियों को साधारण फल प्राप्त होंगे।

मीन – (दी, दु, थ, झ, दे, दो, च, चा, ची)

यह वर्ष मीन राशि वालों को प्रायः अच्छा रहेगा। पुरुषार्थ शक्ति एवं आत्मबल बढ़ेगा। धन खर्चा तो अधिक होगा किन्तु उससे भी कार्य सिद्ध होंगे। शत्रु उत्पन्न होकर परास्त होंगे। स्त्री पुत्रादि का सुख सहयोग प्राप्त होगा। राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। जून उत्तरार्ध से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ फल अधिक होंगे। भाग्य वृद्धि के साथ काम धन्धों में भी लाभ होगा। परिवार में मांगलिक उत्सवादि कार्य एवं कुल वृद्धि होगी। धर्म कार्यों में मन लगेगा। मित्र मिलाप, मनोरंजन, भ्रमण, से हर्ष प्राप्त होगा। स्वजनों एवं भ्रातवर्ग से सहयोग यथावत् मिलता रहेगा। अप्रैल में शत्रुओं की हार होगी। कहीं से शुभ संदेश के कारण मन में प्रसन्नता होगी। चालू कामों में लाभ तथा मान सम्मान में वृद्धि होगी। मई में घर गृहस्थी के सुख में वृद्धि होगी। भ्रातृवर्ग से सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। जून में उत्तम ज्ञान की प्राप्ति, तथा व्यवसाय में लाभ होगा। मान प्रभाव से कई काम बनेंगे। किन्तु पारिवारिक सुख में कमी आएगी। जुलाई में क्रोध की अधिकता रहेगी जिससे लड़ाई झगड़े की नौबत अधिक रहेगी। स्वास्थ्य में कमजोरी आएगी। अगस्त में पुरुषार्थ शक्ति में वृद्धि से कई काम बनेंगे। विपक्षी लज्जित होंगे। भाइयों से मेलजोल कम रहेगा। सितम्बर अक्टूबर में रोग व शत्रु में कमी होगी। मानसिक अशांति कम होकर सद्विचारों में वृद्धि होगी। लाभ खर्च समान रहेंगे। नवम्बर में भाग्यफल मध्यम, स्वजनों से कुछ सहयोग प्राप्त होगा। शत्रु हार मानेंगे। दिसम्बर में भाग्योदय के कारण व्यवसाय नया लगेगा। घर-गृहस्थ का सुख मिलेगा। शरीर में परेशानी रहेगी। जनवरी ८९ में मान सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। व्यापार में प्रगति होगी। मार्च में दौड़ धूप के साथ व्यर्थ का खर्चा होगा। सद्बुद्धि तथा सद्विचारों के कारण आपका समाज में मान सम्मान बना रहेगा। महिलाओं को यह वर्ष श्रेष्ठ तथा विद्यार्थियों को उत्तम रहेगा।

नोट – विशेष फल जानना चाहें तो जन्मपत्र तथा वर्षफल बनवायें।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य सम्वत् २०४५ वि

प्रेमचन्द जैन पोरसावाले, द्वारा ई/ एम लाइट मशीनरी
ठाठीपुर, ग्वालियर (म.प्र.) पिन 474011

मार्च १९८८

१ मार्च १९८८ से १५ मार्च या २ अप्रैल १९८८ तक मन्दी अच्छी आवेगी। काली मिर्च, सौंठ हल्दी में अच्छी तेजी आसकती है। मार्च ८८ में अरहर, तुअर, चना मसूर में अच्छी मन्दी आवेगी। १८ मार्च १९८८ को खग्रास सूर्य ग्रहण पड़ेगा। चांदी सोना में ७ मार्च से १० अप्रैल १९८८ के मध्य जोरदार तेजी आ सकती है। जिम्मेदारी कभी किसी हालत में नहीं होगी। अतः बाजार देख कर ही व्यापार करें।

२३ सितम्बर १९८७ को चांदी ५५२४ बम्बई सोना दीपावली को ३८१० रु., सरसों अगस्त १९८७को ५५५ वाली १०६५ हो चुकी है। जनवरी १९८८ से १० मार्च १९८९ तक सवा साल में सरसों घट कर ३९९-४४५, चांदी १८ अप्रैल ८८ तक ६१०० या ७०००, सोना ४२००-४५०० के भाव बनकर बाद में मंदी आवेगी।

नोटः– सोना चांदी १९८८ में (TOP-HIGHEST) ऊंचे भाव जो बने उसके बाद मंदी बीच के भावों पर तेजी आती रहेगी। ये ऊंचे भाव १९-२० महीने बाद मिलेंगे। तेल तिलहन हर तेजी बढ़ी में पहले बेचें फिर खरीदें। साल १९८८ मंदी का प्रतीत होता है।

मई १९८८

१ मई ८८ से १४ मई ८८ तक अलसी सरसों में भारी तेजी तो बाद में ३० मई ८८ तक मन्दा आवेगी १२ मई १९८८ को सूर्य गुरु की युति होगी जो कि चांदी शेयर्स में १५ दिन इकतरफा तेजी या मन्दी की लाइन देगी। २० मई से ३० मई ८८ तक मसूर, मटर, चना में अच्छी तेजी आ सकती है।

जून १९८८

१२ जून ८८ को सूर्य वक्री बुध की व १३ जून सूर्य शुक्र वक्री Rकी INF-CONJUNCTIONव २० जून ८८ वक्री शनि की सूर्य से युति होगी जो कि चांदी, अलसी, अरण्ड, सरसों, बिनौला, रूई में भयंकर मंदी १५ दिन जोरदार मंदी की आशा है। फिर भी बाजार देखकर ही हमेशा व्यापार करें।

यदि तेजी भी आई तो तेजी दलहन, तिलहन, गुड़ में खतरनाक रूप से आ सकती है। चांदी में २ जून से १० जून तक मन्दी आवे तो २२ जून तक तेजी आवेगी। १६ मई से १६ जून के मध्य काली मिर्च में ४५० से ९०० की भड़कती तेजी आकर बाद में मंदी आवेगी। २३ जून से २८ जून तक फली अलसी में तेजी तो ५ जुलाई तक मंदी आवेगी।

जुलाई १९८८

१ जुलाई से १० जुलाई चना, तुअर, तेल, तिलहन वायदों में इकतरफा लाईन शायद मंदी आवेगी। १३ जुलाई ८८ से २१ जुलाई तक तेल-तिलहन वायदो में उछाला आवे तो २५ जुलाई तक मंदी तो २८ तारीख तेलों में तेजी उछाला आवेगा। चीनी-शक्कर में ५०-१०० रुपये इस महीनें में तेजी आ सकती है।

नोटः- ६ जून से १० जुलाई तक गुड़ वायदों में जोरदार मन्दी की उम्मीद है। हवा-तूफान से भारी क्षति के समाचार सुनाई देंगे। ७ जुलाई से २५ जुलाई ८८ तक हल्दी में १०० से ३६० रुपये की भड़कती तेजी आ सकती है। २० तारीख से २५ तारीख तक फली तेल मंदी तो ३-४ दिन में एक तेजी आवेगी। २२ जून से १० जुलाई तक काली मिर्च ३००-४०० रुपये की मन्दी, आमचूर ६०० रुपये की मन्दी तो २० जुलाई तक हल्दी, जीरा, काली मिर्च में जोरदार तेजी आवेगी।

अगस्त १९८८

३ अगस्त १९८८ को सूर्य बुध की SUPERIOR CONJUNCTION युति होगी। १ अगस्त से १५ अगस्त ८८ तक चीनी में जोरदार तेजी का उछाला, तो अलसी, अरण्ड, फली तेल में मंदी आवेगी। १० अगस्त से २५ अगस्त चांदी में तेजी आवेगी। २९ अगस्त से ८ सित० तूअर मसूर में भारी तेजी आवेगी।

सितम्बर १९८८

३ सितम्बर ८८ से ११ सितम्बर ८८ तक, फली तेल में उछाला तो बाद, में मंदी १६ सितम्बर तक मंदी आवेगी। २४ सितम्बर से ३० सितम्बर तक तेजी आवेगी। चीनी में भड़कती तेजी आवेगी। २८ सितम्बर को मंगल सूर्य की युति होगी जो गुड़ और चांदी, में इकतरफा तेजी या मंदी १५ दिन पहले से चलेगी।

स्पेशल नोट-१: १८ अगस्त १९८८ से २ सितम्बर १९८८ तक सरसों, अलसी, फली तेल, बिनौला में मन्दी का जोरदार धमाका होगा।

२ः—१ जुलाई ८८ से २ अक्टूबर ८८ तक सेंचुरी स्पिनिंग, टिस्को, बाम्बे डाइन्ग, जे.के. सिन्थैटिक्स में जबर्दस्त जालिम एक बार तूफानी तेजी की आशा है। फिर भी बाजार में मंदी चले। मंदी का व्यापार करें।

३ः— २५ मई ८८ से २० नवम्बर ८८ तक चना मटर में खतरनाक तेजी की आशा है।

अक्टूबर १९८८

३ अक्टूबर ८८ से १२ अक्टूबर ८८ तक फली, तेल, अलसी में अच्छी मंदी। ज्वार में भी अच्छी मंदी आवेगी। चीनी-१००, सुपाड़ी-४५०, काली मिर्च-३०० पोस्तदाना में मंदी तो हल्दी, जीरा में ५०-५० रुपए की तेजी आ सकती है। १२ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक, चांदी सोना में अच्छी तेजी आवेगी। १७ तारीख से २८ तक सरसों, अलसी, चना में मंदी आवेगी। इस महीने मूंग, उर्द, गोला खोपरा, दालवाने में जोरदार मंदी के दौर की आशा है।

नवम्बर १९८८

२ नवम्बर १९८८ से १४ नवम्बर १९८८ तक सोंठ में २००-३६० की मंदी, काली मिर्च में १५०-२०० की तेजी, मूंग में ५०-७० रुपया की तेजी आवेगी। चादी सोना में घट बढ़ से मंदी आवेगी। २ नवम्बर को सूर्य से वक्री बुध की युति २३ तारीख को सूर्य से वक्री गुरु का अपोजीशन होगा जो चांदी, शेयर मार्केट, गुड़, खांड के मार्केट में जालिम तेजी मंदी चलेगी। लाभ हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। तेल वायदों में १६ से २५ तारीख तक मंदी आवेगी। १० नवम्बर से ३० नवम्बर तक जीरा २००, काली मिर्च में २५० रुपये की तेजी आ सकती है।

दिसम्बर १९८८

१ दिसम्बर १९८८ सूर्य बुध की सुपीरियर युति, तारीख २६ को सूर्य शनि युति होगी। १ दिसम्बर, से १० दिसम्बर के मध्य सरसों, अलसी, अरहर, गुड़ ५०-५० की तेजी, डालडा में १५-३० की तेजी, जीरा २००, काली मिर्च में तेजी तो सोंठ में मंदी आवेगी। साथ में मावट वर्षा भी अच्छी होने की उम्मीद है। तारीख १० से १६ तक तिलहन तेलों में अच्छी मंदी आवेगी तो गुड़-खांड गोला ४०० की भड़कती तेजी और जीरा में २००-४५० की मंदी आवेगी। १० दिसम्बर ८८ से २० जनवरी ८९ तक गेहू में भारी तेजी आ सकती है।

जनवरी १९८९

१ जनवरी से २० जनवरी तक गुड़, खाड़, शक्कर सरसों, अलसी, शेयर ए.सी.सी. में भारी मंदी की आशा है। ११-१२ जनवरी से ५-७ दिन में तेल, तिलहन में तेजी आकर बाद में मंदी आवेगी। १ जनवरी से १५ जनवरी तक चांदी, सोना में जोरदार तेजी आने की उम्मीद है। लाल मिर्च, हल्दी, धनिया में भी मंदी जोरदार आ सकती है। बाद में तेल तिलहन में पूरे महीने अच्छी मंदी की उम्मीद है। २५ जनवरी १९८९ को सूर्य से वक्री बुध की इनफीरियर युति होगी।

फरवरी १९८९

२ फरवरी १९८९ से १४ फरवरी के मध्य फली, तेल, अलसी तेल, चांदी, गुड़, तेल गोला COCONUT, काली मिर्च में भड़कती तेजी आकर बाद में इन सब में अच्छी मंदी आवेगी। मौसम ठण्ड का होते हुए भी एक दम मौसम में एकाएक फरवरी में गर्मी आ जावेगी। २० फरवरी १९८९ को खग्रास चन्द्र ग्रहण है। अतः २३-२५ फरवरी से १५ मार्च तक गुड़, खांड, शक्कर में भड़कती तेजी की आशा है। किशमिश, काली मिर्च में भारी मंदी आवेगी।

मार्च अप्रैल १९८९

२ मार्च से १५ मार्च या १५ अप्रैल १९८९ तक सरसों, गुड़, खांड़, चीनी, मसूर, चना में अच्छी तेजी की उम्मीद है। सरसों, मसूर की फसल का समय है। अतः अस्थाई तेजी की आशा करें। ४ अप्रैल १९८९ को 'सूर्य से बुध शुक्र' की सुपीरियर युति एक साथ होना बाजारों में कोई जालिम तेजी मंदी निकल सकती है। शायद १५-२० दिन पूर्व चांदी, सोना, सरसों, अलसी, अरण्ड, फली तेल में जोरदार तेजी का उछाला आवे तो ८ अप्रैल ८९ से ५ मई के मध्य तिलहन, दलहन, चांदी, सोना में भंयकर मंदी का विस्फोट हो सकता है। यदि तेजी भी आई तो खतरनाक तेजी आवेगी। बाजार देखकर सीमित व्यापार करें। पेट्रोल, डीजल, पैट्रोलियम पदार्थों में फरवरी से अप्रैल १९८९ तक खतरनाक मंदी आ सकती है। यदि व्यापार में लगातार घाटा हानि हो रही है तो सूर्योदय से पूर्व जागना, भगवत भक्ति, क्रोध कषाय से दूर, दान पुण्य धर्म से पूर्व पापों का क्षय होकर व्यापार में लाभ संभव है।

साल-सम्वत् २०४५ वि. (सन् १९८८-८९ ई.) सार — स्पेशल चांस —

१६ अगस्त १९८७ को सरसों टौप के भाव १०७५ के करीब, अरहर ६५०-७००, डालडा टीन ४२५ के भाव हो चुके हैं। अब नवम्बर १९८७ तक सरसों के जो भी ऊंचे टौप के भाव बने वहां से बाजार घटने की प्रतिक्रिया चालू होकर मन्दी ३-४ महीने सरसों ११०० वाले भाव ५५५ रह सकते हैं। इस प्रकार अन्य खाद्यान्न में मन्दी आ सकती है। वैसे सन् १९८८ मन्दी का साल साबित होने की आशा है। परन्तु २-३ तेजियां भी १५-२० दिन की तेजी भी आवेगी और जनवरी १९८९ तक सरसों घटते घटते ३९९-४२५ के भाव रह सकते हैं।

२८ अप्रैल १९८७ का सोना ३४०५ रुपए तोला व चांदी ५२३५ प्रति किलो के भाव टच हो चुके हैं। अब उम्मीद है कि १५ मार्च ८८ तक कभी भी चांदी ५५५५ के भाव काटे तो ६१००/७००० के भाव हो सकते हैं। टौप के भाव फरवरी १९८८ तक बनने के बाद बाजार में ४-५ महीने बड़ी मन्दी चलेगी। यदि मानलो कि ७००० के भाव चांदी के बने तो इन भावों पर मन्दी आकर ५५००-५८०० के बीच करीब डेढ साल इन भावों पर चलते रहेंगे।

शेयर मार्केट (SHARE MARKET):- अक्टूबर १९८७ से सितम्बर १९८८ तक भयंकर तेजी आने की आशा किसी भी हालत में जिम्मेदारी नहीं होगी। लाल मिरच, शक्कर, चीनी, गुड़ में ८८ में जोरदार तेजी आ सकती है। लाल मिरच ९०० वाले २१००-२५०० के भाव १९८८ में हो सकते है।

स्पेशल चान्स :-१ — १-२-१९८८ को सूर्य बुध की इनफीरियर युति से १५-१-८८ से २३-२-८८ के बीच चांदी, सोना, शेयर मार्केट, डालडा वनस्पति घी में भंयकर तेजी होगी। मगर सरसों में, अलसी में जोरदार मन्दी चलते रहने की आशा है।

२- २० अप्रैल १९८८ की सूर्य बुध ग्रह की युति से १५-२० दिन पहले से तिलहन, तेल, गुड़, चीनी, किराना में जालिम तेजी आकर बाद में १२-१८ दिन में एक जोरदार मन्दी आ सकती है।

३- ७ मार्च ८८ से २० मार्च ८८ तक सोना-चांदी, तेल, तिलहन में मन्दी का धमाका। चांदी में मंदी २७-२-८८ से ७ दिन की मन्दी आ सकती है। अतः इन दिनों में मन्दी तेजी काफी तादाद में लगावें। २९ मार्च ८८ से २० अप्रैल ८८ तक चांदी सोना में भारी तेजी आ सकती है तो बाद में जोरदार मन्दी भी तेल, चांदी- सोना में आवेगी।

४- १२ मई ८८ से या फिर २५ मई से ५ जून ८८ तक चांदी में भारी मंदी आने की आशा है। तेल तिलहन वायदों में इकतरफा लाइन मंदी या तेजी की चलने की आशा है।

५- ६ सितम्बर ८८ से २६ सितम्बर ८८ तक चांदी सोना में भारी तेजी आ सकती है। तो बाद में मन्दी आवेगी। बाजार देखकर हमेशा व्यापार करें २०-११-८८ से ३१-११-८८ तक चांदी सोना में तेजी तो बाद में मन्दी आवेगी।

तिलहन तेल वायदे बाजार के चान्स

सरसों, अलसी, अरण्ड में जब महीने डेढ महीने लगातार धमाका की मन्दी के नीचे भाव बनें तब १८-२-१९८८ या १५-३-१९८८ तक मन्दी के नीचे जहां भी बने तब वायदों में खरीदें। २०-३२ दिन की एक जबर्दस्त तेजी। ५-४-८८ या १४-४-८८ तक तेजी में माल बेचकर मुनाफा लेवें। यहां कुछ चान्स दे रहे हैं। इन तारीखों में तेजी मन्दी लगाना लगातार ३-४ दिन मन्दी तेजी फलते ही मुनाफा लेना।

१:- १५ जनवरी ८८ से २-२-८८ तक जोरदार मन्दी, यह मन्दी १९ फरवरी तक चल सकती है। १९-३-८८ से २४-३-८८ तेल फली में मन्दी व २६ मई से ५ जून ८८ मन्दी आवेगी।

२:- १९-४-८८ से २४-४-८८ तक तेल तेजी में तो ३०-४-८८ तक मन्दी तेलों में आवेगी। ७ मई ८८ से २१ मई ८८ तक तेल मन्दी तब २१ जून ८८ से ४ जुलाई तक मन्दी। ११ नवम्बर ८८ से २०-११-८८ तक तेल तिलहन में भारी मन्दी आ सकती है।

जवाबी पत्र भेजकर तेजी मन्दी समाप्ति का समय जान सकते हैं। यदि पत्र का जवाब ग्वालियर टाटीपुर, म.प्र. ४७४०११ से जबाव नहीं मिले तब ही जबावी पत्र पोरसा, जि. मुरैना, म.प्र. पिन ४७६११५ के पते पर पत्र भेजकर हमारे पते से जानकारी लें। जिम्मेदारी नहीं होगी।

शेष पृष्ठ १३२ का

परन्तु बीजमन्त्र किसी एक का भी शुद्ध हो यह देखने में नहीं आया है। उस बगलामुखी महाविद्या से सम्बन्धित विषय वस्तु की विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए हमने गुरुमहाराज की कृपा से मणिद्वीप वासी स्व. राष्ट्रगुरु जी श्री पीताम्बरा पीठाधीश (दतिया-मध्य प्रदेश), स्व. श्री हरि शास्त्री जी दाधीच, एवं स्व. श्री गोपीनाथ जी कविराज जैसे सिद्ध साधकों की परम्-शान्ति में विघ्न-डालने की भी धृष्टता की है, चिर शान्ति में लवलीन उपर्युक्त तीनों महान् विभूतियों की परम आत्माओं से सम्पर्क बनाने पर उन्होंने इस विषय पर लोक-कल्याणार्थ जो संकेत-आशीवार्द स्वरूप प्रदान किए है, अगले वर्ष गुरु गम्य ज्ञान के साथ सम्पूर्ण विवरण आपकी सेवा में रखा जाएगा।

मूलमन्त्र कौन सा शुद्ध है? बीज मन्त्र कौन सा सही है तो क्यों? मूलमन्त्र की साधना के लिए आवश्यक अनुभव सिद्ध बातें और बगलामुखी महाविद्या से सम्बन्धित अन्य कई शास्त्रीय विशेषोपकारी मंत्रादि भी आपको बताए जायेगें। अगले वर्ष तक के लिए प्रतीक्षा कीजिए

(पुनर्मुद्रणाधिकार लेखकाधीन)

कापालिक

शेष पृष्ठ १३४ का

अगहन :— २४ से २६ नवम्बर चांदी तेज रहेगी। २७ नवम्बर से २९ तक चांदी मंदी रहेगी। ३० नवम्बर से २ दिसम्बर तक चांदी पर घटा बढ़ी से तेजी आवेगी। ९ से १० दिसम्बर तक चांदी पर मंदी अवश्य आवेगी। १४ दिसम्बर से १६ तक तेजी जोरदार आवेगी। २० दिसम्बर से २३ तक में भी चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी।

पौष :— २५ से २६ दिसम्बर में चांदी मंदी हो जाएगी। २८ से २९ दिसम्बर तक चांदी तेज रहेगी। ३० दिसम्बर से १ जनवरी १९८९ ई. तक चांदी मंदी होगी। २ जनवरी से ४ तक चांदी तेज रहेगी। ध्यान देने योग्य यह है कि ८ जनवरी से १२ तक में हमारा ध्यान चांदी पर जोरदार तेजी का है। घटा बढ़ी से तेजी आने की गारंटी होगी। १० व ११ जनवरी की तेजी भी फलैगी।

माघ :— २३ जनवरी से २५ के दोपहर तक चांदी तेज अवश्य रहेगी। २९ जनवरी से ३१ के दोपहर तक चांदी पर घटा बढ़ी से तेजी आवेगी। ४ फरवरी से ६ के दोपहर तक चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी और ५ की तेजी भी फलैगी। ६ फरवरी की दोपहर से चांदी पर मंदी जरूर होगी। ७ से ९ फरवरी चांदी पर जोरदार घटा बढ़ी होगी। १३ फरवरी से १७ के दोपहर तक चांदी पर तेजी जरूर आवेगी। घटा बढ़ी से तेजी का ध्यान अवश्य है।

फाल्गुन :— २१ फरवरी की दोपहर से २३ की दोपहर तक चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी। २५ फरवरी से २८ की शाम तक चांदी पर जोरदार तेजी का ध्यान है। १ मार्च से ३ पर चांदी पर मंदी आवेगी। १३ मार्च से १६ तक में तेजी चांदी पर जोरदार आवेगी। १७ से २१ मार्च तक में चांदी पर घटा बढ़ी होती रहेगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष :— २३ मार्च से २४ तक में चांदी पर मंदी का ध्यान है। २७ व २८ मार्च में चांदी पर तेजी आवेगी और ३१ मार्च में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। ३ व ४ अप्रैल में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। ॥शुभम्॥

सूचना:— श्रीमान् व्यापारी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि चांदी के उक्त अचूक चांस हमने ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर अनुभवी ग्रहों व योगों के द्वारा अतिश्रम करके लिखे हैं, गत वर्षों की भांति यह लेख भी आपको अति लाभकारी सिद्ध होगा। लाभ-हानि के आप ही जिम्मेवार होंगे लेकिन यह निर्विवाद है कि उपरोक्त चांदी का भविष्य आपको अधिक लाभकारी है।

श्रीमान् जी विस्तृत विवरण के लिये हमारी भविष्य फल की पुस्तक दीक्षित व्यापार दर्शन ११) ग्यारह रुपये भेजकर प्राप्त कर लें, इस पुस्तक में समस्त व्यापारिक वस्तुओं की तेजी मंदी के अचूक चांस दैनिक व लम्बी लाइनों में अतिश्रम करके लिखे गये हैं हमारे भविष्य फल की पुस्तक की प्रशंसा देश के सुप्रसिद्ध व्यापारियों ने सदैव कीनी है, पुस्तक रजिस्ट्री से भेज दी जायेगी। वी.पी. से पुस्तक नहीं भेजी जायेगी।

पता:— प. नरोत्तम देव दीक्षित ज्योतिषी
[illegible] २०४१०१ (उ.प्र.)

सामूहिक व्यापार भविष्य सम्वत् २०४५ वि.

लेखकः- श्री ओंकार प्रसाद, विश्वबन्धु शर्मा एवं देशबन्धु दैवज्ञ

(व्यापार अनुसन्धान विभाग)२१/२२ बखनान. पो. हापुड़ (उ.प्र.)फोन न. २२३८ जि. गाजियाबाद पिनः २४५१०१

श्री गणेशाय नमः।

सम्वत् २०४५ विक्रम में वर्ष का राजा शुक्र और मन्त्री बुध है। शुक्र का बुध मित्र है। इसलिए राजा और मन्त्री में मित्र भाव रहने से भारतवर्ष में राज्य की स्थिति अधिक दृढ़ होगी। रोहिणी का निवास समुद्र में,समय का निवास मालाकार के यहां, समय विस्वा अट्ठारह, शनि की दृष्टि पश्चिम में होने से भारत के पश्चिमी भाग और विदेशों के भी पश्चिमी भागों में उत्पात, क्रान्ति आदि होने के योग हैं। वर्ष के दस अधिकारियों में विशेष अधिकार शुभ ग्रहों ने प्राप्त किए हैं इसलिए इस योग के कारण व्यापारी लाभ में रहेंगे स्टाकिस्ट लाभ उठाऐंगे। मेघ पति, फल पति और गढ़ पति मंगल है, तीन अधिकार केवल एक ही पाप ग्रह ने प्राप्त कर लिए है। इसलिए जगत में हानि के योग भी बनते हैं जैसा कि ज्योतिष शास्त्र का लेख है:-

जल निधि में रोहिणी बसी, हरसे चन्द चकोर,
कर्षक जन हर्षित रहें, गाज बीज घनघोर।
मेघ पति अरु फल पति, गढ़ पति मंगल जान,
यह सुख से नहीं रहन दे, करे जगत में हानि।
राजा मंत्री देखता, सम्वत् उत्तम होय,
व्यापारी रहें लाभ में, संशय करो न कोय।

ऊपर के दृष्टान्त से यह स्पष्ट होता है कि मंगल, भूमिपति ने तीन अधिकार प्राप्त करने के कारण भारत में और मंगल के अधिकार के प्रदेशों में भूमि सम्बन्धी मांग आदि संघर्ष, उत्पात विशेष होते रहेंगे। हमारा लेख भौगोलिक एवं राजनैतिक न होकर केवल व्यापारिक वस्तुओं के उतार चढ़ाव, तेजी मंदी पर आधारित है। इसलिए आगे अब हम केवल व्यापार से सम्बन्धित वस्तुओं पर ग्रहों के प्रभाव के आधार पर निम्न लेख लिख रहे हैं। यह लेख विभिन्न व्यापारिक वस्तुओं जैसे सोना, चांदी, शेयर्स, निकिल, कौपर, अरन्डा, हल्दी, सरसों, गुड़, आलू, बारदाना, जूटपाट, रुई, ग्वार, मटर, घी, गेहूं, चना, जौ, हर प्रकार की दालें, तिलहन, पंसारठ, सभी वस्तुओं के सामूहिक व्यापार भविष्य पर दिग्दर्शन कर रहे हैं। हमारे यहां से आप किसी भी वायदा वस्तु का स्पेशल चांस एवं ऊंचे नीचे भावों का अनुपात सहित, एक माह के चांस की फीस १०१ रुपया, हाजिर वस्तु के एक चांस की वार्षिक की फीस २२५ रुपया छह माह के १२५ रुपया और तीन माह के ७५ रुपया हैं। अब आगे हम व्यापार भविष्य मासिक क्रम से क्रमशः लिख रहे हैं।

चैत्र शुदि सम्वत् २०४५ का भविष्य

वर्ष सम्वत् २०४५ के प्रारम्भिक पक्ष में चन्द्र दर्शन शनिवारी होने से शनि के अधिकार की वस्तु जैसे कड़वी व तीखी वस्तु मात्र, पशुओं में भैंस, अनाजों में चना, मटर, कंगनी, तिल, उड़द और काले रंग की सभी वस्तुएं एक सप्ताह में ही जोरदार तेज होंगी। इस सप्ताह में भगवान् भास्कर का रथ व्यापार पति बुध से आगे रहेगा और बुध पश्चात्त में राहु से युद्ध करेगा। इस वास्ते सिक्का, शीशा, कौपर, निकिल और लौह पदार्थ तिल, उड़द, सभी वस्तुओं में तेजी आवेगी। चैत्र शुदि छठ को उ. षा. में भौम के होने से लाल रंग की सभी वस्तु एवं वायदे सट्टे के चांस विशेष रूप से गुड़ और कौपर में चैत्र शुदि सप्तमी के १२। बजे की लाइन १८० से २७० या सवाई तेजी-मन्[illegible] होने वाली वस्तुओं जैसे आलू आदि में भी जोरदार तेजी आयेगी। चैत्र शुदि एकादशी को वृष का शुक्र और इसी दिन मकर का मंगल दो ग्रह भिन्न भिन्न असर कारक होने से चैत्र शुदि द्वादशी के ११ ब. १० मि. से जो भी लाइन चलेगी वही लाइन अरन्डा आदि तिलहन में और वायदे सट्टे के धातु पदार्थ एवं खाद्य पदार्थ में इकसार लाइन पक्ष के अन्त तक चलेगी। खास तौर से सोने में तेजी आनी चाहिए।

वैशाख सम्वत् २०४५ के चांस

वैशाख सम्वत् २०४५ में रविवार होने से मोती, मणि, सोना, तांबा, सरसों, लाल रंग के पदार्थ एवं वनस्पति और देशी घी तथा सुगन्धित पदार्थों में तेजी आयेगी। वैशाख लगते ही उत्तरा भाद्रपदायाम् बुध के होने से प्रत्येक वायदे सट्टे की तेजी में एकदम पलट जोरदार होगी। सिर्फ चांदी में मामूली घटा बढ़ी होगी। वैशाख बदि पंचमी को रोहिणी में शुक्र आने से और वैशाख बदि छठ को बुधास्त पूर्व में होने से वैशाख बदि सप्तमी शनिवार को ११ बजे जिधर की लाइन चल जाए उसी लाइन पर बेधड़क व्यापार करें और तीन दिन में मोटा लाभ उठावें। वैशाख बदि एकादशी क्षय हो गई है। इसलिए गेंहू, चना, मटर, जौ में १५ दिन में जोरदार मन्दी आयेगी। वैशाख बदि द्वादशी को मेष संक्रान्ति पन्द्रह मुहुर्ती होने से सूरज के अधिकार की सभी वस्तुओं में जोर दार तेजी एक हफ्ते में ही वायदे सट्टों में रिकार्ड तोड़ चलेगी। वैशाख शुदि एकम को सूर्य और बुध एक ही राशि पर आने से वैशाख शुदि दौज के १२ व १० मि. से वायदे सट्टे की जिस वस्तु में जिस ओर की लाइन चल जाए वही लाइन ५ दिन में बेअन्दाज तेजी मन्दी की चलेगी। वैशाख शुदि सप्तमी को गुरु का अस्त होने से हल्दी अन्य पीले पदार्थ सोना आदि में अगर वैशाख शुदि नवमी को पिछले गुरुवार के नीचे भाव कटें तो जोरदार मन्दी पूर्णमासी तक आयेगी। अगर नीचे भाव १० पैसे से ज्यादा न कटें तो तेजी का चांस बन जाएगा

प्रथम ज्येष्ठ सम्वत् २०४५ के चांस

प्रथम ज्येष्ठ का महीना ५ सोम व ५ ही मंगल से संलग्न है। इसलिए दुतर्फा घटा बढ़ी होगी। लेकिन गेंहू, चना, जौ, मटर और जीरा धनिया में जोरदार मन्दी आयेगी। प्रथम ज्येष्ठ बदि दौज को १ बजे से जिस ओर की लाइन चले वही गुड़, अरन्डा, अलसी तिलहनादि, आलू हल्दी में इकतरफा १२ रोजा लाइन चलेगी। खास चांस प्रथम ज्येष्ठ बदि त्रयोदशी को वृष संक्रान्ति लगने से धमाके की मन्दी खाद्यान्नों में आयेगी और हल्दी में लास्ट मन्दी आयेगी। प्रथम ज्येष्ठ शुदि दौज को चन्द्र दर्शन मंगलवारी होने से सोना चांदी में जोरदार तेजी चमकेगी। शुदि चौथ को गुरु उदय रात्रि को होने से हल्दी में जोरदार तेजी आयेगी ही लेकिन अगर गुड़ में छठ को मार्केट खुलने से ४५ मि. में कतई मन्दी न जावे या ३० पै. से ज्यादा मन्दी न जावे तो मन्दी एकदम खत्म होकर तेजी का बोलबाला होगा। प्रथम ज्येष्ठ शुदि अष्टमी को वक्री शुक्र होते ही सफेद रंग की तमाम वस्तु कपड़े में जोरदार तेजी चमकेगी। प्रथम ज्येष्ठ शुदि चर्तुदशी को एटम बम जैसा चांस गुड़ में तेजी का सम्पन्न होगा। इसलिए इस मिति को ५०० तेजी अपोजिट में ५० मन्दी लगाने से हजारों लाखों का लाभ हो सकेगा। इसी प्रकार के चांस यदि आप खास खास तमाम वर्ष के चाहते हैं तो डाक पता सिर्फ ओंकाराश्रम, पो. हापुड. जि. गाजियाबाद पिन २४५१०१ ही चांस मंगाने के लिए पर्याप्त है।

द्वितीय ज्येष्ठ सम्वत् २०४५ के चांस

द्वितीय ज्येष्ठ के महीने में पांच बुधवार हैं, बुध व्यापार पति होता है और इस माह में यह विशेषता है कि स्वग्रही बुध हैं। इसलिए जोरदार तेजी मीठे में, इसके अलावा बुध के अधिकार की वस्तुओं में बहुत जोरदार तेजी आनी चाहिए। शुरु में तो मन्दी रहेगी क्योंकि ज्येष्ठ बदि में तिथि क्षय होना ज्योतिष शास्त्र में मन्दी कारक माना गया है। बुध शुक्र से युद्ध करेगा और शुक्र का अस्त भी साथ ही [illegible] बदि एकादशी को हो जाएगा। अतः जिन वस्तुओं में ज्येष्ठ बदि द्वादशी शनिवार को पिछले बुधवार के नीचे भाव क्रौस होंगे तो जोरदार मन्दी और भाव क्रौस न हुए तो भयंकर तेजी का योग बन जाएगा। क्योंकि [illegible] खास चांस द्वितीय ज्येष्ठ शुदि पंचमी में शुक्र उदय होने पर चांदी शुक्र के अधिकार की तमाम वस्तु जैसे रस और कश, श्रृंगार की तमाम वस्तु हाजिर और वायदे में बहुत जोरदार तेजी १० रोजा आयेगी। यही इस माह का खास चांस है।

आषाढ़ सम्वत् २०४५ के चांस

लगते ही आषाढ़ के पांच दिन के अन्दर-अन्दर शुक्र के अधिकार की वस्तुओं में जोरदार तेजी देखकर ऊँची तेजी में मत आना क्योंकि आषाढ़ बदि चौथ को मार्गी शुक्र और षट सप्तमी का एक होना ध्रुव मण्डल का योग बनाता है। इस महीने में एक बार को तो बदि पक्ष में स्टाकिस्ट घबरा जाएँगे और यह घबराहट आषाढ़ शुदि चौथ तक चलेगी। इससे आगे कर्क संक्रान्ति के ३ अंश बीत जाने पर मार्केट में स्थिरता आ जाएगी। इस महीने में पांच गुरुवार और पांच ही शुक्रवार रुई, चांदी, गुड़, बिनौला, अलसी, सरसों में मंदी कारक है। आषाढ़ शुक्ल पक्ष में शुदि चौथ को मृगे शुक्र और दूसरे दिन पुष्ये रवि भिन्न भिन्न असर कारक होने से आषाढ़ शुदि छठ को १२ ब. १० मि. से जिस वायदे सट्टे में जिस ओर की लाइन चलेगी वही लाइन ३ दिन में मालामाल कर देगी। आषाढ़ शुदि अष्टमी की रात्रि को बुध का अस्त हो रहा है। मिथुन राशि में बुध के अस्त का होना केवल राजा को पीड़ित करना लिखा है। इसलिए राज्य में उत्पात होने के कारण शेयर मार्केटों में जोरदार मन्दी अवश्य आयेगी। ज्योतिष वेत्ताओं का मत है कि केवल बुधास्त ही व्यापारियों को लखपति बना सकता है और यह ठीक भी है क्योंकि नव ग्रहों में केवल बुध ही व्यापार पति कहलाता है। हम सारांश रूप में यह अवश्य लिखेंगे कि मडरिया नवमी शनिवारी होने से इस दिन १२ ब.५४ मि. तक जिस वस्तु में जो लाइन बन जाए वही लाइन पांच दिन में ही मोटा लाभ देगी। खुलासा विवरण लेख के विस्तार से हम नहीं लिख रहे हैं। अगर चाहें तो ओंकाराश्रम, पो. हापुड, जि. गाजियाबाद (उ. प्र.) के पते पर पत्र व्यवहार करें।

श्रावण सम्वत् २०४५ के चांस

इस महीने में शुरू में तो तमाम वस्तुओं की लाइन जो आषाढ़ से चली आ रही थी, थोड़ी थोड़ी रियक्शन लेते हुए श्रावण बदि द्वादशी तक चलेगी। श्रावण बदि त्रयोदशी को मार्केट खुलने के साथ ही जोरदार तेजी उन्हीं वस्तुओं में आयेगी जिन वस्तुओं में पहले मन्दी आई थी। सिंह की संक्रान्ति ३० मुहूर्ती श्रावण शुदि चौथ को प्रारम्भ होते ही सूखे की स्थिति होने से रसदार और कशदार और सूर्य के अधिकार की तमाम वस्तुओं के मार्केटों में मामूली घटाबढ़ी रक्षाबन्धन तक होगी। चीनी, वनस्पति, तेल, हल्दी बादाम, छुआरे, सर्व प्रकार के कोष धान्य, सरसों, लाल रंग के पदार्थ एवं सुगन्धित पदार्थों में तेजी का बोलबाला होगा। अतः मन्दी का रियक्शन आने पर घबराना नहीं। यही उपरोक्त चांस इस माह का अन्तिम है।

भाद्रपद सम्वत् २०४५ के चांस

इस महीने में ५ रविवार प्रजा में पीड़ा कारक हैं और इस माह रविवार को सूर्य ग्रहण घी, तेल, गुड, खांड, रुई, सूत कपास में तेजी कारक है। बुध सूर्य से आगे तमाम महीने चलता रहेगा। इस मास की कन्या संक्रान्ति शुक्रवारी और ४५ मुहूर्ती मन्दी कारक है। तमाम ग्रह चालों के तारतम्य को देखते हुए यह साफ स्पष्ट होता है कि मार्केट दुर्तफा चलेंगे। प्रारम्भ में बदि पक्ष में तृतीयातिथि का क्षय और शनि मार्गी होने से भाद्रपद बदि दौज से १५ दिन में उत्तरी देशों में तथा चीन आदि में भूकम्प के झटके लगेंगे और शनि के अधिकार की वस्तुओं में मन्दी आयेगी। भादों बदि छट की शाम कर्क का शुक्र रसादि पदार्थ, शक्कर, घृत, तेल आदि में तेजी चांदी में मन्दी रुई में पहले मन्दी बाद तेजी आया करती है। यहा की चालू लाइन अमावस्या सूर्य ग्रहण तक चलेगी। ग्रहण पर अगर वर्षा हो जाती है तो विशेष मन्दी धमाके की आती है। अगर सूखा हो तो जोरदार तेजी सूर्य के अधिकार की वस्तुओं में आती है। अमावस्या पर मीन राशि में मंगल वक्र पोजीशन में होने से मंगल के अधिकार की वस्तुओं में जोरदार तेजी ५ दिन में ही आयेगी। वनस्पति घी का स्टाक करके लाभ उठाना। जीरा, चना, धनिया, मेथी में विशेष तेजी एक सप्ताह में ही आयेगी। भादों शुदि छट शनिवार के दिन जिस वस्तु में भी पिछले बुधवार के ऊंचे भाव एक पैसा भी क्रौस होंगे तो उसमें जोरदार तेजी आयेगी और अगर नीचे के भाव जिस वस्तु में क्रौस होंगे उसमें मन्दी एकादशी तक भयंकर आयेगी। इतना ध्यान रखकर व्यापार कर लेना। आखिर में भादों शुदि चतुर्दशी का क्षय होना और वक्री गुरु का होना पीली और सफेद वस्तुओं में चमचमाती तेजी आकर मार्केट टप्प हो जाऐंगे। यही इस माह का खास चांस है।

आश्विन सम्वत् २०४५ के चांस

आश्विन सम्वत् २०४५ में ५ सोमवार और ५ ही मंगलवार हैं। सोमवार शहद, फल, फूल, जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थ चावल, जौ, गेंहू, रस, मोती, ईख चांदी और नमक का स्वामी होता है। अतः इन वस्तुओं में जब जब चन्द्रमा स्वग्रही उच्च का आयेगा तब तब मन्दी करेगा। विशेष रूप से उच्च का चन्द्रमा आश्विन वदि षष्ठी के सूर्यास्त के बाद तक। इसी प्रकार चन्द्र स्वग्रही राशि में आश्विन बदि नवमी से एकादशी तक जोरदार मन्दी उपरोक्त वस्तुओं में विशेष रूप से चांदी चावल और सफेद अन्य वायदे की सफेद वस्तुओं में सम्पन्न होगी। इसके विपरीत में ५ मंगल होने से लाल रंग के फल, गुड, तीक्ष्ण पदार्थ मसिल, तांबा, लाल रंग की धातु निकिल, मूंगा में तेजी करेगा। मंगल मेष वृश्चिक का स्वामी होता है और मकर का उच्च का होता है। इन राशियों में चन्द्रमा से कन्जक्शन आश्विन बदि दौज से चौथ और आश्विन शुदि तीज से चौथ और अष्टमी से दशमी, इन उक्त तिथियों में जोरदार तेजी आयेगी। इसलिए मंगल के अधिकार की वायदा वस्तुओं में भी तेजी लगानी चाहिए और माल खरीदना चाहिए। तिलहन, दलहन और पंसारठ, निकिल, जूट पाट, बोरी बारदाना और कौपर सभी वायदा वस्तुओं में बुध वक्री का असर २८ सितम्बर को होगा। यह जोरदार तेजी कारक है। २८ सितम्बर की रात्रि को सिंह का शुक्र वायदा, सटटा चांदी में जोरदार चांस देगा। इसके अलावा तमाम किस्म के रेशमी वस्त्र और कम्बल, हाजिर मणि, हीरा आभूषण, जलज वस्तु, स्फटिक, दाल, चीनी, त्रिफला, अगर, जायफल, बच किराने की वस्तुओं का संग्रह करना भी पन्द्रह दिन में ही जोरदार लाभ देगा।

ता. ४ अक्टूबर की लास्ट घटी पर १०० तेजी तो ५० मन्दी और साथ ही मूंगफली, तिल, तेल, तैयारी में तो तेजी आयेगी ही साथ ही वायदे सट्टे में भी आयेगी। असौज शुदि में सप्तमी के बाद एक सप्ताह में ही जोरदार तेजी, इस आखिरी सप्ताह में मन्दे माल खरीदना, बिना जोखिम का व्यापार करना बहुत ही लाभदायक रहेगा।

कार्तिक सम्वत् २०४५ के चांस

कार्तिक में ५ बुधवार हैं। बुध व्यापार पति कहा जाता है और मूंग, ज्वार, मटर, अरहर वनस्पति हरे रंग की वस्तुएं सुगन्धित पदार्थों वाली वस्तु हरे वस्त्रों का स्वामी होने से इन उपरोक्त हाजिर की तमाम वस्तुओं को लेना चाहिए। वायदा सट्टा, निकिल, कौपर, चांदी, सोना, गुड़, तिलहन व अरन्डा में आश्विन शुक्ल पक्ष की लाइन ही कार्तिक बदि अष्टमी के बाद मन्दी का धमाकेदार चांस तिलहन के तमाम सट्टों में और गुड में भी आयेगी। दीपावली के बाद बुधास्त होने से या तो मार्केट पानी-पानी हो जायेगा या बहुत जोरदार तेजी दीपावली से १ सप्ताह में आयेगी। यद्यपि दीपावली के दिन बहुत मोटी तेजी मन्दी नहीं चलेगी। लेकिन आज १२ बजकर ३० मिनट से २ घन्टे में और लक्ष्मी पूजन के समय जिस ओर को मार्किट चले यानि झुकाव हो जाये वही लाइन असौज शुदि छठ तक चलेगी। इसके बाद नवमी तक कोई चांस नहीं है। असौज शुदि दसमी के साढ़े ग्यारह बजे से ४ दिन का जोरदार तेजी का चांस हर वस्तुओं में सम्पन्न होगा। हल्दी में तो एक प्रकार से आग लग जायेगी। लेकिन यह जोरदार तेजी तभी आयेगी जब कि असौज शुदि दसमी को पिछले बुधवार का नीचा भाव नहीं कटेगा। इतना ध्यान रखकर बेधड़क व्यापार करें। बाकी दैनिक तेजी मन्दी की जानकारी अन्य समय से समय के लक्ष्मी चांस स्पेशल या साधारण रिपोर्ट मंगाकर लाभ उठाइये।

मार्गशीर्ष सम्वत २०४५ के चांस

इस माह में ५ गुरुवार और ५ ही शुक्रवार हैं। गुरु और शुक्र में गुरु विशेष रूप से हल्दी, जटामांसी, तगर, मोम, पीले रंग के पदार्थ, सरसों, गेहू आदि का स्वामी है और शुक्र हीरा, चांदी, स्फटिक, दालचीनी, चोब चीनी, पठानी लोध, जायफल और बच आदि किराने की चीजें और रुई इन वस्तुओं के स्वामी होने से जोरदार मन्दी आयेगी। गुड, चीनी, खंडसारी में लगते ही मँगशिर की पड़वा से पचमी तक मामूली घटबढ़ रहते हुए पंचमी की रात्रि को जब कृतिका के तृतीय चरण में गुरु वक्री होगा तब मन्दी

का बोलवाला नवमी तक रहेगा। बदि नवमी को ३ बजे के करीब माल खरीदने से ३ दिन में ही मोटी तेजी आयेगी। अमावस्या पर शनि का अस्त होते ही आगे शुक्ल पक्ष में तीज से सप्तमी तक अरन्डा, सींगदाना, गुड़, निकिल व पीतल में तेजी का जोर रहेगा। मूल के चौथे चरण में शनिश्चर अष्टमी को २ बजे के करीब आने से घन्टी बन्द तक जिस वस्तु में जो लाइन चलेगी वही लाइन आखिर मंगशिर शुदि पूर्णिमा तक चलती रहेगी।

पौष सम्वत् २०४५ के चांस

इस माह में ५ शनिवार होने से शनि के अधिकार की वस्तु चाहे हाजिर की हो और चाहे वायदा की , सभी में तेजी का बोलबाला रहेगा। कड़वी तीखी वस्तुएं, नील, काला, नमक, पंसारठ का सामान, तेल, लोहा, काली मिर्च, बिजली का सामान, डिफर्ड शेयर में जोरदार तेजी अमावस्या पर और शुदि में सप्तमी से एकादशी के मध्य आयेगी। निकिल, कौपर में शुरु के ५ दिन में और शुक्ल पक्ष की पंचमी से दसमी जोरदार तेजी कारक है। इन्ही उपरोक्त तिथियों में जूटपाट, बारदाना में जोरदार तेजी चमकेगी और अरन्डा में भी मार्केट तेज होगा। गुड़ वायदा में बुध का उदय पौष बदि पड़वा की रात्रि को होते ही जोरदार तेजी बदि षष्ठी तक आयेगी। बदि सप्तमी पर मकर का बुध आते ही अगर बदि सप्तमी को पिछले मंगलवार के ऊँचे भाव क्रौस हो गये तो अन्दाज से ज्यादा तेजी आयेगी। अगर ऊँचे भाव क्रौस न होकर नीचे के भाव क्रौस हो जावें तो ५ या ४ रुपये की मन्दी का पक्का ऐलान जानें। चांस अमावस्या तक चलेगा। पौष शुदि में पहले ही दिन अश्विनी मेष में मंगल आने से डेढ़ महीने तक गुड में या तो पानी पानी हो जायेगा या बहुत भंयकर तेजी आयेगी। मेष राशिगत मंगल को शास्त्रकारों ने गुड़, चना, मूंग , मोंठ, आदि में मंदी कारक माना है। लेकिन सोना, चांदी, मूंगा, मोती पाट, बारदाना में तेजी कारक माना है। हमारी राय में विशेष विचार यह है कि पौष शुदि तीज मंगलवार को १०॥ से ११ बजे की अवधि में अगर मन्दी चली तो जोरदार मन्दी ४ दिन में ही आयेगी। लेकिन मकर संक्रान्ति पौष शुदि सप्तमी को लगने से जोरदार तेजी की मांग होगी और छुट भैया तेजी में जुट जायेंगे। पौष शुदि त्रयोदशी गुरुवार को १० ब. ३७ मि. से ५० घन्टे में १)९० से ३)२० की लाइन गुड़ में अरन्डा में ७) से ९)०० हल्दी में ४) से ११) रुपये चलेगी। यहां दुर्तफा गली लगाकर लाभ उठाना। अन्य वस्तुओं में लाइन ज्यों की त्यों चलती रहेगी। शेष विशेष ऊँचे नीचे भाव और समय का ताजा विचार मालूम करना हो तो केवल डाक पताः- श्री ओंकाराश्रम, पो. हापुड़, जि. गाजियाबाद (उ. प्र.) से सम्पर्क स्थापित करें।

माघ सम्वत् २०४५ के चांस

माघ मास में ५ सोमवार जोरदार मन्दी तैयारी, शहद, जौ, चावल, गेंहू, रस, मोती, ईख, चांदी, सफेद वस्त्र व नमक में धमाके की मन्दी आयेगी। वायदे मार्केट में चांदी में भी जोरदार मन्दी माघ मे पहले पांच दिन और दो दिनों में और सोमवती अमावस्या के दो दिन आगे और दो दिन पीछे, माघ शुदि अष्टमी से दसमी में क्योंकि यहां चन्द्रमा उच्च के हैं और माघ शुदि द्वादशी की उन्तीस घड़ी पर स्वग्रही चन्द्रमा होते ही १५ से २८ रुपये या दुगनी मन्दी आने के चांस बन जाऐंगे। माघ महीने में पैदा होने वाली तमाम वस्तुएँ जोरदार मन्दी होंगी। तिलहन में गुड़ के साथ जोरदार मन्दी आयेगी। माघ बदि दौज को श्रवण का रवि रात्रि को आते ही माघ बदि तीज के ११ बजे से २५ मि. में जिधर की लाइन चलेगी वही लाइन ५ दिन में १॥ से २॥ रुपये या ७ रुपये तक चलेगी । माघ बदि अष्टमी को अगर पिछले गुरुवार के नीचे भाव गुड में कटेंगे तो मार्केट पानी-पानी हो जाएगा। अगर भाव नीचे के न कटें तो रियक्शन की तेजी ही आयेगी क्योंकि माघ बदि नवमी को बुध का उदय और बुध का अमावस्या को मार्गी होना ऐसा ही असर करता है जैसा कि हम लिख रहे हैं। लेकिन जूटपाट, बारदाना में लगते ही माघ प्रारम्भिक तेजी जरूर आयेगी। भविष्य भारती में लिखा है:-

"पांच रवि और सोम हैं, माघ मास के माय।
सोमवती मावस हुयी, वस्तु मन्दी हो जाय।"

यह असर केवल बदि पक्ष में ही होगा क्योंकि शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण और माघ शुदि तीज का क्षय होना तेजी कारक है। कुम्भ की संक्रान्ति माघ सुदि सप्तमी रविवार को बैठने के बाद माघ शुदि अष्टमी सोमवार के १० ब. २२ मि. से ४० मि. से जो लाइन बनेगी वही पूर्णमासी तक चलेगी। यही इस माह का खास चांस है।

फाल्गुन सम्वत् २०४५ के चांस

फाल्गुन में पांच मंगलवार हाजिर मार्केट की कुछ वस्तुओं में भयंकर तेजी का योग बनाते हैं। लाल रंग के तमाम पदार्थ, गुड़ पारा, मन्सिल, मिश्री, तांबा, आलू, मूंगा आदि में जब भी भाव मन्दी में रहें हाथों हाथ खरीदो और ताकणी करो। हल्दी में एक बार को फिर खड़ी तेजी होगी। वायदे सट्टे तिलहनादि में दुर्तफा घटाबढ़ी के फेर से व्यापारी चक्कर में पड़ जायेंगे। मंगल मेष, वृश्चिक का स्वामी होता है। अतः फाल्गुन बदि षष्टी से ३ दिन में और फाल्गुन शुदि तीज से ५ दिन में गुड़ में जोर दार तेजी चमकेगी चांदी में भाव उठ उठ कर गिरेंगे। दीगर वस्तुओं में जिनका नाम नहीं लिया है स्पेशल रूप से चाहें तो ओंकाराश्रम, ज्योतिष भवन, पो. हापुड से सम्पर्क करें। यही पता डाक के लिए पर्याप्त है। लेख विस्तार के भय से बहुत सी वस्तुओं का नाम व धारणा का उल्लेख करना रह जाता है।

चैत्र कृष्णा सम्वत् २०४५ के चांस

चैत्र का आधा पक्ष सम्वत् २०४५ में और आधा भाग सम्वत् २०४६ में चला जाता है। यहां पर हम सं. २०४५ के बदि पक्ष का ही हवाला देंगे। चैत्र के लगते ही चैत्र बदि एकम् और दौज में सभी वस्तुओं में पूर्व लाइन ज्यों की त्यों चलेगी कोई फेरबदल नहीं है। लेकिन चैत्र बदि दौज की रात्रि को मीन का बुध होते ही तीन दिन में रुई में ५० रुपये खंडी की सोना, चांदी में पहले जितनी तेजी आयेगी उतनी ही बाद में धमाके की मन्दी आयेगी। गुड़, खांड़, चीनी गेहूं में जोरदार मन्दी कुछ घन्टो में समाप्त होने वाली आयेगी। उन घन्टों का विवरण तो हम नहीं दे रहे हैं लेकिन यह स्पष्ट है कि चैत्र बदि अष्टमी गुरुवार को पिछले सोमवार के जिस वस्तु में नीचे भाव कट जाऐंगे उनमें तीन दिन में बहुत ही मोटी मन्दी आयेगी। भाव न कटें तो रियक्शन की तेजी आकर मार्केट पड़ जाएगा। चैत्र बदि नवमी की प्रातः रेवत्याम् रवि आने से रुई, चावल , चांदी, नमक सरसों, अलसी, लाख, गेंहू, जौ, चना आदि में तेजी चमकेगी और यह चांस दिन के दिनही समाप्त होगा। इसी प्रकार दसमीं शनिवार को रेवती नक्षत्र में बुध का असर चैत्र बदि द्वादशी को दिन के दिन में ही होगा। और अगर मंगल को भी सोमवार की बनी लाइन चलती रही तो सभी वस्तुओं में वही लाइन चैत्र बदि मावस ता. ६ अप्रैल तक यह जोरदार लाइन व्यापारियों को विशेष लाभदायक चलेगी।

सम्पर्क सूत्र—श्री औकाराश्रम ज्योतिष भवन
(मार्केट रिसर्च, डिपार्टमेंट)
मौ० ब्रह्मंनान, खारीकुआं पो० हापुड़।

* व्यापार-भविष्य सन् १९८८ ई. *

लेखक : प्रो. बी.सी. मेहता, ज्योतिष-मार्तण्ड, ज्योतिष-सम्राट

संचालक :— जैन ज्योतिष ब्यूरो ब्यावर (राजस्थान) पिन-३०५९०१, फोन-२०९२९, तार-मेहता

श्री विश्व विजय पंचांग के माध्यम से, हम प्रिय पाठकों की सेवा गत २४-२५ वर्षों से अपने "व्यापार-भविष्य" लेख द्वारा बराबर करते आ रहे हैं, तथा व्यापारिक जगत में हमारा यह लेख व बाजारों की घट-बढ़ की भविष्य-वाणियों का बहुत बड़ा महत्व है तथा हर साल हमारे पास श्री विश्व विजय पंचांग के प्रिय पाठकों द्वारा समय-समय पर प्रशंसा पत्र भी आते रहते हैं, हम उन सबही व्यापारिक-बन्धुओं का हृदय से आभार प्रदर्शित करते हैं। हिन्दी में हमारा लेख केवल श्री विश्व विजय पंचाग में व्यापार भविष्य छपता है श्री विश्व विजय पंचांग मे प्रधान सम्पादक श्री पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी जिनके कारण ही श्री विश्व विजय पंचांग को विश्वव्यापी सफलता मिली है। वह हमारे परम मित्र हैं तथा उनके ही आदेशों का पालन कर हम् इस श्री विश्व विजय पचांग बराबर लेख भेजते रहते है तथा जहां तक बन पडेगा जीवन पर्यन्त भेजते रहेंगे। यूं तो कई दूसरे पंचांग इस लेख को तोड़-मरोड कर हमारे नाम से छाप देते हैं। आपको उनको ज्यादा महत्व नहीं देना चाहिए यह हमारी विनती है।

"सन् १९८८" का वर्ष व्यापार जगत के लिये एक यादगार व असाधारण घटा-बढ़ी का वर्ष हमको लगता है, क्योंकि इस वर्ष "शनि हर्षल व नेपृच्यून" तीनों महान् क्रूर-अशुभ व बड़े ग्रह एक ही राशि में इकट्ठे हो रहे हैं। ता. १५ दिसम्बर १९८७ को शनि ग्रह धनुराशि अर्थात् नं. ९ की राशि में प्रवेश होता है तथा ता. २ जनवरी ८७ को इसमें प्रवेश कर चुका है, नेपृच्यून काफी अर्से से इस धनु राशि में चल रहा है, अतः "१९८८" के साल में पूरे ही वर्ष "शनि, हर्शल व नेपृच्यून" एक भारतीय ज्योतिष का सबसे बड़ा व महान् क्रूर ग्रह-शनि जो ढाई वर्ष एक ही राशि में चलता है दूसरा हर्षल जो सात वर्ष एक राशि मे चलता है। तथा तीसरा नेपृच्यून जो एक राशि मे पूरे १४ वर्ष तक रहता है इन तीनों बहुत महत्वपूर्ण ग्रहों का एक राशि धनु में इकट्ठा होना अपने आप में एक विशिष्ट योग है।

यह योग हमारे ख्याल से पहली बार बना है। वर्षों व युगो के बाद ऐसे महत्वपूर्ण योग बनते हैं। इन तीनो ही ग्रहो का संयोग कम से कम अगले ढाई वर्ष तक चलता रहेगा हां यह बात जरूर है कि कभी इन तीनो ग्रहों में कोई ग्रह वक्री भी होगा लेकिन एक राशि में न ९ की राशि मे ये तीनो ग्रह बराबर ही चलते रहेगे। इन तीनो ग्रहो के इस महत्वपूर्ण संयोग का विश्व ी राजैतिक-आर्थिक व समाजिक स्थितियों पर बहुत जबरदस्त असर पड़े बिना नहीं नहीं रहेगा। यह महान् अशुभ योग है, तथा इसका असर सब ही सीमे में हम शुभ नहीं मानते। गये साल सन् १९८७ मे हर्शल व नेपृच्यून केवल दो ग्रह इस धनु राशि में इकट्ठे हुए थे जिसका प्रभाव भी आपने जरूर अनुभव किया होगा तो फिर शनि हर्शल व नेपृच्यून तीन ग्रहो का एक राशि मे संयोग व सम्मेलन हमारे ख्याल से विशेष भयानक सिद्ध हो सकता

यो तो इस एक ही योग से हमको इस वर्ष व्यापारिक जगत मे असाधारण घटा-बढ़ी व उथल-पुथल आती लगती है। कई बाजारों मे ऐसी तेजी आ सकती है। जिसका अन्दाजा अभी कोई नहीं लगा सकता। कई बाजारों में बड़ी नर्मी भी आ सकती है व्यक्तिगत जीवन में भी इस तीन क्रूर ग्रहों से योग का बड़ा असर पड़ सकता है, यदि आपका जन्म ता. १५ दिसम्बर से १४ जनवरी के बीच में हुआ है तो इन ग्रहो का क्रॉस आपके सूर्य से होगा, यह योग परेशानी व बाधाएं देने वाला सिद्ध हो सकता है। अर्थात् यदि आपकी जन्म-कुण्डली में न. ६ की राशि मे सूर्य-चन्द्रमा-मंगल आदि ग्रह बैठे हैं तो यह योग आपके लिये अशुभ बन सकेगा।।

अब हम कुछ महत्वपूर्ण जिन्स-बजारों का जिनका व्यापार हाजिर एव वायदा का प्रचुर मात्रा मे होता है उनका विस्तृत रूप से भविष्य-दिग्दर्शन आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हैं।

तिलहन-बाजार-भविष्य :— तिहलन-बाजारों का धन्धा आजकल सबसे ज्यादा होता है इसके अन्तर्गत तिलहन सम्बधी अनेक चीजें आती हैं जैसे:- तेल, मूंगफली, सरसो, एरण्डा, अलसी, कपासिया, वनस्पति वेजीटेबल तथा कोकोनेट आयल आदि-आदि।

तिलहन-बाजारों की घटा-बढ़ी पर हमने वर्षों अध्ययन अनुसन्धान के अनुभव के बाद तिलहन-बाजार की एक कुण्डली बनाई है तथा हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तिलहन- बाजारों का विशेष सम्बन्ध वायु तत्व की तीन राशियां मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशियों से है तथा तिलहन की कुण्डली मिथुन नं. ३ की राशि से शुरु होती है। उपरोक्त मिथुन राशि की कुण्डली में शनि, राहु, गरु मंगल जो इस तिलहन-बाजार की घटा-बढ़ी पर सबसे ज्यादा वर्चस्व व प्रभुत्व रखते हैं। यदि इन ग्रहों का प्रसार व दृष्टियोग इन राशियों से हो जाता है तो इन बाजारों में बड़ी घटा-बढ़ी आ जाती है। क्रूर ग्रह के प्रसार से भयंकर तेजी व शुभ ग्रह के प्रसार से मन्दी आ जाती है। हर्शल नेपृच्यून एवं प्लूटो भी बड़े ग्रह हैं पाश्चात् ज्योतिष शास्त्रकारों ने इन तीनों ग्रहों को भी क्रूर व अशुभ ग्रह की संज्ञा दी है। तिलहन-बाजारों में शनि ग्रह का विशेष महत्व हम मानते हैं तथा इसी कारण सन् १९८५-८६ की साल में हमने अपने व्यापार भविष्य सम्बन्धी लेख में जो इसी 'श्री विश्व विजय पंचाग' सन् १९८५-१९८६ के अंको मे प्रकाशित हुआ था। बहुत स्पष्टरूप से संकेत दे दिया था कि चूंकि २० दिसम्बर १९८४ को शनि ग्रह तुला राशि छोड़ कर वृश्चिक राशि में प्रवेश हो रहा है। अतः तिलहन-बाजार में बड़ी तेजी का योग संप्रास होता है; और हुआ भी यही सन् १९८५-१९८६ मूल मन्दी प्रधान ही सिद्ध हुए। छोटे-मोटे योग से तेजी के रिएक्सन आते रहे लेकिन बाजार धीरे-धीरे मन्दीवालों के हाथ मे ही रहा तथा खूब घटा।

सन् १९८७ में हमारा अन्दाजा एक बार तो बिल्कुल ही फेल हो गया। हमने ता. ३ फरवरी १९८७ से गरु मीन राशि में प्रवेश से तेजी शुरु होने को लिख दिया था लेकिन वह तेजी नहीं आयी हमको झटका-सा लगा। क्योंकि हमने तो कुम्भ राशि में गुरु के हटने से तथा मीन में गुरु प्रवेश से तेजी धारी थी फिर हमने अपनी गलती समझने की कोशिश की तो समझ में आ गयी। नं. १ यह गुरु मीन राशि में अतिचारी आया था। ता. ३ फरवरी १९८७ को नं. २ इस गुरु के साथ मीन राशि में राहु भी आ गया जो मन्दी का बड़ा योग था। अतः गुरु के मीन-प्रवेश से मन्दी आयी और जिस दिन "गुरु-राहु" की युति होकर गुरु राहु आगे निकाला और तभी तेजी सभी तिलहन-बाजारों में अप्रैल, मई ८७ में आ गयी। सिद्धान्त तो हमारे अत्यधिक सही हैं; लेकिन हमसे भी कभी-कभी गलती हो जाती है। सन् १९८७ में शनि वृश्चिक में ही चल रहा है। अतः इस मन्दी के बड़े योग से बड़ी तेजी कैसे आ सकती है।

लेकिन सन् १९८८ की साल में यह शनि वृश्चिक राशि छोड देता है तथा ता. १५ दिसम्बर ८७ को यह शनि धनु अर्थात् नं. ९ की राशि में प्रवेश कर जाता है अतः यह योग हमको तिलहन बाण के लिए बड़ी तेजी का लगता है। ता. २० देसम्बर ८४ से जो मन्दी तिलहन-बाजारों के लिये शुरू हुई थी अब समाप्त हो जाती है

नोट कर लें ! धनु राशि में शनि प्रवेश होते ही यह मूल नक्षत्र में प्रवेश कर जायेगा। मूल नक्षत्र तिलहन-बाजारों का प्रमुख नक्षत्र है। इसके अन्तर्गत सभी तिलहन-बाजार खास तौर से बिनौला एवं सरसों आते हैं। अतः तेजी का यह नया योग १९८८ में बराबर चलता ही रहेगा। इसके अलावा एक और योग इन तिलहन-बाजारों में तेजी का बनता है वह है ता.५, ७ मार्च १९८८ को राहु ग्रह का कुम्भ राशि में प्रवेश, कुम्भ राशि भी वायु तत्व की एक राशि है तथा इसमें राहु जैसे क्रूर ग्रह का प्रवेश व प्रसार भी शास्त्रकारों ने तिलहन में तेजी का बड़ा फैक्टर माना है। धनु र का शनि इस राहु से Sextere योग बनायेगा। धनु के शनि की पूर्ण दृष्टि मिथुन नं. ३ तथा कुम्भ नं. ११ एवं इस कुम्भ राशि में स्थित राहु पर पड़ेगी। अतः १९८८ का वर्ष हमको मूल बड़ी तेजी प्रधान लगता है। विशेष सावधानी से व्यापार करें। गत तीन वर्षों से तेजी मनोवृत्तिवाले व्यापारियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा है। उनके लिय यह वर्ष १९८८ एक वरदान स्वरूप सिद्ध हो सकेगा। तथा यदि सावधानी से व्यापार करेंगे तो गत तीन वर्षों की कसर इस एक साल १९८८ मे निकल सकेगी नोट कर लें !

ता. १५ दिसम्बर १९८७ के बाद तेजी का धंधा करने का मानस बनायें। तथा शुरू में थोड़ा धन्धा तेजी का करें तथा बाजार का फेवर मिलने पर व्यापार बढाते जायें, एक विनती हमारी आप से जरूर है कि यदि बाजार विपरीत चलना शुरू हो जायें तो व्यापार आगे नहीं बढ़ाये तथा over Trading कभी नहीं करें तथा आप हमसे ब्यावर आफिस से जबाबी पत्र तथा दो रुपये का स्टाम्प भेजकर ताजी सलाह मंगा सकते हैं।

ता. १ फरवरी १९८८ को गुरु मेष में प्रवेश होने से एक मन्दी आ सकती है, लेकिन ता. ५, ७ मार्च १९८८ को राहु

कुम्भ में प्रवेश होने पर पुन: तेजी का ट्रेण्ड शुरु हो जायेगा। मेष के गुरु से मन्दीवाले समय-समय पर तेजी को रोकने का प्रयास करेंगे। लेकिन ता. २० जून के बाद जब गुरु वृष में आ जायेगा तब तेजीवाले व्यापारियों का मानस बढता जावेगा तथा अक्तूबर तक एक बार तेजी के टाँप भाव सभी तिलहन-बाजारो में हो सकेंगे। सावधानी व सफलतापूर्वक व्यापार करने की हमारी विनती है।

रुई, कपास, बाजार-भविष्य: रुई, कपास, बाजार का भी महत्व हमारे देश में कम नहीं है। रुई, कपास से कपड़ा सूत आदि बनता है। अत: कपड़े व सूत के सभी लाखो व्यापारी रुई, कपास की घटा-बढी व तेजी-मन्दी में दिलचस्पी रखते हैं।

रुई, कपास में गत २-२॥ वर्षों से मन्दी का विशेष प्रभाव नजर आया है। रुई, कपास की कारक राशि तुला है तथा १९८२ के अक्तूबर से दिसम्बर ८४ तक इस तुला राशि में शनि ग्रह का प्रसार चल रहा था, तथा उन २-२॥ वर्षों में रुई कपास बाजारो में तेजी का बडा तूफान आया तथा मिलवाले को तो रुई ब्लेक मे भी कठिनाई से उपलब्ध होती थी ;लेकिन ज्योंही ता. २१ दिसम्बर ८४ को इस शनि ने तुला राशि छोडी, रुई, कपास-बाजारो में मन्दी की प्रतिक्रिया शुरु हुई और पूरा सन् १९८५-१९८६ जबरदस्त मन्दी प्रधान गया तथा १९८६ मे रुई, कपास के व्यापार मे दिलचस्पी रखने वाले व्यापारियों ने रुई का धन्धा करने की कसम खाने का इरादा कर लिया। यदि ध्यानपूर्वक हमारे लेख व्यापार-भविष्य जो इसी श्री विश्व विजय पंचांग मे सन् १९८५-१९८६ के अंकों में छपे थे उनको ध्यानपूर्वक पढ़ते तो शायद इन नुकसानों से बच जाते ;क्योंकि हमने तो साफ व स्पष्ट शब्दों में अपने लेख मे तथा अपने वार्षिक भावी-फल जो हर साल छपते है – संकेत दिया था कि ये वर्ष मूल मन्दी रुई कपास बाजारों के लिए हैं।

सन् १९८७ के साल में हमने जरूर रुई-कपास के व्यापारियो को तेजी का धंधा करने की सलाह दी थी, क्योंकि इस १९८७ की साल मे गुरु ग्रह मीन राशि मे आने वाला था। मीन राशि न. १२ की राशि में गुरु का प्रसार बड़ी तेजी का फेक्टर हम मानते हैं। लेकिन हमारा यह अन्दाजा विशेष सही नहीं हुआ। यद्यपि १९८७ की साल में रुई, कपास-बाजारो में दो तीन बार अच्छी तेजी आयी, तथा लम्बी तेजी ठहरी भी नहीं ;हमें अपनी गलती मंजूर कर लेने में तनिक भी संकोच नहीं है, क्योंकि यह व्यापारिक ज्योतिष एक विशाल विद्या है। ता. ३ फरवरी १९८७ को मीन नं.१२ की राशि में गुरु जरूर आया, लेकिन वह गुरु अतिचारी होकर आया इस बात को हमने विशेष महत्व नहीं दिया तथा यह गुरु जिस दिन मीन न. १२ की राशि में आया उसके कुछ महीने पहले अर्थात् ता. १८ अगस्त १९८६ को राहु ग्रह जो मन्दी का रुख बाजार के लिये बड़ा फेक्टर है, वह मीन में आ गया और इस गुरु का राहु से मीन राशि में क्रांस हो गया जिससे बड़ी तेजी मीन के गुरु की नहीं आ सकी। राहु गुरु की युति के बाद जरूर एक अच्छी तेजी का उछाले इस रुई बाजार में आया फिर भी सन १९८६ की घर-घर मन्दी १९८७ की साल में बिल्कुल रुक गई तथा बाजार अच्छी तेजी में आ गया अभी तो मीन का गुरु सही रूप में ता. २६ अक्टूबर ८७ को पुन: मीन राशि मे आवेगा। अत: रुई-कपास बाजारों में सन् १९८८ का साल बड़ी तेजी का आपको समझना चाहिये। दीपावली जो ता. २२ अक्तूबर ८७ की इस साल उस टाइम से ही तेजी का थोड़ा-थोडा धन्धा आपको शरू कर देना चाहिए।

इस वर्ष सन् १९८८ में धनु राशि का शनि जो ता. १६ दिसम्बर १९८८ को आ रहा है। वह भी तेजी का एक बड़ा फेक्टर रुई बाजार के लिये इस वर्ष बन रहा है। शनि सन् १९८८ में इसी धनु राशि मे चलता रहेगा। धनु राशि के शनि की पूर्ण दृष्टि मिथुन न. ३ कुम्भ न. ११ एव कन्या न. ६ की राशि पर पड़ेगी। कन्या राशि रुई कपास की Crop अर्थात् पैदावार की राशि है। इस पर शनि की दृष्टि से रुई कपास की पैदावार इस वर्ष थोड़ी डिस्टर्बड अर्थात खराब हो जाएगी। फसल खराब होने से रुई कपास की पैदावार कम हो सकती है जिससे रुई, कपास में तेजी आने की सम्भावना है, हमारा ख्याल है कि १६-१७ दिसम्बर १९८७ से भी एक तेजी दो एक महीने की आ सकती है। फरवरी में फिर गुरु मेष में प्रवेश होने मन्दी के रिएक्सन की सम्भावना है। मेष का गुरु ता. १९ जून १९८८ तक चलेगा फिर वृष राशि मे प्रवेश हो जाएगा वृष का गुरु भी तेजी की प्रधानता बताता है। अत: यह वर्ष रुई कपास के लिये तेजी प्रधान व अभी तेजी का लगता है। यों तो समय-समय पर बाजार ज्यादा बढने पर मन्दी के बड़े रिएक्शन भी आते रहेंगे लेकिन हमारा ख्याल है कि इस वर्ष तेजी की प्रधानता रुई कपास में विशेष रहेगी। **नोट कर लें !** तेजी मनोवृत्ति वाले व्यापारियों को विशेष सावधानी पूर्वक व सहास पूर्वक व्यापार करना चाहिए, भगवान चाहेगा तो सब पुरानी कसर निकल जायेंगी, चाहें तो हमारा सम्पर्क भी आप पत्रों द्वारा रख सकते हैं।

गुड़, खांड़ बाजार-भविष्य:-- गुड़, खांड बाजारों की घटा-बढी का सम्बन्ध मुख्यरुप से जलतत्व की राशियों से हमारे अनुभव में आया है। मीन, वृश्चिक एवं कर्क ये तीन राशियां जल तत्व की हैं। मीन का मालिक गुरु वृश्चिक का मालिक मंगल तथा कर्क का मालिक चन्द्रमा, मीन राशि का मालिक नेपच्यून एवं वृश्चिक राशि का मालिक प्लूटो भी इन बाजारो में विशेष महत्व रखता है। शनि तथा राहु ग्रह क्रूर हैं तथा इनका प्रभाव भी गन्ना की खेती से विशेष है।

गत २-२॥ वर्षों में गुड़ व खाँड बाजारों में मन्दी की ही प्रधानता रही। कारण वृश्चिक राशि में शनि जब से आया है यह गुड़, खाँड बाजार को विशेष बढने नहीं देता। सन् १९८८ में गुड़-खाँड में हमको तेजी की प्रधानता इसलिए लगती है कि इस वर्ष शनि ग्रह ता. १६ दिसम्बर १९८७ को वृश्चिक देता है तथा ता. ६ मार्च को राहु भी मीन राशि को छोड देता है। और कुम्भ राशि में प्रवेश कर जाता है। अत: ये दोनों योग तेजी के हमको लगते हैं। दोनों ही बड़े योग है। गुड़-खाण्ड में गुरु ग्रह का भी विशेष वर्चस्व मानते है। गुरु ग्रह ता. १५ अक्तूबर १९८७ को मेष से बड़ी गति से पुन: मीन मे प्रवेश होता है। अत: यह योग भी हमको तेजी का लगत है। फिर गुरु ता. ९ फरवरी को मेष में आता है। यह दो महीने मन्दी के रिएक्सन दे सकेगा। लेकिन ता. १९ जून १९८८ को जब गुरु वृष राशि में प्रवेश होगा तब यह भी तेजी का सूचक हो जायेगा तथा अगले २-३ महीना तेजी सूचक रहेगा। जनरल योग १९८८ मे हमको तेजी के लगते है। गुड-खांड दोनें बाजारो मे सन १९८७ के मुकाबले १९८८ का वर्ष अच्छी तेजी का हमको लगता है। ता. १९ जून १९८८ के बाद खांड़ बाजार अच्छा बढ़ सकता है अक्तूबर से पुन: मन्दी के रिएक्सन आने लगते हैं। फिर भी हमको १९८८ का साल तेजी प्रधान की लगता है। विशेष सावधानी से व्यापार करें। चान्स गलत चले तो व्यापार रोक कर हमसे ताजी सलाह ले सकते है।

जूट-बारदाना बाजार भविष्य :– जूट-बारदाना बाजारों में काफी अर्से से सन् १९८५ से आज तक मन्दी की प्रधानता ही रही है। दर असल इन बाजारों में जिस दिन से शनि ने तुला को छोड़ा है अर्थात् ता. २० दिसम्बर ८४ को तब से ही पाट-बारदाना बाज़ारों के धंधे में तेजी मनोवृतिवाले व्यापारियों को निराशा ही हुई है। तेजी कभी-कभी रिएक्सन रूपी आती है ;लेकिन ठहरती नही, लेकिन अब यह वर्ष सन १९८८ का हमको तेजी मनोवृत्तिवाले व्यापारियो के लिए एक वरदान स्वरुप सिद्ध होगा, क्योंकि यह साल हमको तेजी का लगता है तथा जिस प्रकार गत दो वर्षों में मन्दी,का वातावरण चलता रहा तथा बीच-बीच में छोटे-मोटे तेजी के रिएक्सन आते रहे। ठीक इसी प्रकार इस वर्ष में तेजी की प्रधानता रहेगा तथा बीच-बीच में मन्दी के रिएक्सन छोटे-मोटे आते रहेंगे।

दर असल जूट बारदानाबाजार का विशेष सम्बन्ध वायु तत्व की तीन राशियो से है। मिथुन न. ३ तुला नं. ७ तथा कुम्भ न. ११ तथा इसका विशेष वर्चस्व गुरु, शनि, राहु तथा मंगल ग्रह से हमारे अनुभव में आया है।

सन् १९८८ में कुछ महत्वपूर्ण ग्रहों का परिवर्तन हो रहा है सबसे बडा चेंज शनि ग्रह का ता. १६ दिसम्दर ८७ को हो रहा है तथा यह वृश्चिक राशि छोड़कर धनु न. ९ की राशि में प्रवेश हो रहा है। अत: शनि जो गत २॥ वर्षों से मन्दी में चल रहा था वह अब तेजी में आ रहा है, क्योंकि इस शनि की सीधी दृष्टि मिथुन नं. ३ तथा नं. ११ कुम्भ राशियों पर पड़ती है। ये दोनों राशियां वायु तत्व की राशियाँ हैं। अलावा इसके ता. ५ मार्च ८८ को राहु कुम्भ राशि में प्रवेश होता है। कुम्भ राशि का राहु हमारे ख्याल से बड़ी तेजी का फेक्टर इन बाजारों में है। क्योंकि कुम्भ राशि भी वायु तत्व की राशि है। अत: जूट-बारदाना बाजारों में १९८८ का साल हमको तेजी प्रधानता व अच्छी तेजी का लगती है विशेष सावधानी से व्यापार करें। ता. १६ दिसम्बर १९८७ मे शनि के चेंज होने के बाद २-३ दिन बाजार की घट-बढ देखे हमको ऐसा लगता है कि कोई न कोई तेजी का सॉलिड कारण शनि चेंज के बाद बाजार में आ सकेगा। इसके बाद एक तेजी ता. ६ मार्च १९८८ को जब राहु कुम्भ राशि में प्रवेश होगा [illegible] दोनों ही एक-एक डेढ महीने के चान्स हैं। फिर वृष का गुरु ता. २० जून १९८८ को होने पर बडी तेजी हमको लगती है। यह तेजी भी दो महीने की समझनी चाहिए। मन्दी के रिएक्शन बाजार ज्यादा बढने पर आ सकेंगे।

इस वर्ष हमारा विश्वास है कि तेजी मनोवृत्तिवाले व्यापारियों को काफी बड़ी राहत मिल सकेगी। यदि आप तेजी मनोवृत्तिवाले व्यापारी हैं तथा जूट-वारदाना के व्यापार में विशेष दिलचस्पी रखते हैं तो आपसे हमारी प्रार्थना है कि आप हमसे पत्र व्यवहार से सम्पर्क रखें। पता ऊपर लिखा हुआ है। आपको व्यापार में जरूर लाभदायक सिद्ध होगा।

अनाज दालवाना बाजार-भविष्य :– गत वर्ष अनाज-दालवाना भविष्य अपने लेख में देना भूल गये थे। जिनसे बहुत से व्यापारियों के हमारे पास पत्र आये अनाज-दालवाना बाजारों का सम्बन्ध खासतौर से पृथ्वी-तत्व की राशियों से हैं तथा शनि-राहु-गुरु तथा मंगल ग्रहों का इन बाजारों पर विशेष वर्चस्व व असर है १९८८ के साल में हमको इन बाजारों में तेजी का प्रभाव विशेष रूप से लगता है। कारण शनि ग्रह ता. १६-१७ दिसम्बर १९८७ को धनु राशि में प्रवेश होता है। जिसकी पूर्ण दृष्टि कन्या राशि पर पड़ती है। जो पृथ्वी तत्व की महत्वपूर्ण राशि है। अतः अनाज दालबाना की पैदावार में कुछ प्राकृतिक प्रकोप के कारण से कमी आयेगी। अतः तेजी की प्रधानता रहेगी। वर्ष के शुरु में ही तेजी चालू होगी तथा घटा-बढ़ी व बीच-बीच में रिएक्सन के साथ अक्टूबर तक तेजी चल सकेगी। अगले वर्ष मानसून मे कमी से तेजी की संभावना है।

चांदी, सोना बाजार-भविष्य :– गत वर्ष १९८७ में चांदी, सोना बाजार मे बहुत तेजी आयी। यद्यपि हमने पंचाग में चाँदी, सोने का भविष्य नहीं दिया था। लेकिन अन्य हमारे लेखों तथा हमारे भावी फल १९८७ में हमने इस तेजी का पुरजोर उल्लेख दिया था। चाँदी-सोना बाजारों की कारक राशि कर्क है तथा जल तत्व की राशियों का इसका खास सम्बन्ध है। गुरु, राहु, शनि तथा मंगल ग्रहों का वर्चस्व विशेष है। सन् १९८७ में ता. ३ फरवरी १९८७ को गुरु मीन में प्रवेश हुआ। इसकी पूर्ण दृष्टि कर्क राशि पर पड़ी जहाँ यह गुरु उच्च का होता है। अतः इसने बड़ी तेजी कर दी।

सन् १९८७ के ता. २५ अक्टूबर से गुरु पुनः मीन में आता है। यह एक तेजी देगा, फिर फरवरी से मेष में आने से मन्दी तथा ता. १९ जून को वृष में आने से पुनः तेजी देगा। इस वर्ष तेजी व मन्दी दोनों व्यापारियों को लाभ हो सकेगा। वृष के गुरु के बाद दो तीन महीने तेजी की अच्छी प्रतिक्रिया होगी।

शेयर बाजार-भविष्य :– शेयर बाजार में वृश्चिक राशि इसकी कुण्डली की लग्न राशि है। अतः जब से शनि ग्रह वृश्चिक में आया यानि ता. २० दिसम्बर ८४ से शेयर बाजार में मन्दी की प्रधानता रही. कभी-कभी तेजी के भी रिएक्सन आये, लेकिन तेजी ठहरी नहीं हमारा अंदाजा ता. ३ फरवरी १९८७ से तेजी शुरु होने का था। मीन के गुरु के कारण, तेजी नहीं आयी। बड़ा कारण शनि का वृश्चिक राशि अर्थात् शेयर बाजार की कुण्डली की प्रथम राशि में प्रसार चालू था। अब यह शनि वृश्चिक राशि ता. १६ दिसम्बर १९८७ को छोड़ कर धनु राशि में प्रवेश होता है। अतः १९८८ में हमको पुनः शेयर बाजार में तेजी की सम्भावना है। चालू शेयर भावों के मध्य पूर्व क्षेत्र से कम-से-कम २५-३० परसेन्ट की तेजी हमको लगती है। घटा-बढ़ी के साथ तेजी चलेगी विशेष सावधानी से व्यापार करें।

एक विशेष जरूरी निवेदन :– यदि आपकी जन्म कुण्डली में नं. ९ की राशि में सूर्य चन्द्रमा मंगल है अथवा नं. ११ की राशि में सूर्य चन्द्रमा मंगल व गुरु बैठे है तो आपके इन ग्रहों से शनि व राहु का क्षेत्र होता है, यह काल खराब बाधक या हानिकारक है। आप अपनी कुण्डली खोल कर देखें। यदि नं. ९ अथवा नं. ११ की राशि में इन ग्रहों में-से कोई एक दो या तीन ग्रह बैठे हैं तो आपको अपने व्यापार में सावधानी रखनी जरूरी है, वरना गलती हो सकती है और नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में ऐसे ग्रह हो तो कृपया अपनी जन्म-कुण्डली की नकल हमें भेज दें। हम आपको खुलासेवार विवरण व सरल उपाय लिख भेजेंगे। एक कुण्डली का लवाजम मात्र २१) मात्र भेजें। आपको लौटती डाक से जवाब दे देंगे।

आपके लिए एक विशेष लाभ की बात :– आपकी विशेष सेवा के उद्देश्य से हमने इस वर्ष सन् १९८८ ई. के साल के लिए एक विशाल पुस्तक प्रकाशित की है। जिसका नाम वायदा-हाजिर एवं तिलहन बाजार भविष्य सन् १९८८ है। यह भविष्य फल करीब ४०० पृष्टों का है। इससे दीपावली १९८७ से दिसम्बर १९८८ तक के अर्थात् आगामी १४ महीना के सबही २५-२६ प्रमुख बाजारों की घटा-बढ़ी का भविष्य

अलग-अलग १५ स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। तिलहन-रुई-कपास-जूट-वारदाना-गुड़-खाँड़-अनाज दालबाना-जूट-किराना शेयर आदि। सभी जिन्सों के छोटे-बड़े चान्स मासिक भविष्य स्पेशियल चान्स आदि दिये हैं। आपको अत्यधिक पसन्द आयेगा। यह हमारी पुस्तक भावीफल व्यापारी जगत में अत्यधिक लोकप्रिय है। कीमत १०१) पंचांग के पाठकों से ९५) मनीआर्डर भेजकर फौरन रिजर्व करवा लें, वी.पी. नहीं भेज सकेंगे।

विशेष विशिष्ट सेवा :– यदि आप किसी विशेष जिन्स बाजार के धन्धे में दिलचस्पी रखते हैं तो हम आप को हर महीने स्पेशल रिपोर्ट मय दैनिक घटा-बढ़ी के भेज सकेंगे। इसका वार्षिक ग्राहक लवाजम १२५) है। वार्षिक ग्राहक बन जाने पर आपको अगले १२ महीने तक स्पेशल मासिक रिपोर्ट भेजी जायेगी तथा पूरे १२ महीने आपका हमारा पत्रों द्वारा निरन्तर सम्पर्क चल सकेगा। एक से अधिक जिन्स के भी आप वार्षिक ग्राहक बन सकते हैं। एक जिन्स १२५), दो के २५०) चार्ज है। सन् १९८८ का वर्ष विशेष व असाधारण घटा-बढ़ी का वर्ष है। अतः हमारी प्रार्थना कि आप अवश्य वार्षिक ग्राहक बन कर हमारी विशेष सेवा का लाभ उठावें। जिस दिन आपका मनी-आर्डर आवेगा उस तारीख से अगले १२ महीने के आप वार्षिक ग्राहक बन जायेंगे। भूल-चूक के लिए क्षमा प्रार्थी है।

आपका स्नेह-भाजन

प्रोफेसर बी.सी. मेहता

ज्योतिष-मार्तण्ड, ज्योतिष-सम्राट

जैन-ज्योतिष ब्यूरो ब्यावर (राजस्थान) पिनकोड-३०५९०१

फोन-२०९२९]

तार-मेहता

दैनिक चन्द्रोदयास्त भा. स्टै. टा. में—संवत् २०४५

ता १९ मार्च १९८८ से १९ अप्रेल १९८९ तक

यहाँ भारत के चार प्रसिद्ध नगरों (दिल्ली, कलकता, बम्बई, मद्रास) का शुद्ध सुक्ष्म गणित द्वारा दैनिक चन्द्रमा का उदय और अस्तकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम घंटा मिनटों में यहाँ नीचे दिया जा रहा है।

अप्रैल सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

अप्रैल	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				अप्रेल
८९	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८९
ता.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	ता.
१	२	४७	१३	२५	१	४७	१२	५१	२	४४	१४	०३	२	०२	१३	४३	१
२	३	२९	२४	३३	२	३३	१३	५५	३	३१	१५	०५	२	५१	१४	४२	२
३	४	०७	१५	४१	३	१४	१४	५९	४	१४	१६	०७	३	३८	१५	४१	३
४	४	४३	१६	४८	३	५४	१६	०३	४	५६	१७	०९	४	२३	१६	३९	४
५	५	१८	१७	५७	४	३२	१७	०७	५	३७	१८	११	५	०७	१७	३७	५
६	५	५३	१९	०७	५	१२	१८	१३	६	१८	१९	१४	५	५२	१८	३८	६

मार्च सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

मार्च	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				मार्च
८८	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८८
ता.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	ता.
१९	७	०३	२०	१९	६	२०	१९	१२	७	२६	२०	१४	६	५८	१९	३८	१९
२०	७	३७	२१	१०	६	५८	२०	१४	८	०६	२१	१४	७	४२	२०	३५	२०
२१	८	१४	२२	१७	७	३९	२१	१७	८	४९	२२	१५	८	२७	२१	३४	२१
२२	८	५५	२३	२२	८	२३	२२	२०	९	३५	२३	१६	९	१६	२२	३३	२२
२३	९	४१	—	—	९	१०	२३	२०	१०	२४	—	—	१०	०७	२३	३१	२३
२४	१०	३१	०	२४	१०	०२	००	००	११	१६	०	१६	११	००	—	—	२४
२५	११	२५	१	२१	२०	५७	०	१७	१२	११	१	१२	११	५४	०	२७	२५
२६	१२	२२	२	१२	११	५२	१	०९	१३	०६	२	०४	१२	४८	१	१९	२६
२७	१३	२०	२	५५	१२	४७	१	५४	१४	००	२	५०	१३	४१	२	०७	२७
२८	१४	१६	३	३३	१३	४१	२	३५	१४	५२	३	३२	१४	३१	२	५१	२८
२९	१५	११	४	०७	१४	३४	३	११	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	१६	०५	४	३६	१५	२४	३	४४	१६	३२	४	४३	१६	०६	४	०७	३०
३१	१६	५८	५	०४	१६	१४	४	१४	१७	२०	५	१६	१६	५१	४	४२	३१

अप्रैल सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत २०४५ वि

अप्रैल	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				अप्रेल
८८	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८८
ता.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	घ.	मि.	ता.
१	१७	५१	५	३०	१७	०४	४	४४	१८	०८	५	४७	१७	३७	५	१६	१
२	१८	४६	५	५७	१७	५५	५	१४	१८	५७	६	१८	१८	२३	५	५०	२
३	१९	४२	६	२५	१८	४८	५	४५	१९	४९	६	५१	१९	११	६	२६	३
४	२०	४१	६	५५	१९	४४	६	१८	२०	४३	७	२७	२०	०३	७	०४	४
५	२१	४३	७	३०	२०	४३	६	५६	११	४०	८	०७	२०	५७	७	४६	५
६	२२	४७	८	११	२१	४४	७	३९	२२	४०	८	५२	२१	५५	८	३३	६
७	२३	५०	८	५८	२२	४६	८	२९	२३	४१	९	४३	२२	५५	९	२६	७
८	००	००	९	५४	२३	४६	९	२५	००	००	१०	४०	२३	५६	१०	२४	८
९	०	५०	१०	५७	००	००	१०	२८	०	४१	११	४२	००	००	११	२५	९
१०	१	४४	१२	०५	०	४२	११	३३	१	३८	१२	४७	०	५४	१२	२८	१०
११	२	३२	१३	१४	१	३३	१२	४०	२	३०	१३	५१	१	४८	१३	३०	११
१२	३	१४	१४	२३	२	१८	१३	४५	३	१६	१४	५४	२	३७	१४	३०	१२
१३	३	५१	१५	३०	२	५९	१४	४८	३	५९	१५	५५	३	२३	१५	२८	१३
१४	४	२५	१६	३६	३	३७	१५	५०	४	३९	१६	५५	४	०७	१६	२५	१४
१५	४	५८	१७	४२	४	१३	१६	५२	५	१८	१७	५५	४	४९	१७	२१	१५
१६	५	३१	१८	४८	४	५१	१७	५४	५	५८	१८	५५	५	३२	१८	१८	१६
१७	६	०७	१९	५५	५	३०	१८	५७	६	३९	१९	५६	६	१६	१९	१६	१७
१८	६	४६	२१	०२	६	१३	१०	०१	७	२३	२०	५९	७	०३	२०	१६	१८
१९	७	३०	२२	७	६	५९	२१	०४	८	१२	२२	००	७	५४	२१	१६	१९
२०	८	२०	२३	०८	७	५०	२२	०४	९	०४	२३	००	८	४८	२२	१४	२०
२१	९	१४	००	००	८	४५	२२	५९	९	५९	२३	५५	९	४३	२३	०९	२१
२२	१०	११	०	०३	९	४२	२३	४८	१०	५५	००	००	१०	३९	—		२२
२३	११	०९	०	५०	१०	३८	००	००	११	५१	०	४४	११	३३	००	००	२३
२४	१२	०७	१	३१	११	३३	०	३१	१२	४४	१	२८	१२	२४	०	४६	२४
२५	१३	०३	२	०६	१२	२६	१	०९	१३	३६	२	०७	१३	१३	१	२७	२५
२६	१३	५७	२	३७	१३	१७	१	४३	१४	२५	२	४२	१४	००	२	०५	२६
२७	१४	५०	३	०५	१४	०७	२	१५	१५	१४	३	१५	१४	४६	२	४१	२७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	०२	३	४७	१५	३१	३	१५	२८
२९	१६	३७	३	५८	१५	४८	३	१४	१६	५०	४	१८	१६	१७	३	४९	२९
३०	१७	३३	४	२६	१६	४०	३	४५	१७	४१	४	५१	१७	०५	४	२४	३०

मई सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

मई	दिल्ली		कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		मई
८८	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	८८
ता.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	ता.
१	१८ ३१	४ ५६	१७ ३५	४ १८	१८ ३५	५ २६	१७ ५६	५ ०२	१
२	१९ ३३	५ २९	१८ ३४	४ ५४	१९ ३२	६ ०४	१८ ५०	५ ४३	२
३	२० ३७	६ ०८	१९ ३५	५ ३६	२० ३२	६ ४८	१९ ४८	६ २९	३
४	२१ ४१	६ ५५	२० ३८	६ २५	२१ ३४	७ ३८	२० ४९	७ २१	४
५	२२ ४४	७ ४९	२१ ४०	७ २०	२२ ३५	८ ३४	२१ ५०	८ १८	५
६	२३ ४१	८ ५१	२२ ३८	८ २१	२३ ३४	९ ३६	२२ ४९	९ १९	६
७	— —	९ ५७	२३ ३०	९ २६	— —	१० ४०	२३ ४४	१० २२	७
८	० ३०	११ ०६	०० ००	१० ३२	० २७	११ ४४	—	११ २४	८
९	१ १३	१२ १४	०० १६	११ ३७	१ १४	१२ ४७	१ २०	१२ २४	९
१०	१ ५१	१३ २०	०० ५७	१२ ३९	१ ५७	१३ ४७	२ ०३	१३ २१	१०
११	२ २४	१४ २४	१ ३५	१३ ३९	२ ३७	१४ ४५	२ ४४	१४ १६	११
१२	२ ५७	१५ २८	२ ११	१४ ३९	३ १५	१५ ४३	२ ४४	१५ १०	१२
१३	३ २९	१६ ३२	२ ४७	१५ ४०	३ ५३	१६ ४१	३ २५	१६ ०५	१३
१४	४ ०३	१७ ३७	३ २४	१६ ४१	४ ३२	१७ ४१	४ ०८	१७ ०२	१४
१५	४ ४०	१८ ४३	४ ०५	१७ ४४	५ १५	१८ ४२	४ ५३	१८ ००	१५
१६	५ २१	१९ ४९	४ ४९	१८ ४७	६ ०१	१९ ४४	५ ४२	१९ ००	१६
१७	६ ०९	२० ५३	५ ३८	१९ ४९	६ ५२	२० ४५	६ ३५	१९ ५९	१७
१८	७ ०१	२१ ५१	६ ३२	२० ४७	७ ४६	२१ ४२	७ ३०	२० ५७	१८
१९	७ ५८	२२ ४२	७ २९	२१ ३९	८ ४३	२२ ३५	८ २६	२१ ५०	१९
२०	८ ५७	२३ २६	८ २६	२२ २६	९ ४०	२३ २२	९ २२	२२ ३९	२०
२१	९ ५६	— —	९ २३	२३ ०६	१० ३५	— —	१० १५	२३ २२	२१
२२	१० ५२	० ०४	१० १७	२३ ४१	११ ३७	० ०३	११ ०६	——	२२
२३	११ ४७	० ३६	११ ०९	०० ००	१२ १८	० ४०	११ ५४	० ०२	२३
२४	१२ ४१	१ ०५	११ ५९	० १४	१३ ०६	१ १४	१२ ४०	० ३८	२४
२५	१३ ३३	१ ३३	१२ ४९	० ४४	१३ ५४	१ ४६	१३ २५	१ १३	२५
२६	१४ २६	१ ५९	१३ ३८	१ १३	१४ ४२	२ १७	१४ १०	१ ४६	२६
२७	१५ २१	२ २६	१४ ३०	१ ४३	१५ ३१	२ ४९	१४ ५७	२ २१	२७
२८	१६ १८	२ ५४	१५ २३	२ १५	१६ २४	३ २२	१५ ४६	२ ५७	२८
२९	१७ १९	३ २६	१६ २१	२ ५०	१७ १९	३ ५९	१६ २९	३ ३७	२९
३०	१८ २३	४ ०३	१७ २२	३ ३०	१८ १९	४ ४१	१७ ३६	४ २१	३०
३१	१९ २९	४ ४७	१८ २५	४ १६	१९ ३१	५ २९	१८ ३७	५ ११	३१

जून सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

जून	दिल्ली		कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		जून
८८	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	८८
ता.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	ता.
१	२० ३४	५ ३९	१९ २९	५ १०	२० २५	६ २४	१९ ३९	६ ०८	१
२	२१ ३४	६ ४०	२० ३०	६ ११	२१ २६	७ २५	२० ४१	७ ०९	२
३	२२ २७	७ ४७	२१ २६	७ १७	२२ २२	८ ३१	२१ ३९	८ १३	३
४	२३ १२	८ ५७	२२ १४	८ २४	२३ १२	९ ३७	२२ ३१	९ १७	४
५	२३ ५२	१० ०६	२२ ५७	९ ३०	२३ ५७	१० ४१	२३ १९	१० १८	५
६	— —	११ १३	२३ ३६	१० ३३	— —	११ ४२	— —	११ १७	६
७	० २६	१२ १८	०० ००	११ ३४	० ३७	१२ ४०	० ०३	१२ १२	७
८	० ५९	१३ २१	० १२	१२ ३३	१ १५	१३ ३७	० ४४	१३ ०६	८
९	१ ३०	१४ २३	० ४७	१३ ३२	१ ५२	१४ ३४	१ २४	१३ ५९	९
१०	२ ०३	१५ २७	१ २३	१४ ३२	२ ३१	१५ ३२	२ ०५	१४ ५४	१०
११	२ ३८	१६ ३१	२ ०२	१५ ३३	३ ११	१६ ३१	२ ४९	१५ ५०	११
१२	३ १७	१७ ३६	२ ४४	१६ ३५	३ ५५	१७ ३२	३ ३५	१६ ४८	१२
१३	४ ०१	१८ ३९	३ ३०	१७ ३६	४ ४३	१८ ३२	४ २५	१७ ४७	१३
१४	४ ५१	१९ ३९	४ २२	१८ ३६	५ ३६	१९ ३१	५ १९	१८ ४५	१४
१५	५ ४६	२० ३३	५ १७	१९ ३०	६ ३१	२० २५	६ १५	१९ ४१	१५
१६	६ ४५	२१ २०	६ १५	२० १९	७ २८	२१ १५	७ ११	२० ३१	१६
१७	७ ४४	२२ ००	७ १२	२१ ०२	८ २५	२१ ५८	८ ०६	२१ १७	१७
१८	८ ४२	२२ ३५	८ ०८	२१ ३९	९ १९	२२ ३७	८ ५८	२१ ५८	१८
१९	९ ३८	२३ ०५	९ ०१	२२ १२	१० १०	२३ १२	९ ४७	२२ ३६	१९
२०	१० ३२	२३ ३३	९ ५२	२२ ४३	१० ५९	२३ ४५	१० ३३	२३ ११	२०
२१	११ २४	२३ ५९	१० ४१	२३ १३	११ ४७	— —	११ १९	२३ ४४	२१
२२	१२ १७	— —	११ ३०	२३ ४२	१२ ३४	० १६	१२ ०३	—	२२
२३	१३ १०	० २६	१२ २०	०० ००	१३ २२	० ४७	१२ ४८	० १८	२३
२४	१४ ०५	० ५३	१३ १२	० १२	१४ १२	१ १९	१३ ३६	० ५३	२४
२५	१५ ०३	१ २३	१४ ०७	० ४५	१५ ०६	१ ५४	१४ २६	१ ३०	२५
२६	१६ ०५	१ ५७	१५ ०५	१ २३	१६ ०३	२ ३३	१५ २९	२ १२	२६
२७	१७ १०	२ ३८	१६ ०८	२ ०६	१७ ०४	३ १८	१६ २०	२ ५९	२७
२८	१८ १६	३ २६	१७ १२	२ ५६	१८ ०८	४ १०	१७ २२	३ ५३	२८
२९	१९ २०	४ २४	[illegible]	[illegible]	१९ ११	५ ०९	१८ २६	४ ५३	२९
३०	२० १७	५ ३०	१९ १५	५ ००	२० ११	६ १४	१९ २७	५ ५७	३०

जुलाई सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

जुलाई	दिल्ली		कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		जुलाई
८८	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	८८
ता.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ मि.	ता.
१	२१ ०७	० ४०	२० ०८	६ ०९	२१ ०५	७ २२	२० २३	७ ०३	१
२	२१ ४९	७ ५२	२० ५४	७ १७	२१ ५३	८ २९	२१ १४	८ ०८	२
३	२२ २७	९ ०२	२१ ३५	८ २४	२२ ३६	९ ३३	२२ ००	९ ०९	३
४	२३ ००	१० ०९	२२ १३	९ २७	२३ १५	१० ३४	२२ ४३	१० ०६	४
५	२३ ३३	११ १४	२२ ४८	१० २८	२३ ५३	११ ३२	२३ २४	११ ०२	५
६	— —	१२ १७	२३ २४	११ २७	— —	१२ ३०	—	११ ५६	६
७	० ०५	१३ २०	०० ००	१२ २६	० ३१	१३ २७	० ०५	१२ ५०	७
८	० ३९	१४ २४	० ०२	१३ २७	१ १०	१४ २५	० ४७	१३ ४६	८
९	१ १६	१५ २८	० ४२	१४ २८	१ ५३	१५ २५	१ ३२	१४ ४२	९
१०	१ ५८	१६ ३१	१ २७	१५ २९	२ ३९	१६ २५	२ २१	१५ ४०	१०
११	२ ४६	१७ ३२	२ १६	१६ २८	३ २९	१७ २३	३ १३	१६ ३८	११
१२	३ ३९	१८ २७	३ १०	१७ २३	४ २४	१८ १९	४ ०७	१७ ३३	१२
१३	४ ३६	१९ १६	४ ०६	१८ १४	५ २०	१९ ०९	५ ०३	१८ २५	१३
१४	५ ३४	१९ ५८	५ ०३	१८ ५८	६ १६	१९ ५५	५ ५८	१९ १३	१४
१५	६ ३३	२० ३४	५ ५९	१९ ३७	७ ११	२० ३५	६ ५१	१९ ५५	१५
१६	७ ३०	२१ ०६	६ ५३	२० १२	८ ०३	२१ ११	७ ४१	२० ३४	१६
१७	८ २४	२१ ३५	७ ४५	२० ४४	८ ५३	२१ ४४	८ २८	२१ १०	१७
१८	९ १७	२२ ०१	८ ३५	२१ १३	९ ४१	२२ १६	९ १४	२१ ४३	१८
१९	१० ९	२२ २७	९ २४	२१ ४२	१० २८	२२ ४६	९ ५८	२२ १७	१९
२०	११ ०१	२२ ५३	१० १३	२२ १२	११ १६	२३ १८	१० ४३	२२ ५१	२०
२१	११ ५५	२३ २२	११ ०३	२२ ४३	१२ ०४	२३ ५१	११ २८	२३ २६	२१
२२	१२ ५०	२३ ५३	११ ५५	२३ १७	१२ ५५	— —	१२ १७	—	२२
२३	१३ ४९	— —	१२ ५१	२३ ५७	२३ ४९	० २७	१३ ०८	० ०५	२३
२४	१४ ५२	० २८	१३ ५१	०० ००	१४ ४७	१ ०८	१४ ०४	० ४८	२४
२५	१५ ५७	१ १३	१४ ५३	० ४३	१५ ४९	१ ५६	१५ ०४	१ ३८	२५
२६	१७ ०१	२ ०६	१५ ५७	१ ३७	१६ ५२	२ ५१	१६ ०६	२ ३४	२६
२७	१८ ०१	३ ०८	१६ ५८	२ ३८	१७ ५४	३ ५३	१७ ०९	३ ३६	२७
२८	१८ ५५	४ १७	१७ ५४	३ ४६	१८ ५१	५ ००	१८ ०८	४ ४२	२८
२९	१९ ४२	५ ३०	१८ ४५	४ ५६	१९ ४३	६ ०९	१९ ०२	५ ४९	२९
३०	२० २२	६ ४२	१९ २९	६ ०५	२० २९	७ १६	१९ ५२	६ ५३	३०
३१	२० ५८	७ ५३	२० ०९	७ १२	२१ ११	८ २०	२० ३७	७ ५४	३१

अगस्त सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

अगस्त	दिल्ली		कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		अगस्त
८८	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	८८
ता.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	ता.
१	२१ ३२	९ ०१	२० ४७	८ १६	२१ ५१	९ २२	२१ २०	८ ५२	१
२	२२ ०५	१० ०७	२१ २३	९ १८	२२ ३०	१० २१	२२ ०३	९ ४८	२
३	२२ ३९	११ १२	२२ ०१	१० १९	२३ ०९	११ २०	२२ १५	१० ४४	३
४	२३ १६	१२ १७	२२ ४१	११ २०	२३·५१	१२ २०	२३ ३०	११ ४०	४
५	२३ ५७	१३ २१	२३ २५	१२ २२	— —	१३ १९	— —	१२ ३८	५
६	— —	१४ २५	०० ००	१३ २३	० ३७	१४ १९	० १८	१३ ३५	६
७	० ४३	१५ २७	० १३	१४ २३	१ २६	१५ १८	१ ०९	१४ ३३	७
८	१ ३४	१६ २३	१ ०५	१५ १९	२ १९	१६ १५	२ ०३	१५ २९	८
९	२ २९	१७ १४	२ ००	१६ ११	३ १४	१७ ०६	२ ५८	१६ २२	९
१०	३ २७	१७ ५७	२ ५७	१६ ५७	४ १०	१७ ५३	३ ५३	१७ १०	१०
११	४ २६	१८ ३५	३ ५३	१७ ३७	५ ०५	१८ ३४	४ ४६	१७ ५४	११
१२	५ २३	१९ ०८	४ ४८	१८ २३	५ ५८	१९ १२	५ ३७	१८ ३३	१२
१३	६ १८	१९ ३७	५ ४०	१८ ४५	६ ४९	१९ ४६	६ २५	१९ १०	१३
१४	७ १२	२० ०४	६ ३०	१९ १६	७ ३७	२० १७	७ ११	१९ ४४	१४
१५	८ ०४	२० ३०	७ १९	१९ ४५	८ २५	२० ४८	७ ५५	२० १७	१५
१६	८ ५६	२० ५६	८ ०८	२० १४	९ १२	२१ १९	८ ४०	२० ५१	२६
१७	९ ४८	२१ २३	८ ५७	२० ४३	९ ५९	२१ ५१	९ २५	२१ २५	१७
१८	१० ४२	२१ ५३	९ ४८	२१ १६	१० ४८	२२ २५	१० ११	२२ ०२	१८
१९	११ ३९	२२ २७	१० ४२	२१ ५३	११ ४०	२३ ०३	११ ००	२२ ४३	२९
२०	१२ ३९	२३ ०६	११ ३८	२२ ३५	१२ ३६	२३ ४७	११ ५३	२३ २९	२०
२१	१३ ४१	२३ ५३	१२ ३८	२३ २४	१३ ३४	— —	१२ ५०	— —	२१
२२	१४ ४४	— —	१३ ४०	— —	१४ ३५	० ३७	१३ ५०	० २०	२२
२३	१५ ४५	० ४९	१४ ४१	० २०	१५ ३६	१ ३५	१४ ५१	१ १८	२३
२४	१६ ४१	१ ५३	१५ ३९	१ २४	१६ ३४	२ ३८	१५ ५०	२ २१	२४
२५	१७ ३०	३ ०४	१६ ३१	२ ३२	१७ २८	३ ४५	१६ ४७	३ २६	२५
२६	१८ १४	४ १६	१७ १८	३ ४१	१८ १७	४ ५३	१७ ३८	४ ३१	२६
२७	१८ ५२	५ २८	१८ ०१	४ ४९	१९ ०२	५ ५९	१८ २६	५ ३४	२७
२८	१९ २८	६ ३९	१८ ४०	५ ५६	१९ ४३	७ ०३	१९ ११	६ ३५	२८
२९	२० ०२	७ ४७	१९ १८	७ ००	२० २४	८ ०५	१९ ५५	७ ३४	२९
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ०४	९ ०६	२० ३९	८ ३२	३०
३१	२१ १३	१० ०२	२० ३७	९ ०७	२१ ४७	११ ०८	२१ २४	९ ३०	३१

सितम्बर सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

सितम्बर ८८ ता.	दिल्ली उदय घ. मि.	दिल्ली अस्त घ. मि.	कलकत्ता उदय घ. मि.	कलकत्ता अस्त घ. मि.	बम्बई उदय घ. मि.	बम्बई अस्त घ. मि.	मद्रास उदय घ. मि.	मद्रास अस्त घ. मि.	सितम्बर ८८ ता.
१	२१ ५४	११ १०	२१ २१	१० ११	२२ ३२	११ ०९	२२ १३	१० २८	१
२	२२ ३९	१२ १६	२२ ०८	११ १४	२३ २१	१२ ११	२३ ०४	११ २८	२
३	२३ २९	१३ २०	२३ ००	१२ १६	— —	१३ १२	२३ ५८	१२ २७	३
४	— —	१४ १९	२३ ५५	१३ १५	० १४	१४ १०	—	१३ २४	४
५	० २४	१५ ११	— —	१४ ०८	१ ०९	१५ ०३	० ५३	१४ १८	५
६	१ २२	१५ ५७	० ५२	१४ ५६	२ ०५	१५ ५२	१ ४८	१५ ०८	६
७	२ २०	१६ ३६	१ ४८	१५ ३८	३ ०१	१६ ३४	२ ४२	१५ ५३	७
८	३ १७	१७ ११	२ ४३	१६ १५	३ ५४	१७ १३	३ ३३	१३ ३४	८
९	४ १३	१७ ४१	३ ३६	१६ ४८	४ ४५	१७ ४७	४ २२	१७ ११	९
१०	५ ०७	१८ ०८	४ २७	१७ १८	५ ३४	१८ २०	५ ०९	१७ ४६	१०
११	५ ५९	१८ ३४	५ १६	१७ ४८	६ २२	१८ ५१	५ ५३	१८ १९	११
१२	६ ५१	१९ ००	६ ०५	१८ १७	७ ०९	१९ २१	६ ३८	१८ ५३	१२
१३	७ ४४	१९ २७	६ ५४	१८ ४६	७ ५६	१९ ५३	७ २३	१९ २७	१३
१४	८ ३७	१९ ५६	७ ४४	१९ १८	८ ४५	२० २६	८ ०९	२० ०३	१४
१५	९ ३३	२० २८	८ ३७	१९ ५३	९ ३६	२१ ०३	८ ५७	२० ४२	१५
१६	१० ३१	२१ ०४	९ ३२	२० ३२	१० २९	२१ ४४	९ ४८	२१ २५	१६
१७	११ ३१	२१ ४८	१० ३०	२१ १८	११ २६	२२ ३१	१० ४२	२२ १६	१७
१८	१२ ३३	२२ ३९	११ २९	२२ १०	१२ २५	२३ २४	११ ४०	२३ ०८	१८
१९	१३ ३३	२३ ३८	१२ २९	२३ ०९	१३ २८	— —	१२ ३८	—	१९
२०	१४ २९	— —	१३ २६	— —	१४ २२	० २३	१३ ३७	० ०७	२०
२१	१५ २०	० ४३	१४ १९	० १३	१५ १६	१ २६	१४ ३३	१ ०९	२१
२२	१६ ०४	१ ४३	१५ ०७	१ १९	१६ ०५	२ ३२	१५ २५	२ १२	२२
२३	१६ ४४	३ ०३	१५ ५१	२ २६	१६ ५१	३ ३७	१६ १३	३ १४	२३
२४	१७ २१	४ १३	१६ ३१	३ ३३	१७ ३३	४ ४१	१६ ५९	४ १५	१५
२५	१७ ५५	५ २३	१७ १०	४ ३८	१८ १४	५ ४४	१७ ४४	५ १४	२५
२६	१८ ३०	६ ३१	१७ ४९	५ ४२	१८ ५५	६ ४६	१८ २८	६ १३	२६
२७	१९ ०७	७ ४०	१८ २९	६ ४७	१९ ३७	७ ४८	१९ १४	७ १२	२६
२८	१९ ४७	८ ४९	१९ १२	७ ५२	२० २३	८ ५२	२० ०२	८ १२	२८
२९	२० ३१	९ ५८	२० ००	८ ५८	२१ १२	९ ५६	२० ५४	९ १३	२९
३०	२१ २१	११ ०६	२० ५१	१० ०३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्टूबर सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

अक्टूबर ८८ ता.	दिल्ली उदय घ. मि.	दिल्ली अस्त घ. मि.	कलकत्ता उदय घ. मि.	कलकत्ता अस्त घ. मि.	बम्बई उदय घ. मि.	बम्बई अस्त घ. मि.	मद्रास उदय घ. मि.	मद्रास अस्त घ. मि.	अक्तूबर ८८ ता.
१	२२ १६	१२ ०९	२१ ४७	११ ०५	२३ ०१	१२ ००	२२ ४५	११ १५	१
२	२३ १४	१३ ०५	२२ ४४	१२ ०२	२३ ५८	१२ ५७	२३ ४१	१२ १२	२
३	— —	१३ १४	२३ ४२	१२ ५२	— —	१३ ४८	—	१३ ०४	३
४	० १३	१४ ३६	— —	१३ ३६	० ५५	१४ ३३	० ३६	१३ ५१	४
५	१ ११	१५ १२	० ३७	१४ १५	१ ४९	१५ १३	१ २९	१४ ३३	५
६	२ ०७	१५ ४३	१ ३१	१४ ४९	२ ४१	१५ ४९	२ १९	१५ ११	६
७	३ ०२	१६ १२	२ २२	१५ २१	३ ३१	१६ २२	३ ०६	१५ ४७	७
८	३ ५५	१६ ३८	३ १२	१५ ५०	४ १९	१६ ५३	३ ५१	१६ २१	८
९	४ ४७	१७ ०४	४ ०१	१६ २०	५ ०६	१७ २४	४ ३६	१६ ५४	९
१०	५ ३९	१७ ३१	४ ५०	१६ ४९	५ ५३	१७ ५५	५ २०	१७ २८	१०
११	६ ३२	१७ ५९	५ ४०	१७ २०	६ ४२	१८ २८	६ ०६	१८ ०३	११
१२	७ २८	१८ ३०	६ ३२	१७ ५४	७ ३२	१९ ०४	६ ५४	१८ ४२	१२
१३	८ २५	१९ ०५	७ २७	१८ ३२	८ २५	१९ ४४	७ ४४	१९ २४	१३
१४	९ २५	१९ ४७	८ २४	१९ १६	९ २१	२० २९	८ ३८	२० ११	१४
१५	१० २६	२० ३५	९ २३	२० ०६	१० १९	२१ २०	९ ३८	२१ ०३	१५
१६	११ २६	२१ ३१	१० २२	२१ ०२	११ १८	२२ १६	१० ३२	२२ ००	१६
१७	१२ २३	२२ ३३	११ १९	२२ ०३	१२ १५	२३ १७	११ ३०	२३ ००	१७
१८	१३ १४	२३ ३९	१२ १२	२३ ०७	१३ ०८	— —	१२ २५	—	१८
१९	१३ ५९	— —	१३ ००	— —	१३ ५८	० २०	१३ ४८	० ०१	१९
२०	१४ ३९	० ४७	१३ ४४	० ११	१४ ४३	१ २२	१४ ०५	१ ०१	२०
२१	१५ १५	१ ५४	१४ २४	१ १५	१५ २५	२ २४	१४ ५०	२ ००	२१
२२	१५ ५०	३ ०१	१५ ०२	२ १८	१६ ०५	३ २५	१५ ३३	२ ५७	२२
२३	१६ २४	४ ०८	१५ ४०	३ २९	१६ ४५	४ २६	१६ १७	३ ५५	२३
२४	१६ ५९	५ १५	१६ १९	४ २८	१७ २६	५ २७	१७ ०१	४ ५२	२४
२५	१७ ३७	६ २८	१७ ०१	५ २९	१८ १०	६ ३०	१७ ४८	५ ५२	२५
२६	१८ २०	७ ३४	१७ ४७	६ ३५	१८ ५८	७ ३४	१८ ३९	६ ५३	२६
२७	१९ ०८	८ ४४	१८ ३८	७ ४२	१९ ५१	८ ३९	१९ ३३	६ ५६	२७
२८	२० ०३	९ ५१	१९ ३३	८ ४८	२० ४७	९ ४४	२० ३१	८ ५९	२८
२९	२१ ०१	१० ५३	२० ३२	९ ४९	२१ ४६	१० ४४	२१ २९	९ ५९	२९
३०	२२ ०२	११ ४६	२१ ३१	१० ४४	२२ ४४	११ ३९	२२ २७	१० ५५	३०
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ४१	१२ २८	२३ २१	११ ४५	३१

नवम्बर सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत् २०४५ वि.

नवम्बर ८८ ता.	दिल्ली उदय घ. मि.	दिल्ली अस्त घ. मि.	कलकत्ता उदय घ. मि.	कलकत्ता अस्त घ. मि.	बम्बई उदय घ. मि.	बम्बई अस्त घ. मि.	मद्रास उदय घ. मि.	मद्रास अस्त घ. मि.	नवम्बर ८८ ता.
१	२३ ५९	१३ ११	२३ २४	१२ १३	— —	१३ १०	— —	१२ २९	१
२	— —	१३ ४४	— —	१२ ४९	० ३४	१३ ४८	० १३	१३ ०९	२
३	० ५४	१४ १३	० १६	१३ २२	१ २५	१४ २२	१ ०१	१३ ४६	३
४	१ ४८	१४ ४१	१ ०६	१३ ५२	२ १३	१४ ५३	१ ४७	१४ २०	४
५	२ ४०	१५ ०७	१ ५६	१४ २१	३ ०१	१५ २४	२ ३२	१४ ५४	५
६	३ ३२	१५ ३३	२ ४४	१४ ५०	३ ४८	१५ ५५	३ १६	१५ २८	६
७	४ २५	१६ ०१	३ ३४	१५ २१	४ ३६	१६ २८	४ ०१	१६ ०३	७
८	५ २०	१६ ३१	४ २६	१५ ५४	५ २६	१७ ०३	४ ४९	१६ ४०	८
९	६ १७	१७ ०५	५ २०	१६ ३१	६ १९	१७ ४२	५ ३९	१७ २२	९
१०	७ १७	१७ ४५	६ १७	१७ १४	७ १४	१८ २६	६ ३२	१८ ०८	१०
११	८ १९	१८ ३२	७ १६	१८ ०२	८ १३	१९ १६	७ २८	१८ ५९	११
१२	९ २०	१९ २६	८ १६	१८ ५७	९ १२	२० ११	८ २७	१९ ५५	१२
१३	१० १८	२० २७	९ १५	१९ ५७	१० १०	२१ ११	९ २५	२० ५४	१३
१४	११ ११	२१ ३२	१० ०९	२१ ००	११ ०५	२२ १३	१० २१	२१ ५५	१४
१५	११ ५८	२२ ३८	१० ५८	२२ ०४	११ ५५	२३ १५	११ १३	२२ ५५	१५
१६	१२ ३८	२३ ४४	११ ४२	२३ ०७	१२ ४१	— —	१२ ०१	२३ ५३	१६
१७	१३ १५	— —	१२ २२	— —	१३ २२	० १६	१२ ४६	— —	१७
१८	१३ ४८	० ४९	१३ ००	० ०८	१४ ०२	१ १५	१३ २९	० ४९	१८
१९	१४ २१	१ ५४	१३ ३६	१ ०८	१४ ४०	२ १४	१४ १०	२ ४४	१९
२०	१४ ५४	२ ५८	१४ १३	२ ०९	१५ १९	३ १२	१४ ५३	२ ३९	२०
२१	१५ ३०	४ ०४	१४ ५२	३ ११	१६ ०१	४ १२	१५ ३७	३ ३६	२१
२२	१६ १०	५ १२	१५ ३५	४ १५	१६ ४६	५ १४	१६ २५	४ ३५	२२
२३	१६ ५५	६ २१	१६ २४	५ २१	१७ ३६	६ १८	१७ १८	५ ३६	२३
२४	१७ ४७	७ ३०	१७ १७	६ २७	१८ ३१	७ २३	१८ १४	६ ३९	२४
२५	१८ ४५	८ ३५	१८ १५	७ ३१	१९ ३०	८ २७	१९ १३	७ ४१	२५
२६	१९ ४६	९ ३३	१९ १६	८ ३०	२० २९	९ २५	२० १२	८ ४०	२६
२७	२० ४७	१० २३	२० १५	९ २२	२१ २८	१० १८	२१ ०९	९ ३४	२७
२८	२१ ४७	११ ०६	२१ १३	१० ०७	२२ २४	११ ०४	२२ ०३	१० २२	२८
२९	२२ ४४	११ ४२	२२ ०७	१० ४[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	२३ ३९	१२ १३	२२ ५९	११ २०	— —	१२ २०	२३ ४१	११ ४३	३०

दिसम्बर सन् १९८८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में-संवत २०४५ वि

दिसम्बर ८८ ता.	दिल्ली उदय घ. मि.	दिल्ली अस्त घ. मि.	कलकत्ता उदय घ. मि.	कलकत्ता अस्त घ. मि.	बम्बई उदय घ. मि.	बम्बई अस्त घ. मि.	मद्रास उदय घ. मि.	मद्रास अस्त घ. मि.	दिसम्बर ८८ ता.
१	०० ००	१२ ४१	२३ ४८	११ ५१	० ०६	१२ ५२	०० ००	१२ १८	१
२	० ३२	१२ ०८	०० ००	१२ २१	० ५४	१३ २४	० २६	१२ ५२	२
३	१ २३	१३ ३४	० ३७	१२ ५०	१ ४१	१३ ५४	१ १०	१३ २६	३
४	२ १६	१४ ०१	१ २६	१३ २०	२ २९	१४ २६	१ ५५	१४ ००	४
५	३ ०९	१४ ३०	२ १७	१३ ५२	३ १७	१५ ००	२ ४१	१४ ३६	५
६	४ ०६	१५ ०२	३ १०	१४ २७	४ ०९	१५ ३७	३ ३०	१५ १६	६
७	५ ०५	१५ ४०	४ ०६	१५ ०८	५ ०३	१६ २०	४ २२	१६ ००	७
८	६ ०७	१६ २५	५ ०५	१५ ५५	६ ०१	१७ ०८	५ १८	१६ ५०	८
९	७ ०९	१७ १८	६ ०६	[illegible] ४८	७ ०१	१८ ०२	६ १६	१७ ४६	९
१०	८ १०	१८ १८	७ ०६	१७ ४८	८ ०१	१९ ०२	७ १६	१८ ४६	१०
११	९ ०६	१९ २३	८ ०३	१८ ५२	८ ५९	२० ०५	८ १४	१९ ४७	११
१२	९ ५५	२० ३१	८ ५५	१९ ५७	९ ५२	२१ ०९	९ ०९	२० ४९	१२
१३	१० ३८	२१ ३८	९ ४१	२१ ०१	१० ३९	२२ ११	९ ५९	२१ ४८	१३
१४	११ १६	२२ ४३	१० २२	२२ ०३	११ २२	२३ ११	१० ४५	२२ ४५	१४
१५	११ ५०	२३ ४७	११ ००	२३ ०३	१२ ०२	०० ००	११ २८	२३ ४०	१५
१६	१२ २२	०० ००	११ ३६	०० ००	१२ ४०	० ०९	१२ ०९	०० ००	१६
१७	१२ ५५	० ५०	१२ १२	० ०२	१३ १८	१ ०६	१२ ५०	० ३४	१७
१८	१३ २८	१ ५४	१२ ४९	१ ०२	१३ ५७	२ ०४	१३ ३३	१ २८	१८
१९	१४ ०५	२ ५९	१३ ३०	२ ०३	१४ ४०	३ ०३	१४ १८	२ २५	१९
२०	१४ ४७	४ ०५	१४ १५	३ ०६	१५ २६	४ ०५	१५ ०७	३ २३	२०
२१	१५ ३५	५ १३	१५ ०५	४ ११	१६ १८	५ ०८	१६ ०१	४ २४	२१
२२	१६ ३०	६ १८	१६ ०१	५ १५	१७ १५	६ ११	१६ ५८	५ २६	२२
२३	१७ २९	७ १९	१७ ००	६ १५	१८ १४	७ ११	१७ ५७	६ २६	२३
२४	१८ ३१	८ १३	१८ ००	७ १०	१९ १३	८ ०६	१८ ५६	७ २२	२४
२५	१९ ३३	८ ५९	१८ ५९	७ ५९	२० ११	८ ५५	१९ ५१	८ १२	२५
२६	२० ३२	९ ३८	१९ ५६	८ ४०	२१ ०६	९ ३८	२० ४४	८ ५८	२६
२७	२१ २८	१० ११	२० ४९	९ १७	२१ ५७	१० १६	२१ ३३	९ ३८	२७
२८	२२ २२	१० ४१	२१ ४०	९ ५०	२२ ४६	१० ५०	२२ १९	१० १५	२८
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २०	२३ ३४	११ २२	२३ ०४	१० ५०	२९
३०	०० ००	११ ३४	२३ १८	१० ४९	०० ००	११ ५३	२३ ४८	११ २३	३०
३१	० ०६	१२ ००	०० ००	११ १८	० २१	१२ २४	०० ००	११ ४७	३१

जनवरी सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०४५ वि.

जनवरी	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				जनवरी
८९	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८८
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ता.
१	०	५९	१२	२८	०	०७	११	४९	१	०८	१२	५६	०	३३	१२	३२	१
२	१	५३	१२	५९	०	५८	१२	२२	१	५८	१३	३२	१	२०	१३	०९	२
३	२	५०	१३	३४	१	५२	१३	००	२	५१	१४	११	२	१०	१३	५१	३
४	३	५०	१४	१५	२	५०	१३	४४	३	४७	१४	५६	३	०४	१४	३८	४
५	४	५२	१५	०४	३	५०	१४	३४	४	४६	१५	४८	४	०१	१५	३१	५
६	५	५५	१६	०१	४	५१	१५	३२	५	४६	१६	४७	५	०१	१६	३०	६
७	६	५४	१७	०६	५	५०	१६	३६	६	४६	१७	५०	६	०१	१७	३२	७
८	७	४७	१८	१५	६	४५	१७	४२	७	४२	१८	५५	६	५८	१८	३६	८
९	८	३४	१९	२४	७	३५	१८	४९	८	३३	२०	००	७	५२	१९	३८	९
१०	९	१४	२०	३३	८	२०	१९	५३	९	१९	२१	०२	८	४१	२०	३७	१०
११	१०	००	२१	३९	०९	००	२०	५६	१०	०१	२२	०२	९	२६	२१	३४	११
१२	१०	२४	२२	४३	९	३७	२१	५६	१०	४०	२३	०१	१०	०८	२२	३०	१२
१३	१०	५७	२३	४७	१०	१३	२२	५७	११	१८	२३	५९	१०	५०	२३	२४	१३
१४	११	३०	००	००	१०	५०	२३	५७	११	५७	००	००	११	३२	००	००	१४
१५	१२	०६	०	५२	११	२९	००	००	१२	३८	०	५८	१२	१६	०	२०	१५
१६	१२	४५	१	५७	१२	१२	०	५९	१३	२३	१	५८	१३	०३	१	१७	१६
१७	१३	३०	३	०३	१२	५९	०	०२	१४	१२	२	५९	१३	५४	२	१६	१७
१८	१४	२२	४	०८	१३	५२	३	०५	१५	०६	४	०१	१४	४९	३	१७	१८
१९	१५	१८	५	१०	१४	४९	४	०६	१६	०३	५	०१	१५	४७	४	१६	१९
२०	१६	१९	६	०५	१५	४८	५	०२	१७	०२	५	५७	१६	४५	५	१३	२०
२१	१७	२०	६	५३	१६	४८	५	५२	१८	००	६	४८	१७	४१	६	०५	२१
२२	१८	२०	७	३४	१७	४५	६	३६	१८	५६	७	३३	१८	३५	६	५२	२२
२३	१९	१७	८	१०	१८	३९	७	१४	१९	४९	८	१३	१९	२५	७	३४	२३
२४	२०	१२	८	४१	१९	३१	७	४८	२०	३९	८	४८	२०	१२	८	१२	२४
२५	२१	०५	९	०९	२०	२१	८	२०	२१	२७	९	२१	२०	५८	८	४८	२५
२६	२१	५७	९	३५	२१	१०	८	४९	२२	१४	९	५२	२१	४२	९	२१	२६
२७	२२	४९	१०	०१	२१	५९	९	१८	२३	०१	१०	२३	२२	२७	९	५५	२७
२८	२३	४३	१०	२८	२१	४९	९	४८	२३	४९	१०	५५	२३	१३	१०	२९	२८
२९	००	००	१०	५७	२३	४१	१०	२०	००	००	११	२८	००	००	११	०५	२९
३०	०	३८	११	२९	००	००	१०	५५	०	४०	१२	०५	०	०१	११	४४	३०
३१	१	३५	१२	०७	०	३६	११	३५	१	३३	१२	४६	०	५२	१२	३८	३१

फरवरी सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०४५ वि.

फरवरी	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				फरवरी
८९	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८८
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ता.
१	२	३६	१२	५१	१	३३	१२	२१	२	३०	१३	३४	१	४६	१३	१७	१
२	३	३७	१३	४४	२	३३	१३	१४	३	२९	१४	२९	२	४३	१४	१२	२
३	४	३७	१४	४४	३	३३	१४	१५	४	२८	१५	२९	३	४३	१५	१२	३
४	५	३३	१५	५१	४	३०	१५	२०	५	२६	१६	३३	४	४१	१६	१५	४
५	६	२३	१७	०१	५	२३	१६	२७	६	१९	१७	३९	५	३७	१७	१९	५
६	७	०७	१८	१२	६	१०	१७	३४	७	०९	१८	४४	६	२८	१८	२१	६
७	७	४६	१९	२१	६	५३	१८	४०	७	५३	१९	४७	७	१७	१९	२१	७
८	८	२२	२०	२९	७	३३	१९	४३	८	३५	२०	४९	८	०२	२०	१९	८
९	८	५६	२१	३६	८	११	२०	४६	९	१५	२१	४९	८	४५	२१	१६	९
१०	९	३०	२२	४२	८	४९	२१	४९	९	५५	२२	५०	९	२९	२२	१३	१०
११	१०	०५	२३	४९	९	२८	२२	५२	१०	३७	२३	५१	१०	१३	२३	११	११
१२	१०	४५	००	००	१०	१०	२३	५६	११	२१	००	००	११	००	००	००	१२
१३	११	२८	०	५६	१०	५७	००	००	१२	०९	०	५३	११	५१	०	११	१३
१४	१२	१८	२	०२	११	४८	०	५९	१३	०२	१	५६	१२	४५	१	११	१४
१५	१३	१३	३	०४	१२	४४	२	०१	१३	५८	२	५६	१३	४१	२	११	१५
१६	१४	११	४	०१	१३	४२	२	५८	१४	५५	३	५३	१४	३९	३	०८	१६
१७	१५	१२	४	५१	१४	४०	३	४९	१५	५३	४	४५	१५	३५	४	०१	१७
१८	१६	१२	५	३३	१५	३८	४	३४	१६	४९	५	३१	१६	२९	४	४९	१८
१९	१७	९	६	१०	१६	३२	५	१४	१७	४२	६	११	१७	२०	५	३२	१९
२०	१८	०५	६	४२	१७	२५	५	४९	१८	३३	६	४८	१८	०८	६	११	२०
२१	१८	५८	७	११	१८	१५	६	२१	१९	२२	७	२२	१८	५४	६	४७	२१
२२	१९	५१	७	३७	१९	०५	६	५१	२०	०९	७	५३	१९	३८	७	२१	२२
२३	२०	४३	८	०४	१९	५३	७	२०	२०	५६	८	२४	२०	२३	७	५५	२३
२४	२१	३५	८	३०	२०	४३	७	४९	२१	४४	८	५५	२१	०८	८	२९	२४
२५	२२	२९	८	५८	२१	३४	८	२०	२२	३३	९	२८	२१	५५	९	०४	२५
२६	२३	२५	९	२९	२२	२७	८	५३	२३	४८	१०	०३	२२	४४	९	४१	२६
२७	००	००	१०	०४	२३	२२	९	३१	००	००	१०	४२	२३	३६	१०	२३	२७
२८	०	२३	१०	४४	—	—	१०	१३	०	१९	११	२६	००	००	११	०८	२८

मार्च सन् १९८८ के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०४५ वि.

मार्च	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				मार्च
८९	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८८
ता	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ता.
१	१	२३	११	३२	०	२०	११	०२	१	१५	१२	१६	०	३१	११	५९	१
२	२	२२	१२	२७	१	१८	११	५८	२	१३	१३	१२	१	२८	१२	५६	२
३	३	१८	१३	२९	२	१५	१२	५९	३	१०	१४	१३	२	२५	१३	५६	३
४	४	१०	१४	३६	३	०८	१४	०४	४	०४	१५	१७	३	२१	१४	५८	४
५	४	५६	१५	४६	३	५७	१५	१०	४	५५	१६	२१	४	१४	१६	००	५
६	५	३७	१६	५६	४	४२	१६	१६	५	४२	१७	२५	५	०३	१७	००	६
७	६	१५	१८	०५	५	२४	१७	२२	६	२५	१८	२८	५	५०	१८	००	७
८	६	५०	१९	१४	६	०३	१८	२६	७	०६	१९	३१	६	३५	१८	५९	८
९	७	२५	२०	२३	६	४२	१९	३१	७	४७	२०	३३	०७	१९	१९	५८	९
१०	८	०१	२१	३२	०७	२२	२०	३६	०८	३०	२१	३७	०८	०५	२०	५८	१०
११	०८	४०	२२	४२	०८	०४	२१	४३	०९	१४	२२	४१	८	५३	२१	५९	११
१२	०९	२४	२३	५१	०८	५१	२२	४९	१०	०३	२३	४६	०९	४४	२३	०२	१२
१३	१०	१३	—	—	०९	४२	२३	५३	१०	५६	—	—	१०	३८	—	—	१३
१४	११	०७	००	५७	१०	३८	—	—	११	५२	००	४९	११	३५	००	०४	१४
१५	१२	०५	१	५६	११	३६	००	५३	१२	५०	१	४८	१२	३३	०१	०३	१५
१६	१३	०६	०२	४९	१२	३५	०१	४६	१३	४८	०२	४२	१३	३०	०१	५७	१६
१७	१४	०६	०३	३४	१३	३३	०२	३३	१४	४४	०३	३०	१४	२५	०२	४७	१७
१८	१५	०४	०४	१२	१४	२८	०३	१४	१५	३८	०४	१२	१५	१६	०३	३१	१८
१९	१६	००	०४	४५	१५	२१	०३	५०	१६	२९	०४	४९	१६	०५	०४	११	१९
२०	१६	५३	०५	१४	१६	११	०४	२३	१७	१८	०५	२३	१६	५१	०४	४८	२०
२१	१७	४६	०५	४१	१७	०१	०४	५३	१८	०६	०५	५५	१७	३६	०५	२३	२१
२२	१८	३८	०६	०८	१७	४९	५	२२	१८	५३	६	२६	१८	२०	५	५६	२२
२३	१९	३०	०६	३४	१८	३९	०५	५२	१९	४०	०६	५७	१९	०५	०६	३०	२३
२४	२०	२३	०७	०१	१९	२९	०६	२२	२०	२९	०७	२९	१९	५१	०७	०४	२४
२५	२१	१९	०७	३१	२०	२१	०६	५५	२१	२०	०८	०३	२०	४०	०७	४१	२५
२६	२२	१६	०८	०४	२१	१६	०७	३१	२२	१३	०८	४१	२१	३१	०८	२१	२६
२७	२३	१४	०८	४२	२२	१२	०८	११	२३	०८	०९	२३	२२	२४	०९	०५	२७
२८	—	—	०९	२७	२३	०९	०८	५७	—	—	१०	१०	२३	१९	०९	५३	२८
२९	००	१३	१०	१८	—	—	०९	४९	०	०४	११	०३	—	—	१०	४७	२९
३०	१	०९	११	१६	००	०५	१०	४६	०१	००	१२	००	००	१५	११	४४	३०
३१	२	००	१२	१९	००	५८	११	४८	०१	५४	१३	०१	०१	१०	१२	४३	३१

हर्षल नेपच्यून प्लूटो के क्रांति और शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टैं. टा) सं. २०४५ वि.

तारीख	हर्षल				नेपच्यून				प्लूटो			
[illegible]	क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
	अं.	क.	अ.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अप्रैल १	द. २३	३८	द. ०	११	द. २२	५	उ. ०	५९	उ. ०	२१	उ. १६	३३
अप्रैल१५	२३	३८	०	१२	२२	४	०	५९	०	३०	१६	३६
मई १	२३	३८	०	१२	२२	४	०	५९	०	३८	१६	३७
" १५	२३	३९	०	१२	२२	५	०	५९	०	४३	१६	३६
जून १	२३	३९	०	१२	२२	६	१	०	०	४७	१६	३१
" १५	२३	३९	०	१३	२२	८	१	०	०	४७	१६	२६
जुलाई १	२३	३९	०	१३	२२	१०	१	०	०	४४	१६	१८
" १५	२३	३९	०	१३	२२	११	०	५९	०	३८	१६	१०
अगस्त १	२३	३८	०	१३	२२	१३	०	५९	०	२८	१६	१
" १५	२३	३८	०	१३	२२	१५	०	५९	०	१८	१५	५३
सितं. १	२३	३८	०	१३	२२	१६	०	५८	उ. ०	४	१५	४४
" १५	२३	३८	०	१३	२२	१७	०	५७	द. ०	६	१५	३७
अक्टू. १	२३	३८	०	१३	२२	१७	०	५७	०	२४	१५	३१
" १५	२३	३८	०	१३	२२	१७	०	५६	०	३७	१५	२८
नवं. १	२३	३९	०	१३	२२	१७	०	५६	०	५०	१५	२५
" १५	२३	३९	०	१३	२२	१६	०	५५	१	०	१५	२५
दिसं. १	२३	३९	०	१३	२२	१५	०	५५	१	९	१५	२७
" १५	२३	३९	०	१३	२२	१२	०	५४	१	१४	१५	२९
जन. १	२३	३९	०	१३	२२	१०	०	५४	१	१७	१५	३६
" १५	२३	३८	०	१३	२२	८	०	५४	१	१६	१५	४२
फर. १	२३	३७	०	१४	२२	५	०	५४	१	१२	१५	५०
" १५	२३	३७	०	१४	२२	३	०	५४	१	६	१५	५७
मार्च १	२३	३६	०	१४	२२	१	०	५४	०	५९	१६	४
" १५	द.२३	३५	द.०	१४	द.२१	५९	उ.०	५५	द.०	५१	उ.१६	९

उ + उत्तर — सूर्य और चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टैं. टा) सं. २०४५ वि. — द = दक्षिण

ता.	अप्रैल सन् १९८८ ई. सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.	मई सन् १९८८ ई. सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.
१	उ. ४	३३	उ. १	२३	द. ०	१५	उ.१५	५	द. १४	३	द. ३	५
२	४	५६	द. ४	२७	१	२२	१५	२३	१९	९	३	५५
३	५	१९	१०	१२	२	२५	१५	४१	२३	२८	४	३४
४	५	४२	१५	३९	३	२२	१५	५८	२६	३७	४	५८
५	६	०४	२०	३१	४	१०	१६	१५	२८	१८	५	६
६	६	२७	२४	३१	४	४८	१६	३२	२८	१५	४	५७
७	६	५०	२७	१८	५	०८	१६	४९	२६	२७	४	३०
८	७	१२	२८	३५	५	१४	१७	५	२३	०	३	४७
९	७	३५	२८	१०	५	०२	१७	२२	१८	११	२	५०
१०	७	५७	२५	५९	४	३२	१७	३७	१२	२२	१	४२
११	८	१९	२२	१०	३	४६	१७	५३	द. ५	५४	द. ०	२८
१२	८	४१	१७	०	२	४४	१८	८	उ. ०	५२	उ. ०	४८
१३	९	३	१०	४९	१	३२	१८	२३	७	३४	२	०
१४	९	२५	द. ४	१	द. ०	१४	१८	३८	१३	५२	३	५
१५	९	४६	उ. ३	०	उ. १	०६	१८	५२	१९	२३	३	५८
१६	१०	७	९	४८	२	२१	१९	६	२३	४७	४	३६
१७	१०	२९	१६	१	३	२६	१९	२०	२६	४९	४	५७
१८	१०	५०	२१	१५	४	१६	१९	३३	२८	१८	५	३
१९	११	११	२५	१३	४	५०	१९	४६	२८	११	४	५२
२०	११	३१	२७	४१	५	८	१९	५९	२६	३७	४	२८
२१	११	५२	२८	३५	५	०९	२०	११	२३	४८	३	५२
२२	१२	१२	२७	५७	४	५६	२०	२३	२०	०	३	६
२३	१२	३२	२५	५७	४	२८	२०	३५	१५	२७	२	१२
२४	१२	५२	२२	४९	३	५०	२०	४६	१०	२०	१	१३
२५	१३	१२	१८	४६	३	०२	२०	५७	उ. ४	५२	उ. ०	११
२६	१३	३१	१४	१	२	०६	२१	८	द. ०	५०	द. ०	५३
२७	१३	५०	८	४५	१	०५	२१	१८	६	३६	१	५४
२८	१४	९	उ. ३	८	उ. ०	०१	२१	२८	१२	१३	२	५२
२९	१४	२६	द. २	४०	द. १	०४	२१	३७	१७	३०	३	४३
३०	उ. १४	४७	द. ८	२८	द. २	०५	२१	४६	२२	६	४	२३
३१							उ. २१	५५	द. २५	४१	द. ४	५०

ता.	जून सन् १९८८ ई. सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.	जुलाई सन् १९८८ ई. सू. अं.	क्रां क.	च. अं.	क्रां क.	च. अं.	शर क.	ता.
१	उ.२२	३	द. २७	५२	द. ५	१	उ. २३	७	द. २४	५५	द. ३	५६	१
२	२२	११	२८	१९	४	५४	२३	२	२०	३६	२	५९	२
३	२२	१९	२६	५६	४	२९	२२	५८	१५	१	१	५१	३
४	२२	२६	२३	४७	३	४७	२२	५३	८	३८	द. ०	३६	४
५	२२	३३	१९	११	२	५०	२२	४७	द. १	५३	उ. ०	४०	५
६	२२	३९	१३	३१	१	४४	२२	४२	उ. ४	५१	१	५३	६
७	२२	४५	७	१०	द. ०	३१	२२	३५	११	१४	२	५८	७
८	२२	५१	द. ०	३१	०	४३	२२	२९	१६	५८	३	५२	८
९	२२	५६	उ. ६	६	१	५४	२२	२२	२१	४६	४	३२	९
१०	२३	१	१२	२२	२	५८	२२	१४	२५	२४	४	५६	१०
११	२३	५	१७	५९	३	५०	२२	७	२७	३९	५	५	११
१२	२३	९	२२	३७	१४	२९	२१	५८	२८	२४	४	५८	१२
१३	२३	१३	२६	०	४	५३	२१	५४	२७	३८	४	३७	१३
१४	२३	१६	२७	५६	५	०	२१	२१	२५	३१	४	३	१४
१५	२३	१९	२८	१८	४	५२	२१	३२	२२	१४	३	१८	१५
१६	२३	२१	२७	१०	४	३०	२१	२२	१८	३	२	२५	१६
१७	२३	२३	२४	४२	३	५५	२१	१२	१३	१३	१	२६	१७
१८	२३	२५	२१	१०	३	१०	२१	२	७	५६	उ. ०	२३	१८
१९	२३	२६	१६	४७	२	१७	२०	५१	उ. २	२३	द. ०	४०	१९
२०	२३	२६	११	४९	१	१८	२०	४०	द. ३	१५	१	४२	२०
२१	२३	२७	६	२८	उ. ०	१६	२०	२८	८	५१	२	४१	२१
२२	२३	२६	उ. ०	५२	द. ०	४६	२०	१७	१४	१२	३	३३	२२
२३	२३	२६	द. ४	५०	१	४८	२०	५	१९	७	४	१७	२३
२४	२३	२५	१०	२६	२	४५	१९	५२	२३	२०	४	४९	२४
२५	२३	२४	१५	४६	३	३६	१९	३९	२६	३०	५	७	२५
२६	२३	२२	२०	३५	४	१८	१९	२६	२८	१४	५	८	२६
२७	२३	२०	२४	३३	४	४७	१९	१३	२८	१३	४	५२	२७
२८	२३	१७	२७	१६	५	२	१८	५९	२६	१७	४	१६	२८
२९	२३	१४	२८	२२	४	५८	१८	४५	२२	३०	३	२२	२९
३०	उ.२३	११	द. २७	३५	द. ४	३६	१८	३१	१७	१३	२	१४	३०
३१							उ. १८	१६	द. १०	५२	द. १०	५६	३१

उ = उत्तर | सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि. | द = दक्षिण

ता.	अगस्त सन् १९८८ ई.						सितम्बर सन् १९८८ ई.						अक्टूबर सन् १९८८ ई.						नवम्बर सन् १९८८ ई.						ता
	सू. क्रां. अं.	क.	चं. क्रां. अं.	क.	चं. शर अं.	क.	सू. क्रां. अं.	क.	चं. क्रां. अं.	क.	चं. शर अं.	क.	सू. क्रां. अं.	क.	चं. क्रां. अं.	क.	चं. शर अं.	क.	सू. क्रां अं	क.	चं. क्रां अं	क	चं. शर अं	क.	
१	उ. १८	१	द. ३	५८	उ. ०	२५	उ. ८	१७	उ. १९	३४	उ. ४	२८	द. ३	११	उ. २८	०५	उ. ५	१४	द. १४	२६	उ. २२	२०	उ. ३	११	१
२	१७	४६	उ. ३	३	१	४३	७	५५	२३	५९	५	१	३	३४	२८	२८	५	०१	१४	४५	१८	११	२	१६	२
३	१७	३०	९	४५	२	५३	७	३३	२६	५८	५	१६	३	५८	२७	१९	४	३४	१५	०४	१३	२२	१	१७	३
४	१७	१५	१५	४९	३	५१	७	११	२८	२५	५	१५	४	२१	२४	५१	३	५५	१५	२२	८	०७	उ. ०	१४	४
५	१६	५८	२०	५६	४	३५	६	४९	२८	२०	४	५८	४	४४	२१	१९	३	०६	१५	४१	उ. २	३५	द. ०	४९	५
६	१६	४२	२४	५१	५	२	६	२७	२६	४९	४	२८	५	०७	१६	५८	२	०९	१५	५९	द. ३	०३	१	५०	६
७	१६	२५	२७	२४	५	१३	६	४	२४	४	३	४६	५	३०	१२	०१	१	०८	१६	१७	८	३७	२	४७	७
८	१६	९	२८	२८	५	८	५	४२	२०	१९	२	५५	५	५३	६	३९	उ. ०	०४	१६	३४	१३	५८	३	३६	८
९	१५	५१	२८	२	४	४८	५	१९	१५	४७	१	५६	६	१६	उ. १	०३	द. १	००	१६	५२	१८	५१	४	१७	९
१०	१५	३४	२६	१३	४	१६	४	५६	१०	४१	उ. ०	५३	६	३९	द. ४	३७	२	०२	१७	०९	२३	००	४	४५	१०
११	१५	१६	२३	१३	३	३२	४	३४	उ. ५	१३	द. ०	१२	७	०१	१०	१०	२	५९	१७	२५	२६	०७	५	००	११
१२	१४	५८	१९	१४	२	३९	४	११	द. ०	२५	१	१७	७	२४	१५	२४	३	४९	१७	४२	२७	५५	५	००	१२
१३	१४	४०	१४	३२	१	४०	३	४८	६	४	२	१९	७	४६	२०	०६	४	२८	१७	५८	२८	१०	४	४४	१३
१४	१४	२२	९	१९	उ. ०	३६	३	२५	११	३३	३	१५	८	०९	२४	००	४	५६	१८	१४	२६	४६	४	१२	१४
१५	१४	३	उ. ३	४९	द. ०	२९	३	२	१६	३९	४	३	८	३२	२६	४९	५	०९	१८	२९	२३	४९	३	२५	१५
१६	१३	४४	द. १	५०	१	३२	२	३९	२१	१०	४	४१	८	५३	२८	१६	५	०७	१८	४४	१९	२८	२	२६	१६
१७	१३	२५	७	२६	२	३३	२	१५	२४	५९	५	६	९	१४	२८	११	५	५९	१८	५९	१४	०१	१	१८	१७
१८	१३	६	१२	५०	३	२७	१	५२	२७	२३	५	१७	९	३७	२६	२७	४	१५	१९	१४	७	४७	द. ०	०४	१८
१९	१२	४७	१७	५०	४	१३	१	२९	२८	३१	५	१२	९	५९	२३	०८	३	२६	१९	२८	द. ०१	०६	उ. १	११	१९
२०	१२	२७	२२	१२	४	४८	१	६	२८	१	४	५०	१०	२०	१८	२५	२	२४	१९	४२	उ. ५	४१	२	२२	२०
२१	१२	७	२५	४०	५	१०	०	४२	२५	४७	४	१०	१०	४३	१२	३५	द. १	११	१९	५५	१२	१३	३	२४	२१
२२	११	४७	२७	५३	५	१७	उ. ०	१९	२१	५३	३	१५	११	०४	द. ५	५७	उ. ०	०७	२०	०८	१८	०६	४	१३	२२
२३	११	२७	२८	३३	५	६	द. ०	४	१६	३३	२	५	११	२५	उ. १	०४	१	२६	२०	२१	२२	५४	४	४५	२३
२४	११	६	२७	२५	४	३८	०	२८	१०	८	द. ०	४६	११	४६	८	०४	२	३९	२०	३३	२६	१७	५	००	२४
२५	१०	४६	२४	२६	३	५१	०	३१	द. ३	४	उ. ०	३७	१२	०७	१४	३८	३	४२	२०	४५	२८	००	४	५६	२५
२६	१०	२५	१९	४६	२	४७	१	१४	उ. ४	११	१	५८	१२	२७	२०	१६	४	२८	२०	५७	२७	५९	४	३५	२६
२७	१०	४	१३	४७	१	३१	१	३८	११	९	३	१०	१२	४७	२४	३६	४	५७	२०	०८	२६	२२	४	०१	२७
२८	९	४३	उ. ६	४६	द. ०	८	२	१	१६	२२	४	८	१३	०७	२८	२०	५	०७	२१	१८	२३	२५	३	१५	२८
२९	९	२२	उ. ०	१७	उ. १	१६	२	२५	२२	२६	४	४९	१३	२७	२८	२१	४	५९	२१	२९	१९	२८	२	२१	२९
३०	९	०	७	२३	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	द. २१	३९	उ. १४	४८	उ. १	२१	३०
३१	उ. ८	३९	उ. १३	५६	उ. ३	३८	—		—		—		द. १४	०६	उ. २५	३७	उ. ३	५८	—		—		—		३१

उ + उत्तर   सूर्य और चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.   द = दक्षिण

	दिसम्बर सन् १९८८ ई.						जनवरी सन् १९८९ ई.						फरवरी सन् १९८९ ई.						मार्च सन् १९८९ ई.						
ता.	सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.	सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.	सू. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	क्रां. क.	चं. अं.	शर क.	सू. अं	क्रां क.	चं. अं	क्रां क.	च. अं	शर क.	ता.
१	द. २१	४८	उ. ९	३८	उ. ०	१९	द. २३	१	द. १०	४३	द. ३	२८	द. १७	१०	द. २६	६	द. ५	१५	द. ७	४१	द. २७	२८	द. ५	१५	१
२	२१	५७	उ. ४	११	द. ०	४३	२२	५६	१५	४९	४	११	१६	५३	२७	५५	५	८	७	१८	२८	१९	४	५८	२
३	२२	०६	द. १	२४	१	४४	२२	५१	२०	२३	४	४३	१६	३५	२८	१२	४	४५	६	५५	२७	३५	४	२५	३
४	२२	१४	६	५८	२	४०	२२	४५	२४	११	५	२	१६	१८	२६	४६	४	५	६	३२	२५	१२	३	३६	४
५	२२	२२	१२	२२	३	३०	२२	३८	२६	५२	५	६	१६	०	२३	३५	३	९	६	९	२१	१२	२	३३	५
६	२२	३०	१७	२२	४	११	२२	३२	२८	८	४	५४	१५	४१	१८	५२	१	५९	५	४५	१५	४९	द. १	१८	६
७	२२	३७	२१	४६	४	४१	२२	२४	२७	४३	४	२५	१५	२३	१२	५६	द. ०	४०	५	२२	९	२३	उ. ०	४	७
८	२२	४३	२५	१४	४	५८	२२	१६	२५	३३	३	४०	१५	४	द. ६	१४	उ. ०	४२	४	५९	द. २	२०	१	२७	८
९	२२	४९	२७	२७	४	५९	२२	८	२१	४५	२	४०	१४	४५	उ. ०	४८	२	१	४	३५	उ. ४	५२	२	४४	९
१०	२२	५५	२८	९	४	४४	२२	०	१६	३६	१	३०	१४	२६	७	४३	३	१२	४	१२	११	४४	३	४९	१०
११	२३	००	२७	९	४	१२	२१	५१	१०	३०	द. ०	१३	१४	६	१४	७	४	९	३	४८	१७	५०	४	३७	११
१२	२३	०५	२४	२९	३	२६	२१	४१	द. ३	५२	उ. १	५	१३	४६	१९	३८	४	४९	३	२५	२२	४६	५	६	१२
१३	२३	०९	२०	२१	२	२७	२१	३१	उ. २	५५	२	१८	१३	२६	२३	५४	५	१२	३	१	२६	१३	५	१६	१३
१४	२३	१३	१५	४	१	१८	२१	२१	९	२९	३	२२	१३	६	२६	५३	५	१७	२	३८	२८	१	५	८	१४
१५	२३	१६	८	५९	द. ०	४	२१	१०	१५	३०	४	१३	१२	४५	२८	१४	५	४	२	१४	२८	९	४	४३	१५
१६	२३	१९	द. २	२६	उ. १	१०	२०	५९	२०	४०	४	४९	१२	२५	२७	५८	४	३६	१	५०	२६	४४	४	४	१६
१७	२३	२२	उ. ४	१३	२	२०	२०	४७	२४	३९	५	८	१२	४	२६	१३	३	५५	१	२६	२३	५९	३	१५	१७
१८	२३	२३	१०	४०	३	२१	२०	३५	२७	१४	५	९	११	४३	२३	१२	३	३	१	३	२०	१२	२	१७	१८
१९	२३	२५	१६	३४	४	१०	२०	२३	२८	१३	४	५४	११	२२	१९	१०	२	४	०	३९	१५	३७	१	१५	१९
२०	२३	२६	२१	३४	४	४४	२०	१०	२७	३६	४	२३	११	०	१४	२३	उ. ०	५९	द. ०	१५	१०	३०	उ. ०	९	२०
२१	२३	२६	२५	२०	५	१	१९	५७	२५	३०	३	३९	१०	३९	९	६	द. ०	७	उ. ०	८	उ. ५	३	द. ०	५६	२१
२२	२३	२७	२७	३४	५	०	१९	४४	२२	९	२	४६	१०	१७	३	३५	१	१३	०	३२	द. ०	३३	१	५८	२२
२३	२३	२६	२८	८	४	४२	१९	३०	१७	५१	१	४५	९	५५	२८	३	२	१५	०	५६	६	७	२	५५	२३
२४	२३	२५	२७	३	४	९	१९	१६	१२	५४	उ. ०	४०	९	३३	७	३५	३	११	१	१९	११	२८	३	४५	२४
२५	२३	२४	२४	३२	३	२४	१९	१	७	३२	द. ०	२६	९	११	१२	५१	३	५९	१	४३	१६	२६	४	२५	२५
२६	२३	२२	२०	५१	२	३०	१८	४६	उ. १	५७	१	३०	८	४८	१७	४२	४	३७	२	७	२०	४९	४	५३	२६
२७	२३	२०	१६	२०	१	२९	१८	३१	द. ३	३९	२	३०	८	२६	उ. २१	५४	५	३	२	३०	२४	२३	५	९	२७
२८	२३	१७	११	१५	उ. ०	२६	१८	१६	९	७	३	२३	द. ८	३	द. २५	१५	द. ५	१६	२	५४	२६	५३	५	११	२८
२९	२३	१४	५	५०	द. ०	३८	१८	०	१४	१८	४	८	—	—	—	—	—	—	३	१७	२८	७	४	५९	२९
३०	२३	१०	उ. ०	१६	१	४०	१७	४३	१९	०	४	४३	—	—	—	—	—	—	३	४०	२७	५४	४	३१	३०
३१	द. २३	०६	द. ५	१८	द. २	३७	द. १७	२७	द. २३	२	द. ५	६							उ. ४	४	द. २६	७	द. ३	४९	३१

उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रांति शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.

द = दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८८	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९८८
मार्च १९	द. २२	५६	द. ०	३६	द. १२	१	द.१	५३	उ. ११	१९	द. ०	५९	उ. १८	३	उ. २	१०	द. २२	१८	उ. १	८	मार्च १९
२२	२२	४३	०	४०	१०	४०	२	७	११	३३	०	५९	१९	१२	२	२३	२२	१७	१	८	२२
२५	२२	२८	०	४४	९	८	२	१६	११	४७	०	५९	२०	१८	२	३८	२२	१७	१	८	२५
२८	२२	१२	०	४७	७	२५	२	२१	१२	१	०	५८	२१	२०	२	५०	२२	१७	१	८	२८
३१	२१	५५	०	५१	५	३१	२	२१	१२	१५	०	५८	२२	१६	३	२	२२	१७	१	८	३१
अप्रैल १	द. २१	४८	०	५२	४	५१	२	२२	१२	२०	०	५८	२२	३५	३	७	२२	१७	१	९	अप्रैल १
४	२१	२८	०	५६	२	४४	२	१७	१२	२४	०	५८	२३	२७	३	२९	२२	१७	१	९	४
७	२१	७	१	०	द. ०	२८	२	८	१२	४८	०	५७	२४	१४	३	३०	२२	१६	१	९	७
१०	२०	४५	१	४	उ. १	५६	१	५४	१३	२	०	५७	२४	५६	३	४१	२२	१६	१	९	१०
१३	२०	२१	१	९	४	२८	१	३६	१३	१६	०	५७	२५	३३	३	५०	२२	१६	१	९	१३
१६	१९	५६	१	१३	७	६	१	१३	१३	३०	०	५६	२६	६	३	५९	२२	१६	१	९	१६
१९	१९	२९	१	१७	९	४७	०	४७	१३	४४	०	५६	२६	३४	४	७	२२	१६	१	९	१९
२२	१९	२	१	२२	१२	२८	द. ०	१७	१३	५७	०	५६	२६	५७	४	१४	२२	१६	१	९	२२
२५	१८	३३	१	२७	१५	४	उ. ०	१५	१४	११	०	५६	२७	१५	४	१४	२२	१६	१	९	२५
२८	१८	३	१	३१	१७	३०	०	४७	१४	२४	०	५५	२७	२९	४	२२	२२	१६	१	१०	२८
मई १	१७	३३	१	३६	१९	४०	१	१७	१४	३८	०	५५	२७	३८	४	२४	२२	१६	१	१०	मई १
४	१७	२	१	४१	२१	३०	१	४४	१४	५१	०	५५	२७	४३	४	२४	२२	१६	१	१०	४
७	१६	२८	१	४६	२२	५९	२	०५	१५	०४	०	५५	२७	४४	४	२१	२२	१६	१	१०	७
१०	१५	५५	१	५१	२४	०३	२	१९	१५	१७	०	५५	२७	४१	४	१६	२२	१६	१	१०	१०
१३	१५	२१	१	५६	२४	४९	२	२६	१५	२९	०	५५	२७	३४	४	०८	२२	१६	१	१०	१३
१६	१४	४७	२	०१	२५	१३	२	२५	१५	४२	०	५४	२७	२३	३	५७	२२	१६	१	१०	१६
१९	१४	१२	२	०७	२५	२०	२	१५	१५	५४	०	५४	२७	०८	३	४२	२२	१६	१	१०	१९
२२	१३	३७	२	१२	२५	१२	१	५७	१६	०६	०	५४	२६	५०	३	२३	२२	१७	१	१०	२२
२५	१३	०१	२	१८	२४	५१	१	३१	१६	१८	०	५४	२६	२७	३	००	२२	१७	१	१०	२५
२८	१२	२५	२	२३	२४	१८	०	५६	१६	३०	०	५४	२६	००	२	३३	२२	१७	१	१०	२८
३१	११	४९	२	२९	२३	३८	उ. ०	१४	१६	४१	०	५४	२५	२८	२	०२	२२	१७	१	०९	३१
जून १	११	३७	२	३१	२३	२३	द. ०	०१	१६	४५	०	५४	२५	१७	१	५१	२२	१७	१	०९	जून १
४	११	००	२	३७	२२	३३	०	५१	१६	५६	०	५४	२५	०५	१	१४	२२	१७	१	०९	४
७	१०	२४	२	४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२	१७	१	०९	७
१०	द. ९	४८	द. २	४९	उ. २०	४६	द. २	३३	उ. १७	१७	द. ०	५४	उ. २३	५७	द. ०	०८	द. २२	१८	उ. १	०९	१०

उ = उत्तर — मंगल आदि ग्रहों के क्रांति शर (प्रातः ५ घँ. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.) — द = दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		
१९८८	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९८८
जून १३	द. ९	१२	द. २	५५	उ. १९	५६	द. ३	१८	उ. १७	२७	द. ०	५४	उ. २२	२३	द. ०	५०	द. २२	१८	उ. १	०९	जून १३
१६	८	३७	३	०१	१९	१४	३	५४	१७	३७	०	५४	२१	३४	१	३२	२२	१८	१	०९	१६
१९	८	०२	३	०७	१८	४४	४	१८	१७	४७	०	५४	२०	४६	२	११	२२	१८	१	०८	१९
२२	७	२७	३	१३	१८	२७	४	३०	१७	५७	०	५४	२०	०२	२	४७	२२	१८	१	०८	२२
२५	६	५३	३	२०	१८	२६	४	३०	१८	०६	०	५४	१९	२३	३	१९	२२	१८	१	०८	२५
२८	६	२०	३	२६	१८	४०	४	१८	१८	१५	०	५४	१८	५०	३	४६	२२	१९	१	०८	२८
जुलाई १	५	४७	३	३२	१९	०४	३	५७	१८	२३	०	५४	१८	३४	४	०८	२२	१९	१	०७	जुलाई १
४	५	१६	३	३९	१९	४१	३	२९	१८	३२	०	५५	१८	०४	४	२५	२२	१९	१	०७	४
७	४	४५	३	४५	२०	२३	२	५६	१८	४०	०	५५	१७	५५	४	३८	२२	१९	१	०७	७
१०	४	१६	३	५१	२१	७	२	१८	१८	४७	०	५५	१७	५७	४	४७	२२	१९	१	०६	१०
१३	३	४७	३	५८	२१	४८	१	३९	१८	५५	०	५५	१७	४७	४	५३	२२	१९	१	०६	१३
१६	३	२१	४	०४	२२	२१	०	५९	१९	०२	०	५५	१७	५०	४	५६	२२	२०	१	०६	१६
१९	२	५५	४	११	२२	४२	द. ०	२०	१९	०९	०	५५	१७	५०	४	५६	२२	२०	१	०५	१९
२२	२	३२	४	१७	२२	४५	उ. ०	१७	१९	१५	०	५६	१८	०७	४	५३	२२	२०	१	०५	२२
२५	२	०९	४	२३	२२	२६	०	४८	१९	२१	०	५६	१८	१७	४	४९	२२	२०	१	०४	२५
२८	१	४९	४	३०	२१	४४	१	१३	१९	२७	०	५६	१८	३२	४	४३	२२	२०	१	०४	२८
३१	१	३०	४	३६	२०	३८	१	३१	१९	३३	०	५६	१८	४५	४	३५	२२	२१	१	०३	३१
अगस्त १	१	२४	४	३८	२०	११	१	३६	१९	३४	०	५६	१८	५०	४	३२	२२	२१	१	०३	अगस्त १
४	१	८	४	४३	१८	३८	१	४४	१९	३४	०	५६	१९	३	४	२३	२२	२१	१	३	४
७	०	५४	४	४६	१६	५१	१	४६	१९	४४	०	५७	१९	१५	४	१२	२२	२१	१	२	७
१०	०	४३	४	५४	१४	५१	१	४२	१९	४९	०	५७	१९	२५	४	१	२२	२२	१	२	१०
१३	०	३३	४	५९	१२	४५	१	३३	१९	५३	०	५७	१९	३३	३	४८	२२	२२	१	१	१३
१६	०	२६	५	४	१०	३३	१	२०	१९	५७	०	५७	१९	३८	३	३५	२२	२२	१	१	१६
१९	०	२१	५	८	८	१९	१	३	२०	०	०	५८	१९	४०	३	२२	२२	२३	१	०	१९
२२	०	१८	५	१२	६	५	०	४४	२०	४	०	५८	१९	३९	३	८	२२	२३	०	६०	२२
२५	०	१८	५	१५	३	५१	उ. ०	२२	२०	७	०	५८	१९	३५	२	५४	२२	२४	०	५९	२५
२८	०	२०	५	१७	उ. १	४०	द. ०	१	२०	९	०	५९	१९	२६	२	३९	२२	२४	०	५९	२८
३१	०	२४	५	१८	द. ०	२८	०	२५	२०	१२	०	५९	१९	१४	२	२४	२२	२४	०	५८	३१
सितं. १	०	२६	५	१८	१	१०	०	३४	२०	१२	०	५९	१९	९	२	१९	२२	२५	०	५८	सितं. १
४	द. ०	३३	द. ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	द. २२	२५	उ. ०	५८	४

उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रांति शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.)

द = दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८८	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९८८
सितं. ७	द. ०	४१	द. ५	१७	द. ५	१०	द. १	२५	उ. २०	१६	द. ०	६०	उ. १८	२९	द. १	५०	द. २२	२६	उ. ०	५७	सितं. ७
१०	०	५२	५	१५	६	६०	१	५१	२०	१७	०	६०	१८	२	१	३५	२२	२६	०	५७	१०
१३	१	३	५	१२	८	४२	२	१६	२०	१८	१	०	१७	३१	१	२०	२२	२७	०	५६	१३
१६	१	१६	५	७	१०	१४	२	४०	२०	१९	१	१	१६	५५	१	६	२२	२८	०	५६	१६
१९	१	२९	५	१	११	३५	३	१	२०	२०	१	१	१६	१३	०	५१	२२	२८	०	५५	१९
२२	१	४२	४	५२	१२	४१	३	२०	२०	२०	१	१	१५	३१	०	३७	२२	२९	०	५५	२२
२५	१	५४	४	४४	१३	२८	३	३४	२०	२०	१	१	१४	४३	०	२४	२२	३०	०	५४	२५
२८	२	६	४	३४	१३	५२	३	४२	२०	१९	१	२	१३	५०	द. ०	११	२२	३०	०	५४	२८
अक्टू. १	२	१७	४	२३	१३	४६	३	४१	२०	१८	१	२	१२	५४	उ. ०	२	२२	३१	०	५३	अक्टू. १
४	२	२६	४	११	१३	३	३	२६	२०	१७	१	२	११	५५	०	१४	२२	३२	०	५३	४
७	२	३३	३	५८	११	४१	२	५७	२०	१६	१	२	१०	५२	०	२५	२२	३२	०	५२	७
१०	२	३८	३	४५	९	४३	२	१०	२०	१४	१	३	९	४५	०	३६	२२	३३	०	५२	१०
१३	२	४०	३	३१	७	२८	द. १	१२	२०	१२	१	३	८	३६	०	४६	२२	३४	०	५१	१३
१६	२	४०	३	१७	५	२५	उ. ०	११	२०	१०	१	३	७	२४	०	५६	२२	३४	०	५१	१६
१९	२	३७	३	३	३	५९	०	४४	२०	८	१	३	६	१०	१	४	२२	३५	०	५१	१९
२२	२	३२	२	४९	३	२५	१	२५	२०	५	१	३	४	५४	१	१२	२२	३६	०	५०	२२
२५	२	२४	२	३५	३	३९	१	५२	२०	२	१	३	३	३५	१	२०	२२	३६	०	५०	२५
२८	२	१३	२	२२	४	३३	२	६	१९	५८	१	३	२	१६	१	२६	२२	३७	०	४९	२८
३१	१	६०	२	९	५	५५	२	९	१९	५५	१	३	०	५५	१	३२	२२	३७	०	४९	३१
नवं. १	१	५५	२	५	६	२७	२	८	१९	५४	१	३	०	२८	१	३४	२२	३८	०	४९	नवं. १
४	१	३९	१	५२	८	१०	२	०	१९	५०	१	३	०	५४	१	३८	२२	३८	०	४८	४
७	१	२०	१	४०	९	६०	१	४८	१९	४६	१	३	२	१७	१	४२	२२	३८	०	४८	७
१०	०	६०	१	२९	११	५२	१	३२	१९	४२	१	३	३	४०	१	४५	२२	३९	०	४८	१०
१३	०	३७	१	१८	१३	४२	१	१३	१९	३७	१	३	५	२	१	४७	२२	३९	०	४७	१३
१६	द. ०	१३	१	८	१५	२९	०	५४	१९	३३	१	३	६	२४	१	४९	२२	४०	०	४७	१६
१९	उ. ०	१४	०	५८	१७	९	०	३३	१९	२८	१	२	७	४३	१	४९	२२	४०	०	४७	१९
२२	०	४१	०	४९	१८	४३	०	१३	१९	२४	१	२	९	५	१	४९	२२	४०	०	४६	२२
२५	१	१०	०	४०	२०	८	०	८	१९	१९	१	२	१०	२४	१	४८	२२	४०	०	४६	२५
२८	१	४१	०	३२	२१	२५	०	२८	१९	१४	१	१	उ. ११	४०	द. १	४७	२२	४०	०	४६	२८
दिसं. १	उ. २	१२	द. ०	२४	द. २२	३२	द. ०	४७	उ. १९	१०	द. १	१	द. १२	५४	उ. १	४५	द. २२	४०	उ. ०	४५	दिसं. १

उ = उत्तर — मंगल आदि ग्रहों के क्रांति शर (प्रातः ५ घँ. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.) — द = दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८८-८९	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९८८-८९
दिसं ४	उ. २	१२	द. ०	१७	द. २३	२९	द. १	४	उ. १९	५	द. १	०	द. १४	६	उ. १	४२	द. २२	४०	उ. ०	४५	दिसं. ४
७	२	४५	०	१०	२४	१६	१	२१	१९	१	०	६०	१५	१४	१	३८	२२	४०	०	४५	७
१०	३	१९	द. ०	४	२४	५१	१	३६	१८	५६	०	५९	१६	२०	१	३४	२२	४०	०	४५	१०
१३	३	५३	उ. ०	२	२५	१४	१	४९	१८	५२	०	५८	१७	२१	१	२९	२२	४०	०	४४	१३
१६	४	२८	०	८	२५	२४	१	५९	१८	४९	०	५८	१८	१९	१	२४	२२	३९	०	४४	१६
१९	५	४१	०	१३	२५	२२	२	७	१८	४५	०	५७	१९	१२	१	१८	२२	३९	०	४४	१९
२२	६	१८	०	१८	२५	६	२	११	१८	४२	०	५६	२०	०	१	१२	२२	३८	०	४४	२२
२५	६	५६	०	२३	२४	३६	२	१२	१८	३९	०	५६	२०	४४	१	६	२२	३८	०	४४	२५
२८	७	३३	०	२७	२३	५२	२	८	१८	३६	०	५५	२१	२२	०	५९	२२	३७	०	४३	२८
३१	८	११	०	३१	२२	५६	१	५९	१८	३४	०	५४	२१	५४	०	५२	२२	३७	०	४३	३१
जन.८९ १	८	२४	०	३३	२२	३४	१	५५	१८	३३	०	५४	२२	४	०	४९	२२	३६	०	४३	जन. ८९-१
४	९	२	०	३६	२१	२२	१	३७	१८	३१	०	५३	२२	२९	०	४२	२२	३६	०	४३	४
७	९	४१	०	४०	२०	२	१	११	१८	३०	०	५२	२२	४७	०	३४	२२	३५	०	४३	७
१०	१०	१९	०	४३	१८	३९	द. ०	३६	१८	२९	०	५२	२२	६०	०	२६	२२	३४	०	४३	१०
१३	१०	५७	०	४६	१७	२०	उ. ०	८	१८	२९	०	५१	२३	६	०	१९	२२	३३	०	४२	१३
१६	११	३५	०	४९	१६	१६	०	५९	१८	२९	०	५०	२३	६	०	११	२२	३२	०	४२	१६
१९	१२	१३	०	५२	१५	३७	१	५५	१८	२९	०	४९	२२	६०	उ. ०	३	२२	३१	०	४२	१९
२२	१२	५१	०	५५	१५	२८	२	४५	१८	३०	०	४८	२२	४७	द. ०	५	२२	३०	०	४२	२२
२५	१३	२८	०	५७	१५	४६	३	२१	१८	३१	०	४८	२२	४८	०	१२	२२	२९	०	४२	२५
२८	१४	५	०	५९	१६	२३	३	३५	१८	३३	०	४७	२२	२	०	२०	२२	२८	०	४२	२८
३१	१४	४१	१	१	१७	६	३	२८	१८	३५	०	४६	२१	३१	०	२७	२२	२७	०	४२	३१
फर. १	१४	५३	१	२	१७	२१	३	२२	१८	३५	०	४६	२१	१९	०	२९	२२	२६	०	४२	फर. १
४	१५	२८	१	४	१८	१	२	५७	१८	३८	०	४५	२०	४०	०	३६	२२	२५	०	४१	४
७	१६	३	१	६	१८	३५	२	२४	१८	४१	०	४४	१९	५५	०	४३	२२	२४	०	४१	७
१०	१६	३८	१	७	१८	६०	१	४९	१८	४४	०	४४	१९	६	०	४९	२२	२३	०	४१	१०
१३	१७	११	१	९	१९	१४	१	१३	१८	४८	०	४३	१८	११	०	५५	२२	२१	०	४१	१३
१६	१७	४४	१	१०	१९	१७	०	४०	१८	५२	०	४२	१७	११	१	०	२२	२०	०	४१	१६
१९	१८	१६	१	११	१९	९	उ. ०	८	१८	५७	०	४१	१६	७	१	५	२२	१९	०	४१	१९
२२	१८	४७	१	१३	१८	४९	द. ०	२१	१९	१	०	४१	१४	६०	१	१०	२२	१८	०	४१	२२
२५	उ. १९	१७	उ. १	१४	द. १८	१८	०	४६	उ. १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	द. २२	१६	उ. ०	४१	२५

उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रांति शर (प्रातः ५ घं. ३० मि.भा. स्टें. टा) सं. २०४५ वि.

द = दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८८	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	१९८९
फर २८	उ. १९	४६	उ. १	१५	द. १७	३५	द. १	९	उ. १९	१२	द. ०	३९	द. १२	३३	द. १	१७	द. २२	१५	उ. ०	४१	फर. २८
मार्च १	१९	५५	१	१५	१७	१८	१	१६	१९	१३	०	३९	१२	७	१	१८	२२	१५	०	४१	मार्च १
४	२०	२३	१	१६	१६	१९	१	३५	१९	१९	०	३८	१०	४८	१	२१	२२	१४	०	४१	४
७	२०	४९	१	१७	१५	९	१	५०	१९	२५	०	३८	९	२७	१	२३	२२	१३	०	४१	७
१०	२१	१४	१	१८	१३	४७	२	२	१९	३१	०	३७	८	३	१	२५	२२	११	०	४१	१०
१३	२१	३८	१	१८	१२	१४	२	१०	१९	३७	०	३७	६	३७	१	२६	२२	१०	०	४१	१३
१६	२२	१	१	१९	१०	३०	२	१५	१९	४३	०	३६	५	९	१	२६	२२	९	०	४१	१६
१९	२२	२२	१	१९	८	३५	२	१५	१९	५०	०	३५	३	४१	१	२६	२२	८	०	४१	१९
२२	२२	४३	१	२०	६	२९	२	११	१९	५६	०	३५	२	११	१	२६	२२	७	०	४१	२२
२५	२३	१	१	२०	४	१४	२	३	२०	३	०	३४	द. ०	४१	१	२४	२२	७	०	४१	२५
२८	२३	१९	१	२१	द. १	४८	१	५१	२०	९	०	३४	उ. ०	४९	१	२३	२२	६	०	४१	२८
३१	२३	३४	१	२१	उ. ०	४६	१	३४	२०	१६	०	३३	२	२०	१	२०	२२	५	०	४१	३१
अप्रैल १	२३	३९	१	२१	१	४०	१	२७	२०	१९	०	३३	२	५०	१	१९	२२	५	०	४१	अप्रै. १
४	२३	५३	१	२२	४	२३	१	४	२०	२५	०	३३	४	२०	१	१६	२२	४	०	४१	४
७	उ. २४	६	उ. १	२२	उ. ७	११	द. ०	३६	उ. २०	३२	द. ०	३२	उ. ५	४९	द. १	१३	द. २२	४	उ. ०	४०	७

शेष पृष्ठ ७० का

अब यदि आप समस्याओं को अराजनैतिक दृष्टि से देखें तो स्पष्ट है कि यह वर्ष यातना, परिवर्तन, मंहगाई का है, किन्तु भारत के स्वर्णिम भविष्य की आधार शिला रखने का आरम्भ भी इस वर्ष से होगा।

किसी वस्तु का विनाश का आरम्भ होना किसी नवीन वस्तु के आरम्भ का सूचक भी तो होता है। आशा है कि आप राजनीति में इस का आर्थिक सामाजिक संदर्भ मे [illegible] करेंगे। भारत के वैज्ञानिक और योजनाकार पश्चिम के अनुकरण श्रेयस्कर नहीं पायेंगे तथा भारतीय परिवेश मे ताजा पुनर्विचार करेंगे एवं हमारे चारों ओर व्याप्त जीवन तथा संसार के प्रति पवित्र भाव व विचार का जन्म होगा। पश्चिम की भौतिक विज्ञान की खोजों पर आधारित खण्डित, अपूर्ण व विभक्त चिंतन उत्तरोतर अग्राह्य होता जायेगा तथा बौद्धिकता का लबादा ओंढ़े उस चिन्तन के पूर्वाग्रह-ग्रस्त पाखंडी भारतीय संरक्षक जो कि धर्म, आध्यात्मिक परम्पराओ तथा ज्योतिर्विज्ञान का मजाक उड़ाते है अपने आप को उपहासास्पद स्थिति मे पायेंगे।

काल के रहस्य मे अज्ञेय बढ़ते कदम १९८८ के बाद भारत के जनमानस में सच्ची सांस्कृतिक क्रांति के जनक होंगे। प्रक्रिया कष्टकर होगी। १९८८ हमारे लिए कष्ट का वर्ष है। ईश्वर सबका कल्याण करे।

एक तथ्य-पूर्ण-सत्य

लेखक :– श्री नरेन्द्र स्वरूप भटनागर, H-119, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-२३

मुझे ज्योतिष में विशेष अभिरुचि होने से प्रतिवर्ष कुछ प्रसिद्ध पंचांग जन्त्रियां और ज्योतिष सम्बन्धी पत्र पत्रिकायें उपहार रूप में प्राप्त हो जाती हैं और कुछ खरीद लेता हूं। दिल्ली और भारत के कुछ मूर्धन्य देवज्ञों के दर्शनो का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ है। सम्वत् २०४४ वि. के "श्री मार्तण्ड पंचाग" मे पृष्ठ ३ पर स्व. श्री पं. मुकुन्द वल्लभ जी मिश्र ज्योतिषाचार्य की जीवनी पर 'एक संक्षिप्त परिचय' शीर्षक से नालागढ के डा. गोपाल शर्मा का लेख छपा है। स्व. पं. मुकुन्द वल्लभ जी पंजाब के वयोवृद्ध, ख्याति प्राप्त विद्वान ज्योतिषाचार्य थे, इसमे किसी की दो राय नही। जहां उनकी जीवनी पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई वही उक्त लेख मेंकुछ कपोल-कलपित मिथ्या बाते पढ़कर खेद भी हुआ। इस लेख के सम्बन्ध में मैने गत वर्ष १५ जून १९८७ को एक पत्र डा. गोपाल शर्मा को और एक पत्र पंचाग-कर्ता पं. इन्दुशेखर को भी लिखा था, पर आज तक कोई उत्तर न आने से अब मुझे वस्तु-स्थिति स्पष्ट करनी पड रही है।

आज से लगभग १८ वर्ष पूर्व मै कईबार उज्जैन गया। श्री महाकालेश्वर के दर्शन करके भारती भवन मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पं. सूर्यनारायण जी व्यास और श्री संकर्षण जी व्यास से भी मिला। तब काफी देर तक दोनो विद्वानों से मेरी अंतरंग स्नेह पूर्ण बातें हुई। ज्योतिष की चर्चा मे पंजाब के दो ज्योतिष महारथियों का भी मैने जिकर किया तो डा. सूर्यनारायण जी ने बताया कि वे दोनों हमारे गुरुकुल में रहकर पडे है। हरदेव जी का घर में बोलचाल का नाम हस्तीमल था। हस्तीमल (श्री हरदेव जी) जब गुरु महाराज से (पूज्य पिताजी नारायण) गुरु महाराज के नाम से सर्वत्र विख्यात थे) ग्रहलाघव, लीलावती, बृहज्जातकादि ग्रन्थ पढने लगे थे तब उन्ही दिनों मुकुन्द वल्लभ जी और केशव लाल राणा नामक दो विद्यार्थी प्रिंसीपल आप्टे के नाम जयपुर के पं. केदारनाथ जी राजज्योतिषी का पत्र लेकर केतकी पढ़ने और पूज्य पिताजी से फलित व मुहूर्त ग्रन्थ पढ़ने की सिफारिश लेकर आये थे। श्री आप्टे साहब के पास उन दोनों नवागन्तुक विद्यार्थियों को ठहराने की व्यवस्था नही थी, अतः दोनों को पिताजी के पास अपनी ज्योतिष-पाठशाला में रखने के लिए भेज दिया। हरदेव जी के बड़े भाई पं. कालूराम जी ने अपने पुत्र भवानीशंकर और छोटे भाई (हरदेव जी) के साथ ही इन दोनों नये विद्यार्थियों के रहन-सहन की व्यवस्था भी कर दी। लगभग दो वर्ष तक इन तीनों ने जातक ताजिक, संहित एवं मूहूर्तग्रन्थ साथ-साथ गुरु महाराज की गद्दी के सामने टाट पर बैठकर पढ़े और सप्ताह मे एक दिन रविवार को प्रिंसीपल आप्टे साहब के घर तीनों केतकी पढ़ने जाते थे। इन तीनों मे प्रगाढ़ मैत्री हो गई थी। अतः यहां से मुकुन्द वल्लभ व केशव लाल ने जयपुर जाकर कुछ दिन बाद हरदेव जी को भी जयपुर बुला लिया। जयपुर मे भी तीनों ने साथ-साथ पं. केदारनाथ जी से [illegible]

उन्हीं दिनों यहां उज्जैन में पं. कालूराम जी का देहान्त हो जाने से हरदेव जी जयपुर से उज्जैन आ गये और मुकुन्द वल्लभ जी अपने घर कुराली तथा केशव जी अपने घर डूंगरपुर चले गये।

उज्जैन तथा जयपुर में साथ-साथ पढ़ने से मुकुन्द वल्लभ जी एवं हरदेव जी मे गहरी मित्रता हो गई थी और जयपुर में ही दोनों ने पंजाब से एक शुद्ध पंचांग निकालने का मन बना लिया था। पं. मुकुन्द वल्लभ जी ने सं. १९८३ वि. में हरदेव जी को मेवाड़ से कुराली बुला लिया और दोनों से मिलकर सर्वप्रथम सं. १९८५ वि. का श्री मार्तण्ड पंचांग छपवाया। पं मुकुन्द वल्लव जी ने पंचांग के टाइटिल पेज पर गुरु रूप में श्री गोविन्द सदाशिव आप्टे ओर पं. केदारनाथ जी का नाम छापा, पर जिन गुरु महाराज की पाठशाला में दो वर्ष तक रहकर पढे उनका नाम कहीं नही था। हरदेव जी का नाम प्रिय शिष्य के रूप में अन्दर के टाइटल पर देखकर आश्चर्य हुआ। कुछ वर्ष बाद जब हरदेव जी यहां आये तब हमने उनसे पूछा कि "तुम दोनों ने गुरु महाराज के साथ कृतघ्नता क्यों की? क्या आप्टे सा. और केदारनाथ जी ही तुम्हारे गुरु है? पिताजी गुरु नही? और तुम मात्र मुकुन्द वल्लभ जी के प्रिय शिष्य कब से बने गये?" इसके उत्तर में हरदेव जी ने कहा– "पंजाब से एक शुद्ध पंचांग निकालने की इच्छा से ही पं. मुकुन्दवल्लभ जी केतकी गणित सीखने के लिए यहां आये थे। पंचांग के निर्माण में सहयोग देने के लिए उन्होने मुझे कुराली बुलाया पंचांग के मुख्य पृष्ठ पर पं. मुकुन्दवल्लभ जी का आधिपत्य था। छोटा होने के नाते मै उन्हे सलाह दे सकता था, अतः मैने उनसे कहा कि "टाइटल पेज पर दो गुरुओं के साथ गुरु नारायण देव का नाम भी छपना चाहिए, इस पर पं. मुकुन्दवल्लभ जी बोले कि "तीन नाम ठीक नही और एक लाइन बढ़ जाती है" तब मै चुप रहा। सं. १९८४ वि. में पंचांग छपवाने जब श्रावण मास में सर्वप्रथम में लाहौर गया तब सारी प्रैस कापी मैने ही लिखी थी। टाइटल पेज पं. मुकुन्दवल्लभ जी ने बनाकर दिया था। अन्दर के टाइटल पर धन्यवाद के रूप में मेरा नाम लिखा देख कर मैने पं. जी से पूछा कि मेरे नाम के साथ आपने 'प्रिय शिष्य' क्यों लिखा? तो बड़े प्यार से मधुर वाणी में बोले – "देखो भाई ! मै आपसे आयु में बडा हूं ही और ग्रहलाघव छुडाकर पंचतारा तक केतकी तुमको पढाई, बाद में हम साथ-साथ पढते थे, मै तुमको अपना छोटा भाई मानता हूं और तुम भी मुझे बड़ा भाई मानते ही हो। एक अक्षर पढ़ाने वाले को भी शास्त्रों ने गुरु माना है और बडा भाई पिता के समान होता है। तुम्हे प्रिय शिष्य लिखने से पंचांग का और मेरा गौरव बढेगा, तुम्हारा कुछ घटेगा नहीं, लोक व्यवहार में कुछ दिखावा भी करना पड़ता है। विश्वास रखो मै हृदय से तुम्हे अपना अभिन्न मित्र बन्धु मानता हूं और मानता रहूंगा। "मन मिले का मेला, कौन गुरु कौन चेला"। हम दोनों मे खून-पसीने से लगाया यह वृक्ष खूब फले फूले तो हम दोनों मीठे फल खायेंगे। अब प्रसन्नतापूर्वक लाहौर जाकर इस पंचांग को सुन्दर रूप में शीघ्र छपवाकर लाओ"। तब सहृदयता से एक छोटे भाई की तरह मैंने उनकी बात मान ली और पंचांग छपवा लाया। सबसे पहला सं. १९८५ वि. का श्री मार्तण्ड पंचांग राजस्थानी साइज मेंही छपवाया. सं. १९८६ वि. से पंजाबी आकार में छपवाने लगे"

यह है उज्जैन के स्व. डा. सूर्य नारायण जी और पं. संकर्षण जी व्यास से हुई मेरी बार्तालाप का संस्मरण। अंत मे चलते समय विनोदप्रिय व्यास जी ने मुझे व्यंग्यात्मक रुप में यह भी कहा "भटनागर जी, दोनों शिष्यों ने गुरु का नाम भुला दिया अतः तथा कथित भाई चारा निभा नहीं, चौदह वर्ष तक निरन्तर मार्तण्ड पंचांग की सेवा करने के अनन्तर पंजाबी भाई से राजस्थानी भाई को अलग होना पड़ा।

गत वर्ष मैंने डा. भवानी शंकर त्रिवेदी के कुछ ग्रन्थ देखे, उनके अन्त में आत्म परिचय के कई श्लोक, डा. त्रिवेदी ने छापे है। डा. त्रिवेदी, श्रद्धेय श्री हरदेव जी त्रिवेदी के भतीजे ७२ वर्षीय वयोवृद्ध सहृदय विद्वान् है। उनसे जब मै उनके निवास स्थान दिलशाद कालोनी में मिला, तब उन्होंने बताया कि सं. १९८०-८१ वि. मे जब पं. मुकुन्दवल्लभ जी और चाचाजी साथ-साथ ज्योतिष पढते थे, उस समय में भी वहां संस्कृत पढता था। वर्तमान वर्ष के मार्तण्ड-पंचांग मे गोपाल शर्मा की मन घडत बाते पढ़कर मुझे बडा आश्चर्य हुआ। जब सं. १९८४ वि. मे पं. मुकुन्दवल्लभ जी और चाचाजी ने मार्तण्ड पंचांग शुरु किया, उस समय न तो गोपाल शर्मा जी का जन्म हुआ और न मार्तण्ड पंचांग के वर्तमान सम्पादकों में से किसी का भी। श्री हरदेव जी को १७ वर्ष तक अपने परिवार मे रखकर पढाने की मनघडन्त बात जान बूझकर लिखी या लिखाई गई है। यदि ऐसा नहीं है तो मै गोपाल शर्मा जी और मार्तण्ड पचांग संपादकों से पूछना चाहता हूँ कि पं. मुकुन्दवल्लभ जी कौन से [illegible] हरदेव जी को अपने साथ लाये और पढाकर कितने वर्ष बाद त्रिवेदी जी को अपनेकार्यलय का प्रधान

व्यवस्थापक बनाया। क्या कोई बच्चा आते ही छू मंतर से पंचांग निर्माण कार्य में प्रवीण होकर अपने गुरु को दक्षिण हस्त की भांति सम्पूर्ण कार्य में सहायता देने वाला बन सकता है?

श्री मार्तण्ड पंचांग के आरम्भ से लेकर चौदह वर्ष तक सम्वत् १९८५ से १९९८ वि. के प्रत्येक पंचांग में मुकुन्द वल्लभ जी ने हरदेव शर्मा त्रिवेदी को दक्षिण हस्त की भांति सहायता करने वाला लिखा है। जिनके पास प्रारम्भ के चौदह वर्षों के मार्तण्ड पंचांग हों उनमें देख सकते है।

इस सम्बन्ध में जब मैंने पूज्य श्री त्रिवेदी जी से कहा कि देखिए आप के विषय में कितना मिथ्या प्रचार किया है, मानो आपको पंचांग निर्माण और ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान १७ वर्षों तक अपने परिवार के आश्रय में रखकर मुकुन्द वल्लभ जी ने ही आपको आरम्भ से अन्त तक सब कुछ पढ़ाया और बाद में कुछ वर्ष ही गुरु दक्षिणा के रूप में आपने मार्तण्ड पंचांग में सहयोग दिया। इसका आपको लिखित रूप से विरोध करना चाहिए। इस पर साधुमना त्रिवेदी जी बोले – "अरे, भटनागर जी, क्या विरोध करें और किसका करें, सब अपने ही तो है। मुझे शिष्य प्रदर्शित करने में यदि मार्तण्ड पंचांग सम्पादकों को लाभ पहुंचता हो तो मुझे प्रसन्नता है। क्योंकि सन् १९२४ ई. में उज्जैन में छात्रावस्था में उन्होंने ही मुझे केतकी का प्रारम्भिक ज्ञान कराया और बाद में उज्जैन व जयपुर में हम साथ-साथ पढ़े अतः मैं उन्हें गुरु एवं ज्येष्ठ गुरुबन्धु रूप में सदा प्रणाम करता रहा हूँ। श्रद्धेय पं. मुकुन्द वल्लभ जी भी अन्त समय तक मुझे अपना आत्मीय बन्धु मानते व लिखते रहे। जन्मान्तर का मेरा उनका कोई अटूट स्नेह सम्बन्ध था, मैं तो उनको क्या उनके पुत्रों को भी गुरु मानकर प्रणाम कर सकता हूँ।

" सिया राम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी।"

श्रद्धेय श्री त्रिवेदी जी ने ज्योतिष्मती-निकेतन में मुझे स्व. पं. मुकुन्द वल्लभ जी के हाथ के कुछ निजी पत्र भी दिखाए जिनमें कहीं भी 'प्रिय शिष्य' शब्द से सम्बोधित नहीं किया है। एक पत्र में तो उन्होंने अपनी व अपने पुत्रों की गलतियों की क्षमा भी मांगी है। क्या कोई भी गुरु अपने शिष्य से क्षमा माँग सकता है? यह उसी महापुरुष का सच्चा स्नेह है। गुरुदेव त्रिवेदी जी के उच्चादर्श और स्व. पं. मुकुन्द वल्लभ जी की महानता के लिए उक्त दोनों महापुरुषों के श्री चरणो में मैं तो नतमस्तक हूँ।

डा. गोपाल जी की सच्चाई का दूसरा नमूना और देखिए

मार्तण्ड पंचांग के उक्त लेख के अंत में पृष्ठ चार पर डा. गोपाल शर्मा ने लिखा है – "स्वप्रवर्तित पंचांग प्रकाशनों के सम्पादक ज्योतिष निष्णात पुत्रों के ज्योतिष शास्त्र के गुरु पंडित जी स्वयं थे...... त्रिस्कन्ध ज्योतिष के सभी रहस्यों की गहराई तक उतार कर ज्योतिषजगत् में सुप्रतिष्ठित किया है।"

यहां मैं गोपाल शर्मा को याद करवा दूं कि जब किन्ही कारणों से सं. १९९७ वि. में श्री त्रिवेदी जी ने कुराली छोड़ कर सोलन में निवास किया, तब श्री पं. मुकुन्द वल्लभजी के चारों पुत्र छोटे थे अतः पं. मुकुन्द वल्लभ जी ने मार्तण्ड पंचांग का गणित सिमारला वाले पं. बन्शीधर शर्मा जी (शताब्दी पंचांगकर्ता) से लेना प्रारम्भ किया और पंचांग गणित सीखने के लिए अपने दोनों ज्येष्ठ पुत्रों को पं. बन्शीधरजी के पास स्वयं सिमारला छोड़ आए।

लगभग दो वर्ष तक दोनों भाईयों ने सिमारला ग्राम में पंचांग निर्माण कार्य सीखा और साथ-साथ पं. बन्शीधर जी मार्तण्ड पंचांग की प्रेस कापी तैयार करते रहे, तदनन्तर कई वर्ष तक ग्रीष्मकाल में पं. मुकुन्दवल्लभ जी अपने पुत्रों को पंचांग गणित कार्य में निपुण करने के लिए प्रति वर्ष दो तीन मास श्री नैनादेवी और शिमला के पहाड़ी ग्रामों में अग्रिम वर्ष के मार्तण्ड पंचांग बनाने के साथ-साथ दोनों पुत्रों को पढ़ाने के लिए पं. बंशीधर जी को बुलाते रहे। अब श्री पं. बंशीधर जी भी स्वर्गवासी होगए, परन्तु उनके चारों पुत्र इस बात के साक्षी हैं। बाद में पं. मुकुन्दवल्लभ जी के दोनोंपुत्र श्री राधा कृष्ण महाविद्यालय खुर्जा में कुछ वर्ष तक श्री पं. विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्य से सिद्धान्त संहिता ग्रन्थ पढ़े। वयों वृद्ध विद्वान पं. विशुद्धानन्द जी गौड इन दिनों महर्षि वेद विज्ञान-विद्यापीठ महार्षिनगर (दिल्ली) में ज्योतिष विभागाध्यक्ष है। वर्तमान मार्तण्ड पंचांग-सम्पादकों ने कभी इन गुरुजनों का नामोल्लेख तक नहीं किया। यह कैसी गुरु भक्ति है? पता नहीं ऐसी अप्रमाणिक बातें लिखने लिखवाने में नवयुवक पंचांग सम्पादकों को क्या आनन्द मिलता है? भगवान जाने। इनके ज्योतिष शास्त्र के गुरु केवल इनके पिता श्री ही थे यह सर्वथा झूठ है। विद्या तो विनयशील विनम्र बनाती है– "विद्याददाति विनयम"

नरेन्द्र भटनागर

वोट और पद के भूखे भेड़ियो से घिरा भारत

इस समय प्रत्येक सांसद प्रधानमंत्री बनने और प्रान्तीय विधायक मुख्यमंत्री बनने के स्वप्न संजोये हुए हैं। नेताओं के संकुचित स्वार्थमय वोट की राजनीति में भारत को भारी विपत्ति में फंसाया है। पहले कांग्रेस (ई.) ने पंजाब में वोट प्राप्त करके कांग्रेसी शासन को सुरक्षित बनाने के लोभ में भिंडरावाला को सिर पर चढ़ाया इसका परिणाम विनाश के रूप में सबके सामने है। अब पश्चिम बंगाल के पर्वतीय क्षेत्र दार्जलिंग में घीसिंग दूसरा भिंडरावाला बनकर गोरखा लैंड के लिये रक्तपात कर रहा है। पश्चिमी बंगाल में कांग्रेसी शासन नही अतः केन्द्रीय शासन संकुचित स्वार्थ वश देशद्रोही घीसिंग के साथ वार्ता का नाटक रच रहा है। यदि अब के केन्द्रीय सरकार ने घीसिंग के साथ दृढ़ता का रुख न अपनाया तो वहां पंजाब जैसी भयंकर स्थिति बन जायेगी। हर पार्टी में वोट और पद की घृणित राजनीति में भारत का भट्टा बैठाया है। भारत को इस समय सर्वस्व त्यागी तपस्वी दूरदर्शी महामनिषी बृहत्तर भारत के महामंत्री चाणक्य जैसा पवित्र नेता चाहिये जो राजसी महलों में भारी व्यय साध्य सुरक्षा सैनिकों के संरक्षण से बाहर निकल पर्ण कुटीर में रहकर लोक कल्याण कर सकें। वर्तमान शासक जिन महात्मा गांधी को वर्ष में दो बार (2अक्टूबर, 30जनवरी) स्मरण कर समाधि पर श्रद्धांजलि समर्पित करनेका नाटक रचते है क्या उनके पूर्वज आदर्श युग पुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कभी कोई पद ग्रहण किया था?

आज उनके नामलेवा चेले किस प्रकार का घृणित जोड़-तोड़ करके जनता को झूठे वायदों के सब्जबाग दिखाकर अपनी कुर्सी कायम रखने में भारत का कितना हित कर रहे हैं। यह उन्हें श्रावण के अन्धे की भांति हर वक्त हरा ही हरा दिख रहा है। परन्तु अब जनता जनार्दन रूपी समुद्रशायी भगवान् विष्णु मधु कैटभ के विनाशार्थ मोहनिद्रा त्याग कर युद्ध के लिये सजग हो गये है। अतः अब अत्याचार के पाप का घड़ा फूटने ही वाला है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ३० वर्ष (४७/७७) तक जिस कांग्रेस का भारत में एकच्छत्र राज्य रहा वही अ.भा. कांग्रेस अपने संकुचित स्वार्थ वश यादवी संघर्ष में व्यक्ति पूजा के नाम पर कांग्रेस (ई.स.) के नाम से विभक्ति हो गई और अब दक्षिण पूर्व भारत के अनेक प्रान्त कांग्रेसी शासन से मुक्त हो चुके हैं। गत वर्ष संवत् २०४४ विक्रमी के पंचांग में पृष्ठ ३१-३२ पर मैंने एक वर्ष पूर्व कटु सत्यरूप से स्पष्ट भविष्यवाणी की थी........हरियाणा के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री वंशीलाल के लिये वर्ष प्रतिकूल है। विपक्ष प्रबल होगा। चुनाव में कांग्रेस को बहुमत नहीं मिलेगा। "......पं. बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योतिबसु की ग्रह स्थिति बलवान है। उनकी पद प्रतिष्ठा पूर्ववत बनी रहेगी गोरखालैण्ड समस्या सिरदर्द का कारण बनेगी.....इत्यादि" तदनुसार दोनों प्रान्तों के गत चुनावों में कांग्रेस की बुरी तरह हार ने उक्त भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध कर दिया है। पांच वर्ष पूर्व में मैं इस पंचांग और ज्योतिष्मती में 'नेताओं को नेक सलाह' शीर्षक चेतावनी दी थी। वह विज्ञ पाठक जानते होंगे अब वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने पदभार संभाला उस समय भी अभिनंदन करते हुए मैंने लिखा था कि – "श्री गांधी ऋतंभरा प्रज्ञा से काम लेंगे तो यशस्वी होंगे"। किन्तु श्री गांधी ठकुर सुहाती के कहने वाले मित्रों के व्यामोह में फंस कर अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाते हुए राष्ट्र का अहित कर रहे है।– इस पर शान्तस्वान्तेन दूर दृष्टि से विचार करें तो राष्ट्र का हित हो सकेगा। शिवमस्तु सर्वजगतः– हरदेव शर्मा त्रिवेदी

संस्कार प्रकाश

यह तथ्य है कि हमारा सम्पूर्ण जीवन संस्कारों से ही निर्मित होता है। इस ग्रन्थ में विवाह एवं यज्ञोपवीत आदि सभी छोटे-बड़े संस्कारों का विवेचन एवं विधि-विधान शास्त्रीय पद्धति से प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाराशर के सूत्र, उनकी व्याख्या तथा समग्र विधि विधान संस्कृत और हिन्दी में दिया गया है। साथ ही प्रत्येक संस्कार की उपयोगिता व महत्व आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढंग से किया गया है।

रायल साइज के ३२० पृष्ठों में मुद्रित इस सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ३५ रुपया है। इसका प्रकाशन श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने किया है।

ज्योतिष्मती प्रकाशन, १०१ सहगलपुरा, मथुरा (उ० प्र०)

ज्योतिष - तन्त्र - मन्त्र का अनुपम - साहित्य

रमल ज्योतिष शास्त्र —	३५)००
सरल सुगम ज्योतिष	१५)००
सरल ज्योतिष शास्त्र (प्रारम्भिक ज्ञान)	२०)००
शकुन ज्योतिष शास्त्र	३०)००
आयु निर्णय (आयु कितनी होगी ?)	३०)००
आपका भविष्य	३०)००
भृगु संहिता फलित प्रकाश दर्पण	५१)००
बृहदवकहडा चक्रम	२५)००
चमत्कार ज्योतिष	१५)००
प्रश्न ज्योतिष शास्त्र	२५)००
भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी	२५)००
भृगु मूक प्रश्न दीपिका	१५)००
भृगु मूक प्रश्न शिरोमणि	२५)००
हनुमान ज्योतिष	१०)००
अंक ज्योतिष लाटरी	१०)००
अंक ज्योतिर्विज्ञान	१५)००
कलोद सट्टा	३१)००
लाटरी गाइड	३१)५०
सट्टे का कल्प-वृक्ष	३५)००

स्वर ज्योतिष

स्वर ज्योतिष शास्त्र	२५)५०
ज्ञान दशावदय	५)००
शिव स्वरोदय	१०)००
सम्पूर्ण स्वर विज्ञान	[illegible])००

मोहिनीविद्या	२०)००
काली उपासना	१७)००
गायत्री तंत्र	८)००
तंत्रमहासाधना	१७)००
अष्टसिद्धि	१७)००
लक्ष्मी सिद्धि	११)७५
काली सिद्धि	२०)००
मन्त्र से रोग निवारण	११)७५
भृगुसंहिता	२६)००
मंत्रसागर	२६)००
स्वरसिद्धि	८)५०
गायत्री महाविज्ञान (३ खण्डों में)	३०)००
तंत्रसार भाषा	२६)००
शाक्तप्रमोद (संस्कृत) (तंत्र का दुर्लभ ग्रन्थ)	४८)००
बृहद्स्तोत्ररत्नाकर (स्तोत्रों का अनूठा ग्रन्थ)	१७)००
दुर्गार्चनपद्धति	२६)००
दुर्गा उपासना	१७)००
सौंदर्य-लहरी	८)५०
उड्डीश तंत्र	७)५०
दत्तात्रेय तंत्र	६)५०
वाञ्छाकल्पलता	८)००
बगलोपासनपद्धति	८)००
शारदातिलक	१७)००
रुद्रयामलतंत्र	८)००
महेश्वरीतंत्र	६)००
मंत्र और मातृकाओं का रहस्य	३६)००
काली तन्त्र	८)००
मंत्र सिद्धि का उपाय	८)००
गुप्त साधनतंत्र	८)००
तंत्र महाविज्ञान (२ खंड)	४३)००
हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विद्या)	११)००
यन्त्र महासिद्धि	११)००
योगसाधना, सिद्धि और ईश्वरी साक्षात्कार	३१)००
संकल्प सिद्धि	६)००
मन की अगाधशक्ति और स्वयं सूचना	२०)००
आपका भाग्यांक, अंगूठी	६)५०
संकट निवारक स्तोत्र मंत्र	६)००
श्रीयंत्रशक्ति, मंत्रशक्ति का रहस्य	६)००
तंत्र[illegible]	[illegible]

२. मोहिनी विद्या, साधना और सिद्धि---दिन-रात की चिन्ता, भविष्यकालीन संकट आदि बातों के कारण मनुष्य का मन बिल्कुल दुर्बल और पंगु बन गया है। ऐसी विषम परिस्थितियों में मन प्रसन्न रखकर उसे बलवान् कैसे बनाया जाय, लोगों पर प्रभाव डालकर उन्हें वश में कैसे किया जाय, संकट के समय मानसिक सन्तुलन कैसे साधा जाय, इच्छा शक्ति को [illegible] विकसित कर अपने संकल्प को कैसे सिद्ध किया जाय। इसका पूरा विवरण इस पुस्तक में आप पायेंगे।

३. हस्तरेखा दर्पण—इस पुस्तक की रचना अत्यन्त सरल भाषा में तथा ६८ महत्त्वपूर्ण आकृत्तियों के साथ की गई है। यह पुस्तक प्रकाशित होते ही बाम्बे एस्ट्रॉलाजिक सोसायटी ने हस्त सामुद्रिक विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ योगदान इस प्रकार गौरान्वित कर इस पुस्तक को १५०० रु० का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया।

४. संकल्प सिद्धि—इच्छित कार्य सफल करने के लिए मानस संकल्प विद्या, संकल्प सिद्धिदायक विद्युत मानस यन्त्र तथा उसका प्रयोग। त्रिकाल ज्ञान दर्शक, अन्जन, दर्पण, अंगूठियां आदि बनाने की विधि तथा उसमें इच्छित बातों दर्शन करने की गुप्त विद्या।

५. धन प्राप्ति के लिए प्रभावी देवी साधनाएं तथा व्रत—धन प्राप्ति के लिये मेरे परम आदरणीय गुरु से प्राप्त गुप्त एवं दुर्लभ साधनाओं को जुटाकर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। इन सभी साधनाओं की परख अनुभव की कसौटी पर हो चुका है। इस पुस्तक से हजारों लोग लाभ उठा चुके हैं।

६. आपका भाग्यांक, अंगूठी, रत्न और रंग—हर व्यक्ति का भाग्यांक (याने शुभांक) अलग-अलग होता है। विशिष्ट भाग्यांक का महत्त्व, वह व्यक्ति कौन-सी अंगूठी पहने, कौन-सा रत्न इस्तेमाल करे, किस रंग का वस्त्र पहने आदि का पूरा विवरण इस पुस्तक में दिया है। १५)००

७. श्रीयन्त्र शक्ति-मन्त्र शक्ति का रहस्य और उसकी अद्भुत फलश्रुति—इस पुस्तक में अनेक गुप्त एवं दुर्लभ मन्त्र तथा यन्त्र दिये हुये हैं। श्रीयन्त्र, श्रीदत्तात्रेय यन्त्र, श्रीगणेश-यन्त्र, श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र, श्रीधन प्राप्ति यन्त्र, शत्रुनाशकरण यन्त्र, वशीकरण यन्त्र, उसकी पाठविधि, फलश्रुति बताई गई है।

८. संकट निवारण करने वाले स्त्रोत और मन्त्र—इस पुस्तक में बहुत सारे स्तोत्र और मन्त्र एकत्र किये हैं। इसकी विधि सरल तथा अनुभव पूर्ण है। २५)००

९. प्रश्न ज्योतिष—आपके जीवन में समय-बेसमय नीचे दिये हुए सवाल पैदा होते हैं जैसे कि अचानक संकट, नौकरी, बढ़ती (प्रमोशन), ब्याह, सन्तान प्राप्ति, धन लाभ, ऋण मुक्ति, शत्रु नाश, मुकद्दमे, बीमारी आदि और इन सब सवालों से आप घबरा जाते है। लेकिन इनसे छुटकारा पाने के लिये किसी ज्योतिष का दरवाजा खटखटाने की अब जरूरत नहीं। इस पुस्तक को पास रखिये और आप अपनी सारी कठिनाईयों से छुटकारा पाइये। गत पचास वर्षों से मैं इस प्रणाली से ही लोगों को मार्गदर्शन करता आया हूं। २५)००

१०. योगी अ. ल. भागवत जी की अमृतवाणी प्रथम खण्ड—इस पुस्तक में अ. ल. भागवत जी ने मानवी मन के चमत्कार, रमल विद्या का चमत्कार, धन प्राप्ति के लिये उपासना, पुत्र-प्राप्ति के लिये टोटका, प्राणायाम साधना, त्राटक साधना, परिवार सुख के लिये उपासना, उपासना पंचक निश्चित विचारों के नियम, साधकों द्वारा पूछे गये प्रश्न और उनका समाधान आदि विचार प्रकट हैं। ११)००

११. योगी अ. ल. भागवत जी की अमृतवाणी द्वितीय खण्ड—इस पुस्तक में अ. ल. भागवत जी ने योगसिद्धि, संकल्पसिद्धि, दूरदर्शनसिद्धि, मृत्यु पर विजय पाने की सिद्धि, अद्भुत, प्राणायाम, सहजसमाधि, सहविकल्प समाधी, जीवन मुक्ति की ओर, समाधि उपासना, मंत्र विद्या का रहस्य, यत्रविद्या का चमत्कार, तंत्रविद्या का चमत्कार, तंत्रविद्या का रहस्य और आपके लिये बहुत सारा मार्गदर्शन किया है। ११)००

१२. योग, साधना, सिद्धि और ईश्वरी चमत्कार—मेरी अजोड पुस्तक में मैंने ६८ साल तक जो भी साधनाएं कीं, मुझे जो अनुभव आये वे सब ग्रन्थित किये हैं मेरे गुरु द्वारा प्राप्त अनेक गुप्त एवं दुर्लभ प्राणायाम, न्यास, रोमानी साधना आदि मैंने इस पुस्तक में दी है इसमें दी गई उच्च-कोटि की गुप्त साधानाओं द्वारा आपकी इच्छा शक्ति प्रबल कैसे बनाई जाये, इसका पूरा विवरण आप पायेंगे। ३१)००

ज्योतिष्मती प्रकाशन, मथुरा

वेतन तालिका

[अर्थात् रेडी रेकनर]

यह पुस्तक नये पैसों में तनुख्वाह निकालना, ब्याज निकालना, किराया निकालना आदि कामों में बड़ी उपयोगी है। आफिसों, बैंकों, कम्पनी, सेठ, साहूकारों के बड़े काम की है। ग्लेज कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल १०) रु० डाक व्यय पृथक।

रेडियो गाईड

रेडियो के सिद्धान्त, बिजली के सिद्धान्त, रेडियो की सामग्री और उनसे हर प्रकार के रिसीवर बनाना, ट्रांसिस्टर रेडियो को तैयार करना, रेडियो में पैदा हुए दोषों को ठीक करना, नये रेडियो सेट को तैयार करना व खराब रेडियो को सुधारना अनेकों चित्रों द्वारा सम्पूर्ण रूप से समझाया गया है। मूल्य केवल २८) रु०

सचित्र फोटोग्राफी शिक्षा

इस पुस्तक की मदद से एक पढ़ा लिखा आदमी पक्का व अनुभवी फोटोग्राफर बन सकता है।

फोटोग्राफी के काम को सीखकर रुपया कमा सकता है और स्टूडियो चला सकता है। मूल्य१५) रु०

अपनी गाड़ी की छोटी-मोटी खराबियां स्वयं ठीक करें

मोटर मैकेनिक टीचर

पृष्ठ ५२० चित्र २५०

क्या हडसन, क्या फोर्ड, क्या शेवरलेट सभी आधुनिक मोटरकारों के इंजनों के पूरे वर्णन, बिजली की वायरिंग इस पुस्तक में है। बड़े से बड़े इंजीनियर भी वर्कशापों में काम सीखने वाले ड्राइवरों तथा मैकेनिकों को इसे ही खरीदने की सलाह देते हैं। मूल्य २८) रु०

बिना बिजली के रेडियो

इस पुस्तक की सहायता से आप केवल पन्द्रह रुपये में ऐसा रेडियो तैयार कर लेंगे जो बिना बिजली के चलता है और सफर तक में काम देता है। मूल्य केवल१०) रु०

१०००) रुपया महावार शर्तिया कमा लो

बेकारी पर एटमबम्ब

खजाना-रोजगार

(अर्थात खजाना रोजगार हिन्दी भाषा) इस पुस्तक में ५२८ हुनर छपे हैं। चाहे कोई सा हुनर अपने मतलब का चुन लें और उससे १०००) रुपये महावार कमावें। किसी उस्ताद की जरूरत नहीं। गिलट साजी, फोटोग्राफी, घड़ी साजी, दन्दानसाजी, रबड़ की मुहरें, आतिशबाजी, साबुन, बाल काले करने के खिजाब, बाल उमर भर न उगने की दवा बनाना, मोमबत्ती, गन्धक के गिलास, शीशा जोड़ना, इत्र तेल फुलेल, अंग्रेजी खाने, बिस्कुट, मिठाई, अचार, मुरब्बे, चटनियां, सब रोगों के इलाज और १०८ बीमारियों की एक ही दवा अमृत का नुस्खा आदि ५२८ हुनर छपे है। शीघ्र मँगा लें। मूल्य २८) रु०

आदर्श नारी धर्म शिक्षा

(लेखक--श्री ब्रजमोहनलालजी)

शादियों में उपहार की अनुपम पुस्तक। सृष्टि का मूल कारण स्त्रियां ही हैं। जैसी वृक्ष की जड़ होती है वैसा ही फल लगता है। यदि स्त्रियां सुशिक्षित सुशील विद्यावती और गुणवती होंगी तो ही वे गृहस्थाश्रम को स्वर्ग के समान सुखदायक बनाकर केवल अन्य आश्रमों को ही नहीं वरन् उसके सम्पर्क में आने वाले प्राणी मात्र को शान्ति के वृक्ष की शीतल छाया में बैठकर इस संसार सागर के पार करने में हर एक आश्रम के उद्देश्यों पर थोड़ा-थोड़ा विचार प्रकट करते हुए गृहस्थ आश्रम के मूल उद्देश्यों और शिक्षाओं पर विशेष रूप से लिखने का प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक गृहस्थी घर में इस पुस्तक का रहना आवश्यक है। पृष्ठ संख्या लगभग ५०० सजिल्द का मूल्य २४) रु०

फिल्मी हारमोनियम गाईड (अपटुडेट)

सब लोग फिल्मी गाने हारमोनियम पर बजाना बहुत ही पसन्द करते हैं। इसलिए लेखक ने इसके अन्दर अधिकतर फिल्मी गानों की तर्ज में निकालने का तरीका बतलाया है, इसके अलावा तबला, बैंजो, सितार और बांसुरी शिक्षा का विषय देकर पुस्तक को सर्वश्रेष्ठ बना दिया है। मूल्य केवल १२) रु०

वर्कशाप गाईड अथवा फिटर ट्रेनिंग

इस पुस्तक में इंजीनियरिंग, वर्कशाप, कारखाना जगत में होने वाले जुमला काम अथवा खराद, वाईरिंग, गैस वेल्डिंग, टांका लगाना, ढलाई, धातुओं की किस्में, वजन, ताकत पैमायश हिसाब और फिटिंग, बुखारों के काम, मय चित्र (ब्लाक) से समझाये गये हैं। जिसकी आजकल के समय में बड़ी आवश्यकता थी छपकर तैयार हो गई है। मूल्य१८)

पाक विज्ञान

पाकशाला की व्यवस्था, कच्ची रसोई, पक्की रसोई, दूध की चीजें, मुरब्बा, अचार, चटनी आदि देशी एवं बंगाली मिठाई, पाव रोटी, नान खताई, बिस्कुट, साग, तरकारियाँ तथा सब्जियां, भुरते, रायते, सलाद आदि और मांस, मछली, अंडा तथा प्रत्येक प्रकार की आधुनिक एवं प्राचीन खाद्य सामग्रियों के तैयार करने की विधियों सहित वर्णन है। प्रत्येक घर में इस पुस्तक का होना जरूरी है। पृष्ठ संख्या लगभग ४०० मूल्य१८) रु०

बुनाई शिक्षा

इस पुस्तक का प्रत्येक घर में होना आवश्यक है, क्योंकि इसमें बच्चों की बनियान, टोपी घेरदार की, मोजा, जाँघिया, स्वेटर, जम्फर, वास्कट, दस्ताने, गुलूबंद, ब्लाउज, बटुआ मफलर, शाल आदि कितनी ही वस्तुओं के बुनने के सरल, ढङ्ग चित्रों सहित समझाये गये हैं। मूल्य१८) रु०

बिजली सुपरवाईजर

यह पुस्तक लेखक ने भारतीय एवं केन्द्रीय सरकारों द्वारा स्वीकृत सुपरवाईजर पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी है। इस पुस्तक में बिजली सम्बन्धी छोटी से छोटी बात से लेकर बहुत उच्चतर के व्यावहारिक ज्ञान को सरल से सरल हिन्दी में समझाया गया है। इसलिये यह दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि यह पुस्तक एक साधारण मनुष्य से लेकर जो अपना साधारण ज्ञान बढ़ाने का इच्छुक हो वायरमैन, सुपरवाईजर, बिजली के ठेकेदार यहां तक कि बिजली इंजीनियर के लिये भी उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य ४०) रु०

मँगाने का पता-- ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा

डा० भवानी शंकर त्रिवेदी की उपयोगी रचनाएं--

संस्कृतम् यूरोपीया भाषाश्च

इस ग्रंथ में तुलनात्मक भाषा विज्ञान के नियमों का विवेचन करते हुए सैकड़ों, हजारों उदाहरणों के द्वारा यह भलीभांति दर्शाया गया है कि यूरोप की ग्रीक, लेटिन, फ्रेन्च, रूसी आदि और विशेष रूप से अंग्रेजी और जर्मन आदि भाषाएँ संस्कृत से विकसित हैं, या उनका विकास संस्कृत के द्वारा ही समझा जा सकता है।

संस्कृत के महत्व के परिचायक मनमोहक आवरण से युक्त सुन्दर, सुनहरी जिल्द एवं परिपुष्ट कागज पर मुद्रित डिमाई ४१६ पृष्ठ के इस ग्रन्थ के राज संस्करण का मूल्य–१०० रुपये। डाक व्यय १०)

कालिदासचर्चित बृहत्तर भारत

ग्रंथ का यह उद्देश्य बता कर विद्वान लेखक ने इस ग्रंथ के द्वारा कालिदास को पढ़ने-पढ़ाने की एक सर्वथा नई और सही दिशा दिखाई है--

विक्रम वि० वि० उज्जैन (संस्कृत अध्ययनशाला) के आचार्य एवं अध्यक्ष डा० श्रीनिवास रथ के निम्न शब्द इस ग्रंथ के गौरव के प्रत्यक्ष परिचायक हैं।

'आज भारत में विघटन की शक्तियों का सामना करना और देश की अखण्डता का संरक्षण सर्वोपरि महत्व के प्रश्न हैं। इस महनीय कार्य में जिस अदम्य साहस और शक्तिमत्ता की हमें आवश्यकता है, उसका अवलम्ब भी हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर से ही प्राप्त हो सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि डा० भवानीशंकर त्रिवेदी के साथ "कालिदास चर्चित बृहत्तर भारत", की यात्रा वर्तमान युवा पीढ़ी को नया आत्मविश्वास प्रदान करेगी। यह आत्म-विश्वास आज के भारत के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कालिदास के भारत के लिए था।

मनोहर कपड़े की जिल्द व अनेक चित्रों तथा मानचित्रों से विभूषित डिमाई पौने चार सौ पृष्ठ के इस ग्रन्थ का मूल्य १०० रु०। डाक व्यय १०)

Maxmuller's India what can it teach us

भारत से हम क्या सीखें

इस ग्रन्थ के बाएं पृष्ठ पर मैक्समूलर की पुस्तक का मूल अंग्रेजी व उसके सामने के पृष्ठ पर हिन्दी अनुवाद दिया गया है। मूल्य--१०० रु० डाक व्यय १० रु०।

मोक्षमूलरवैदुष्यम् (नाटकम्)

मैक्समूलर के समग्र जीवन में व्याप्त संस्कृत-सेवा एवं भारत-भक्ति को दर्शाने वाला हिन्दी अनुवाद एवं भूमिका आदि सहित नाटक। मूल्य ४० रु०। डाक व्यय ५)

संस्कार प्रकाश

यह तथ्य है कि हमारा सम्पूर्ण जीवन संस्कारों से ही निर्मित होता है। इस ग्रन्थ में विवाह एव यज्ञोपवीत आदि सभी छोटे-बड़े संस्कारों का विवेचन एवं विधि-विधान शास्त्रीय पद्धति से प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पारस्कर के सूत्र, उनकी व्याख्या तथा समग्र विधिविधान संस्कृत और हिन्दी में दिया गया है। साथ ही प्रत्येक संस्कार की उपयोगिता व महत्व आदि का विवेचन भी वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। रायल साइज के ३२० पृष्ठों में मुद्रित इस सजिल्द ग्रन्थ का मू० १५) डा. व्यय ५)

नित्यकर्मप्रकाश

इस पुस्तक में प्रातः काल से लेकर रात्रि में सोते समय तक स्नान सन्ध्यावन्दन, पञ्चमहायज्ञ देवार्चन आदि प्रमुख कर्त्तव्यों की विवेचना एवं शास्त्रीय पद्धति से सम्पूर्ण विधिविधान के साथ ही गोत्र प्रवर तथा ऋष्यादि के सम्बन्ध में पूरी-पूरी जानकारी दी गई हैं। सद्गृहस्थों के लिए अत्यन्त उपयोगी यह पुस्तक प्रत्येक परिवार में रहनी ही चाहिए। मू. १० रु० डा. व्यय ५)

भारत को विश्व की देन

'इण्डिया ह्वाट केन इट टीच अस' का स्वतन्त्र हिन्दी अनुवाद। मूल्य ६५ रु० डा. व्यय ५)

प्राप्ति स्थान—ज्योतिष्मती प्रकाशन १०१ सहगलपुरा मथुरा।

ज्योतिष, तन्त्र-विद्या तथा योग-साधना के अनुपम ग्रन्थ

घर बैठे वी० पी० द्वारा प्राप्त करें !

भारतीय फलित-ज्योतिष : मूल्य 51/-
(आचार्य—दीक्षित)

ज्योतिष ज्ञान के अभिलाषी तथा ज्योतिष के मर्मज्ञ—सभी के लिए परम उपयोगी ग्रन्थ !

भाग्य का प्रतिबिम्ब : मूल्य 51/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

हस्त-रेखाओं की व्यापक जानकारी के साथ ही विद्वान् लेखक ने अनेकानेक ऐसे गूढ़ रहस्यों से भी पर्दा उठाया है, जिनसे प्रायः हस्तरेखा-विद् भी परिचित न थे। हस्त-रेखा की समग्र जानकारी देने वाला पूर्ण ग्रन्थ !

अलौकिक शक्तियों की साधना : मूल्य 30/-
(आचार्य—पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं की 'साधना' आराधना-विधि इतने सरल ढङ्ग से विवेचित है कि केवल श्रद्धा-शुचिता के बल पर ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। चाहिए—बटोरने वाला, मानो रत्नों की पिटारी खुली पड़ी है।

रहस्यमयी गुप्त-विद्याएं (यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र) : मू. 25/-
(आचार्य—पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

जैसा कि पुस्तक के नाम से स्वतः स्पष्ट है। भारतीय-तन्त्र-साधना के ऐसे-ऐसे गुप्त-प्रयोग, जो लाखों रुपया खर्च करने पर भी सिद्धजन नहीं बताते, इस पुस्तक में स्पष्ट और सरल भाषा में वर्णित हैं। अवश्य पढ़ें।

योग के अद्भुत चमत्कार : मूल्य 24/-
(स्वामी स्वयमानन्द)

बिना गुरु की सहायता के योग-विद्या में पारङ्गत बनाने का पूर्ण-विश्वास के साथ दावा करने वाला—अनुपम ग्रन्थ ! अवश्य पढ़ें।

भाग्योदय तन्त्रम् : मूल्य 25/-
(पं० शंकरदयालु त्रिवेदी)

इस विशाल ग्रन्थ में आकाशीय-पिण्डों—नक्षत्र, ग्रह आदि का साङ्गोपाङ्ग वर्णन करते हुए विद्वान लेखक ने उनके कोप को शान्त करने के सरल उपाय बताकर भाग्य का सितारा चमकाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

शक्ति-तन्त्रम् (देव्योपासना) : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

माँ दुर्गा के विभिन्न नाम-रूपों का ज्ञान कराकर, उसकी सरलतम-साधना का बोध कराने वाली अनुपम पुस्तक !

सूर्य-तन्त्रम् : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

यह तथ्य सर्व विदित है कि भगवान भास्कर के साधक को शुचिता, सौम्यता, सहनशीलता, सत्य-वादिता, स्पष्टवादिता आदि दिव्य गुणों की स्वतः प्राप्ति होकर साधक का व्यक्तित्व परम तेजस्वी हो उठता है। फिर उसे विश्व की कोई सम्पदा अप्राप्य नहीं रहती। उसी साधना का प्रभावशाली चित्रण।

नवग्रह अनुकूलन-तन्त्र : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

नवग्रहों की कृपा-प्राप्ति के लिए सरलतम साधना का वर्णन किया गया है। अनेकों पाठकों द्वारा प्रशंसित पुस्तक है।

रत्नों के चमत्कार : (आचार्य-प्रज्ञानिधि) मूल्य 25/-

नवरत्नों, उपरत्नों तथा वास्तविक रत्नों का विशद और प्रामाणिक विवेचन ! अपने ढङ्ग की अमूल्य कृति !

शाबर तन्त्र-विद्या : (आचार्य—प्रज्ञानिधि) मू. 25/-

भगवान शंकर के डमरू-वाद्य से प्रस्फुटित अचूक तन्त्र-प्रयोग। सहज-सिद्ध मन्त्र।

तान्त्रिक सिद्धि-प्रयोग (आचार्य—प्रज्ञानिधि) मू. 21/-

भारतीय वाङ्मय के सुप्रसिद्ध बारह देवी और देवताओं की कृपा-प्राप्ति के अचूक शास्त्रीय-उपायों का विवेचन !

श्री तन्त्रम् (धन-प्रदायक साधनाएं) : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

जीवन में सफलता की मूल-आधार धन-सम्पदा है। इस पुस्तक में धन-सम्पदा की प्रदायिनी देवी—श्रीमहालक्ष्मी की आराधना का विवेचन है।

मनोकामनापूरक-मन्त्र : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)

यश, प्रतिष्ठा तथा धन आदि सभी सद्-इच्छाओं की पूर्त्ति करने की कामना रखने वाले साधक इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें।

नोट—पुस्तक का चौथाई मूल्य मनीआर्डर द्वारा अग्रिम भेजना तथा अपना नाम व पता सही, साफ लिखकर भेजना अनिवार्य है। डाक-खर्च अलग।

भाषा भवन, हालन गंज, मथुरा—281001 (उ० प्र०) ☎ : 5173

वायदे और तैयारी दोनों काम में सहायक

व्यापार-रत्न

लेखक : १) पं हरदेव त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
२) पं. गोपेशकुमार ओझा M.A.,L.L.B.

जिस ग्रंथ की पाठक प्रतीक्षा कर रहे थे उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है। इसमें सोना चांदी, रुई, गुड़, ग्वार, मटर, सरसों तेल तिलहन, अलसी, शेयर, तांबा, लोहा, बारदाना आदि के सदैव के लिये तेजी-मंदी के शास्त्रीय नियम व कुछ उपाय और अपने अनुभव सरल भाषा में लिखे हैं।

जानकारी के लिये कुछ संकेत :

१. प्रत्येक वस्तु की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक टक्केवार तेजी-मंदी निकालने की विधि व ग्रहों के योग
२. कुछ विशेष व्यक्तियों के इस लाइन के अनुभव और किस प्रकार वह लोग सफल हुए।
३. जन्मपत्री व राशिज्ञान से वायदे और तैयारी के काम में लाभ होगा या नहीं यदि होगा तो किस वस्तु से?
४. बार-बार असफल रहने वालों के लिये हमारी सलाह।
५. परेशानी दूर करने के लिये कुछ अनुभूत योग, यंत्र, मंत्र-जप आदि।
६. ग्रह स्थिति के अनुसार १२ संक्रांतियों का स्पष्ट फलादेश।

ऐसी ही और भी विशेषतायें हैं, पुस्तक का गुण है कि जहाँ यह ज्योतिषियों व ज्योतिष प्रेमियों के लिये उपयोगी है, वहाँ साधारण पढ़े-लिखे व्यापारी भी समझकर लाभ उठा सकते हैं।

पृष्ठ ३४० पक्की जिल्द
मूल्य ८०) डाक खर्च अलग

ज्योतिष-साहित्य

सरल और व्यावहारिक शैली में

उत्तर कालामृत

(कवि कालिदास)	रु. २०
वर्षफल विचार	१५
केरलीय ज्योतिष	१५
भुवन दीपक	१५
चुने ज्योतिष योग	१५
भावार्थ रत्नाकर (रामानुजाचार्य)	१५
अनिष्ट ग्रह कारण और निवारण	१२
दशाफल रहस्य	१५
स्वप्न और शकुन	१०
हस्तपरीक्षा (विश्वप्रसिद्ध ज्योतिषीकीरो)	१०
अंक चमत्कार (कीरो)	१०
फलित सूत्र (बारह भावों का फल)	१०
ज्योतिष और रोग	१०
व्यवसाय का चुनाव और आपकी आर्थिक स्थिति, उदाहरणसहित	१०
मूक प्रश्न विचार	१०
भाव दीपिका	१०
गोचर विचार	१२
महिलायें और ज्योतिष	१०
रत्न परिचय	१०
चन्द्रकला नाड़ी	१०
एक मास में ज्योतिष सीखिए	१०
तंत्र शक्ति (डा. रुद्रदेव त्रिपाठी)	१२
मंत्र शक्ति "	१२
यंत्र शक्ति २ भाग "	२४
माहेश्वर तंत्र "	५
मंत्र विद्या (बड़ी पुस्तक)	६०

प्रसव-चिन्तामणी भा. टी.

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ कृत

प्रत्येक व्यक्ति की यह जानने की इच्छा रहती है कि उसके यहाँ जन्म लेने वाला प्राणी पुत्र होगा या पुत्री इस पुस्तक में इस समस्या के समाधान की कई अनूठी विधियाँ हैं। व अन्य प्रश्नों का भी पूर्ण विवरण मिलेगा। संस्कृत श्लोक, हिन्दी अनुवाद व्याख्यासहित बड़ा आकार, सजिल्द मूल्य ४० रुपये

*** नष्ट-जातकम्** भा. टी.
आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ
जन्म कुंडली न होनेपर बनानेके कई प्रकार ४०

*** दैवज्ञ-वल्लभा** भा. टी.
आचार्य वराह मिहिर कृत
प्रश्न विषय की प्राचीन पुस्तक २५ रुपये

*** दाम्पत्य-सुख** (ज्योतिष के झरोखे से)
डा. सुखदेव चतुर्वेदी
वैवाहिक जीवन पर पूर्ण प्रकाश ४० रुपये

*** रत्न-प्रदीप** GEMS
डा. गौरीशंकर कपूर
रत्नों की जाँच परख व नये तथ्य
अल्पमोली रत्नों की अपूर्व जानकारी ४० रुपये

*** प्रश्न-मार्ग** भा. टी.
तीन खण्डों में, पृष्ठ एक हजार
दक्षिण भारत का फलित व प्रश्न ज्योतिष का प्रामाणिक और विश्वसनीय ग्रंथ १४५ रुपये

*** महामृत्युंजय** साधना एवं सिद्धि
डा. रुद्रदेव त्रिपाठी
भगवान शिव की आराधना पर विशेष
घोर कष्ट से मुक्ति के लिये वरदान ४० रुपये

पुस्तकें डाक द्वारा वी. पी. से मंगायें, डाक खर्च अलग, मंगाने का पता :—

ज्योतिष्मती प्रकाशन, १०१ सहगलपुरा, मथुरा (उ० प्र०)

हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशित पुस्तक

कीरो (CHEIRO) की हस्त-रेखाएं बोलती हैं

जी हां, यह सत्य है आपकी रेखाओं में सब कुछ है

संसार के प्रसिद्ध भविष्य वक्ता की हस्त रेखा पर यह श्रेष्ठ पुस्तक है, इसको समझने के लिए कुछ समय लगाइए। कुछ ही दिनों में आप किसी भी व्यक्ति का हाथ देखकर उसका भूत, व भविष्य, वर्तमान बतलाकर आश्चर्य चकित कर देंगे। विषय को भली भांति समझाने के लिए ३० सुन्दर चित्रों सहित सरल भाषा, आकार बड़ा, पृष्ठ २१६ मूल्य चालीस रुपये, डाक व्यय अलग अन्य ज्योतिष साहित्य (हिन्दी व अँग्रेजी) भी उपलब्ध।

पत्र व्यवहार करें:—वी० पी० से मंगाने की सुविधा का लाभ उठाइए।

अंक चमत्कार (ज्योतिष)

(कीरो Cheiro)

केवल जन्म तारीख से अपना, अपने परिवार का, मित्रों का, सम्बन्धियों का भविष्य स्वय जानिये। मूल्य १०) रुपये

"अब जन्मपत्री पुस्तक रूप में"

जन्म अक्षर पत्रिका

जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में

साइज : ५×७ सम   पृष्ठ संख्या : ८

मूल्य : १·०० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : १·५०

जन्माक्षर पत्रिका

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर गणपतिजी का बहुरङ्गी चित्र है। जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में एक व्यक्ति की जन्मपत्री आसानी से बनाई जा सकती हैं। आवश्यक विवरण के साथ जन्म लग्न कुण्डली तथा चन्द्र लग्न कुण्डली दिये हैं। दस पृष्ठों पर गणित व फलित आदि लिखा जा सकता है। बड़ी जन्मपत्री भी सुगमता से बनाई जा सकती है। जेब में रखने योग्य है।

साइज : ४×६½ सम   पृष्ठ संख्या : १६

मूल्य : १·२५   डाक व्यय अलग   प्लास्टिक कवर : १·७५

जन्मांग पत्रिका :

मुख पृष्ठ पर गणेशजी महाराज का रंगीन नयनाभिराम चित्र से सुशोभित इस पुस्तक में किसी एक व्यक्ति के जन्म का प्रारम्भिक आवश्यक विवरण, सूर्यादि, स्पष्टग्रह, जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, विंशोत्तरी-महादशा चक्र, दशा—अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये तीन पृष्ठ दिये गये हैं।

कम काम और यजमान से अधिक पारिश्रमिक प्राप्ति चाहने वालों के लिये अच्छी पुस्तक है।

साइज : ६½×९½ सम   पृष्ठ संख्या : १२

मूल्य : २·०० डाय व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ३·००

षडवर्गीय जन्मपत्रिका :

इस पुस्तक में जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्यस्पष्टग्रह, द्वादश भाव, चलित भाव, होरा चक्र, द्रेष्काण, सप्तमांश, द्वादशांश, पंचधामैत्री, दशा-अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये पृष्ठ दिये गये हैं। पुस्तक विशेष मोटे-चिकने कागज से तैयार कराई गई है।

साइज : ६½×९½ सम   पृष्ठ संख्या : २८

मूल्य : ३·०० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ४·००

सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका :

षडवर्गीय जन्मपत्रिका में दी गई सभी विशेषताओं के अतिरिक्त नैसर्गिक चक्र, तात्कालिक मैत्री चक्र सप्तवर्गीय कोष्टक आदि एवम् फलादेश लिखने के लिये छः पृष्ठ दिये गये हैं।

विशेष मोटे-चिकने कागज से पुस्तक तैयार की गई है।

साइज : ६½×९½ सम.   पृष्ठ संख्या : ४०

मूल्य : ४·०० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ५·००

बढ़िया चिकने-मोटे कागज़ पर छपे टेवा, जन्मपत्री, वर्षफल, विवाह चिट्ठी तथा विवाह लग्न फार्म हर समय तैयार मिलते हैं।

पता—नाथ पुस्तक भण्डार, 194, दरीबा कलां, दिल्ली–110006

कम्प्यूटर द्वारा अपनी जन्म कुण्डली—एवम् वर्षफल बनवायें।

संक्षिप्त जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में जन्म समय की ग्रह स्थिति लग्न राशि, सप्तांश, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर दशा के विवरण होंगे। शुल्क ७१) रु० संक्षिप्त फलादेश सहित १०१) रू०

सप्त वर्गीय जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में संक्षिप्त जन्म कुंडली के अतिरिक्त, सप्तवर्ग, (लग्न, राशि भाव होरा द्रेष्काण सप्तांश, नवांश, द्वादशांश त्रिशांश ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट और अष्टक वर्ग तथा विंशोतरी दशा-जिसमें महादशा, अंतरदशा व १० वर्षों की प्रत्यन्तर दशा होंगी। शुल्क १२१) पूर्ण फलादेश सहित १७१) रू०

षोडश वर्गीय जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में सप्त वर्गीय कुण्डली के अतिरिक्त षोडश वर्ग (जिसमें चतुर्थांश, पंचमांश, षष्टांश, अष्टमांश एकादशांश षोडशांश, षष्टशाश तथा नाडीय मांश तथा २० वर्षों की प्रत्यन्तर दशा आदि सभी होंगी। शुल्क १५१) विस्तृत पूर्णफलादेश सहित २५१) रू०

वर्ष फल—

आने वाले आगामी वर्ष का आपका फलादेश तथा अगले वर्ष में आपका भविष्य क्या होगा सम्पूर्ण जानकारी एक वर्ष की दी जाती है जिससे आपको अपने वर्ष की जानकारी हो सके। शुल्क १०१) रू०

मंगाने का पता—

पूजा ज्योतिष कार्यालय (कुण्डली-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा।२८१-००१

पूजा-यंत्र-भण्डार

पूजा पाठ के लिए शुद्ध

ताम्रपत्र यत्र अनुभव सिद्ध शास्त्रीय आधार पर विशेष रूप से निर्मित देवी-देवताओं के सुन्दर चित्र से अंकित हमारे यहाँ उपलब्ध है:—

श्री यंत्र।	श्री महालक्ष्मी यंत्र।
श्री बगलामुखी यंत्र।	श्री कुबेर यंत्र।
श्री महाकाली यंत्र।	श्री हनुमत् यंत्र।
श्री दुर्गा यंत्र।	श्री इष्ट सिद्धि यंत्र।
श्री गायत्री यंत्र।	भूत निवारक यंत्र।
श्री गणपति यंत्र।	प्रेतव्याधि निवारक यंत्र।
इन्द्राक्षी कवच यंत्र।	वशीकरण यंत्र।
श्री सूर्य यंत्र।	श्री सिद्ध बीसा यंत्र।
श्री शनि यंत्र।	राहु यंत्र, केतु यंत्र।

उपरोक्त यंत्र शुद्ध किये ताम्र पर बने हैं। मूल्य १०१) प्रत्येक का मनीआर्डर द्वारा अग्रिम भेजें। चांदी पत्र पर बने यंत्र विशेष अनुरोध पर निर्मित किये जाते हैं। आपको रजिस्ट्री द्वारा भेज दिया जावेगा—

मंगाने का पता—

पूजा ज्योतिष कार्यालय (यंत्र-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा।२८१-००१

राशिरत्न-उपरत्न

अशांत वातावरण से शांत वातावरण में आने के लिए व आर्थिक उन्नति के लिए विख्यात ज्योतिषियों द्वारा आपके ग्रहों की स्थिति का सही विचार एवं सुविज्ञ जौहरी के परामर्श से सही ग्रह-रत्नों का चयन आपके आने वाले समय को आनन्दकारी व मंगलमय बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

राशियों के अनुकूल:—

चाँदी की नवरत्न की अगूँठी, पेण्डल, हर प्रकार के रत्न जैसे—पन्ना, माणिक, मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, गोमेद, मोती, नीलम, हीरा, एवं हर प्रकार की मालायें—रुद्राक्ष, स्फटिक, चन्दन, तुलसी एवं वैजयन्ती तथा सभी प्रकार के रुद्राक्ष, दक्षिणावर्ती शंख, विद्वान ज्योतिषियों से अनुभव सिद्ध प्रमाणित कर उचित मूल्य पर हमारे यहाँ उपलब्ध हैं।

वी.पी. डाक द्वारा भेजा जाता है।

मंगाने का पता:—

पूजा ज्योतिष कार्यालय, (रत्न-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा। २८१-००१

नोट— कुण्डली बनवाने के लिए अपना (१) नाम (२) पिताजी का नाम (३) जन्म तिथि (४) स्थान (५) निश्चित जन्म समय-प्रातः-सायं-रात्रि। स्पष्ट लिखकर शुल्क के मनीआर्डर सहित लिख भेजें। आपको कुण्डली रजिस्टर्ड डाक द्वारा आपके पते पर भेज दी जावेगी। हमारे कार्यालय में कुण्डली व फल कम्प्यूटर के अतिरिक्त विशिष्ट ज्योतिर्विद विद्वानों द्वारा आंकलन कर प्रेषित की जाती है।

(* ज्योतिष की अनुपम पुस्तकें *)

सामुद्रिक शास्त्र

[लेखक:—श्री बसन्तलाल व्यास]

पुस्तक में हस्तरेखा के सभी अङ्गों का साङ्गोपांग वर्णन १०० से अधिक सुन्दर चित्रों में किया है। रेखाओं की सत्यता के प्रमाण में भारत के प्रमुख व्यक्तियों के हाथ के चित्र भी दिये गये हैं। मनुष्य जीवन में रेखाओं द्वारा निश्चित की गई घटनाओं की ओर से असावधान रहकर हम क्यों अपनी अवनति का स्वयं कारण बन जाते हैं इन विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक से मनुष्य जीवन की प्रत्येक घटना का पता रेखाओं द्वारा आसानी से लग सकता है। ग्लेज कागज पर छपी-४०० पृष्ठ मू० केवल २०) रु०

त्रिकालज्ञ ज्योतिष

ज्योतिष विद्या की यह अनुपम पुस्तक है भाषा ग्रन्थों में ज्योतिष का यह निराला ग्रन्थ है हमारा ऐसा विश्वास है कि ज्योतिष में ऐसी बहुत कम किताबें छपी हैं। लेखक ने इसमें ज्योतिष के बड़े-बड़े ग्रन्थों का सार खींचकर रख दिया है, लगभग ६०० पृष्ठ के ग्रन्थ का मूल्य ३०) रु०।

ज्योतिष सर्व संग्रह भाषा टीका

[पं० रामस्वरूप मेरठ निवासी द्वारा लिखित]

यह ज्योतिष विद्या की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। भूत, भविष्य, वर्तमान तथा किस ग्रह का किस नक्षत्र पर शुभ अशुभ प्रभाव होगा। यह सब इस पुस्तक में भली प्रकार सरलतापूर्वक बतलाया गया है। मूल्य१५) रु०।

मुहूर्त चिन्तामणि भाषा टीका

किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में जैसे—गृह प्रवेश, यज्ञोपवीत विवाह आदि के अवसर पर बार-बार पण्डितों के पास दौड़ना पड़ता है। यदि यह पुस्तक आपके पास है तो छोटे-मोटे आवश्यकीय काम आप स्वयं कर सकते हैं हर घर में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। मूल्य१८) रु०।

वृहद ज्योतिषसार भाषा टीका

यह ज्योतिष विद्या की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। भूत, भविष्य वर्तमान तथा किस ग्रह का किस नक्षत्र पर शुभ अशुभ प्रभाव होगा। यह सब इस पुस्तक में भली प्रकार सरलतापूर्वक बतलाया गया है। मूल्य ग्लेज कागज २५) रु०।

जन्म पत्री फार्म

जन्मपत्री बनाने के लिए सुन्दर ग्लेज कागज पर छपे हुए सुन्दर अवतारों के चित्रों से सुसज्जित फार्म छपे हैं। तीन कागज का सैट है। दाम ३०) रु० सैंकडा।

धार्मिक व ज्योतिष की पुस्तकें

प्रेमसागर	१६)	शीघ्रबोध मा. टी.	१०)
दुर्गासप्तशती भा. टी.	१६)	जातकाभरण भा. टी.	३२)
गरुड़ पुराण भा. टी.	१६)	जातकालंकार भा. टी.	१०)५०
पुरुषोत्तम मास भा. टी.	१६)	भावकौतूहल	१०)००
एकादशी भा. टी.	१६)	चाणक्यनीति भा. टी.	८)५०
माघ माहात्म्य भा. टी.	१६)	विचारचन्द्रोदय पीताम्बरी टीका	१६)५०
कार्तिक माहात्म्य भा. टी.	१६)	संसार के महान साहित्यिक	८)
वैशाख माहात्म्य भा टी.	१६)	कम्पाउण्डरी शिक्षा	१६)
उपनयन पद्धति मेरठ	८)	इञ्जेक्शन गाइड	१६)
हवन पद्धति मेरठ	८)	बिक्री बढ़ाने के १२६ उपाय	१०)
विवाह पद्धति मेरठ	८)५०	पिंगल प्रकाश बड़ा	१२)
रुद्री ग्लेज	८)५०	मोटर साइकिलस्कूटर गाईड	१६)
नित्यकर्म संग्रह	६)	असली रसराज सुन्दर बड़ा भाषा टीका ग्लेज, बम्बई छापा	४०)
सप्तवार व्रतकथा	४)५०		
सोमवार व्रतकथा	२)२५		
मंगलवार व्रतकथा	२)२५		
बुधवार व्रतकथा	२)२५	अमृतसागर	४०)
वृहस्पतिवार व्रतकथा	२)२५	इलाजुल गुर्बा	२०)
शुक्रवार व्रतकथा	२)२५	दीनजन चिकित्सा	२०)
शनिवार व्रतकथा	२)२५	बूंटी प्रचार वैद्यक	१३)

वृहद रसराज सुन्दर भाषा टीका

यह वैद्यक ग्रन्थ मथुरा निवासी प्रसिद्ध वैद्य श्री चौबे दत्तरामजी द्वारा अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों से संग्रह किया गया है। तथा इसकी टीका भी बड़े सुन्दर ढङ्ग पर उन्हीं द्वारा की गई है। इस ग्रन्थ में अनेक प्रकार के रस, भस्में बनाने तथा उनके गुणावगुण लिखे गये हैं तथा किन २ बीमारियों पर नामप्रद है यह सब दिखाया गया है। वैद्यों के बड़े काम का ग्रन्थ है। अवश्य मंगाना चाहिये। मूल्य ४०) रु०।

भृगु संहिता पद्धति

इस पुस्तक के द्वारा संसार के प्रत्येक स्त्री पुरुष की जन्म कुण्डलियों के समस्त हालात व एक-एक ग्रह का चमत्कारिक विभिन्न फलादेश समस्त जीवन और भाग्य के सम्बन्ध में दर्पण की भांति सरल हिन्दी भाषा में बगैर ज्योतिष सीखे ही आप स्वयं मालूम कर सकते हैं और उन गलत जन्म कुण्डलियों को आप जरासे इशारे में ठीक कर सकते है जो बच्चों की पैदायश के समय की गड़बड़ व घड़ियों की अशुद्धि के कारण गलत बन गई हैं। पृष्ठ संख्या १०००, ५०० कुण्डलियां मूल्य ४०) रु०।

रसराज महोदधि

यह वैद्यक ग्रन्थ सरल भाषा में लिखा गया है पुस्तक पाँच भागों में सम्पूर्ण की गई है, एड़ी से चोटी तक साध्य असाध्य प्रायः सभी रोगों की चिकित्सा बड़ी सरल भाषा में लिखी है हर घर में इस ग्रन्थ का रहना जरूरी है, घर में यह ग्रन्थ अच्छे वैद्य का काम देता है। मूल्य ४०) रु०।

प्रसिद्ध लेखक पं० विशालमणि उपाध्याय की प्रसिद्ध कर्मकाण्ड की पुस्तकें।

पूजाभास्कर—इसमें सभी देवताओं की पूजा, पंचोपचार, षोडशोपचार, वैदिक व पौराणिक विधि से भली प्रकार समझाया गया है तथा अन्याय नित्य नैमित्तिक स्तोत्रपाठ, यज्ञ, दान आदि आदि आवश्यक विषय लिखे हैं, सम्पूर्ण रुद्री सहित ग्लेज कागज गुटकासाइज ३५० पृष्ठ मूल्य१६) रु०।

संस्कारपद्धति—इस पुस्तक में सम्पूर्ण षोडश संस्कार उनका रहस्य, विधि, क्रिया, टिप्पणी सहित दिये हैं। प्रत्येक विद्वान पंडित व गृहस्थ के यहाँ यह पुस्तक अवश्य होनी चाहिए। मूल्य केवल २५) रु०।

कर्मकाण्डभास्कर—इस पुस्तक में सम्पूर्ण कर्मकाण्ड, उनकी विधियाँ, देव पूजा, सम्पूर्ण संस्कार, जप विधियों सहित विस्तृत रूप में दिये हैं। प्रत्येक पंडित जो संस्कार कराते हैं उनके पास इसका होना आवश्यक है। ग्लेज कागज ६०० पृष्ठ मूल्य केवल ३५) रु०।

नोट—सभी पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय रहित है। आप केवल एक पोस्टकार्ड पर पुस्तकें लिखकर व मनीआर्डर द्वारा आधी रकम पेशगी अवश्य भेज दें। आपको घर बैठे ही पुस्तकें वी. पी. द्वारा प्राप्त हो जावेंगी।

मंगाने का पता :
ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा

भजन एवं कीर्तन की पुस्तकें

बृहद् सूरसागर

वर्षों से अप्राप्य महाकवि सूरदासजी के भजनों एवं पदों को संग्रह करा कर छापा गया है। महाकवि सूरदास ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को पदों में वर्णन किया है जो गायन और साहित्य की दृष्टि से बड़े ही मार्मिक हैं। वर्षों से भक्तजनों द्वारा इस अपूर्व संग्रह की बड़ी मांग थी। लगभग आठसौ पृष्ठों का यह ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा है और भक्तजनों को परमप्रिय है। ग्रन्थ सजिल्द तथा बहुरंगी चित्र वाले आवरण से मण्डित है। मूल्य ४०)

रुक्मिणी मंगल बड़ा

[पदमैया कृत]

भगवान श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणीजी का जीवन चरित्र इस पुस्तक में छापा गया है। उनके जन्म से लेकर भगवान श्रीकृष्ण के साथ जाने तक की समस्त कथा मनोहर छन्द, दोहा, चौपाई एवं सोरठा आदि में वर्णित है। पुस्तक की भाषा मारवाड़ी मिश्रित ब्रजभाषा है। साधारण पढ़े लिखे स्त्री पुरुष बड़ी आसानी से समझ सकते हैं। छपाई मोटे टाइप में सफेद चिकने कागज पर है। जिल्द कपड़े की मजबूत है। मूल्य ३२) रुपया।

[सचित्र पशु चिकित्सा]

पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज

भारत एक कृषि-प्रधान देश है, जिसमें पशुओं का महत्त्व पूर्ण स्थान होना अनिवार्य है। पशुओं का महत्त्व, उनकी प्रमुख जातियाँ, उनकी उपयोगिताएँ, पशु चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान, एवं रोगी पशु के लक्षण तथा उनका निदान उनकी औषधियों का ज्ञान तथा उनको खिलाने-पिलाने की क्रिया, रोगों का वर्णन, छूत वाले रोग और उनसे बचने का उपाय आदि अनेक रोगों के अति उत्तम इलाज हैं। मूल्य सजिल्द २०) रु०

नाड़ीज्ञान तरंगिणी भाषा टीका— रोगी की चिकित्सा करने से पहले उसकी नाड़ी का सही ज्ञान कर लेना बड़ा आवश्यक है। संस्कृत के पुराने ग्रन्थों को सरल भाषा में अनुवाद कराकर छापा गया है। मूल्य १०)

चिकित्सकों के कर्त्तव्य

वैद्य, हकीमों, डाक्टरों एवं कम्पाउन्डरों के लाभार्थ सरल भाषा में ज्ञान कराने वाली यह पुस्तक बड़े महत्व की है। इसमें चिकित्सकों के जानने योग्य सभी बातें पूरी तरह समझाकर लिखी गई हैं। मूल्य १३) रु०।

असली आल्हा खण्ड

यद्यपि आल्हखण्ड बहुत स्थान पर छपे हैं, परन्तु यह अपने ढंग का निराला ही है। इसके रचयिता ने मेरठ की तर्ज पर इसको ऐसा मनोहर बनाया है कि इसके पढ़ने वाले के पास श्रोताओं की भीड़ लग जाती है। इसमें ५२ गढ़ की लड़ाई संयोगिता स्वयम्वर, महोवे की पहली लड़ाई माँडों की लड़ाई आदि वेला सती संग्राम तथा जिसमें पृथ्वीराज आल्हा दोनों ओर के बहुत से शूरवीर काम आये वर्णन हैं। बम्बई छापा ६४० पृष्ठ सजिल्द ३२) रु०

वाल्मीकि रामायण भाषा

आज से पाँच हजार वर्ष पहले आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने भगवान् श्रीराम के परम पावन चरित्र को संस्कृत के श्लोकों में लिखा था। यह रामायण का सनातन प्रामाणिक ग्रन्थ है। क्योंकि आज संस्कृत का प्रचार बहुत कम हो गया है। अतः जन साधारण के उपयोग के लिये इस ग्रन्थ को विद्वानों द्वारा अनुवाद करा कर भाषा में छापा गया है। इसके पढ़ने और सुनने से मूलग्रन्थ का सा ही आनन्द एवं रस प्राप्त होता है। अतः यह एक ऐसी पुस्तक है जिसमें श्रीराम का पूर्ण वास्तविक चरित्र मिलता है। परिवार के सभी लोग पुरुष और स्त्रियाँ इसे आसानी से पढ़ व समझ सकते हैं। लगभग १२०० पृष्ठ की पुस्तक सुन्दर कागज पर साफ छपी है। जो ११ इंच लम्बी व ७॥ इंच चौड़ी है। जिल्द पक्की ठप्पेदार है। मूल्य ५८) रु०

बृहद् बूँटी प्रचार—इस पुस्तक में समस्त प्रकार की जड़ी बूँटियों की पहचान उनके विविध भाषाओं के नाम, गुण, प्रयोग, उपचार आदि का वर्णन सरल हिन्दी भाषा में किया गया है। मूल्य १२)

ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा

सचित्र प्रेम सागर

(असली लल्लूलालजी कृत)

श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध भगवान श्रीकृष्ण के चरित्रों का गान करने वाला है और इसी कारण धार्मिक एवं भक्तजनों के लिये परम महत्व का है। आज से लगभग १०० वर्ष पहले श्रीलल्लूलालजी ने भगवद्जनों की जिज्ञासा शान्त करने के लिये दशम स्कन्ध का सरल ब्रजभाषा में अनुवाद किया था। भगवान श्रीकृष्ण की परम पुनीत कथा का रसास्वादन करने वाले पाठकों की सुविधा के लिये हमने उसे ज्यों का त्यों छापा है। इस पुस्तक में ९० अध्याय हैं और लगभग १४० चित्र हैं जिनमें भगवान की महत्वपूर्ण लीलाएँ अंकित हैं। मूल्य१६) रु०। विशिष्ट पूरे विलायती कपड़े की जिल्द मूल्य २०) रु०।

रामलीला करने व कराने वालों की अनुपम भेंट—

[स्वामी जयराम देव द्वारा लिखी हुई असली]

श्रीरामलीला रामायण नाटक

भारत में रामलीला बहुत होती हैं, नाटकीय ढंग बहुत प्रचलित हो गया है परन्तु इस प्रकार की कोई रामायण अभी तक नहीं थी। विद्वान परिश्रमी लेखक ने नाटक के रूप में पूरे ६ भाग देकर छापा है। समस्त रामलीला मण्डलियों, रामभक्तों, स्कूलों, मिलों, क्लबों तथा जो भी रामलीला कराने के शौकीन हों हमारे रामलीला, रामायण, नाटक को अवश्य मंगाकर पढ़ें। रामलीला करने का पूर्ण विस्तृत वर्णन दिया हुआ है। सभी प्रमुख रामलीला करने वाली मण्डलियाँ इसी पुस्तक से रामलीला करना अपना गौरव समझती हैं। मूल्य सम्पूर्ण ग्रन्थ का ४०)

दुर्गा सप्तशती भाषा टीका

महाशक्ति दुर्गा पूजन सभी हिन्दू समय-समय पर करते हैं। दुर्गापाठ की यह मूल पुस्तक संस्कृत भाषा में है। हमने भक्तजनों की विशेष मांग पर इसे विद्वानों द्वारा सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद कराके मूल श्लोकों सहित छापा है। ग्लेज कागज सचित्र जिल्ददार पुस्तक का मूल्य१६) रु०।

कौआ तन्त्र अर्थात् काला जादू
(भविष्य का हाल बताने वाला संसार भर का माना हुआ पक्षी)

यह वह बढ़िया किताब है जो कि भारत, पाकिस्तान तो क्या संसार भर के किसी भी पुस्तकालय से नहीं मिल सकती। परिन्द कौवे से बड़ी-बड़ी अनोखी भविष्य की बातें मालूम होती हैं, आश्चर्यजनक करामात दिखाई देती है। कौआ तन्त्र के कुछ वशीकरण प्रयोग जैसे कि मनचाही स्त्री से शादी करने का तन्त्र, लोगों की दृष्टि से गुप्त रहकर सबको देखना परंतु स्वयं किसी को नजर न आना, जमीन में गढ़ा धन मालूम करना, चोर को पकड़ने का अमल, इसके द्वारा कौवे को देखकर कर देना फिर कोई रूह उस पर काबिज हो जायगी और वह आदमियों की तरह बोलने लगेगा, जो सवाल पूछा जावेगा उसका जवाब देगा। कौवे का वाक् सिद्धि तन्त्र अर्थात् कौवे का एक ऐसा प्रयोग जिसके द्वारा मनुष्य जो कुछ मुंह से बोले सच निकले, इसके अतिरिक्त परिन्द कौवे की विचित्र बोलियां तथा उनकी विशेषताएं कोए के रक्त तथा शरीर के हिस्से व परों की विशेषताएं तथा कौवे से सम्बन्धित स्वप्नों का विचित्र स्वप्न फल इस किताब में अंकित है जिसके द्वारा मनुष्य आने वाली मुसीबतों से शीघ्र बच सकता है जैसे कौवे का वह शकुन जिसके द्वारा औरत व मर्द की मृत्यु हो जाती है, इसी के द्वारा मनुष्य की शादी हो जाती है। कौवे का वह शकुन जिससे गर्भवती स्त्री के यहां लड़का पैदा होता है। कौवे का वह शकुन जिसके द्वारा गुमशुदा या परदेश गया हुआ आदमी शीघ्र वापिस आ जाता है आदि २ सारांश यह कि कौवे के विषय में सैकड़ों तरह के आसान से आसान प्रयोग तथा शीघ्र से शीघ्र असर करने वाले सैकड़ों अजीब गरीब शकुन तथा भविष्य वाणियाँ आपको हमारी पुस्तक में लिखी मिलेंगी जिनके अचम्भे में डालने वाले कमालातों से आप घर बैठे काफी रुपया कमा सकते हैं। अधिक प्रशंसा देखने पर ही मालूम होगी। इतने गुण होने पर भी इस ख्याल से कि हर अमीर गरीब फायदा उठा सके इसका मूल्य प्रति जिल्द हिन्दी में डाक खर्च सहित केवल १६) रुपये रखा गया है। पता साफ लिखें।

आदर्श कृषि विज्ञान

इस पुस्तक में कृषि का महत्व खेती, भूमि की किस्में, खाद, जलवायु, विज्ञान, सिंचाई की रीतियाँ, कृषि उपयोगी यन्त्र, स्वच्छ बीज की पहिचान, बीजों की किस्में, बुवाई की रीति, पैदावार बेचने के उपाय, खरीफ, रबी की फसलें, चारे की फसलें, शाकभाजी, फलों की खेती, पशु पालन, पशुओं की बीमारी तथा फसलों की बीमारी से बचने का उपाय तथा कृषि कहावतें आदि आदि विषय दिये गये हैं, हम यह दावे से कह सकते हैं कि इससे अधिक कृषि सम्बन्धी जानकारी कराने वाली दूसरी कोई पुस्तक नहीं है। अवश्य मंगाकर लाभ उठावें। मूल्य ३५) रुपया।

साबुन शिक्षक—यह पुस्तक धन पैदा करने की अद्भुत कला है, इसमें बीसियों प्रकार के देशी तथा विलायती रंगदार और सुगन्धित साबुन बनाने की समस्त गुप्त विधियाँ अंकित की गई हैं, जिन्हें पढ़कर हर मनुष्य घर बैठे बढ़िया साबुन बना सकते हैं। मूल्य केवल १२)

सुखसागर बड़ा

यह श्रीमद्भागवत का सरल भाषानुवाद है, भाषा इतनी सरल है कि साधारण पढ़ा लिखा भी आसानी से पढ़ और समझ सकता है। पृष्ठ संख्या लगभग १००० बढ़िया कागज विलायती कागज की बढ़िया ठप्पेदार जिल्द। साइज ११ इन्च लम्बा व १० इन्च चौड़ा है, बिल्कुल सफेद ग्लेज कागज पर सुन्दर २ बहुरङ्गे चित्र तथा बहुत मोटा अक्षर है। मूल्य ५८)

कबीर बीजक बड़ा भाषा टीका

यह महान् ग्रन्थ महात्मा कबीरदासजी द्वारा लिखा गया है। मूल ग्रन्थ बड़ी ही जटिल भाषा में लिखा गया है, जिसको सर्वसाधारण आसानी से नहीं समझ पाते इसी कारण इस पुस्तक को सरल भाषा में टीका कराके छापा गया है असली बम्बई छापा जिससे प्रत्येक मनुष्य आसानी से समझ सके। मूल्य ४०)

श्री शिव महापुराण—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री

इसमें शिव चालीसा, शिव ताण्डव, शिव सहस्र नाम तथा शिवार्चन की आरतियाँ व श्लोक दिए हैं। विश्वेश्वर संहिता, रुद्र संहिता, शत रुद्र संहिता, कोटि रुद्र संहिता, उमा संहिता कैलाश संहिता और वायवीय संहिता का सरस व रोचक वर्णन है। मोटा टाइप व शिव जी के अनेकों रंगीन चित्रों सहित सम्पूर्ण सातों खण्डों का मूल्य ५८)

प्रत्येक हिन्दू परिवार में रामायण का होना अति आवश्यक है

तुलसी कृत रामायण भाषा टीका सचित्र

टीकाकार पं० ज्वाला प्रसाद बम्बई छापा

जिसमें आठों कांडों के प्रत्येक दोहा, चौपाई, सोरठा और छन्दों का अर्थ साथ-साथ अत्यन्त शुद्धतापूर्वक लिखा गया है। गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन चरित्र, श्रीरामशलाका प्रश्नोत्तरी, पारायण विधि, ज्ञातव्य, रामायण माहात्म्य, नवाह्न मास पारायण विश्राम, हनुमान चालीसा, श्रीरामचन्द्र जी के सूर्य वंश का वृक्ष, गूढ़ार्थ शब्दकोष, रामनाम महामन्त्र, सप्तदेवों की आरती, राम कलेवा, श्रवण चरित्र, सुलोचना सती, अहिरावण वध, नारान्तक वध तथा अन्य सभी क्षेपक, टीका सहित दिये गये हैं। मूल्य ५८)

हिन्दू शास्त्रों में महाभारत पांचवां वेद माना जाता है।

बड़ा महाभारत भाषा

(पं० श्रीधर शिवलाल कृत सम्पूर्ण अठारहों पर्व केवल भाषा)

इसमें कौरव तथा पाण्डवों का सम्पूर्ण वृत्तान्त, कौरव पाण्डवों का घोर युद्ध, द्रौपदी पतिव्रत धर्म पालन, युधिष्ठिर के धर्म वाक्य, विदुर जी की राजनीति, भीष्मपितामह जी के धर्मोपदेश, श्रीकृष्ण जी का गीता उपदेश तथा और भी बड़ी-बड़ी सुन्दर कथाएँ हैं जिनके पाठमात्र से पाठकों के सब पाप दूर हो जाते हैं और इसमें स्थान-स्थान पर बहुरंगे और रंगीन चित्र लगाये गये हैं जिनसे इस ग्रन्थ की चौगुनी शोभा हो गई है। इस ग्रन्थ को स्त्रियाँ भी पढ़ सकती हैं। टाइप बहुत मोटा है। मूल्य केवल ५०)

नोट—सभी पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय सहित है। आप केवल एक पोस्टकार्ड पर पुस्तकें लिखकर भेजें तथा मनीआर्डर-द्वारा आधी रकम अवश्य पेशगी भेजदें। आपको घर बैठे ही पुस्तकें वी. पी. द्वारा प्राप्त हो जावेंगी।

●मंगाने का पता— ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा